THE AMARA-KOSHA OF SHRI AMARA SINHA

BY

SHRI MANNA LAL 'ABHIMANYU'

Kashmir Government Tourist Offices

Kashmir Government Tourist Offices in and outside the State will be glad to offer every possible assistance in arranging accommodation, tran[illegible] and in fixing itineraries.

			Telephones
New Delhi		Chandralok, 36, Janpath	47707
Bombay		Manekji Wadia Building, 129, Mahatma Gandhi Road, Fort	250226
Calcutta		C/o Kashmir Government Arts Emporium, 12, Chowringhee	233268
Ahmedabad	:	Airlines House, Lal Darwaza, Ahmedabad-[illegible]	20473
Pathankot	:	Railway Station	[illegible]57

There is also a network of Tourist Offices within the State.

For detailed particulars [illegible] can also contact:

DIRECTOR OF T[illegible]SM
J & K GOVERN[illegible]
SRINAGAR.

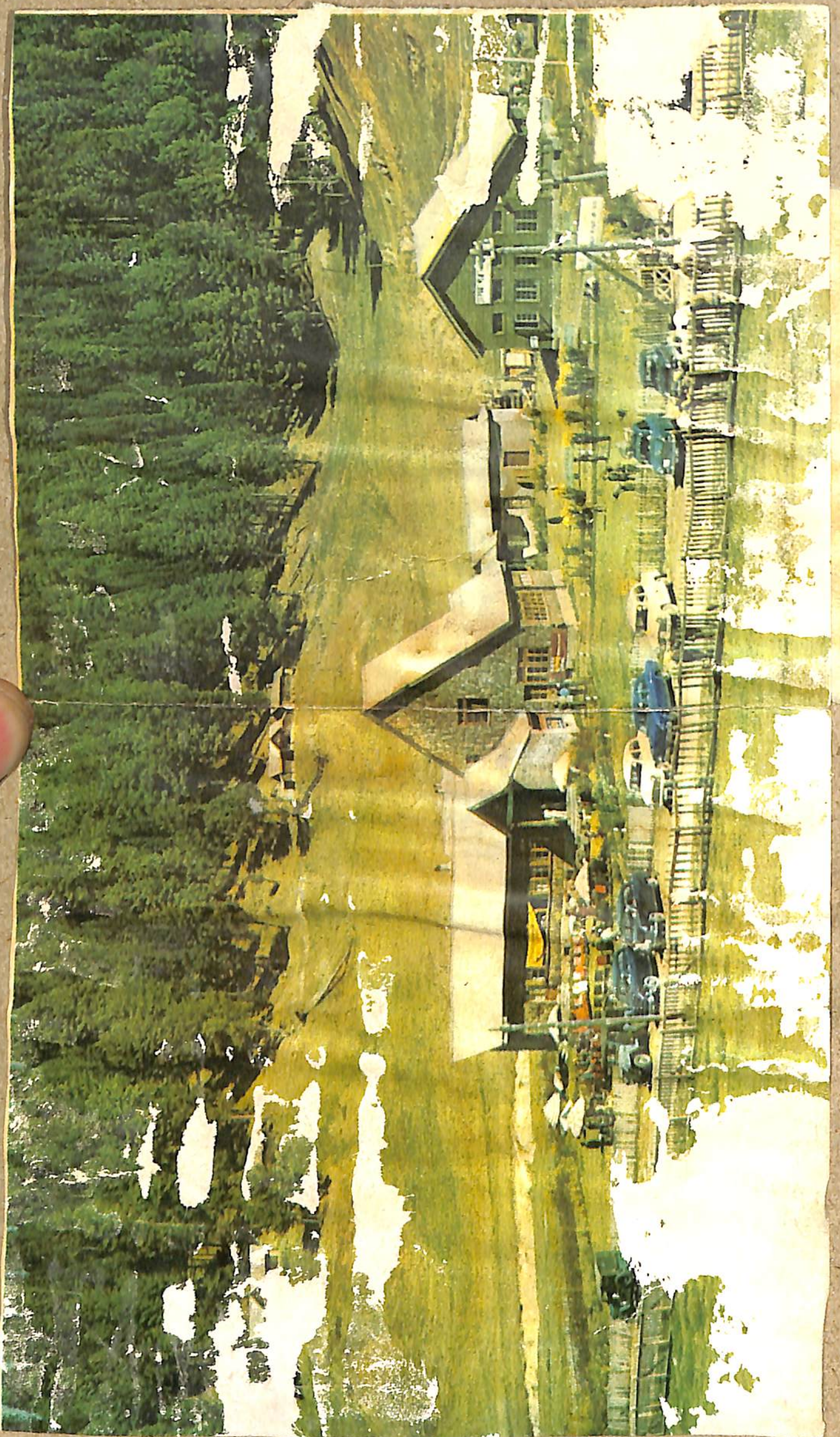
Telephones : 2449/3648/2927/6209

Telegram[illegible] TOURIS[illegible]

Produced for [illegible] Dep[illegible] of Tour[illegible] by India To[illegible]
Development C[illegible]
Faridabad, Har[illegible]



Roy[illegible]



'Mas... ...ala Series No. 85 (Lexicon ...es No. 2)

THE AMARA-KOSHA

OF

SHRI AMARA SINHA.

—o—

EDITED WITH

The ...indi translation known as 'Dharâ', and copious social, historical, religious, botanical and literary notes,

BY

SHRI MANNA LAL 'ABHIMANYU'. M. A.

PUBLISHED BY

...TER KHELARIL... L ... SONS.,

...SANSKRIT BOOK D...POT...

...AURI GALI, BE... ...RES CITY.

Roy... ...ion Rs. 3/-] 1937 *[Or... ...al Edition Rs. 2/4*

Publisher—J. N. Yadava, Proprietor, Master Khelarilal & Sons.,
Sanskrit Book Depot, Kachaurigali, Benares City.

Printer—Bajrang Bali, Visharad,
Shri Sitaram Press, Jalipadevi, Benares City.

'मास्टर' मणिमालायाः पञ्चाशीतिसंख्यको मणिः (कोषविभागे २)

श्रीमदमरसिंहप्रणीतः

अमरकोषः ।

प्राचीनभारतीयेतिहास-मुद्रा-लिपिविशारद-मास्टर-
प्रिण्टिङ्गवर्क्साभिधमुद्रणागाराधिप-

श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए०

इत्यनेन विरचितया 'धराख्य' हिन्दीटीकया

संवलितः ।

तेनैव

चोपयुक्तटिप्पण्यादिभिः समलङ्कृतः ।

स च

काशीस्थ 'संस्कृत-बुकडिपो' इत्यस्याधिपैः

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स्

इत्येतैः

श्रीसीताराम मुद्रणालये मुद्रापयित्वा

प्रकाशितः ।

मूल्यं राजसंस्करणस्य ३) } सम्वत् १९९४ { मूल्यं साधारणसंस्करणस्य २)

प्राक्कथन।

संसार की भाषाओं का क्रमिक विकाश उनके कोष ग्रन्थों पर निर्भर करता है। जो भाषा जितनी प्रचलित होगी, जितनी प्राचीन होगी, जितनी तीव्रगति से सभ्यता की गगनचुम्बी अट्टालिका पर पहुँची हुई होगी और अन्य राष्ट्रों के साथ जिस भाषा का सम्पर्क मैत्रीपूर्ण रहेगा उसका कोष भरा-पूरा रहेगा, उसका सौभाग्य अचल रहेगा और उसमें नित्यशः नवीन शब्दों की उत्पत्ति भी होती रहेगी। सभ्यता का विकाश यन्त्रादि के आविर्भाव पर अवलम्बित है। राष्ट्र के मस्तिष्क की सबलता उसके साहित्य की भित्ति पर है। साहित्य की अभिवृद्धि पर कोष की वृद्धि होती है, यह अटल सिद्धान्त है। जिस भाषा में जितने अधिक कोष प्राप्त होते हैं वही सजीव मानी जाती है। जिस भाषा में जितने कम शब्दकोष मिलते हैं वह उतनी ही मृत और उसकी सभ्यता विकसित अथवा इषन्मुकुलित मानी जाती है। इसलिए निर्विवाद सिद्ध हुआ कि साहित्य और कोष का पारस्परिक दृढ़ सम्बन्ध है।

कोष निर्माण की ओर भारतीय विद्वानों की पूर्ण अभिरुचि थी। वे जानते थे कि—

'अवैयाकरणस्त्वन्धः बधिरः कोषविवर्जितः।'

बिना कोष का राजा और बिना कोष का विद्वान निरर्थक है। कविता, वक्तृता एवं निबन्ध लिखनेवालों के लिए कोष अत्यन्त आवश्यक वस्तु है। भारतवर्ष में वैदिककाल से लेकर आज तक अनेक कोषग्रन्थ रचे गये। यदि इसका अभाव होता तो भिन्न २ काल में प्रचलित भिन्न-भिन्न शब्दों का भिन्न-भिन्न अर्थ मालूम करना दुष्कर कार्य होता। शब्दों का लिङ्ग ज्ञान करना व्याकरण के साथ कोष का भी कार्य है। पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान और एक शब्द के अनेक अर्थ कोष की कृपा से विदित होते हैं। अतः स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य के गहन वन में प्रविष्ट होने के लिए कोषरूपी वन-पथ-प्रदर्शक की नितान्त आवश्यकता है।

प्राचीन काल में कोष श्लोकबद्ध नहीं होते थे, जैसे वैदिक कोष निघण्टु। लौकिक संस्कृत के कोष प्रायः श्लोकबद्ध ही मिलते हैं। कोषकारों ने अधिकतया अनुष्टुप् का ही आश्रय लिया है। प्रस्तुत पुस्तक-अमर-कोष के पूर्व व्याडि, वररुचि, भागुरि और धन्वन्तरि ये कोषकार तथा त्रिकाण्ड, उत्पलिनी, रत्नकोष एवं माला ये कोष-ग्रन्थ उपलब्ध थे। अमरकोष के अनन्तर संस्कृत-साहित्य-सरिता में कोषों की बाढ़-सी आ गयी। भारतीय दृष्टिपथ पर शाश्वत कृत अनेकार्थसमुच्चय, हलायुध कृत अभिधानरत्नमाला, यादव प्रकाश की वैजयन्ती, महेश्वर कृत विश्वप्रकाश, हेमचन्द्र की अभिधान-

प्राक्कथन।

संसार की भाषाओं का क्रमिक विकाश उनके कोष ग्रन्थों पर निर्भर करता है। जो भाषा जितनी प्रचलित होगी, जितनी प्राचीन होगी, जितनी तीव्रगति से सभ्यता को गगनचुम्बी अट्टालिका पर पहुँची हुई होगी और अन्य राष्ट्रों के साथ जिस भाषा का सम्पर्क मैत्रीपूर्ण रहेगा उसका कोष भरा-पूरा रहेगा, उसका सौभाग्य अचल रहेगा और उसमें नित्यशः नवीन शब्दों की उत्पत्ति भी होती रहेगी। सभ्यता का विकाश यन्त्रादि के आविर्भाव पर अवलम्बित है। राष्ट्र के मस्तिष्क की सबलता उसके साहित्य की भित्ति पर है। साहित्य की अभिवृद्धि पर कोष की वृद्धि होती है, यह अटल सिद्धान्त है। जिस भाषा में जितने अधिक कोष प्राप्त होते हैं वही सजीव मानी जाती है। जिस भाषा में जितने कम शब्दकोष मिलते हैं वह उतनी ही मृत और उसकी सभ्यता विकसित अथवा इषन्मुकुलित मानी जाती है। इसलिए निर्विवाद सिद्ध हुआ कि साहित्य और कोष का पारस्परिक दृढ़ सम्बन्ध है।

कोष निर्माण की ओर भारतीय विद्वानों की पूर्ण अभिरुचि थी। वे जानते थे कि—

'अवैयाकरणस्त्वन्धः बधिरः कोषविवर्जितः।'

बिना कोष का राजा और बिना कोष का विद्वान निरर्थक है। कविता, वक्तृता एवं निबन्ध लिखनेवालों के लिए कोष अत्यन्त आवश्यक वस्तु है। भारतवर्ष में वैदिककाल से लेकर आज तक अनेक कोषग्रन्थ रचे गये। यदि इसका अभाव होता तो भिन्न २ काल में प्रचलित भिन्न-भिन्न शब्दों का भिन्न-भिन्न अर्थ मालूम करना दुष्कर कार्य होता। शब्दों का लिङ्ग ज्ञान करना व्याकरण के साथ कोष का भी कार्य है। पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान और एक शब्द के अनेक अर्थ कोष की कृपा से विदित होते हैं। अतः स्पष्ट है कि संस्कृत साहित्य के गहन वन में प्रविष्ट होने के लिए कोषरूपी वन-पथ-प्रदर्शक की नितान्त आवश्यकता है।

प्राचीन काल में कोष श्लोकबद्ध नहीं होते थे, जैसे वैदिक कोष निघण्टु। लौकिक संस्कृत के कोष प्रायः श्लोकबद्ध ही मिलते हैं। कोषकारों ने अधिकतया अनुष्टुप् का ही आश्रय लिया है। प्रस्तुत पुस्तक-अमर-कोष के पूर्व व्याडि, वररुचि, भागुरि और धन्वन्तरि ये कोषकार तथा त्रिकाण्ड, उत्पलिनी, रत्नकोष एवं माला ये कोष-ग्रन्थ उपलब्ध थे। अमरकोष के अनन्तर संस्कृत-साहित्य-सरिता में कोषों की बाढ़-सी आ गयी। भारतीय दृष्टिपथ पर शाश्वत कृत अनेकार्थसमुच्चय, हलायुध कृत अभिधानरत्नमाला, यादव प्रकाश की वैजयन्ती, महेश्वर कृत विश्वप्रकाश, हेमचन्द्र की अभिधान-

चिन्तामणि, अनेकार्थ संग्रह, देशी नाम माला (प्राकृत कोष), वनस्पति विद्या सम्बन्धी निघण्टु शेष, पुरुषोत्तम देव कृत त्रिकाण्डकोष आदि अङ्कित हुए।

सब में सर्वश्रेष्ठ एवं लोकोपयोगी 'अमरकोष' सिद्ध हुआ। पूर्ववर्ती कोशकारों की कठिनाइयों का अमरसिंह को पूरा पता था। इसीलिए उन्होंने वैसी शैली निकाली जो अद्वितीय ठहरी। अमरकोष की रचना में पूर्व के अनेक कोषों से सहायता ली गयी है।

यद्यपि कोष परिगणन के अवसर पर—

मेदिन्यमरमाला च त्रिकाण्डो रत्नमालिका।
रन्तिदेवो भागुरिश्च व्याडिः शब्दार्णवस्तथा॥
द्विरूपश्च कलिङ्गश्च रभसः पुरुषोत्तमः।
दुर्गोऽभिधानमाला च संसारावर्त-शाश्वतौ॥
विश्वो बोपालितश्चैव वाचस्पति-हलायुधौ।
हारावली साहसाङ्को विक्रमादित्य एव च॥
हेमचन्द्रश्च रुद्रश्चाप्यमरोऽयं सनातनः।

—कहकर इसे प्राचीन सिद्ध किया गया है तथापि इनमें से कई कोष उनके समय में विद्यमान थे। अमरकोष के प्राचीन टीकाकार क्षीरस्वामी और सर्वानन्द ने इसके पूर्ववर्ती कोष, उनके प्रणेताओं में व्याडि की उत्पलिनी, कात्यायन का कात्य कोष, वाचस्पति का शब्दार्णव, भागुरि का त्रिकाण्ड कोष, विक्रमादित्य का संसारावर्त, धन्वन्तरि का निघण्टु, अमरदत्त को अमरमाला, वररुचि की लिङ्गविशेषविधि आदि का उल्लेख किया है। इन कोषों की विशेषताएँ अमरकोष में पायी जाती हैं और स्वयं अमरसिंह ने इसे स्वीकार किया है कि—

'समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्॥'

यही कारण है कि इसके बाद कोई कोष इतना प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय न हो सका। इसकी उपादेयता निरन्तर बढ़ती ही गयी और ४० से अधिक टीकाकारों ने टीकाएँ कर डालीं।

प्राचीन काल की परिपाटी थी कि लोग ग्रन्थ रचना में सौन्दर्य का विशेष ध्यान रखते थे। उनकी कृति में कोई त्रुटि न रह जाय इसका विचार रखते थे। विषय को साङ्गोपाङ्ग वर्णन करना ही उन्हें अभीष्ट था। वे आत्म-परिचय को अपने मार्ग का कण्टक समझते थे। वे जानते थे कि यदि हमारी पुस्तक सर्वाङ्ग सुन्दर है तो जनता अवश्य आकृष्ट होगी। इसीलिए केवल अपना नाम लिख देते थे। यह तो बीसवीं सदी का आविष्कार है कि लोग अपना दो हाथ लम्बा नाम और आधा फार्म परिचय लिखते हैं।

अमरसिंह कौन थे ? किस प्रान्त के निवासी थे ? आदि प्रश्नों के उत्तर अभी भविष्य के गर्भ में छिपे हुए हैं। केवल अनुमान से लोगों ने कहा है और यहाँ उसीको

आधार मानकर कहा जाता है। वे बौद्ध थे क्योंकि 'अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः' आदि कहकर ब्रह्मा विष्णु विश्वेश्वर की नाम-गणना के पूर्व 'सर्वज्ञः सुगतो बुद्धः' का वर्णन कर मङ्गलाचरण के अस्पष्ट अंश ज्ञान-दया-सिन्धु को स्पष्ट कर दिया। इसीसे 'अमरसिंहो हि पापीयान्सर्वं भाष्यमचूचुरत्' कहा है। बुद्ध भगवान पीपल के पेड़ के नीचे सम्यक् सम्बुद्ध हुए थे और बौद्ध लोग इस पेड़ को 'बोधिद्रुम' कहते हैं। उसका उल्लेख अमरसिंह भी करते हैं। बौद्धों के यहाँ त्रिपिटकाचार्य आदि बड़े-बड़े महात्माओं की समाधि होती थी जिसे 'एडुक' कहते थे। गवर्नमेण्ट द्वारा खुदाई कराने पर बहुत से ऐसे स्तूप मिले हैं। इन प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि वे बौद्ध थे। मिस्टर एलन कृत 'गुप्तवंशीय राजाओं के सिक्कों की सूची' नामक ग्रन्थ से पता चलता है कि गुप्तवंशीय नरपतिगणों की मुद्राओं पर 'सिंह विक्रमः', 'सिंहचन्द्रः' 'सिंहमहेन्द्रः' आदि उपाधियाँ मिलती हैं। सम्भवतः 'अमरसिंहः' नाम भी इस प्रकार की उपाधियों में हो।

इसी प्रकार इनके निवास स्थान के सम्बन्ध में भी कई मत हैं। कुछ लोगों का कहना है कि द्वितीय काण्ड में गुजरात की साबरमती (शरावती) नदी को सीमा मानकर जो 'प्राच्य' और 'उदीच्य' देश का उल्लेख किया है इससे वे गुजरात काठियावाड़ के निवासी ठहरते हैं।

विद्वानों ने अमरसिंह का समय निर्णय करके बतलाया है कि वे ई० सन् की चौथी सदी में हुए। कालनिर्णय करने के लिए हमें सर्व प्रथम एकदम अन्तिम अवधि अर्थात् उपलब्ध सर्व प्राचीन टीका को मानना पड़ेगा—

(१) क्षीरस्वामी ग्यारहवीं सदी के द्वितीयार्द्ध में हुए। ये अपनी टीका में भोज का उल्लेख करते हैं और गणरत्नमहोदधि में वर्द्धमान इनका जिक्र करते हैं। इससे इनका समय निर्णय हुआ।

(२) क्षीरस्वामी के कथनानुसार भागुरि मालाकार के पहले हुए। 'एतच्च द्रप्सं शरमिति भागुरिपाठे सरमिति बुध्वा मालाकारो भ्रान्तः।' ये टीकाएँ क्षीरस्वामी के समय में उपलब्ध थीं।

(३) शाश्वत का अनेकार्थ समुच्चय अमरकोष के नानार्थवर्ग से अधिक विस्तृत है। यह इस बात का प्रमाण है कि अवशेष अर्थों को भी लिखकर उन्होंने पूरा किया। इससे उनसे भी प्राचीन अमरसिंह हुए। ब्रह्मवर्ग में कहा गया है कि 'आतिथ्य' का मतलब 'अतिथ्यर्थ' है 'क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि' (ब्रह्मवर्ग, श्लोक ३) कात्य और माला के अनुसार 'आतिथ्यः = अतिथिः' तथा शाश्वत ने दोनों अर्थ बतलाया है। इसपर क्षीरस्वामी कहते हैं—

'कात्यस्त्वाह—आवेशिकं विपश्चिद्भिरातिथ्यमभिधीयते,
आतिथ्योतिथिरागन्तुरिति च **माला**,

शाश्वतोत एवोभयमाह—आतिथ्यं स्यादतिथ्यर्थ आतिथ्यमतिथिं विदुः ।'

यह एक जबर्दस्त प्रमाण है कि अमर के बाद शाश्वत हुए।

(४) कालवर्ग में कहा गया है कि 'द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुः ।' इससे स्पष्ट है कि अमरसिंह के समय में अगहन मास से वत्सरारम्भ होता था। गणितशास्त्र के अनुसार यह समय आज से १५००–१६०० वर्ष पूर्व का था। अतः अमरसिंह का समय चौथी सदी हुआ।

(५) यद्यपि वे बौद्ध थे तथापि पाणिनि के व्याकरण के अनुसार चलनेवाले थे। उन्होंने प्रसिद्ध बौद्ध वैयाकरण चन्द्रगोमिन् के सूत्र 'ईश्वरार्थादराज्ञः सभा' का अनुवाद न करके, पाणिनि के सूत्र 'सभाराजामनुष्यपूर्वा' का अनुवाद 'शालार्थापि परा राजामनुष्यार्थादराजकात्' किया है। चूँकि चन्द्रगोमिन्—जिनसे वैयाकरण वसुरात (४८० ई० सन्) ने व्याकरण की शिक्षा पाई थी—पाँचवीं सदी में हुए तो अमर उनसे पूर्व चौथी सदी में हुए ही होंगे।

(६) वे बौद्ध होते हुए भी सांख्यदर्शन के मतानुयायी थे। देखिए, 'क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम्' कपिल के इस सिद्धान्त में ईश्वरकृष्ण (अथवा विन्ध्यवासिन्) ने सुधार किया था। अमर कहते हैं–'अन्तराभवसत्त्वेश्वे गन्धर्वो दिव्यगायने' (नानार्थ वर्ग) अन्तराभवसत्त्व गन्धर्व शब्द का वाचक है। कुमारिल भट्ट श्लोकवार्तिक में लिखते हैं—'अन्तराभवदेहस्तु नेष्यते विन्ध्यवासिना। तदस्तित्वे प्रमाणं हि न किञ्चिदवगम्यते। अर्थात् अन्तराभवसत्त्व के सिद्धान्त को विन्ध्यवासिन् स्वीकार नहीं करते। इससे स्पष्ट है कि ईश्वरकृष्ण द्वारा प्रचार किया हुआ सांख्यदर्शन का यह सुधरा रूप अमरसिंह को नहीं मालूम था। अतः इस बात से सिद्ध हुआ कि अमरसिंह ईश्वरकृष्ण के पूर्व अर्थात् ४ थी सदी में हुए।

(७) अमरकोष का चीनी और तिब्बती भाषा में छठी सदी में अनुवाद हुआ था। चीनी अनुवाद उज्जयिनी के गुणरात ने किया था। जब इस ग्रन्थ का अनुवाद छठी सदी में हुआ तो सौ दो सौ वर्ष पूर्व उसकी रचना हुई होगी क्योंकि इतना समय इसके प्रचार और लोकप्रिय होने के लिए देना ही पड़ेगा। इससे भी चौथी सदी का समय मालूम हुआ।

(८) पाश्चात्य विद्वानों का अनुमान है कि गया के बौद्ध मन्दिर बनवानेवाले ये ही अमरसिंह हैं। यदि उन विद्वानों का सिद्धान्त मान लिया जाय तो भी इनका समय चौथी सदी में होगा; क्योंकि कनिंगहम आदि पुरातत्त्वविशारदों का कथन है कि गया का बौद्ध मन्दिर को, शिल्पकला के आधार पर, कहा जा सकता है कि यह खीष्टीय पाँचवीं सदी के पूर्व में बना होगा।

प्रस्तुत पुस्तक के अमरकोष और नाम लिङ्गानुशासन ये दो नाम हैं। इसमें तीन काण्ड हैं। प्रत्येक काण्ड में कई वर्ग हैं, जैसे—

प्रथम काण्ड में—(१) स्वर्ग वर्ग (२) व्योम वर्ग (३) दिग्वर्ग (४) कालवर्ग (५) धीवर्ग (६) शब्दादिवर्ग (७) नाट्यवर्ग (८) पातालभोगिवर्ग (९) नरकवर्ग (१०) वारिवर्ग।

द्वितीय काण्ड में—(१) भूमिवर्ग (२) पुरवर्ग (३) शैलवर्ग (४) वनौषधिवर्ग (५) सिंहादिवर्ग (६) मनुष्यवर्ग (७) ब्रह्मवर्ग (८) क्षत्रियवर्ग (९) वैश्यवर्ग (१०) शूद्रवर्ग।

तृतीयकाण्ड में—(१) विशेष्यनिघ्नवर्ग (२) सङ्कीर्णवर्ग (३) नानार्थवर्ग (४) अव्यय वर्ग (५) लिङ्गादिसंग्रहवर्ग।

जब तक किसी संस्कृत ग्रन्थ की संकेतमात्र भी हिन्दी नहीं रहती तो जनसाधारण के लिए उसका समझना कठिन हो जाता है। इस अभाव को दूर करने के लिए मैंने कुछ प्रयत्न किया है। जहाँ तक सम्भव हुआ है और ग्रन्थ विस्तृत न हो इसका भी विचार रखते हुए समुचित साहित्यिक, ऐतिहासिक, आयुर्वेदिक आदि टिप्पणियाँ दी गयी हैं। उन्हें आप दूसरे और तीसरे काण्ड में अवलोकन कर सकते हैं। जनता के हृत्तट पर जो विचारधाराएँ टक्कर खाती रहती हैं और जिनसे प्रशान्त मन-सागर क्षुब्ध होता रहता है उसकी शान्ति की निवृत्ति के लिए इस प्रकार की हिन्दी टीका प्रथम बार ही नेत्रों के सम्मुख आ रही है। 'अनुवाद कैसा हुआ' इसका निर्णय अपने सहृदय पाठकों पर ही छोड़ता हूँ। इसमें जो कुछ त्रुटि रह गयी हो उसके लिये क्षमा माँगता हूँ तथा आशा करता हूँ कि अग्रिम संस्करण में सूचित करने पर वे दूर कर दी जायँगी।

अन्त में श्रद्धेय पण्डित श्रीरामतेजजी पाण्डेय साहित्य शास्त्री को धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने मुझे समय कम रहने पर, प्रूफ संशोधन कार्य में मेरी बड़ी सहायता की है। तीसरे काण्ड की टीका लिखते समय मुझे ज़रा भी अवकाश नहीं था उस समय क़ापी तैयार करने में भी आपने बड़ी उदारता दिखलायी।

रथयात्रा,
संवत् १९९४

विदुषामनुचरः—
मन्नालाल 'अभिमन्यु'

अमरकोषस्थवर्गानुक्रमणिका

॥ श्रीः ॥

अमरकोषः

भाषाटीकासहितः

प्रथमं काण्डम्

(मङ्गलाचरणम्)

यस्य ज्ञानदयासिन्धोरगाधस्यानघा गुणाः।
सेव्यतामक्षयो धीराः स श्रिये चामृताय च॥१॥

अन्वयः—(हे धीराः! सः, अक्षयः, श्रिये, च, अमृताय, च, (भवद्भिः) सेव्यताम्, ज्ञान सिन्धोः, अगाधस्य, यस्य, अनघाः, गुणाः, च, (सन्ति)॥१॥

टीका—हे पंडितो! जिस अगाध ज्ञान और दयाके रत्नाकर परमात्मा के (सत्य, शौच, दया, क्षान्ति, त्याग आदि) निर्मल निष्पाप गुण हैं उस अविनाशी ज्ञानप्रद की सेवा संपत्ति तथा अमरत्व प्राप्ति के लिये करो॥१॥

(प्रस्तावना)

समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रतिसंस्कृतैः।
सम्पूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिङ्गानुशासनम्॥२॥

अन्वयः—अन्यतन्त्राणि, समाहृत्य, संक्षिप्तैः, प्रतिसंस्कृतैः, वर्गैः, (युक्तं), सम्पूर्णम्, नामलिङ्गानुशासनम्, (मया), उच्यते॥२॥

टीका—अन्य शास्त्रों को एकत्र कर (अथवा संग्रह कर) संक्षिप्त (अर्थात् अल्प विस्तार और बहुत अर्थ गर्भित), प्रति संस्कृत (अर्थात् प्रति पद के प्रकृतिप्रत्यय के विचार से संस्कार किए हुए) वर्ग (सजातीय) समूहों से परिपूर्ण नाम (स्वर्ग-आदि) और लिङ्ग (स्त्री० पुं० नपुंसक) को प्रतिपादित करनेवाला शास्त्र कहता हूँ॥२॥

(परिभाषा)

प्रायशो रूपभेदेन साहचर्याच्च कुत्रचित्।
स्त्री-पुं-नपुंसकं ज्ञेयं तद्विशेषविधेः क्वचित्॥३॥

अन्वयः—अत्र, प्रायशः, रूपभेदेन, च, (पुनः), कुत्रचित्, साहचर्यात्, क्वचित्, तद्विशेषविधेः, स्त्री-पुं-नपुंसकं ज्ञेयम्॥३॥

टीका—इस कोश में बहुधा रूपभेद द्वारा स्त्री लिङ्ग, पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग मालूम करना। यथा—['लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा' श्लोक संख्या २८] इत्यादि में स्त्रीलिङ्ग के रूप हैं; और 'पिनाकोऽजगवं धनुः' श्लोक संख्या ३७ इत्यादि में 'पिनाकः' पुल्लिङ्ग का रूप है और 'अजगवं, धनुः' ये नपुंसक लिङ्ग के रूप हैं।]

और किसी स्थान में साहचर्य [अर्थात् निकटवर्ती शब्द की समीपता से लिङ्ग जानना [यथा—'अश्वयुगश्विनी' दिग्वर्ग का २१वाँ श्लोक। इसमें 'अश्विनी' स्त्रीलिङ्ग का रूप है इसकी समीपता से 'अश्वयुक्' को भी स्त्रीलिङ्ग जानना।]

और कहीं लिङ्गों की विशेष विधि से स्त्री० पुं० नपुंसक लिङ्ग जानना [यथा—'भेरी स्त्री दुंदुभिः

१ सत्यं शौचं दया क्षान्तिस्त्यागः सन्तोष आर्जवम्।
शमो दमस्तपः साम्यं तितिक्षोपरतिः श्रुतम्॥
ज्ञानं विरक्तिरैश्वर्यं शौर्यं तेजो बलं स्मृतिः।
स्वातन्त्र्यं कौशलं कान्तिर्धैर्यं मार्दवमेव च॥
इत्यादयो गुणाः।

पुमान्' नाट्यवर्ग का ६ठा श्लोक यहाँ 'भेरी' के आगे स्त्री और दुंदुभि के आगे पुमान् लिखा है। अतः भेरी स्त्रीलिङ्ग है और दुंदुभि पुँल्लिङ्ग है ॥३॥

भेदाख्यानाय न द्वन्द्वो नैकशेषो न सङ्करः।
कृतोऽत्र भिन्नलिङ्गानामनुक्तानां क्रमादृते: ॥४॥

अन्वयः—अत्र, अनुक्तानां, भिन्नलिङ्गानां, भेदाख्यानाय, द्वन्द्वः, न, कृतः, एकशेषः, न, (कृतः), क्रमात्, ऋते, सङ्करः, न, (कृतः) ॥४॥

टीका—इस कोष में अव्युत्पादित भिन्न-भिन्न लिङ्गवाले नामों का लिंग भेद बतलाने के लिये द्वन्द्व समास नहीं किया गया है [यथा—'कुलिशं भिदुरं पविः' स्वर्गवर्ग का ५० वाँ श्लोक] इसका 'कुलिश-भिदुर-पवयः' नहीं किया, क्योंकि 'कुलिश' और 'भिदुर' नपुंसकलिंग हैं और 'पवि' पुँल्लिंग है।]

और एकशेष द्वन्द्वसमास भी नहीं किया गया है। [यथा—'नभः खं श्रावणो नभाः'-नानार्थवर्ग का २३२ वाँ श्लोक] इसका 'खश्रावणौ तु नभसी' नहीं किया; क्योंकि ये प्रत्येक पृथक्-पृथक् लिंगवाचक हैं;

और क्रम के बिना भिन्न लिंगों के पदों में संकर (मिश्रण) नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से साहचर्य द्वारा लिंगका ज्ञान नहीं होता; [यथा—'स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः' शब्दादि वर्ग का ११ वाँ श्लोक] इसका 'स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः' ऐसा संकर नहीं किया, क्योंकि 'स्तव' पुँल्लिंग 'स्तोत्रं' नपुंसक, साहचर्य से 'स्तुति' 'नुति' ये स्त्रीलिंग हैं। [और उक्त भिन्न लिङ्गों का द्वन्द्व और एकशेष द्वन्द्व-समास किया है। [यथा, 'विद्याधराप्सरोयक्ष-रक्षोगन्धर्वकिन्नराः' स्वर्ग वर्ग का ११ वाँ श्लोक] इसमें भिन्न भिन्न लिंगवाचकों में 'अप्सरस्' शब्द का समास हुआ है क्योंकि 'स्त्रियां बहुष्व-प्सरसः' स्वर्ग वर्ग के ५५ वें श्लोक में 'अप्सरस्' शब्द का स्त्रीलिंग निश्चित होगया है और [माता-पितरौ पितरौ' मनुष्य वर्ग का ३७ वाँ श्लोक] इसका 'पितरौ' ऐसा विभिन्न लिंगवाचियों का एक शेष द्वन्द्व समास हुआ है क्योंकि 'जनयित्री प्रसू-र्माता' मनुष्य वर्ग के २६ वें श्लोक में मातृशब्द का लिङ्ग निश्चय हो चुका है] ॥४॥

त्रिलिङ्ग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति।
निषिद्धलिङ्गं शेषार्थं त्वन्ताथादि न पूर्वभाक्॥५

अन्वयः—त्रिलिंग्यां, 'त्रिषु' इति, पदम्, तु, मिथुने, 'द्वयोः' इति, (पदम्), निषिद्धलिङ्गं, शेषार्थम्, (ज्ञेयम्); त्वन्ताथादि, पूर्वभाक्, न, (इति ज्ञेयम्) ॥५॥

टीका—जो शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं उनके लिए 'त्रिषु' पद लिखा है, यथा—['त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः' स्वर्ग वर्ग का ६०वाँ श्लोक। अर्थात् स्फुलिंग तीनों लिङ्गों में होता है।]

जो शब्द मिथुन (स्त्रीलिंग-पुँल्लिङ्ग) वाचक हैं उनके आगे 'द्वयोः' ऐसा पद लिखा है। [यथा—'वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलौ' स्वर्गवर्ग का ६० वां श्लोक अर्थात् 'ज्वाल' और 'कील' ये स्त्री-पुँल्लिङ्ग में होते हैं।] और जहाँ जिस लिङ्ग का निषेध हो वहाँ उसके अतिरिक्त शेषलिङ्ग समझना [यथा—'व्योम-यानं विमानोऽस्त्री' स्वर्गवर्ग का ५१वां श्लोक। यहाँ 'विमान' शब्द में स्त्रीलिङ्ग का निषेध है। अतः विमान शब्द शेष लिङ्गों (पुँल्लिङ्ग नपुंसक) में है।]

और जिसके अन्त में 'तु' शब्द रहे और जिसके आरम्भ में 'अथ' शब्द रहे वे शब्द पूर्वभाक् (अर्थात् पूर्व के साथ सम्बन्धित) नहीं होते। [यथा—'पुलोमजा शचीन्द्राणी नगरी त्वमरावती' स्वर्गवर्ग का ४८वाँ श्लोक। यहाँ 'तु' शब्दान्त से नगरी का सम्बन्ध अमरावती से है, इन्द्राणी से नहीं। और 'नित्यानवरताजस्रमप्यथातिशयो भरः' स्वर्गवर्ग का ६६वाँ श्लोक। यहाँ 'अतिशय' शब्द के पूर्व 'अथ' है जिससे इसका सम्बन्ध आगे वाले शब्द 'भर' से है, 'अजस्र' के साथ नहीं।] ॥५॥

अथ स्वर्गवर्गः

(नव नामानि स्वर्गस्य)

स्वरव्ययं स्वर्ग-नाक-त्रिदिव-त्रिदशालयाः ।
सुरलोको द्यो-दिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम् ६

स्वर्ग के ६ नाम—(१) स्वः (२) स्वर्ग (३) नाक (४) त्रिदिव (५) त्रिदशालय (६) सुरलोक (७) द्यो (८) दिव (९) त्रिविष्टप । इनमें (१) अव्यय, (२–६ तक) पुल्लिङ्ग, (७–८) स्त्रीलिङ्ग, (९वाँ) नपुंसक लिङ्ग है ॥६॥

(षड्विंशतिर्देवानाम्)

अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।
सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः ॥७॥
आदितेया दिविषदो लेखा अदितिनन्दनाः ।
आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः
बर्हिर्मुखाः क्रतुभुजो गीर्वाणा दानवारयः ।
वृन्दारका दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्॥९

देवताओं के २६ नाम—(१) अमर (२) निर्जर (३) देव (४) त्रिदश (५) विबुध (६) सुर (७) सुपर्वन् (८) सुमनस् (९) त्रिदिवेश (१०) दिवौकस् (११) आदितेय (१२) दिविषद् (१३) लेख (१४) अदिति-नन्दन (१५) आदित्य (१६) ऋभु (१७) अस्वप्न (१८) अमर्त्य (१९) अमृतान्धस् (२०) बर्हिर्मुख (२१) क्रतुभुज् (२२) गीर्वाण (२३) दानवारि (२४) वृन्दारक (२५) दैवत (२६) देवता । इनमें 'दैवत' शब्द नपुंसक लिङ्ग में है किन्तु विकल्प से पुँल्लिङ्ग में भी होता है । 'देवता' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है । शेष शब्द पुँल्लिङ्ग हैं ॥७–९॥

(नव गणदेवानाम्)

आदित्य[1]-विश्व-वसवस्तुषिताभास्वरानिलाः ।
महाराजिक-साध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः॥१०॥

गणदेवताओं के ९ नाम—(१) आदित्य (२) विश्व (३) वसु (४) तुषित (५) आभास्वर (६) अनिल (७) महाराजिक (८) साध्य (९) रुद्र ।

(दश देवयोनयः)

[2]विद्याधराप्सरो-यक्ष-रक्षो-गन्धर्व-किन्नराः ।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः११

देवताओं की जातियों के १० भेद—(१) विद्याधर (२) अप्सरस् (३) यक्ष (४) रक्षस् (५) गन्धर्व (६) किन्नर (७) पिशाच (८) गुह्यक (९) सिद्ध (१०) भूत ।

(दश असुराणाम्)

असुरा दैत्य-दैतेय-दनुजेन्द्रारि-दानवाः ।
शुक्रशिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः॥१२

असुरों के १० नाम—(१) असुर (२) दैत्य (३) दैतेय (४) दनुज (५) इन्द्रारि (६) दानव (७) शुक्रशिष्य (८) दितिसुत (९) पूर्वदेव (१०) सुरद्विष

(अष्टादश बुद्धस्य)

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः ।
समन्तभद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः॥१३॥
षडभिज्ञो दशबलो[3]ऽद्वयवादी विनायकः ।
मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः

बौद्धमत प्रवर्तक भगवान् बुद्ध के १८ नाम—

---

१ आदित्या द्वादश प्रोक्ता, विश्वेदेवा दश स्मृताः । वसवश्चाष्टसंख्याताः, षट्त्रिंशत्तुषिता मताः॥ आभास्वराश्चतुःषष्टिर्वाताः पञ्चाशदूनकाः । महाराजिकनामानो द्वे शते विंशतिस्तथा ॥ साध्या द्वादश विख्याता, रुद्रा एकादश स्मृताः ॥ अर्थात्—आदित्य १२, विश्वेदेवा १०, वसु ८, तुषित ३६, आभास्वर ६४, अनिल ४९, महाराजिक २२०, साध्य १२, रुद्र ११, हैं।

२ विद्याधरा जीमूतवाहनादयः । अप्सरसो देवाङ्गनाः । यक्षाः कुबेरादयः । रक्षांसि मायाविनो लङ्कादिवासिनः । गन्धर्वास्तुम्बुरुप्रभृतयो देवगायनाः । किन्नरा अश्वादिमुखा नराकृतयः । पिशाचाः पिशिताशा भूतविशेषाः । गुह्यकाः मणिभद्रादयः । 'निधिं रक्षन्ति ये यक्षास्ते स्युर्गुह्यसंज्ञकाः ।' सिद्धाः विश्वावसुप्रभृतयः । भूताः बालग्रहादयो रुद्रानुचरा वा ।

३—दानं शीलं क्षमा वीर्यं ध्यान-प्रज्ञा-बलानि च । उपायः प्रणिधिर्ज्ञानं दश बुद्धबलानि वै ॥

(१) सर्वज्ञ (२) सुगत (३) बुद्ध (४) धर्मराज (५) तथागत (६) समन्तभद्र (७) भगवत् (८) मारजित् (९) लोकजित् (१०) जिन (११) षडभिज्ञ (१२) दशबल (१३) अद्वयवादिन् (१४) विनायक (१५) मुनीन्द्र (१६) श्रीघन (१७) शास्तृ (१८) मुनि।

(सप्त बुद्धावान्तरभेदस्य शाक्यमुनेः)

शाक्यमुनिस्तु यः ॥१४॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः।
गौतमश्चार्कबन्धुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥१५॥

बुद्ध के अवान्तर भेद शाक्यमुनि के ७ नाम — (१) शाक्यमुनि (२) शाक्यसिंह (३) सर्वार्थसिद्ध (४) शौद्धोदनि (५) गौतम (६) अर्कबन्धु (७) मायादेवीसुत ॥१४-१५॥

(विंशतिर्ब्रह्मणः)

ब्रह्माऽऽत्मभूः सुरज्येष्ठः परमेष्ठी पितामहः।
हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयम्भूश्चतुराननः॥१६॥
धाताऽब्जयोनिर्द्रुहिणो विरिञ्चिः कमलासनः।
स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृड् विधिः[१]

ब्रह्माजी के २० नाम—(१) ब्रह्मन् (२) आत्मभू (३) सुरज्येष्ठ (४) परमेष्ठिन् (५) पितामह (६) हिरण्यगर्भ (७) लोकेश (८) स्वयम्भू (९) चतुरानन (१०) धातृ (११) अब्जयोनि (१२) द्रुहिण (१३) विरिञ्चि (१४) कमलासन (१५) स्रष्टृ (१६) प्रजापति (१७) वेधस् (१८) विधातृ (१९) विश्वसृज् (२०) विधि ॥१६-१७॥

(षट्चत्वारिंशद्विष्णोः)

विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुण्ठो विष्टरश्रवाः।
दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः॥१८॥
दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो गोविन्दो गरुडध्वजः।
पीताम्बरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः
उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः।
पद्मनाभो मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः ॥२०॥
देवकीनन्दनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः।
वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः॥२१॥
विश्वम्भरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलाञ्छनः।
पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकान्तकः ॥२२॥
जलशायी विश्वरूपो मुकुन्दो मुरमर्दनः।

विष्णुभगवान् के ४६ नाम—(१) विष्णु (२) नारायण (३) कृष्ण (४) वैकुण्ठ (५) विष्टरश्रवस् (६) दामोदर (७) हृषीकेश (८) केशव (९) माधव (१०) स्वभू (११) दैत्यारि (१२) पुण्डरीकाक्ष (१३) गोविन्द (१४) गरुडध्वज (१५) पीताम्बर (१६) अच्युत (१७) शार्ङ्गिन् (१८) विष्वक्सेन् (१९) जनार्दन (२०) उपेन्द्र (२१) इन्द्रावरज (२२) चक्रपाणि (२३) चतुर्भुज (२४) पद्मनाभ (२५) मधुरिपु (२६) वासुदेव (२७) त्रिविक्रम (२८) देवकीनन्दन (२९) शौरि (३०) श्रीपति (३१) पुरुषोत्तम (३२) वनमालिन् (३३) बलिध्वंसिन् (३४) कंसाराति (३५) अधोक्षज (३६) विश्वम्भर (३७) कैटभजित् (३८) विधु (३९) श्रीवत्सलाञ्छन (४०) *पुराणपुरुष (४१) यज्ञपुरुष (४२) नरकान्तक (४३) जलशायिन् (४४) विश्वरूप (४५) मुकुन्द (४६) मुरमर्दन ॥१८-२२॥

(द्वे कृष्णपितुः)

वसुदेवोऽस्य जनकः स एवानकदुन्दुभिः ।२३।

इन (कृष्ण) के पिता के २ नाम—(१) वसुदेव (२) आनकदुन्दुभि ॥२३॥

(सप्तदश बलरामस्य)

बलभद्रः प्रलम्बघ्नो बलदेवोऽच्युताग्रजः।
रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः ॥२४॥
नीलाम्बरो रौहिणेयस्तालाङ्को मुसली हली।
सङ्कर्षणः सीरपाणिः कालिन्दीभेदनो बलः॥२५॥

बलराम के १७ नाम—(१) बलभद्र (२)

---

[१] नाभिजन्माण्डजः पूर्वोऽनिधनः कमलोद्भवः। सदानन्दो रजोमूर्तिः सत्यः को हंसवाहनः॥ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक पाया जाता है। इसके अनुसार (१) नाभिजन्मन् (२) अण्डज (३) पूर्व (४) अनिधन (५) कमलोद्भव (६) सदानन्द (७) रजोमूर्ति (८) सत्य (९) क (१०) हंसवाहन ये १० नाम ब्रह्मा के और हैं।

* अन्य पुस्तकों में 'पुराणपुरुष' से लेकर 'मुरमर्दन' तक श्लोक नहीं है अतः यहाँ केवल ३९ ही नाम गिनाये हैं।

प्रलम्बघ्न (३) बलदेव (४) अच्युताग्रज (५) रेवतीरमण (६) राम (७) कामपाल (८) हलायुध (९) नीलाम्बर (१०) रौहिणेय (११) तालाङ्क (१२) मुसलिन् (१३) हलिन् (१४) सङ्कर्षण (१५) सीरपाणि (१६) कालिन्दीभेदन (१७) बल ॥२४-२५॥

(एकविंशतिः कामस्य)

मदनो मन्मथो मारः प्रद्युम्नो मीनकेतनः ।
कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गः कामः पञ्चशरः स्मरः २६
शम्बरारिर्मनसिजः कुसुमेषुरनन्यजः ।
पुष्पधन्वा रतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः ॥२७॥
ब्रह्मसूर्ऋष्यकेतुः स्यात्

कामदेव (प्रद्युम्न) के २१ नाम-(१) मदन (२) मन्मथ (३) मार (४) प्रद्युम्न (५) मीनकेतन (६) कन्दर्प (७) दर्पक (८) अनंग (९) काम (१०) पञ्चशर (११) स्मर (१२) शम्बरारि (१३) मनसिज (१४) कुसुमेषु (१५) अनन्यज (१६) पुष्पधन्वन् (१७) रतिपति (१८) मकरध्वज (१९) आत्मभू (२०) ब्रह्मसू (२१) ऋष्यकेतु ॥२६-२७॥

(द्वे प्रद्युम्नसूनोः)

अनिरुद्ध उषापतिः ।

प्रद्युम्न के पुत्र अनिरुद्ध के २ नाम-(१) अनिरुद्ध (२) उषापति ।

(एकादश लक्ष्म्याः)

लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया २८
इन्दिरा लोकमाता मा क्षीरोदतनया रमा ।

लक्ष्मीजी के ११ नाम-(१) लक्ष्मी (२) पद्मालया (३) पद्मा (४) कमला (५) श्री (६) हरिप्रिया (७) इंदिरा (८) लोकमाता (९) मा (१०) क्षीरोदतनया (११) रमा ॥२८॥

(एकं विष्णुशङ्खस्य)

शङ्खो लक्ष्मीपतेः पाञ्चजन्यः

लक्ष्मीपति (विष्णु) के शंख का नाम-(१) पाञ्चजन्य ।

(एकं विष्णुचक्रस्य)

चक्रं सुदर्शनः ॥२९॥

विष्णु के चक्र का नाम-(१) सुदर्शन। (यह पुँल्लिंग के अतिरिक्त नपुंसक लिंग में भी होता है- 'सुदर्शनोऽस्त्रियां चक्रे' इति नामनिधानात् क्लीबेऽपि)।

(एकं विष्णुगदायाः)

कौमोदकी गदा

विष्णु की गदा का नाम (१) कौमोदकी स्त्रीलिंग)।

(एकं विष्णोः खड्गस्य)

खड्गो नन्दकः

विष्णु के खड्ग का नाम (१) नन्दक ।

(एकं विष्णोर्मणेः)

कौस्तुभो मणिः ।

विष्णु की मणि का नाम-(१) कौस्तुभ ।

(एकं विष्णोश्चापस्य)

चापः शार्ङ्गं मुरारेस्तु

मुरारि (विष्णु) के धनुष का नाम (१) शार्ङ्ग।

(एकं विष्णोः लाञ्छनस्य)

श्रीवत्सो लाञ्छनं स्मृतम् ॥३०॥

विष्णु के वक्षःस्थल पर के चिह्न का नाम-(१) श्रीवत्स ॥३०॥

(नव गरुडस्य)

गरुत्मान् गरुडस्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।
नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः॥३१

गरुड के ९ नाम-(१) गरुत्मत् (२) गरुड

---

१ 'अरविन्दमशोकं च चूतं च नवमल्लिका ।
नीलोत्पलं च पञ्चैते पञ्चबाणस्य सायकाः ॥'
'उन्मादनस्तापनश्च शोषणः स्तम्भनस्तथा ।
सम्मोहनश्च कामस्य पञ्च बाणाः प्रकीर्तिताः ॥'

(अश्वाश्च शैव्य-सुग्रीव-मेघपुष्प-बलाहकाः ।
सारथिर्दारुको मन्त्री ह्युद्धवश्चानुजो गदः ॥)
(इनके (१) शैव्य (२) सुग्रीव (३) मेघपुष्प (४) बलाहक ये चार घोड़े हैं। सारथी का नाम—दारुक। मन्त्री का नाम-उद्धव। छोटे भाई का नाम गद है ॥)

(३) तार्क्ष्य (४) वैनतेय (५) खगेश्वर (६) नागान्तक (७) विष्णुरथ (८) सुपर्ण (९) पन्नगाशन ॥३१॥

(अष्टचत्वारिंशच्छम्भोः)

शम्भुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महेश्वरः ।
ईश्वरः शर्व ईशानः शङ्करश्चन्द्रशेखरः ॥३२॥
भूतेशः खण्डपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।
मृत्युञ्जयःकृत्तिवासाः पिनाकी प्रमथाधिपः३३
उग्रः कपर्दी श्रीकण्ठः शितिकण्ठः कपालभृत् ।
वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ॥३४॥
कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।
हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यम्बकस्त्रिपुरान्तकः ॥३५
गङ्गाधरोऽन्धकरिपुः क्रतुध्वंसी वृषध्वजः ।
व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः३६
(अहिर्बुध्न्योऽष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः ।)

शिवजी के ४८ नाम–(१) शम्भु (२) ईश (३) पशुपति (४) शिव (५) शूलिन् (६) महेश्वर (७) ईश्वर (८) शर्व (९) ईशान (१०) शङ्कर (११) चन्द्रशेखर (१२) भूतेश (१३) खण्डपरशु (१४) गिरीश (१५) गिरिश (१६) मृड (१७) मृत्युञ्जय (१८) कृत्तिवासस् (१९) पिनाकिन् (२०) प्रमथाधिप (२१) उग्र (२२) कपर्दिन् (२३) श्रीकण्ठ (२४) शितिकण्ठ (२५) कपालभृत् (२६) वामदेव (२७) महादेव (२८) विरूपाक्ष (२९) त्रिलोचन (३०) कृशानुरेतस् (३१) सर्वज्ञ (३२) धूर्जटि (३३) नीललोहित (३४) हर (३५) स्मरहर (३६) भर्ग (३७) त्र्यम्बक (३८) त्रिपुरान्तक (३९) गङ्गाधर (४०) अन्धकरिपु (४१) क्रतुध्वंसिन् (४२) वृषध्वज (४३) व्योमकेश (४४) भव (४५) भीम (४६) स्थाणु (४७) रुद्र (४८) उमापति ॥३२-३६॥

(१ अहिर्बुध्न्य २ अष्टमूर्ति ३ गजारि ४ महानट)

(एकं जटाबन्धस्य)

कपर्दोऽस्य जटाजूटः

शिवजीके जटाजूट का १ नाम–(१) कपर्द ।

(द्वे शिवधनुषः)

पिनाकोऽजगवं धनुः ।

शिवजी के धनुष के २ नाम—(१) पिनाक (२) अजगव (नपु०) ।

(एकं शिवपरिचराणाम्)

प्रमथाः स्युः पारिषदाः

शिवजी के पारिषद का नाम – (१) प्रमथ ।

(ब्रह्मादिशक्तिदेवतानाम् एकैकम्)

ब्राह्मीत्याद्यास्तु मातरः ॥३७॥

ब्राह्मी इत्यादि मातृ हैं ॥३७॥

(त्रीणि ऐश्वर्यस्य)

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यम्

ऐश्वर्य के ३ नाम—(१) विभूति (२) भूति (३) ऐश्वर्य ।

(ऐश्वर्यस्य प्रभेदाः)

अणिमादिकमष्टधा ।

ऐश्वर्य के भेद—(१) अणिमादि ८

(एकविंशतिः पार्वत्याः)

उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी॥३८॥
शिवा भवानी रुद्राणी शर्वाणी सर्वमङ्गला ।
अपर्णा पार्वती दुर्गा मृडानी चण्डिकाऽम्बिका३९
आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ।

पार्वती जी के २१ नाम—(१) उमा (२)

---

१ स्कान्दे—
'शं करोमि सदा ध्यानात्परमं यन्निरामयम् ।
भूतानामसकृद्यस्मात्तेनाहं शङ्करः स्मृतः ॥'

२ 'धृतं कण्ठे विषं घोरं ततः श्रीकण्ठतामगात्'
इति नीलकण्ठस्तवः ॥

३ शिवपुराणे—
'पूज्यते यत्सुरैः सर्वैर्महांश्चैव प्रमाणतः ।
धातुर्महेति पूजायां महादेवस्ततः स्मृतः ॥'

४ स्कान्दे—
'नीलं येन ममाङ्गं तु रसात्तं लोहितं त्विषा ।
नीललोहित इत्येव ततोऽहं परिकीर्तितः ॥'

५ ब्राह्मी, माहेश्वरी, चैन्द्री, वाराही, वैष्णवी तथा ।
कौमारीत्यपि, चामुण्डा, चर्चिकेत्यष्टमातरः ॥
अर्थात्—ब्राह्मी, माहेश्वरी, ऐन्द्री, वाराही, वैष्णवी, कौमारी, चामुण्डा, चर्चिका—ये आठ मातृ हैं ॥

कात्यायनी (३) गौरी (४) काली (५) हैमवती (६) ईश्वरी (७) शिवा (८) भवानी (९) रुद्राणी (१०) शर्वाणी (११) सर्वमंगला (१२) अपर्णा (१३) पार्वती (१४) दुर्गा (१५) मृडानी (१६) चंडिका (१७) अंबिका (१८) आर्या (१९) दाक्षायणी (२०) गिरिजा (२१) मेनकात्मजा ॥३८-३९॥

(अष्टौ गणेशस्य)

विनायको विघ्नराज-द्वैमातुर-गणाधिपाः ॥४०॥
अप्येकदन्त-हेरम्ब-लम्बोदर-गजाननाः ।

गणेशजी के ८ नाम--(१) विनायक (२) विघ्नराज (३) द्वैमातुर (४) गणाधिप (५) एकदन्त (६) हेरम्ब (७) लम्बोदर (८) गजानन ॥४०॥

(सप्तदश स्कन्दस्य)

कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ॥४१॥
पार्वतीनन्दनः स्कन्दः सेनानीरग्निभूर्गुहः ।
बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखः शिखिवाहनः॥४२॥
षाण्मातुरः शक्तिधरः कुमारः क्रौञ्चदारणः ।

स्कन्द के १७ नाम—(१) कार्तिकेय (२) महासेन (३) शरजन्मन् (४) षडानन (५) पार्वतीनन्दन (६) स्कन्द (७) सेनानी (८) अग्निभू (९) गुह (१०) बाहुलेय (११) तारकजित् (१२) विशाख (१३) शिखिवाहन (१४) षाण्मातुर (१५) शक्तिधर (१६) कुमार (१७) क्रौञ्चदारण ॥४१-४२॥

(षण्णामानि नन्दिनः)

शृङ्गीभृङ्गी रिटिस्तुण्डीनन्दिको नन्दिकेश्वरः४३

नंदियों के ६ नाम—(१) शृंगिन् (२) भृंगिन् (३) रिटि (४) तुण्डिन् (५) नंदिक (६)* नंदिकेश्वर ॥४३॥

(पञ्चत्रिंशदिन्द्रस्य)

इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिडौजाः पाकशासनः ।
वृद्धश्रवाः शुनासीरः पुरुहूतः पुरन्दरः ॥४४॥
जिष्णुर्लेखर्षभः शक्रः शतमन्युर्दिवस्पतिः ।
सुत्रामा गोत्रभिद्वज्री वासवो वृत्रहा वृषा॥४५॥
वास्तोष्पतिः सुरपतिर्बलारातिः शचीपतिः ।
जम्भभेदी हरिहयः स्वाराण्नमुचिसूदनः ॥४६॥
संक्रन्दनो दुश्च्यवनस्तुराषाण्मेघवाहनः ।
आखण्डलः सहस्राक्ष ऋभुक्षाः

इन्द्र के ३५ नाम—(१) इन्द्र (२) मरुत्वत् (३) मघवन् (४) बिडौजस् (५) पाकशासन (६) वृद्धश्रवस् (७) शुनासीर (८) पुरुहूत (९) पुरन्दर (१०) जिष्णु (११) लेखर्षभ (१२) शक्र (१३) शतमन्यु (१४) दिवस्पति (१५) सुत्रामन् (१६) गोत्रभिद् (१७) वज्रिन् (१८) वासव (१९) वृत्रहन् (२०) वृषन् (२१) वास्तोष्पति (२२) सुरपति (२३) बलाराति (२४) शचीपति (२५) जम्भभेदिन् (२६) हरिहय (२७) स्वाराट् (२८) नमुचिसूदन (२९) संक्रन्दन (३०) दुश्च्यवन (३१) तुराषाट् (३२) मेघवाहन (३३) आखण्डल (३४) सहस्राक्ष (३५) ऋभुक्षन् ॥४४-४६॥

(त्रीणि इन्द्रपत्न्याः)

तस्य तु प्रिया ॥४७॥
पुलोमजा शचीन्द्राणी

उस (इन्द्र) की प्रिया के ३ नाम—(१) पुलोमजा (२) शची (३) इन्द्राणी ॥४७॥

(एकम् इन्द्रपुरस्य)

नगरी त्वमरावती ।

इन्द्र की नगरी का नाम—(१) अमरावती ।

(एकम् इन्द्राश्वस्य)

हय उच्चैः श्रवाः

इन्द्र के घोड़े का नाम—(१) उच्चैःश्रवस् ।

(एकम् इन्द्रसारथेः)

सूतो मातलिः

इन्द्र के सारथी का नाम—(१) मातलि ।

(एकम् इन्द्रोपवनस्य)

नन्दनं वनम् ॥४८॥

---

* अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—
कर्ममोटी तु चामुण्डा, चर्ममुण्डा तु चर्चिका ।
चामुण्डा के २ नाम—(१) कर्ममोटी (२) चामुण्डा ।
चर्चिका के २ नाम—(२) चर्ममुण्डा (२) चर्चिका ।

इन्द्र के उपवन का नाम (१) नन्दन ॥८॥

(एकम् इन्द्रप्रासादस्य)

स्यात्प्रासादो वैजयन्तः

इन्द्र के महल का नाम – (१) वैजयन्त ।

(द्वे इन्द्रपुत्रस्य)

जयन्तः पाकशासनिः ।

इन्द्र के पुत्र के २ नाम - (१) जयन्त (२) पाकशासनि ।

(चत्वारि इन्द्रगजस्य)

ऐरावतोऽभ्रमातङ्गैरावणाभ्रमुवल्लभाः ॥४६॥

इन्द्र के हाथी के ४ नाम—(१) ऐरावत (२) अभ्रमातंग (३) ऐरावण (४) अभ्रमुवल्लभ ॥४६॥

(दश वज्रस्य)

ह्रादिनी वज्रमस्त्री स्यात्कुलिशं भिदुरं पविः ।
शतकोटिःस्वरुः शम्बो दम्भोलिरशनिर्द्वयोः५०

वज्र के १० नाम – (१) ह्रादिनी (२) वज्र (३) कुलिश (४) भिदुर (५) पवि (६) शतकोटि (७) स्वरु (८) शम्ब (६) दम्भोलि (१०) अशनि। इनमें ह्रादिनी स्त्रीलिङ्ग; वज्र (स्त्रीलिङ्ग वर्जित) पुंल्लिङ्ग—नपुंसकलिङ्ग; कुलिश, भिदुर नपुंसक लिङ्ग पवि आदि पुंल्लिङ्ग; अशनि दोनों लिगों (पुँल्लिङ्ग-नपुंसक) में होते हैं ॥५०॥

(द्वे विमानस्य)

व्योमयानं विमानोऽस्त्री

विमान के २ नाम—(१) व्योमयान (२) विमान। इनमें 'विमान', स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर, पुंल्लिङ्ग और नपुंसक में होता है।

(एकं सुरर्षेः)

नारदाद्याः सुरर्षयः ।

देवर्षियों के नाम—(१) नारद आदि ।

(द्वे देवसभायाः)

स्यात्सुधर्मा देवसभा

देवताओं की सभा के २ नाम – (१) सुधर्मा (२) देवसभा ।

१ आद्येन तुम्बरु-भरत-पर्वत-देवलादयः।

(त्रीण्यमृतस्य)

पीयूषममृतं सुधा ॥५१॥

अमृत के ३ नाम —(१) पीयूष (२) अमृत (३) सुधा ॥५१॥

(चत्वारि मन्दाकिन्याः)

मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्णदी सुरदीर्घिका ।

स्वर्गगंगा के ४ नाम—(१) मन्दाकिनी (२) वियद्गङ्गा (३) स्वर्णदी (४) सुरदीर्घिका ।

(पञ्च मेरोः)

मेरुः सुमेरुर्हेमाद्री रत्नसानुः सुरालयः ॥५२॥

मेरु पर्वत के ५ नाम —(१) मेरु (२) सुमेरु (३) हेमाद्री (४) रत्नसानु (५) सुरालय ॥५२॥

(पञ्च देवतरूणाम्)

पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम् ५३

देवताओं के वृक्ष के ५ नाम—(१) मन्दार (२) पारिजात (३) सन्तान (४) कल्पवृक्ष (५) हरिचन्दन ॥ इनमें 'हरिचन्दन' नपुंसक है और विकल्प से पुँल्लिङ्ग भी होता है ॥५३॥

(द्वे ब्रह्मपुत्रस्य)

सनत्कुमारो वैधात्रः

ब्रह्मा के पुत्र के २ नाम—(१) सनत्कुमार (२) वैधात्र ।

(षडश्विनीकुमारयोः)

स्ववैद्यावश्विनीसुतौ ।
नासत्यावश्विनौ दस्रावाश्विनेयौ च तावुभौ५४

अश्विनीकुमारों के ६ नाम—(१) स्ववैद्य (२) अश्विनीसुत (३) नासत्य (४) अश्विन (५) दस्र (६) आश्विनेय (वे दो हैं अतः द्विवचन का प्रयोग किया गया है) ॥५४॥

(द्वे उर्वश्यादेः)

स्त्रियां बहुष्वप्सरसः स्ववेश्या उर्वशीमुखाः ।

उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्याओं के २ नाम–

२ घृताची मेनका रम्भा उर्वशी च तिलोत्तमा ।
सुकेशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्तेऽप्सरसो बुधैः ॥

(१) अप्सरस् (२) स्वर्वेश्या ॥ इनमें अप्सरस् शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है । यह जातिवाचक होने के कारण बहुवचनान्त है ।

(एकं देवगायकानाम्)

हाहा हूहूश्चैवमाद्या गन्धर्वास्त्रिदिवौकसाम्॥५५

'हाहा हूहू' (पु०) इत्यादि देवताओं के गन्धर्व (तुम्बरु, विश्वावसु, चित्ररथ प्रभृति) हैं ॥५५॥

(चतुस्त्रिंशदग्नेः)

अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।
कृपीटयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥५६॥
बर्हिः शुष्मा कृष्णवर्त्मा शोचिष्केश उषर्बुधः ।
आश्रयाशो बृहद्भानुः कृशानुः पावकोऽनलः॥५७
रोहिताश्वो वायुसखः शिखावानाशुशुक्षणिः ।
हिरण्यरेता हुतभुग्दहनो हव्यवाहनः ॥५८॥
सप्तार्चिर्दमुनाः शुक्रश्चित्रभानुर्विभावसुः ।
शुचिरप्पित्तम्

अग्नि के ३४ नाम—(१) अग्नि (२) वैश्वानर (३) वह्नि (४) वीतिहोत्र (५) धनञ्जय (६) कृपीटयोनि (७) ज्वलन (८) जातवेदस् (९) तनूनपात् (१०) बर्हि (११) शुष्मन् (१२) कृष्णवर्त्मन् (१३) शोचिष्केश (१४) उषर्बुध (१५) आश्रयाश (१६) बृहद्भानु (१७) कृशानु (१८) पावक (१९) अनल (२०) रोहिताश्व (२१) वायुसख (२२) शिखावत् (२३) आशुशुक्षणि (२४) हिरण्यरेतस् (२५) हुतभुज् (२६) दहन (२७) हव्यवाहन (२८) सप्तार्चिष् (२९) दमुनस् (३०) शुक्र (३१) चित्रभानु (३२) विभावसु (३३) शुचि (३४) अप्पित्त ॥५६—५८॥

(त्रीणि वाडवाग्नेः)

और्वस्तु वाडवो वडवानलः ॥५९॥

वडवानल के ३ नाम—(१) और्व (२) वाडव (३) वडवानल ॥५९॥

(पञ्च ज्वालायाः)

वह्नेर्द्वयोर्ज्वालकीलावर्चिर्हेतिः शिखा स्त्रियाम् ।

अग्नि की ज्वाला के ५ नाम—(१) ज्वाल (२) कील (३) अर्चिस् (४) हेति (५) शिखा । इनमें 'ज्वाल' और 'कील' दोनों (स्त्री-पुं) लिङ्गमें, 'अर्चिस्' स्त्री-नपुंसकलिङ्ग में; 'हेति' और 'शिखा' स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे अग्निकणस्य)

त्रिषु स्फुलिङ्गोऽग्निकणः

आग की चिनगारी के २ नाम—(१) स्फुलिङ्ग (२) अग्निकण । ये तीनों लिङ्गों (पुं-स्त्री-नपुंसक) में होते हैं ।

(द्वे सन्तापस्य)

सन्तापः संज्वरः समौ ॥६०॥

सन्ताप के २ नाम—(१) सन्ताप (२) संज्वर । ये दोनों समान अर्थ एवं समान लिङ्गवाले (पुं०) हैं ॥६०॥

(चतुर्दश यमस्य)

धर्मराजः पितृपतिः समवर्ती परेतराट् ।
कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराड्यमः॥६१
कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः ।

यमराज के १४ नाम—(१) धर्मराज (२) पितृपति (३) समवर्तिन् (४) परेतराज् (५) कृतान्त (६) यमुनाभ्रातृ (७) शमन (८) यमराज् (९) यम (१०) काल (११) दण्डधर (१२) श्राद्धदेव (१३) वैवस्वत (१४) अन्तक ॥६१॥

(पञ्चदश राक्षसस्य)

राक्षसः कौणपः क्रव्यात्क्रव्यादोऽस्रप आशरः॥६२
रात्रिञ्चरो रात्रिचरः कर्बुरो निकषात्मजः ।
यातुधानः पुण्यजनो नैर्ऋतो यातुरक्षसी ॥६३

राक्षसों के १५ नाम—(१) राक्षस (२) कौणप (३) क्रव्याद् (४) क्रव्याद (५) अस्रप (६) आशर (७) रात्रिञ्चर (८) रात्रिचर (९) कर्बुर (१०) निकषात्मज (११) यातुधान (१२) पुण्यजन (१३) नैर्ऋत (१४) यातु (१५) रक्षस् ।

१ 'काली कराली मनोजवा सुलोहिता सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वदासाख्याः सप्त वह्नेर्जिह्वा ।'

इनमें 'यातु' और 'रक्षस्' ये नपुंसक लिङ्ग हैं शेष पुँल्लिङ्ग ॥६२-६३॥

(पञ्च वरुणस्य)

प्रचेता वरुणः पाशी यादसाम्पतिरप्पतिः ।

वरुण के ५ नाम—(१) प्रचेतस् (२) वरुण (३) पाशिन् (४) यादसाम्पति (५) अप्पति ।

(विंशतिर्वायोः)

श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः ६४
पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहाऽनिलाऽऽशुगाः ।
समीर-मारुत-मरुज्जगत्प्राण-समीरणाः ॥६५॥
नभस्वद्वात-पवन-पवमान-प्रभञ्जनाः ।

वायु के २० नाम—(१) श्वसन (२) स्पर्शन (३) वायु (४) मातरिश्वन् (५) सदागति (६) पृषदश्व (७) गन्धवह (८) गन्धवाह (९) अनिल (१०) आशुग (११) समीर (१२) मारुत (१३) मरुत् (१४) जगत्प्राण (१५) समीरण (१६) नभस्वत् (१७) वात (१८) पवन (१९) पवमान (२०) प्रभञ्जन ॥६४-६५॥

(वातस्य प्रभेदाः)

प्रकम्पनो महावातो, झञ्झावातः सवृष्टिकः ६६

आँधी के २ नाम—(१) प्रकम्पन (२) महावात।

वर्षासहित आँधी का नाम—(१) झञ्झावात ॥६६॥

(पञ्च शरीरस्था वायुभेदाः)

प्राणोऽपानः समानश्चोदान-व्यानौ च वायवः ।
शरीरस्था इमे

शरीर में स्थित ५ वायुओं के नाम—(१) प्राण (हृदयस्थित वायु का नाम)। (२) अपान (गुदास्थित वायु का नाम) । (३) समान (नाभिस्थित वायु का नाम)। (४) उदान (कण्ठस्थित वायु का नाम) । (५) व्यान (समस्त शरीर में फिरनेवाली वायु का नाम)।

(पञ्च वेगस्य)

रंहस्तरसी तु रयः स्यदः ॥६७॥
जवः

वेग के ५ नाम—(१) रंहस् (२) तरस् (३) रय (४) स्यद (५) जव । इनमें 'रंहस्' 'तरस्' ये २ नपुंसक लिङ्ग, और शेष ३ पुल्लिङ्ग हैं ॥६७॥

(एकादश शीघ्रस्य)

अथ शीघ्रं त्वरितं लघु क्षिप्रमरं द्रुतम् ।
सत्वरं चपलं तूर्णमविलम्बितमाशु च ॥६८॥

शीघ्रता के ११ नाम—(१) शीघ्र (२) त्वरित (३) लघु (४) क्षिप्र (५) अर (६) द्रुत (७) सत्वर (८) चपल (९) तूर्ण (१०) अविलम्बित (११) आशु ॥६८॥

(नव निरन्तरस्य)

सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम् ।
नित्यानवरताजस्रमपि

निरन्तर (लगातार) के ९ नाम—(१) सतत (२) अनारत (३) अश्रान्त (४) सन्तत (५) अविरत (६) अनिश (७) नित्य (८) अनवरत (९) अजस्र ।

(चतुर्दशातिशयस्य)

अथातिशयो भरः ॥६९॥
अतिवेल-भृशात्यर्थातिमात्रोद्गाढ-निर्भरम् ।
तीव्रैकान्त-नितान्तानि गाढ-बाढ-दृढानि च७०

अतिशय (बहुत) के १४ नाम—(१) अतिशय (२) भर (३) अतिवेल (४) भृश (५) अत्यर्थ (६) अतिमात्र (७) उद्गाढ (८) निर्भर (९) तीव्र (१०) एकान्त (११) नितान्त (१२) गाढ (१३) बाढ (१४) दृढ ॥६९-७०॥

क्लीबे शीघ्राद्यसत्वे,

स्यात्त्रिष्वेषां सत्वगामि यत्

टीका—शीघ्र आदि (से लेकर दृढ पर्यंत) शब्द असत्व (विशेष्य वृत्ति न) होने पर क्लीब (नपुंसक) लिङ्ग में होते हैं [यथा—शीघ्रं कृत

---

१ हृदि प्राणो, गुदेऽपानः, समानो नाभिसंस्थितः ।
उदानः कण्ठदेशे स्याद्व्यानः सर्वशरीरगः ॥
अन्नं प्रवेशनं, मूत्राद्युत्सर्गोऽन्नविपाचनम् ।
भाषणादिनिमेषाश्च तद्व्यापाराः क्रमादमी ॥

वान्, भृशं मूर्खः, भृशं याति]। और जो इन ('शीघ्र' आदि) शब्दों में सत्वगामी (विशेष्य वाचक) हों वे तीनों लिङ्गों में होते हैं [यथा—शीघ्रा धेनुः, शीघ्रो वृषः, शीघ्रं गमनम्]। ('अतिशय' तथा 'भर' सर्वदा पुँल्लिङ्गवाचक हैं)

(सप्तदश कुबेरस्य)

कुबेरस्त्र्यम्बकसखो यक्षराड्गुह्यकेश्वरः ॥७१
मनुष्यधर्मा धनदो राजराजो धनाधिपः ।
किन्नरेशो वैश्रवणः पौलस्त्यो नरवाहनः ॥७२॥
यक्षैकपिङ्गैलविल-श्रीद-पुण्यजनेश्वराः ।

कुबेर के १७ नाम-(१) कुबेर (२) त्र्यम्बक-सख (३) यक्षराज् (४) गुह्यकेश्वर (५) मनुष्य-धर्मन् (६) धनद (७) राजराज (८) धनाधिप (९) किन्नरेश (१०) वैश्रवण (११) पौलस्त्य (१२) नरवाहन (१३) यक्ष (१४) एकपिङ्ग (१५) ऐलविल(१६) श्रीद (१७) पुण्यजनेश्वर ॥७१-७२॥

(एकं कुबेराक्रीडस्य)

अस्योद्यानं चैत्ररथम्

इन (कुबेर) के बाग का नाम—(१) चैत्ररथ ।

(एकं कुबेरपुत्रस्य)

पुत्रस्तु नलकूबरः ॥७३॥

(इनके) पुत्र का नाम—(१) नलकूबर ॥७३॥

(एकं कुबेरस्थानस्य)

कैलासः स्थानम्

(इनके) स्थान का नाम—(१) कैलास ।

(एकं कुबेरपुर्याः)

अलका पूः

(इनकी) नगरी का नाम—(१) अलका ।

(एकं कुबेरविमानस्य)

विमानं तु पुष्पकम् ।

(इनके) विमान का नाम—(१) पुष्पक ।

(चत्वारि किन्नरस्य)

स्यात्किन्नरः किम्पुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः ॥७४

किन्नरों के ४ नाम-(१) किन्नर (२) किम्पुरुष (३) तुरगवदन (४) मयु ॥७४॥

(द्वे सामान्यनिधेः)

निधिर्ना शेवधिः

खजाने के २ नाम—(१) निधि (२) शेवधि। ये दोनों शब्द नृ (पुँल्लिङ्ग) हैं ।

(निधिविशेषस्य प्रत्येकम्)

भेदाः पद्मशङ्खादयो निधेः ।

निधि के भेद—(१) पद्म (२) शंख आदि ।

(इति स्वर्गवर्गः १)

अथ व्योमवर्गः

(एकोनविंशतिराकाशस्य)

द्यो-दिवौ द्वे स्त्रियामभ्रं व्योम पुष्करमम्बरम् ।
नभोऽन्तरिक्षं गगनमनन्तं सुरवर्त्म खम् ॥१॥
वियद्विष्णुपदं वा तु पुंस्याकाशविहायसी ।
विहायसोऽपि नाकोऽपि द्युरपि स्यात्तदव्ययम् २
(तारापथोऽन्तरिक्षं च मेघाध्वा च महाबिलम्)

आकाश के १९ नाम—(१) द्यो (२) दिव् (३) अभ्र (४) व्योमन् (५) पुष्कर (६) अम्बर (७) नभस् (८) अन्तरिक्ष (९) गगन (१०) अनन्त (११) सुरवर्त्मन् (१२) ख (१३) वियत् (१४) विष्णुपद (१५) आकाश (१६) विहायस् (१७) विहायस (१८) नाक (१९) द्युस् ॥२॥ (तारापथ, अन्तरिक्ष, मेघाध्वन् महाबिलम्—ये ४ नाम किन्हीं २ पुस्तकों में पाये जाते हैं।) इनमें 'द्यो' और 'दिव्' ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं; 'आकाश' और 'विहायस्' नपुंसक लिङ्ग हैं किन्तु विकल्प से पुँल्लिङ्ग में भी होते हैं; 'विहायस' और 'नाक' पुँल्लिङ्ग में होते हैं; 'द्युस्' अव्यय है; शेष क्लीब हैं ॥१-२॥

(इति व्योमवर्गः २)

---

१ पद्मोऽस्त्रियां महापद्मः शङ्खो मकर-कच्छपौ ।
मुकुन्द-कुन्द-नीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥
अर्थात्—पद्म, महापद्म, शङ्ख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील, खर्व—ये ९ निधि हैं ॥

अथ दिग्वर्गः

(पञ्च दिशः)

दिशस्तु ककुभः काष्ठा आशाश्च हरितश्च ताः ।

दिशाओं के ५ नाम—(१) दिश् (२) ककुभ् (३) काष्ठा (४) आशा (५) हरित् ।

(प्रत्येकं द्वे द्वे चतसृणाम्)

प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः पूर्व-दक्षिण-पश्चिमाः।१। उत्तरा दिगुदीची स्यात्

पूर्व दिशा का नाम-(१) प्राची । दक्षिणदिशा का नाम-(१) अवाची । पश्चिम दिशा का नाम—(१) प्रतीची । उत्तर दिशा का नाम (१) उदीची ॥१॥

(एकं दिग्भवस्य)

दिश्यं तु त्रिषु दिग्भवे ।

दिशाओं में होनेवाली वस्तुओं के नाम - (१) दिश्य । (यथा—दिश्यो हस्ती, दिश्या हस्तिनी) यह तीनों लिङ्गों में होता है ।

(दिशां पतीनामेकैकम्)

इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् ॥२॥ कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनां दिशां क्रमात् ।

पूर्वादिक दिशाओं के स्वामियों का क्रम से नाम—पूर्वदिशा का पति—(१) इन्द्र । आग्नेय का (१) अग्नि । दक्षिण का—(१) पितृपति । नैर्ऋत्य का-(१) नैर्ऋत । पश्चिम का — (१) वरुण । वायव्यका—(१) मरुत् (पवन) । उत्तर का—कुबेर । ईशान का—(१) ईश (महादेवजी) ॥२॥

(दिग्गजाना मेकैकम्)

ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः॥३॥ पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ।

पूर्व दिशा के हाथी का नाम —(१) ऐरावत । आग्नेय कोण के हाथी का नाम—(१) पुण्डरीक । दक्षिण दिशा के हाथी का नाम (१) वामन । नैर्ऋत्य कोण के हाथी का नाम—(१) कुमुद । पश्चिम दिशा के हाथी का नाम—(१) अञ्जन । वायव्य कोण के हाथी का नाम—(१) पुष्पदन्त । उत्तर दिशा के हाथी का नाम—(१) सार्वभौम । ईशान कोण के हाथी का नाम—(१) सुप्रतीक ॥३॥

(ऐरावतादीनां हस्तिनीनामेकैकम्)

करिण्योऽभ्रमु-कपिला-पिङ्गलाऽनुपमाः क्रमात् ताम्रकर्णी शुभ्रदन्ती चाङ्गना चाञ्जनावती ।

उपरोक्त ऐरावत आदि हाथियों की हथिनियोंके क्रम से नाम—(१) अभ्रमु । (१) कपिला । (१) पिङ्गला । (१) अनुपमा । (१) ताम्रकर्णी । (१) शुभ्रदन्ती । (१) अङ्गना । (१) अञ्जनावती ॥४॥

(द्वे अग्न्यादिकोणस्य)

क्लीबाव्ययं त्वपदिशं दिशोर्मध्ये विदिक्स्त्रियाम्

दो दिशाओं के मध्यभाग [कोण] के २ नाम—(१) अपदिश (२) विदिश् ॥५॥ इनमें 'अपदिश्' नपुंसक और अव्यय भी है । 'विदिक्' स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥५॥

(द्वे मध्यमात्रस्य)

अभ्यन्तरं त्वन्तरालम्

बीच के स्थान के २ नाम (१)—अभ्यन्तर (२) अन्तराल ।

---

१ किन्हीं २ पुस्तकों में यह श्लोक मिलता है—

अवाग्भवमवाचीनमुदीचीनमुदग्भवम् ।
प्रत्यग्भवं प्रतीचीनं, प्राचीनं प्राग्भवं त्रिषु ॥१॥

अवाग्भव (दक्षिण दिशा में होनेवाली वस्तु) का नाम—(१) अवाचीन । उदग्भव (उत्तर दिशा में होनेवाली वस्तु) का नाम—(१) उदीचीन । प्रत्यग्भव (पश्चिम दिशा में होनेवाली वस्तु) का नाम—(१) प्रतीचीन । प्राग्भव (पूर्व दिशा में होनेवाले पदार्थ) का नाम—(१) प्राचीन । ये (अवाचीन-उदीचीन-प्रतीचीन-प्राचीन) शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(२) अन्य पुस्तकों में इतना अधिक है—

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशां चैव तथा ग्रहाः ॥

पूर्व दिशा के ग्रह का नाम—(१) रवि । आग्नेय का (१) शुक्र । दक्षिण का—(१) महीसूनु (मंगल) । नैर्ऋत्य का—(१) स्वर्भानु (राहु) । पश्चिम का—(१) भानुज (शनैश्चर) । वायव्य का—(१) विधु (चन्द्र) । उत्तर का (१) बुध । ईशान का (१) बृहस्पति ।

(द्वे मण्डलाकारेण परिणतसमूहस्य)

चक्रवालं तु मण्डलम् ।

मण्डलाकार समूह (घेरा) के २ नाम (१) चक्रवाल (२) मण्डल ।

(पञ्चदश मेघस्य)

अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः॥६॥
धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत् ।
घन-जीमूत-मुदिर-जलमुग्धूमयोनयः ॥ ७ ॥

मेघ के १५ नाम—(१) अभ्र (२) मेघ (३) वारिवाह (४) स्तनयित्नु (५) बलाहक (६) धाराधर (७) जलधर (८) तडित्वत् (९) वारिद (१०) अम्बुभृत् (११) घन (१२) जीमूत (१३) मुदिर (१४) जलमुच् (१५) धूमयोनि ॥६-७॥

(द्वे मेघपङ्क्तेः)

कादम्बिनी मेघमाला

मेघसमूह के २ नाम—(१) कादम्बिनी (२) मेघमाला ।

(एकं मेघभवस्य)

त्रिषु मेघभवेऽभ्रियम् ।

मेघ में होनेवाली वस्तु का नाम—(१) अभ्रिय। यह तीनों लिङ्गों में होता है (यथा—अभ्रिया आपः, अभ्रियः आसारः, अभ्रियं जलम्) ।

(चत्वारि मेघध्वनेः)

स्तनितं गर्जितं मेघनिर्घोषो रसितादि च॥८॥

बादल के गरजने की आवाज के ४ नाम—(१) स्तनित (२) गर्जित (३) मेघनिर्घोष (४) रसित ॥८॥

(दश विद्युतः)

शम्पा शतह्रदा-ह्रादिन्यैरावत्यः क्षणप्रभा ।
तडित्सौदामनी विद्युच्चञ्चला चपला अपि॥९॥

बिजली के १० नाम—(१) शम्पा (२) शतह्रदा (३) ह्रादिनी (४) ऐरावती (५) क्षणप्रभा (६) तडित् (७) सौदामनी (८) विद्युत् (९) चञ्चला (१०) चपला ॥९॥

(द्वे वज्रध्वनेः)

स्फूर्जथुर्वज्रनिर्घोषः

बिजली कड़कने के २ नाम—(१) स्फूर्जथु (२) वज्रनिर्घोष ।

(द्वे वज्राग्नेः)

मेघज्योतिरिरंमदः ।

बादलों की चमक के २ नाम—(१) मेघज्योति (२) इरंमद ।

(द्वे इन्द्रधनुषः)

इन्द्रायुधं शक्रधनुः

इन्द्रधनुष के २ नाम - (१) इन्द्रायुध (२) शक्रधनु ।

(एकमृजोरिन्द्रधनुषः)

तदेव ऋजुरोहितम् ॥१०॥

सीधा इन्द्र धनुष का नाम-(१) ऋजुरोहित ॥१०॥

(द्वे वृष्टेः)

वृष्टिर्वर्षम्

वर्षा के २ नाम—(१) वृष्टि (२) वर्ष ।

(द्वे वृष्टिविघातस्य)

तद्विघातेऽवग्राहावग्रहौ समौ ।

सूखा मेघ के २ नाम—(१) अवग्राह (२) अवग्रह । ये दोनों शब्द समान(पुँ०) लिङ्गवाचक हैं ।

(द्वे महावृष्टेः)

धारासम्पात आसारः

मूसलधार पानी बरसने के २ नाम—(१) धारासम्पात (२) आसार ।

(एकमम्बुकणानाम्)

शीकरोऽम्बुकणाः स्मृताः ॥११॥

वायु से प्रक्षिप्त जलकणों (पानी के बूँद) का नाम—(१) शीकर ॥११॥

(द्वे वर्षोपलस्य)

वर्षोपलस्तु करका

ओला गिरने के २ नाम (१) वर्षोपल (२) करका ।

(एकं मेघान्धकारितस्य)

मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम् ।

दिन में बदली होने का नाम—(१) दुर्दिन ।

(अष्टावाच्छादनस्य)

अन्तर्धा व्यवधा पुंसि त्वन्तर्धिरपवारणम्॥१२॥
अपिधान-तिरोधान-पिधानाच्छादनानि च ।

ढाँकने के ८ नाम—(१) अन्तर्धा (२) व्यवधा (३) अन्तर्धि (४) अपवारण (५) अपिधान (६) तिरोधान (७) पिधान (८) आच्छादन । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग में (३) पुँलिङ्ग (४-८) नपुंसक में में होते हैं ॥१२॥

(विंशतिश्चन्द्रस्य)

हिमांशुश्चन्द्रमाश्चन्द्र इन्दुः कुमुदबान्धवः॥१३
विधुः सुधांशुः शुभ्रांशुरोषधीशो निशापतिः ।
अब्जो जैवातृकःसोमो ग्लौर्मृगाङ्कःकलानिधिः
द्विजराजः शशधरो नक्षत्रेशः क्षपाकरः ।

चन्द्रमा के २० नाम—(१) हिमांशु (२) चन्द्रमस् (३) चन्द्र (४) इन्दु (५) कुमुदबान्धव (६) विधु (७) सुधांशु (८) शुभ्रांशु (९) ओषधीश (१०) निशापति (११) अब्ज (१२) जैवातृक (१३) सोम (१४) ग्लौ (१५) मृगाङ्क (१६) कलानिधि (१७) द्विजराज (१८) शशधर (१९) नक्षत्रेश (२०) क्षपाकर ॥१३-१४॥

(एकं चन्द्रषोडशांशस्य)

कला तु षोडशो भागः

चन्द्र के सोलहवें भाग का नाम—(१) कला।

(द्वे रविचन्द्रमण्डलस्य)

बिम्बोऽस्त्री मण्डलं त्रिषु ॥१५॥

सूर्यमण्डल—चन्द्रमण्डल के २ नाम—(१) बिम्ब (२) मण्डल ॥१५॥ इनमें 'बिम्ब' शब्द स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर शेष दो लिङ्गों (पुं-नपुंसक)में होता है । 'मण्डल' शब्द तीनों लिङ्गों में होता है ।

(चत्वारि खण्डमात्रस्य)

भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धः

टुकड़े (खण्ड) के ४ नाम—(१) भित्त (२) शकल (३) खण्ड (४) अर्ध । इनमें 'भित्त' नपुंसक लिङ्ग है । 'शकल' तथा 'खण्ड' नपुंसक लिङ्ग होते हुए भी विकल्प से पुल्लिङ्ग में होते हैं । 'अर्द्ध' पुल्लिङ्ग में होता है (यथा-कम्बलस्यार्द्धः (खण्डः) और वाच्यलिङ्ग भी है (यथा—अर्द्धा-शाटी, अर्द्धः पटः, अर्द्धं वस्त्रम्) ।

(तुल्यखण्डद्वयमध्ये एकं खण्डस्य)

अर्धं समेंऽशके ।

दो बराबर टुकड़े में से एक का नाम (१) अर्द्ध । यह नपुंसक लिङ्ग में ही होता है ।

(त्रीणि चन्द्रप्रभायाः)

चन्द्रिका कौमुदी ज्योत्स्ना

चाँदनी (चन्द्रमा की प्रभा) के ३ नाम—(१) चन्द्रिका (२) कौमुदी (३) ज्योत्स्ना ।

(द्वे नैर्मल्यस्य)

प्रसादस्तु प्रसन्नता ॥१६॥

प्रसन्नता के २ नाम—(१) प्रसाद (२) प्रसन्नता ॥१६॥ ।

(षट् चिह्नस्य)

कलङ्काङ्कौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्षणम् ।

चिह्न के ६ नाम—(१) कलङ्क (२) अङ्क (३) लाञ्छन (४) चिह्न (५) लक्ष्मन् (६) लक्षण ।

(एकमुत्कृष्टशोभायाः)

सुषमा परमा शोभा

परम शोभा का नाम—(१) सुषमा ।

(चत्वारि शोभायाः)

शोभा कान्तिर्द्युतिश्छविः ॥१७॥

शोभा के ४ नाम—(१) शोभा (२) कान्ति (३) द्युति (४) छवि ॥१७॥

(सप्त हिमस्य)

अवश्यायस्तु नीहारस्तुषारस्तुहिनं हिमम् ।
प्रालेयं मिहिका च

पाला के ७ नाम—(१) अवश्याय (२) नीहार (३) तुषार (४) तुहिन (५) हिम (६) प्रालेय (७) मिहिका ।

(द्वे हिमसमूहस्य)

अथ हिमानी हिमसंहतिः ॥१८॥

महापाला समूह के २ नाम—(१) हिमानी (२) हिमसंहति ॥१८॥

(एकं शीतगुणस्य, सप्त शीतलद्रव्यस्य च)

शीतं गुणे, तद्वदर्थाः सुषीमः शिशिरो जडः ।
तुषारः शीतलः शीतो हिमः सप्तान्यलिङ्गकाः॥

ठंढ का नाम—(१) शीत ।

शीतल द्रव्य के ७ नाम—(१) सुषीम (२) शिशिर (३) जड (४) तुषार (५) शीतल (६) शीत (७) हिम । ये सात तद्वदर्थ (= शीतगुण वाले अर्थ युक्त) और अन्यलिङ्ग (= विशेष्य लिङ्ग) के वाचक हैं ॥१९॥

(द्वे ध्रुवस्य)

ध्रुव औत्तानपादिः स्यात्

ध्रुव के २ नाम-(१) ध्रुव (२) औत्तानपादि ।

(त्रीण्यगस्त्यस्य)

अगस्त्यः कुम्भसम्भवः ।
मैत्रावरुणिः

अगस्त्य के ३ नाम—(१) अगस्त्य (२) कुम्भसम्भव (३) मैत्रावरुणि ।

(एकमगस्त्यपत्न्याः)

अस्यैव लोपामुद्रा सधर्मिणी ॥२०॥

अगस्त्य की धर्मपत्नी का नाम—(१) लोपामुद्रा ॥२०॥

(षट् नक्षत्रसामान्यस्य)

नक्षत्रमृक्षं भं तारा तारकाप्युडु वा स्त्रियाम् ।

तारा के ६ नाम—(१) नक्षत्र (२) ऋक्ष (३) भ (४) तारा (५) तारका (६) उडु—यह नपुंसक लिङ्ग में है किन्तु विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में भी होता है ।

(एकमश्विन्यादिभानाम्)

दाक्षायण्योऽश्विनीत्यादितारा:

अश्विनी आदि (सत्ताइस) नक्षत्रोंका नाम—(१) दाक्षायण्य । यह स्त्रीलिङ्ग में नित्य बहुवचनान्त होता है ।

(द्वे अश्विन्याः)

अश्वयुगश्विनी ॥२१॥

अश्विनी नक्षत्र के २ नाम—(१) अश्वयुक् (२) अश्विनी ॥२१॥

(द्वे विशाखायाः)

राधा विशाखा

विशाखा नक्षत्र के २ नाम—(१) राधा (२) विशाखा ।

(त्रीणि पुष्यस्य)

पुष्ये तु सिध्य-तिष्यौ

पुष्य नक्षत्र के ३ नाम—(१) पुष्य (२) सिध्य (३) तिष्य ।

(द्वे धनिष्ठायाः)

श्रविष्ठया ।
समा धनिष्ठा

धनिष्ठा नक्षत्र के २ नाम (१) श्रविष्ठा (२) धनिष्ठा ।

(द्वे पूर्वभद्रपदोत्तरभद्रपदानाम्)

स्युः प्रोष्ठप्रदा भाद्रपदाः स्त्रियः ॥२२॥

पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा के २ नाम—(१) प्रोष्ठप्रदा (२) भाद्रपदा । ये शब्द स्त्रीलिङ्ग नित्य बहुवचनान्त में होते हैं ॥२२॥

(त्रीणि मृगशिरसः)

मृगशीर्षं मृगशिरस्तस्मिन्नेवाग्रहायणी ।

मृगशिरा नक्षत्र के ३ नाम—(१) मृगशीर्ष (२) मृगशिरस् (३) आग्रहायणी ।

(मृगशीर्षशिरोदेशस्थानां पञ्चानां स्वल्पतारकाणामेकम्)

इल्वलास्तच्छिरोदेशे तारका निवसन्ति याः॥२३॥

मृगशिरा नक्षत्र के मस्तक पर स्थित पाँच छोटे-छोटे ताराओंका नाम—(१) इल्वल ॥२३॥

(नव बृहस्पतेः)

बृहस्पतिः सुराचार्यो गीर्पतिर्धिषणो गुरुः ।
जीव आङ्गिरसो वाचस्पतिश्चित्रशिखण्डिजः॥२४

बृहस्पति के ९ नाम—(१) बृहस्पति (२) सुराचार्य (३) गीर्पति (४) धिषण (५) गुरु (६)

१ 'इन्वकाः' इति पाठान्तरम् ।

जीव (७) आङ्गिरस (८) वाचस्पति (९) चित्रशिखण्डिज ॥२४॥

(षट् शुक्रस्य)

शुक्रो दैत्यगुरुः काव्य उशना भार्गवः कविः ।

शुक्र के ६ नाम—(१) शुक्र (२) दैत्यगुरु (३) काव्य (४) उशनस् (५) भार्गव (६) कवि ।

(पञ्च मङ्गलस्य)

अङ्गारकः कुजो भौमो लोहिताङ्गो महीसुतः।२५

मङ्गल के ५ नाम—(१) अङ्गारक (२) कुज (३) भौम (४) लोहिताङ्ग (५) महीसुत ॥२५॥

(त्रीणि बुधस्य)

रौहिणेयो बुधः सौम्यः

बुध के ३ नाम—(१) रौहिणेय (२) बुध (३) सौम्य ।

(द्वे शनेः)

समौ सौरि-शनैश्चरौ ।

शनि के २ नाम—(१) सौरि (२) शनैश्चर । ये दोनों शब्द अर्थ एवं लिङ्ग में समान हैं ।

(पञ्च राहोः)

तमस्तु राहुः स्वर्भानुः सैंहिकेयो विधुन्तुदः२६

राहु के ५ नाम—(१) तम (२) राहु (३) स्वर्भानु (४) सैंहिकेय (५) विधुन्तुद ॥२६॥

(एकं सप्तर्षीणाम्)

सप्तर्षयो मरीच्यत्रिमुखाश्चित्रशिखण्डिनः ।

मरीचि-अत्रि प्रमुख सप्तर्षियों का नाम—[१] चित्रशिखण्डिन् । यह पुँल्लिङ्ग और नित्य बहुवचनान्त है ।

(एकं राश्युदयस्य)

राशीनामुदयो लग्नं, ते तु मेषवृषादयः ॥२७॥

राशियों के उदय का नाम—(१) लग्न ।

उन लग्नों के नाम—मेष, वृष आदि ॥२७॥

(सप्तत्रिंशत् सूर्यस्य)

सूर-सूर्यार्यमाऽऽदित्य-द्वादशात्म-दिवाकराः ।
भास्कराहस्कर-ब्रध्न-प्रभाकर-विभाकराः॥२८
भास्वद्विवस्वत्सप्ताश्व-हरिदश्वोष्णरश्मयः ।
विकर्तनार्क-मार्तण्ड-मिहिरारुण-पूषणः ॥२९॥
द्युमणिस्तरणिर्मित्रश्चित्रभानुर्विरोचनः ।
विभावसुर्ग्रहपतिस्त्विषाम्पतिरहर्पतिः ॥३०॥
भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।

सूर्य के ३७ नाम—(१) सूर (२) सूर्य (३) अर्यमन् (४) आदित्य (५) द्वादशात्मन् (६) दिवाकर (७) भास्कर (८) अहस्कर (९) ब्रध्न (१०) प्रभाकर (११) विभाकर (१२) भास्वत् (१३) विवस्वत् (१४, सप्ताश्व (१५) हरिदश्व (१६) उष्णरश्मि (१७) विकर्तन (१८) अर्क (१९) मार्तण्ड (२०) मिहिर (२१) अरुण (२२) पूषन् (२३) द्युमणि (२४) तरणि (२५) मित्र (२६) चित्रभानु (२७) विरोचन (२८) विभावसु (२९) ग्रहपति (३०) त्विषांपति (३१) अहर्पति (३२) भानु (३३) हंस (३४) सहस्रांशु (३५) तपन (३६) सवितृ (३७) रवि ॥२८—३०॥

---

१ मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ।
वसिष्ठश्चेति सप्तैते ज्ञेयाश्चित्रशिखण्डिनः ॥

अर्थात्—(१) मरीचि (२) अङ्गिरा (३) अत्रि (४) पुलस्त्य (५) पुलह (६) क्रतु (७) वसिष्ठ ये सप्तर्षि चित्रशिखण्डी कहलाते हैं ।

२ मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कटः सिंह-कन्यके ।
तुलाथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भ-मीनकौ ॥

अर्थात्—(१) मेष (२) वृष (३) मिथुन (४) सिंह (६) कन्या (७) तुला (८) वृश्चिक (९) धनु (१०) मकर (११) कुम्भ (१२) मीन ।

३ कहीं-कहीं ये श्लोक अधिक मिलते हैं—

पद्माक्षस्तेजसां राशिश्छायानाथस्तमिस्रहा ।
कर्मसाक्षी जगच्चक्षुर्लोकबन्धुस्त्रयीतनुः ॥
प्रद्योतनो दिनमणिः खद्योतो लोकबान्धवः ।
इनो भगो धामनिधिश्चांशुमाल्यब्जिनीपतिः ॥

अर्थात्—सूर्य के १७ और नाम—(१) पद्माक्ष (२) तेजसां राशि (३) छायानाथ (४) तमिस्रहन् (५) कर्मसाक्षिन् (६) जगच्चक्षुष् (७) लोकबन्धु (८) त्रयीतनु (९) प्रद्योतन (१०) दिनमणि (११) खद्योत (१२) लोकबान्धव (१३) इन (१४) भग (१५), धामनिधि (१६) अंशुमालिन् (१७) अब्जिनीपति ॥

(सूर्यपार्श्वस्थानां माठरादित्रयाणामेकैकम्)

माठरः पिङ्गलो दण्डश्चण्डांशोः पारिपार्श्विकाः

चण्डांशु (सूर्य) के पारिपार्श्वक (समीपवर्ती चारो ओर के ग्रहों) के एक-एक नाम—(१) माठर । (१) पिङ्गल । (१) दण्ड ॥३१॥

(पञ्च सूर्यसारथेः)

सूरसूतोऽरुणोऽनूरुः काश्यपिर्गरुडाग्रजः ।

सूर्य के सारथी के ५ नाम—(१) सूरसूत (२) अरुण (३) अनूरु (४) काश्यपि (५) गरुडाग्रज ।

(चत्वारि परिवेशस्य)

परिवेशस्तु परिधिरुपसूर्यक-मण्डले ॥३२॥

परिवेश (=सूर्य के चारो ओर, कभी-कभी दृश्यमान कुण्डलाकार तेज विशेष) के ४ नाम—(१) परिवेश (२) परिधि (३) उपसूर्यक (४) मण्डल । यहाँ 'परिवेशः' के साहचर्य से 'परिधिः' को पुँल्लिङ्ग समझना ॥३२॥

(एकादश किरणानाम्)

किरणोस्र-मयूखांशु-गभस्ति-घृणि-रश्मयः ।
भानुःकरो मरीचिःस्त्री-पुंसयोर्दीधितिःस्त्रियाम्३३

किरण के ११ नाम—(१) किरण (२) उस्र (३) मयूख (४) अंशु (५) गभस्ति (६) घृणि (७) रश्मि (८) भानु (९) कर (१०) मरीचि (११) दीधिति । इनमें (१-९) शब्द पुँल्लिङ्ग, और (१०) 'मरीचि' स्त्रीलिङ्ग-पुँल्लिङ्ग (११) स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥ ३३ ॥

(एकादश प्रभायाः)

स्युः प्रभा-रुग्रुचिस्त्विड्भा-भाश्छवि-द्युतिदीप्तयः । रोचिः शोचिरुभे क्लीबे

प्रभा के ११ नाम - (१) प्रभा (२) रुच् (३) रुचि (४) त्विष् (५) भा (६) भास् (७) छवि (८) द्युति (९) दीप्ति (१०) रोचिष् (११) शोचिष् । इनमें 'प्रभा' से लेकर 'दीप्ति' शब्द तक स्त्रीलिङ्ग हैं; तथा 'रोचिष्' और 'शोचिष्' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि आतपस्य)

प्रकाशो द्योत आतपः ॥३४॥

धूप के ३ नाम—(१) प्रकाश (२) द्योत (३) आतप ॥३४॥

(चत्वारि ईषदुष्णस्य)

कोष्णं कवोष्णं मन्दोष्णं कदुष्णं त्रिषु तद्वति ।

ज़रा-ज़रा गरम कुनकुना के ४ नाम—(१) कोष्ण (२) कवोष्ण (३) मन्दोष्ण (४) कदुष्ण । ये नपुंसक लिङ्ग में हैं किन्तु तद्वान् (= धर्मवान्) में तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(त्रीणि अत्युष्णस्य)

तिग्मं तीक्ष्णं खरं तद्वत्

बहुत तेज़ गरम के ३ नाम—(१) तिग्म (२) तीक्ष्ण (३) खर । ये तद्वत् (कोष्ण शब्दकी भाँति) हैं । तात्पर्य यह है कि नपुंसक लिङ्ग में हैं किन्तु धर्मवान् में तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(द्वे मृगतृष्णायाः)

मृगतृष्णा मरीचिका ॥३५॥

मृगतृष्णा के २ नाम—(१) मृगतृष्णा (२) मरीचिका ॥३५॥

इति दिग्वर्गः ३

अथ कालवर्गः

(चत्वारि सामान्यकालस्य)

कालो दिष्टोऽप्यनेहापि समयोऽपि

समय के ४ नाम—(१) काल (२) दिष्ट (३) अनेहस् (४) समय ।

(द्वे प्रतिपत्तिथेः)

अथ पक्षतिः ।

प्रतिपद्द्वे इमे स्त्रीत्वे

---

१ उक्तं सौरतन्त्रे—
शक्रोऽस्य वामपार्श्वे तु दण्डाख्यो दण्डनायकः ।
वह्निस्तु दक्षिणे पार्श्वे पिङ्गलो वामभागतः ।
यमोऽपि दक्षिणे पार्श्वे भवेन्माठरसंज्ञया ॥
२ 'धृष्णयः' इति केचित्; 'वृष्णयः' इत्यन्ये पठन्ति ।

प्रतिपदा के २ नाम—(१) पक्षति (२) प्रतिपद्। ये स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(एकं सामान्यतिथेः)

तदाद्यास्तिथयो द्वयोः ॥१॥

प्रतिपदादि का नाम—(१) तिथि। यह शब्द दोनों लिङ्गों (पुं० स्त्री०) में होता है।

(पञ्च दिनस्य)

घस्रो दिनाहनी वा तु क्लीबे दिवस-वासरौ।

दिन के ५ नाम—(१) घस्र (२) दिन (३) अहन् (४) दिवस (५) वासर। इनमें 'दिवस' और 'वासर' पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसकलिङ्ग में भी होते हैं।

(षट् प्रभातस्य)

प्रत्यूषोऽहर्मुखं कल्यमुषः प्रत्युषसी अपि ॥२॥ प्रभातं च

प्रातःकाल के ६ नाम—(१) प्रत्यूष (२) अहर्मुख (३) कल्य (४) उषस् (५) प्रत्युषस् (६) प्रभात ॥२॥ इनमें 'प्रत्यूष' शब्द पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसक लिङ्ग में भी होता है।

(एकं दिनान्तस्य)

दिनान्ते तु सायः

दिनान्त का नाम—(१) सायः।

(द्वे सन्ध्यायाः)

सन्ध्या पितृप्रसूः।

सन्ध्या के २ नाम—(१) सन्ध्या (२) पितृप्रसू।

(एकं दिनाद्यन्तमध्यानाम्)

प्राह्णापराह्णमध्याह्नास्त्रिसन्ध्यम्

प्रातःकाल का नाम—(१) प्राह्ण। दोपहर का नाम—(१) मध्याह्न। शाम का नाम—(१) अपराह्ण। इन तीनों का संयुक्त नाम 'त्रिसन्ध्य' है।

(द्वादश रात्रेः)

अथ शर्वरी ॥३॥

निशा निशीथिनी रात्रिस्त्रियामा क्षणदा क्षपा।
विभावरी-तमस्विन्यौ रजनी यामिनी तमी॥४॥

रात्रि के १२ नाम—(१) शर्वरी (२) निशा (३) निशीथिनी (४) रात्रि (५) त्रियामा (६) क्षणदा (७) क्षपा (८) विभावरी (९) तमस्विनी (१०) रजनी (११) यामिनी (१२) तमी।

(एकमत्यन्धकाररात्रेः)

तमिस्रा तामसी रात्रिः

अँधियारी रात का नाम—(१) तमिस्रा।

(एकं ज्योत्स्नावद्रात्रेः)

ज्यौत्स्नी चन्द्रिकयान्विता।

चाँदनी रात का नाम—(१) ज्यौत्स्नी।

(एकं दिनद्वयमध्यगतरात्रेः)

आगामिवर्तमानाहर्युक्तायां निशि पक्षिणी ॥५॥

आनेवाली और वर्तमान दिनवाली रात का नाम—(१) पक्षिणी ॥५॥

(एकं रात्रिसमुदायस्य)

गणरात्रं निशा बह्वयः

बहुतसी रात्रियों का नाम—(१) गणरात्र।

(द्वे रात्रिप्रारम्भस्य)

प्रदोषो रजनीमुखम्।

रात्रि के पूर्व भाग के २ नाम—(१) प्रदोष (२) रजनीमुख।

(द्वे रात्रिमध्यस्य)

अर्धरात्र-निशीथौ द्वौ

आधीरात के २ नाम—(१) अर्धरात्र (२) निशीथ।

(द्वे प्रहरस्य)

द्वौ याम-प्रहरौ समौ ॥६॥

पहर के २ नाम—(१) याम (२) प्रहर ये दोनों समानलिङ्ग (पुं) हैं ॥६॥

---

१ किन्हीं-किन्हीं पुस्तकों में प्रातःकाल के ३ और नाम मिलते हैं:—व्युष्टं विभातं द्वे क्लीबे, पुंसि गोसर्ग इष्यते। अर्थात्—(१) व्युष्ट (२) विभात (३) गोसर्ग। इनमें 'व्युष्ट' और 'विभात' ये दोनों नपुंसकलिङ्ग में और 'गोसर्ग' पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

(एकं पर्वसन्धेः)

स पर्वसन्धिः प्रतिपत्पञ्चदश्योर्यदन्तरम् ।

प्रतिपदा और पञ्चदशी (पूर्णिमा) के बीच वाली सन्धि का नाम—(१) पर्व ।

(एकं पक्षान्तस्य)

पक्षान्तौ पञ्चदश्यौ द्वे

अमावस्या और पूर्णिमा का नाम—(१) पक्षान्त ।

(द्वे पूर्णिमायाः)

पौर्णमासी तु पूर्णिमा ॥७॥

पूर्णिमा के २ नाम—(१) पौर्णमासी (२) पूर्णिमा ॥७॥

(एकमनुमत्याः)

कलाहीने साऽनुमतिः

क्षीण चन्द्रकलावाली पूर्णिमा का नाम—(१) अनुमति ।

(एकं राकायाः)

पूर्णे राका निशाकरे ।

पूर्ण चन्द्रकला सहित पूर्णिमा का नाम—(१) राका ।

(चत्वारि कृष्णपक्षान्ततिथेः)

अमावास्या त्वमावस्या दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः॥

अमावस्या के ४ नाम—(१) अमावास्या (२) अमावस्या (३) दर्श (४) सूर्येन्दुसंगम। इनमें 'दर्श' और 'सूर्येन्दुसङ्गम' ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ॥८॥

(एकं सिनीवाल्याः)

सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली

अमावस्या में चन्द्रमा दिखलाई पड़े तो उसका नाम—(१) सिनीवाली ।

(एकं कुह्वाः)

सा नष्टेन्दुकला कुहूः ।

नष्ट चन्द्रकलावाली अमावस्या का नाम—(१) कुहू ।

(द्वे ग्रहणस्य)

उपरागो ग्रहः

ग्रहण के २ नाम—(१) उपराग (२) ग्रह ।

(द्वे राहुग्रस्तस्येन्दोः सूर्यस्य च)

राहुग्रस्ते त्विन्दौ च पूष्णि च ॥९॥
सोपप्लवोपरक्तौ द्वौ

राहु से ग्रस्त हुए चन्द्र या सूर्य के २ नाम—(१) सोपप्लव (२) उपरक्त ॥९॥

(द्वे आकाशादिष्वग्निविकारस्य)

अग्न्युत्पात उपाहितः ।

धूमकेतु के २ नाम—(१) अग्न्युत्पात (२) उपाहित ।

(एकं समुच्चितचन्द्र-सूर्ययोः)

एकयोक्त्या पुष्पवन्तौ दिवाकर-निशाकरौ॥१०॥

सूर्य और चन्द्रमा का संयुक्त नाम—(१) पुष्पवन्तौ ॥१०॥

(एकं काष्ठायाः)

अष्टादश निमेषास्तु काष्ठा

१८ निमेष = १ काष्ठा । ('अक्षिपक्ष्म-परिक्षेपो निमेषः परिकीर्तितः' के अनुसार एकबार पलक मारने के समय को 'निमेष' कहते हैं)

(एकं कलायाः)

त्रिंशत्तु ताः कला ।

३० काष्ठा = १ कला ।

(एकं क्षणस्य)

तास्तु त्रिंशत्क्षणः

३० कला = १ क्षण ।

(एकं मुहूर्तस्य)

ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥११॥

१२ क्षण = १ मुहूर्त । 'मुहूर्त' शब्द स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर शेष दोनों लिङ्गों में होता है ॥११॥

(एकमहोरात्रस्य)

ते तु त्रिंशदहोरात्रः

३० मुहूर्त = १ अहोरात्र ।

(एकं पक्षस्य)

पक्षस्ते दश पञ्च च ।

१०+५ (= १५) अहोरात्र = १ पक्ष ।

(एकैकं शुक्ल-कृष्णपक्षयोः)

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्ल-कृष्णौ

मास के पूर्व पक्ष का नाम—(१) शुक्ल। मास के अपर पक्ष का नाम—(१) कृष्ण।

(एकं मासस्य)

मासस्तु तावुभौ ॥१२॥

शुक्लपक्ष+कृष्णपक्ष = १ मास ॥१२॥

(एकम् ऋतोः)

द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुः

मार्गशीर्ष आदि दो २ मास = १ ऋतु।

(एकमयनस्य)

तैरयनं त्रिभिः।

३ ऋतुओं का १ अयन।

(एकैकमयनद्वयस्य)

अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणाऽर्कस्य वत्सरः ॥१३॥

अयन दो प्रकार का होता है—एक सूर्य की उत्तरागति (जिसे उत्तरायण कहते हैं); और दूसरी दक्षिणा गति (जिसे दक्षिणायन कहते हैं)।

२ अयन = १ वर्ष ॥१३॥

(द्वे समरात्रिंदिवकालस्य)

समरात्रिन्दिवे काले विषुवद्विषुवं च तत्।

जिस (तुला संक्रान्ति और मेषसंक्रान्ति के) समय दिन और रात बराबर होता है उस समय को (१) विषुवत् (२) विषुव कहते हैं।

(चत्वारि मार्गशीर्षस्य)

मार्गशीर्षे सहा मार्ग आग्रहायणिकश्च सः ॥१४॥

अगहन के ४ नाम—(१) मार्गशीर्ष (२) सहस् (३) मार्ग (४) आग्रहायणिक ॥ १४ ॥

(त्रीणि पौषस्य)

[1]पौषे तैष-सहस्यौ द्वौ

पौष के ३ नाम—(१) पौष (२) तैष (३) सहस्य।

(द्वे माघमासस्य)

तपा माघे

माघ के २ नाम—(१) तपस् (२) माघ।

(त्रीणि फाल्गुनस्य)

अथ फाल्गुने।

स्यात्तपस्यः फाल्गुनिकः

फाल्गुन के ३ नाम—(१) फाल्गुन (२) तपस्य (३) फाल्गुनिक।

(त्रीणि चैत्रस्य)

स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः ॥१५॥

चैत्र के ३ नाम—(१) चैत्र (२) चैत्रिक (३) मधु ॥ १५ ॥

(त्रीणि वैशाखस्य)

वैशाखे माधवो राधः

वैशाख के ३ नाम—(१) वैशाख (२) माधव (३) राध।

(द्वे ज्येष्ठमासस्य)

ज्येष्ठे शुक्रः

ज्येष्ठ के २ नाम—(१) ज्येष्ठ (२) शुक्र।

(द्वे आषाढस्य)

शुचिस्त्वयम्।

आषाढे

आषाढ के २ नाम—(१) शुचि (२) आषाढ।

(त्रीणि श्रावणस्य)

श्रावणे तु स्यान्नभाः श्रावणिकश्च सः ॥१६॥

श्रावण के ३ नाम—(१) श्रावण (२) नभस् (३) श्रावणिक ॥ १६ ॥

---

१ किसी २ पुस्तक में यह श्लोक मिलता है—

पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा।
नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥

अर्थात्—पुष्यनक्षत्रयुक्त पौर्णमासी को 'पौषी' कहते हैं। पौषी पौर्णमासी जिस मास में हो उस मास को पौष कहते हैं। इसी प्रकार और भी माघ आदि (१ मघा नक्षत्र २ फल्गुनी नक्षत्र ३ चित्रा ४ विशाखा ५ ज्येष्ठा ६ अषाढा ७ श्रवण ८ भद्रपदा ९ अश्विनी १० कृत्तिका ११ मृगशिरा) एगारह (=एकादश) महिना जानना।

(चत्वारि भाद्रपदमासस्य)

स्युर्नभस्य-प्रौष्ठपद-भाद्र-भाद्रपदाः समाः ।

भादो के ४ नाम—(१) नभस्य (२) प्रौष्ठपद (३) भाद्र (४) भाद्रपद। ये समान लिङ्गवाचक हैं।

(त्रीणि आश्विनस्य)

स्यादाश्विन इषोऽप्याश्वयुजोऽपि

क्वार के ३ नाम—(१) आश्विन (२) इष (३) आश्वयुज ।

(चत्वारि कार्तिकस्य)

स्यात्तु कार्त्तिके ॥१७॥

बाहुलोर्जौ कार्तिकिकः

कार्तिक के ४ नाम—(१) कार्तिक (२) बाहुल (३) ऊर्ज (४) कार्तिकिक ॥१७॥

(एकं मार्ग-पौषाभ्यां निष्पन्नस्यर्तोः)

हेमन्तः

अगहन-पौषमहिनेवाली ऋतु का नाम—(१) हेमन्त ।

(एकं माघ-फाल्गुनाभ्यामृतोः)

शिशिरोऽस्त्रियाम् ।

माघ-फाल्गुन महिनेवाली ऋतु का नाम—(१) शिशिर । यह शब्द (स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर) पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

(त्रीणि चैत्र-वैशाखाभ्यामृतोः)

वसन्ते पुष्पसमयः सुरभिः

चैत्र-वैशाख महिनेवाली ऋतु के ३ नाम—(१) वसन्त (२) पुष्पसमय (३) सुरभि ।

(सप्त ज्येष्ठाषाढाभ्यामृतोः)

ग्रीष्म ऊष्मकः ॥१८॥

निदाघ उष्णोपगम उष्ण ऊष्मागमस्तपः ।

ज्येष्ठ-आषाढ़ महिनेवाली ऋतु के ७ नाम—(१) ग्रीष्म (२) ऊष्मक (३) निदाघ (४) उष्णोपगम (५) उष्ण (६) ऊष्मागम (७) तप ॥१८॥

(द्वे श्रावणभाद्राभ्यामृतोः)

स्त्रियां प्रावृट् स्त्रियां भूम्नि वर्षाः

सावन-भादो महिनेवाली ऋतु के २ नाम—(१) प्रावृष् (२) वर्षा । इनमें 'प्रावृट्' शब्द (षान्त) स्त्रीलिङ्ग में; और 'वर्षा' शब्द स्त्रीलिङ्ग नित्य बहुवचनान्तमें होता है ।

(एकम् आश्विन-कार्तिकाभ्यामृतोः)

अथ शरत्स्त्रियाम् ॥१९॥

क्वार-कार्तिक महिनेवाली ऋतुका नाम—(१) शरद् । यह शब्द (दकारान्त) स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥ १९ ॥

(हेमन्तादीनां षण्णामेकम्)

षडमी ऋतवः पुंसि मार्गादीनां युगैः क्रमात् ।

मार्ग-शीर्ष आदि दो-दो महिने के ये हेमन्त आदि छ 'ऋतु' होते हैं। यह 'ऋतु' शब्द पुँल्लिङ्ग में होता है ।

(षट् संवत्सरस्य)

संवत्सरो वत्सरोऽब्दो हायनोऽस्त्री शरत्समाः

वर्ष के ६ नाम—(१) संवत्सर (२) वत्सर (३) अब्द (४) हायन (५) शरद् (६) समा । इनमें 'संवत्सर' से लेकर 'हायन' शब्द पर्यन्त पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में; शरद् स्त्रीलिङ्ग में, और 'समाः' स्त्रीलिङ्ग नित्य बहुवचनान्त है ॥२०॥

(एकमहोरात्रस्य)

मासेन स्यादहोरात्रः पैत्रः

मनुष्यों का १ महीना = * पितरों का १ अहोरात्र (दिन-रात)

वर्षेण दैवतः ।

मनुष्यों का १ साल=† देवताओं का १ दिनरात

दैवे युगसहस्रे द्वे ब्राह्मः

देवताओं का २००० युग =‡ ब्रह्मा का १ अहोरात्र ।

(एकं ब्रह्मणो दिनस्य)

कल्पौ तु तौ नृणाम् ॥२१॥

---

* कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की अष्टमी तक पितरों का दिन होता है। शुक्लपक्ष की अष्टमी से कृष्ण-पक्ष की अष्टमी तक पितरों की रात्रि होती है ।

† देवताओं का 'उत्तरायण' दिन है और 'दक्षिणायन' रात्रि है ।

‡ ब्रह्मा का दिन मनुष्यों का स्थितिकाल और ब्रह्मा की रात्रि मनुष्यों का प्रलयकाल है ।

उन देवताओं के २००० युग = ब्रह्मा का १ अहोरात्र = मनुष्यों का कल्प।

(एकं मन्वन्तरस्य)

मन्वन्तरं तु दिव्यानां युगानामेकसप्ततिः ।

देवताओं के ७१ युग=१ मन्वन्तर (नपुंसक लिङ्ग)।

(पञ्च प्रलयस्य)

संवर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥

विष्णुपुराण—

कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति चतुर्युगम् ।
प्रोच्यते तत्सहस्रं तु ब्रह्मणो दिनमुच्यते ॥

अर्थात्—(कृत+त्रेता+द्वापर+कलि) × १०००= ब्रह्मा का १ दिन ।

मनु का कथन है—

चत्वार्याहुः सहस्राणि वर्षाणां तु कृतं युगम् ।
तस्य तावच्छती संख्या सन्ध्यांशश्च तथाविधः ॥
इतरेषु ससन्ध्येषु ससन्ध्यांशेषु च त्रिषु ।
एकापायेन वर्तन्ते सहस्राणि शतानि च ॥
एतद्द्वादशसाहस्रं देवानां युगमुच्यते ।
दैविकानां युगानां तु सहस्रं परिसंख्यया ॥
ब्राह्ममेकमहर्ज्ञेयं तावतीं रात्रिमेव च ॥

देववर्ष के अनुसार कृतयुग का मान=४८००;
मनुष्य वर्षमान „ (४८०० देववर्ष × ३६० दिन=) १७२८०००

देववर्ष के अनुसार त्रेतायुग का मान=३६००;
मनुष्यवर्षमान „ =(३६००×३६०=) १२९६०००

देववर्ष के अनुसार द्वापर युग का मान=२४००;
मनुष्य वर्ष मान „ =(२४००×३६०=) ८६४०००

देववर्ष के अनुसार कलियुग का मान=१२००
मनुष्य वर्षमान „ =(१२००×३६०=) ४३२०००

चारो युगों का देववर्ष=४८००+३६००+२४०० +१२००=१२०००

„ „ मनुष्यवर्ष=१७२८०००+१२९६००० +८६४०००+४३२००० =४३२००००

देव वर्ष के अनुसार ब्रह्मा का दिन=१२०००×१००० =१२००००००

मनुष्य वर्ष „ „ „ „ =४३२००००×१००० =४३२००००००

प्रलय के ५ नाम—(१) संवर्त (२) प्रलय (३) कल्प (४) क्षय (५) कल्पान्त ॥२२॥

(द्वादश पापस्य)

अस्त्री पङ्कं पुमान्पाप्मा पापं किल्बिष-कल्मषम् ।
कलुषं वृजिनैनोऽघमंहोदुरित-दुष्कृतम् ॥२३॥

पाप के १२ नाम —(१) पङ्क (२) पाप्मन् (३) पाप (४) किल्बिष (५) कल्मष (६) कलुष (७) वृजिन (८) एनस् (९) अघ (१०) अंहस् (११) दुरित (१२) दुष्कृत । इनमें (१) पङ्क (स्त्रीलिङ्गवर्जित) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में; (२) पाप्मन् पुँल्लिङ्ग में और शेष (३-१२) नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥२३॥

(पञ्च धर्मस्य)

स्याद्धर्ममस्त्रियां पुण्य-श्रेयसी सुकृतं वृषः ।

धर्म के ५ नाम – (१) धर्म (२) पुण्य (३) श्रेयस् (४) सुकृत (५) वृष । इनमें (१) 'धर्म' पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में; (२–४) नपुंसक में और (५) वृष पुँल्लिङ्ग में हैं ॥

(द्वादश आनन्दस्य)

मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदामोद-सम्मदाः॥२४
स्यादानन्दथुरानन्दः शर्म-शात-सुखानि च ।

आनन्द के १२ नाम—(१) मुद् (२) प्रीति (३) प्रमद (४) हर्ष (५) प्रमोद (६) आमोद (७) सम्मद (८) आनन्दथु (९) आनन्द (१०) शर्मन् (११) शात (१२) सुख । इनमें (१-२) साहचर्य से स्त्रीलिङ्ग (३-९) पुँलिङ्ग और (१० १२) नपुंसक हैं ॥२४॥

(द्वादश कल्याणस्य)

श्वःश्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम्॥२५
भावुकं भविकं भव्यं कुशलं क्षेममस्त्रियाम् ।
शस्तं च

कल्याण के १२ नाम—(१) श्वःश्रेयस (२) शिव (३) भद्र (४) कल्याण (५) मङ्गल (६) शुभ (७) भावुक (८) भविक (९) भव्य (१०) कुशल (११) क्षेम (१२) शस्त ।

इनमें (१-१०) नपुंसक में (११-१२) नपुंसक और पुँल्लिङ्ग में होते हैं ॥२५॥

अथ त्रिषु द्रव्ये पापं पुण्यं सुखादि च ॥२६॥

'पाप' 'पुण्य' और 'सुख' से लेकर 'शस्त' शब्द पर्यन्त द्रव्यवाचक होने पर तीनों लिङ्गों में होते हैं [यथा—पापः पुमान्, पापा स्त्री, पापं कुलम् ।] ॥२६॥

(पञ्च प्रशस्तस्य)

मतल्लिका मचर्चिका प्रकाण्डमुद्धतल्लजौ । प्रशस्तवाचकान्यमूनि

प्रशस्त के ५ नाम—(१) मतल्लिका (२) मचर्चिका (३) प्रकाण्ड (४) उद्ध (५) तल्लज । ये पाँचों विशेष्य में अन्य लिङ्ग के समानाधिकरण में होने पर भी अपने लिङ्ग को नहीं छोड़ते । (यथा —प्रशस्तो ब्राह्मणः = ब्राह्मणमतल्लिका = ब्राह्मणोद्धः । प्रशस्ता गौः = गोमचर्चिका = गोप्रकाण्डम् । प्रशस्ता कुमारी = कुमारीतल्लजः ।]

(एकं शुभावहविधेः)

अयः शुभावहो विधिः ॥२७॥

शुभकारक भाग्य का नाम—(१) अय । यह पुँल्लिङ्ग है ॥ २७ ॥

(षड् भाग्यस्य)

दैवं दिष्टं भागधेयं भाग्यं स्त्री नियतिर्विधिः ।

भाग्य के ६ नाम—(१) दैव (२) दिष्ट (३) भागधेय (४) भाग्य (५) नियति (६) विधि । इनमें 'नियति' स्त्रीलिङ्ग; 'विधि' पुँल्लिङ्ग; और शेष नपुंसक हैं ।

(त्रीणि कारणस्य)

हेतुर्ना कारणं बीजम्

कारण के ३ नाम—(१) हेतु (२) कारण (३) बीज । इसमें (१) 'हेतु' पुँल्लिङ्ग, (२-३) नपुंसक हैं ।

(द्वे मुख्यकारणस्य)

निदानं त्वादिकारणम् ॥२८॥

मुख्य कारण के २ नाम—(१) निदान (२) आदिकारण ॥२८॥

(त्रीणि आत्मनः)

क्षेत्रज्ञ आत्मा पुरुषः

शरीराधिदेवता के ३ नाम—(१) क्षेत्रज्ञ (२) आत्मा (३) पुरुष ।

(द्वे प्रकृतेः)

प्रधानं प्रकृतिः स्त्रियाम् ।

प्रकृति के २ नाम—(१) *प्रधान* (२) प्रकृति । इनमें (१) नपुंसक (२) स्त्रीलिङ्ग है ।

(एकं कालावस्थायाः)

विशेषः कालिकोऽवस्था

समय द्वारा निर्मित देहादि के विशेष रूप (बाल, यौवन, वृद्ध) का नाम—(१) अवस्था ।

(त्रयाणां गुणानामप्येकैकम्)

गुणाः सत्वं रजस्तमः ॥२९॥

गुणों के नाम—(१) सत्व (२) रजस् (३) तमस् ॥२९॥

(षट् जननस्य)

जनुर्जनन-जन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।

जन्म लेने के ६ नाम—(१) जनुष् (२) जनन (३) जन्मन् (४) जनि (५) उत्पत्ति (६) उद्भव । इनमें (१-३) नपुंसक (४-५) स्त्रीलिंङ्ग (६) पुँल्लिङ्ग है ।

(षट् प्राणिनः)

प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तुर्जन्यु-शरीरिणः ३०

प्राणी के ६ नाम—(१) प्राणिन् (२) चेतन (३) जन्मिन् (४) जन्तु (५) जन्यु (६) शरीरिन् । (१-६) पुँल्लिङ्ग हैं ॥३०॥

(त्रीणि घटत्वादिजातेः)

जातिर्जातं च सामान्यम्

जाति के ३ नाम—(१) जाति (२) जात (३) सामान्य ।

(द्वे घटादिव्यक्तेः)

व्यक्तिस्तु पृथगात्मता ।

व्यक्ति के २ नाम—(१) व्यक्ति (२) पृथगात्मता ।

(सप्त मनसः)

चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः॥३१

मन के ७ नाम—(१) चित्त (२) चेत (३) हृदय (४) स्वान्त (५) हृद् (६) मानस (७) मनस् । ये (१-७) नपुंसक हैं ॥३१॥

इति कालवर्गः ४

अथ धीवर्गः ५

(चतुर्दश बुद्धेः)

बुद्धिर्मनीषा धिषणा धीः प्रज्ञा शेमुषी मतिः ।
प्रेक्षोपलब्धिश्चित्संवित्प्रतिपज्ज्ञप्तिचेतनाः ॥१॥

बुद्धि के १४ नाम (१) बुद्धि (२) मनीषा (३) धिषणा (४) धी (५) प्रज्ञा (६) शेमुषी (७) मति (८) प्रेक्षा (९) उपलब्धि (१०) चिद् (११) संविद् (१२) प्रतिपद् (१३) ज्ञप्ति (१४) चेतना ॥ १ ॥

(एकं धारणायुक्तबुद्धेः)

धीर्धारणावती मेधा

धारणा शक्तिवाली बुद्धि का नाम—(१) मेधा ।

(एकं मनोव्यापारस्य)

सङ्कल्पः कर्म मानसम् ।

मानसिक कर्म का नाम—(१) सङ्कल्प ।

(द्वे चेतसः सुखादौ तत्परतायाः)

चित्ताभोगो मनस्कारः

सुख आदि में आसक्त मन के २ नाम—(१) चित्ताभोग (२) मनस्कार ।

(त्रीणि विचारणस्य)

चर्चा संख्या विचारणा ॥२॥[२]

विचार (प्रमाणों द्वारा अर्थ परीक्षा) के ३ नाम—(१) चर्चा (२) संख्या (३) विचारणा ॥२॥

(त्रीणि तर्कस्य)

अध्याहारस्तर्क ऊहः

तर्क के ३ नाम—(१) अध्याहार (२) तर्क (३) ऊह ।

(चत्वारि संशयज्ञानस्य)

विचिकित्सा तु संशयः ।
सन्देह-द्वापरौ च

संशय के ४ नाम—(१) विचिकित्सा (२) संशय (३) सन्देह (४) द्वापर ।

(द्वे निश्चयज्ञानस्य)

अथ समौ निर्णय-निश्चयौ ॥३॥

निश्चय के २ नाम—(१) निर्णय (२) निश्चय । ये दोनों समान लिङ्ग (पुँल्लिङ्ग) हैं ॥ ३ ॥

(द्वे परलोकाभाववादिज्ञानस्य)

मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता

परलोकाभाव ज्ञान के २ नाम—(१) मिथ्यादृष्टि (२) नास्तिकता ।

(द्वे परद्रोहचिन्तनस्य)

व्यापादो द्रोहचिन्तनम् ।

दूसरे से द्रोह करने का विचार करने के २ नाम—(१) व्यापाद (२) द्रोहचिन्तन । (इनमें पहला पुँल्लिङ्ग और दूसरा नपुंसक है) ।

(द्वे सिद्धान्तस्य)

समौ सिद्धान्त-राद्धान्तौ

सिद्धान्त के २ नाम—(१) सिद्धान्त (२) राद्धान्त । ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि भ्रमस्य)

भ्रान्तिर्मिथ्यामतिर्भ्रमः ॥४॥

भ्रम के ३ नाम—(१) भ्रान्ति (२) मिथ्यामति (३) भ्रम ॥४॥

---

१ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—
अवधानं समाधानं प्रणिधानं तथैव च ।
समाधान के ३ नाम—(१) अवधान (२) समाधान (३) प्रणिधान ।

२ अन्य पुस्तकों में—
विमर्शो भावना चैव वासना च निगद्यते ।
वासना के ३ नाम—(१) विमर्श (२) भावना (३) वासना ।

(दश अङ्गीकारस्य)

संविदागूः प्रतिज्ञानं नियमाश्रव-संश्रवाः ।
अङ्गीकाराभ्युपगम-प्रतिश्रव-समाधयः ॥५॥

अङ्गीकार के १० नाम—(१) संविद् (२) आगू (३) प्रतिज्ञान (४) नियम (५) आश्रव (६) संश्रव (७) अङ्गीकार (८) अभ्युपगम (९) प्रतिश्रव (१०) समाधि । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥५॥

(एकं मोक्षोपयोगिबुद्धेः)

मोक्षे धीर्ज्ञानम्

मोक्ष में निरत बुद्धि का नाम—(१) ज्ञान ।

(एकं शिल्पादिविषयक बुद्धेः)

अन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ।

अन्यत्र (मोक्षोपयोगि बुद्धि को छोड़कर) शिल्प (कारीगरी) और शास्त्र में लगनेवाली बुद्धि का नाम —(१) विज्ञान ।

(अष्टौ मोक्षस्य)

मुक्तिः कैवल्य-निर्वाण-श्रेयोनिःश्रेयसामृतम्॥६
मोक्षोऽपवर्गः

मोक्ष के ८ नाम—(१) मुक्ति (२) कैवल्य (३) निर्वाण (४) श्रेयस् (५) निःश्रेयस (६) अमृत (७) मोक्ष (८) अपवर्ग ॥६॥

(त्रीणि अज्ञानस्य)

अथाज्ञानमविद्याहम्मतिः स्त्रियाम् ।

अज्ञान के ३ नाम—(१) अज्ञान (२) अविद्या (३) अहंमति (स्त्री लिङ्ग) ।

(रूपादिपञ्चकस्य प्रत्येकं त्रीणि)

रूपं शब्दो गन्ध-रस-स्पर्शाश्च विषया अमी॥७॥
गोचरा इन्द्रियार्थाश्च

विषयों के नाम—(१) रूप (२) शब्द (३) गन्ध (४) रस (५) स्पर्श । इन्हीं को विषय, गोचर, इन्द्रियार्थ भी कहते हैं ॥७॥

(त्रीणि इन्द्रियाणाम्)

हृषीकं विषयीन्द्रियम् ।

इन्द्रियों के ३ नाम—(१) हृषीक (२) विषयिन् (३) इन्द्रिय ।

(एकं गुह्यादीन्द्रियस्य)

कर्मेन्द्रियं तु पाय्वादि[1]

कर्मेन्द्रिय के नाम—(१) गुदा आदि ।

(एकं ज्ञानेन्द्रियस्य)

मनो-नेत्रादि धीन्द्रियम्[2] **॥८॥**

ज्ञानेन्द्रिय के नाम-(१) मन (२) नेत्र आदि ।

(द्वे कषायरसस्य)

तुवरस्तु कषायोऽस्त्री

कसैले रस के २ नाम—(१) तुवर (२) कषाय । इनमें पहला पुँलिङ्ग; और दूसरा पुं० और नपुंसक में होता है ।

(एकं मधुरस्य)

मधुरो

मीठा रस का नाम—(१) मधुर ।

(एकं लवणस्य)

लवणः

नमकीन रस का नाम—(१) लवण ।

(एकं कटोः)

कटुः ।

कड़वे रस का नाम - (१) कटु ।

(एकं तिक्तस्य)

तिक्तः

तीते रस का नाम - (१) तिक्त ।

(एकं अम्लस्य)

अम्लश्च

खट्टे रस का नाम—(१) अम्ल ।

---

१ पायूपस्थे पाणि-पादौ वाक् चेतोन्द्रियसंग्रहः ।
अर्थात—(१) पायु (=गुदा), (२) उपस्थ (लिङ्ग, भग) (३) हाथ (४) पैर (५) वाणी—ये ५ कर्मेन्द्रिय हैं ।

२ मनः कर्णौ तथा नेत्रं रसना च त्वचा सह ।
नासिका चेति षट् तानि धीन्द्रियाणि प्रचक्षते ॥
अर्थात्—(१) मन (२) कान (३) आँख (४) जीभ (५) त्वचा (६) नाक—ये ६ ज्ञानेन्द्रिय हैं ।

रसाः पुंसि

'तुवर' सेकर 'अम्ल' पर्यन्त शब्दों को रस कहते हैं और रसवाचक होने पर ये पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

तद्वत्सु षडमी त्रिषु ॥६॥

यदि वे द्रव्यवाचक हों तो तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥६॥

(एकं परिमलस्य)

विमर्दोत्थे परिमलो गन्धे जनमनोहरे ।

मनुष्यों के मन हरण करनेवाली (सुरतादि में बकुल-मालाओं के मर्दन से और चन्दनादि के घिसने से उत्पन्न) सुगन्धि का नाम—(१) परिमल।

(एकं सुगन्धस्य)

आमोदः सोऽतिनिर्हारी

वह परिमल यदि अत्यन्त मनोहर हो तो उसका नाम—(१) आमोद ।

वाच्यलिङ्गत्वमागुणात् ॥१०॥

यहाँ से लेकर **'गुणे शुक्लादयः पुंसि ॥१७॥'** तक जो शब्द हैं वे वाच्यलिङ्ग हैं (अर्थात् विशेष्य के अनुसार तीनों लिङ्गों में होते हैं।) ॥१०॥

(द्वे दूरगामिगन्धस्य)

समाकर्षी तु निर्हारी

बड़ी दूर की खुशबू के २ नाम—(१) समाकर्षिन् (२) निर्हारिन् ।

(चत्वारि शोभनगन्धयुक्तस्य)

सुरभिर्घ्राणतर्पणः ।

इष्टगन्धः सुगन्धिः स्यात्

सुगन्धि (खुशबू) के ४ नाम—(१) सुरभि (२) घ्राणतर्पण (३) इष्टगन्ध (४) सुगन्धि ।

(द्वे मुखवासनगुटिकादेः)

आमोदी मुखवासनः ॥११॥

मुँह को सुगन्धित करनेवाले 'पान' आदि के २ नाम—(१) आमोदिन् (२) मुखवासन ॥११॥

(द्वे दुर्गन्धस्य)

पूतिगन्धिस्तु दुर्गन्धः

दुर्गन्ध (बदबू) के २ नाम—(१) पूतिगन्धि (२) दुर्गन्ध ।

(द्वे अपक्वमांसादिगन्धस्य)

विस्रं स्यादामगन्धि यत् ।

कच्चे मांस आदि की गन्ध के २ नाम—(१) विस्र (२) आमगन्धिन् ।

(त्रयोदश शुक्लवर्णस्य)

शुक्ल-शुभ्र-शुचि-श्वेत-विशद-श्येत-पाण्डराः॥१२

अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।

सफेद रंग के १३ नाम—(१) शुक्ल (२) शुभ्र (३) शुचि (४) श्वेत (५) विशद (६) श्येत (७) पाण्डर (८) अवदात (९) सित (१०) गौर (११) वलक्ष (१२) धवल (१३) अर्जुन ॥१२॥

(त्रीणि पीतसंवलितशुक्लवर्णस्य)

हरिणः पाण्डुरः पाण्डुः

कुछ पीलापन लिए हुए सफेद रंग के ३ नाम—(१) हरिण (२) पाण्डुर (३) पाण्डु ।

(द्वे धूसरवर्णस्य)

ईषत्पाण्डुस्तु धूसरः ॥१३॥

कुछ-कुछ सफेद (मटमैला) रंग के २ नाम—(१) ईषत्पाण्डु (२) धूसर ॥१३॥

(सप्त कृष्णवर्णस्य)

कृष्णे नीलासित-श्याम-काल-श्यामल-मेचकाः

काला रंग के ७ नाम - (१) कृष्ण (२) नील (३) असित (४) श्याम (५) काल (६) श्यामल (७) मेचक ।

(त्रीणि पीतवर्णस्य)

पीतो गौरो हरिद्राभः

पीला (हरदी की आभा) रंग के ३ नाम—(१) पीत (२) गौर (३) हरिद्राभ ।

(त्रीणि हरितवर्णस्य)

पालाशो हरितो हरित् ॥१४॥

हरा रंग के ३ नाम—(१) पालाश (२) हरित (३) हरित् ॥१४॥

(त्रीणि रक्तवर्णस्य)

रोहितो लोहितो रक्तः

लाल के ३ नाम—(१) रोहित (२) लोहित (३) रक्त ।

(त्रीणि शोणवर्णस्य)

शोणः कोकनदच्छविः ।

लाल कमल के समान गाढ़ा लाल रंग के २ नाम—(१) शोण (२) कोकनदच्छवि ।

(द्वे अरुणवर्णस्य)

अव्यक्तरागस्त्वरुणः

गुलाबी रंग के २ नाम—(१) अव्यक्तराग (२) अरुण ।

(द्वे श्वेतरक्तवर्णस्य)

श्वेतरक्तस्तु पाटलः ॥१५॥

सफेदी लिए हुए लाल रंग के २ नाम—(१) श्वेतरक्त (२) पाटल ॥१५॥

(द्वे कृष्णपीतस्य)

श्यावः स्यात्कपिशः

कालापन लिए हुए पीले रंग (फीका रंग) के २ नाम—(१) श्याव (२) कपिश ।

(त्रीणि कृष्णलोहितस्य)

धूम्र-धूमलौ कृष्णलोहिते ।

कालापन लिए हुए लाल रंग (धूमिल रंग) के ३ नाम—(१) धूम्र (२) धूमल (३) कृष्णलोहित ।

(षट् कपिलवर्णस्य)

कडारः कपिलः पिङ्ग-पिशङ्गौ कद्रु-पिङ्गलौ ॥१६

भूरा रंग के ६ नाम—(१) कडार (२) कपिल (३) पिङ्ग (४) पिशङ्ग (५) कद्रु (६) पिङ्गल ॥१६॥

(षड् विचित्रवर्णस्य)

चित्रं किर्मीर-कल्माष-शबलैताश्च कर्बुरे ।

चित्र-कर्बुर (चित-कबरा) रंग के ६ नाम—(१) चित्र (२) किर्मीर (३) कल्माष (४) शबल (५) एत (६) कर्बुर ।

गुणे शुक्लादयः पुंसि, गुणिलिङ्गास्तु तद्वति १७

गुणवाचक होने पर 'शुक्ल' आदि शब्द पुँल्लिङ्ग में होते हैं । और गुणिवाचक होने पर उनके अनुसार तीनों लिङ्गों में होते हैं [यथा—शुक्लं वस्त्रं, शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी] ॥१७॥

(इति धीवर्गः ५)

शब्दादिवर्गः ६

(सप्ताधिष्ठातृदेवतायाः)

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती ।

सरस्वती (वाणी की अधिष्ठात्री देवी) के ७ नाम—(१) ब्राह्मी (२) भारती (३) भाषा (४) गिर् (५) वाच् (६) वाणी (७) सरस्वती ।

(षट् भाषणस्य)

व्याहार उक्तिर्लपितं भाषितं वचनं वचः ॥१॥

बोलने के ६ नाम —(१) व्याहार (२) उक्ति (३) लपित (४) भाषित (५) वचन (६) वचस् । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग (३-६) नपुंसक हैं ॥ १ ॥

(द्वे अपभ्रंशस्य)

अपभ्रंशोऽपशब्दः स्यात्

अपभ्रंश शब्द के २ नाम—(१) अपभ्रंश (२) अपशब्द ।

(एकं शब्दस्य)

शास्त्रे शब्दस्तु वाचकः ।

शास्त्रों (व्याकरण आदि) में वाचक का नाम (१) शब्द ।

(एकं वाक्यस्य)

तिङ्सुबन्तचयो वाक्यं क्रिया वा कारकान्विता

तिङन्त-सुबन्त-पदसमूह और कारक युक्त क्रिया का नाम – (१) वाक्य ॥ २ ॥

(चत्वारि वेदस्य)

श्रुतिः स्त्री वेद आम्नायस्त्रयी

वेद के ४ नाम (१) श्रुति (२) वेद (३) आम्नाय (४) त्रयी। इनमें (१,४) स्त्रीलिङ्ग (२-३) पुँल्लिङ्ग हैं।

(एकं वेदविहितकर्मणः)

धर्मस्तु तद्विधिः

(धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः के अनुसार) उस वेद में कही हुई विधि का नाम—(१) धर्म।

(वेदानां प्रत्येकमेकम्)

स्त्रियामृक्सामयजुषी

वेदत्रयी का नाम—(१) ऋच् (२) सामन् (३) यजुष्। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२-३) नपुंसक हैं।

(एकं वेदत्रयसंघातस्य)

इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥ ३ ॥

इन तीनों वेद का संयुक्त नाम—(१) त्रयी ॥ ३ ॥

(एकं वेदाङ्गस्य)

शिक्षेत्यादि श्रुतेरङ्गम्

वेद के अङ्ग का नाम—(१) शिक्षा। (इत्यादि से कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्यौतिष, छन्दस् का अभिप्राय समझना।)

(द्वे ॐकारस्य)

ॐकार-प्रणवौ समौ।

ॐकार के २ नाम—(१) ॐकार (२) प्रणव। ये दोनों समान अर्थ एवं लिङ्ग (पुं०) वाले हैं।

(द्वे पूर्वचरितस्य महाभारतादेः)

इतिहासः पुरावृत्तम्

पूर्ववृत्तान्त बतलानेवाले (महाभारत आदि) के २ नाम—(१) इतिहास (२) पुरावृत्त।

(एकं स्वराणाम्)

उदात्ताद्यास्त्रयः स्वराः ॥४॥

स्वरों के नाम—(१) उदात्त। आदि से अनुदात्त और स्वरित समझना ॥४॥

(एकैकं तर्कविद्यायाः, अर्थशास्त्रस्य)

आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्तर्कविद्यार्थशास्त्रयोः।

गौतम आदि की रचित तर्क विद्या का नाम—(१) आन्वीक्षिकी।

बृहस्पति-कौटिल्य आदि के बनाए हुए अर्थशास्त्र का नाम—(१) दण्डनीति।

(द्वे ज्ञातसत्यार्थभूतायाः कथायाः)

आख्यायिकोपलब्धार्था

कहानी (यथा वासवदत्ता आदि के) २ नाम—(१) आख्यायिका (२) उपलब्धार्था।

(द्वे व्यासादिप्रणीतभागवतपुराणादेः)

पुराणं [1]पञ्चलक्षणम् ॥५॥

व्यासादि प्रणीत भागवत पुराण आदि के २ नाम—(१) पुराण (२) पञ्चलक्षण ॥५॥

(द्वे कथायाः)

प्रबन्धकल्पना कथा

कथा के २ नाम—(१) प्रबन्धकल्पना (२) कथा।

(द्वे दुर्विज्ञानार्थप्रश्नस्य)

प्रवह्लिका [2]प्रहेलिका।

---

१ शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः।
छन्दोविचितिरित्येष षडंगो वेद उच्यते ॥

२ उदात्तश्चानुदात्तश्च स्वरितश्च स्वरास्त्रयः।
चतुर्थः प्रचितो नोक्तो यतोऽसौ छान्दसः स्मृतः ॥

१ सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥
—वाराहपुराणम्।

अष्टादश पुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते।
पाद्मं ब्राह्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा ॥
तथाऽन्यन्नारदीयञ्च मार्कण्डेयञ्च सप्तमम्।
आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं स्मृतम् ॥
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं तथा।
वाराहं द्वादशञ्चैव स्कान्दञ्चात्र त्रयोदशम् ॥
चतुर्दशं वामनकं कौर्मं पञ्चदशं स्मृतम्।

२ प्रहेलिकालक्षणम्—
व्यक्तीकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्।
यत्र बाह्यार्थसम्बन्धः कथ्यते सा प्रहेलिका ॥
अस्योदाहरणम्, सुभाषितरत्नभाण्डागारे—

पहेली के नाम–प्रवह्लिका (२) प्रहेलिका ।

(द्वे मन्वादिस्मृतेः)

स्मृतिस्तु धर्मसंहिता

मनु आदि की [1]स्मृति के २ नाम—(१) स्मृति (२) धर्मसंहिता ।

(द्वे संग्रहस्य)

समाहृतिस्तु [2]संग्रहः ॥६॥

संग्रह के २ नाम—(१) समाहृति (२) संग्रह ॥ ६ ॥

(द्वे समस्यायाः)

समस्या[3] तु समासार्था

समस्या के २ नाम—(१) समस्या (२) समासार्था ।

(द्वे लोकप्रवादस्य)

किंवदन्ती जनश्रुतिः ।

अफवाह के २ नाम—(१) किंवदन्ती (२) जनश्रुति ।

(चत्वारि वार्तायाः)

वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्

वृत्तान्त के ४ नाम—(१) वार्ता (२) प्रवृत्ति (३) वृत्तान्त (४) उदन्त ।

(षट् नाम्नः)

अथाह्वयः ॥ ७ ॥

आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च ।

नाम के ६ नाम—(१) आह्वय (२) आख्या (३) आह्वा (४) अभिधान (५) नामधेय (६) नामन् । इनमें (१) पुंल्लिङ्ग (२-३) स्त्रीलिङ्ग (४-६) नपुंसक हैं ॥७॥

(त्रीणि आह्वानस्य)

हूतिराकारणाऽऽह्वानम्

पुकारने के ३ नाम– (१) हूति (२) आकारणा (३) आह्वान । इनमें (१–२) स्त्रीलिङ्ग (३) नपुंसक है ।

(एकं बहुकर्तृकाह्वानस्य)

संहूतिर्बहुभिः कृता ॥८॥

बहुत लोगों के पुकारने का नाम—(१) संहूति ॥ ८ ॥

(द्वे ऋणदानादिनिमित्तविविधवादस्य)

विवादो व्यवहारः स्यात्

कर्ज़ के देन-लेन के सम्बन्ध में झगड़ा करने के २ नाम—(१) विवाद (२) व्यवहार ।

(द्वे वचनोपक्रमस्य)

उपन्यासस्तु वाङ्मुखम् ।

बात आरम्भ करने के २ नाम—(१) उपन्यास (२) वाङ्मुख ।

(द्वे प्रकृतोपपादकस्य दृष्टान्तादेः)

उपोद्घात उदाहारः

कही जानेवाली बात की पुष्टि के निमित्त दृष्टान्त, उदाहरण, भूमिका आदि देने के २ नाम—(१) उपोद्घात (२) उदाहार ।

(द्वे शपथस्य)

शपनं शपथः पुमान् ॥९॥

कसम खाने के २ नाम—(१) शपन (२) शपथ । इनमें (१ ला) नपुंसक, (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ॥ ९ ॥

(त्रीणि प्रश्नस्य)

प्रश्नोऽनुयोगः पृच्छा च

एकचक्षुर्न काकोऽयं बिलमिच्छन्न पन्नगः ।
क्षीयते वर्द्धते चैव न समुद्रो न च चन्द्रमाः ॥

१ पाराशरस्मृति की भूमिका देखिए ।

२ विस्तरेणोपदिष्टानामर्थानां सूत्र-भाष्ययोः ।
निबन्धो यः समासेन संग्रहं तं विदुर्बुधाः ॥
—नाट्यशास्त्रम्

३ यथा—'सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी' समस्या की पूर्ति
"विलोक्य बालामुखचन्द्रबिम्बं कण्ठे च मुक्तावलिहाररताराः ।
पुनर्निशाया भयभीतभीता सूर्योदये रोदिति चक्रवाकी ॥"
और 'कुर्वाते कुरुते करोति कुरुतः कुर्वन्त्यलंकुर्वते' समस्या की पूर्ति इस प्रकार होगी—
"यस्य द्वारि सदा समीर-वरुणौ संमार्जनं हव्यवाट्
पाकं शीतगुरातपत्रकरणं दस्रौ प्रतीहारत.म् ।
देवा लास्यविधिं च दास्यममरा वर्ण्यो दशास्यः कथं
कुर्वाते कुरुते करोति कुरुतः कुर्वन्त्यलंकुर्वते ॥"

पूछने (सवाल करने) के ३ नाम—(१) प्रश्न (२) अनुयोग (३) पृच्छा ।

(द्वे उत्तरस्य)

प्रतिवाक्योत्तरे समे ।

जवाब देने के २ नाम—(१) प्रतिवाक्य (२) उत्तर । ये दोनों नपुंसक हैं ।

(द्वे मिथ्याविवादस्य)

मिथ्याभियोगोऽभ्याख्यानम्

असत्य आक्षेप (अर्थात् तुम्हारे यहाँ मेरा सौ रुपया बाकी है आदि) के २ नाम—(१) मिथ्याभियोग (२) अभ्याख्यान ।

(द्वे सुरापानादि मिथ्यापापोद्भावनस्य)

अथ मिथ्याभिशंसनम् ॥१०॥

अभिशापः

झूठे दोष (तोहमत) लगाने के २ नाम—(१) मिथ्याभिशंसन (२) अभिशाप ॥१०॥

(एकं प्रीतिविशेषजनितस्य मुखकण्ठादिशब्दस्य)

प्रणादस्तु शब्दः स्यादनुरागजः ।

अनुरागज (प्रेम से उत्पन्न हुए) शब्द का नाम—(१) प्रणाद ।

(त्रीणि कीर्तेः)

यशः कीर्तिः समज्ञा च

कीर्ति के ३ नाम—(१) यशस् (२) कीर्ति (३) समज्ञा ।

(चत्वारिस्तुतेः)

स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥११॥

स्तुति के ४ नाम—(१) स्तव (२) स्तोत्र (३) स्तुति (४) नुति ॥११॥

(एकं द्विस्त्रिवारोक्तस्य)

आम्रेडितं द्विस्त्रिरुक्तम्

दो-तीन बार कहे हुए शब्द का नाम—(१) आम्रेडित ।

(द्वे उच्चैर्घोषस्य)

उच्चैर्घुष्टं तु घोषणा ।

ज़ोर से चिल्लाए हुए शब्द के २ नाम—(१) उच्चैर्घुष्ट (२) घोषणा ।

(एकं शोकादिना विकृतशब्दस्य)

काकुः स्त्रियां विकारो यः शोकभीत्यादिभिर्ध्वनेः

शोक भय आदि से विकृत शब्द का नाम—(१) काकु । यह स्त्रीलिङ्ग है ॥१२॥

(दश निन्दायाः)

अवर्णाक्षेप-निर्वाद-परीवादापवादवत् ।

उपक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सा निन्दा च गर्हणे १३

निन्दा के १० नाम—(१) अवर्ण (२) आक्षेप (३) निर्वाद (४) परीवाद (५) अपवाद (६) उपक्रोश (७) जुगुप्सा (८) कुत्सा (९) निन्दा (१०) गर्हण । इनमें (१–६) पुँल्लिङ्ग, (७–९) स्त्रीलिङ्ग (१०) नपुंसक हैं ॥१३॥

(द्वे अप्रियवचसः)

पारुष्यमतिवादः स्यात्

अप्रियवचन के २ नाम—(१) पारुष्य (२) अतिवाद ।

(द्वे अपकारार्थवाक्यस्य)

भर्त्सनं त्वपकारगीः ।

अपकारयुक्त वाणी (फटकार) के २ नाम—(१) भर्त्सन (२) अपकारगिर् । इनमें (१ला) नपुंसक, (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

(एकं सनिन्दभाषणस्य)

यः सनिन्द उपालम्भस्तत्र स्यात्परिभाषणम् १४

बुराई के साथ [1]उलहना देने का नाम—(१) परिभाषण ॥१४॥

(परस्त्रीनिमित्तंपुंसः, परपुरुषनिमित्तं स्त्रियाश्चा-क्रोशनस्यैकम्)

तत्र त्वाक्षारणा यः स्यादाक्रोशो मैथुनं प्रति ।

पराई स्त्री या पर-पुरुष से मैथुन के निमित्त बातचीत करने का नाम—(१) आक्षारणा ।

---

१ उलहना दो प्रकार का होता है—

(अ) गुणों को प्रकट करते हुए यथा—

'महाकुलीनस्य तव किमुचितमिदम् ?'

तुम्हारे जैसे महाकुलीन को क्या यह उचित है ?

(ब) निन्दा करते हुए यथा—

'बन्धकीसुतस्य तवोचितमेवेदम् ।'

तुम्हारे जैसे कुलटा के पुत्र को यह उचित ही है ।

(द्वे सम्भाषणस्य)

स्यादाभाषणमालापः

आपस में मीठी २ बात करने के २ नाम—(१) आभाषण (२) आलाप ।

(एकं प्रयोजनशून्यस्योन्मत्तादिवचनस्य)

प्रलापोऽनर्थकं वचः ॥१५॥

फजूल बकवाद करने का नाम—(१) प्रलाप ॥ १५ ॥

(द्वे बहुशो भाषणस्य)

अनुलापो मुहुर्भाषा

एक बात को फेट-फेट कर बार-बार कहने के २ नाम—(१) अनुलाप (२) मुहुर्भाषा ।

(द्वे रोदनपूर्वकभाषणस्य)

विलापः परिदेवनम् ।

रोते-रोते बात कहने के २ नाम—(१) (१) विलाप (२) परिदेवन ।

(द्वे अन्योन्यविरुद्धवचनस्य)

विप्रलापो विरोधोक्तिः

परस्पर विरुद्ध बात कहने के २ नाम—(१) विप्रलाप (२) विरोधोक्ति ।

(एकं मिथोभाषणस्य)

संलापो भाषणं मिथः ॥१६॥

प्राइवेट बात-चीत करने का नाम (१) संलाप ॥ १६ ॥

(द्वे शोभनवचनस्य)

सुप्रलापः सुवचनम्

प्यारी बात के २ नाम—(१) सुप्रलाप (२) सुवचन ।

(द्वे गोपनकारिवचनस्य)

अपलापस्तु निह्नवः[1] ।

कही हुई बात को छिपाने के २ नाम—(१) अपलाप (२) निह्नव ।

(द्वे सन्देशवचनस्य)

संदेशवाग्वाचिकं स्याद्

सन्देश कहने के २ नाम—(१) सन्देशवाच् (२) वाचिक । इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग, (२रा) नपुंसक है ।

वाग्भेदास्तु त्रिषूत्तरे ॥१७॥

आगे के वाग्भेद ('रुशती' से लेकर 'सम्यक्' २१ श्लोकपर्यन्त) तीनो लिङ्गों में होते हैं ॥ १७ ॥

(एकमकल्याणवाचः)

रुशती वागकल्याणी

अशुभ वाणी का नाम—(१) रुशती ।

(एकं शुभवचनस्य)

स्यात्कल्या तु शुभात्मिका ।

शुभ वचन का नाम—(१) कल्या ।

(एकं सान्त्ववचनस्य)

अत्यर्थमधुरं सान्त्वम्

बहुत मीठे वचन का नाम—(१) सान्त्व ।

(द्वे सम्बद्धवचनस्य)

सङ्गतं हृदयङ्गमम् ।१८॥

जी में डट जानेवाली बात के २ नाम—(१) सङ्गत (२) हृदयङ्गम ॥१८॥

(द्वे कर्कशवचनस्य)

निष्ठुरं परुषम्

असत्य अभियोग के ३ नाम—(१) चोद्य (२) आक्षेप (३) अभियोग ।

(त्रीणि शापस्य)

शापाक्रोशौ दुरेषणा ।

शाप के ३ नाम—(१) शाप (२) आक्रोश (३) दुरेषणा ।

(त्रीणि चाटोः)

अस्त्री चाटु चटु श्लाघा प्रेम्णा मिथ्याविकत्थनम् ॥

चापलूसी (प्रेम के कारण झूठ बोलने) के ३ नाम—(१) चाटु (२) चटु (३) श्लाघा । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर शेष पुं० नपुंसक में होते हैं ।

---

१ अन्य पुस्तकों में निम्नाङ्कित श्लोक मिलते हैं—

(त्रीणि अभियोगस्य)

चोद्यमाक्षेपाभियोगौ

कठोर वचन के २ नाम—(१) निष्ठुर (२) परुष ।

(द्वे भण्डादिवचनस्य)

ग्राम्यमश्लीलम्

भाँड़ आदि के वचन के २ नाम—(१) ग्राम्य (२) अश्लील ।

(एकं प्रियसत्यवचनस्य)

सूनृतं प्रिय । सत्ये

प्यारी और सच बात का नाम—(१) सूनृत ।

(त्रीणि विरुद्धार्थस्य वचनस्य)

अथ सङ्कुलक्लिष्टे परस्परपराहते ॥१६॥

परस्पर विरोधी बात (यथा—पश्यत्यचक्षुः शृणोत्यकर्णः) के ३ नाम—(१) सङ्कुल (२) क्लिष्ट (३) परस्परपराहत ॥ १६ ॥

(द्वे अशक्त्यादिनासम्पूर्णोच्चारितस्य)

लुप्तवर्णपदं ग्रस्तम्

अशक्ति आदि से कही गयी अधूरी बात के २ नाम—(१) लुप्तवर्णपद (२) ग्रस्त ।

(द्वे शीघ्रोच्चारितवचसः)

निरस्तं त्वरितोदितम् ।

जल्दी से कही गयी बात के २ नाम—(१) निरस्त (२) त्वरितोदित ।

(द्वे श्लेष्मनिर्गमसहितवचनस्य)

अम्बूकृतं सनिष्ठीवम्

थूक का छींटा के सहित निकलती हुई बात के २ नाम—(१) अम्बूकृत (२) सनिष्ठीव ।

(द्वे अर्थशून्यवचनस्य)

अबद्धं स्यादनर्थकम् ॥२०॥

बिना मतलब की बात के २ नाम—(१) अबद्ध (२) अनर्थक ॥२०॥

(द्वे वक्तुमनर्हस्य वचसः)

अनक्षरमवाच्यं स्याद्

न कहने लायक बात के २ नाम—(१) अनक्षर (२) अवाच्य ।

(एकं मृषावचनस्य)

आहतं तु मृषार्थकम् [1]

झूठा अर्थ रखनेवाला वचन (यथा—

एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः ।
मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृङ्गधनुर्द्धरः ॥)

का नाम—(१) आहत ।

(द्वे अप्रकटवचनस्य)

अथ म्लिष्टमविस्पष्टम्

अस्पष्ट वचन के २ नाम—(१) म्लिष्ट (२) अविस्पष्ट ।

(द्वे असत्यवचसः)

वितथं त्वनृतं वचः ॥२१॥

झूठ बात के २ नाम—(१) वितथ (२) अनृत ॥२१॥

(चत्वारि सत्यवचसः)

सत्यं तथ्यमृतं सम्यग्

सच बात के ४ नाम—(१) सत्य (२) तथ्य (३) ऋत (४) सम्यक् ।

अमूनि त्रिषु तद्वति

ये (सत्य आदि) शब्द विशेष्य वाचक होने पर तीनों लिङ्गों में होते हैं (यथा—सत्या स्त्री, सत्यः पुमान्, सत्यं कुलम् ।)

---

१ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक मिलते हैं—

(द्वे सोपहासस्य)

सोल्लुण्ठनं तु सोत्प्रासम्

मज़ाक की बात के २ नाम—(१) सोल्लुण्ठन (२) सोत्प्रास ।

(द्वे रतिकूजितस्य)

भणितं रतिकूजितम्

रति समय में किए गये शब्द के २ नाम—(१) भणित (२) रतिकूजित ।

(पञ्च स्पष्टवचनस्य)

श्राव्यं हृद्यं मनोहारि विस्पष्टं प्रकटोदितम् ॥

स्पष्ट बात के ५ नाम—(१) श्राव्य (२) हृद्य (३) मनोहारिन् (४) विस्पष्ट (५) प्रकटोदित ॥

(सप्तदश शब्दस्य)

शब्दे निनाद-निनद-ध्वनि-ध्वान-रव-स्वनाः ॥
स्वान-निर्घोष-निर्ह्राद-नाद-निस्वान-निस्वनाः ।
आरवाराव-संराव-विरावाः

शब्द के १७ नाम—(१) शब्द (२) निनाद (३) निनद (४) ध्वनि (५) ध्वान (६) रव (७) स्वन (८) स्वान (९) निर्घोष (१०) निर्ह्राद (११) नाद (१२) निस्वान (१३) निस्वन (१४) आरव (१५) आराव (१६) संराव (१७) विराव ॥२२॥

(एकं वस्त्रपर्णध्वनेः)

अथ मर्मरः ॥२३॥
स्वनिते वस्त्रपर्णानाम्

कपड़ा और पत्तों की आवाज़ का नाम—(१) मर्मर ॥२३॥

(एकं भूषणध्वनेः)

भूषणानां तु शिञ्जितम् ।

गहनों (नूपुरादि) की छमाछम आवाज़ का नाम (१) शिञ्जित ।

(पञ्च वीणादिस्वनितस्य)

निक्वाणो निक्वणः क्वाणः क्वणः क्वणनमित्यपि ॥
वीणायाः क्वणिते प्रादेः प्रक्वाण-प्रक्वणादयः ।

वीणा की आवाज़ के ५ नाम—(१) निक्वाण (२) निक्वण (३) क्वाण (४) क्वण (५) क्वणन । इन शब्दों के 'प्र' आदि उपसर्ग जोड़ने से बने हुए 'प्रक्वाण' 'प्रक्वण' आदि शब्द भी वीणा शब्द के अर्थ में होते हैं ॥२४॥

(द्वे बहुभिः कृतस्य महाध्वनेः)

कोलाहलः कलकलः

बहुत आदमियों से किए गए शोरगुल का नाम—(१) कोलाहल (२) कलकल ।

(एकं पक्षिशब्दस्य)

तिरश्चां वाशितं रुतम् ॥

चिड़ियों के चहचहाने की आवाज़ का नाम (१) वाशित ॥२५॥

(द्वे प्रतिध्वनेः)

स्त्री प्रतिश्रुत्प्रतिध्वाने

प्रतिध्वनि के २ नाम—(१) प्रतिश्रुत् (२) प्रतिध्वान । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग; और (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे गानस्य)

गीतं गानमिमे समे ॥

गाना के २ नाम—(१) गीत (२) गान । ये दोनों समान लिङ्ग (नपुंसक) हैं ॥

इति शब्दादिवर्गः ६

अथ नाट्यवर्गः ७

(स्वराणां पृथक्पृथक् एकैकम्)

निषादर्षभ-गान्धार-षड्ज-मध्यम-धैवताः ।
पञ्चमश्चेत्यमी सप्त तन्त्रीकण्ठोत्थिताः स्वराः

तन्त्री (वीणा आदि के तार) और मनुष्यों के कण्ठ से उत्पन्न हुए स्वरों के नाम—(१) निषाद (२) ऋषभ (३) गान्धार (४) षड्ज[2] (५) मध्यम[3] (६) धैवत (७) पञ्चम[4] ॥१॥

(एकं सूक्ष्मध्वनेः)

काकली तु कले सूक्ष्मे

१ नाट्यशास्त्रे—
षड्जश्च ऋषभश्चैव गान्धारो मध्यमस्तथा ।
पञ्चमो धैवतश्चैव निषादः सप्त च स्वराः ॥
२ नासां कण्ठमुरस्तालु जिह्वां दन्तांश्च संस्पृशन् ।
षड्भ्यः सञ्जायते यस्मात्तस्मात्षड्ज इति स्मृतः ॥
३ तद्वदेवोत्थितो वायुरुरःकण्ठसमाहतः ।
नाभिं प्राप्तो महानादो मध्यस्थस्तेन मध्यमः ॥
४ वायुः समुद्गतो नाभेरुरोहृत्कण्ठमूर्द्धसु ।
विचरन्पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्चम उच्यते ॥
नारदः—
षड्जं रौति मयूरस्तु गावो नर्दन्ति चर्षभम् ।
अजाविकौ च गान्धारं क्रौञ्चो नदति मध्यमम् ॥
पुष्पसाधारणे काले कोकिलो रौति पञ्चमम् ।
अश्वस्तु धैवतं रौति निषादं रौति कुञ्जरः ॥

मधुर ध्वनि का नाम—(१) काकली। यह स्त्रीलिङ्ग में होता है।

(एकमव्यक्तमधुरध्वनेः)

ध्वनौ तु मधुरास्फुटे। कलः

मधुर और अस्पष्ट ध्वनि का नाम—(१) कल।

(एकं गम्भीरशब्दस्य)

मन्द्रस्तु गम्भीरे

गम्भीर ध्वनि का नाम—(१) मन्द्र।

(एकमुच्चशब्दस्य)

तारोऽत्युच्चैः

ऊँची आवाज़ का नाम—(१) तार।

त्रयस्त्रिषु[१] ॥२॥

ये तीनों (कल, मन्द्र, तार) शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥२॥

(एकं गीतवाद्यलयसाम्यस्य)

समन्वितलयस्त्वेकतालः

समन्वितलय (गाना और बाजा की लय के साम्य) का नाम—(१) एकताल।

(त्रीणि वीणायाः)

वीणा तु वल्लकी। विपञ्ची

वीणा के ३ नाम—(१) वीणा (२) वल्लकी (३) विपञ्ची।

(एकं 'सितार' इति ख्यातस्य)

सा तु तन्त्रीभिः सप्तभिः परिवादिनी ॥३॥

सात तारवाली वीणा (सितार) का नाम—(१) परिवादिनी ॥३॥

(एकं वीणादिवाद्यस्य)

[२]ततं वीणादिकं वाद्यम्

वीणा (सितार, सारंगी, बेला, इसराज) आदि का नाम—(१) तत।

(एकं मुरजादिवाद्यस्य)

आनद्धं मुरजादिकम्।

मृदङ्ग (ढोल, तबला, पखावज) आदि बाजा का नाम—(१) आनद्ध।

(एकं वंशवाद्यस्य)

वंशादिकं तु सुषिरम्

बाँसुरी आदि बाजाओं का नाम—(१) सुषिर।

(एकं कांस्यतालादेः)

कांस्यतालादिकं घनम् ॥४॥

काँसे के ताल (घण्टा, झाँझ, मञ्जीरा) आदि बाजाओं का नाम—(१) घन ॥४॥

(द्वे ततादि चतुष्टयस्य)

चतुर्विधमिदं वाद्यं वादित्रातोद्यनामकम्।

इन चार प्रकार (तत, आनद्ध, सुषिर, घन) के बाजाओं के २ नाम–(१) वादित्र (२) आतोद्य।

(द्वे मृदङ्गस्य)

मृदङ्गा मुरजाः

मृदङ्ग के २ नाम—(१) मृदङ्ग (२) मुरज।

(त्रीणि मृदङ्गभेदानाम्)

भेदास्त्वङ्क्यालिङ्ग्योर्ध्वकास्त्रयः[३] ॥५॥

मृदङ्ग के ३ भेद—(१) अङ्क्य (२) आलिङ्ग्य (३) ऊर्ध्वक ॥५॥

---

१ अन्य पुस्तकों में—

नृणामुरसि मध्यस्थो द्वाविंशतिविधो ध्वनिः।
स मन्द्रः कण्ठमध्यस्थस्तारः शिरसि गीयते ॥

अर्थात्—मनुष्यों के हृदय के बीच में बाइस प्रकार की ध्वनि स्थित है उनमें कण्ठ के मध्य में स्थित ध्वनि का नाम—(१) मन्द्र ; और शिर के मध्य में स्थित ध्वनि का नाम—(१) तार।

२ नाट्यशास्त्रे—

ततं चैवावनद्धं च घनं सुषिरमेव च।
चतुर्विधं तु विज्ञेयमातोद्यं लक्षणान्वितम् ॥
ततं तन्त्रीगतं ज्ञेयमनवद्धं तु पौष्करम्।
घनं तालस्तु विज्ञेयः सुषिरो वंश उच्यते ॥

३ हरीतक्याकृतिस्त्वङ्क्यो यवमध्यस्तथोर्ध्वकः।
आलिङ्ग्यश्चैव गोपुच्छो मध्यदक्षिणवामगाः ॥

अर्थात्—हरीतकी की आकृति के समान अङ्क्य; यव के मध्य भाग के समान ऊर्ध्वक; गोपुच्छ की आकृति समान-आलिङ्ग्य होता है।

(द्वे यशःपटहस्य)

स्याद्यशःपटहो ढक्का

नगारा के २ नाम—(१) यशःपटह (२) ढक्का।

(द्वे भेर्याः)

[१]भेरी स्त्री दुन्दुभिः पुमान् ।

तुरही (शहनाई) के २ नाम—(१) भेरी (२) दुन्दुभि । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग और (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे पटहस्य)

आनकः पटहोऽस्त्री स्यात्

डुग्गी के २ नाम—(१) आनक (२) पटह । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग और (२ रा) पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसक में भी होता है ।

(एकं वीणादिवादनस्य)

कोणो वीणादिवादनम् ॥६॥

वीणा आदि बजाने के लिए काष्ठनिर्मित धनुही का नाम—(१) कोण ॥६॥

(द्वे वीणादण्डस्य)

वीणादण्डः प्रवालः स्यात्

वीणा के दण्ड के २ नाम—(१) वीणा-दण्ड (२) प्रवाल ।

(द्वे वीणादण्डाधःस्थितशब्दगाम्भीर्यार्थं-चर्मावनद्धदारुमयभाण्डस्य)

ककुभस्तु प्रसेवकः ।

वीणाकी तूँबी के २ नाम—(१) ककुभ (२) प्रसेवक ।

(एकं तन्त्रीरहितवीणाकायस्य)

कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः

वीणा के तार रहित दण्ड आदि समुदाय (ढाँचा) का नाम—(१)कोलम्बक ।

(द्वे यत्र तन्त्र्यो निबध्यन्ते तस्योर्ध्वभागस्य)

उपनाहो निबन्धनम् ॥७॥

वीणा के ऊपरवाले हिस्से—जिसमें तार बाँधते हैं—के २ नाम—(१) उपनाह (२) निबन्धन ॥७॥

(वाद्यविशेषाणां पृथक् पृथक् एकैकम्)

वाद्यप्रभेदा डमरु-मड्डु-डिण्डिम-झर्झराः । मर्दलः पणवोऽन्ये च

बाजाओं के भेद—

डमरु का नाम—(१) डमरु ।

जलतरङ्ग का नाम—(१) मड्डु ।

तम्बूरा का नाम—(१) डिण्डिम ।

झाँझ का नाम—(१) झर्झर ।

मशक बाजा का नाम—(१) मर्दल ।

ढोल का नाम—(१) पणव ।

(द्वे नर्तक्याः)

नर्तकी-लासिके समे ॥८॥

नाचनेवाली के २ नाम—(१) नर्तकी (२) लासिका । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८॥

(विलम्बित-द्रुत-मध्यानां नृत्यगीतवाद्यानां तत्त्वादिक्रमेणैकैकम्)

विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वं[२]मोघो घनं क्रमात् ।

धीरे धीरे नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) तत्त्व ।

जल्दी जल्दी नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) ओघ ।

मध्यम गति से नाचने-गाने-बजाने का नाम—(१) घन ।

(एकं तालस्य)

तालः कालक्रियामानम्

ताल देने और ताल मिलाने का नाम—(१) ताल ।

---

१ 'भेर्यामानकदुन्दुभी' इत्यपि पाठः ।

२ नाट्यशास्त्रे—

लयतालवर्णपदयतिगीत्यक्षरभावकं भवेत्तत्वम् ।
आविद्धकरणबहुलं उपर्युपरिपाणिकं द्रुतलयं च ।
अनपेक्षितगीतार्थं वाद्यं चौघं बुधैर्ज्ञेयम् ॥

(एकं गानतन्त्रीलयस्य)

लयः साम्यम्

लय (गाना गाने, बजाने, पैर एक साथ उठने आदि को दिखाने के लिए काल और क्रिया साम्य) का नाम—(१) लय ।

अथास्त्रियाम् ॥९॥

आगे आनेवाला (ताण्डव) शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥९॥

(षट् नृत्यस्य)

ताण्डवं नटनं नाट्यं लास्यं नृत्यं च नर्तने ।

नाच के ६ नाम – (१) ताण्डव (२) नटन (३) नाट्य (४) लास्य (५) नृत्य (६) नर्तन ।

(द्वे नाट्यस्य)

तौर्यत्रिकं नृत्य-गीत-वाद्यं नाट्यमिदं त्रयम्॥१०

नाचने-गाने-बजाने के संयुक्त २ नाम – (१) तौर्यत्रिक (२) नाट्य ॥१०॥

(त्रीणि स्त्रीवेशधारिणो नर्तकस्य)

भ्रकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रूकुंसश्चेति नर्तकः ।
स्त्रीवेशधारी पुरुषः

स्त्री का वेश धारणकर नाचनेवाले पुरुष (जनखा) के ३ नाम—(१) भ्रकुंस (२) भ्रुकुंस (३) भ्रूकुंस ।

नाट्योक्तौ

'नाट्योक्तौ' इस पदका 'अङ्गहारः' (१६ श्लोक) के पहले तक अधिकार होने से आगामी नामों का प्रयोग नाटक में ही होगा ।

(एकमज्जुकायाः)

गणिकाज्जुका ॥११॥

स्टेज पर नाचनेवाली गणिका का नाम—(१) अज्जुका ॥११॥

(एकं भगिनीपतेः)

भगिनिपतिरावुत्तः

बहिनोई का नाम —(१) आवुत्त ।

१ नाट्यशास्त्रे—
त्रयो लयाश्च विज्ञेया द्रुत-मध्य-विलम्बिताः ॥

(एकं विदुषः)

भावो विद्वान्

विद्वान् का नाम—(१) भाव ।

(एकं जनकस्य)

अथावुकः ।
जनकः

पिता का नाम—(१) आवुक ।

(द्वे युवराजस्य)

युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥१२॥

युवराज (राजकुमार) के २ नाम—(१) कुमार (२) भर्तृदारक ॥१२॥

(द्वे राज्ञः)

राजा भट्टारको देवः

राजा के २ नाम—(१) भट्टारक (२) देव ।

(एकं राज्ञः सुतायाः)

तत्सुता भर्तृदारिका ।

राजकुमारी का नाम—(१) भर्तृदारिका ।

(एकं बद्धपट्टाया राज्याः)

देवी कृताभिषेकायाम्

पटरानी का नाम—(१) देवी ।

(एकमितरराज्याः)

इतरासु तु भट्टिनी ॥१३॥

अन्य साधारण रानियों का नाम—(१) भट्टिनी ॥१३॥

(एकं वध्यस्य ब्राह्मणादेर्दोषोक्तेः)

अब्रह्मण्यमवध्योक्तौ

मारे जानेवाले ब्राह्मण आदि को न मारने के लिए कहने का नाम—(१) अब्रह्मण्य ।

(एकं राज्ञः श्यालस्य)

राजश्यालस्तु राष्ट्रियः ।

राजा के शाले[1] का नाम—(१) राष्ट्रिय ।

१ इसका पद वर्तमान शासनपद्धति के गवर्नर की भाँति होता था और श्री अमरसिंह के समय में यह पद राजा के शाले को मिलता था जो बाद में क्षत्रियों का एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय (राठौर) वंश ही हो गया ।

(द्वे मातुः)

अम्बा माता

माता के दो नाम – (१) अम्बा (२) माता ।

(द्वे कुमार्याः)

अथ बाला स्याद्वासूः

कुमारी के २ नाम—(१) बाला (२) वासू ।

(द्वे आर्यस्य)

आर्यस्तु मारिषः ॥१४॥

सूत्रधार-पार्श्ववर्त्ती के २ नाम—(१) आर्य (२) मारिष ॥१४॥

(एकं ज्येष्ठभगिन्याः)

अत्तिका भगिनी ज्येष्ठा

जेठी बहिन का नाम – (१) अत्तिका ।

(द्वे निर्वहणस्य)

निष्ठा निर्वहणे समे ।

मुख-प्रतिमुख-गर्भ-विमर्श-निर्वहण नामक नाटकीय सन्धि की ५ वीं सन्धि के २ नाम—(१) निष्ठा (२) निर्वहण । ये समानार्थक हैं, समान लिङ्ग वाले नहीं ।

(एकैकं नीचां चेटीं सखीं प्रति प्रत्याह्वानस्य)

हण्डे हञ्जे हलाह्वानं नीचां चेटीं सखीं प्रति१५

नीच स्त्री के पुकारने का संबोधन—(१) हण्डे। चेरी के पुकारने का सम्बोधन—(१) हञ्जे। सहेली के पुकारने का सम्बोधन—(१) हला॥१५॥

(द्वे नृत्यविशेषस्य)

अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपः

लचक-लचककर नाचने के २ नाम—(१) अङ्गहार (२) अङ्गविक्षेप ।

(द्वे हस्तादिभिर्मनोगतभावाभिव्यञ्जकस्य)

व्यञ्जकाभिनयौ समौ ।

हाथ और अङ्गुलि के इशारा आदि से दिल के अन्दर के भाव को प्रकट करने के २ नाम—(१) व्यञ्जक (२) अभिनय । ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ।

(आङ्गिक-सात्विकगुणयोः क्रमेणैकैकम्)

निर्वृत्ते त्वङ्गसत्त्वाभ्यां द्वे त्रिष्वाङ्गिक-सात्त्विके

अङ्ग के विकार (भौंह आदि मटकाने) का नाम—(१) आङ्गिक ।

अन्तःकरण के भाव (स्तम्भः स्वेदोऽथ रोमाञ्चः स्वरभङ्गोऽथ वेपथुः । वैवर्ण्यमश्रुप्रलय इत्यष्टौ सात्विका गुणाः) का नाम – (१) सात्विक ये दोनों शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥१६॥

(एकैकं शृङ्गारादिरसानाम्)

[1]शृङ्गार-वीर-करुणाद्भुत-हास्य-भयानकाः । बीभत्स-रौद्रौ च रसाः

आठ प्रकार के रसों का एक-एक नाम—(१) शृङ्गार (२) वीर (३) करुण (४) अद्भुत (५) हास्य (६) भयानक (७) वीभत्स (८) रौद्र ।

(त्रीणि शृङ्गाररसस्य)

शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः ॥१७॥

[2]शृङ्गार रस के ३ नाम—(१) शृङ्गार (२) शुचि (३) उज्ज्वल ॥१७॥

(द्वे वीररसस्य)

उत्साहवर्धनो वीरः

[3]वीर रस के २ नाम—(१) उत्साहवर्धन (२) वीर ।

(सप्त करुणरसस्य)

कारुण्यं करुणा घृणा ।

कृपा दयाऽनुकम्पा स्यादनुक्रोशोऽपि

१—नाट्यशास्त्रे—

शृङ्गार-हास्य- करुण-रौद्र-वीर-भयानकाः ।
वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः ॥

२ शृंगाररस का उदाहरण—

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः प्रलापैर्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनीयम् । अभिनवमदलीलालालसं सुन्दरीणां स्तन-भरपरिखिन्नं यौवनं वा वनं वा ।—(भट्टोद्भटस्य)

३ वीररस का उदाहरण—

क्षुद्राः सन्त्रासमेते विजहितहरयो भिन्नमत्तेभकुम्भा युष्मद्देहेषु लज्जां दधति परममी सायका निष्पतन्तः । सौमित्रे तिष्ठ पात्रं त्वमसि नहि रुषां नन्वहं मेघनादः किञ्चित्संरम्भलीलानियमितजलधिं राममन्वेषयामि ॥ (महा-नाटकस्य)

[1] करुण रस के ७ नाम—(१) कारुण्य (२) करुणा (३) घृणा (४) कृपा (५) दया (६) अनुकम्पा (७) अनुक्रोश ।

(त्रीणि हास्यरसस्य)

अथो हसः ॥१८

हासो हास्यं च

[2] हास्य रस के ३ नाम—(१) हस (२) हास (३) हास्य ॥१८॥

(द्वे बीभत्सरसस्य)

बीभत्सं विकृतं त्रिष्विदं द्वयम् ।

[3] बीभत्स रस के २ नाम—(१) बीभत्स (२) विकृत । ये दोनों शब्द तीनों लिङ्गों (पुं-स्त्री-नपुं) में होते हैं ।

(चत्वारि अद्भुतरसस्य)

विस्मयोऽद्भुतमाश्चर्यं चित्रमपि

[4] अद्भुत रस के ४ नाम—(१) विस्मय (२) अद्भुत (३) आश्चर्य (४) चित्र ।

(नव भयानकरसस्य)

अथ भैरवम् ॥१९॥

दारुणं भीषणं भीष्मं घोरं भीमं भयानकम् । भयङ्करं प्रतिभयम्

[5] भयानक रस के ९ नाम—(१) भैरव (२) दारुण (३) भीषण (४) भीष्म (५) घोर (६) भीम (७) भयानक (८) भयङ्कर (९) प्रतिभय ।

(द्वे रौद्ररसस्य)

रौद्रं तूग्रम्

[6] रौद्र रस के २ नाम—(१) रौद्र (२) उग्र ।

अमी त्रिषु ॥२०॥

चतुर्दश

ये ('अद्भुत' से लेकर 'उग्र' तक) १४ शब्द रस के अर्थ में पुँल्लिङ्ग हैं और 'रसवाले' के अर्थ में तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥२०॥

(षट् भयस्य)

दरस्त्रासो भीतिर्भीः साध्वसं भयम् ।

डर के ६ नाम—(१) दर (२) त्रास (३) भीति (४) भी (५) साध्वस (६) भय ।

(एकं विकारस्य)

विकारो मानसो [7] भावः

मन के विकार का नाम—(१) भाव ।

(एकं रत्यादिसूचकरोमाञ्चादेः)

[8] अनुभावो भावबोधकः ॥२१॥

---

१ करुणरस का उदाहरण—

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठस्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम् ।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमपि स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः ।
—(अभिज्ञानशाकुन्तलस्य)

२ हास्यरस का उदाहरण—

आदौ वेश्या पुनर्दासी पश्चाद्भवति कुट्टिनी ।
सर्वोपायपरिक्षीणा वृद्धा नारी पतिव्रता ॥

३ बीभत्स रस का उदाहरण—

उत्कृत्योत्कृत्य कृत्तिं प्रथममथ पृथूच्छोभभूयांसि
मांसान्यंसस्फिक्पृष्ठपिण्डाद्यवयवसुलभान्युग्रपूतीनि जग्ध्वा ।
आर्त्तत्त्वाव्यन्त्रनेत्रः प्रकटितदशनः प्रेतरङ्कः करङ्कादङ्कस्था-
दस्थिसंस्थं स्थपुटगतमपि क्रव्यमव्यग्रमत्ति ।—(भवभूतेः)

४ अद्भुत रस का उदाहरण—

स्थाणुः स्वयं मूलविहीन एव पुत्रो विशाखो रमणी त्वपर्णा ।
परोपनीतैः कुसुमैरजस्रं फलत्यभीष्टं किमिदं विचित्रम् ॥

५ भयानक रस का उदाहरण—

इदं मघोनः कुलिशं धारासन्निहितानलम् ।
स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय केवलम् ॥
—(दण्डिनः)

६ रौद्ररस का उदाहरण—

रे धृष्टा धार्तराष्ट्राः प्रबलभुजबृहत्ताण्डवाः पाण्डवा
रे रे वार्ष्णेयाः स-कृष्णाः शृणुत मम वचो यद्रवीम्यूर्ध्वं बाहुः ।
एतस्योत्खातबाहोर्द्रुपदनृपसुतातापिनः पापिनो-
ऽहं पाता हृच्छोणितानां प्रभवति यदि वस्तत्किमेतं न पाथ ॥

७ नाट्यशास्त्रे—वागङ्गमुखरागैश्च सत्त्वेनाभिनयेन च ।
कवेरन्तर्गतं भावं भावयन् भाव उच्यते ॥

८ नाट्यशास्त्रे—वागङ्गाभिनयेनेह यतस्त्वर्थोऽनुभाव्यते ।
वागङ्गोपाङ्गसंयुक्तस्त्वनुभावस्ततः स्मृतः ॥

भाव का बोध करानेवाले (रोमाञ्च आदि) का नाम—(१) अनुभाव ॥२१॥

(त्रीणि अहंकारस्य)

गर्वोऽभिमानोऽहङ्कारः

अभिमान के ३ नाम—(१) गर्व (२) अभिमान(३) अहङ्कार ।

(एकं मानस्य)

[1]मानश्चित्तसमुन्नतिः ।

चित्त की समुन्नति (बड़प्पन) का नाम—(१) मान ।

(नव परिभवस्य)

अनादरः परिभवः परीभावस्तिरस्क्रिया ॥२२॥
रीढावमाननावज्ञावहेलनमसूर्क्षणम् ।

अपमान के ९ नाम—(१) अनादर (२) परिभव (३) परीभाव (४) तिरस्क्रिया (५) रीढा (६) अवमानना (७) अवज्ञा (८) अवहेलन (९) असूर्क्षण ॥२२॥

(पञ्च लज्जायाः)

मन्दाक्षं ह्रीस्त्रपा व्रीडा लज्जा

लज्जा के ५ नाम—(१) मन्दाक्ष (२) ह्री (३) त्रपा (४) व्रीडा (५) लज्जा ।

(एकं पित्रादेः पुरतो जातलज्जायाः)

साऽपत्रपाऽन्यतः ॥२३॥

पिता आदि के सामने लज्जा करने का नाम—(१) अपत्रपा ॥२३॥

(द्वे क्षमायाः)

क्षान्तिस्तितिक्षा

दूसरे की उन्नति देख सकने के २ नाम—(१) क्षान्ति (२) तितिक्षा ।

(एकं परद्रव्येच्छायाः)

अभिध्या तु परस्य विषये स्पृहा ।

पराये विषय (दूसरे के धन आदि) में इच्छा करने का नाम—(१) अभिध्या ।

(द्वे पराभ्युदयासहनस्य)

अक्षान्तिरीर्ष्या

डाह रखने के २ नाम—(१) अक्षान्ति (२) ईर्ष्या ।

(एकमर्थदानादिषु गुणेषु दम्भकत्वादिरूपदोषारोपणस्य)

असूया तु दोषारोपो गुणेष्वपि ॥२४॥

पै लगाने (अर्थात् किसी के गुण में दोष निकालने का नाम—(१) असूया ॥२४॥

(त्रीणि वैरस्य)

वैरं विरोधो विद्वेषः

वैर करने के ३ नाम—(१) वैर (२) विरोध (३) विद्वेष ।

(त्रीणि शोकस्य)

मन्यु-शोकौ तु शुक् स्त्रियाम् ।

अफसोस के ३ नाम—(१) मन्यु (२) शोक (३) शुच् । इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग और (३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि पश्चात्तापस्य)

पश्चात्तापोऽनुतापश्च विप्रतीसार इत्यपि॥२५॥

पछिताने के ३ नाम—(१) पश्चात्ताप (२) अनुताप (३) विप्रतीसार ॥२५॥

(सप्त कोपस्य)

कोप-क्रोधामर्ष-रोष-प्रतिघा रुट्-क्रुधौ स्त्रियौ ।

गुस्सा करने ७ नाम—(१) कोप (२) क्रोध (३) अमर्ष (४) रोष (५) प्रतिघ (६) रुष् (७) क्रुध् । इनमें (१-५) पुँल्लिङ्ग; (६-७) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(एकं शीलस्य)

शुचौ तु चरिते शीलम्

शुद्ध आचरण का नाम—(१) शील ।

(द्वे चित्तविभ्रमस्य)

उन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥२६॥

---

[1] अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक है—

(षट् दर्पस्य)

दर्पोऽवलेपोऽवष्टम्भश्चित्तोद्रेकः स्मयो मदः ।

दर्प के ६ नाम—(१) दर्प (२) अवलेप (३) अवष्टम्भ (४) चित्तोद्रेक (५) स्मय (६) मद ।

पागलपन के २ नाम—(१) उन्माद (२) चित्तविभ्रम ॥२६॥

(पञ्च स्नेहस्य)

प्रेमा ना प्रियता हार्दं प्रेम स्नेहः

प्रेम के ५ नाम—(१) प्रेमन् (२) प्रियता (३) हार्द (४) प्रेमन् (५) स्नेह। इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग (४था) नपुंसक है।

(द्वादश इच्छायाः)

अथ दोहदम्।

इच्छा कांक्षा स्पृहेहा तृड्वाञ्छा लिप्सा मनोरथः ॥२७॥

कामोऽभिलाषस्तर्षश्च

इच्छा के १२ नाम—(१) दोहद (२) इच्छा (३) काञ्छा (४) स्पृहा (५) ईहा (६) तृष् (७) वाञ्छा (८) लिप्सा (९) मनोरथ (१०) काम (११) अभिलाष (१२) तर्ष। (इसमें 'दोहद' शब्द गर्भिणी की अभिलाषा वाले अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) ॥२७॥

(एकमतिप्रीतेः)

सोऽत्यर्थं लालसा द्वयोः।

बड़ी चाहना का नाम—(१) लालसा। यह पुं०-स्त्री लिङ्गों में होता है।

(द्वे धर्मचिन्तनस्य)

उपाधिर्ना धर्मचिन्ता

धार्मिक चिन्ता के २ नाम—(१) उपाधि (२) धर्मचिन्ता। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग है।

(द्वे मनःपीडायाः)

पुंस्याधिर्मानसी व्यथा ॥२८॥

मानसिक व्यथा (मन की बिथा) के २ नाम—(१) आधि (२) मानसी व्यथा। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग है ॥२८॥

(त्रीणि स्मरणस्य)

स्याच्चिन्ता स्मृतिराध्यानम्

स्मरण के ३ नाम—(१) चिन्ता (२) स्मृति (३) आध्यान।

(द्वे उत्कण्ठायाः)

उत्कण्ठोत्कलिके समे

उत्कण्ठा के २ नाम—(१) उत्कण्ठा (२ उत्कलिका। ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे उत्साहस्य)

उत्साहोऽध्यवसायः स्यात्

उत्साह के २ नाम—(१) उत्साह (२ अध्यवसाय।

(एकमतिशयिताध्यवसायस्य)

स वीर्यमतिशक्तिभाक् ॥२९॥

बहुत ताकत के साथ उत्साह रखने का नाम (१) वीर्य ॥२९॥

(नव कपटस्य)

कपटोऽस्त्री व्याज-दम्भोपधयश्छद्म-कैतवे। कुसृतिर्निकृतिः शाठ्यम्

कपट के ९ नाम—(१) कपट (२) व्याज (३) दम्भ (४) उपधि (५) छद्मन् (६ कैतव (७) कुसृति (८) निकृति (९) शाठ्य इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर पुँल्लिङ्ग और नपुँसक में होता है; (२-४) पुँ०; (५-६) नपुंसक (७-८) स्त्री; (९) नपुंसक होते हैं।

(द्वे कर्तव्यानवधानस्य)

प्रमादोऽनवधानता ॥३०॥

लापरवाही के २ नाम—(१) प्रमाद (२ अनवधानता ॥३०॥

(चत्वारि कौतुकस्य)

कौतूहलं कौतुकं च कुतुकं च कुतूहलम्

आश्चर्यजनक खेल-तमाशे के ४ नाम—(१) कौतूहल (२) कौतुक (३) कुतुक (४) कुतूहल

(षट् स्त्रीणां विलासस्य)

स्त्रीणां विलास-विब्बोक-विभ्रमा ललितं तथा

नाट्यशास्त्रे—

स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्मणां चैव।
उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टः स तु **विलासः** स्यात् ॥
इष्टानां भावानां प्राप्तावभिमानगर्भसम्भूतः।
स्त्रीणामनादरकृतो **विब्बोको** नाम विज्ञेयः ॥

[१]हेला लीलेत्यमी हावाः क्रियाः शृङ्गारभावजाः।

स्त्रियों के शृङ्गार से उत्पन्न हाव-भाव क्रियाओं (अर्थात् चोंचले, नखरे) आदि के ६ नाम—(१) विलास (२) विव्वोक (३) विभ्रम (४) ललित (५) हेला (६) लीला ॥३१॥

(षट् क्रीडामात्रस्य)

द्रव-केलि-परीहासाः क्रीडा लीला च नर्म च ३२॥

क्रीडा मात्र के ६ नाम—(१) द्रव (२) केलि (३) परीहास (४) क्रीडा (५) लीला (६) नर्मन् ।३२।

(त्रीणि स्वरूपाच्छादनस्य)

व्याजोऽपदेशो लक्ष्यं च

बहाना करने के ३ नाम—(१) व्याज (२) अपदेश (३) लक्ष्य ।

(त्रीणि बाललीलायाः)

क्रीडा खेला च कूर्दनम् ।

लड़कों के खेल-कूद के ३ नाम—(१) क्रीडा (२) खेला (३) कूर्दन ।

(त्रीणि प्रस्वेदस्य)

घर्मो निदाघः स्वेदः स्यात्

पसीना (या घाम) के ३ नाम—(१) घर्म (२) निदाघ (३) स्वेद ।

(द्वे परिस्पन्दननाशस्य)

प्रलयो नष्टचेष्टता ॥३३॥

बेहोशी के २ नाम—(१) प्रलय (२) नष्टचेष्टता ॥३३॥

(द्वे आकारगोपनस्य)

अवहित्थाऽऽकारगुप्तिः

शोक से उतरे हुए चेहरे को छिपाने के २ नाम—(१) अवहित्था (२) आकारगुप्ति ।

(द्वे हर्षादिना कर्मसु त्वरणस्य)

समौ संवेग-सम्भ्रमौ ।

खुशी के कारण जल्दी करने के २ नाम—(१) संवेग (२) सम्भ्रम । ये दोनों समान लिङ्ग वाले (पुं०) हैं ।

(एकं परस्यामर्षजनकहासस्य)

स्यादाच्छुरितकं हासः सोत्प्रासः

साभिप्राय (खिलखिला कर) हास्य का नाम—(१) आच्छुरितक ।

(एकमिषद्धासस्य)

स मनाक् स्मितम्[२] ॥३४॥

थोड़ी हँसी (मुस्कराहट) का नाम—(१) स्मित ॥ ३४ ॥

(एकं मध्यमहासस्य)

मध्यमः स्याद्विहसितम्[३]

मध्यम हास (साधारण हँसी) का नाम—(१) विहसित ।

(द्वे रोमाञ्चस्य)

रोमाञ्चो रोमहर्षणम् ।

रोंगटे खड़े होने के २ नाम—(१) रोमाञ्च (२) रोमहर्षण ।

(त्रीणि रोदनस्य)

क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टम्

रोने के ३ नाम—(१) क्रन्दित (२) रुदित (३) क्रुष्ट ।

(द्वे मुखादिविकासस्य)

जृम्भस्तु त्रिषु जृम्भणम् ॥३५॥

जम्हाई के २ नाम—(१) जृम्भ (२)

विविधानामर्थानां वागङ्गाहार्यसत्वयुक्तानाम् ।
मदरागहर्षजनितो व्यत्यासो **विभ्रमो** नाम ॥
करचरणाङ्गन्यासः सभ्रूनेत्रोष्ठसंप्रयुक्तस्तु ।
सुकुमारविधानेन स्त्रिभिरिदं स्मृतं **ललितम्** ॥

१ य एव भावाः सर्वेषां शृंगाररससंश्रयाः ।
समाख्याता बुधैर्**हेला** ललिताभिनयात्मिका ॥
वागङ्गालङ्कारैः श्लिष्टैः प्रीतिप्रयोजितैर्मधुरैः ।
इष्टजननस्यानुकृतिर्**लीला** ज्ञेया प्रयोगज्ञैः ॥

२ स्मितलक्षणम्—
ईषद्विकसितैर्दन्तैः कटाक्षैः सौष्ठवान्वितम् ।
अलक्षितद्विजद्वारमुत्तमानां स्मितं भवेत् ॥

३ विहसितलक्षणम्—
आकुञ्चितकपोलाक्षं स-स्वनं निःस्वनं तथा ।
प्रस्तावोत्थं सानुरागमाहुर्विहसितं बुधाः ॥

जृम्भण। इनमें (१) तीनों लिङ्गों में (२) नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥३५॥

(द्वे वंचनायुक्तभाषणस्य)

विप्रलम्भो विसंवादः

ठगपने से बातचीत करने के २ नाम—(१) विप्रलम्भ (२) विसंवाद।

(द्वे धर्मादिश्चलनस्य, बालानां हस्तपादगमनस्य वा, पिच्छिलादौ पतनस्य वा)

रिङ्गणं स्खलनं समे।

अपने धर्म से च्युत होने, अथवा बालकों के घुटनों के बल से रेंगने, अथवा पैर फिसल जाने के २ नाम—(१) रिङ्गण (२) स्खलन। ये दोनों नपुंसक लिङ्ग में होते हैं।

(पञ्च निद्रायाः)

स्यान्निद्रा शयनं स्वापः स्वप्नः संवेश इत्यपि ३६

नींद के ५ नाम—(१) निद्रा (२) शयन (३) स्वाप (४) स्वप्न (५) संवेश ॥३६॥

(द्वे निद्राया आलस्यस्य)

तन्द्री प्रमीला

नींद के कारण आलस आने (खुमारी) के २ नाम—(१) तन्द्री (२) प्रमीला।

(त्रीणि क्रोधादिना ललाटसङ्कोचनस्य)

भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिर्भ्रूकुटिः स्त्रियाम्।

क्रोध आदि से भौंह टेढ़ी करने के ३ नाम—(१) भ्रुकुटि (२) भ्रुकुटि (३) भ्रूकुटि। ये तीनों स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(एकं क्रूराया दृष्टेः)

अदृष्टिः स्यादसौम्येऽक्ष्णि

टेढ़ी नज़र करने का नाम—(१) अदृष्टि।

(पञ्च स्वभावस्य)

संसिद्धि-प्रकृती त्विमे ॥३७॥
स्वरूपं च स्वभावश्च निसर्गश्च

स्वभाव के ५ नाम—(१) संसिद्धि (२) प्रकृति (३) स्वरूप (४) स्वभाव (५) निसर्ग ॥३७॥

(द्वे कम्पस्य)

अथ वेपथुः। कम्पः

काँपने के २ नाम—(१) वेपथु (२) कम्प।

(पञ्च उत्सवस्य)

अथ क्षण उद्धर्षो मह उद्धव उत्सवः ॥३८॥

उत्सव के ५ नाम—(१) क्षण (२) उद्धर्ष (३) मह (४) उद्धव (५) उत्सव ॥३८॥

इति नाट्यवर्गः ७

अथ पातालभोगिवर्गः ८

(पञ्च पातालस्य)

अधोभुवनपातालं बलिसद्म रसातलम्। नागलोकः

पाताल के ५ नाम—(१) अधोभुवन (२) पाताल (३) बलिसद्मन् (४) रसातल (५) नागलोक।

(एकादश बिलस्य)

अथ कुहरं सुषिरं विवरं बिलम् ॥१॥
छिद्रं निर्व्यथनं रोकं रन्ध्रं श्वभ्रं वपा सुषिः।

बिल के ११ नाम—(१) कुहर (२) सुषिर (३) विवर (४) बिल (५) छिद्र (६) निर्व्यथन (७) रोक (८) रन्ध्र (९) श्वभ्र (१०) वपा (११) सुषि ॥१॥

(द्वे भूरन्ध्रस्य)

गर्तावटौ भुवि श्वभ्रे

जमीन के गड्ढे के २ नाम—(१) गर्त (२) अवट।

(एकं सरन्ध्रस्य)

सरन्ध्रे शुषिरं त्रिषु ॥२॥

छेदवाली चीज़ का नाम—(१) शुषिर। यह तीनों लिङ्गों में होता है ॥२॥

(पञ्च अन्धकारस्य)

अन्धकारोऽस्त्रियां ध्वान्तं तमिस्रं तिमिरं तमः।

अन्धकार के ५ नाम—(१) अन्धकार (२) ध्वान्त (३) तमिस्र (४) तिमिर (५) तमस्। इनमें

(१ ला) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में ; शेष (२–५) नपुंसक में होते हैं ।

(एकं घनान्धकारस्य)

ध्वान्ते गाढेऽन्धतमसम्

गाढे अन्धकार का नाम—(१) अन्धतमस् ।

(एकं क्षीणतमसः)

क्षीणेऽवतमसम्

थोड़ी अँधियारी का नाम—(१) अवतमस ।

(एकं व्यापकतमसः)

तमः ॥३॥

विष्वक् संतमसम्

चारो ओर फैले हुए अन्धकार का नाम—(१) संतमस ॥३॥

(द्वे नागानाम्)

नागाः काद्रवेयाः

नागों के २ नाम—(१) नाग (२) काद्रवेय ।

(द्वे नागानां स्वामिनः)

तदीश्वरः ।

शेषोऽनन्तः

नागों के राजा के २ नाम—(१) शेष (२) अनन्त ।

(द्वे सर्पराजस्य)

वासुकिस्तु सर्पराजः

सर्पराज के २ नाम—(१) वासुकि (२) सर्पराज ।

(द्वे गोनसस्य)

अथ गोनसे ॥४॥

तिलित्सः स्यात्

गोहुँवन साँप के २ नाम—(१) गोनस (२) तिलित्स ।

(त्रीणि अजगरस्य)

अजगरे शयुर्वाहस इत्युभौ ।

अजगर के ३ नाम—(१) अजगर (२) शयु (३) वाहस ।

(द्वे जलव्यालस्य)

अलगर्दो जलव्यालः

डोड़हा (पानी के साँप) के २ नाम—(१) अलगर्द (२) जलव्याल ।

(द्वे निर्विषस्य द्विमुखसर्पस्य)

समौ राजिल-डुण्डुभौ ॥५॥

दुमुँहाँ धारीदार साँप के २ नाम—(१) राजिल (२) डुण्डुभ ॥५॥

(द्वे चित्रसर्पस्य)

मालुधानो मातुलाहिः

चितकबरे साँप के २ नाम—(१) मालुधान (२) मातुलाहि ।

(द्वे मुक्तत्वचः सर्पस्य)

निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ।

केंचुली छोड़े हुए साँप के २ नाम—(१) निर्मुक्त (२) मुक्तकञ्चुक ।

(पञ्चविंशतिः सर्पस्य)

सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ॥६॥
आशीविषो विषधरश्चक्री व्यालः सरीसृपः ।
कुण्डली गूढपाच्चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी ७
दर्वीकरो दीर्घपृष्ठो दन्दशूको बिलेशयः ।
उरगः पन्नगो भोगी जिह्मगः पवनाशनः ॥८॥

सर्प के २५ नाम—(१) सर्प (२) पृदाकु (३) भुजग (४) भुजङ्ग (५) अहि (६) भुजङ्गम (७) आशीविष (८) विषधर (९) चक्रिन् (१०) व्याल

(एकं भोगस्य)

अहेः शरीरं भोगः स्यात्

सर्प के शरीर का नाम—(१) भोग ।

(द्वे अहिदंष्ट्रिकायाः)

आशीरप्यहिदंष्ट्रिका ।

साँप के दाँत के २ नाम-(१) आशी (२) अहिदंष्ट्रिका ।

---

१ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक अधिक मिलते हैं—

लेलिहानो द्विरसनो गोकर्णः कञ्चुकी तथा ।
कुम्भीनसः फणधरो हरिर्भोगधरस्तथा ॥

सर्प के और ८ नाम—(१) लेलिहान (२) द्विरसन (३) गोकर्ण (४) कञ्चुकिन् (५) कुम्भीनस (६) फणधर (७) हरि (८) भोगधर ।

(११) सरीसृप (१२) कुण्डलिन् (१३) गूढ़पाद् (१४) चक्षुःश्रवस् (१५) काकोदर (१६) फणिन् (१७) दर्वीकर (१८) दीर्घपृष्ठ (१९) दन्दशूक (२०) विलेशय (२१) उरग (२२) पन्नग (२३) भोगिन् (२४) जिह्मग (२५) पवनाशन ॥६-८॥

(एकं सर्पविषास्थ्यादेः)

त्रिष्वाहेयं विषास्थ्यादि

साँप के विष, हड्डी आदि का नाम—(१) आहेय। यह शब्द तीनों लिङ्गों में होता है।

(द्वे फणायाः)

स्फटायां तु फणा द्वयोः।

साँप के फन के २ नाम—(१) स्फटा (२) फणा। ये शब्द दोनों लिङ्गों (पुं० स्त्री०) में होते हैं।

(द्वे सर्पत्वचः)

समौ कञ्चुक-निर्मोकौ

साँप की केंचुली के २ नाम—(१) कञ्चुक (२) निर्मोक। ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं।

(त्रीणि विषमात्रस्य)

क्ष्वेडस्तु गरलं विषम् ॥९॥

जहर के ३ नाम—(१) क्ष्वेड (२) गरल (३) विष। इसमें (१) पुं०, (२-३) नपुं० में होते हैं ॥९॥

(स्थावरविषभेदानां प्रत्येकम्)

पुंसि क्लीबे च काकोल-कालकूट-हलाहलाः।
सौराष्ट्रिकः शौक्लिकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः १०
दारदो वत्सनाभश्च विषभेदा अमी[1] नव।

ये विष के भेद हैं—(१) काकोल (२) कालकूट (३) हलाहल (४) सौराष्ट्रिक (५) शौक्लिकेय (६) ब्रह्मपुत्र (७) प्रदीपन (८) दारद (९) वत्सनाभ। इनमें (१-३) पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ॥१०॥

(द्वे गारुडिकस्य)

विषवैद्यो जाङ्गुलिकः

सर्प के विष को दूर करनेवाले वैद्य के २ नाम—(१) विषवैद्य (२) जाङ्गुलिक।

(द्वे सर्पग्राहिणः)

व्यालग्राह्यहितुण्डिकः ॥११॥

साँप पकड़नेवाले के २ नाम—(१) व्यालग्राहिन् (२) अहितुण्डिक ॥११॥

(इति पातालभोगिवर्गः ८)

अथ नरकवर्गः ९

(चत्वारि नरकस्य)

स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम्।

नरक के ४ नाम—(१) नारक (२) नरक (३) निरय (४) दुर्गति। इनमें (१-३) पुं० (४) स्त्रीलिङ्ग में होता है।

(नरकभेदानां पृथक्-पृथक् प्रत्येकम्)

तद्भेदास्तपनावीचि-महारौरव-रौरवाः ॥१॥
संघातः कालसूत्रं चेत्याद्याः

[1]नरक के भेद—(१) तपन (२) अवीचि (३) महारौरव (४) रौरव (५) संघात (६) कालसूत्र इत्यादि ॥१॥

(एकं नरकस्थप्राणिनाम्)

सत्त्वास्तु नारकाः
प्रेताः

सुश्रुत में लिखा है—

स्थावरं जङ्गमं चैव द्विविधं विषमुच्यते।

वृक्ष, लता-पत्ता और पत्थर आदि जड़ पदार्थों में रहने वाले विष को 'स्थावर' कहते हैं। साँप, बिच्छू, बर्रे, चूहा, मकड़ा आदि में रहनेवाले विष को 'जङ्गम' कहते हैं।

भाव प्रकाश में ९ प्रकार के विष लिखे हैं—

(१) कालकूट (२) हालाहल (३) सौराष्ट्रिक (४) ब्रह्मपुत्र (५) प्रदीपन (६) वत्सनाभ (७) हारिद्र (८) सक्तुक (९) शृङ्गिक।

१ नरक के भेद का वर्णन अग्निपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, वामनपुराण, वाराहपुराण, ब्रह्मवैवर्तपुराण, मार्कण्डेयपुराण, देवीभागवत, शैवपुराण, विष्णुपुराण, ब्रह्मपुराण आदि में सविस्तर मिलता है।

नरक में रहनेवाले प्राणियों का नाम--(१) प्रेत ।

(एकं वैतरण्याः)

वैतरणी सिन्धुः

नरक की नदी का नाम—(१) वैतरणी ।

(एकं नारकीयाया अलक्ष्म्याः)

स्यादलक्ष्मीस्तु निर्ऋतिः ॥२॥

नरक की अशोभा का नाम—(१) निर्ऋति ॥२॥

(द्वे नरके हठात्प्रक्षेपस्य)

विष्टिराजूः

नरक में जबर्दस्ती ढकेलने के २ नाम—(१) विष्टि (२) आजू । ये स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि नरकपीडायाः)

कारणा तु यातना तीव्रवेदना ।

नरक की पीड़ा के ३ नाम—(१) कारणा (२) यातना (३) तीव्रवेदना ।

(नव दुःखस्य)

**[१]पीडा बाधा व्यथा दुःखमामनस्यं प्रसूतिजम्॥३
स्यात्कष्टं कृच्छ्रमाभीलम्**

दुःख के ९ नाम—(१) पीड़ा (२) बाधा (३) व्यथा (४) दुःख (५) आमनस्य (६) प्रसूतिज (७) कष्ट (८) कृच्छ्र (९) आभील ॥३॥

त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत् ।

इनके भेद्यगामि (विशेषण) होने पर ये तीनों लिङ्गों में होते हैं (यथा—दुःखः सुतो निर्गुणः; दुःखा सेवा; सर्वं दुःखं विवेकिनः ।)

(इति नरकवर्गः ९)

---

१ अत्र पीडादिचतुष्कं मनःपीडायाः । आमनस्यादि द्वयं वैमनस्य । कष्टादि त्रयं शरीरपीडाया इति भेदः ।

अर्थात्(१-४) मानसिक दुःख; (५-६) उदासी; (७-९) शारीरिक दुःख के नाम हैं ।

अथ वारिवर्गः १०

(पञ्चदश समुद्रस्य)

**समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ।
उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः॥१
रत्नाकरो जलनिधिर्यादःपतिरपांपतिः ।**

समुद्र के १५ नाम—(१) समुद्र (२) अब्धि (३) अकूपार (४) पारावार (५) सरित्पति (६) उदन्वत् (७) उदधि (८) सिन्धु (९) सरस्वत् (१०) सागर (११) अर्णव (१२) रत्नाकर (१३) जलनिधि (१४) यादःपति (१५) अपां पति ॥१॥

(समुद्रविशेषाणां पृथक्पृथगेकैकम्)

तस्य प्रभेदाः क्षीरोदो लवणोदस्तथापरे ॥२॥

समुद्र के भेद—(१) क्षीरोद (२) लवणोद इत्यादि (३ दध्यूद ४ घृतोद ५ सुरोद ६ इक्षूद ७ स्वादूद) ॥२॥

(सप्तविंशतिर्जलस्य)

**आपः स्त्री भूम्नि वार्वारि सलिलं कमलं जलम्।
पयः कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनम् ॥३॥
कबन्धमुदकं पाथः पुष्करं सर्वतोमुखम् ।
अम्भोऽर्णस्तोय-पानीय-नीर-क्षीराम्बु-शम्बरम्४
मेघपुष्पं घनरसः**

जल के २७ नाम—(१) अप् (२) वार् (३) वारि (४) सलिल (५) कमल (६) जल (७) पयस् (८) कीलाल (९) अमृत (१०) जीवन (११) भुवन (१२) वन (१३) कबन्ध (१४) उदक (१५) पाथस् (१६) पुष्कर (१७) सर्वतोमुख (१८) अम्भस् (१९) अर्णस् (२०) तोय (२१) पानीय (२२) नीर (२३) क्षीर (२४) अम्बु (२५) शम्बर (२६) मेघपुष्प (२७) घनरस । इनमें अप् शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त में होता है (यथा—'आपोभिर्मार्जनं कृत्वा') और 'वार्' पूर्वोत्तर के साहचर्य से स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥३-४॥

(द्वे जलविकारस्य)

त्रिषु द्वे आप्यमम्मयम् ।

जलविकार (बर्फ, शर्बत आदि) के २ नाम—

(१) आप्य (२) अम्मय । ये तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(चत्वारि तरङ्गस्य)

भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिः

लहर के ४ नाम—(१) भङ्ग (२) तरङ्ग (३) ऊर्मि (४) वीचि । इनमें (१-२) पुं०, (३) पुं० स्त्री, (४) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे महातरङ्गस्य)

अथोर्मिषु ॥५॥

महत्सूल्लोल-कल्लोलौ

बड़ी लहर (ज्वार) के २ नाम—(१) उल्लोल (२) कल्लोल ॥५॥

(एकं जलानां भ्रमणस्य)

स्यादावर्तोऽम्भसां भ्रमः ।

भँवर (जल के मण्डलाकार घूमने) का नाम—(१) आवर्त ।

(चत्वारि जलकणस्य)

पृषन्ति बिन्दुपृषताः पुमांसो विप्रुषःस्त्रियाम्।६

पानी की बूँद के ४ नाम—(१) पृषत् (२) बिन्दु (३) पृषत (४) विप्रुष् । इनमें (१) नपुंसक (२-३) पुँल्लिङ्ग (४) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।।६।।

(द्वे चक्राकारेण जलानामधोयानस्य)

चक्राणि पुटभेदाः स्युः

चक्कर काटकर नीचे जानेवाले पानी के २ नाम—(१) चक्र (२) पुटभेद ।

(द्वे जलनिःसरणजालकस्य)

भ्रमाश्च जलनिर्गमाः ।

फ़व्वारा छूटने के २ नाम—(१) भ्रम (२) जलनिर्गम ।

(पञ्च तीरस्य)

कूलं रोधश्च तीरं च प्रतीरं च तटं त्रिषु ॥७॥

नदी के किनारे के ५ नाम—(१) कूल (२) रोध (३) तीर (४) प्रतीर (५) तट । इनमें 'तट' शब्द तीनों लिङ्गों में होता है ॥७॥

(एकैकं परतीरावरतीरयोः)

पारावारे परार्वाची तीरे

नदी के उस पार वाले किनारे का नाम-(१) पार।

नदी के इस पार वाले किनारे का नाम—(१) अवार।

(एकं कूलयोर्मध्यस्य)

पात्रं तदन्तरम् ।

पाट (दोनों किनारों के मध्यभाग) का नाम—(१) पात्र ।

(द्वे जलमध्यस्थस्थानस्य)

द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपं यदन्तर्वारिणस्तटम् ॥८

टापू के २ नाम—(१) द्वीप (२) अन्तरीप । ये दोनों शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥८॥

(एकं जलादचिरनिर्गततटस्य)

तोयोत्थितं तत्पुलिनम्

जल में रेती पड़ जाने का नाम—(१) पुलिन ।

(द्वे वालुकामयतटस्य)

सैकतं सिकतामयम् ।

बालूदार किनारे के २ नाम—(१) सैकत (२) सिकतामय ।

(पञ्च कर्दमस्य)

निषद्वरस्तु जम्बालः पङ्कोऽस्त्री शाद-कर्दमौ ॥९

कीचड़ के ५ नाम—(१) निषद्वर (२) जम्बाल (३) पङ्क (४) शाद (५) कर्दम । इनमें (३रा) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है; शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥९॥

(द्वे प्रवृद्धजलस्य निर्गममार्गस्य)

जलोच्छ्वासाः परीवाहाः

नल के २ नाम—(१) जलोच्छ्वास (२) परीवाह ।

(द्वे शुष्कनद्यादौ कृतगर्तस्य)

कूपकास्तु विदारकाः ।

सूखी नदियों में जल के निमित्त बनाए गए गडढेके २ नाम—(१) कूपक (२) विदारक ।

(एकं नौतरणयोग्यजलस्य)

नाव्यं त्रिलिङ्गं नौतार्ये

नाव से पार होने लायक नदी आदिका नाम—

(१) नाव्य । यह तीनों लिङ्गों में होता है ।

(त्रीणि नौकायाः)

स्त्रियां नौस्तरणिस्तरिः ॥१०॥

नाव के ३ नाम—(१) नौ (२) तरणि (३) तरि । ये तीनों शब्द स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥१०॥

(त्रीणि अल्पनौकायाः)

उडुपं तु प्लवः कोलः

घरणडइल के ३ नाम—(१) उडुप (२) प्लव (३) कोल ।

(एकमकृत्रिमजलवहनस्य)

स्रोतोऽम्बुसरणं स्वतः ।

सोता का नाम—(१) स्रोत ।

(द्वे नद्यादितरणे देयमूल्यस्य)

आतरस्तरपण्यं स्यात्

उतराई (खेवाई) देने के २ नाम—(१) आतर (२) तरपण्य ।

(एकं 'डोंगी'तिख्यातस्य)

द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

डेंगी के २ नाम—(१) द्रोणी (२) काष्ठाम्बुवाहिनी ॥११॥

(द्वे नौकया वाणिज्यकारिणः)

सांयात्रिकः पोतवणिक्

नाव से व्यापार करनेवालों के २ नाम—(१) सांयात्रिक (२) पोतवणिज् ।

(द्वे नाविकस्य, नौपृष्ठदण्डधारकस्य वा)

कर्णधारस्तु नाविकः ।

मल्लाह (या पतवार पकड़नेवाले) के २ नाम—(१) कर्णधार (२) नाविक ।

(द्वे वहित्रवाहकस्य)

नियामकाः पोतवाहाः

दुष्ट जलजन्तुओं से जहाज की रक्षा करनेवालों के २ नाम—(१) नियामक (२) पोतवाह ।

(द्वे नौमध्यस्थरज्जुबन्धनकाष्ठस्य)

कूपको गुणवृक्षकः ॥१२॥

मस्तूल के २ नाम—(१) कूपक (२) गुणवृक्षक ॥ १२ ॥

(द्वे नौकावाहकदण्डस्य)

नौकादण्डः क्षेपणी स्यात्

डाँड़े के २ नाम—(१) नौकादण्ड (२) क्षेपणी ।

(द्वे नौपृष्ठस्थचालनकाष्ठस्य)

अरित्रं केनिपातकः ।

पतवार के २ नाम—(१) अरित्र (२) केनिपातक ।

(द्वे पोतादेर्मलापनयनार्थं काष्ठादिरचितकुद्दालस्य)

अभ्रिः स्त्री काष्ठकुद्दालः

नौका साफ करने के कुदाल के २ नाम—(१) अभ्रि (२) काष्ठकुद्दाल । इनमें 'अभ्रि' शब्द स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

(द्वे नौस्थजलोत्सेजनपात्रस्य)

सेकपात्रं तु सेचनम् ॥१३॥

डोलची या बाल्टी (जिनसे नावमें एकत्रित हुआ जल उलीचा जाता है) के २ नाम—(१) सेकपात्र (२) सेचन ॥१३॥

(एकमर्द्धनौकायाः)

क्लीबेऽर्धनावं नावोऽर्धे

आधी नाव का नाम—(१) अर्धनाव । यह शब्द नपुंसकलिङ्ग में होता है ।

(एक नौकामतिक्रान्तजलादेः)

अतीतनौकेऽतिनु त्रिषु ।

नावकी अपेक्षा अधिक वेग से तैरनेवाला प्राणी (मनुष्य, जलचर, पानी का बहाव) आदि का नाम—(१) अतिनु । यह तीनों लिङ्गों में होता है ।

त्रिष्वागाधात्

यहाँ से लेकर 'अगाधमतलस्पर्शे' (श्लोक १५) तक के शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(द्वे निर्मलस्य)

प्रसन्नोऽच्छः

अच्छा साफ निर्मल (जलादि) के २ नाम—(१) प्रसन्न (२) अच्छ ।

(त्रीणि मलिनस्य)

कलुषोऽनच्छ आविलः ॥१४॥

मैला, गँदला (पानी आदि) के ३ नाम—(१) कलुष (२) अनच्छ (३) आविल ॥१४॥

(त्रीणि गम्भीरस्य)

निम्नं गभीरं गम्भीरम्

गहिरा के ३ नाम—(१) निम्न (२) गभीर (३) गम्भीर ।

(एकमुत्तानस्य)

उत्तानं तद्विपर्यये ।

उथला (छिछला) का नाम—(१) उत्तान ।

(द्वे अत्यन्तगम्भीरस्य)

अगाधमतलस्पर्शे

अथाह के २ नाम—(१) अगाध (२) अतलस्पर्श ।

(त्रीणि धीवरस्य)

कैवर्ते दास-धीवरौ ॥ १५ ॥

मल्लाह के ३ नाम—(१) कैवर्त (२) दास (३) धीवर ॥ १५ ॥

(द्वे जालस्य)

आनायः पुंसि जालं स्यात्

जाल के २ नाम—(१) आनाय (२) जाल । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग और (२रा) नपुंसक होता है ।

(द्वे शणसूत्रजालस्य)

शणसूत्रं पवित्रकम् ।

सुतरी के बने हुए जाल के २ नाम—(१) शणसूत्र (२) पवित्रक ।

(द्वे मत्स्यस्थापनपात्रस्य)

मत्स्याधानी कुवेणी स्याद्

टोकरी के २ नाम—(१) मत्स्याधानी (२) कुवेणी ।

(द्वे मत्स्यवेधनस्य)

बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥१६॥

बंशी (मछली फँसाने की कँटिया) के २ नाम—(१) बलिश (२) मत्स्यवेधन ॥१६॥

(अष्टौ मत्स्यस्य)

पृथुरोमा झषो मत्स्यो मीनो वैसारिणोऽण्डजः विसारः शकुली च

मछली के ८ नाम—(१) पृथुरोमन् (२) झष (३) मत्स्य (४) मीन (५) वैसारिण (६) अण्डज (७) विसार (८) शकुलिन् ।

(द्वे गडकस्य)

अथ गडकः शकुलार्भकः ॥१७॥

(गडुई) गलफटी मछली के २ नाम—(१) गडक (२) शकुलार्भक ॥१७॥

(द्वे बहुदंष्ट्रस्य मत्स्यस्य)

सहस्रदंष्ट्र पाठीनः

पाठी मछली के २ नाम—(१) सहस्रदंष्ट्र (२) पाठीन ।

(द्वे 'सुइंस' इतिख्यातमत्स्यविशेषस्य)

उलूपी शिशुकः समौ ।

सुइंस मछली के २ नाम—(१) उलूपिन (२) शिशुक ।

(द्वे नलवनचारिणो मत्स्यविशेषस्य)

नलमीनश्चिलिचिमः

झिंगवा (नरकट में रहनेवाली) मछली के २ नाम -(१) नलमीन (२) चिलिचिम ।

(द्वे शुभ्रमत्स्यविशेषस्य)

प्रोष्ठी तु शफरी द्वयोः ॥१८॥

सहरी मछली के २ नाम—(१) प्रोष्ठी (२) शफरी । ये दोनों शब्द पुं-स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥१८॥

(द्वे अण्डादचिरनिर्गतमत्स्यसङ्घस्य)

क्षुद्राण्डमत्स्यसंघातः पोताधानम्

अण्डे से तुरत के निकले हुए मछलियों के छोटे २ बच्चों के २ नाम—(१) क्षुद्राण्डमत्स्य-संघात (२) पोताधान ।

(मत्स्यविशेषाणां पृथगेकैकम्)

अथो झषाः ।

रोहितो मद्गुरः शालो राजीवः शकुलस्तिमिः

तिमिंगिलादयश्च

मछलियों का वर्णन

रोहू मछली का नाम--(१) रोहित।

मँगरा मछली का नाम—(१) मद्गुर।

सौरी मछली का नाम--(१) शाल।

राया मछली का नाम—(१) राजीव।

सौंरा मछली का नाम—(१) शकुल।

तई मछली ('ह्वेल' इति आंग्लभाषायाम्) का नाम—(१) तिमि।

'ह्वेल' मछली को खा जानेवाली मछली का नाम—(१) तिमिङ्गिल। आदि

(द्वे जलचरमात्रस्य)

अथ यादांसि जलजन्तवः।

जलजन्तु के २ नाम--(१) यादस् (२) जलजन्तु। इनमें (१ ला) नपुंसक और (२ रा) पुँल्लिङ्ग है।

(जलजन्तुविशेषाणां पृथगेकैकम्)

तद्भेदाः शिशुमारोद्र-शङ्कवो मकरादयः ॥२०॥

जलजन्तुओं के भेद—

शिरस का नाम—(१) शिशुमार।

ऊदबिलाव का नाम—(१) उद्र।

सफू का नाम—(१) शङ्कु।

मगर का नाम—(१) मकर ॥२०॥

(द्वे कर्कटस्य)

स्यात्कुलीरः कर्कटकः

केकड़ा के २ नाम—(१) कुलीर (२) कर्कटक।

(त्रीणि कच्छपस्य)

कूर्मे कमठ-कच्छपौ।

कछुआ के ३ नाम—(१) कूर्म (२) कमठ (३) कच्छप।

(द्वे ग्राहस्य)

ग्राहोऽवहारः

घड़ियाल के २ नाम—(१) ग्राह (२) अवहार।

(द्वे नक्रस्य)

नक्रस्तु कुम्भीरः

नाक ('क्रोकोडाइल' अँग्रेजी भाषा) के २ नाम—(१) नक्र (२) कुम्भीर।

(त्रीणि 'केंचुवा' इति ख्यातस्य)

अथ महीलता ॥२१॥

गण्डूपदः किञ्चुलकः

केंचुवा के ३ नाम—(१) महीलता (२) गण्डूपद (३) किञ्चुलक ॥२१॥

(द्वे जलगोधिकायाः)

निहाका गोधिका समे।

गोह के २ नाम—(१) निहाका (२) गोधिका।

(त्रीणि जलूकायाः)

रक्तपा तु जलौकायां

स्त्रियां भूम्नि जलौकसः ॥२२॥

जोंक के ३ नाम—(१) रक्तपा (२) जलौका (३) जलौकस्। (१-३) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। किन्तु जलौकस् शब्द बहुवचनान्त होता है ॥२२॥

(द्वे शुक्तिकायाः)

मुक्तास्फोटः स्त्रियां शुक्तिः

सिपी (सितुही) के २ नाम—(१) मुक्तास्फोट (२) शुक्ति। इनमें (१ला) पुं०, (२रा) स्त्रीलिङ्ग में होता है।

(द्वे शङ्खस्य)

शङ्खः स्यात्कम्बुरस्त्रियौ।

शङ्ख के २ नाम—(१) शङ्ख (२) कम्बु। ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग को छोड़कर दोनों लिङ्गों (पुं० नपुं०) में होते हैं।

(द्वे सूक्ष्मशङ्खानाम्)

क्षुद्रशङ्खाः शङ्खनखाः

छोटे शङ्ख के २ नाम—(१) क्षुद्रशङ्ख (२) शङ्खनख।

(द्वे शम्बूकानाम्)

शम्बूका जलशुक्तयः ॥२३॥

घोंघा के २ नाम—(१) शम्बूक (२) जलशुक्ति। इनमें (१ला) पुं०-स्त्री और (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ॥२३॥

(षट् मण्डूकस्य)

भेके मण्डूक-वर्षाभू-शालूर-प्लव-दर्दुराः ।

मेढ़क (दादुर) के ६ नाम—(१) भेक (२) मण्डूक (३) वर्षाभू (४) शालूर (५) प्लव (६) दर्दुर ।

(द्वे स्वल्पगण्डूपदजातेः किञ्चुलकभार्यायाश्चापि)

शिली गण्डूपदी

छोटे केंचुए और केंचुई के २ नाम—(१) शिली (२) गण्डूपदी ।

(द्वे मण्डूक्याः)

भेकी वर्षाभ्वी

मेढ़की के २ नाम—(१) भेकी (२) वर्षाभ्वी ।

(द्वे कच्छप्याः)

कमठी डुलिः ॥२४॥

कछुई के २ नाम—(१) कमठी (२) डुलि ॥२४॥

(एकं मद्गुरस्त्रियाः)

मद्गुरस्य प्रिया शृङ्गी

मँगरा मछली की स्त्री 'सिंगी' का नाम—(१) शृङ्गी ।

(द्वे जलूकाकारजलचरविशेषस्य)

दुर्नामा दीर्घकोशिका ।

झिकवा के २ नाम—(१) दुर्नामन् (२) दीर्घकोशिका । इनमें (१ला) पुं, (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

(द्वे तडागादीनाम्)

जलाशया जलाधाराः

तालाब, झील, बावड़ी आदि के २ नाम—(१) जलाशय (२) जलाधार ।

(एकमगाधजलाशयस्य)

तत्रागाधजलो ह्रदः ॥२५॥

कुण्ड (दह) का नाम—(१) ह्रद ॥२५॥

(द्वे निपानस्य)

आहावस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ।

कुँए, तालाब वगैरः के नजदीक गौ, घोड़े आदि के पानी पीने के लिए बनाए गए हौज के २ नाम—(१) आहाव (२) निपान ।

(चत्वारि कूपस्य)

पुंस्येवाऽन्धुः प्रहिः कूप उदपानं तु पुंसि वा॥

कुँए के ४ नाम—(१) अन्धु (२) प्रहि (३) कूप (४) उदपान । इनमें (१-३) पुँल्लिङ्ग, (४) पुं०-नपुंसक में होता है ॥२६॥

(द्वे कूपस्यान्तरे रज्वादिधारणार्थदारुयन्त्रस्य)

नेमिस्त्रिकाऽस्य

गड़ारी का नाम—(१) नेमि (२) त्रिका ।

(एकं कूपमुखे इष्टकादिभिर्बद्धस्य)

वीनाहो मुखबन्धनमस्य यत् ।

कुँए के जगत का नाम—(१) वीनाह ।

(द्वे पुष्करिण्याः)

पुष्करिण्यां तु खातं स्यात्

पोखरी के २ नाम—(१) पुष्करिणी (२) खात ।

(द्वे अकृत्रिमखातस्य, देवद्वारस्थजलाशयस्य वा)

अखातं देवखातकम् ॥२७॥

बिना बनाया पोखरा या देव-मन्दिर के आगे के तालाब के २ नाम—(१) अखात (२) देवखातक ॥२७॥

(द्वे स-पद्मागाधजलाशयस्य)

पद्माकरस्तडागोऽस्त्री

कमल पैदा होनेवाले और अथाह तालाब के २ नाम—(१) पद्माकर (२) तडाग । इसमें 'तडाग' शब्द पुं०-नपुंसक में होता है ।

(त्रीणि कृत्रिमपद्माकरस्य)

कासारः सरसी सरः ।

खोदवाए हुए कमलवाले तालाब के ३ नाम—(१) कासार (२) सरसी (३) सरस् । इनमें (१) पुं, (२) स्त्री, (३) नपुंसक में होता है ।

(त्रीणि स्वल्पसरोवरस्य)

वेशन्तः पल्वलं चाल्पसरः

थोड़े पानी वाले तालाब (गड़ही, तलैया) के ३ नाम—(१) वेशन्त (२) पल्वल (३) अल्पसरस् ।

(द्वे वाप्याः)

वापी तु दीर्घिका ॥२८॥

बावली के २ नाम—(१) वापी (२) दीर्घिका ॥२८॥

(द्वे दुर्गादिपरितः खातस्य)

खेयं तु परिखा

खाई के २ नाम—(१) खेय (२) परिखा ।

(एकं 'बाँध' इति ख्यातस्य)

आधारस्त्वम्भसां यत्र धारणम् ।

पानी के बाँध का नाम—(१) आधार ।

(त्रीणि वृक्षादिमूले कृतजलाधारस्य)

स्यादालवालमावालमावापः

थाला (पौधे के जड़ के चारो तरफ पानी के लिए बनाए गए खंदक) के ३ नाम—(१) आलवाल (२) आवाल (३) आवाप ।

(द्वादश नद्याः)

अथ नदी सरित् ॥२९॥

तरंगिणी शैवलिनी तटिनी ह्रादिनी धुनी ।[1]
स्रोतस्विनी द्वीपवती स्रवन्ती निम्नगाऽऽपगा

नदी के १२ नाम—(१) नदी (२) सरित् (३) तरंगिणी (४) शैवलिनी (५) तटिनी (६) ह्रादिनी (७) धुनी (८) स्रोतस्विनी (९) द्वीपवती (१०) स्रवन्ती (११) निम्नगा (१२) आपगा ॥२९-३०॥

(अष्टौ गङ्गायाः)

गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ।
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्रोता भीष्मसूरपि ॥

गङ्गाजी के ८ नाम—(१) गङ्गा (२) विष्णुपदी (३) जह्नुतनया (४) सुरनिम्नगा (५) भागीरथी (६) त्रिपथगा[2] (७) त्रिस्रोतस् (८) भीष्मसू ॥३१॥

(चत्वारि यमुनायाः)

कालिन्दी सूर्यतनया यमुना शमनस्वसा ।

यमुनाजी के ४ नाम—(१) कालिन्दी (२) सूर्यतनया (३) यमुना (४) शमनस्वसृ ।

(चत्वारि नर्मदायाः)

रेवा तु नर्मदा सोमोद्भवा मेकलकन्यका ॥३२॥

नर्मदा नदी के ४ नाम—(१) रेवा (२) नर्मदा (३) सोमोद्भवा (४) मेकलकन्यका ॥३२॥

(द्वे गौरीविवाहे कन्यादानोदकाज्जातनद्याः)

करतोया सदानीरा

पार्वतीजी के विवाह में कन्यादान के जल से पैदा हुई नदी जो प्राचीन समय में बङ्गाल और कामरूप देश की सीमा समझी जाती थी और आज कल बङ्गाल के रंगपुर, दीनाजपुर आदि नगरों में होकर बहती है, उसका २ नाम—(१) करतोया (२) सदानीरा ।

(द्वे कार्तवीर्यावतारितनद्याः)

बाहुदा सैतवाहिनी ।

धवला नदी (जिसे अब बूढ़ा राप्ती नदी कहते हैं और जो अवध की राप्ती नदी की एक सहायक नदी है) के २ नाम—(१) बाहुदा (२) सैतवाहिनी ।

(द्वे शतद्रवाः)

शतद्रुस्तु शुतुद्रिः स्याद्

पञ्जाब की सतलज नदी के २ नाम—(१) शतद्रु (२) शुतुद्रि ।

(द्वे विपाशायाः)

विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥३३॥

पञ्जाब की व्यास नदी (जिसने वसिष्ठजी के पाश को नष्ट कर दिया जब कि उन्होंने विश्वामित्र द्वारा मारे गये अपने पुत्र के शोक से संतप्त हो फाँसी लगायी थी) के २ नाम—(१) विपाशा (२) विपाश् । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं ॥३३॥

(द्वे शोणभद्रस्य)

शोणो हिरण्यवाहः स्यात्

सोन नदी (जो अमरकण्टक से निकलकर पाँच सौ मील बहने के बाद पटना के ऊपर गङ्गा

---

१ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—
कूलङ्कषा निर्झरिणी रोधोवक्रा सरस्वती ।
अर्थात्—नदी के ४ और नाम—(१) कूलङ्कषा (२) निर्झरिणी (३) रोधोवक्रा (४) सरस्वती ।

२—क्षितौ तारयते मर्त्यान्नागांस्तारयतेऽप्यधः ।
दिवि तारयते देवांस्तेन त्रिपथगा स्मृता ॥

जी में मिलती है) के २ नाम—(१) शोण (२) हिरण्यवाह ।

(एकं कृत्रिमस्वल्पनद्याः)

कुल्याऽल्पा कृत्रिमा सरित् ।

नहर (बनायी गयी छोटी नदी) का नाम—(१) कुल्या ।

(नदी विशेषाणां पृथगेकैकम्)

शरावती वेत्रवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥३४॥ कावेरी

गुजरात की साबरमती नदी का नाम—(१) शरावती ।

बुन्देलखण्ड की बेतवा नदी का नाम—(१) वेत्रवती ।

पञ्जाब की चेनाब नदी का नाम—(१) चन्द्रभागा ।

दिल्ली की सरस्वती नदी का नाम—(१) सरस्वती ।

दक्षिण की कावेरी नदी का नाम—(१) कावेरी ॥३४॥

सरितोऽन्याश्च[१]

इनके अतिरिक्त और भी नदियाँ हैं । यथा—कोसा नदी (यह गङ्गाजी की सहायक नदियों में बहुत बड़ी नदी है और इसका सङ्गम गङ्गाजी के साथ बंगाल में हुआ है और वह स्थान अब तक कौशिकी तीर्थ से विख्यात है) का नाम—कौशिकी ।

उत्तर की गण्डकी नदी का नाम—गण्डकी ।

बुन्देलखण्ड की चम्बल नदी का नाम—चर्मण्वती ।

दक्षिण की गोदावरी नदी का नाम-गोदावरी ।

(द्वे नदीसङ्गमस्य)

सम्भेदः सिन्धुसङ्गमः ।

नदियों के मिलने के (संगम) के २ नाम—(१) सम्भेद (२) सिन्धुसङ्गम ।

(एकं कृत्रिमजलनिःसरणमार्गस्य)

द्वयोः प्रणाली पयसः पदव्याम्

जल के निकलने के लिए बनाए गए रास्ते (यानी पनाला) का नाम—(१) प्रणाली । यह पुं० और स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

(देविकासरयूद्भवयोः क्रमेणैकैकम्)

त्रिषु तूत्तरौ ॥३५॥

देविकायां सरय्वां च भवे दाविक-सारवौ ।

देविका और सरयू नदी में होनेवाले पदार्थ के क्रमशः एक-एक नाम—(१) दाविक (२) सारव । ये दोनों शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ॥३५॥

(द्वे सन्ध्याविकासिनः शुक्लकह्लारस्य)

सौगन्धिकं तु कह्लारम्

सन्ध्या समय विकसित होनेवाले सफेद कमल के २ नाम—(१) सौगन्धिक (२) कह्लार ।

(द्वे रक्तकह्लारस्य)

हल्लकं रक्तसन्ध्यकम् ॥३६॥

लाल कमल के २ नाम—(१) हल्लक (२) रक्तसन्ध्यक ॥३६॥

(द्वे कुवलयस्य)

स्यादुत्पलं कुवलयम्

सफेद कमल (फफूला) के २ नाम—(१) उत्पल (२) कुवलय ।

(द्वे नीलोत्पलस्य)

अथ नीलाम्बुजन्म च ।

इन्दीवरं च नीलेऽस्मिन्

नीले कमल के २ नाम—(१) नीलाम्बुजन्मन् (२) इन्दीवर ।

(द्वे शुक्लोत्पलस्य)

सिते कुमुद-कैरवे ॥३७॥

सफेद कमल (कोईं) के २ नाम—(१) कुमुद (२) कैरव ॥३७॥

(एकमुत्पलकन्दस्य)

शालूकमेषां कन्दः स्यात्

इन कमलों के जड़ का नाम—(१) शालूक ।

(द्वे जलकुम्भिकायाः)

वारिपर्णी तु कुम्भिका ।

---

१ अन्याः कौशिकी-गण्डकी-चर्मण्वती-गोदावर्यादयः ।

जलकुम्भी (काई) के २ नाम—(१) वारिपर्णी (२) कुम्भिका ।

(त्रीणि शैवालस्य)

जलनीली तु शेवालं शैवालः

सेवार के ३ नाम—(१) जलनीली (२) शेवाल (३) शैवाल ।

(द्वे कुमुदिन्याः)

अथ कुमुद्वती ॥३८॥

कुमुदिन्याम्

कुमुदिनी (कोईं) के २ नाम—(१) कुमुद्वती (२) कुमुदिनी ॥३८॥

(त्रीणि कमलिन्याः)

नलिन्यां तु बिसिनी पद्मिनीमुखाः[१]।

कमलिनी के ३ नाम—(१) नलिनी (२) बिसिनी (३) पद्मिनी । आदि ।

(षोडश कमलस्य)

वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम् ।३९।
सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम् ।
पङ्केरुहं तामरसं सारसं सरसीरुहम् ॥४०॥
बिसप्रसून-राजीव-पुष्कराम्भोरुहाणि च ।

कमल के १६ नाम—(१) पद्म (२) नलिन (३) अरविन्द (४) महोत्पल (५) सहस्रपत्र (६) कमल (७) शतपत्र (८) कुशेशय (९) पङ्केरुह (१०) तामरस (११) सारस (१२) सरसीरुह (१३) बिस-प्रसून (१४) राजीव (१५) पुष्कर (१६) अम्भोरुह । ये (१-१६) पुं०-नपुंसक में होते हैं। ॥३९-४०॥

(द्वे सितसरोरुहस्य)

पुण्डरीकं सिताम्भोजम्

सफेद कमल के २ नाम—(१) पुण्डरीक (२) सिताम्भोज ।

(त्रीणि रक्तसरोरुहस्य)

अथ रक्तसरोरुहे ॥४१॥

रक्तोत्पलं कोकनदं

लाल कमल के ३ नाम—(१) रक्तसरोरुह (२) रक्तोत्पल (३) कोकनद ॥४१॥

(द्वे पद्मादिदण्डस्य)

नालो नालम्

कमल के डंठल के २ नाम—(१) नालः (२) नालम् ।

(द्वे मृणालस्य)

अथास्त्रियाम् ।

मृणालं बिसम्

कमल तन्तु के २ नाम—(१) मृणाल (२) बिस । ये दोनों शब्द स्त्रीलिङ्ग में नहीं होते केवल पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होते हैं ।

(एकमब्जादीनां समूहस्य)

अब्जादिकदम्बे षण्डमस्त्रियाम् ॥४२॥

कमल आदि के समुदाय का नाम—(१) षण्ड । यह पुं०-नपुंसक में होता है ॥४२॥

(द्वे पद्मकन्दस्य)

करहाटः शिफाकन्दः

कमल की जड़ के २ नाम—(१) करहाट (२) शिफाकन्द ।

(द्वे पद्मकेसरस्य)

किञ्जल्कः केसरोऽस्त्रियाम् ।

कमल के पराग (केशर) के २ नाम—(१) किञ्जल्क (२) केसर । ये दोनों शब्द पुं० और नपुं० में होते हैं ।

(द्वे पद्मादीनां नवपत्रस्य)

संवर्तिका नवदलम्

कमल आदि के नये पत्तों के २ नाम—(१) संवर्तिका (२) नवदल ।

(द्वे कमलबीजस्य)

बीजकोशो वराटकः ॥४३॥

कमलगट्टा के २ नाम—(१) बीजकोश (२) वराटक ॥४३॥

(इति वारिवर्ग : १०)

१—मूलनालदलोत्फुल्ला फलैः समुदिता पुनः ।
पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्बिसिन्यादिश्च सा स्मृता ॥

(उपसंहारः)

उक्तं स्वर्व्योमदिक्कालधीशब्दादि स-नाट्यकम्
पातालभोगि नरकं वारि चैषां च सङ्गतम् ।१।
इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
स्वरादिकाण्डः प्रथमः साङ्ग एव समर्थितः।।२॥

मैं (अमरसिंह) ने स्वर्गवर्ग, व्योमवर्ग, दिग्वर्ग, कालवर्ग, धीवर्ग, शब्दादिवर्ग, नाट्यवर्ग, पातालभोगिवर्ग, नरकवर्ग, वारिवर्ग और इनके प्रसङ्गवश देव, असुर, मेघ आदि का भी वर्णन किया ॥ १ ॥

श्रीमदमरसिंह के बनाए हुए नाम (स्वर्, स्वर्ग, नाक) और लिङ्गों (पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग) को बतानेवाले नामलिङ्गानुशासन (अमरकोष) नामक ग्रन्थ में स्वरादि वर्गों का पहला काण्ड साङ्गोपाङ्ग समाप्त हुआ ॥२॥

इति श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए० विरचितायां
'धरा'ख्यामरकोषटीकायां प्रथमः काण्डः समाप्तः ॥

अमरकोषः

द्वितीयं काण्डम्

(प्रस्तावना)

वर्गाः पृथ्वी-पुर-क्ष्माभृद्वनौषधि-मृगादिभिः ।
नृ-ब्रह्म-क्षत्र-विट्-शूद्रैः साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः ॥

टीका—इस (द्वितीय काण्ड) में साङ्गोपाङ्ग (१) भूमिवर्ग (२) पुरवर्ग (३) शैलवर्ग (४) वनौषधिवर्ग (५) सिंहादिवर्ग (६) मनुष्यवर्ग (७) ब्रह्मवर्ग (८) क्षत्रियवर्ग (९) वैश्यवर्ग (१०) शूद्रवर्ग कहा जायगा ॥१॥

अथ भूमिवर्गः[१]

(सप्तविंशतिर्भूमेः)

भूर्भूमिरचलाऽनन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा ।
धरा धरित्री धरणिः क्षोणीर्ज्या काश्यपी क्षितिः ।
सर्वंसहा वसुमती वसुधोर्वी वसुन्धरा ।
गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही ॥

पृथ्वी के २७ नाम—(१) भू (२) भूमि (३) अचला (४) अनन्ता (५) रसा (६) विश्वम्भरा (७) स्थिरा (८) धरा (९) धरित्री (१०) धरणि (११) क्षोणि (१२) ज्या (१३) काश्यपी (१४) क्षिति (१५) सर्वंसहा (१६) वसुमती (१७) वसुधा (१८) उर्वी (१९) वसुन्धरा (२०) गोत्रा (२१) कु (२२) पृथिवी (२३) पृथ्वी (२४) क्ष्मा (२५) अवनि (२६) मेदिनी (२७) मही ॥२-३॥

---

१ अन्य पुस्तकों में भूमि के ११ नाम अधिक मिलते हैं ।

विपुला गह्वरी धात्री गौरिला कुम्भिनी क्षमा ।
भूतधात्री रत्नगर्भा जगती सागराम्बरा ॥

टी०–(१) विपुला (२) गह्वरी (३) धात्री (४) गो (५) इला (६) कुम्भिनी (७) क्षमा (८) भूतधात्री (९) रत्नगर्भा (१०) जगती (११) सागराम्बरा ।

(द्वे मृदः)

मृन्मृत्तिका

मिट्टी के २ नाम—(१) मृत् (२) मृत्तिका । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे प्रशस्तमृदः)

प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।

अच्छी मिट्टी के २ नाम—(१) मृत्सा (२) मृत्स्ना ।

(एकं सर्वसस्याढ्यमृदः)

उर्वरा सर्वसस्याढ्या

उपजाऊ (सब अन्न को पैदा करनेवाली) मिट्टी का नाम—(१) उर्वरा ।

(द्वे क्षारमृत्तिकायाः)

स्यादूषः क्षारमृत्तिका ॥४॥

नोना, खारी मिट्टी के २ नाम—(१) ऊष (२) क्षारमृत्तिका । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥

(द्वे क्षारमृद्विशिष्टदेशस्य)

ऊषवानूषरो द्वावप्यन्यलिङ्गौ

ऊसर जमीन के २ नाम—(१) ऊषवत् (२) ऊषर । ये दोनों शब्द किसी के विशेषण होनेपर तीनों लिङ्गों में होते हैं । (यथा—ऊषवती ऊषरा वा स्थली । ऊषरं स्थलम्) ।

(द्वे स्थलस्य)

स्थलं स्थली ।

स्थल के २ नाम—(१) स्थल (२) स्थली ।

(द्वे निर्जलदेशस्य)

समानौ मरु-धन्वानौ

निर्जल (मरु) देश के २ नाम—(१) मरु (२) धन्वन् । ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे हलाद्यकृष्टक्षेत्रादेः)

द्वे खिलाप्रहते समे ॥५॥

त्रिषु

बिना जोते हुए खेत आदि के २ नाम—(१) खिल (२) अप्रहत। ये दोनों समान अर्थ एवं तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होते हैं ॥५॥

(पञ्च भूतलस्य)

अथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत्।

जगत् के ५ नाम—(१) जगती (२) लोक (३) विष्टप (४) भुवन (५) जगत्।

(एकं भारतवर्षस्य)

लोकोऽयं भारतं वर्षम्

भारतवर्ष (हिन्दुस्थान) का नाम—(१) भारतवर्ष।

(एकं प्राच्यदेशस्य)

शरावत्यास्तु योऽवधेः ॥६॥

देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्यः

शरावती नदी के पूर्व-दक्षिणवाले देश का नाम—(१) प्राच्य ॥६॥

(एकमुदीच्यदेशस्य)

उदीच्यः पश्चिमोत्तरः।

शरावती नदी के पश्चिम-उत्तरवाले देश का नाम—(१) उदीच्य।

(द्वे म्लेच्छदेशस्य)

प्रत्यन्तो म्लेच्छदेशः स्यात्

सीमाप्रान्त (समतट, डवाक, कामरूप के शक-मुरुण्डों के देश) के २ नाम—(१) प्रत्यन्त (२) म्लेच्छदेश।

(द्वे मध्यदेशस्य)

मध्यदेशस्तु मध्यमः ॥७॥

मध्यदेश (हिमालय और विन्ध्याचल के बीच कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिमवाले देश) के २ नाम—(१) मध्यदेश (२) मध्यम ॥७॥

(द्वे विन्ध्यहिमाचलयोरन्तरस्य)

आर्यावर्तः पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्य-हिमालयोः॥

विन्ध्याचल और हिमालय के बीच के देश के २ नाम—(१) आर्यावर्त (२) पुण्यभूमि।

(द्वे जनपदस्य)

नीवृज्जनपदः

देश (मुल्क) के २ नाम—(१) नीवृत् (२) जनपद।

(त्रीणि देशमात्रस्य)

देश-विषयौ तूपवर्तनम् ॥८॥

देश के ३ नाम—(१) देश (२) विषय (३) उपवर्तन ॥८॥

त्रिष्वागोष्ठात्

यहाँ से लेकर 'गोष्ठ' (श्लोक १३) के शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं।

(द्वे नडाधिकदेशस्य)

नडप्राये नड्वान्नड्वल इत्यपि।

नरकट ज्यादा होनेवाले देश के २ नाम—(१) नड्वान् (२) नड्वल।

(एकं बहुवेतसदेशस्य)

कुमुद्वान्कुमुदप्राये

कफूला (सफेद कमल) वाले देश का नाम—(१) कुमुद्वत्।

(एकं बहुवेतसदेशस्य)

वेतस्वान्बहुवेतसे ॥९॥

बहुत बेंत वाले देश का नाम—(१) वेतस्वत् ॥९॥

---

१ उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद्भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥

२ चातुर्वर्ण्यव्यवस्थानं यस्मिन्देशे न विद्यते।
तं म्लेच्छविषयं प्राहुरार्यावर्तमतः परम् ॥

३ हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यप्रदेशः प्रकीर्तितः ॥—मनुः

४ आ समुद्रात्तु वै पूर्वादा समुद्राच्च पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः ॥—मनुः

पर्वतयोर्हिमवद्विन्ध्ययोर्यदन्तरं मध्यं स
आर्यावर्त्तो देशो बुधैः शिष्टैरुच्यते।—मेधातिथिः

(एकं हरिततृणप्रचुरदेशस्य)

शाद्वलः शादहरिते

नयी २ हरी घास वाले देश का नाम—(१) शाद्वल । यह तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होता है ।

(एकं कर्दमयुक्तदेशस्य)

सजम्बाले तु पङ्किलः ।

कीचड़वाले देश का नाम—(१) पंकिल । (पुं-स्त्री-नपुंसक)

(द्वे जलबहुलदेशस्य)

जलप्रायमनूपं स्यात्

तराई के २ नाम—(१) जलप्राय (२) अनूप[1] । (१-२) पुं-स्त्री-नपुंसक ।

(एकं नद्यादेरुपान्तदेशस्य)

पुंसि कच्छस्तथाविधः ॥१०॥

उसी प्रकार (अनूपसदृश) नदी आदि के समीपवर्ती देश (कछार) का नाम—(१) कच्छ । यह केवल पुँल्लिङ्ग में ही होता है, न कि उपरोक्त कथनानुसार तीनों लिङ्ग में ॥१०॥

(चत्वार्यश्मप्रायमृदधिकस्य)

स्त्री शर्करा शर्करिलः शार्करः शर्करावति ।

ईंट-रोड़े-कंकड़वाले देश के ४ नाम—(१) शर्करा (२) शर्करिल (३) शार्कर (४) शर्करावत् । इनमें (१) 'शर्करा' शब्द केवल स्त्रीलिङ्ग में होता है । शेष (२-४) पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग में ।

देश एवादिमौ

आदि के 'शर्करा' और 'शर्करिल' शब्द देश के ही नाम है ।

(चत्वारि बालुकाबहुलदेशस्य)

एवमुन्नेयाः सिकतावति ॥११॥

बालूवाले देश के ४ नाम—(१) सिकता (२) सिकतिल (३) सैकत (४) सिकतावत् । इनमें 'सिकता' नित्य स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त होता है । किसी आचार्य के मत से 'सिकता' और 'शर्करा' ये दोनों शब्द बहुवचनान्त होते हैं; शेष पुं-स्त्री-नपुंसक में ॥११॥

(एकैकं नद्यम्बुभिर्वृष्ट्यम्बुभिः सम्पन्नदेशस्य)

देशो नद्यम्बुवृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः ।
स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम् ॥१२॥

नदी के जल से उपजे धानों द्वारा पाले गये देश का नाम—(१) नदीमातृक । (पुं-स्त्री-नपुं०)

वर्षा के जल से उपजे धानों द्वारा पाले गये देश का नाम—(१) देवमातृक (पुं-स्त्री-नपुं०)॥१२॥

(एकं स्वधर्मपरायणसुराजयुक्तदेशस्य)

सुराज्ञि देशे राजन्वान्स्यात्

अपने धर्म में परायण अच्छे राजावाले देश का नाम—(१) राजन्वत् । (पुं-स्त्री-नपुंसक)

(एकं सामान्यराजयुक्तदेशस्य)

ततोऽन्यत्र राजवान् ।

साधारण राजावाले देश का नाम—(१) राजवत् । (पुं-स्त्री-नपुंसक)

(द्वे गवां स्थानस्य)

गोष्ठं गोस्थानकम्

गौओं के स्थान (गौओं का बाड़ा, गोशाला) के २ नाम—(१) गोष्ठ (२) गोस्थानक ।

(एकं भूतपूर्वगोस्थानस्य)

तत्तु गौष्ठीनं भूतपूर्वकम् ॥१३॥

पुराना गोबाड़ा का नाम—(१) गौष्ठीन ॥१३॥

(द्वे नदीपर्वतादीनामुपान्तभुवः)

पर्यन्तभूः परिसरः

नदी पहाड़ आदि के निकट की भूमि के २ नाम—(१) पर्यन्तभू (२) परिसर । इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग और (२रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे सेतोः)

सेतुरालौ स्त्रियां पुमान् ।

---

[1] अनूपदेशलक्षणम्—
नदी-पल्वल-शैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः ।
हंस-सारस-कारण्ड-चक्रवाकादिसेवितः ॥
शश-वराह-महिष-रुरु-रोहिकुलाऽऽकुलः ।
प्रभूतद्रुम-पुष्पाढ्यो नीलसस्यफलान्वितः ॥
अनेकशालि-केदार-कदलीक्षुविभूषितः ।
अनूपदेशो ज्ञातव्यो वातश्लेष्ममयार्तिमान् ॥

पुल के २ नाम—(१) सेतु (२) आलि। इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग और (२रा) स्त्रीलिङ्ग है।

(त्रीणि वल्मीकस्य)

वामलूरश्च नाकुश्च वल्मीकं पुंनपुंसकम् ॥१४॥

व्यमौर (चींटी, दीमक आदि से बनाया गया मिट्टी का ढेर) के ३ नाम—(१) वामलूर (२) नाकु (३) वल्मीक। इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग, (३रा) नपुंसक के अतिरिक्त पुँल्लिङ्ग में भी होता है ॥१४॥

(द्वादश मार्गस्य)

अयनं वर्त्म मार्गाऽध्व-पन्थानः पदवी सृतिः। सरणिः पद्धतिः पद्या वर्तन्येकपदीति च॥१५॥

रास्ता (राह, मार्ग, सड़क) के १२ नाम—(१) अयन (२) वर्त्मन् (३) मार्ग (४) अध्वन् (५) पथिन् (६) पदवी (७) सृति (८) सरणि (९) पद्धति (१०) पद्या (११) वर्तनी (१२) एकपदी। इनमें (१-२) नपुंसक (३-५) पुँल्लिङ्ग (६-१२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१५॥

(त्रीणि शोभनमार्गस्य)

अतिपन्थाः सुपन्थाश्च सत्पथश्चार्चितेऽध्वनि।

पूजित मार्ग (अच्छी राह) के ३ नाम—(१) अतिपथिन् (२) सुपथिन् (३) सत्पथ। ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं।

(पञ्च दुर्मार्गस्य)

व्यध्वो दुरध्वो विपथः कदध्वा कापथः समाः१६

बुरा रास्ता (कुपथ, खराब मार्ग) के ५ नाम—(१) व्यध्व (२) दुरध्व (३) विपथ (४) कदध्वन् (५) कापथ। ये (१-५) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१६॥

(द्वे अमार्गस्य)

अपन्थास्त्वपथं तुल्ये

मार्गाभाव (जहाँ रास्ता न हो उस) के २ नाम—(१) अपथिन् (२) अपथ। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) नपुंसक है।

(द्वे चतुष्पथस्य)

शृंगाटक-चतुष्पथे।

चौराहा के २ नाम—(१) शृङ्गाटक (२) चतुष्पथ। ये (१-२) नपुंसक हैं।

(एकं दूरशून्यच्छायाजलादिवर्जितमार्गस्य)

प्रान्तरं दूरशून्योऽध्वा

दूर, सूनसान, छाया और जलरहित राह का नाम—(१) प्रान्तर (नपुं०)।

(एकं चोरकण्टकाद्युपद्रवयुक्तमार्गस्य)

कान्तारं वर्त्म दुर्गमम् ॥१७॥

चोर, काँटे वगैरः उपद्रवों से युक्त दुर्गम राह का नाम—(१) कान्तार (नपुं०, पुँ०) ॥१७॥

(द्वे क्रोशद्वयपरिमितस्य)

गव्यूतिः स्त्री क्रोशयुगम्

दो कोस के २ नाम—(१) गव्यूति (२) क्रोशयुग। उनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (शब्दार्णव के अनुसार पुँल्लिङ्ग और वाचस्पति के अनुसार नपुंसक भी होता है), (२) नपुंसक है।

(एकं चतुःशतहस्तपरिमितस्य)

नल्वः किष्कुचतुःशतम्।

(चतुः शत) ४०० (किष्कु) हाथ का नाम—(१) नल्व (पुं०)।

(द्वे राजमार्गस्य)

घण्टापथः संसरणम्

राजमार्ग (मुल्क की सबसे बड़ी सड़क यथा 'ग्रेण्ड ट्रङ्क रोड') के २ नाम—(१) घण्टापथ (२) संसरण। इनमें (१ ला) पुं०, (२) नपुं० है।

(एकं पुरमार्गस्य)

तत्पुरस्योपनिष्करम् ॥१८॥

---

१ किन्हीं २ पुस्तकों में ये श्लोक मिलते हैं—

(पञ्च द्यावाभूम्योः)

द्यावापृथिव्यौ रोदस्यौ द्यावाभूमी च रोदसी। दिवस्पृथिव्यौ

आकाश-पृथ्वी के ५ नाम—(१) द्यावापृथिवी (२) रोदसी (३) द्यावाभूमी (४) रोदसी (५) दिवस्पृथिवी। ये द्विवचनान्त हैं।

(त्रीणि लवणाकरस्य)

गञ्जा तु रुमा स्याल्लवणाकरः॥

नमक की खान के ३ नाम—(१) गञ्जा (२) रुमा (३) लवणाकर।

शहर की सड़क का नाम—(१) उपनिष्कर (नपुं०) ॥१८॥

(इति भूमिवर्गः १)

अथ पुरवर्गः २

(सप्त नगरस्य)

पूः स्त्री पुरी-नगर्यौ वा पत्तनं पुटभेदनम् । स्थानीयं निगमः

शहर (नगर) के ७ नाम—(१) पूर् (२) पुरी (३) नगरी (४) पत्तन (५) पुटभेदन (६) स्थानीय (७) निगम । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२-३) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग (४-६) नपुंसकलिङ्ग (७) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकं शाखानगरस्य)

अन्यत्तु यन्मूलनगरात् पुरम् ॥१॥ तच्छाखानगरम्

राजधानी के पास के छोटे शहर (उपनगर) का नाम—(१) शाखानगर ॥१॥

(द्वे वेश्यानिवासस्य)

वेशो वेश्याजनसमाश्रयः ।

रण्डी के घर के २ नाम—(१) वेश (२) वेश्याजन-समाश्रय ।

(द्वे हट्टस्य, क्रय्यवस्तुशालायाः)

आपणस्तु निषद्यायाम्

बाज़ार (मण्डी, हाट) के २ नाम—(१) आपण (२) निषद्या । इनमें (१) पुंल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे क्रय्यवस्तुशालापंक्तेः)

विपणिः पण्यवीथिका ॥२॥

दुकान के २ नाम—(१) विपणि (२) पण्यवीथिका । इनमें (१) पुं-स्त्रीलिङ्ग है ॥२॥

(त्रीणि ग्राममध्यमार्गस्य)

रथ्या प्रतोली विशिखा

गली (शहर के बीच का मार्ग) के ३ नाम—(१) रथ्या (२) प्रतोली (३) विशिखा ।

(द्वे परिखोद्धृतमृत्तिकाकूटस्य, प्राकाराधारस्य वा)

स्याच्चयो वप्रमस्त्रियाम् ।

खाईं से निकाली गयी मिट्टी की ढेर या कच्चा किला के २ नाम—(१) चय (२) वप्र । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग- नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि यष्टिकाकण्टकादिरचितवेष्टनस्य)

प्राकारो वरणः सालः

लकड़ी–कांटे से बनाए गए घेरे के ३ नाम—(१) प्राकार (२) वरण (३) साल ।

(एकं ग्रामादेरन्ते कण्टकादिवेष्टनस्य)

प्राचीनं प्रान्ततो वृतिः ॥३॥

नगर आदि के आसपास कांटे के घेरा का नाम—(१) प्राचीन ॥३॥

(द्वे भित्तेः)

भित्तिः स्त्री कुड्यम्

भीत (दीवाल) के २ नाम—(१) भित्ति (२) कुड्य । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुंसक है ।

(एकं बौद्धस्तूपस्य)

एडूकं[१] यदन्तर्न्यस्तकीकसम् ।

बौद्धों के स्तूप का नाम—(१) एडूक ।

(षोडश गृहस्य)

गृहं गेहोदवसितं वेश्म सद्म निकेतनम् ॥४॥ निशान्त-पस्त्य-सदनं भवनाऽऽगार-मन्दिरम् । गृहाःपुंसि च भूम्न्येव निकाय्य-निलयाऽऽलयाः

---

१ बौद्ध-धर्मावलम्बी आदरणीय मृत व्यक्ति की हड्डी को पृथ्वी में रखकर उसके चारों ओर ऊँची दिवाल उठा देते थे जिसे स्तूप कहते हैं और वे उसी की पूजा करते थे। जैसा कि महाभारत वनपर्वमें लिखा है कि बौद्धकाल (कलियुग) में लोग स्तूपों की पूजा करेंगे, और देवताओं की पूजा छोड़ देंगे । भारतवर्ष में देवताओं के मन्दिर न दिखलाई पड़ेंगे किन्तु स्तूपों ही से पृथ्वी व्याप्त होगी—

एडूकान् पूजयिष्यन्ति वर्जयिष्यन्ति देवताः (१९०,६५)

एडूकचिह्ना पृथिवी न देवगृहभूषिता (१९०,६७)

Edukas=Buddhist Stupas. [K. P. Jayaswal: History of India, 150 A. D-350 A. D., P. 47.]

घर के १६ नाम—(१) गृह (२) गेह (३) उदवसित (४) वेश्मन् (५) सद्मन् (६) निकेतन (७) निशान्त (८) पस्त्य (९) सदन (१०) भवन (११) आगार (१२) मन्दिर (१३) गृह (१४) निकाय्य (१५) निलय (१६) आलय। इनमें (१-१२) नपुंसक,(२रा) पुँल्लिङ्ग भी,(१३वां) पुँल्लिङ्ग नित्यबहुवचनान्त, (१४-१६) पुँल्लिङ्ग हैं ॥४-५॥

(चत्वारि सभागृहस्य)

वासः कुटी द्वयोः शाला सभा

सभा घर के ४ नाम—(१) वास (२) कुटी (३) शाला (४) सभा । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग—स्त्रीलिङ्ग (३-४) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे अन्योन्याभिमुखशालाचतुष्कस्य)

सञ्जवनं त्विदम् ।

चतुःशालम्

चौक के २ नाम--(१) सञ्जवन (२) चतुःशाल ।

(द्वे मुनीनां गृहस्य)

मुनीनां तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।

मुनि लोगों की झोपड़ियों के २ नाम—(१) पर्णशाला (२) उटज । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) पुं०-नपुंसक है ।

(द्वे यज्ञस्थानस्य)

चैत्यमायतनं तुल्ये

यज्ञशाला के २ नाम—(१) चैत्य (२) आयतन । दोनों नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(द्वे अश्वशालायाः)

वाजिशाला तु मन्दुरा ।

घुड़साल या अस्तबल के २ नाम—(१) वाजिशाला (२) मन्दुरा ।

(द्वे स्वर्णकारादीनां शालायाः)

आवेशनं शिल्पिशाला

सुनार—चित्रकार आदि कारीगरों के स्थान के २ नाम—(१) आवेशन (२) शिल्पिशाला ।

(द्वे जलशालायाः)

प्रपा पानीयशालिका ॥७॥

पौसरा, प्याऊ के २ नाम—(१) प्रपा (२) पानीयशालिका ॥७॥

(एकं मठस्य)

मठश्छात्रादिनिलयः

छात्रावास या संन्यासियों के वास स्थान का नाम—(१) मठ ।

(द्वे मद्यगृहस्य)

गञ्जा तु मदिरागृहम् ।

शराबघर (कलवरिया) के २ नाम—(१) गञ्जा (२) मदिरागृह ।

(द्वे गृहमध्यभागस्य)

गर्भागारं वासगृहम्

घर के मध्यभाग (भीतर की कोठरियों) के २ नाम—(१) गर्भागार (२) वासगृह ।

(द्वे प्रसवस्थानस्य)

अरिष्टं सूतिकागृहम्[१] ॥ ८ ॥

सौरीघर के २ नाम—(१) अरिष्ट (२) सूतिकागृह ॥ ८ ॥

(द्वे गवाक्षस्य)

वातायनं गवाक्षः

झरोखा के २ नाम—(१) वातायन (२) गवाक्ष ।

(द्वे मण्डपस्य)

अथ मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।

मण्डप (लोगों के आराम की जगह) के २ नाम—(१) मण्डप (२) जनाश्रय । इसमें (१) पुं-नपुंसक में, (२) पुँल्लिङ्ग में होता है ।

(एकं धनवतां वासगृहस्य)

हर्म्यादि धनिनां वासः

---

१ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक अधिक मिलते हैं—

कुट्टिमोऽस्त्री निबद्धा भूः

फर्शबन्दी (तहखाना) का नाम—(१) कुट्टिम । यह पुं-नपुंसक में होता है ।

चन्द्रशाला शिरोगृहम् ।

अटारी (धूर ऊपर का बंगला) के २ नाम—(१) चन्द्रशाला (२) शिरोगृह ।

अमीरों के घर का नाम—(१) हर्म्य (नपुंसक)।

(एकं देवानां राज्ञां च गृहस्य)

प्रासादो देवभूभुजाम् ॥ ९ ॥

देवालय और महल का नाम—(१) प्रासाद ॥ ९ ॥

(द्वे राजगृहस्य)

सौधोऽस्त्री राजसदनम्

राजाओं के घर के २ नाम—(१) सौध (२) राजसदन । इनमें (१) पुं-नपुंसक और (२) नपुंसक में होता है ।

(द्वे राजगृहसामान्यस्य)

उपकार्योपकारिका ।

कपड़े के बने हुए राजा के घर (तम्बू, खेमा, डेरा) के २ नाम—(१) उपकार्या (२) उपकारिका ।

(एकैकमिश्वरगृहविशेषाणाम्)

स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्द्यावर्तादयोऽपि च ॥१०
विच्छन्दकः प्रभेदा हि भवन्तीश्वरसद्मनाम् ।

राजगृहों के भेद—

चार दरवाजा और तोरणसहित राजघर का नाम—(१) स्वतिक । (पुं०-नपुं०)

एक के ऊपर एक कई मंजिल वाले राजघर का नाम—(१) सर्वतोभद्र । (पुं०-नपुं०)

गोलघर का नाम—(१) नन्द्यावर्त । (पुं० नपुं०)

खूब लम्बे-चौड़े और सुन्दर राजघर का नाम—(१) विच्छन्दक । (पुं०-नपुं०) ॥१०॥

(चत्वारि राज्ञां स्त्रीगृहस्य)

स्त्र्यगारं भूभुजामन्तःपुरं स्यादवरोधनम् ॥११
शुद्धान्तश्चावरोधश्च

रनिवास के ४ नाम—(१) अन्तःपुर (२) अवरोधन (३) शुद्धान्त (४) अवरोध ॥११॥

(द्वे हर्म्याद्युपरिगृहस्य)

स्यादट्टः क्षौममस्त्रियाम् ।

अटारी के २ नाम—(१) अट्ट (२) क्षौम । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२) पुं-नपुंसक में होता है ।

(त्रीणि द्वारप्रकोष्ठाद्बहिर्द्वाराग्रवर्त्तिचतुष्कस्य)

प्रघाण-प्रघणाऽलिन्दा बहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥१२॥

दरवाजे के बाहर चबूतरे (या बरामदा) के ३ नाम—(१) प्रघाण (२) प्रघण (३) अलिन्द ॥१२॥

(द्वे देहल्याः)

गृहावग्रहणी देहली

देहली, ड्योढ़ी के २ नाम—(१) गृहावग्रहणी (२) देहली ।

(त्रीणि प्राङ्गणस्य)

अङ्गणं चत्वराऽजिरे ।

आँगन के ३ नाम—(१) अङ्गण (२) चत्वर (३) अजिर । ये (१-३) नपुंसक हैं ।

(एकं द्वारस्तम्भाधःस्थितकाष्ठस्य)

अधस्ताद्दारुणि शिला

दरवाजे के नीचे के चौकठ का नाम—(१) शिला ।

(एकं द्वारस्तम्भोपरिस्थितकाष्ठस्य)

नासा दारूपरिस्थितम् ॥१३॥

नास (दरवाजे के ऊपर के चौकठ जिसको मस्तक पट्टी या गणेशपट्टी कहते हैं) का नाम—(१) नासा ॥१३॥

(द्वे गुप्तद्वारस्य)

प्रच्छन्नमन्तर्द्वारं स्यात्

गुप्त दरवाजे के २ नाम—(१) प्रच्छन्न (२) अन्तर्द्वार ।

(द्वे पक्षद्वारस्य)

पक्षद्वारं तु पक्षकम् ।

दरवाजे के बगल की खिड़की के २ नाम—(१) पक्षद्वार (२) पक्षक ।

(द्वे पटलप्रान्ते गृहाच्छादनस्य)

वलीक-नीध्रे पटल-प्रान्ते

पाटन छाने के सामान के २ नाम—(१) वलीक (२) नीध्र । इनमें (१) नपुंसक में (पुँल्लिङ्ग में

भी) (२) नपुंसक में होता है । कोई-कोई 'पटल' और 'प्रान्त' इनको मिलाकर चार नाम बतलाते हैं।

(द्वे छादनस्य)

अथ पटलं छदिः ॥१४॥

छानी-छप्पर के २ नाम—(१) पटल (२) छदि । इनमें (१) नपुंसक, (२) सान्त स्त्रीलिङ्ग है ॥१४॥

(द्वे कुड्येषु छादनार्थं दत्तस्य वक्रकाष्ठस्य)

गोपानसी तु वलभी छादने वक्रदारुणि ।

छज्जा के २ नाम-(१) गोपानसी (२) वलभी ।

(द्वे सौधादौ काष्ठादिरचितपक्षिगृहस्य)

कपोतपालिकायां तु विटङ्कं पुं-नपुंसकम्॥१५॥

कबूतर के गञ्ज-दरबा के २ नाम—(१) कपोतपालिका (२) विटङ्क । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में हैं ॥१५॥

(त्रीणि द्वारस्य)

स्त्री द्वार्द्वारं प्रतीहारः

दरवाजे के ३ नाम—(१) द्वार् (२) द्वार (३) प्रतीहार । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुंसक (३) पुंल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे वेद्याः, प्राङ्गणादिषु कृतस्योपवेशस्थानस्य वा)

स्याद्वितर्दिस्तु वेदिका ।

वेदी या आंगन में बैठने के लिए बनाये गये चबूतरे के २ नाम—(१) वितर्दि (२) वेदिका । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे द्वारबाह्यभागस्य)

तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारम्

घर के बाहर के फाटक के २ नाम—(१) तोरण (२) बहिर्द्वार । इनमें (१) पुं-नपुंसक (२) नपुंसक होता है ।

(द्वे नगरद्वारस्य)

पुरद्वारं तु गोपुरम् ॥१६॥

नगर के फाटक के २ नाम—(१) पुरद्वार (२) गोपुर ॥१६॥

(एकं नगरद्वारे सुखेनावतरणार्थं कृतस्य क्रमनिम्नस्य मृत्कूटस्य)

कूटं पूर्द्वारि यद्धस्तिनखस्तस्मिन्

नगर द्वार में सुख से आने जाने के लिए बनी हुई मिट्टी की सीढ़ी का नाम—(१) हस्तिनख ।

(द्वे कपाटस्य)

अथ त्रिषु ।

कपाटमररं तुल्ये

केवाड़ के २ नाम—(१) कपाट (२) अरर । ये दोनों शब्द समान अर्थ वाले और तीनों लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं ।

(एकं कपाटरोधनकाष्ठस्य)

तद्विष्कम्भोऽर्गलं न ना ॥१७॥

अगरी, बेंवड़ा, साँकल, सिटकिनी का नाम—(१) अर्गल । यह पुँल्लिङ्ग में नहीं होता; किन्तु स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक में होता है ॥१७॥

(द्वे पाषाणादिकृतसौधाद्यारोहणमार्गस्य)

आरोहणं स्यात्सोपानम्

पत्थर की सीढ़ी के २ नाम—(१) आरोहण (२) सोपान ।

(द्वे काष्ठादिकृतारोहणमार्गस्य)

निश्रेणिस्त्वधिरोहिणी ।

काठ की सीढ़ी के २ नाम—(१) निश्रेणि (२) अधिरोहिणी ।

(द्वे सम्मार्जन्याः)

सम्मार्जनी शोधनी स्यात्

बढ़नी, झाड़ू के २ नाम—(१) सम्मार्जनी (२) शोधनी ।

(द्वे अवकरस्य)

संकरोऽवकरस्तथा ॥१८॥

क्षिप्ते

कूड़ा, करकट के २ नाम—(१) संकर (२) अवकर ॥१८॥

(द्वे निर्गमनप्रवेशमार्गस्य)

मुखं निःसरणम्

निकलने के द्वार के २ नाम—(१) मुख (२) निःसरण ।

(द्वे समीचीनवासस्थानस्य)

सन्निवेशो निकर्षणः ।

अच्छे वासस्थान के २ नाम—(१) सन्निवेश (२) निकर्षण।

(द्वे ग्रामस्य)

समौ संवसथ-ग्रामौ

गाँव के २ नाम—(१) संवसथ (२) ग्राम। ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे गृहरचनावच्छिन्नभूमेः)

वेश्मभूर्वास्तुरस्त्रियाम्।

घर बनाने लायक जमीन के २ नाम—(१) वेश्मभू (२) वास्तु। इनमें (१) स्त्री लिङ्ग और (२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक होते हैं ॥१६॥

(द्वे ग्रामादिसमीपदेशस्य)

ग्रामान्त उपशल्यं स्यात्

गाँव के पास खुली जगह या पड़ोस के २ नाम—(१) ग्रामान्त (२) उपशल्य।

(द्वे सीमायाः)

सीम-सीमे स्त्रियामुभौ।

गाँव की सीमा, डाँड़ के २ नाम—(१) सीमन् (२) सीमा। ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे आभीरग्रामस्य)

घोष आभीरपल्ली स्यात्

अहीराना या अहीरों के गाँव के २ नाम—(१) घोष (२) आभीरपल्ली।

(द्वे भिल्लग्रामस्य)

पक्कणः शवरालयः ॥२०॥

भीलों मुसहरों-जंगलियों के गाँव के २ नाम—(१) पक्कण (२) शवरालय ॥२०॥

(इति पुरवर्गः २)

अथ शैलवर्गः ३.

(त्रयोदश पर्वतसामान्यस्य)

महीध्रे शिखरि-क्ष्माभृदहार्य-धर-पर्वताः।
अद्रि-गोत्र-गिरि-ग्रावाऽचल-शैल-शिलोच्चयाः॥१

पहाड़ के १३ नाम—(१) महीध्र (२) शिखरिन् (३) क्ष्माभृत् (४) अहार्य (५) धर (६) पर्वत (७) अद्रि (८) गोत्र (९) गिरि (१०) ग्रावन् (११) अचल (१२) शैल (१३) शिलोच्चय ॥१॥

(द्वे लोकालोकस्य)

लोकालोकश्चक्रवालः

पृथ्वी को घेरे हुए पर्वत के २ नाम—(१) लोकालोक (२) चक्रवाल।

(द्वे त्रिकूटाचलस्य)

त्रिकूटस्त्रिककुत्समौ।

जिस पर्वत पर लङ्का बसी हुई है उस त्रिकूट पर्वत के ३ नाम—(१) त्रिकूट (२) त्रिककुद्। ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे अस्ताचलस्य)

अस्तस्तु चरमक्ष्माभृत्

अस्ताचल के २ नाम—(१) अस्त (२) चरमक्ष्माभृत्। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे उदयाचलस्य)

उदयः पूर्वपर्वतः ॥२॥

उदयाचल के २ नाम—(१) उदय (२) पूर्वपर्वत ॥२॥

(सप्त पर्वतविशेषाणाम्)

हिमवान्निषधो विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः।
गन्धमादनमन्ये च हेमकूटादयो नगाः ॥३॥

[1]हिमालय पहाड़ (जिसका विस्तार ७५० कोस है और श्रीमद्भागवत के कथनानुसार १०,००० योजन ऊँचा है, और जिसकी एक चोटी, गौरीशङ्कर, १९३३४ हाथ ऊँची है) का नाम—(१) हिमवत्।

इलावृत्त वर्ष के दक्षिण हरिवर्ष के सीमापर्वत का नाम—(१) निषध।

विन्ध्याचल (गुजरात से लेकर पूर्व की ओर ३०० कोस फैले हुए पर्वत) का नाम—(१) विन्ध्य।

केतुमाल वर्ष के सीमापर्वत (जो इलावृतवर्ष

---

१ अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः। पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

के पूर्व में स्थित है) का नाम—(१) माल्यवत् ।

विन्ध्याचल की पश्चिमी पर्वतमाला (जिसमें अरावली भी है और जो नर्मदा के मुहाने से खंबात की खाड़ी तक फैली हुई है) का नाम—(१) पारियात्रक ।

भद्राश्ववर्ष (जो इलावृत वर्ष के पश्चिम में है) के सीमापर्वत और सुमेरुपर्वत (जिसे आजकल रुद्रहिमालय कहते हैं, यही गंगा की प्रादुर्भावस्थली गंगोत्री नामक स्थान है) के एक भाग का नाम—(१) गन्धमादन (इस पर्वत की श्रेणी बदरिकाश्रम से उत्तर-पूर्व की ओर कुछ ही हटकर आरम्भ होती है)।

किंपुरुषवर्ष (हिमालय के उत्तर स्थित) के सीमापर्वत का नाम—(१) हेमकूट । आदि[२] ।

(सप्त पाषाणस्य)

पाषाण-प्रस्तर-ग्रावोपलाश्मानः शिला दृषत् ।

पत्थरके ७ नाम—(१) पाषाण (२) प्रस्तर (३) ग्रावन् (४) उपल (५) अश्मन् (६) शिला (७) दृषद् । इनमें (१–५) पुँलिङ्ग (६–७) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(त्रीणि शिखरस्य)

कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गम्

पहाड़ की चोटी के ३ नाम—(१) कूट (२) शिखर (३) शृङ्ग । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग (२-३) नपुंसक हैं ।

(त्रीणि पर्वतात्पतनस्थानस्य)

प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥४॥

बीहड़ या पहाड़ से पानी गिरने के स्थान के ३ नाम—(१) प्रपात (२) अतट (३) भृगु ॥४॥

(एकं पर्वतमध्यभागस्य मेखलाख्यस्य)

कटकोऽस्त्री नितम्बोऽद्रेः

पहाड़ के मध्य भाग का नाम—(१) कटक । यह पुं-नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

(त्रीणि पर्वतसमभूभागस्य)

स्नुः प्रस्थः सानुरस्त्रियाम् ।

पहाड़ की समतल भूमि के ३ नाम—(१) स्नु (२) प्रस्थ (३) सानु । ये (१–३) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे यत्र पानीयं निपत्य बहुली भवति तस्य स्थानस्य)

उत्सः प्रस्रवणम्

जहाँ टपक कर पानी एकत्रा हो जाता है उस जगह के २ नाम—(१) उत्स (२) प्रस्रवण ।

(द्वे उत्सान्निर्गतजलप्रवाहस्य । पञ्चापि पर्याया इत्यन्ये)

वारिप्रवाहो निर्झरो झरः ॥१५॥

झरना के ३ नाम—(१) वारिप्रवाह (२) निर्झर (३) झर । [कोई 'उत्स' 'प्रस्रवण' आदि को इन्हीं शब्दों का पर्यायवाची मानते हैं] ॥१५॥

(द्वे कृत्रिमगृहाकारगिरिविवरस्य)

दरी तु कन्दरो वा स्त्री

बनाई हुई गुफा के २ नाम—(१) दरी (२) कन्दर । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग और (२) पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त 'कन्दरा' स्त्रीलिङ्ग में भी होता है ।

(द्वे अकृत्रिमगिरिबिलस्य)

देवखातबिले गुहा । गह्वरम्

देवताओं द्वारा खोदे गए बिल (बिना बनाई गुफा) के २ नाम—(१) गुहा (२) गह्वर ।

(एकं गिरेः पतितस्थूलपाषाणस्य)

गण्डशैलास्तु च्युताः स्थूलोपला गिरेः ॥६॥

पहाड़ से गिरे हुए पत्थर की बड़ी २ चट्टान के नाम—(१) गण्डशैल ॥६॥

---

२ आदिना मलय-चित्रकूट-मन्दरादयः ।
रजताद्रिस्तु कैलास इन्द्रकीलस्तु मन्दरः ।
अपि किष्किन्ध-किष्किन्ध्यौ वानराणां गिरौ द्वयम ॥
मलयप्रशंसा—
किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा यत्राश्रिता हि तरवस्तरवस्त एव । मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण शाखोट-निम्बकुटजा अपि चन्दनानि ।

१ दन्तकास्तु बहिस्तिर्यक्प्रदेशान्निर्गता गिरेः ।
पहाड़ के तिरछे प्रदेश से बाहर निकले हुए शूल के आकार के पत्थरों का नाम—(१) दन्तकाः ।

(द्वे रत्नाद्युत्पत्तिस्थानस्य)
खनिः स्त्रियामाकरः स्यात्
खान के २ नाम—(१) खान (२) आकर । इनमें पहला स्त्रीलिङ्ग; और दूसरा पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे पर्वतसमीपस्थाल्पपर्वतानाम्)
पादाः प्रत्यन्तपर्वताः ।
पहाड़ के समीप छोटी-छोटी पहाड़ियों के २ नाम—(१) पाद (२) प्रत्यन्तपर्वत ।

(एकं पर्वतासन्नभूमेः)
उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिः
पहाड़ के नीचे की भूमि का नाम—(१) उपत्यका ।

(एकं पर्वतोर्ध्वभूमेः)
ऊर्ध्वमधित्यका ॥७॥
पहाड़ के ऊपर की जमीन का नाम—(१) अधित्यका ॥७॥

(एकं मनःशिलादिधातोः)
धातुर्मनःशिलाद्यद्रेः[१]
पर्वत की—मैनसिल, हरताल, सुवर्ण, ताँबा, चाँदी, गेरु, अंजन, काँसी, सीसा, लोहा, हिंगलू, गन्धक, अभ्रक आदि–वस्तुओं का नाम–(१)धातु ।

(एकं धातुविशेषस्य)
गैरिकं तु विशेषतः ।
विशेष कर (१) 'गैरिक' (गेरु) धातु है ।

(द्वे लतादिभिः पिहितस्थानस्य)
निकुञ्ज-कुञ्जौ वा क्लीबे लतादिपिहितोदरे ८
लताओं से घिरे हुए स्थान (कुञ्ज) के २ नाम—(१) निकुञ्ज (२) कुञ्ज । ये दोनों शब्द पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसक में भी होते हैं ॥८॥

(इति शैलवर्गः ३)

अथ वनौषधिवर्गः ४

(षट् वनस्य)
अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।
जङ्गल के ६ नाम—(१) अटवी (२) अरण्य (३) विपिन (४) गहन (५) कानन (६) वन । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२–६) नपुंसक हैं ।

(द्वे महतो वनस्य)
महारण्यमरण्यानी
भारी जङ्गल के २ नाम—(१) महारण्य (२) अरण्यानी । इनमें (१) नपुंसक और (२) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे गृहसमीपोपवनस्य)
गृहारामास्तु निष्कुटाः ॥१॥
घर के नजदीक के बगीचे के २ नाम—(१) गृहाराम (२) निष्कुट ॥१॥

(द्वे कृत्रिमवृक्षसमूहस्य)
आरामः स्यादुपवनं कृत्रिमं वनमेव यत् ।
बाग के २ नाम—(१) आराम (२) उपवन ।

(एकं मन्त्रिणो वेश्यायाश्च गृहस्थोपवनस्य)
अमात्यगणिकागेहोपवने वृक्षवाटिका ॥२॥
राजमन्त्री व गणिका के बाग का नाम—(१) वृक्षवाटिका ॥२॥

(द्वे राज्ञः सर्वोपभोग्यवनस्य)
पुमानाक्रीड उद्यानं राज्ञः साधारणं वनम् ।
राजा का साधारण बाग (जहाँ मन्त्रियों, गणिकाओं या विदूषकों आदि के साथ विविध प्रकार के खेल खेले या द्यूतादि से मनोविनोद करे उस बगीचे) के २ नाम—(१) आक्रीड (२) उद्यान । (१) पुँल्लिङ्ग (अमरमाला के अनुसार नपुंसक में भी) और (२) नपुंसक है ।

---

१ आदिना हरिताल-स्वर्णताम्रादिग्रहः । तदुक्तम्—
सुवर्ण-रौप्य-ताम्राणि हरितालं मनःशिला ।
गैरिकाञ्जन-कासी-सीस-लोहा-सहिङ्गुलाः ।
गन्धकोऽभ्रक इत्याद्या धातवो गिरिसम्भवाः ।
इनकी उत्पत्ति के विषय में वैद्यक ग्रन्थों में लिखा है कि
हरितालं हरेर्वीर्यं लक्ष्मीवीर्यं मनःशिला ।
पारदं शिववीर्यं स्याद्गन्धकं पार्वतीरजः ॥
हरताल और मैनसिल में इतना अन्तर है कि हरताल अत्यन्त पीत और मैनसिल रक्त वर्ण की होती है ।

(एकं यत्र स-स्त्रीको राजा क्रीडति तस्य वनस्य)

स्यादेतदेव प्रमदवनमन्तःपुरोचितम् ॥३॥

रनिवास की रानियों के साथ विविध प्रकार के मनोरंजन जिस बाग़ में किए जायँ उसका नाम—(१) प्रमदवन ॥३॥

(पञ्च सान्तरपंक्तेः)

वीथ्यालिरावलः पंक्तिः श्रेणी

पंक्ति या पाँति के ५ नाम—(१) वीथी (२) आलि (३) अवलि (४) पंक्ति (५) श्रेणी।

(द्वे निरन्तरपंक्त्यपंक्तिसाधारणायाः)

लेखास्तु राजयः।

लकीर या रेखा के २ नाम—(१) लेखा (२) राजि। ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(एकं वनसमूहस्य)

वन्या वनसमूहे स्याद्

वन-समूह का नाम—(१) वन्या।

(द्वे नूतनाङ्कुरस्य)

अङ्कुरोऽभिनवोद्भिदि ॥४॥

नया अँखुआ का नाम—(१) अंकुर ॥४॥

(त्रयोदश वृक्षस्य)

वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः।
अनोकहः कुटः शालः, पलाशी द्रु-द्रुमागमाः॥५॥

पेड़ के १३ नाम—(१) वृक्ष (२) महीरुह (३) शाखिन् (४) विटपिन् (५) पादप (६) तरु (७) अनोकह (८) कुट (९) शाल (१०) पलाशिन् (११) द्रु (१२) द्रुम (१३) अगम ॥५॥

(एकं पुष्पाज्जातफलोपलक्षितवृक्षस्य)

वानस्पत्यः फलः पुष्पात्

फूल कर फलने वाले (आम, जामुन आदि) पेड़ों का नाम—(१) वानस्पत्य।[१]

(एकं पनसोदुम्बरादेः, द्रुममात्रस्य वा)

तैरपुष्पाद्वनस्पतिः।

बिना फूले फलनेवाले (कटहल, गूलर आदि) पेड़ या वृक्षमात्र का नाम—(१) वनस्पति।

(एकं व्रीहियवादेः)

ओषध्यः फलपाकान्ताः स्युः

जो फल आने के बाद सूख जाते हैं (जैसे धान, जौ) उनका नाम—(१) ओषधी।

(द्वे यथाकालं फलधरस्य)

अवन्ध्यः फलेग्रहिः ॥६॥

समय के अनुसार फलनेवाले पेड़ों के २ नाम—(१) अवन्ध्य (२) फलेग्रहि। ये (१-२) पुं०-स्त्री०-नपुंसक में होते हैं ॥६॥

(त्रीणि ऋतावपि फलरहितस्य)

वन्ध्योऽफलोऽवकेशी च

ऋतु में भी फल रहित अर्थात् न फलने वाले पेड़ों के ३ नाम—(१) अवन्ध्य (२) अफल (३) अवकेशिन्। (१-३) पुं-स्त्री-नपुं०लिङ्ग में होते हैं।

(त्रीणि फलसहितवृक्षस्य)

फलवान्फलिनः फली।

फलयुक्त पेड़ के ३ नाम—(१) फलवत् (२) फलिन (३) फलिन्। ये (१-३) पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग में होते हैं।

(अष्टौ प्रफुल्लितवृक्षस्य)

प्रफुल्लोत्फुल्ल-संफुल्ल-व्याकोश-विकच-स्फुटाः।
फुल्लश्चैते विकसिते

फूले हुए पेड़ों के ८ नाम—(१) प्रफुल्ल (२) उत्फुल्ल (३) संफुल्ल (४) व्याकोश (५) विकच (६) स्फुट (७) फुल्ल (८) विकसित। ये (१-८) पुं-स्त्री-नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥७॥

---

१ वनस्पतिर्वीरुधश्च वानस्पत्यस्तथौषधिः।
फलैर्वनस्पतिः पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि॥
ओषध्यः फलपाकान्ताः प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः॥

वैद्यक ग्रन्थों के अनुसार औद्भिद (पृथ्वी को फोड़ कर निकलनेवाले) द्रव्य की चार जाति है—(१) वनस्पति (२) वीरुध (३) वानस्पत्य (४) औषधि।

जिन वृक्षों पर बिना फूल के ही फल लगे उन्हें **वनस्पति** कहते हैं। जिन वृक्षों पर फूल लगकर फल लगते हैं उन्हें **वानस्पत्य** कहते हैं। जो फल लगने के अनन्तर सूख जाते हैं उन्हें **औषधि** कहते हैं। जिनकी बेलि होती है उन्हें **वीरुध** कहते हैं।

स्युरबन्ध्यादयस्त्रिषु ।

ये 'अबन्ध्य' आदि (श्लोक ६) से लेकर 'विकसित' (श्लोक ७) तक के शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

(त्रीणि शाखापत्ररहिततरोः)

स्थाणुर्वा ना ध्रुवः शङ्कुः

ठूँठ (डाली और पत्ते से हीन) पेड़ के ३ नाम—(१) स्थाणु (२) ध्रुव (३) शंकु । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, नपुंसक में और शेष (२–३) पुँल्लिग में होते हैं ।

(एकं सूक्ष्मशाखामूलस्य शाखोटकादेः)

ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥८॥

छोटी २ डाली और छोटी २ जड़ वाले पौधा [जैसे मधुयष्टिका (मुलेठी), कण्टकारी (कटेरी)] का नाम—(१) क्षुप ॥८॥

(द्वे स्कन्धरहितस्य)

अप्रकाण्डे स्तम्ब-गुल्मौ

तना रहित पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले [जैसे जटामांसी (बालछड़), आर्द्रक (अदरख)] के २ नाम—(१) स्तम्ब (२) गुल्म ।

(त्रीणि लतामात्रस्य)

वल्ली तु व्रततिर्लता ।

लता बेलि [जैसे नागवल्ली (पान), गुडूची (गिलोय)] के ३ नाम—(१) वल्ली (२) व्रतति (३) लता ।

(त्रीणि शाखादिभिर्विस्तृतलतायाः)

लता प्रतानिनी वीरुद्गुल्मिन्युलप इत्यपि॥९॥

शाखा आदि से फैली हुई लता के ३ नाम—(१) वीरुध् (२) गुल्मिनी (३) उलप । इनमें (१–२) स्त्रीलिङ्ग और (३) पुँल्लिङ्ग हैं ॥९॥

(त्रीणि वृक्षादिदैर्ध्यस्य)

नगाद्यारोह उच्छ्राय उत्सेधश्चोच्छ्रयश्च सः ।

पेड़ और पहाड़ आदि की ऊँचाई के ३ नाम—(१) उच्छ्राय (२) उत्सेध (३) उच्छ्रय ।

(द्वे तरोर्मूलमारभ्य शाखापर्यन्तभागस्य)

अस्त्री प्रकाण्डः स्कन्धः

स्यान्मूलाच्छाखावधिस्तरोः ॥१०॥

तना (पेड़ की जड़ से लेकर शाखा पर्यन्त भाग) के २ नाम—(१) प्रकाण्ड (२) स्कन्ध । इनमें (१ ला) पुँल्लिग और नपुंसक में होता है; (२) पुँल्लिङ्ग है ॥१०॥

(द्वे शाखायाः)

समे शाखा-लते

डाली के २ नाम—(१) शाखा (२) लता ।

(द्वे प्रधानशाखायाः)

स्कन्धशाखा-शाले

बड़ी डाली के २ नाम—(१) स्कन्धशाखा (२) शाला ।

(द्वे तरुमूलस्य)

शिफा-जटे ।

जड़ के २ नाम—(१) शिफा (२) जटा ।

(एकं शाखामूलस्य)

शाखाशिफाऽवरोहः स्यात्

डाली की जड़ का नाम—(१) अवरोह ।

(एकं वृक्षाग्रगामिन्या लतायाः)

मूलाच्चाग्रं गता लता ॥११॥

पेड़ की जड़ से लेकर आगे या ऊपर की ओर गयी हुई लता का नाम—(१) अवरोह ॥११॥

(त्रीणि शिखरस्य)

शिरोऽग्रं शिखरं वा ना

टहनी या पेड़ के ऊपरी हिस्से के ३ नाम—(१) शिरस् (२) अग्र (३) शिखर । इनमें (१–२) नपुंसक, (३) नपुंसक और पुंल्लिङ्ग में होता है ।

(त्रीणि वृक्षादेर्मूलमात्रस्य)

मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामकः ।

पेड़ के जड़ मात्र के ३ नाम—(१) मूल (२) बुध्न (३) अंघ्रिनामक । इनमें (१) नपुंसक, (२–३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे वृक्षादेः स्थिरांशस्य)

सारो मज्जा नरि

गोंद या गूदा के २ नाम—(१) सार (२) मज्जन् । ये दोनों शब्द नर (पुं) लिङ्ग में होते

हैं। कहीं कहीं 'मज्जा' का टाबन्त (स्त्रीलिङ्ग) भी किया गया है।

(त्रीणि त्वचः)

त्वक् स्त्री वल्कं वल्कलमस्त्रियाम् ॥१२॥

पेड़ की छाल, छिल्का, बोकला के ३ नाम—(१) त्वच् (२) वल्क (३) वल्कल। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२-३) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होते हैं ॥१२॥

(द्वे काष्ठमात्रस्य)

काष्ठं दारु

काठ के २ नाम--(१) काष्ठ (२) दारु। इनमें (१) नपुंसक (२) नपुंसक और पुंल्लिङ्ग में होता है।

(त्रीण्यग्निसन्दीपनतृणकाष्ठादेः)

इन्धनं त्वेध इध्मम्

ईंधन के ३ नाम—(१) इन्धन (२) एधस् (३) इध्म। ये (१-३) नपुंसक लिङ्ग में हैं।

(द्वे यागादौ हूयमानस्य काष्ठस्य)

एधः समित् स्त्रियाम्।

यज्ञादि होम के निमित्त समिध आदि के २ नाम—(१) एध (२) समिध्। इनमें (१) अदन्त पुँल्लिङ्ग, और (२) धान्त स्त्रीलिङ्ग है।

(द्वे वृक्षगतविवरस्य)

निष्कुहः कोटरं वा ना

खोंखला के २ नाम—(१) निष्कुह (२) कोटर। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२) नपुंसक और पुँल्लिङ्ग में होता है।

(द्वे तुलस्यादेरभिनवोद्भिदि 'बौर' इति ख्यातस्य)

वल्लरिर्मञ्जरिः स्त्रियौ ॥१३॥

बौर के २ नाम—(१) वल्लरि (२) मञ्जरि। ये स्त्रीलिंग हैं ॥ १३ ॥

(षट् पत्रस्य)

पत्रं पलाशं छदनं दलं पर्णं छदः पुमान्।

पत्ता के ६ नाम—(१) पत्र (२) पलाश (३) छदन (४) दल (५) पर्ण (६) छद। इनमें (१-५) नपुंसक और (६) अदन्त पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे नवपत्रस्य)

पल्लवोऽस्त्री किसलयम्

नये पत्ते के २ नाम—(१) पल्लव (२) किसलय। (१-२) पुं-नपुंसकलिंग में होते हैं।

(द्वे शाखादिविस्तारस्य)

विस्तारो विटपोऽस्त्रियाम् ॥१४॥

डार के फैलने के २ नाम—(१) विस्तार (२) विटप। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) पुं-नपुंसक में होता है ॥ १४ ॥

(द्वे फलस्य)

वृक्षादीनां फलं सस्यम्

वृक्षादि के फल के २ नाम—(१) फल। (२) सस्य।

(द्वे पुष्पादिमूलाधारस्य)

वृन्तं प्रसवबन्धनम्।

फूल के आधार स्वरूप जड़ के २ नाम—(१) वृन्त (२) प्रसवबन्धन।

(एकमपक्वफलस्य)

आमे फले शलाटुः स्यात्

कच्चे फल का नाम—(१) शलाटु। यह पुं-स्त्री-नपुंसक में होता है।

(एकं शुष्कफलस्य)

शुष्के वानम्

सूखे फल का नाम—(१) वान। यह शब्द पुं०-स्त्री-नपुंसक में होता है।

उभे त्रिषु ॥१५॥

दोनों (शलाटु, वान) तीनों लिङ्ग में होते हैं ॥ १५ ॥

(द्वे नवकलिकायाः)

क्षारको जालकं क्लीबे

खिली हुई नई कली के २ नाम—(१) क्षारक (२) जालक। इनमें 'जालक' शब्द नपुंसक ही में होता है।

(द्वे अविकसितकलिकायाः)

कलिका कोरकः पुमान्।

बिना खिली हुई कली के २ नाम—(१) कलिका (२) कोरक। (१) स्त्रीलिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे कलिकादिभिराकीर्णस्य पल्लवग्रन्थेः)

स्याद्गुच्छकस्तु स्तबकः

फूल के गुच्छे के २ नाम—(१) गुच्छक (२) स्तवक।

(द्वे ईषद्विकसितकलिकायाः)

कुड्मलो मुकुलोऽस्त्रियाम् ।१६॥

फूलती हुई या अधखिली कली के २ नाम—(१) कुड्मल (२) मुकुल। ये (१–२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होते हैं ॥१६॥

(पञ्च नामानि पुष्पस्य)

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ।

फूल के ५ नाम—(१) सुमनस् (२) पुष्प (३) प्रसून (४) कुसुम (५) सुम। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, (२–५) नपुंसक लिङ्ग हैं।

(द्वे पुष्पमधोः)

मकरन्दः पुष्परसः

फूल के रस के २ नाम—(१) मकरन्द (२) पुष्परस।

(द्वे पुष्परेणोः)

परागः सुमनोरजः ॥ १७ ॥

फूल की धूलि के २ नाम—(१) पराग (२) सुमनोरजस्। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) नपुंसक है ॥१७॥

द्विहीनं प्रसवे सर्वम्

आगे जो अश्वत्थ, कपित्थ आदि के प्रसव (फूल, फल, मूल) कहे जायँगे वे शब्द स्त्री-लिङ्ग और पुँल्लिङ्ग से वर्जित केवल नपुंसक लिङ्ग में होंगे (यथा चम्पकं, आम्रं, सूरणम्)

हरीतक्यादयः स्त्रियाम् ।

किन्तु हरीतकी (कोशातकी, कर्कटी, द्राक्षा) आदि शब्द प्रसव (फूल, फल, मूल) में भी स्त्रीलिङ्ग होंगे (यथा हरीतकी का फल हरीतकी)।

(अश्वत्थादिफलानां पृथक्पृथगेकैकम्)

आश्वत्थ-वैणव-प्लाक्ष-नैयग्रोधैङ्गुदं फले ॥१८॥ बार्हतं च

पीपल के फल का नाम–(१) आश्वत्थ (नपु०) बाँस के फल का नाम—(१) वैणव (नपु०) पाकड़ के फल का नाम—(१) प्लाक्ष (नपु०) बड़, बरगद के फल का नाम—(१) नैयग्रोध (नपु०) हिंगोट के फल का नाम—(१) ऐङ्गुद (नपु०) भटकटैया के फल का नाम—(१) बार्हत (नपु०) ॥१८॥

(त्रीणि जम्बूफलस्य)

फले जम्ब्वा जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ।

जामुन के फल के ३ नाम—(१) जम्बू (२) जम्बु (३) जाम्बव। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२–३) नपुंसक हैं।

पुष्पे जातीप्रभृतयः स्वलिङ्गाः

जाती (जाही), यूथिका (जूही), मल्लिका (मोतिया) आदि शब्द फूल के अर्थ में अपने ही लिङ्ग में होते हैं (जैसे 'जात्याः पुष्पं जातीः' जाती का फूल जाती, स्त्रीलिङ्ग) नपुंसक में नहीं।

व्रीहयः फले ॥१९॥

धान (उड़द, मूँग) आदि भी फलार्थक में अपने हीं लिङ्ग में होते हैं (यथा—यवानां फलानि यवाः, माषाणां फलानि माषाः, मुद्गानां फलानि मुद्गाः) ॥ १९ ॥

विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि

विदारी, शालपर्णी आदि जड़ के अर्थ में भी अपने लिङ्ग में होते हैं (यथा विदार्या मूलं विदारी)

पुष्पे क्लीबेऽपि पाटला ।

पाटला का नाम फूल के अर्थ में नपुंसक लिङ्ग में होता है (यथा—पाटलायाः पुष्पं पाटलम्) ।

(पञ्च पिप्पलवृक्षस्य)

बोधिद्रुमश्चलदलः पिप्पलः कुञ्जराशनः ॥२०॥ अश्वत्थे

[१]पीपल के पेड़ के ५ नाम--(१) बोधिद्रुम (२) चलदल (३) पिप्पल (४) कुञ्जराशन (५) अश्वत्थ ॥२०॥

(सप्त कपित्थस्य)

अथ कपित्थे स्युर्दधित्थ-ग्राहि-मन्मथाः ।
तस्मिन्दधिफलः पुष्पफल-दन्तशठावपि॥२१॥

[२]कैथ के ७ नाम--(१) कपित्थ (२) दधित्थ (३) ग्राहिन् (४) मन्मथ (५) दधिफल (६) पुष्पफल (७) दन्तशठ ॥२१॥

(चत्वारि उदुम्बरस्य)

उदुम्बरो जन्तुफलो यज्ञाङ्गो हेमदुग्धकः ।

गूलर के ४ नाम—(१) उदुम्बर (२) जन्तुफल (३) यज्ञाङ्ग (४) हेमदुग्धक ।

(चत्वारि कोविदारस्य)

कोविदारे चमरिकः कुद्दालो युगपत्रकः ॥२२॥

कचनार[३] के ४ नाम—(१) कोविदार (२) चमरिक (३) कुद्दाल (४) युगपत्रक ॥२२॥

(चत्वारि सप्तपर्णस्य)

सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो विषमच्छदः ।

छतिवन[४] के ४ नाम—(१) सप्तपर्ण (२) विशालत्वच् (३) शारद (४) विषमच्छद ।

(अष्टावारग्वधस्य)

आरग्वधे राजवृक्ष-शम्याक-चतुरङ्गुलाः ॥२३॥
आरेवत-व्याधिघात-कृतमाल-सुवर्णकाः ।

अमलतास[५] के ८ नाम—(१) आरग्वध (२) राजवृक्ष (३) शम्याक [शम्पाक, सम्पाक] (४) चतुरङ्गुल (५) आरेवत (६) व्याधिघात (७) कृतमाल (८) सुवर्णक ॥२३॥

(पञ्च जम्बीरस्य)

स्युर्जम्बीरे दन्तशठ-जम्भ-जम्भीर-जम्भलाः२४

जँमीरी[६] नीबू के ५ नाम—(१) जम्बीर (२) दन्तशठ (३) जम्भ (४) जम्भीर (५) जम्भल ॥२४॥

(पञ्च वरणस्य)

वरुणो वरणः सेतुस्तिक्तशाकः कुमारकः ।

बरना[७] पेड़ के ५ नाम—(१) वरुण (२) वरण (३) सेतु (४) तिक्तशाक (५) कुमारक ।

(पञ्च नागकेसरस्य)

पुन्नागे पुरुषस्तुङ्गः केसरो देववल्लभः ॥२५॥

नागकेशर के ५ नाम—(१) पुन्नाग (२) पुरुष (३) तुङ्ग (४) केसर (५) देववल्लभ ॥२५॥

(चत्वारि निम्बतरोः)

पारिभद्रे निम्बतरुर्मन्दारः पारिजातकः ।

---

१ पीपल के पेड़ भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में पाये जाते हैं। इसी के नीचे बुद्ध गया में गौतम बुद्धको बुद्धत्व को प्राप्ति हुई थी। इसी लिये इसे 'बोधिद्रुम' कहते हैं। इसके गोल और अनीदार पत्ते सदैव हिलते रहते हैं। इसी कारण इसे 'चलदल' कहते हैं।

२ कैथ के पेड़ समस्त भारत में पाये जाते हैं। वर्षा ऋतु में इसकी कली खिलती है और शीत ऋतु में फल पक जाते हैं। इसके पत्ते छोटे और चिकने होते हैं। इसके फल सफ़ेद होते हैं और आकार में बेल से छोटे होते हैं। इसके फूल छोटे और सफ़ेद रंग के होते हैं। लोग कहते हैं कि हाथी पूरा कैथ बिना चबाए निगल जाता है और कुछ समय बाद उसकी लीद के साथ पूरा कैथ निकलता है, जिसमें गूदे के स्थान में लीद भरी होती है। इसीलिए 'गजकपित्थ' न्याय की सृष्टि हुई।

३ कचनार लाल और सफेद दो प्रकार का होता है। यह पेड़ जंगल और पहाड़ों में अधिक होता है। एक-एक डाली में दो-दो पत्ते होते हैं।

४ छतिवन के पत्ते सेमर के समान होते हैं; और एक-एक डाली में सात २ पत्ते लगते हैं।

५ इसका बड़ा पेड़ होता है। पत्ते लाल चन्दन के पत्तों की भाँति होते हैं। फूल पीले, तरवट, अमले की तरह होते हैं। फली गोल और हाथ-डेढ़ हाथ लम्बी होती है।

६ इसका पेड़ बड़ा और कँटीला होता है। बसन्त ऋतु में इसमें फूल लगते हैं और बरसात में फल दिखलाई पड़ते हैं जो कार्तिक के उपरान्त खाने योग्य होते हैं।

७ बरना का बड़ा पेड़ होता है। पत्ते बेल के समान तीन-तीन लगते हैं। फल बेल के समान गोल और सुपारी के आकार का होता है। फूल गुलतर्रे की तरह होता है।

फरहद[1] के ४ नाम—(१) पारिभद्र (२) निम्बतरु (३) मन्दार (४) पारिजातक ।

(सप्त तिनिशस्य)

तिनिशे स्यन्दनो नेमी रथद्रुरतिमुक्तकः ॥२६॥ वञ्जुलश्चित्रकृच्च

तिरिच्छ[2] के ७ नाम—(१) तिनिश (२) स्यन्दन (३) नेमि (४) रथद्रु (५) अतिमुक्तक (६) वञ्जुल (७) चित्रकृत् ॥२६॥

(त्रीणि आम्रातकस्य)

अथ द्वौ पीतन-कपीतनौ । आम्रातके

अम्बाड़ा[3] के ३ नाम—(१) पीतन (२) कपीतन (३) आम्रातक ।

(पञ्च मधूकस्य)

मधूके तु गुडपुष्प-मधुद्रुमौ ॥२७॥ वानप्रस्थ-मधुष्ठीलौ

महुआ[4] के ५ नाम—(१) मधूक (२) गुडपुष्प (३) मधुद्रम (४) वानप्रस्थ (५) मधुष्ठील ॥२७॥

(एकं जलजमधूकस्य)

जलजेऽत्र मधूलकः ।

जल महुआ का नाम—(१) मधूलक ।

(त्रीणि गुर्जरदेशे 'पीलु' इति ख्यातस्य)

पीलौ गुडफलः स्रंसी

पीलु[5] के ३ नाम—(१) पीलु (२) गुडफल (३) स्रंसिन् ।

(द्वे पर्वतपीलोः)

तस्मिंस्तु गिरिसम्भवे ॥२८॥ अक्षोट-कन्दरालौ द्वौ

अखरोट[6] के २ नाम—(१) अक्षोट (२) कन्दराल ॥२८॥

(द्वे अङ्कोटस्य)

अङ्कोटे तु निकोचकः ।

ढेरा[7] के २ नाम—(१) अङ्कोट (२) निकोचक ।

(चत्वारि पलाशस्य)

पलाशे किंशुकः पर्णो वातपोथः

ढाक[8], टेसू के ४ नाम—(१) पलाश (२) किंशुक (३) पर्ण (४) वातपोथ ।

---

१ फरहद के पेड़ जंगलों और सड़कों पर होते हैं। पत्ते पलाश की तरह एक-एक डाली में तीन-तीन होते हैं। इसका फूल सफेदी लिए लाल रंग का होता है। इसकी डालियों में बारीक काँटे होते हैं।

२ तिनास या तिनसुना के बड़े बड़े पेड़ होते हैं, पत्ते छोटे-छोटे छोंकर की भाँति और आकृति खैर के समान होती है।

३ अम्बाड़े के पेड़ प्रायः पर्वतों और बनों में अधिकतया होते हैं। जिंगनी के पत्तों की तरह इसके पत्ते एक डाली में दोनों ओर बराबर होते हैं। इसके फल छोटे-छोटे और खट्टे होते हैं, जिनका अचार डाला जाता है।

४ जङ्गलों और पहाड़ों में महुआ के पेड़ बड़े ऊँचे २ होते हैं। इसके पत्ते बदाम या बड़ के पत्तों की तरह होते हैं। फूल में शहद की तरह गन्ध आती है और इसमें से शरोफे की भाँति बीज निकलते हैं।

५ पीलु के पेड़ दो प्रकार के होते हैं—(१) छोटी जाति और (२) बड़ी जाति के। छोटे पीलु पर बहुत छोटे-छोटे फल होते हैं जो पकने पर लाल हो जाते हैं। बड़े पीलु के फूल पीले रंग के होते हैं और फल का रंग लाल और काला होता है।

६ काबुल की ओर अखरोट के पेड़ बहुलता से पाये जाते हैं। फल गोल और मैनफल की तरह होता है। फल के भीतर मींगी निकलती है जो बादाम की मींगी की तरह मीठी होती है।

७ ढेरे का पेड़ जंगलों में होता है। इस पर काँटे होते हैं। इसके पत्ते एक अंगुल चौड़े और पाँच-छः अंगुल लम्बे होते हैं। फूल का रंग सफेद होता है। कच्चे फल नीले रंग के और पके फल काले होते हैं जिनके ऊपर कालापन झलकता रहता है।

८ प्रायः नदी की तलहटी और जंगलों में ढाक के बड़े-बड़े पेड़ होते हैं। इसके पत्ते गोल-गोल होते हैं और एक-एक डण्डी में तीन-तीन पैदा होते हैं। इसीलिए निर्धन मनुष्य के सम्बन्ध में लोग कह दिया करते हैं कि 'ढाक के तीन पात।' निकलने के समय ये लाल रहते हैं बाद में हरे हो जाते हैं। फूल की डण्डी काली और रंग अतीव सुन्दर लाल वर्ण का होता है।

(सप्त वेतसस्य)

अथ वेतसे ॥२६॥

रथाऽभ्रपुष्प-विदुल-शीत-वानीर-वञ्जुलाः ।

बेंत[1] के ७ नाम—(१) वेतस (२) रथ (३) अभ्रपुष्प (४) विदुल (५) शीत (६) वानीर (७) वञ्जुल ॥२६॥

(चत्वारि जलवेतसस्य)

द्वौ परिव्याध-विदुलौ नादेयी चाम्बुवेतसे॥३०॥

जलबेंत[2] के ४ नाम—(१) परिव्याध (२) विदुल (३) नादेयी (४) अम्बुवेतस । इनमें (३ रा) स्त्री लिङ्ग है, शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥३०॥

(पञ्च श्वेतशिग्रोः)

सोभाञ्जने शिग्रु-तीक्ष्णगन्धकाऽक्षीव-मोचकाः ।

सफेद[3] सैंजिना के ५ नाम—(१) सोभाञ्जन (२) शिग्रु (३) तीक्ष्णगन्धक (४) अक्षीव (५) मोचक ।

(एकं मधुशिग्रोः)

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्यात्

[4]लाल सैंजिना का नाम—(१) मधुशिग्रु ।

(द्वे अरिष्टस्य)

अरिष्टः फेनिलः समौ ॥३१॥

[5]रीठा के २ नाम—(१) अरिष्ट (२) फेनिल ॥३१॥

(पञ्च बिल्ववृक्षस्य)

बिल्वे शाण्डिल्य-शैलूषौ मालूर-श्रीफलावपि ।

[6]बेल के ५ नाम—(१) बिल्व (२) शाण्डिल्य (३) शैलूष (४) मालूर (५) श्रीफल ।

(त्रीणि प्लक्षस्य)

प्लक्षो जटी पर्कटी स्यात्

[7]पाखर के ३ नाम—(१) प्लक्ष (२) जटिन् (३) पर्कटिन् । (ङीष प्रत्ययान्त भी)

(त्रीणि वटस्य)

न्यग्रोधो बहुपाद्वटः ॥३२॥

[8]बड़ के पेड़ के ३ नाम (१) न्यग्रोध (२) बहुपाद् (३) वट ॥३२॥

(षट् लोध्रसामान्यस्य)

गालवः शाबरो लोध्रस्तिरीटस्तिल्व-मार्जनौ ।

[9]लोध के ६ नाम—(१) गालव (२) शाबर (३) लोध्र (४) तिरीट (५) तिल्व (६) मार्जन ।

(त्रीणि आम्रस्य)

आम्रश्चूतो रसालः

[10]आम के ३ नाम—(१) आम्र (२) चूत (३) रसाल ।

---

१ जल के समीप की भूमि में बेंत होता है। इसकी जड़ बहुत लम्बी लम्बी होती है। इसके पेड़ लता के आकार के होते हैं ।

२ जल में भी बेंत होता है। इसके ऊपर का वल्कल बहुत पक्का होता हैं । इसीसे कुर्सी बुनी जाती है।

३ सफेद फूल वाला सँहिजन अधिकता से बागों और बनों में होता है ।

४ सँहिजन के फूल लाल औरानीले रंग के भी होते हैं। ये अधिकता से बाग आदि में नहीं पाये जाते। लोग इसकी फलियों को दाल में डालकर खाते हैं ।

५ वनों और उपवनों में रीठे के पेड़ होते हैं। रीठे की एक-एक डंठी में छः—सात पत्ते होते हैं। रीठे के झागों से वस्त्र साफ़ किया जाता है ।

६ भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त में बेल के पेड़ पाये जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में इसके पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और एक डंठी में तीन त्रिशूलाकार नये निकल आते हैं। इसकी शाखाओं में काँटे होते हैं। इसकी महत्ता धार्मिक ग्रन्थों एवं वैद्यक ग्रन्थों में लिखी हुई है।

७ जंगलों और गाँवों में पाकड़ के पेड़ बहुत होते हैं। इसके पत्ते लम्बे २ आम की तरह होते हैं इसकी भाँति उत्तम एवं सघन छाया अन्य किसी वृक्ष की नहीं होती।

८ बड़ का पेड़ बहुत ही विशाल होता है। इसके फल छोटे-छोटे झड़बेर के बराबर निकलते हैं। इसके पत्ते खूब लम्बे-चौड़े होते हैं ।

९ लोध दो प्रकार का होता है—एक साधारण और दूसरा पठानी। पठानी लोध के नाम आगे ४१ वें श्लोक में बतलाये गये हैं।

१० प्रायः भारत के समस्त प्रान्तों में आम के पेड़ पाये जाते हैं। आम की अनेक जाति होती है परन्तु आकार सबका एक ही सा होती है।

(एकमतिसुगन्धाम्रस्य)

असौ सहकारोऽतिसौरभः॥३३॥

खूब महँकदार आम (जैसे लँगड़ा, मालदह, किसुनभोग) का नाम—(१) सहकार ॥३३॥

(पञ्च गुग्गुलवृक्षस्य)

कुम्भोलूखलकं क्लीबे कौशिको गुग्गुलुः पुरः ।

[1]गूगल के ५ नाम—(१) कुम्भ (२) उलूखलक (३) कौशिक (४) गुग्गुलु (५) पुर (अदन्त)। इनमें (२) नपुंसक और शेष (१, ३-५) पुँल्लिङ्ग हैं।

(पञ्च श्लेष्मान्तकस्य)

शेलुः श्लेष्मातकः शीत उद्दालो बहुवारकः३४

[2]लिसोढ़ा के ५ नाम—(१) शेलु (२) श्लेष्मातक (३) शीत (४) उद्दाल (५) बहुवारक ॥ ३४ ॥

(चत्वारि प्रियालस्य)

राजादनं प्रियालः स्यात्सन्नकद्रुर्धनुःपटः ।

[3]चिरौंजी के ४ नाम—(१) राजादन (२) प्रियाल (३) सन्नकद्रु (४) धनुःपट [धनुष्पट] । इनमें (१) नपुंसक (२-४) पुँल्लिङ्ग हैं।

(सप्त काश्मर्याः)

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका॥३५॥
श्रीपर्णी भद्रपर्णी च काश्मर्यश्चापि

[4]'कुम्भेर' खम्भारी के ७ नाम—(१) गम्भारी (२) सर्वतोभद्रा (३) काश्मरी (४) मधुपर्णिका (५) श्रीपर्णी (६) भद्रपर्णी (७) काश्मर्य। इनमें (१-६) स्त्रीलिङ्ग (७) पुँल्लिङ्ग है ॥३५॥

(त्रीणि क्षुद्रबदर्याः)

अथ द्वयोः ।

कर्कन्धूर्बदरी कोली

[5]छोटे बेर के ३ नाम—(१) कर्कन्धू (२) बदरी (३) कोली। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और स्त्री लिङ्ग में, (२-३) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं।

(षट् बदरस्य)

कोलं कुवल-फेनिले ॥३६॥

सौवीरं बदरं घोण्टाऽपि

[6]जो बड़े और पककर खूब मीठे हो गये हों, ऐसे बेर के ६ नाम—(१) कोल (२) कुवल (३) फेनिल (४) सौवीर (५) बदर (६) घोण्टा। इनमें (१-५) नपुंसक हैं और (६ ठाँ) स्त्रीलिङ्ग है ॥३६॥

---

१ गूगल के पेड़ रेतीली (जैसे मारवाड़) और पथरीली पृथ्वी में होते हैं। इसके फल छोटे बेर की तरह और तीन धारवाले होते है। राजनिघण्टु में लिखा है—

जायन्ते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेऽर्कसन्तापिताः।
शीतर्त्तौ शिशिरेऽपि गुग्गुलरसं मुञ्चन्ति ते पञ्चधा॥
हेमाभं, महिषाक्षितुल्यमपरं, सत्पद्मरागोपमं,
भृङ्गाभं, कुमुदद्युतिञ्च, विधिना ग्राह्या परीक्षा ततः॥

२ वनों में लिसोढ़े के पेड़ होते हैं। इसके पत्ते कुछ लम्बाई लिए गोल होते हैं। अलूचे की तरह इसके फल गोल तथा रसदार होते और गुच्छों में लगते हैं।

३ कोंकण आदि देशों में चिरौंजी के पेड़ अधिकतया पाये जाते हैं। इसके पत्ते छोटे-छोटे, नोकदार और खुरखुरे होत हैं। पत्ते छोटे-छोटे बेर की भाँति नीले रंग के होते हैं। इसमें से जो मींगी निकलती है उसे चिरौंजी कहते हैं।

४ कुम्भेर का पेड़ कालका के समीप कौशिल्या नदी के किनारे होता है। इसका पेड़ बड़ा होता है और पत्ते समुद्रशोष और पीपल के पत्तों से कुछ ही बड़े होते हैं। फूल पीले रंग के और फल भी पीले ही होते हैं। फल का स्वाद कसैला और खटमिट्ठा होता है।

५ **'कर्कन्धूः** क्षुद्रबदरं कथितं पूर्वसूरिभिः'—भावप्रकाश

बेर के पेड़ कई जाति के होते हैं और प्रायः सब ही जगह होते हैं। इसके पेड़ काँटेदार और मझोले कद के होते हैं। पत्ते छोटे और गोल जरा लम्बाई लिए होते हैं। फूल बौर ही में छोटे-छोटे सफेद रंग के होते हैं।

६ 'पच्यमानं सुमधुरं **सौवीरं** बदरं महत्।
सौवीराल्लघु संपक्वं मधुरं **कोल**मुच्यते॥' भावप्रकाश

जो बेर बड़े हों और पक कर मीठे हो गये हों उन्हें 'सौवीर' कहते हैं। 'सौवीर' से कुछ ही छोटे बेर को 'कोल' कहते हैं।

(पञ्च स्वादुकण्टकस्य)

अथ स्यात्स्वादुकण्टकः ।
विकङ्कतः स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलो व्याघ्रपादपि ३७

[१]कण्टाई के ५ नाम—(१) स्वादुकण्टक (२) विकङ्कत (३) स्रुवावृक्ष (४) ग्रन्थिल (५) व्याघ्रपाद् ॥३७॥

(चत्वारि नागरङ्गस्य)

ऐरावतो नागरङ्गो नादेयी भूमिजम्बुका ।

[२]नारङ्गी के ४ नाम—(१) ऐरावत (२) नागरङ्ग (३) नादेयी (४) भूमिजम्बुका । इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३–४) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(चत्वारि तिन्दुकस्य)

तिन्दुकः स्फूर्जकः कालस्कन्धश्च शितिसारके

[३]तेंदू के ४ नाम—(१) तिन्दुक (२) स्फूर्जक (३) कालस्कन्ध (४) शितिसारक ॥३८॥

(चत्वारि काकतिन्दुकस्य)

काकेन्दुः कुलकः काकतिन्दुकः काकपीलुके ।

[४]मकर तेन्दुआ, काकतेन्दू के ४ नाम—(१) काकेन्दु (२) कुलक (३) काकतिन्दुक (४) काकपीलुक ।

(पञ्च घण्टापाटलेः)

गोलीढो झाटलो घण्टापाटलिर्मोक्षमुष्ककौ ॥३९

[५]मोखा, फरवाह के ५ नाम—(१) गोलीढ (२) झाटल (३) घण्टापाटलि (४) मोक्ष (५) मुष्कक (१-५) पुँल्लिङ्ग में और (३रा) स्त्रीलिङ्ग में भी ॥३९॥

(त्रीणि तिलकवृक्षस्य)

तिलकः क्षुरकः श्रीमान्

[६]तिलक पेड़ के ३ नाम—(१) तिलक (२) क्षुरक (३) श्रीमत् ।

(द्वे झावुकस्य)

समौ पिचुल-झावुकौ ।

[७]झाऊ के पेड़ के २ नाम—(१) पिचुल (२) झावुक ।

(पञ्च कट्फलस्य)

श्रीपर्णिका कुमुदिका कुम्भी कैडर्यकट्फलौ॥४०

[८]कायफल के ५ नाम—(१) श्रीपर्णिका (२) कुमुदिका (३) कुम्भी (४) कैडर्य [कैटर्य] (५) कट्फल । इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग, (४-५) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ४० ॥

---

१ कण्टाई के पेड़ जंगलों में बहुत बड़े-बड़े होते हैं। प्राचीनकाल में इसकी लकड़ी के यज्ञपात्र बनते थे। उनके पत्ते छोटे-छोटे होते हैं और डालियाँ काँटेदार होती हैं। उसमें बहुत अच्छे अच्छे बेर की तरह गोल-गोल फल लगते हैं।

२ नारंगी के पेड़ बागों में खूब लगाये जाते हैं। इनके पत्ते नीबू की तरह होते हैं। फूल खूब खुशबूदार और सफेद रंग के होते हैं। फल, कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर लाल हो जाते हैं।

३ तेन्दू के पेड़ खूब ऊँचे-ऊँचे होते हैं। जो भारत, लङ्का, बर्मा और पूर्वी बङ्गाल के पहाड़ी जंगलों में पाये जाते हैं। इसकी लकड़ी घर बनाने के काम में आती है। इसके भीतर का सार काला और वजनदार होता है, जिसे आबनूस कहते हैं। इसके फल गोल और सुन्दर नीबू की तरह हरे २ होते हैं, जो पकने पर पीले पड़ जाते हैं।

४ 'तिन्दुकोऽन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ।
काकेन्दुकेति विख्यातः कुपीलुः काकपीलुकः ॥'
काकतेन्दू के पेड़ काँटेदार होते हैं। इसके पत्ते गोल गोल नोकदार सीसम की तरह होते हैं। इसके फल तेन्दू के समान किन्तु छोटे होते हैं।

५ मोखा के पेड़—सफेद और काले—दो प्रकार के होते हैं। इसके पत्ते बड़े-बड़े होते हैं। इसमें से मदार की तरह दूध निकलता है।

६ तिलक पेड़ का फूल, तिल के फूल की तरह होता है। उसमें महँक रहती है। इसका फल, पीपल की तरह, और मीठा होता है।

७ प्रायः नदियों की रेती में झाऊ के पेड़ होते हैं; इसके पत्ते सरू की तरह होते तो हैं लेकिन सरू की तरह लम्बे और सीधे नहीं होते। पेड़ झाँदेदार होते हैं। इसकी लकड़ी बहुत गँठीली और मजबूत होती है।

८ शिमला में सोलम छावनी के नजदीकवाले पहाड़ों पर कायफल के पेड़ होते हैं। इसके फल भी कायफल नाम से प्रसिद्ध हैं और जेठ महीने में वे पकते हैं।

(चत्वारि पट्टिकाख्यलोध्रस्य)

क्रमुकः पट्टिकाख्यः स्यात्पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

[1]पठानी लाल लोध के ४ नाम—(१) क्रमुक (२) पट्टिकाख्य (३) पट्टिन् (४) लाक्षाप्रसादन ।

(षट् 'सहतूत' इति ख्यातस्य)

नूदस्तु यूपः क्रमुको ब्रह्मण्यो ब्रह्मदारु च॥४१॥ तूलं च

[2]सहतूत के ६ नाम—(१) नूद (२) यूप (३) क्रमुक (४) ब्रह्मण्य (५) ब्रह्मदारु (६) तूल । इनमें (१–४) पुँल्लिङ्ग (५–६) नपुंसक लिङ्ग हैं ॥४१॥

(चत्वारि कदम्बस्य)

नीप-प्रियक-कदम्बास्तु हरिप्रियः ।

[3]कदम्ब के ४ नाम—(१) नीप (२) प्रियक (३) कदम्ब (४) हरिप्रिय [हलिप्रिय] ।

(चत्वारि भल्लातक्याः)

वीरवृक्षोऽरुष्करोऽग्निमुखी भल्लातकी त्रिषु४२

[4]भिलावा के ४ नाम—(१) वीरवृक्ष (२) अरुष्कर (३) अग्निमुखी (४) भल्लातकी । इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग, (३) स्त्रीलिङ्ग, (४) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग में हैं ॥ ४२ ॥

(पञ्च 'गजदण्ड' इति ख्यातस्य)

गर्दभाण्डे कन्दराल-कपीतन-सुपार्श्वकाः । प्लक्षश्च

[5]पारिस पीपल, गजदण्ड के ५ नाम—(१) गर्दभाण्ड (२) कन्दराल (३) कपीतन (४) सुपार्श्वक (५) प्लक्ष ।

(त्रीणि चिञ्चायाः)

तिन्तिडी चिञ्चाऽम्लिका

[6]इमली के ३ नाम—(१) तिन्तिडी (२) चिञ्चा (३) अम्लिका ।

(षट् 'विजयसार' इति ख्यातस्य)

अथो पीतसारके ॥४३॥ सर्जकासन-बन्धूकपुष्प-प्रियक-जीवकाः ।

[7]विजयसार के ६ नाम—(१) पीतसारक (२) सर्जक (३) असन (४) बन्धूकपुष्प (५) प्रियक (६) जीवक ॥४३॥

(पञ्च शालवृक्षस्य)

साले तु सर्ज-कार्श्याऽश्वकर्णकाः सस्यसंवरः।

[8]साल, सखुआ के पेड़ के ५ नाम—(१) साल (२) सर्ज (३) कार्श्य (४) अश्वकर्णक (५) सस्यसंवर ॥४४॥

(पञ्च अर्जुनवृक्षस्य)

नदीसर्जो वीरतरुरिन्द्रद्रुः ककुभोऽर्जुनः ।

[9]अर्जुन, कोह पेड़ के ५ नाम—(१) नदी-

---

१ 'द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः । जीर्णपत्रो बृहत्पत्रः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ॥'

२ सहतूत के वृक्ष बागों में बहुत होते हैं। इसके पत्ते अंजीर की तरह तीन-तीन कंगूरे वाले और नीम के पत्तों को भाँति चारो ओर आरे की तरह चिह्न वाले होते हैं। सहतूत की कली बहुत कोमल और रसीली होती है ।

३ कदम्ब के पेड़ शहर के नजदीक होते हैं। इसके पत्ते लम्बे, गोल और महुए की तरह होते हैं। इसके फल नीबू के समान होते हैं। फूल, फलके ऊपर, खुशबूदार और छोटे होते हैं।

४ इसके पेड़ बड़े-बड़े होते हैं। पत्ते गूमा की तरह होते हैं और फल लाल होते हैं।

५ पारिस पीपल के पेड़ पीपल की तरह होते हैं। किन्तु विभिन्नता यह है कि पीपल पर फूल नहीं होते और पारिसपीपल में भिण्डो की भाँति फूल भी लगते हैं और इसके डोरे भिण्डी के आकार के होते हैं ।

६ इमली के पेड़ प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। इसके पत्ते चौंटली के समान डालियों में दोनों ओर समान होते हैं और खट्टे होते हैं।

७ जङ्गलों में विजयसार के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसके पत्ते पीपल के पत्तों से जरा छोटे होते हैं। इसके फल पीले आँवले की तरह होते हैं। इसकी लकड़ी कालापन लिए होती है।

८ साल के पेड़ बहुत बड़े होते हैं। इसमें पत्ते भी बहुत बड़े-बड़े लगते हैं। इस फलके भूमखों में लगते हैं। साल के गोंद को राल कहते हैं ।

९ बनों में अर्जुन के पेड़ बहुत लम्बे और ऊँचे होते हैं। इसके पत्त लम्बे, गोल और अनीदार होते हैं। इसकी छाल सफेद रङ्ग की होती है और उसमें से दूध निकलता है।

सर्ज (२) वीरतरु (३) इन्द्रद्रु (४) ककुभ (५) अर्जुन ।

(त्रीणि क्षीरिकायाः)

राजादनः फलाध्यक्षः क्षीरिकायाम्

[१]खिन्नी, खिरनी के ३ नाम—(१) राजादन (२) फलाध्यक्ष (३) क्षीरिका ।

(द्वे इंगुद्याः)

अथ द्वयोः ॥४५॥

इङ्गुदी तापसतरुः

[२]हिंगोट, गोंदी के २ नाम—(१) इङ्गुदी (२) तापसतरु । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग, (२) पुँल्लिङ्ग में होता है ॥४५॥

(त्रीणि भोजपत्रवृक्षस्य)

भूर्जे चर्मि-मृदुत्वचौ ।

[३]भोजपत्र के ३ नाम—(१) भूर्ज (२) चर्मिन् (३) मृदुत्वच ।

(पञ्च शाल्मल्याः)

पिच्छिला पूरणी मोचा स्थिरायुः शाल्मलिर्द्वयोः ।

[४]सेमर के ५ नाम—(१) पिच्छिला (२) पूरणी (३) मोचा (४) स्थिरायु (५) शाल्मलि । इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग, (४ था) पुँल्लिङ्ग, (५ वाँ) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥४६॥

(द्वे शाल्मलिनिर्यासस्य)

पिच्छा तु शाल्मलीवेष्टे

[५]मोचरस (सेमर के गोंद) के २ नाम—(१) पिच्छा (२) शाल्मलीवेष्ट । इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग और (२रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे कृष्णशाल्मलेः)

रोचनः कूटशाल्मलिः ।

[६]काला सेमर के २ नाम—(१) रोचन (२) कूटशाल्मलि । (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(चत्वारि करञ्जवृक्षस्य)

चिरिबिल्वो नक्तमालः करजश्च करञ्जके ॥४७॥

[७]करञ्ज के ४ नाम—(१) चिरिबिल्व (२) नक्तमाल (३) करज (४) करञ्जक ॥४७॥

(चत्वारि पूतिकरञ्जस्य)

प्रकीर्यः पूतिकरजः पूतीकः कलिमारकः ।

दुर्गन्धवाली काँटेदार करञ्ज के ४ नाम—(१) प्रकीर्य (२) पूतिकरज (३) पूतीक (४) कलिमारक ।

(एकैकं करञ्जभेदानाम्)

करञ्जभेदाः षड्ग्रन्थो मर्कट्यङ्गारवल्लरी ॥४८॥

बड़ी करञ्ज का नाम—(१) षड्ग्रन्थ ।

माकड़ करञ्ज का नाम—(१) मर्कटी ।

---

१ खिरनी के पेड़ बड़े-बड़े ऊँचे होते हैं । इसके पत्ते नेवाड़ी के समान होते हैं । इसमें शीतऋतु में बौर और बसन्त में फल लगते हैं । फल निमकौड़ी की तरह गुच्छों में होता है । कच्ची अवस्था में वे हरे रहते हैं और पकने पर पीले पड़ जाते हैं ।

२ हिंगोट के बड़े-बड़े पेड़ जंगलों में होते हैं । उसमें काँटे भी होते हैं । फूल नीबू के समान कुछ लम्बे और गोल होते हैं । फल के ऊपर गुठली के माफिक रस लगा रहता है, मानो फल रस में तर रहता है ।

३ अधिकतया हिमालय आदि पर्वतीय प्रदेशों में ही भोजपत्र के वृक्ष होते हैं । इस पेड़ की छाल को ही भोजपत्र कहते हैं । कागज और सूखे केले के पत्ते की तरह छाल होती है । इस पर यंत्र मंत्र लिखे जाते हैं ।

४ प्रायः बनों में सेमर के पेड़ अधिक संख्या में होते हैं । इसके एक एक डण्डी में आठ दस पत्ते लगते हैं । इसमें काँटे होते हैं । फूल कमल की तरह लाल रङ्ग का होता है । फल मदार की भाँति लगते हैं । इसके भीतर से रुई निकलती है । इसकी आयु बड़ी लम्बी होती है—'षष्ठिवर्षसहस्राणि वने जीवति शाल्मलिः ।'

५ सेमर के पेड़-जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है—के गोंद को मोचरस कहते हैं ।

६ काले सेमर के पेड़ जंगलों में अधिकतया होते हैं । इसके पत्ते जिंगिनी की तरह और फूल गाढ़ा लाल सुर्ख रंग के होते हैं । एक सफेद रंग का भी होता है ।

७ वनों में कञ्जा के बहुत बड़े-बड़े पेड़ होते हैं । इसके पत्ते पाकड़ के पत्तों की तरह गोल और ऊपरी हिस्से में चमकदार होते हैं । आसमानी रङ्गके फूल और फल भी नीले-नीले भूमकों में पैदा होते हैं । पत्तों में बड़ी दुर्गन्ध होती है । करञ्ज (पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, गुच्छकरञ्ज, षड्ग्रन्थकरञ्ज, इत्यादि) छः-सात तरह की होती हैं, जिनमें से कुछ का वर्णन आगे के श्लोक में लिखा है ।

नाटी करञ्ज का नाम—(१) अङ्गार-वल्लरी ॥ ४८ ॥

(चत्वारि 'रोहेडा' इति ख्यातस्य)

रोही रोहितकः प्लीहशत्रुर्दाडिमपुष्पकः ।

[1]रोहेड़ा के ४ नाम—(१) रोहिन् (२) रोहितक (३) प्लीहशत्रु (४) दाडिमपुष्पक ।

(चत्वारि खदिरस्य)

गायत्री बालतनयः खदिरो दन्तधावनः ॥४६॥

[2]खैर के ४ नाम—(१) गायत्री (२) बाल-तनय (३) खदिर (४) दन्तधावन । इनमें (१) स्त्री-लिङ्ग, पुं० में 'गायत्रिन्' (२–४) पुँल्लिङ्ग हैं ॥४६॥

(द्वे दुर्गन्धिखदिरस्य)

अरिमेदो विट्खदिरे

[3]दुर्गन्धित खैर के २ नाम—(१) अरिमेद (२) विट्खदिर ।

(द्वे श्वेतखदिरस्य)

कदरः खदिरे सिते ।

सोमवल्कोऽपि

[4]सफेद खैर, पपड़िया खैर के २ नाम—(१) कदर (२) सोमवल्क ।

(एकादश एरण्डस्य)

अथ व्याघ्रपुच्छ-गन्धर्वहस्तकौ ॥५०॥
एरण्ड उरुवूकश्च रुचकश्चित्रकश्च सः ।
चञ्चुः पञ्चाङ्गुलो मण्ड-वर्धमान-व्यडम्बकाः ५१

[5]रेंड़, अरण्ड के ११ नाम—(१) व्याघ्रपुच्छ (२) गन्धर्व-हस्तक (३) एरण्ड (४) उरुवूक (५) रुचक (६) चित्रक (७) चञ्चु (८) पञ्चाङ्गुल (९) मण्ड १०) वर्धमान (११) व्यडम्बक ॥५०–५१॥

(एकमल्पशम्याः)

अल्पा शमी शमीरः स्यात्

छोटा छोंकर के पेड़ का नाम—(१) शमीर ।

(त्रीणि शम्याः)

शमी सक्तुफला शिवा ।

[6]छोंकर के पेड़ के ३ नाम—(१) शमी (२) सक्तुफला (३) शिवा ।

(षट् मयनफलाख्यवृक्षस्य)

पिण्डीतको मरुबकः श्वसनः करहाटकः॥५२॥
शल्यश्च मदने

[7]मैनफल के ६ नाम—(१) पिण्डीतक (२) मरुबक (३) श्वसन (४) करहाटक (५) शल्य (६) मदन ॥५२॥

(अष्टौ देवदारोः)

शक्रपादपः पारिभद्रकः ।
भद्रदारु द्रुकिलिमं पीतदारु च दारु च॥५३॥
पूतिकाष्ठं च सप्त स्युर्देवदारुणि

---

१ जङ्गलों में प्रचुर रूप से रोहेड़े के पेड़ पाये जाते हैं। इसके फूल अनार के समान होते हैं। रक्त पुष्प और श्वेत पुष्प के भेद से यह दो प्रकार का होता है।

२ साधारण खैर के पेड़ वन में होते हैं। इसकी छाल खरदरी और चटकी हुई होती है। इसके पत्तें आँवले के समान छोटे-छोटे होते हैं। इसपर बारीक और टेढ़े-टेढ़े काँटे होते हैं।

३ दुर्गन्धित खैर के पेड़ भी वनों में अधिकता से पाये जाते हैं।

४ सफेद खैर के भी वृक्ष जंगलों में होते हैं।

५ इसके पेड़ बहुधा खेत के डाँड़ पर लगाये जाते हैं। यह सफेद और लाल दो प्रकार की जाति का होता है। इसके फल पर कोमल काँटे होते हैं। फल में से तीन बीज निकलते हैं। उस बीज के भीतर से सफेद मींगी निकलती है, उस मींगी के भीतर तेल होता है। रेंड़ी के तेल से जुलाब दिया जाता है।

६ छोंकर का बड़ा पेड़ होता है। इसके पत्ते खैर की तरह छोटे-छोटे और फली सेङ्गरी की तरह होती है। बबूर की एक जाति में इसे भी मानते हैं।

७ मैनफल के पेड़ के पत्ते चिरचिटे की भाँति होते हैं। इसके फूल पाँच पंखड़ी के, ज़रा पीलापन लिए सुफ़ेद रङ्ग के होते हैं। इसके फल अखरोट के आकार के होते हैं। कै कराने में यह एक ही औषधी है।

[1]देवदार के पेड़ के ८ नाम—(१) शक्र-पादप (२) पारिभद्रक (३) भद्रदारु (४) द्रुकिलिम (५) पीतदारु (६) दारु (७) पूतिकाष्ठ (८) देवदारु। इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग, (३) पुँल्लिङ्ग एवं नपुंसक, (४-७) नपुंसक, (८) पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसक है ॥५३॥

(सप्त पाटलायाः)

अथ द्वयोः।

पाटलिः पाटला मोघा काचस्थाली फलेरुहा
कृष्णवृन्ता कुबेराक्षी

[2]पाढर के ७ नाम—(१) पाटलि (२) पाटला (३) मोघा (४) काचस्थाली (५) फलेरुहा (६) कृष्णवृन्ता (७) कुबेराक्षी। इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में, शेष (२-७) स्त्रीलिङ्ग में हैं ॥५४॥

(द्वादश प्रियङ्गुवृक्षस्य)

श्यामा तु महिलाह्वया।

लता गोवन्दिनी गुन्द्रा प्रियङ्गुः फलिनी फली ५५
विष्वक्सेना गन्धफली कारम्भा प्रियकश्च सा।

प्रियंगू, फूलफेन, मेंहदी के १२ नाम—(१) श्यामा (२) महिलाह्वया (३) लता (४) गोवन्दिनी (५) गुन्द्रा (६) प्रियङ्गु (७) फलिनी (८) फली (९) विष्वक्सेना (१०) गन्धफली (११) कारंभा (१२) प्रियक। इनमें (१-११) स्त्रीलिङ्ग, (१२वाँ) पुँल्लिङ्ग है ॥५५॥

(द्वादश श्योनाकस्य)

मण्डूकपर्ण-पत्त्रोर्ण-नट-कट्वङ्ग-टुण्टुकाः ॥५६॥
स्योनाक-शुकनासर्क्ष-दीर्घवृन्त-कुटन्नटाः।
शोणकश्चारलौ

[3]सोनापाठा, अरलु, टेंटू के १२ नाम—(१) मण्डूकपर्ण (२) पत्त्रोर्ण (३) नट (४) कट्वङ्ग (५) टुण्टुक (६) स्योनाक (७) शुकनास (८) ऋक्ष (९) दीर्घवृन्त (१०) कुटन्नट (११) शोणक (१२) अरलु ॥५६॥

(चत्वारि आमलक्याः)

तिष्यफला त्वामलकी त्रिषु ॥५७॥
अमृता च वयस्था च

[4]आँवला के ४ नाम—(१) तिष्यफला (२) आमलकी (३) अमृता (४) वयस्था। इनमें (२रा)

---

१ देवदार के पेड़ बड़े-बड़े होते हैं। निघण्टु रत्नाकर में लिखा है—

देवदारु द्विधा ज्ञेयं, तत्राद्यं स्निग्धदारुकम्।
द्वितीयं काष्ठदारु स्याद्द्वयोर्नामान्यभेदतः॥

देवदारु दो प्रकार का होता है—(१) एक में तेल के समान चिकनाई सी होती है, (२) दूसरे में सूखापन होता है। दोनों प्रकार के देवदारु पश्चिमी हिमालय पहाड़ पर कुमाऊँ से लेकर काश्मीर तक पाये जाते हैं। इसके पेड़ अस्सी गज तक सीधे ऊँचे चले जाते हैं।

२ पाँढर का फूल लाल होता है। कटपाढर का फूल श्वेत होता है—'द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा काष्ठपाटला'। इसके पत्ते बेल की तरह होते हैं।

३ सोनापाठा का पेड़ बहुत ऊँचा होता है। इसकी फली तलवार के समान दो-दो फुट लम्बी होती है। फली के भीतर रुई और दाने निकलते हैं। एक दूसरी तरह का टेंटू पेड़ होता है, जिसका फूल लाली लिए समुद्रशोष की भाँति होता है।

कुछ टीकाकारों ने 'श्योनाक' का अर्थ 'सरिवन' लिखा है। किन्तु निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार शालिपर्णी का अर्थ 'सरिवन' होता है और उसके पर्यायवाची ये शब्द हैं, यही श्लोक श्री अमरसिंह आगे चलकर लिखेंगे [देखिए इसी वर्ग का ११५वाँ श्लोक]—

'शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा।
विदारिगन्धा दीर्घाङ्घ्रिर्दीर्घपत्त्रांऽशुमत्यपि॥

किन्तु ऊपर जो 'सोना पाठा' अर्थ लिखा गया है, वह निघण्टु ग्रन्थों के अनुकूल है और उसके पर्यायवाची शब्द भी मिलते हैं—

'श्योनाकः शुकनासश्च कट्वङ्गोऽथ कटम्भरः।
मयूरजङ्घोऽलुकः प्रियजीवी कुटन्नटः॥
टुण्टुको दीर्घवृन्तश्च टिण्टुकः कीरनाशनः।
पूतिवृक्षः पूतिनागो भूतिपुष्पो मुनिद्रुमः॥

४ आँवले का पेड़ बागों एवं वनों में होता है। इसके पत्ते छोटे-छोटे इमली की तरह होते हैं। इसकी डालियों पर छोटी-छोटी लाई के दाने के समान पीले फूल होते हैं। इसके फल झूमकों में तेंदू की तरह गोल होते हैं। फल के ऊपर छः लकीर खूब बारीक होती है।

तीनों लिङ्गों में होता है; शेष स्त्रीलिङ्ग हैं ॥५७॥

(षट् विभीतकस्य)

त्रिलिङ्गस्तु विभीतकः ।

नाऽक्षस्तुषः कर्षफलो भूतावासः कलिद्रुमः॥५८

[1]बहेड़ा के ६ नाम—(१) विभीतक (२) अक्ष (३) तुष (४) कर्षफल (५) भूतावास (६) कलिद्रुम। इनमें (१ला) पुं-स्त्री-नपुंसक में; और (२-६) नृ-(पुं०) लिङ्ग में होते हैं ॥५८॥

(एकादश हरीतक्याः)

अभया त्वव्यथा पथ्या कायस्था पूतनाऽमृता ।
हरीतकी हैमवती चेतकी श्रेयसी शिवा॥५९॥

[2]हरड, हर्रे के ११ नाम—(१) अभया (२) अव्यथा (३) पथ्या (४) कायस्था (५) पूतना (६) अमृता (७) हरीतकी (८) हैमवती (९) चेतकी (१०) श्रेयसी (११) शिवा ॥५९॥

(त्रीणि सरलवृक्षस्य)

पीतद्रुः सरलः पूतिकाष्ठं च

[3]चीड़ के पेड़ के ३ नाम—(१) पीतद्रु (२) सरल (३) पूतिकाष्ठ ।

(त्रीणि कर्णिकारस्य)

अथ द्रुमोत्पलः ।
कर्णिकारः परिव्याधो

[4]कर्णिकार के ३ नाम—(१) द्रुमोत्पल (२) कर्णिकार (३) परिव्याध ।

(त्रीणि लकुचस्य)

लकुचो लिकुचो डहुः ॥६०॥

[5]बड़हर के ३ नाम—(१) लकुच (२) लिकुच (३) डहु ॥६०॥

---

१ बहेड़ा का पेड़ जंगलों और पहाड़ों में होता है। इसके पत्ते बड़ के पत्तों के सदृश होते हैं। इसके फूल खूब महीन होते हैं। इसके फल भूमकों में लगते हैं।

२ यद्यपि हरड़ का पेड़ सब जगह ही पाया जाता है तथापि वे पञ्जाब, सीमाप्रान्त, काबुल में अधिकता से होते हैं। इसके पत्ते अडूसे के सदृश होते हैं। हरड की कई जाति होती हैं—यथा अभया (उपरोक्त नं० १), । चेतकी (उपरोक्त नं० ९), पूतना (उपरोक्त नं० ५), अमृता (उपरोक्त नं० ६) और इनके लक्षण भावप्रकाश के आधार पर यों कहे जा सकते हैं—

'पञ्चरेखाऽ**भया** प्रोक्ता, त्रिरेखा **चेतकी** मता ।
पूतनाऽस्थिमती सूक्ष्मा, कथिता मांसला**ऽमृता**॥'

अर्थात्—पाँच रेखावाली 'अभया' और तीन रेखावाली 'चेतकी' हरड़ होती है। छोटी गुठलीवाली 'पूतना' हरड़ होती है और 'अमृता' हरड़ मोटी होती है।

इनमें 'अभया और अमृता' चम्पा देश में; 'चेतकी' और 'पूतना' हिमालय पर्वत में होती है। इनमें 'चेतकी' हरड काली और सफेद दो प्रकार की होती है। सफेद छः अंगुल लम्बी और काली एक अंगुल लम्बी होती है। यथा—

'चेतकी द्विविधा प्रोक्ता सिता कृष्णा च वर्णतः ।
षडङ्गुलायता शुक्ला कृष्णा त्वेकाङ्गला स्मृता ॥'

किस रोग में कौन २ हरड सेवन करना चाहिए इसकी विधि बतलाते हैं—

'प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ।
अक्षिरोगेऽभया शस्ता चूर्णार्थे त्वपि चेतकी ॥'

लेप में पूतना, विरेचन में अमृता, नेत्ररोग में अभया, चूर्ण में चेतकी हरड प्रशस्त है ।

वैद्यक ग्रन्थों में 'हरीतकी' का बड़ा माहात्म्य वर्णन किया गया है और कहा गया है कि—

'हरीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी ।
कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी ॥'

अर्थात्—माता के समान मनुष्यों का हित करनेवाली हरड़ है। माँ तो कभी-कभी नाराज भी हो जाती है किन्तु खाई हुई हरड़ कभी कोप नहीं करती ।

मदनपालनिघण्टु में इसका अर्थ बतलाया गया है ।

'हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरेत्तु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥'

३ चीड़ के वन हिमालय में पाये जाते हैं। इसके पेड़ बड़े-बड़े होते हैं। उसके भीतर से गोंद के सदृश रस निकलता है जिसे चन्द्ररस और सुन्दररस कहते हैं।

४ कर्णिकार के पेड़ वनों एवं पर्वतों में अधिकता से होते हैं। इसके पत्ते ढाक के पत्ते की भाँति होते हैं। इसमें लाल और खूबसूरत फूल लगते हैं।

५ बड़हर के पेड़ बागों में अधिकता से लगाये जाते हैं। इसके पत्ते पाकड़ की तरह होते हैं। इसका फल गाँठदार, गोल-गोल, कैथ के बराबर होता है ।

(द्वे पनसस्य)

पनसः कण्टकिफलः

[1]कटहर के २ नाम—(१) पनस (२) कण्टकिफल।

(त्रीणि समुद्रफलस्य)

निचुलो हिज्जलोऽम्बुजः।

[2]समुद्रशोष के ३ नाम—(१) निचुल (२) हिज्जल (३) अम्बुज।

(चत्वारि काकोदुम्बरिकायाः)

काकोदुम्बरिका फल्गुर्मलयूर्जघनेफला ॥६१॥

[3]कठूमर के ४ नाम—(१) काकोदुम्बरिका (२) फल्गु (३) मलयू (४) जघनेफला। ये (१-४) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६१॥

(षट् निम्बस्य)

अरिष्टः सर्वतोभद्र-हिङ्गुनिर्यास-मालकाः।

पिचुमन्दश्च निम्बे

[4]नीम के पेड़ के ६ नाम—(१) अरिष्ट (२) सर्वतोभद्र (३) हिङ्गुनिर्यास (४) मालक (५) पिचुमन्द (६) निम्ब।

(त्रीणि शिंशपायाः)

अथ पिच्छिलाऽगुरु शिंशपा ॥६२॥

[5]काला सीसम के ३ नाम—(१) पिच्छिला (२) अगुरु (३) शिंशपा। इनमें (१ला, ३रा) स्त्रीलिङ्ग; (२रा) नपुंसक है ॥६२॥

(एकं कपिलशिंशपायाः)

कपिला भस्मगर्भा सा

[6]भूरे रंग के सीसम का नाम—(१) भस्मगर्भा।

(त्रीणि शिरीषस्य)

शिरीषस्तु कपीतनः।

भण्डिलोऽपि

[7]सिरस फूल के ३ नाम—(१) शिरीष (२) कपीतन (३) भण्डिल।

(त्रीणि चम्पकस्य)

अथ चाम्पेयश्चम्पको हेमपुष्पकः ॥६३॥

[8]चम्पा फूल के ३ नाम—(१) चाम्पेय (२) चम्पक (३) हेमपुष्पक ॥६३॥

(एकं चम्पककोरकस्य)

एतस्य कलिका गन्धफली स्यात्

चम्पा की कली का नाम—(१) गन्धफली।

(द्वे बकुलस्य)

अथ केसरे

---

१ कटहर के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसके पत्ते गोल और लम्बे होते हैं। इसमें फूल आते ही नहीं। कटहर पर हेमन्त ऋतु के बाद फल लगते हैं।

२ समुद्रशोष के सम्बन्ध में निघण्टु ग्रन्थों में लिखा है—

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा।
जलवेतसवद्वयो हिज्जलोऽयं विषापहः ॥

३ कठूमर के पेड़ बड़े-बड़े होते हैं। इस पर फूल नहीं आते। इसकी डालियों में से फल पैदा होते हैं। इसके पत्ते गंगेरन के पत्तों से मिलते-जुलते हैं और गूलर के पत्तों से बड़े होते हैं। इसके पत्तों के छूने से हाथों में खुजली होने लगती है और पत्तों में से दूध निकलता है।

४ नीम के पेड़ भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्तों में होते हैं। बसन्त ऋतु के आरम्भ में नये पत्ते और अन्त में फूल आते हैं।

५ निघण्टु ग्रन्थों में काले रंग के सीसम के ये पर्यायवाची शब्द बतलाये गये हैं—

'शिंशपा कृष्णसारा च पिपला युगपत्रिका।
पिच्छला धूम्रिका वीरा कपिलाऽगुरुशिंशपा ॥'

वन में काले रंग के सीसम के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसके पत्ते गोल, नोकदार बेरी के बराबर होते हैं। इसमें छोटे-छोटे गुच्छों में बहुत फूल लगते हैं।

६ निघण्टु ग्रन्थों में भूरे रंग के सीसम के ये पर्यायवाची शब्द बतलाये गये हैं—

'कपिला शिंशपा चान्या पीता कपिलशिंशपा।
सारिणी कपिलाची च भस्मगर्भा कुशिंशपा ॥'

७ सिरस के पेड़ सघन जंगलों में होते हैं। ये बहुत ऊँचे होते हैं। आँवले के समान छोटे-छोटे पत्ते होते हैं जो सदैव डाली में लगते हैं। इसके फूल बहुत ही सुन्दर, खुशबूदार, छोटे-छोटे तन्तुओं से युक्त, अतीव कोमल कुछ-कुछ पीलापन लिए हरे रङ्ग के होते हैं।

८ सफेद चम्पा के पेड़ बड़े होते हैं। इसके [illegible] लम्बे होते हैं जिसके तोड़ने से दूध निकलता है। इसके फूल सफेद और थोड़े हिस्से में पीले होते हैं।

[1]बकुल, मौलसिरी के २ नाम—(१) केसर (२) बकुल ।

(द्वे अशोकस्य)

वञ्जुलोऽशोके

[2]अशोक के २ नाम—(१) वञ्जुल (२) अशोक ।

(द्वे दाडिमस्य)

समौ करक-दाडिमौ ॥६४॥

[3]अनार के २ नाम—(१) करक (२) दाडिम ॥६४॥

(चत्वारि नागकेसरस्य)

चाम्पेयः केसरो नागकेसरः काञ्चनाह्वयः ।

[4]नागकेशर के ४ नाम—(१) चाम्पेय (२) केसर (३) नागकेसर (४) काञ्चनाह्वय ।

(दश 'अरणी' इति ख्यातायाः)

जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥६५
श्रीपर्णमग्निमन्थः स्यात्कणिका गणिकारिका । जयः

[5]अरणी के १० नाम—(१) जया (२) जयन्ती (३) तर्कारी (४) नादेयी (५) वैजयन्तिका (६) श्रीपर्ण (७) अग्निमन्थ (८) कणिका (९) गणिकारिका (१०) जय ॥६५॥

(चत्वारि कुटजस्य)

अथ कुटजः शक्रो वत्सको गिरिमल्लिका ॥६६

[6]कुड़ा, कौरेया के ४ नाम—(१) कुटज (२) शक्र (३) वत्सक (४) गिरिमल्लिका ॥६६॥

(त्रीणीन्द्रयवस्य)

एतस्यैव कलिङ्गेन्द्रयव-भद्रयवं फले ।

[7]इन्द्रजौ के ३ नाम—(१) कलिङ्ग (२) इन्द्रयव (३) भद्रयव । ये (१-३) शब्द तीनों लिङ्गों में प्रयुक्त होते हैं ।

(चत्वारि करमर्दकस्य)

कृष्णपाकफलाऽविग्न-सुषेणाः करमर्दके ॥६७॥

---

१ वनों और उपवनों में मौलसिरी के पेड़ होते हैं। इसकी नर और नारी दो जाति हैं। नर में फल नहीं होते और इसका फूल कुछ बड़ा और सफेद होता है। नारी मौलसिरी में फल आते हैं और इसका फूल छोटा और सिन्दूरी रंग का होता है।

२ अशोक वृक्ष दो प्रकार का होता है। एक प्रकार के अशोक के पत्ते रामफल की तरह और फूल नारंगी के रंग की भाँति होता है। यह माघ-फाल्गुन में मिलता है।

दूसरे प्रकार के अशोक के पत्ते आम की तरह होते हैं। इसके फूल सफेद ज़रा हल्के पीले रंग के होते हैं।

३ इसका पेड़ मझोले आकार का होता है और भारत-वर्ष के प्रत्येक भाग में मिलता है; किन्तु काबुली और पजाबी पेड़ों के अनार स्वाभाविकतया मधुर होते हैं।

४ नागचम्पा के पेड़ मझोले कद के होते हैं। इसका फूल नीले रंग का होता है, जिसे नागकेशर कहते हैं। सुलतान चम्पा (पुन्नाग) के फूल को भी नागकेशर कहते हैं। नागकेशर की यही दो जाति है। कोंकण और गोआ की ओर से आता है।

५ कुछ टीकाकार 'जया' आदि ५ नाम के अर्थ 'जाही' बतलाते हैं, किन्तु क्षीरस्वामी ने दशों को 'अरणी' का पर्यायवाची शब्द बतलाया है। जिसकी पुष्टि निघण्टु ग्रन्थों के निम्नलिखित श्लोक से होती है—

'अग्निमन्थो हविर्मन्थः कणिका गिरिकर्णिका ।
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका ॥'

अरणी, गणिवारी के पेड़ हिमालय के वनों में होते हैं। इसके पत्ते गोल और बारीक करकरयुक्त होते हैं। इसका फूल सफेद होता है और फल छोटे करोंदे के सदृश होते हैं। यज्ञ में इसकी लकड़ी से मन्थन कर अग्नि निकाली जाती है।

६ कुड़ा, कौरेया पेड़ के पत्ते रामफल के पत्तों के तुल्य बड़े-बड़े होते हैं। इसमें फली होती है और इसका फूल सफेद होता है। सफेद कुड़ा के दूध में जहर होता है उस दूध को चखने से मनुष्य की मृत्यु हो जाती है।

७ इन्द्र जौ के बारे में कहा जाता है कि—

'उक्तं कटुजबीजं तु यवमिन्द्रयवं तथा ।
कलिङ्गं चापि कालिङ्गं तथा भद्रयवं स्मृतम् ॥'

कुड़ा के बीज को इन्द्र जौ कहते हैं। ये दो प्रकार के—(१) खट्टे और (२) मीठे—होते हैं। जो सफेद कुड़ा का बीज होगा वह मीठा रहेगा और जो काले कुड़ा का इन्द्र जौ होगा वह कड़वा रहेगा।

[1]करोंदा के ४ नाम—(१) कृष्णपाकफल (२) अविघ्न (३) सुषेण (४) करमर्दक ॥६७॥

(त्रीणि तमालस्य)

कालस्कन्धस्तमालः स्यात्तापिच्छोऽपि

तमाल के ३ नाम—(१) कालस्कन्ध (२) तमाल (३) तापिच्छ ।

(पञ्च सिन्दुवारस्य 'निर्गुण्डी' इति ख्यातस्य)

अथ सिन्दुके ।

सिन्दुवारेन्द्रसुरसौ निर्गुण्डीन्द्राणिकेत्यपि ६८

[2]सम्हालू, निर्गुण्डी के ५ नाम—(१) सिन्दुक (२) सिन्दुवार (३) इन्द्रसुरस (४) निर्गुण्डी (५) इन्द्राणिका । इनमें (१-३) पुँल्लिङ्ग, (४-५) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६८॥

(पञ्च देवताडस्य)

वेणी गरा गरी देवताडो जीमूत इत्यपि ।

[3]घघर बेल, सौनैया, वन्दाल के ५ नाम—(१) वेणी (२) गरा (३) गरी (४) देवताड (५) जीमूत । इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग; (४-५) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे हस्तिकर्णपत्रशाकविशेषस्य 'घुइयाँ' इतिख्यातायाः, माषादिक्षेत्रभवाया बकुलपुष्पाभलोहित पुष्पाया वा, सिरीहथिनी इति ख्यातायाः)

श्रीहस्तिनी तु भूरुण्डी

घुइयाँ, उड़द आदि के खेतों में पैदा हुई रक्त पुष्पी, या हाथी शुण्डा के २ नाम—(१) श्रीहस्तिनी (२) भूरुण्डी ।

(चत्वारि मल्लिकायाः)

तृणशून्यं तु मल्लिका ॥६९॥

भूपदी शीतभीरुश्च

[4]मोतिया के ४ नाम—(१) तृणशून्य (२) मल्लिका (३) भूपदी (४) शीतभीरु । इनमें (१) नपुंसक (२-३) स्त्रीलिङ्ग, (४) पुँल्लिङ्ग हैं॥६९॥

(एकं वनमल्लिकायाः)

सैवाऽस्फोटा वनोद्भवा ।

[5]जंगली मोतिया, नेवारी के नाम—(१) आस्फोटा ।

(चत्वारि कृष्णपुष्पाया निर्गुण्ड्याः)

शेफालिका तु सुवहा निर्गुण्डी नीलिका च सा ७०

[6]काले फूल वाली सम्हालू के ४ नाम—(१) शेफालिका (२) सुवहा (३) निर्गुण्डी (४) नीलिका ॥७०॥

(द्वे श्वेतनिर्गुण्ड्याः)

सितासौ श्वेतसुरसा भूतवेशी

---

१ अधिकतया करोंदे के पेड़ बागों में लगाये जाते हैं। ये दो जाति के होते हैं। एक जाति के वे करोंदे होते हैं जिनके नोकों पर लाली रहती है और अंग सफेद रहता है। दूसरी जाति के वे होते हैं जो कच्ची अवस्थामें हरे और आधे लाल रहते हैं और पकने पर काले पड़ जाते हैं। करोंदे के फूल जूही के तुल्य सुगन्धित और सफेद होते हैं। फलों के गुच्छे बेर की तरह लगते हैं।

२ सम्हालू अनेक जाति की होती हैं। एक जाति की वह है जिसपर सफेद फूल लगते हैं और जिसे 'सिन्धुवारः श्वेतपुष्पः सिन्दुकः सिन्धुवारितः' कहते हैं। दूसरी उस जाति की है जिसपर काले फूल लगते हैं और जिसे 'नीलपुष्पः सीतसहो निर्गुण्डी नीनसिन्धुकः' कहते हैं। इन दोनों का पृथक्-पृथक् उल्लेख ७० वें श्लोक में ग्रन्थकर्ता ने किया है।

३ घघर बेल, वन्दाल की बेल बड़ी होती हैं जिसे किसान लोग खेतों के बाँध पर लगा देते हैं। इसके फूल—सफेद, पीला, लाल—तीन रंगके होते हैं। इसके फल के ऊपर बहुत छोटे-छोटे काँटे होते हैं।

४ मोतिया के फूल खूब खुशबूदार, सफेद रंग के होते हैं। इसके फल खूब गोल होते हैं। इसके पत्ते बेरी के पत्तों से कुछ छोटे-छोटे और अधिक लकीरवाले होते हैं।

५. नेवारी, जंगली मोतिया के पेड़ वन में बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसके फूल आम के बौर के समान गुच्छों में लगते हैं।

६. निर्गुण्डी के पेड़ बागों और बनों में पाये जाते हैं। इसके पत्ते अरहर के समान एक-एक टहनी में पाँच होते हैं। इसके पत्ते नीले और नीचे की ओर सफेद होते हैं। इसके फल आम के बौर के समान गुच्छेदार और केसरिया रंग के होते हैं।

सफेद फूलवाली सम्हालू (जिसे कर्तरी निर्गुर्ण्डी कहते हैं) के २ नाम—(१) श्वेतसुरसा (२) भूतवेशी ।

(चत्वारि यूथिकायाः)

अथ मागधी ।

गणिका यूथिकाम्बष्ठा

[1]जूही के ४ नाम—(१) मागधी (२) गणिका (३) यूथिका (४) अम्बष्ठा ।

(एकं पीतपुष्पयूथिकायाः)

सा पीता हेमपुष्पिका ॥७१॥

[2]पीली जूही का नाम—(१)हेमपुष्पिका॥७१॥

(पञ्च वासन्तीलतायाः)

अतिमुक्तः पुण्ड्रकः स्याद्वासन्ती माधवी लता ।

[3]माधवी के ५ नाम—(१) अतिमुक्त (२) पुण्ड्रक (३) वासन्ती (४) माधवी (५) लता ।

(त्रीणि जातेः)

सुमना मालती जातिः

[4]मालती के ३ नाम—(१) सुमनस् (सुमना) (२) मालती (३) जाति ।

(द्वे नवमालिकायाः)

सप्तला नवमालिका ॥७२॥

[5]मोगरा के २ नाम—(१) सप्तला (२) नवमालिका ॥७२॥

(द्वे कुन्दस्य)

माध्यं कुन्दम्

[6]कुन्द, कुन्दे के फूल के २ नाम—(१) माध्य (२) कुन्द । ये (१-२) नपुंसक और पुँल्लिङ्ग में होते हैं ।

(त्रीणि बन्धूकस्य)

रक्तकस्तु बन्धूको बन्धुजीवकः ।

[7]गुल दुपहरिया के ३ नाम—(१) रक्तक (२) बन्धूक (३) बन्धुजीवक ।

(त्रीणि कुमार्याः)

सहा कुमारी तरणिः

[8]घिकुआर के ३ नाम—(१) सहा (२) कुमारी (३) तरणि । ये (१-३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे 'कटसरैया'-सामान्यस्य)

अम्लानस्तु महासहा ॥७३॥

[9]कटसरैया के २ नाम—(१) अम्लान (२) महासहा । इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग और (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

(एकं 'कटसरैया' इति ख्यातायाः)

तत्र शोणे कुरबकः

सुर्ख फूलवाली कटसरैया का नाम—(१) कुरबक ।

(एकं पीत-'कटसरैया' इति ख्यातायाः)

तत्र पीते कुरण्टकः ।

---

१. वन, उपवन और पुष्प वाटिका में जूही की बेल होती है। फूल की पँखड़ी सफेद रंग की और सुगन्धित होती है।

२. दूसरे प्रकार की जूही पीले रंग की होती है। यह अत्यन्त सुहावनी और खुशबू वाली होती है। इसका फूल पीले रंग का होता है।

३. माधवी लता की बेल बड़ी होती है। इसके पत्ते चम्पा के तुल्य होते हैं। इसके फल गुच्छों में लगते हैं और तिल के सदृश होते हैं।

४. मालती लता की भी बेल होती है। इसके पत्ते जीवन्ती के समान होते हैं। इसके फल भूमखों में लगते हैं।

५. मोगरा, मोतिया, बेला ये एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। मोगरा के फूल कुछ कम गोल होते हैं।

६. कुन्द के पेड़ छोटे-छोटे होते हैं। इसके फूल अत्यन्त सुन्दर, सफेद रङ्ग के होते हैं।

७. माली लोग गुलदुपहरिया को बगीचे में लगा देते हैं। यह दोपहर के समय खूब खिलता है। सफेद, सिन्दूरी लाल आदि रङ्गों का यह फूल होता है।

८. ये नदी के किनारे, रेतीली जमीन और खारी मिट्टी के स्थानों में बहुत पैदा होते हैं। इसके पत्ते लम्बे मोटे और दोनों ओर काँटेदार होते हैं। इसके अन्दर से घी की तरह गूदा निकलता है।

९ कटसरया बनों और बागों में बहुत पैदा होती है। इसकी चार जाति होती है। इसके फूलों का रंग भी चार प्रकार का—सफेद, पीला, लाल, नीला होता है। इन चारों में काँटे होते हैं। पत्ते भी सबके ही छोटे-छोटे होते हैं।

[1]पीले फूलवाली कटसरैया का नाम—(१) कुरण्टक ।

(त्रीणि नीलझिण्टिकायाः)

नीलीझिण्टी द्वयोर्बाणा दासी चार्तगलश्च सा।

नीले फूलवाली कटसरैया के ३ नाम—(१) बाणा [बाण] (२) दासी (३) आर्तगल । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग, (२) स्त्रीलिङ्ग (३) पुँल्लिङ्ग में होता है ॥७४॥

(द्वे श्वेत 'कटसरैया' इति ख्यातायाः)

सैरेयकस्तु झिण्टी स्यात्

सफेद फूलवाली कटसरैया के २ नाम—(१) सैरेयक (२) झिण्टी ।

(एकं रक्तसैरेयकस्य)

तस्मिन् कुरबकोऽरुण ।

गुलाबी कटसरैया का नाम—(१) कुरबक ।

(द्वे पीतसैरेयकस्य)

पीता कुरण्टको झिण्टी तस्मिन्सहचरी द्वयोः

पीले फूलवाली कटसरैया के २ नाम—(१) कुरण्टक (२) सहचरी । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२) दोनों लिङ्गों पुं० स्त्री० में होता है ॥७५॥

(द्वे जवाकुसुमस्य)

ओड्रपुष्पं जवापुष्पम्

[2]जवा, गुड़हल, ओड़हुल के २ नाम—(१) ओड्रपुष्प (२) जवापुष्प ।

(एकं तिलपुष्पस्य)

वज्रपुष्पं तिलस्य यत् ।

तिल के फूल का नाम—(१) वज्रपुष्प ।

(पञ्च करवीरस्य)

प्रतिहास-शतप्रास-चण्डात-हयमारकाः ॥७६॥ करवीरे

[3]कनेर, कनइल के ५ नाम—(१) प्रतिहास (२) शतप्रास (३) चण्डात (४) हयमारक (५) करवीर ॥७६॥

(त्रीणि करीरस्य)

करीरे तु क्रकर-ग्रन्थिलावुभौ ।

[4]करील के ३ नाम—(१) करीर (२) क्रकर (३) ग्रन्थिल ।

(सप्त धत्तूरस्य)

उन्मत्तः कितवो धूर्तो धत्तूरः कनकाह्वयः ॥७७ मातुलो मदनश्च

[5]धतूरा के ७ नाम—(१) उन्मत्त (२) कितव (३) धूर्त (४) धत्तूर (५) कनकाह्वय (६) मातुल (७) मदन ॥७७॥

---

१ विभिन्न कटसरैया के नाम निघण्टु ग्रन्थों में यों मिलते हैं ।

'रक्तपुष्पः **कुरबकः**, पीतपुष्पः **कुरण्टकः** ।
नीलपुष्पश्चा**र्त्तगलः**, **सैरेयः** श्वेतपुष्पकः ॥

अर्थात्—लाल फूलवाली कटसरैया 'कुरबक'
पीले फूलवाली कटसरैया 'कुरण्टक'
नीले फूलवाली कटसरैया 'आर्तगल'
सफेद फूलवाली कटसरैया 'सैरेय' संज्ञक है ।

२ ये उपवनों एवं वाटिकाओं में लगाए जाते हैं। इसके पेड़ मझोले कद के होते हैं। इसके पत्ते अड़ूसे के तुल्य बड़े-बड़े होते हैं। इसमें लाल रंग के बड़े-बड़े फूल लगते हैं।

३ वनों, उपवनों, वाटिकाओं में कनेर के पेड़ लगते हैं। लाल, पीले, सफेद फूल वाली कनेर सब जगह पाई जाती है। एक काले रंग की फूल वाली भी होती है। कनेर में जहर होता है इसलिए बिना विचारे मुँह में नहीं डालना चाहिए।

४ करील के पेड़ ढूहों के ऊपर और मारवाड़ में ज्यादा होते हैं। इसकी डंठी नीले रंग की और फूल गुलाबी रङ्ग का होता है। इसमें फल-फूल फागुन चैत में लगते हैं। 'पत्रं नैव यदा करीर विटपे दोषो वसन्तस्य किम्' किसे नहीं मालूम है ? पत्ते न होने के कारण पेड़ में फूल-ही-फूल दिखलाई पड़ते हैं।

५. 'कनकाह्वय' सुवर्णपर्यायवाची नाम है। अर्थात् सुवर्ण के जो जो नाम (कलधौत, जाम्बूनद, कार्तस्वर) हैं वे इसके भी हो सकते हैं। फूलों के भेद से धतूरा कई रङ्ग का होता है। यह प्रायः जङ्गलों में होता है। काले और सुनहरे फूल का धतूरा बागों में होता है। पत्ते न बहुत छोटे और न बहुत बड़े ही होते हैं। फल गोल काँटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होता है। इन बीजों में जहर बहुत होता है।

(एकं धत्तूरफलस्य)

अस्य फले मातुलपुत्रकः ।

धतूरा के फल का नाम—(१) मातुलपुत्रक ।

(चत्वारि बीजपूरस्य)

फलपूरो बीजपूरो रुचको मातुलुङ्गके ॥७८॥

[1]बिजोरा नीबू के ४ नाम—(१) फलपूर (२) वीजपूर (३) रुचक (४) मातुलुङ्गक ॥७८॥

(पञ्च मरुबकस्य)

समीरणो मरुवकः प्रस्थपुष्पः फणिज्जकः । जम्बीरोऽपि

[2]मरुवा के ५ नाम—(१) समीरण (२) मरुवक (३) प्रस्थपुष्प (४) फणिज्जक (५) जम्बीर ।

(त्रीणि पर्णासस्य)

अथ पर्णासे कठिञ्जर-कुठेरकौ ॥७९॥

[3]क्षुद्र वन तुलसी के ३ नाम—(१) पर्णास (२) कठिञ्जर (३) कुठेरक ॥७९॥

(एकं श्वेतपर्णासस्य)

सितेऽर्जकोऽत्र

[4]सफेद वनतुलसी का नाम—(१) अर्जक ।

(त्रीणि चित्रकवृक्षस्य)

पाठी तु चित्रको वह्निसंज्ञकः ।

[5]चीता पेड़ के ३ नाम—(१) पाठिन् (२) चित्रक (३) वह्निसंज्ञक । ये (१–३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(सप्त मन्दारस्य)

अर्काह्व-वसुकाऽऽस्फोट-गणरूप-विकीरणाः॥८० मन्दारश्चार्कपर्णो

[6]मन्दार के ७ नाम—(१) अर्काह्व (२) वसुक (३) आस्फोट (४) गणरूप (५) विकीरण (६) मन्दार (७) अर्कपर्ण ॥८०॥

(द्वे श्वेतमन्दारस्य)

अत्र शुक्लेऽलर्क-प्रतापसौ ।

सफेद मन्दार के २ नाम—(१) अलर्क (२) प्रतापस ।

(पञ्च 'बृहन्मौलसिरी' इति ख्यातायाः)

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः ॥८१

[7]बनहुला, बृहन्मौलसिरी के ५ नाम—(१)

---

१. बागीचों में बिजोरे के पेड़ होते हैं। इसके पत्ते नीबू के पत्तों के सदृश होते हुए भी लम्बाई चौड़ाई में उससे अठगुने दसगुने होते हैं। इसमें सफेद फूल लगते हैं। इसका फल लम्बा और गोल होता है।

२. बागों में मरुवे के क्षुप बहुत होते हैं। इसके प्रत्येक अङ्ग से सुगन्ध निकलती रहता है। अत्यन्त सुगन्धित पत्ते अंगुली के सदृश लम्बे-लम्बे होते हैं। इसमें तुलसी की तरह बहुत सी बालें लगती हैं।

३. क्षुद्र वनतुलसी के नाम वैद्यक ग्रन्थों में ये मिलते हैं–

'अर्जकः क्षुद्रतुलसी क्षुद्रपर्णो सुखार्जकः ।
उग्रगन्धस्तु जम्बीरः कुठेरस्तु कठिञ्जरः ॥

४. वन तुलसी अनेक प्रकार की होती है। यह जङ्गलों में होती है। इसके पत्ते पिया बाँसे की तरह छोटे २ होते हैं, जिनमें नीम के पत्तों की तरह कंगूर होते हैं। सुगन्धित फूल पीलापन लिए रहता है।

५. सफेद वनतुलसी के, निघण्टु ग्रन्थों में, ये नाम मिलते हैं—

'सितार्जकस्तु वैकुण्ठो वटपत्रः कुठेरकः ।
जम्बीरो गन्धबहुलः सुमुखः कटुपत्रकः ॥

६. निघण्टु ग्रन्थों में चीता पेड़ के नाम ये बतलाये हैं–

चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्यालस्तथोषणः ।

यह 'वह्निसंज्ञक' है अर्थात् अग्नि के जितने पर्यायवाची नाम (कृष्णवर्त्मन्, जातवेदस, वैश्वानर आदि) होते हैं वे इसके भी हो सकते हैं।

चीता का क्षुप होता है। चीता सफेद फूल वाला, लाल फूल वाला, काला फूल वाला, पीला फूल वाला होता है। इसमें सफेद फूल वाला बहुतायत से होता है। काला, चीता के बारे में कहा जाता है कि इसे खाने से बाल काले हो जाते हैं—'केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते कृष्णाचित्रक-भक्षणात।'

७. यह 'अर्काह्व' है अर्थात् सूर्य के पर्यायवाची नाम (प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विवस्वत् आदि) इसके भी होते हैं। मन्दार के पेड़ ढूहों और जङ्गलों में अधिकता से पाये जाते हैं। इसके पत्ते बड़ को तरह और फल तोते की तरह होते हैं। इसके भीतर से रूई निकलती है।

८. भाव प्रकाश में वृद्ध बकुल (वनहुला, बृहन्मौलसिरी), के नाम जो बतलाये हैं वे उपरोक्त श्लोक के ही अनुसार हैं—'शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसुः।'

शिवमल्ली (२) पाशुपत (३) एकाष्ठील (४) वुक (५) वसु। इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग है और शेष पुँल्लिङ्ग हैं ॥८१॥

(चत्वारि वन्दायाः)

वन्दा वृक्षादनी वृक्षरुहा जीवन्तिकेत्यपि ।

[1]वन्दा, बन्दाल के ४ नाम—(१) वन्दा (२) वृक्षादनी (३) वृक्षरुहा (४) जीवन्तिका।

(नव गुडूच्याः)

वत्सादनी छिन्नरुहा गुडूची तन्त्रिकाऽमृता॥ ८२
जीवन्तिका सोमवल्ली विशल्या मधुपर्ण्यपि ।

[2]गिलोय, गुडूच के ९ नाम—(१) वत्सादनी (२) छिन्नरुहा (३) गुडूची (४) तन्त्रिका (५) अमृता (६) जीवन्तिका (७) सोमवल्ली (८) विशल्या (९) मधुपर्णी ॥८२॥

(दश मूर्वायाः)

मूर्वा देवी मधुरसा मोरटा तेजनी स्रवा॥८३॥
मधूलिका मधुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्ण्यपि ।

[3]मुरहरी, चुरनहार के १० नाम—(१) मूर्वा (२) देवी (३) मधुरसा (४) मोरटा (५) तेजनी (६) स्रवा (७) मधूलिका (८) मधुश्रेणी (९) गोकर्णी (१०) पीलुपर्णी ॥८३॥

(दश पाठायाः)

पाठाऽम्बष्ठा विद्धकर्णी स्थापनी श्रेयसी रसा॥८४
एकाष्ठीला पापचेली प्राचीना वनतिक्तिका ।

[4]पाठा, पाढ़ के १० नाम—(१) पाठा (२) अम्बष्ठा (३) विद्धकर्णी (४) स्थापनी (५) श्रेयसी (६) रसा (७) एकाष्ठीला (८) पापचेली (९) प्राचीना (१०) वनतिक्तिका ॥८४॥

(अष्टौ कटुरोहिण्याः)

कटुः कटम्बराऽशोकरोहिणी कटुरोहिणी॥८५
मत्स्यपित्ता कृष्णभेदी चक्राङ्गी शकुलादनी ।

[5]कुटकी के ८ नाम—(१) कटु (२)

---

१ बन्दा की कोई एक किस्म नहीं होती। यह पेड़ में पैदा हो जाता है। इसकी जड़ पृथक् नहीं होती। किसी किसी का तो मत है कि कौआ वगैरः किसी पेड़ की डाली लाकर पेड़ पर रख देते हैं तो उसी में पत्ते निकल आते हैं और वही फल फूलकर बन्दा हो जाता है। इसलिए इसके पत्ते भी एक से नहीं होते। फूल भी—लाल, पीला, सफेद कई किस्म के होते हैं।

२ गिलोय की बेलि होती है जो पेड़ों पर फैल जाती है। इसके गाँठों से दो भाग निकलते हैं। क्रमशः उनकी झाँदरी और उनकी ही जड़ हो जाती है। इसके पत्ते कुछ पान के सदृश और गहरे नीले होते हैं । फूल छोटे-छोटे गुच्छों में लगते हैं। इसके फल मटर के तुल्य होते हैं जो पकने पर लाल हो जाते हैं। गिलोय कैसे पैदा हुई और इसका नाम 'अमृता' क्यों पड़ा? इस सम्बन्ध में निम्न-लिखित कथा पढ़ने योग्य है—

अथ लङ्केश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः।
रामपत्नीं बलात्सीतां जहार मदनातुरः॥
ततस्तं बलवान् रामो रिपुं जायापहारिणम्।
युतो वानरसैन्येन जघान रणमूर्द्धनि॥
हते तस्मिन् सुराराती रावणे बलगर्विते।
देवराजः सहस्राक्षः परितुष्टस्तु राघवे॥
तत्र ये वानराः केचिद्राक्षसैर्निहता रणे।
तानिन्द्रो जीवयामास सिञ्चित्वाऽमृतवृष्टिभिः॥
ततो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात् परिच्युताः।
पीयूषबिन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका॥

अर्थात्—राक्षसराज, अहङ्कारी, लंकाधीश रावण ने मदनोन्मत्त हो हठात् राम की स्त्री सीता को हरण किया। तब रणभूमि में बलवान् राम ने स्त्री को चुरानेवाले शत्रु को वानर सेना की सहायता से मार डाला। उस बलाभिमानी, देवताओं के शत्रु रावण के मारे जाने पर देवराज इन्द्र रामचन्द्र के ऊपर अत्यन्त सन्तुष्ट हुए। तब रण में राक्षसों द्वारा जो बानर मारे गए थे उन्हें अमृत वर्षा से सिक्तकर इन्द्र ने जिलाया। बानरों के शरीर के ऊपर से गिर कर जिन-जिन जगहों पर अमृत की बूँद गिरी उन्हीं से गिलोय पैदा हुई। इसीलिए इसका नाम 'अमृता' पड़ा।

३ मूर्वा, चूर्णहार की वेलि वन में पायी जाती है। इसके पत्ते घीकुआर की तरह चिकने और कुछ मोटे-मोटे होते हैं। इसमें छोटे-छोटे और मीठे-मीठे फल लगते हैं।

४ पाढ़ की वेलि होती है। इसके पत्ते कुछ गोल होते हैं। इसके कोनों के अन्दर से सफेद और बारीक बौर की तरह फूल निकलता है। इसका फल मकोय की भाँति लाल रंग का होता है।

५ कुटकी एक बड़ी जड़वाली गुल्म है। यह हिमालय

कटम्भरा (३) अशोक रोहिणी (४) कटुरोहिणी (५) मत्स्यपित्ता (६) कृष्णभेदी (७) चक्राङ्गी (८) शकुलादनी ॥८५॥

(नव मर्कट्याः)

आत्मगुप्ताऽजहाऽव्यण्डा कण्डुरा प्रावृषायणी
ऋष्यप्रोक्ता शूकशिम्बिः कपिकच्छुश्च मर्कटी ।

[1]केवाँच के ९ नाम—(१) आत्मगुप्ता (२) अजहा (३) अव्यण्डा (४) कण्डुरा (५) प्रावृषायणी (६) ऋष्यप्रोक्ता (७) शूकशिम्बि (८) कपिकच्छु (९) मर्कटी ॥८६॥

(दश मूषिकपर्ण्याः)

चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी द्रवन्ती शम्बरी वृषा८७
प्रत्यक्श्रेणी सुतश्रेणी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ।

[2]मूसाकानी के १० नाम (१) चित्रा (२) उपचित्रा (३) न्यग्रोधी (४) द्रवन्ती (५) शम्बरी (६) वृषा (७) प्रत्यक्श्रेणी (८) सुतश्रेणी (९) रण्डा (१०) मूषिकपर्णी ॥८७॥

(अष्टावपामार्गस्य)

अपामार्गः शैखरिको धामार्गव-मयूरकौ॥८८॥
प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी किणिही खरमञ्जरी ।

[3]चिरचिरा, लटजीरा, औंगा के ८ नाम—(१) अपामार्ग (२) शैखरिक (३) धामार्गव (४) मयूरक (५) प्रत्यक्पर्णी (६) केशपर्णी (७) किणिही (८) खरमञ्जरी ॥८८॥

(नव 'भारङ्गी' इतिख्यातायाः)

हञ्जिका ब्राह्मणी पद्मा भार्गी ब्राह्मणयष्टिका ॥
अङ्गारवल्ली बालेयशाक-बर्बर-वर्धकाः ।

[4]भारङ्गी के ९ नाम—(१) हञ्जिका (२) ब्राह्मणी (३) पद्मा (४) भार्गी (५) ब्राह्मणयष्टिका (६) अङ्गारवल्ली (७) बालेयशाक (८) बर्बर (९) वर्धक ॥८९॥

(नव मञ्जिष्ठायाः)

मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका९०
मण्डूकपर्णी भण्डीरी भण्डी योजनवल्ल्यपि ।

[5]मञ्जीठ के ९ नाम—(१) मञ्जिष्ठा (२) विकसा (३) जिङ्गी (४) समङ्गा (५) कालमेषिका (६) मण्डूकपर्णी (७) भण्डीरी (८) भण्डी (९) योजनवल्ली ॥९०॥

(दस यवासस्य, धन्वयासस्य च)

यासो यवासो दुःस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ॥
रोदनी कच्छुराऽनन्ता समुद्रान्ता दुरालभा ।

[6]जवासा और धमासा के नाम—(१) यास

के नजदीकवाले जङ्गलों में होती है। इसके पत्ते अण्डे के आकार की तरह होते हैं। जिनके नीचे का भाग बड़ा और बगल खण्डित होती है। इसके फूल का रङ्ग नीला होता है और यह गुच्छों में पैदा होता है।

१ केवाँच की बेलि होती है। इसके फल सेम के सदृश होते हैं; और फलियाँ भी सेम की तरह होती हैं। इन फलियों पर बारीक रोआँ होता है। अगर इनका शरीर से स्पर्श हो जाय तो खुजली पैदा हो जाती है।

२ मूसाकानी का छत्ता धरातल पर फैला हुआ रहता है। इसके पत्ते चूहे के कान के आकारवाले होते हैं। हरे पत्तों के नीचे जड़ होती है। इसकी डाली बारीक और लाली पन लिए होती है। इसमें फल बहुत लगते हैं।

३ चिरचिटे का क्षुप होता है। इसके पत्ते गोल होते हैं। पत्तों के बीच में से एक बाल निकलती है जिसमें बारीक और मुलायम काँटेवाले बीज होते हैं। इन बीजों को पीसकर पीने से बवासीर रोग दूर होता है।

४ भारङ्गी का पेड़ ३॥ फीट ऊंचा होता है। इसके पत्ते महुए के पत्तों की तरह होते हैं। जिनका शाक बनाया जाता है। इसके फूल सफेद होते हैं।

५ मँजीठ की बेल होती है। ये पहाड़ी जंगलों में होती हैं। इसकी जड़ मँजीठ के नाम से विक्रय होती है।

६ इस श्लोक में जवासा (यवास) और धमासा (धन्वयास) दोनों के संयुक्त नाम दिये गये हैं। जवासा जलाशय के समीप की भूमि में अत्यन्त प्रचुर रूप से उत्पन्न होता है। अम्बाला, पटियाला आदि में बहुत होता है। इसके काँटे और पत्ते बड़े बड़े होते हैं। गो० तुलसीदास कहते हैं—'अर्क जवास पात बिनु भयऊ। जिमि सुराज खल उद्यम गयऊ।'

धमासा का छत्ता जवासा की भाँति जलाशय के स्थान पर होता है। उसके काँटे जवासा से बारीक और छोटे होते हैं। जवासा के प्रायः सबही गुण धमासा में मिलते हैं।

(२) यवास (३) दुस्पर्श (४) धन्वयास (५) कुनाशक (६) रोदनी (७) कच्छुरा (८) अनन्ता (९) समुद्रान्ता (१०) दुरालभा ॥९१॥

(नव पृश्निपर्ण्याः)

पृश्निपर्णी पृथक्पर्णीचित्रपर्ण्यङ्घ्रिपर्णिका ९२
क्रोष्टुविन्ना सिंहपुच्छी कलशिर्धावनिर्गुहा ।

[1]पिठवन के ९ नाम—(१) पृश्निपर्णी (२) पृथक्पर्णी (३) चित्रपर्णी (४) अङ्घ्रिपर्णिका (५) क्रोष्टुविन्ना (६) सिंहपुच्छी (७) कलशि (८) धावनि (९) गुहा ॥९२॥

(दश कण्टकारिकायाः)

निदिग्धिका स्पृशी व्याघ्री बृहती कण्टकारिका
प्रचोदिनी कुली क्षुद्रा दुःस्पर्शा राष्ट्रिकेत्यपि ।

[2]कटेरी, भटकटैया के १० नाम—(१) निदिग्धिका (२) स्पृशी (३) व्याघ्री (४) बृहती (५) कण्टकारिका (६) प्रचोदिनी (७) कुली (८) क्षुद्रा (९) दुःस्पर्शा (१०) राष्ट्रिका ॥९३॥

(एकादश नीलवृक्षस्य)

नीली काला क्लीतकिका ग्रामीणा मधुपर्णिका
रञ्जनी श्रीफली तुत्था द्रोणी दोला च नीलिनी

[3]नील के पेड़ के ११ नाम—(१) नीली (२) काला (३) क्लीतकिका (४) ग्रामीणा (५) मधुपर्णिका (६) रञ्जनी (७) श्रीफली (८) तुत्था (९) द्रोणी (१०) दोला (११) नीलिनी ॥९४॥

(अष्टौ वाकुच्याः)

अवल्गुजः सोमराजी सुवल्लिः सोमवल्लिका
कालमेषी कृष्णफला बाकुची पूतिफल्यपि ।

[4]बावची, बकुची के ८ नाम—(१) अवल्गुज (२) सोमराजी (३) सुवल्लि (४) सोमवल्लिका (५) कालमेषी (६) कृष्णफला (७) बाकुची (८) पूतिफली ॥ ९५ ॥

(दश पिप्पल्याः)

कृष्णोपकुल्या वैदेही मागधी चपला कणा॥९६
उषणा पिप्पली शौण्डी कोला

[5]पीपर के १० नाम—(१) कृष्णा (२) उपकुल्या (३) वैदेही (४) मागधी (५) चपला (६) कणा (७) उषणा (८) पिप्पली (९) शौण्डी (१०) कोला ॥ ९६ ॥

(पञ्च गजपिप्पल्याः)

अथ करिपिप्पली
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरः पुमान् ९७

[6]गजपीपर के ५ नाम—(१) करिपिप्पली (२) कपिवल्ली (३) कोलवल्ली (४) श्रेयसी (५) वशिर। इनमें (१–४) स्त्रीलिङ्ग (५) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ९७ ॥

---

१. बंगाल और पश्चिम में पिठवन बहुत पैदा होती है। इसके पत्ते बेलदार होते हैं। जटा सहित गोल-गोल इसके फूल नीलापन लिए हुए सफेद रङ्ग के होते हैं।

२. कटेरी का क्षुप पृथ्वी पर फैला हुआ होता है। इसके पत्ते चितले और बहुत काँटेदार होते हैं। इसका फूल बैंगनी रङ्ग का और केशर पीले रङ्ग का होता है।

३. खेत में कृषक लोग नील का क्षुप बो देते हैं। सरफोंक की तरह कुछ कालापन लिए हुए नीले रङ्ग के इसके पत्ते होते हैं। इसकी फली टेढ़ी और गोल होती है। इसकी डाली और पत्ती का नीला रङ्ग बनाते हैं।

४. बकुची का स्वरूप शोढल निघण्टु में इस प्रकार वर्णन किया गया है—

'क्षुपो बाकुचिकायाश्च गोवारो सदृशो भवेत्।
कृष्णपुष्पो गुच्छफलो दुर्गन्धः कृष्णबीजकः ॥

अर्थात्—बाकुची का क्षुप होता है। जिसके पत्तों की आकृति ग्वार के सदृश होती है। इसके फूल का रङ्ग काला होता है। गुच्छों में फल लगता हैं। इनके अन्दर से काले बीज निकलते हैं। इनमें से दुर्गन्ध आती है।

५. पीपर को 'मागधी, मगधोद्भवा' कहते हैं। इससे स्पष्ट है कि बिहार प्रान्त से यह आती है। इसके पत्तों का आकार पान का सा होता है।

६. निघण्टु ग्रन्थों में कहा गया है कि—

'चविकायाः फलं प्राज्ञैः कथिता गाजपिप्पली।
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा ॥'

अर्थात्—वैद्य लोग चव्य के फल को ही गजपीपर कहते हैं और उसी के पर्यायवाची नाम हैं—कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर।

(द्वे चव्यस्य)

चव्यं तु चविका

[1]चव्य के २ नाम—(१) चव्य (२) चविका ।

(त्रीणि गुञ्जायाः)

काकचिञ्चा-गुञ्जे तु कृष्णला ।

[2]घुँघची के ३ नाम—(१) काकचिञ्चा (२) गुञ्जा (३) कृष्णला ।

(सप्त गोक्षुरकस्य)

पलङ्कषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टकः ९८
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ।

[3]गोखरू के ७ नाम—(१) पलङ्कषा (२) इक्षुगन्धा (३) श्वदंष्ट्रा (४) स्वादुकण्टक (५) गोकण्टक (६) गोक्षुरक (७) वनशृङ्गाट ॥९८॥

(अष्टावतिविषायाः)

विश्वा विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ९९
शृङ्गी महौषधं च

अतीस के ८ नाम—(१) विश्वा (२) विषा (३) प्रतिविषा (४) अतिविषा (५) उपविषा (६) अरुणा (७) शृङ्गी (८) महौषध ॥९९॥

(द्वे दुग्धिकायाः)

अथ क्षीरावी दुग्धिका समे ।

[4]दुद्धी के २ नाम-(१) क्षीरावी (२) दुग्धिका । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(दश शतावर्याः)

शतमूली बहुसुताऽभीरुरिन्दीवरी वरी ॥१००
ऋष्यप्रोक्ताऽभीरुपत्री-नारायण्यः शतावरी ।
अहेरुः

[5]सतावर के १० नाम—(१) शतमूली (२) बहुसुता (३) अभीरु (४) इन्दीवरी (५) वरी (६) ऋष्यप्रोक्ता (७) अभीरुपत्री (८) नारायणी (९) शतावरी (१०) अहेरु। ये (१-१०) स्त्रीलिङ्ग हैं१००

(सप्त दारुहरिद्रायाः)

अथ पीतद्रु-कालीयक-हरिद्रवः ॥१०१॥
दार्वी पचम्पचा दारुहरिद्रा पर्जनीत्यपि ।

[6]दारुहलदी के ७ नाम—(१) पीतद्रु (२) कालीयक (३) हरिद्रु (४) दार्वी (५) पचम्पचा (६) दारुहरिद्रा (७) पर्जनी । इनमें (१-३) पुँल्लिङ्ग और (४-७) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१०१॥

(पञ्च वचायाः)

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका १०२

[7]बच के ५ नाम—(१) वचा (२) उग्रगन्धा (३) षड्ग्रन्था (४) गोलोमी (५) शतपर्विका ॥१०२॥

---

१ चव्य की बेल मलाबार में होती है। इसके फल को गजपीपर कहते हैं।

२ घुँघची की बेल जंगलों में बहुत होती हैं। इसके पत्ते खाने में बड़े स्वादिष्ट होते हैं और उनका आकार इमली के पत्तों की तरह होता है। इसके फूल सेम की तरह होते हैं और फली सेम के तुल्य गुच्छेदार होती है। इन्हीं फलियों में घुँघची दो रङ्ग की होती हैं। लालरंग की घुँघची के मुँह पर कुछ कालापन झलकता है। सफेदरङ्ग की घुँघची एकदम श्वेत होती है। यही धातुवर्द्धक है।

३ गोखरू दो प्रकार का होता है—(१) पहाड़ी और (२) देशी। पहाड़ी गोखरु का क्षुप होता है। इसका फूल पीला और सफेद होता है। पत्ते भी कुछ श्वेत ही होते हैं। फल के चार कोनों के ऊपर एक काँटा होता है। देशी गोखरू का छत्ता जमीन पर फैला हुआ होता है। इसके पत्ते चने के तुल्य होते हैं। इसका फूल पीला होता है; और फल में ६ काँटे होते हैं।

४ छत्ता के समान दुद्धी का क्षुप होता है। यह जमीन पर फैलती है, ऊपर की ओर तो बहुत कम उठती है। दुद्धी तीन प्रकार की होती है; (१) नोकदार लालपत्तों की (२) गोलपत्तों की, और (३) मूँगों के दानों की तरह छोटे-छोटे पत्तों की। इन तीनों में से दूध निकलता है।

५ जंगलों में शतावर की बेल होती है। सतावरी वर्षा के प्रारम्भ में हरी होती हैं और सफेद-सफेद छोटे फूल लगते हैं। एक पेड़ के नीचे सैकड़ों जड़ होने के कारण ही इसे 'शतमूली' (सतावर) कहते हैं। बेलि का रङ्ग सफेदी लिए होता है। इसके पत्ते बहुत छोटे छोटे सोये के पत्तों के आकार के होते हैं।

६ शिमला प्रदेश में कालका-कसौली के समीप इसके पेड़ बहुत पाये जाते हैं। इसका झाड़ काँटेदार होता है। इसमें छोटे-छोटे काले रङ्ग के फल लगते हैं।

७ निघण्टु ग्रन्थों में बच के नाम ये बतलाये हैं— 'वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ।

(एकं पारसीकवचायाः)

शुक्ला हैमवती

[१]खुरासानी (सफेद) बच का नाम—(१) हैमवती।

(अष्टावटरूषस्य)

वैद्यमातृ-सिंह्यौ तु वाशिका।
वृषोऽटरूषः सिंहास्यो वासको वाजिदन्तकः १०३

[२]अड़ूसा के ८ नाम—(१) वैद्यमातृ (२) सिंही (३) वाशिका (४) वृष (५) अटरूष (६) सिंहास्य (७) वासक (८) वाजिदन्तक। इनमें (१–३) स्त्रीलिङ्ग और (४–८) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ १०३ ॥

(चत्वारि विष्णुक्रान्तायाः)

आस्फोटा गिरिकर्णी स्याद्विष्णुक्रांताऽपराजिता

[३]कोयली के ४ नाम—(१) आस्फोटा (२) गिरिकर्णी (३) विष्णुक्रान्ता (४) अपराजिता।

(पञ्च कोकिलाक्षस्य)

इक्षुगन्धा तु काण्डेक्षु-कोकिलाक्षेक्षुर-क्षुराः ॥

[४]तालमखाना के ५ नाम—(१) इक्षुगन्धा (२) काण्डेक्षु (३) कोकिलाक्ष (४) इक्षुर (५) क्षुर। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, और (२–५) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ १०४ ॥

(षट् मधुरिकायाः)

शालेयः स्याच्छीतशिवश्छत्रा मधुरिका मिसिः।
मिश्रेयाऽपि

[५]सौंफ के ६ नाम—(१) शालेय (२) शीतशिव (३) छत्रा (४) मधुरिका (५) मिसि (६) मिश्रेया। इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३–६) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(षट् सीहुण्डस्य)

अथ सीहुण्डो वज्रः स्नुक् स्त्री स्नुही गुडा ॥
समन्तदुग्धा

[६]सेंहुड़ और थूहर के ६ नाम—(१) सीहुण्ड (२) वज्र [वज्रद्रुः] (३) स्नुह् (४) स्नुही (५) गुडा (६) समन्तदुग्धा। इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग और (३–६) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१०५॥

मङ्गल्या जटिला तीक्ष्णा गालिनी लोमशा तथा ॥'

बच पानी की जगह और रेतीली जमीन में पैदा होती है। इसका गुण बतलाया जाता है कि—

'अद्भिर्वा पयसाज्येन मासमेकन्तु सेविता।
वचा कुर्यान्नरं प्राज्ञं श्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहे पीतं पलमेकं पयोऽन्वितम्।
वचायास्तत्क्षणं कुर्यान्महाप्रज्ञान्वितं नरम् ॥

अर्थात्–वच के चूर्ण को जल के साथ या दूध के साथ एक महीने तक सेवन करने से मनुष्य बुद्धिमान और मेधावी होता है। यदि चन्द्रग्रहण या सूर्यग्रहण के समय दूध के साथ इसके एक पल चूर्ण को खा ले तो मनुष्य उसी क्षण अत्यन्त बुद्धिमान हो जाता है।

१ निघण्टु ग्रन्थों में यह लिखा गया है कि—

'पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा।'

अर्थात्–खुरासानी बच सफेद होती है और उसे 'हैमवती' कहते हैं।

२. अड़ूसे का क्षुप कालका के निकट बहुत होता है। चैत्र में इस में सफेद फूल लगते हैं। इन फूलों की जड़ में मधु की एक बूँद रहती है, जिसको बालक और बानर चूसते हैं। इसके पत्ते अमरूद के तुल्य लम्बे और अनीदार होते हैं। दूसरा लाल फूलवाला भी अड़ूसा होता है।

३. उपवन, वाटिका और खेत में कोयल होती है। एक सफेद फूलवाली और दूसरी लाल फूलवाली कोयल होती है। इसके पत्ते छोटे गुलाब की तरह होते हैं। इस पर लम्बी फली लगती है।

४. कैलथा के क्षुप अधिकतया जल के समीप या चौमासे की ताल तलैयों में पैदा होते हैं। इन क्षुपों पर काँटे होते हैं। इसके पत्ते लम्बे-लम्बे होते हैं। गूमे की तरह गाँठें होती हैं जिनके अन्दर से बीज निकलते हैं। इन्हीं बीजों को तालमखाना कहते हैं।

५. सौंफ के क्षुप खेतों और बागों में होते हैं।

६. इसमें सेंहुड़ और थूहर के संयुक्त नाम दिये गये हैं। शोढल निघण्टु में लिखा है—

'नुही समन्तदुग्धा च नागद्रुर्बहुदुग्धिका।
महावृक्षः सुधा वज्रा शीहुण्डो दण्डवृक्षकः ॥'

सेंहुड़ और थूहर दोनों एक ही जाति के पेड़ हैं। सेंहुड़ की डण्डी काँटेदार और मोटी होती है। इसके पत्ते कोमल पत्थरचटे की तरह होते हैं। हर शाखा और हर पत्तों में से दूध निकलता है। थूहर की डण्डी पतली होती

(षट् विडङ्गस्य)

अथो वेल्लममोघा चित्रतण्डुला ।
तण्डुलश्च कृमिघ्नश्च विडङ्गं पुं-नपुंसकम् १०६

बायविडङ्ग के ६ नाम—(१) वेल्ल (२) अमोघा (३) चित्रतण्डुला (४) तण्डुल (५) कृमिघ्न (६) विडङ्ग । इनमें (१)पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग, (२–३) स्त्रीलिङ्ग, (४–५) पुँल्लिङ्ग (६) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में होते हैं ।।१०६।।

(द्वे खरयष्टिकायाः)

बला वाट्यालका

[1]खिरैंटी, बड़ियरा के २ नाम—(१) बला (२) वाट्यालका ।

(द्वे शणपुष्पिकायाः)

घण्टारवा तु शणपुष्पिका ।

[2]सनई, सनहुली के २ नाम—(१) घण्टारवा (२) शणपुष्पिका ।

(पञ्च द्राक्षायाः)

मृद्वीका गोस्तनी द्राक्षा स्वाद्वी मधुरसेति च

[3]दाख, अंगूर के ५ नाम—(१) मृद्वीका (२) गोस्तनी (३) द्राक्षा (४) स्वाद्वी (५) मधुरसा ।।१०७।।

(सप्त शुक्लत्रिवृतायाः)

सर्वानुभूतिः सरला त्रिपुटा त्रिवृता त्रिवृत् ।
त्रिभण्डी रोचनी

[4]सफेद निसोत या निसोत सामान्य के ७ नाम—(१) सर्वानुभूति (२) सरला (३) त्रिपुटा (४) त्रिवृता (५) त्रिवृत् (६) त्रिभण्डी (७) रोचनी । ये (१–७) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(सप्त कृष्णवर्णायास्त्रिवृतायाः)

श्यामा-पालिन्द्यौ तु सुषेणिका ।।१०८।।
काला मसूरविदलाऽर्धचन्द्रा कालमेषिका ।

[5]काला निसोत के ७ नाम—(१) श्यामा (२) पालिन्दी (३) सुषेणिका (४) काला (५) मसूरविदला (६) अर्धचन्द्रा (७) कालमेषिका ।।१०८।।

(चत्वारि मधुयष्टिकायाः)

मधुकं क्लीतकं यष्टीमधुकं मधुयष्टिका १०९

है । इसके भी पत्ते छोटे-छोटे और लम्बे होते हैं। इसके प्रत्येक अङ्गों से दूध निकलता है ।

१. बला की जाति चार प्रकार की होती है। उनके नाम हैं:—बला (खिरैंटी), महाबला (सहदेई) अतिबला (ककही, कंघी) और नागबला (गंगेरन, इसके लिए ११७ वाँ श्लोक देखिए)। खिरैंटी के पेड़ दो तरह के होते हैं। एक वे हैं जो डेढ़ हाथ ऊँचे होते हैं और जिनके पत्ते तुलसी की आकृति की तरह होते हैं। इसमें पीले फूल लगते हैं। इसका फल छोटा होता है। दूसरे वे हैं जो साढ़े तीन हाथ ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते अनीदार होते हैं। इसका फूल सफेद और फल बारीक तथा गोल होता है। चारो प्रकार की बलाएँ कालका के निकट टकसाल में होती हैं। आश्विनमास में प्रायः सर्वत्र मिलती हैं ।

२. सनई के नाम निघण्टु ग्रन्थों में पाये जाते हैं—'शणपुष्पी स्मृता घण्टा शणपुष्पसमाकृतिः ।'

भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्तों में सन की खेती होती है। इसका फल लम्बा और फूल पीला होता है ।

३. दाख के नाम निघण्टु ग्रन्थों में ये मिलते हैं—

'द्राक्षा मधुरसा स्वाद्वी, कृष्णा चारुफला रसा ।
मृद्वीका गोस्तनी चैव, यदमघ्नी तापसप्रिया ॥'

दाख—किसमिस, मुनक्का, अंगूर आदि-कई जाति की होती है। यह सीमाप्रान्त, काबुल आदि में बहुतायत से पैदा होती है। इस देश के दाख के पत्ते हाथ के आकार की तरह होते हैं ।

४ निसोत सामान्य के नाम निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार—
'त्रिवृत्सुवहा त्रिपुटा त्रिभण्डो रेचना सरा ।'
निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार सफेद निसोत के नाम—
'शुक्लभण्डी त्रिभण्डी स्यात्काकाची सरला त्रिवृत् ।
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटा, त्र्यस्रा कोटरवाहिनी ॥'

जङ्गल में सफेद निसोत की बेल होती है। इसमें सफेद फूल, चार-चार बीज वाले गोल-गोल फल, और नोंकदार गोल पत्ते लगते हैं। इसकी बेल की लकड़ी में तीन धार होती है ।

५ काले निसोत की भी लता होती है। इसमें कालापन लिए बैंगनी रंग के फूल, चार-चार बीज वाले छोटे गोल २ फल और नोंकदार गोल छोटे पत्ते लगते हैं ।

[1]मुलेठी के ४ नाम—(१) मधुक (२) क्लीतक (३) यष्टीमधुक (४) मधुयष्टिका ॥१०९॥

(चत्वारि भूमिकूष्माण्डस्य)

विदारी क्षीरशुक्लेक्षुगन्धा क्रोष्ट्री तु या सिता ।

[2]बिदारीकन्द, बिलाई कन्द के ४ नाम—(१) विदारी (२) क्षीरशुक्ला (३) इक्षुगन्धा (४) क्रोष्ट्री ।

(त्रीणि क्षीरकन्दस्य)

अन्या क्षीरविदारी स्यान्महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥

[3]दूध बिदारी के ३ नाम—(१) क्षीरविदारी (२) महाश्वेता (३) ऋक्षगन्धिका ॥११०॥

(चत्वारि जलपिप्पल्याः)

लाङ्गली शारदी तोयपिप्पली शकुलादनी ।

[4]जलपीपर, पनिसिगा, गंगतिरिया के ४ नाम—(१) लाङ्गली (२) शारदी (३) तोयपिप्पली (४) शकुलादनी ।

(पञ्च शिखिमोदायाः)

खराश्वा कारवी दीप्यो मयूरो लोचमस्तकः॥

[5]अजमोदा के ५ नाम—(१) खराश्वा (२) कारवी (३) दीप्य (४) मयूर (५) लोचमस्तक ॥१११॥

(पञ्च शारिवायाः)

गोपी श्यामा शारिवा स्यादनन्तोत्पलशारिवा ।

[6]सरिवन, सालसा, कालीसर-गौरीसर के ५ नाम—(१) गोपी (२) श्यामा (३) शारिवा (४) अनन्ता (५) उत्पलशारिवा ।

(चत्वारि ऋद्धयाख्यौषधेः)

योग्यमृद्धिः सिद्धि-लक्ष्म्यौ

[7]ऋद्धिकन्द के ४ नाम—(१) योग्य (२) ऋद्धि (३) सिद्धि (४) लक्ष्मी । इनमें (१) नपुंसक (२-४) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(पञ्च वृद्धयाख्यौषधेः)

वृद्धेरप्याह्वया इमे ॥११२॥

[8]वृद्धिकन्द के ५ नाम—(१) योग्य (२) ऋद्धि (३) सिद्धि (४) लक्ष्मी (५) वृद्धि ॥११२॥

---

१ *'मधुवल्ली द्विप्रकारा—'जलजा' च 'स्थलोद्भवा'।*

मुलेठी का क्षुप होता है। इसमें छोटे २ और गोल २ पत्ते लगते हैं। इसकी फली छोटी बारीक होती है। फूल का रंग लाल होता है।

२ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार विदारीकन्द के नाम—

'विदारी वृष्यकन्दा च क्षीरशुक्ला सिता स्मृता ।
इक्षुगन्धा त्रिपर्णी च शुक्ला गजहयप्रिया ॥'

बिदारीकन्द की बेल अनूप देश के बनों में होती है। यह कन्द शूकर के तुल्य रोमयुक्त पैदा होता है। घुइयाँ की तरह इसके पत्ते बड़े-बड़े होते हैं। इसके नीचे जड़ में बहुत बड़ा कन्द निकलता है। उसका रंग लाली लिए होता है।

३ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार दूधविदारी के नाम—

अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी ।
इक्षुवल्ली क्षीरकन्दः क्षीरवल्ली पयस्विनी ॥
क्षीरशुक्ला क्षीरलता पयःकन्दा पयोलता ।
पयोविदारिका चेति विज्ञेया द्वादशाह्वया ॥'

दूध बिदारी कन्द की भी बेल होती है। इसका कन्द मूली की तरह होता है। कन्द का रंग लाल और सफेद होता है। एक-एक शाखा में सात-आठ पत्ते होते हैं।

४ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार जलपीपर के नाम—

'जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी ।
मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गलीत्यपि कीर्तिता ॥'

प्रायः सजल भूमि पर जलपीपल के क्षुप निकलते हैं। इसके पत्ते बड़ी नोनिया की तरह नोंकदार होते हैं। इसमें पीपल की तरह एक बाल निकलती है।

५ यूरोप और एशिया में इसका क्षुप होता है। आजकल सहारनपुर की ओर अधिक होती है।

६ काली सारिवा और सफेद सारिवा की बेल काली होती है। इसके पत्ते अनार की तरह होते हैं। उन पत्तों में सफेद छींटे होते हैं। कितने लोग सारिवा को 'सालसा पेरिला' कहते हैं।

७-८ निघण्टु ग्रन्थों में भी ऋद्धि-वृद्धि के ये ही नाम दिए गये हैं। दोनों के विषय में कहा गया है कि—

'ऋद्धिर्वृद्धिश्च कन्दौ च भवतः कोशलेऽचले ।
श्वेतलोमान्वितः कन्दो लताजातः स-रन्ध्रकः ॥
स एव ऋद्धिर्वृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तूलग्रन्थिसमा ऋद्धिर्वामावर्तफला च सा ॥
वृद्धिस्तु दक्षिणावर्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः।'

अर्थात्—ऋद्धि, वृद्धि दोनों कन्द हैं। ये कोशल पर्वत पर पैदा होते हैं। ये दोनों कन्द लता जाति के हैं। इनपर

(षट् कदल्याः)

कदली वारणबुसा रम्भा मोचांऽशुमत्फला ।
काष्ठीला

[1]केला के ६ नाम—(१) कदली (२) वारणबुसा (३) रम्भा (४) मोचा (५) अंशुमत्फला (६) काष्ठीला ।

(त्रीणि काकमुद्गायाः)

मुद्गपर्णी तु काकमुद्गा सहेत्यपि ॥११३॥

[2]मुगवन के ३ नाम—(१) मुद्गपर्णी (२) काकमुद्गा (३) सहा ॥११३॥

(पञ्च भण्टाक्याः)

वार्ताकी हिङ्गुली सिंही भण्टाकी दुष्प्रधर्षिणी ।

[3]भण्टा, बैंगन के ५ नाम—(१) वार्ताकी (२) हिङ्गुली (३) सिंही (४) भण्टाकी (५) दुष्प्रधर्षिणी ।

(नव रास्नायाः)

नाकुली सुरसा रास्ना सुगन्धा गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी छत्राकी सुवहा च सा ।

[4]रायसन, रास्ना के ९ नाम—(१) नाकुली (२) सुरसा (३) रास्ना (४) सुगन्धा (५) गन्धनाकुली (६) नकुलेष्टा (७) भुजङ्गाक्षी (८) छत्राकी (९) सुवहा ॥११४॥

(पञ्च शालपर्ण्याः)

विदारीगन्धांऽशुमती सालपर्णी स्थिरा ध्रुवा ॥

[5]सरिवन के ५ नाम—(१) विदारीगन्धा (२) अंशुमती (३) सालपर्णी (४) स्थिरा (५) ध्रुवा ॥११५॥

(चत्वारि कार्पास्याः)

तुण्डिकेरी समुद्रान्ता कार्पासी बदरेति च ।

[6]कपास के ४ नाम—(१) तुण्डिकेरी (२) समुद्रान्ता (३) कार्पासी (४) बदरा ।

(एकं वनकर्पास्याः)

भारद्वाजी तु सा वन्या

[7]वन कपास का नाम—(१) भारद्वाजी ।

(त्रीणि ऋषभाख्यौषधेः)

श्रृङ्गी तु ऋषभो वृषः ॥११६॥

[8]ऋषभक के ३ नाम—(१) श्रृङ्गी (२) ऋषभ (३) वृष । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२–३) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ११६ ॥

सफेद रोम और छेद होते हैं । दोनों में अन्तर इतना है कि ऋद्धि कपास की गाँठ की तरह आकारवाली बाएँ हिस्से में आवर्तशील फल सहित होती है । वृद्धि दहिने हिस्से में आवर्तमय फल सहित होती है ।

१ केला समस्त भारत में पाया जाता है । इसका पेड़ बहुत ऊँचा होता है । इसकी कई जाति होती है । कहा जाता है कि 'काटे ते कदली फरै ।'

२ मुगवन की बेल और फली मूँग के समान होती है । पत्ते भी मूँग के समान हरे होते हैं । फूल पीले होते हैं ।

३ बैंगन का आकार-प्रकार सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

४ यह बंग देश के प्राचीन आम आदि के पेड़ पर पैदा होती है । वृक्ष की छाल पर इसकी जड़ जमी रहती है । इसका फूल पीला, बैंगनी और छींटेदार होता है । पञ्जाब में रायसन के छोटे-छोटे पेड़ होते हैं । इसकी फलियों में मोठ के समान बीज होते हैं ।

५ सरिवन का क्षुप होता है । एक डण्ठी में तीन पत्ते होते हैं और उसमें बहुत छोटी फली लगती है । कालका के निकट टकसाल में पायी जाती है ।

६ भारतवर्ष कपास की उपज के लिए सुप्रसिद्ध है । कपास के फूल पीले और बीच में लाल और गूलर के समान तिकोने होते हैं । उसके भीतर से कपास निकलती है ।

७ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार बनकपास के नाम—
'त्रिपर्णा वनकार्पासी भारद्वाजी यशस्विनी ।'

८ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ऋषभक के नाम—
'ऋषभो दुर्द्धरो द्राक्षा मातृको वल्लुरो नृपः ।
ककुद्मान् भूपतिः कामी गोपतिः शीतलश्च सः ॥'

ऋषभक की आकृति बैल की सींग की तरह होती है । भावप्रकाश में लिखा है कि यह औषधि हिमालय की चोटी पर पैदा होती है । इसका कन्द लहसन के कन्द को भाँति होता है । इसके सार-हीन बारीक पत्ते होते हैं ।

कुछ टीकाकारों का कथन है कि 'श्रृङ्गी' काकड़ासिंगी है किन्तु निघण्टु ग्रन्थों में काकड़ासिंगी के जो पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं उनमें 'श्रृङ्गी' को छोड़कर शेष दो नाम नहीं मिलते । यथा—अजश्रृङ्गी, कर्कटश्रृङ्गिका, कर्कटाख्या, कर्कटी, कासविनासिनी, कुलिङ्गी, कौलिरा, घोषा, चक्रा, चक्राङ्गी, चन्द्रास्पदा, नताङ्गी, नवाङ्गी, महाघोषा, वक्रा,

(चत्वारि नागबलायाः)

गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ।

[१]गंगेरन के ४ नाम—(१) गाङ्गेरुकी (२) नागबला (३) झषा (४) ह्रस्वगवेधुका ।

(द्वे हस्तिघोषायाः)

धामार्गवो घोषकः स्यात्

[२]घियातोरई, नेनुआ के २ नाम—(१) धामार्गव (२) घोषक ।

(एकं पीत-धामार्गवस्य)

महाजाली स पीतकः ॥११७॥

[३]तोरई का नाम—(१) महाजाली । यह स्त्रीलिङ्ग है ॥ ११७ ॥

(त्रीणि पटोलिकायाः)

ज्यौत्स्नी पटोलिका जाली

[४]चिंचिड़ा के ३ नाम—(१) ज्यौत्स्नी (२) पटोलिका (३) जाली ।

(द्वे भूमिजम्बुकायाः)

नादेयी भूमिजम्बुका ।

[५]छोटी जामुन के २ नाम—(१) नादेयी (२) भूमिजम्बुका ।

(द्वे लाङ्गल्याः)

स्याल्लाङ्गलिक्यग्निशिखा

कलिहारी के २ नाम—(१) लाङ्गलिकी (२) अग्निशिखा ।

(द्वे काकजंघाख्यौषधिविशेषस्य)

काकाङ्गी काकनासिका ॥११८॥

[६]काकजंघा, कौआ ठोठी के २ नाम—(१) काकाङ्गी (२) काकनासिका ॥ ११८ ॥

(द्वे हंसपादिकायाः)

गोधापदी तु सुवहा

[७]हंसपदी के २ नाम—(१) गोधापदी (२) सुवहा ।

वनमूर्द्धजा, शृङ्गी, शिखरी । अतः निघण्टु ग्रन्थों के अनुकूल मैंने उपरोक्त अर्थ लिखा ।

१ बला के सम्बन्ध में पीछे (श्लोक १०७ में) लिख आया हूँ । गंगेरन का पेड़ महाबला (सहदेई) की तरह होता है । गंगेरन के पत्ते मोटे और दो अनीवाले होते हैं । इसका फूल गुलाबी रंग का होता है । फल बड़ा होता है और जो सूखने पर आप-से-आप पाँच टुकड़ा हो जाता है । अतिबला को कंघी कहते हैं ।

२ घिया तोरई का रंग नीला होता है । इसे नेनुआ कहते हैं । यह तोरई का एक भेद है । निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार इसके नाम—

'महाकोशातकी प्रोक्ता हस्तिघोषा महाफला ।
धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च स स्मृतः ॥'

३ तोरई के नाम निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार—

'कोशातकी स्वादुफला सुपुष्पा कर्कोटपि स्यादपि पीतपुष्पा' । तोरई सफेद रंग की धारीदार होती है । यह पीले फूलवाली होती है ।

४ चिंचेड़ा की बेल तोरई की तरह होती है । इसके फल बड़े-बड़े लम्बे सर्प के आकार के होते हैं ।

५ 'नादेयी' काली जामुन को कहते हैं । यथा—

काकजम्बूः काकफला नादेयी काकवल्लभा ।

'भूमिजम्बूका' छोटी कठजामुन को कहते हैं । यथा—

'अन्या च भूमिजम्बूर्ह्रस्वफला भृङ्गवल्लभा ह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टा पिकभक्ष्या काष्ठजम्बूश्च ॥'

जामुन के पेड़ तीन-चार तरह के होते हैं । फूल के स्थान पर जामुन में बौर ही लगते हैं । जामुन के आकार-प्रकार सुप्रसिद्ध हैं ।

६ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार 'काकजंघा' (मसी) के नाम—

'काकजंघा च काकाक्षी काकाङ्गी काकनासिका ।'

निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार 'कौआ ठोठी' के नाम—

'काकनासा तु काकाङ्गी काकतुण्डफला च सा ।'

जंगलों में काकजंघा के क्षुप पाये जाते हैं । इसके पत्ते लम्बे-लम्बे, हरे और काले रंग के होते हैं । फूल का रंग काला और आकार छोटा होता है । इसके पत्तों पर खर-खरापन और बारीक रोम सदृश होता है । इसकी डालियाँ गाँठदार और थोड़ी-थोड़ी दूर पर टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं ।

जंगलों और कठैर की भूमि में कौआठोठी अधिकतया पैदा होती है । इसके पत्ते गुलाब के पत्तों से छोटे होते हैं । इसके फूल नीले और सफेद रंग के, कौए की नाक के समान, होते हैं ।

७ हंस पदी के क्षुप अतीव शीतल स्थानों—कुएँ, बावड़ी, तालाब, कुण्ड आदि के समीप—में बहुत पैदा होते हैं । इसकी जड़ लाल और कोमल होती है । इसके पत्ते हरे-हरे और बहुत छोटे होते हैं ।

(द्वे 'मुसली' इति ख्यातायाः)

मुसली तालमूलिका ।

[1]मुसली के २ नाम—(१) मुसली (२) तालमूलिका ।

(द्वे 'मेढ़ासिङ्गी' इति ख्यातायाः)

अजश्‍ृङ्गी विषाणी स्यात्

[2]मेढ़ासिङ्गी के २ नाम—(१) अजश्‍ृङ्गी (२) विषाणी ।

(द्वे गोजिह्वायाः)

गोजिह्वा-दार्विके समे ॥११९॥

[3]गोभी के २ नाम—(१) गोजिह्वा (२) दार्विका । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥११९॥

(त्रीणि नागबल्ल्याः)

ताम्बूलवल्ली ताम्बूली नागवल्ल्यपि

[4]नागरबेल, पान के ३ नाम—(१) ताम्बूलवल्ली (२) ताम्बूली (३) नागवल्ली ।

(षट् रेणुकाख्यगन्धद्रव्यस्य)

अथ द्विजा ।

हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी १२०

[5]रेणुका (अर्थात् सम्हालु के बीज) के ६ नाम—(१) द्विजा (२) हरेणु (३) रेणुका (४) कौन्ती (५) कपिला (६) भस्मगन्धिनी ॥१२०॥

(पञ्च वालुकाख्यगन्धद्रव्यस्य)

एलावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् । वालुकं च

[6]एलुआ के ५ नाम—(१) एलावालुक (२) ऐलेय (३) सुगन्धि (४) हरिवालुक (५) वालुक । ये (१–५) नपुंसक हैं ।

(चत्वारि शल्लकीनिर्यासस्य)

अथ पालङ्कर्यां मुकुन्दः कुन्द-कुन्दुरू ॥१२१॥

[7]कुन्दरू (सलई के गोंद) के ४ नाम—

---

१ मुसली दो प्रकार की काली और सफेद होती है। काली मुसली के क्षुप के नीचे अंगुली की तरह जड़ होती है। उसके ऊपर की छाल का रंग भूरा होता है, भीतर के गर्भ का रंग सफेद होता है। इसमें बहुत छोटे-छोटे पीले फूल लगते हैं।

२ मेढ़ासिंगी का पेड़ बड़ा होता है। यह प्रायः पर्वतों पर पाया जाता है। इसके पत्ते फालसे की तरह होते हैं। फूल का रंग लाल होता है। इसकी फली लम्बी और गोल होती है।

३ गोभी का क्षुप होता है। इसके पत्ते लम्बे और खरखरे होते हैं। सुवर्ण के रंग का, चक्राकार इसका फूल होता है।

४ पान की बेल बड़ी सुहावनी और मनभावनी होती है। इसकी बेल कोटहियों और अगस्तिया के पेड़ों पर चढ़ा देते हैं। पान में बंगला, मगही, महोबवा अधिक सुप्रसिद्ध हैं। कहा जाता है, कि पान में जो तेरह गुण मौजूद हैं वे स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं—

'ताम्बूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः ।'

'विना पर्णं मुखे दत्वा गुवाकं भक्षयेद्यदि ।
तावद्भवति चाण्डालो यावद्गङ्गां न गच्छति ॥
अनिधाय मुखे पर्णं यः पूगं खादते नरः ।
मतिभ्रंशो दरिद्री स्यादन्ते न स्मरते हरिम् ॥'

अर्थात्—जो व्यक्ति बिना पान के केवल सुपारी खाते हैं वे जब तक गङ्गास्नान नहीं करते तब तक चाण्डाल हैं।

जो मनुष्य बिना पान के सुपारी खाते हैं उनकी अक्ल मारी जाती है, वे भिखारी हो जाते हैं और अन्त में नास्तिक हो जाते हैं ॥

ब्रह्मवैवर्तपुराण में यह बतलाया गया है कि विधवा महिलाओं, यतियों, ब्रह्मचारियों और तपस्वियों के लिए पान गोमांस के समान है। यथा—

'ताम्बूलं विधवा स्त्रीणां यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ।
तपस्विनां च विप्रेन्द्र ! गोमांससदृशं ध्रुवम् ॥'

५ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार 'रेणुका' के नाम—

'रेणुका कपिला कौन्ती हरेणुर्भस्मगन्धिका ।'

यह निर्गुण्डी, सम्हालू (जिसका उल्लेख पीछे ७० वें श्लोक में हो चुका है) के बीज का नाम है।

६ एलुआ एक सुगन्धित पदार्थ है। इसमें कूठ (इसके विषय में आगे के १२६ वें श्लोक में लिखा गया है) की तरह महक आती है।

७ यह सलई (जिसका पर्यायवाची शब्द आगे १२३ वें श्लोक में मिलेगा उस) के गोंद का नाम है, जैसा कि निघण्टु-रत्नाकर में लिखा है—

'वृक्षस्तु शल्लकीसंज्ञः पुष्टिकारी कषायकः ।
निर्यासोऽस्य मतो नाम्ना कुन्दुरुः सुभाषितः ॥'

(१) पालङ्की (२) मुकुन्द (३) कुन्द (४) कुन्दुरु । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, (२–३) पुँल्लिङ्ग (४) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥१२१॥

(पञ्च बालस्य)

बालं ह्रीबेर-बर्हिष्ठोदीच्यं केशाम्बुनाम च ।

[१]नेत्रवाला, गन्धवाला के ५ नाम—(१) बाल (२) ह्रीबेर (३) बर्हिष्ठ (४) उदीच्य (५) केशाम्बुनामन् । ये (१–५) नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(पञ्च शिलापुष्पस्य)

कालानुसार्य-वृद्धाऽश्मपुष्प-शीतशिवानि तु१२२ शैलेयम्

[२]पत्थर का फूल, भूरि छरीला के ५ नाम—(१) कालानुसार्य (२) वृद्ध (३) अश्मपुष्प (४) शीतशिव (५) शैलेय ॥१२२॥

(पञ्च मुराख्यसुगन्धिद्रव्यस्य)

तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा । गन्धिनी

[३]एकाङ्गी मुरा के ५ नाम—(१) तालपर्णी (२) दैत्या (३) गन्धकुटी (४) मुरा (५) गन्धिनी ।

(अष्टौ शल्लक्याः)

गजभक्ष्या तु सुवहा सुरभी रसा ॥१२३॥ महेरुणा कुन्दुरुकी सल्लकी ह्लादिनीति च ।

[४]सलई के ८ नाम—(१) गजभक्ष्या (२) सुवहा (३) सुरभी (४) रसा (५) महेरुणा (६) कुन्दुरुकी (७) सल्लकी (८) ह्लादिनी ॥१२३॥

(चत्वारि धातक्याः)

अग्निज्वाला-सुभिक्षे तु धातकी धातुपुष्पिका

[५]धाय, धवई के ४ नाम—(१) अग्नि-ज्वाला (२) सुभिक्षा (३) धातकी (४) धातु पुष्पिका [धातृपुष्पिका] ॥१२४॥

(पञ्च स्थूलैलायाः)

पृथ्वीका चन्द्रबालैला निष्कुटिर्बहुला

बड़ी इलायची के ५ नाम—(१) पृथ्वीका (२) चन्द्रबाला (३) एला (४) निष्कुटि (५) बहुला ।

(पञ्च सूक्ष्मैलायाः)

अथ सा । सूक्ष्मोपकुञ्चिका तुत्था कोरङ्गी त्रिपुटा त्रुटिः१२५

[६]गुजराती इलायची, छोटी इलायची, सफेद इलायची के ५ नाम—(१) उपकुञ्चिका (२) तुत्था (३) कोरङ्गी (४) त्रिपुटा (५) त्रुटि ॥१२५॥

(षट् कुष्ठस्य)

व्याधिःकुष्ठं पारिभाव्यं वाप्यं पाकलमुत्पलम् ।

इसका रंग सफेद और कुछ महक लिए होता है। इसके पर्यायवाची शब्द निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ये हैं—'पालङ्क्या कुन्दुरुः कुन्दुः सौराष्ट्री शिखरी बली ।'

कुछ लोगों ने इसका अर्थ 'पालक का साग' बतलाया है। यद्यपि 'पालङ्क्या' का अर्थ 'पालक का साग' होता है तथापि इसके पर्यायवाची शब्द कुन्दुरु के पर्यायवाची शब्द से नहीं मिलते । अतः उपरोक्त अर्थ मैंने लिखा ।

१ नेत्रवाला को 'केशाम्बुनामन्' कहते हैं अर्थात् बाल और पानी के जितने नाम हैं वे इसके भी पर्यायवाची हैं।

२ यद्यपि 'शैलेय' का अर्थ 'शिलाजीत' होता है किन्तु अन्य नामों की तुलना करने से निघण्टु ग्रन्थों के अनुकूल 'पत्थर का फूल' ही ठीक जँचता है।

३. इस एकाङ्गी मुरा का उल्लेख भावप्रकाश और निघण्टुरत्नाकर में पाया जाता है। भैषज्यरत्नावली में लिखा है 'किञ्चित् पीता मुरा शस्ता, मांसी पिङ्गजटाकृतिः ।' वैद्यक शब्दसिन्धु में लिखा है—'गुर्जरदेशे स्वनामख्यातगन्धद्रव्ये ।'

४. सलई का पेड़ बहुत बड़ा होता है। इसके पत्ते नीम के पत्तों की तरह होते हैं। फल में तीन रेखाएँ होती हैं। इसी पेड़ के गोंद को कुन्दरू कहते हैं।

५. धाय के पेड़ के पत्ते अनार के पत्तों की तरह होते हुए भी उससे किञ्चित् विभिन्नता रखते हैं। अनार के पत्ते अधिक नीलिमा वाले होते हैं किन्तु इसके पत्ते कुछ पीला-पन लिए खरखरे होते हैं। फूल में कली नहीं होती और उसका रंग लाल होता है।

६. छोटी इलायची का क्षुप होता है। इसके फूल श्वेत और लाल इलायची की सुगन्ध के सदृश होते हैं। इसके बीज काले और रसदार होते हैं।

[1]कूठ के ६ नाम—(१) व्याधि (२) कुष्ठ (३) पारिभाव्य (४) वाप्य (५) पाकल (६) उत्पल । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२–६) नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि शङ्खिन्याः)

शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात्केशिनी

[2]चोरहुली के ३ नाम—(१) शङ्खिनी (२) चोरपुष्पी (३) केशिनी ।

(षड् भूम्यामलक्याः)

अथ वितुन्नकः ॥१२६॥

झटामलाऽज्झटा ताली शिवा तामलकीति च ।

[3]भुँई अँवरा के ६ नाम—(१) वितुन्नक (२) झटामला [अथवा (अ) झटा (ब) अमला] (३) अज्झटा (४) ताली (५) शिवा (६) तामलकी ॥१२६॥

(द्वे 'पुण्डरिया' इति ख्यातस्य)

प्रपौण्डरीकं पुण्डर्यम्

[4]पुण्डेरी, पुण्डरिया के २ नाम—(१) प्रपौण्डरीक (२) पुण्डर्य ।

(षट् तुन्नकस्य)

अथ तुन्नः कुबेरकः ॥१२७॥

कुणिः कच्छः कान्तलको नन्दिवृक्षः

[5]तून के पेड़ के ६ नाम—(१) तुन्न (२) कुबेरक (३) कुणि (४) कच्छ (५) कान्तलक (६) नन्दिवृक्ष । ये (१–६) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१२७॥

(षट् चोराख्यगन्धद्रव्यस्य)

अथ राक्षसी ।

चण्डा धनहरी क्षेम-दुष्पत्र-गणहासकाः॥१२८॥

[6]चौरा, भटेउर के ६ नाम—(१) राक्षसी (२) चण्डा (३) धनहरी (४) क्षेम (५) दुष्पत्र (६) गणहासक ॥१२८॥

(चत्वारि व्याघ्रनखनामकगन्धद्रव्यस्य)

व्याडायुधं व्याघ्रनखं करजं चक्रकारकम् ।

[7]बाघ-नखा नामक गन्ध द्रव्य के ४ नाम—(१) व्याडायुध (२) व्याघ्रनख (३) करज (४) चक्रकारक ।

(सप्त नलीनामकगन्धद्रव्यस्य)

सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली १२९

धमन्यञ्जनकेशी च

[8]नली नामक गन्धद्रव्य के ७ नाम—(१) सुषिरा (२) विद्रुमलता (३) कपोतांघ्रि (४) नटी (५) नली (६) धमनी (७) अञ्जनकेशी ॥१२९॥

(सप्त नखाख्यगन्धद्रव्यस्य)

हनुर्हट्टविलासिनी ।

---

१. कूठ सिन्धुनदी के तट पर उत्पन्न होता है । यह वृक्ष की सुगन्धियुक्त जड़ है ।

२. चोरहुली के पर्यायवाची शब्द वैद्यकशब्दसिन्धु में ये दिये गये हैं—

अवाक्पुष्पी त्वधःपुष्पी मङ्गल्यामरपुष्पिका ।
केशिनी शङ्खिनी चोरपुष्पी राज्ञी च हेटली ॥

इसका क्षुप होता है । इसकी डंठी कुछ लाली लिए होती है । इसके पत्ते लम्बे, गोल और रोआँदार होते हैं । आसमानी रंग का, नीचे की ओर फल होता है ।

३. भुँई आँवले के छोटे-छोटे क्षुप होते हैं । इसके पत्तों के नीचे राई के दाने की तरह फलों की शाखा होती है ।

४. निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार इसके पर्यायवाची नाम—'प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं पुण्डर्यं पौण्डरीयकम् ।'

पुण्डरिया एक प्रकार का सुगन्धिवृक्ष होता है । इसके पेड़ शिमला में कालका के निकट पाये जाते हैं ।

५. जंगलों में तून के बड़े सघन पेड़ पाये जाते हैं । इसके पत्ते नीम के पत्तों से जरा बड़े होते हैं । इसके फूल बहुत छोटे-छोटे सफेद रंग के होते हैं ।

६. यह सुगन्धित द्रव्य 'ग्रन्थिक' (गठिवन) का भेद है । इसको नेपाल में भटेउर कहते हैं ।

७. भावप्रकाश में 'नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम्' कहा गया है । बाघ का नख औषधियों के प्रयोग में लिया जाता है ।

८. नली के, निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार, नाम—
'नलिका विद्रुमलता, कपोतचरणा नटी ।
धमन्यञ्जनकेशी च, निर्मध्या सुषिरा नली ॥

उत्तर भारत में इस सुगन्धद्रव्य को नली कहते हैं । इसका स्वरूप मूँगे की तरह होता है । कहीं-कहीं पवारी और प्रवाली नाम से भी विख्यात है ।

शुक्तिः शङ्खः खुरः कोलदलं नखम्

[1]नखी, छोटनखा नामक गन्ध द्रव्य के ७ नाम—(१) हनु (२) हट्टविलासिनी (३) शुक्ति (४) शङ्ख (५) खुर (६) कोलदल (७) नख। इनमें (१–३) स्त्रीलिङ्ग, (४–५) पुँल्लिङ्ग, (६–७) नपुंसक हैं।

(षट् तुवरिकायाः)

अथाढकी ॥१३०॥

काक्षी मृत्स्ना तुवरिका मृत्तालक-सुराष्ट्रजे।

[2]अरहर के ६ नाम—(१) आढकी (२) काक्षी (३) मृत्स्ना (४) तुवरिका (५) मृत्तालक (६) सुराष्ट्रज। इनमें (१–४) स्त्रीलिङ्ग, (५–६) नपुंसक हैं ॥१३०॥

(अष्टौ कैवर्तीमुस्तकस्य)

कुटन्नटं दाशपुरं वानेयं परिपेलवम् ॥१३१॥

प्लव-गोपुर-गोनर्द-कैवर्तीमुस्तकानि च।

[3]केवटी मोथा के ८ नाम—(१) कुटन्नट (२) दाशपुर (३) वानेय (४) परिपेलव (५) प्लव (६) गोपुर (७) गोनर्द (८) कैवर्तीमुस्तक। ये (१–८) नपुंसक हैं ॥१३१॥

(पञ्च ग्रन्थिपर्णस्य)

ग्रन्थिपर्णं शुकं बर्हिपुष्पं स्थौणेय-कुक्कुरे१३२

[4]गठिवन के ५ नाम—(१) ग्रन्थिपर्ण (२) शुक (३) बर्हिपुष्प (४) स्थौणेय (५) कुक्कुर। ये (१–५) नपुंसक हैं ॥१३२॥

(दश 'असवरग' इति ख्यातस्य)

मरुन्माला तु पिशुना स्पृक्का देवी लता लघुः।

समुद्रान्ता वधूः कोटिवर्षा लङ्कोपिकेत्यपि १३३

[5]असवरग के १० नाम—(१) मरुन्माला (२) पिशुना (३) स्पृक्का (४) देवी (५) लता (६) लघु (७) समुद्रान्ता (८) वधू (९) कोटिवर्षा (१०) लंकोपिका। ये (१–१०) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१३३॥

(पञ्च जटामांस्याः)

तपस्विनी जटामांसी जटिला लोमशा मिशी।

[6]बालछड़, जटामांसी के ५ नाम—(१) तपस्विनी (२) जटामांसी (३) जटिला (४) लोमशा (५) मिशी।

(षट् त्वक्पत्रस्य)

त्वक्पत्रमुत्कटं भृङ्गं त्वचं चोचं वराङ्गकम् ॥१३४

[7]तज, दालचीनी के ६ नाम—(१) त्वक्पत्र

---

१. छोटा नख—जिसे नखी कहते हैं—के पर्यायवाची शब्द भावप्रकाश के अनुसार—

नखं स्वल्पं नखी प्रोक्ता, हनुर्हट्टविलासिनी।

'नखी' गन्धद्रव्य नदी के जीवों का नख होता है। इसे धूप में और सुगन्धि तैलादि में देते हैं। 'नखी' पाँच प्रकार की होती है—

'नखी पञ्चविधा ज्ञेया गन्धार्था गन्धवत्परैः।
क्वचिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदला मता॥
काचिदश्वखुराकारा गजकर्णसमाऽपरा।
वराहकर्णसंकाशा पञ्चमे परिकीर्तिता॥'

२. अरहर की खेती सुप्रसिद्ध ही है।

३. केवटीमोथा तृण जाति की है। इसकी जड़ के अन्दर से सुगन्धि आती है।

४. निघण्ट ग्रंथों के अनुसार गठिवन के नाम—

'ग्रन्थिपर्णं बर्हिपुष्पं स्थौणेयं ग्रंथिपर्णकम्।

यह सुगंधित पदार्थ है। शरीर पर लेप करने से यह रूखापन पैदा करता है।

५. निघण्टु ग्रंथों के अनुसार असवरग के नाम—

'स्पृक्का लता कोटिवर्षा मरुन्माला लता मरुत्।
लङ्कारिका समुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका॥'

६. जटामांसी गुल्मजाति की वनस्पति है। यह हिमालय के जङ्गलों में पैदा होती है। इसके पत्ते सरजीवन की तरह होते हैं। फूल का रंग गुलाबी होता है। इसकी जड़ में धूसर वर्ण के रोएँ जमे रहते हैं।

७. सिंहलद्वीप, सुमात्रा टापू, जावा टापू, मलावार, कोचीन, चीन आदि में तज बहुत होता है। इसके छोटे-छोटे पेड़ होते हैं। इसके पत्तों की आकृति तमालपत्रों की तरह होती है। जिनमें से, सूख जाने पर, लौंग की तरह महँक आती है। वृक्ष की डंठी के ऊपर सफेद फूल लगते हैं। जिनमें से गुलाब के फूल की तरह महँक आती है। करौंदे की भाँति इसके फल होते हैं। पेड़ की पतली छाल को ही दालचीनी कहते हैं।

(२) उत्कट (३) भृङ्ग (४) त्वच (५) चोच (६) वराङ्गक ॥१३४॥

(चत्वारि कर्चूरकस्य)

कर्चूरको द्राविडकः काल्पको वेधमुख्यकः ।

[१]कचूर, काली हल्दी के ४ नाम—(१) कर्चूरक (२) द्राविडक (३) काल्पक (४) वेधमुख्यक ।

ओषध्यो जातिमात्रे स्युः

जैसा पहले ६ठें श्लोक में कह आये हैं कि 'ओषधिः फलपाकान्ता' है अर्थात् जो वृक्ष फल लगने के अनन्तर सूख जाते हैं, उन्हें 'ओषधि' कहते हैं, जैसे गेहूँ जौ इत्यादि । तो जाति मात्र में ही 'ओषधि शब्द का प्रयोग होता है, ऐसा समझना । यह भी स्मरण रखना कि यहाँ पर बहुवचन के विवक्षा ही से 'ओषध्यः' कहा गया है, यह नित्य बहुवचनान्त नहीं होता ।

अजातौ [२]सर्वमौषधम् ॥१३५॥

जिस ओषधि से केवल रोगहरण ही होवे और कोई दूसरा अभिप्राय न हो तो उसे 'औषध' कहते हैं । किञ्च केवल 'ओषधि' ही 'औषध' शब्द की वाच्या नहीं है; किन्तु रोग-हरण के कारण घृत-मधु-त्रिफला के काढ़ा आदि को भी 'औषध' कहेंगे । यह बात 'सर्वम्' विशेषण से विदित होती है ॥१३५॥

(एकं भोजनसाधनस्य पुष्पादेः)

[३]शाकाख्यं पत्रपुष्पादि

पत्र-पुष्प (मूल, वंशाङ्कुर, अग्र, फल, नाल, बीजाङ्कुर त्वक्, छत्राक) आदि का नाम—(१) शाक । (नपुंसक)

(द्वे तण्डुलीयस्य)

तण्डुलीयोऽल्पमारिषः ।

[४]चौराई के शाक के २ नाम—(१) तण्डुलीय (२) अल्पमारिष ।

(पञ्चाग्निशिखायाः)

विशल्याऽग्निशिखाऽनन्ता फलिनी शक्रपुष्पिका

[५]कलिहारी कन्द के ५ नाम—(१) विशल्या (२) अग्निशिखा (३) अनन्ता (४) फलिनी (५) शक्रपुष्पिका ॥१३६॥

(पञ्च वृद्धदारकस्य)

स्यादृक्षगन्धा छगलान्त्र्यावेगी वृद्धदारकः । जुङ्गः

[६]विधारा के ५ नाम—(१) ऋक्षगन्धा (२) छगलान्त्री (३) आवेगी (४) वृद्धदारक (५) जुङ्ग । इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग, (४-५) पुँल्लिङ्ग हैं ।

---

१. हल्दी के खेतों में अपने आप कचूर का क्षुप पैदा होता है । इसके पत्ते हल्दी की तरह होते हैं । इसके तले आम्रगन्ध हरिद्रा (अँबिया हल्दी) की तरह गाँठ होती है । इन्हीं गाँठों को धूप में सुखाते हैं । उसी गाँठ को कचूर कहते हैं । कचूर सफेद होता है और हल्दी पीली होती है ।

२ 'वैद्यो व्याधिं हरेद्येन तद्द्रव्यं प्रोक्तमौषधम्'— इत्यत्रिः । औषधं पञ्चविधम्—'तच्च पञ्चविधं प्रोक्तं स्वसंयोग-विशेषतः । रसश्चूर्णं कषायश्चावलेहः कल्क इत्यपि ॥ तच्च पुनर्द्विविधं शोधनशमनलक्षणम् । तयोः शोधनरूपं वस्ति-विरेकवमनम् । शमनरूपं तैलघृतमधुरूपम् ।

३ मूल-पत्र-करीराग्र-फल-काण्डाधिरूढकम् । त्वक् पुष्पं कवचं चैव शाकं दशविधं स्मृतम् ॥

४ साग के विषय में कहा जाता है कि सब प्रकार के साग नेत्रों को अहितकारी हैं; किन्तु जीवन्ती, बथुआ, मछेछी, चौराई और गदहपूर्णा के साग हितकारी हैं । 'शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं शाकपञ्चकम् । जीवन्ती वस्तु मत्स्याक्षी मेघनादः पुनर्नवा ॥'

५ कलिहारी लांगुली कन्द को कहते हैं । यह शिमला में कालका के निकट टकसाल में होती है । कलिहारी के नीचे हल्दी की तरह मोटी-मोटी गाँठें निकलती हैं और ऊपर लंगूर की पूँछ की तरह एक ही लंगूर सी निकलती है । ऊपर लाल और पीला फूल होता है । इसे कलिहारी कहते हैं । इसका कन्द स्त्री के हाथ में सुखपूर्वक प्रसव होने के लिए बाँध दिया जाता है ।

६ विधारा समुद्रशोष से मिलता जुलता है । दोनों के फूल, पत्ते, बेल, काण्ड इत्यादि में रश्चमात्र भी अन्तर नहीं है ।

(चत्वारि ब्राह्मयाः)

ब्राह्मी तु मत्स्याक्षी वयस्था सोमवल्लरी ॥१३७॥

¹ब्राह्मी के ४ नाम—(१) ब्राह्मी (२) मत्स्याक्षी (३) वयस्था (४) सोमवल्लरी ॥१३७॥

(चत्वारि 'सत्यानासी' इति ख्यातायाः)

पट्टुपर्णी हैमवती स्वर्णक्षीरी हिमावती ।

²सत्यानासी कटेरी के ४ नाम—(१) पट्टुपर्णी (२) हैमवती (३) स्वर्णक्षीरी (४) हिमावती ।

(चत्वारि माषपर्ण्याः)

हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ॥

³जङ्गली उड़द (मषवन) के ४ नाम—(१) हयपुच्छी (२) काम्बोजी (३) माषपर्णी (४) महासहा ॥१३८॥

(चत्वारि 'कन्दूरी' इति ख्यातायाः)

तुरिण्डकेरी रक्तफला बिम्बिका पीलुपर्ण्यपि ।

⁴कन्दूरी के ४ नाम—(१) तुरिण्डकेरी (२) रक्तफला (३) बिम्बिका (४) पीलुपर्णी ।

(पञ्च वनतुलसिकायाः)

बर्बरा कबरी तुङ्गी खरपुष्पाऽजगन्धिका ॥१३९॥

⁵वनतुलसी के ५ नाम—(१) बर्बरा (२) कबरी (३) तुङ्गी (४) खरपुष्पा (५) अजगन्धिका ॥१३९॥

(चत्वारि एलापर्ण्याः)

एलापर्णी तु सुवहा रास्ना युक्तरसा च सा ।

⁶रास्ना के ४ नाम—(१) एलापर्णी (२) सुवहा (३) रास्ना (४) युक्तरसा ।

(पञ्च 'अम्ल लोनिया' इति ख्यातायाः)

चाङ्गेरी चुक्रिका दन्तशठाम्बष्ठाऽम्ललोणिका १४०

अम्ल लोनिया, चाङ्गेरी के ५ नाम—(१) चाङ्गेरी (२) चुक्रिका (३) दन्तशठा (४) अम्बष्ठा (५) अम्ललोणिका ॥१४०॥

(चत्वारि अम्लवेतसस्य)

सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।

⁷अमलबेंत के ४ नाम—(१) सहस्रवेधिन् (२) चुक्र (३) अम्लवेतस (४) शतवेधिन् । ये (१-४) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(चत्वारि 'लज्जावन्ती' इति ख्यातायाः)

नमस्कारी गण्डकारी समङ्गा खदिरेत्यपि १४१

⁸लज्जावन्ती, छुईमुई के ४ नाम—(१)

---

१ ब्राह्मी के नाम—'ब्राह्मी वयस्था मत्स्याक्षी सुरसा सोमवल्लरी ।' ब्राह्मी के क्षुप का छत्तासा प्रायः नम जमीन या सरोवर आदि के सन्निकट होता है । इसके पत्ते छोटे-छोटे गोल एक ओर से खिले हुए होते हैं । यह स्मरण-शक्तिवर्द्धक है ।

२ सत्यानासी कटेरी के पर्यायवाची शब्द निघण्टु ग्रन्थों में ये हैं—

'स्वर्णक्षीरी हेमशिखा पट्टुपर्णी हिमावती ।
हैमवती पीतपुष्पा तन्मूलं चोक उच्यते ॥'

काँटेदार इसका क्षुप होता है । पत्तों के ऊपर और फलों पर काँटे होते हैं । फूल पीला होता है । दूध का रंग स्वर्ण के रंग का होता है, यथा—

कण्टकी कण्टपत्रा च, पीतपुष्पा क्षुपा भवेत् ।
स्वर्णक्षीरी कण्टफला कृष्णबीजा च सुस्थिरा ॥

३ समतल देश की माषपर्णी के नीचे साधारण जड़ होती है । पत्ते वगैरः मूँग की तरह होते हैं ।

४ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार कन्दूरी के नाम—

बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डिकेरी च बिम्बिका ।
ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥

कन्दूरी बागों में बोई जाती है । इसके पत्ते तीन अनो वाले होते हैं ।

५ वनतुलसी जंगलों में होती है । इसके पत्ते पियाबाँसे की तरह छोटे और नीम के पत्तों की तरह कंगूरेवाले होते हैं । पीलापन लिए और सुगन्धित इसका फूल होता है ।

६ रास्ना के लिए ११४ वें श्लोक की टिप्पणी देखिए ।

७ अमलबेंत के पेड़ बागों में बहुत होते हैं । इसका आकार मध्यम होता है । इसमें सफेद रंग के फूल लगते हैं । इसका चिकना फल खरबूजे के आकार की तरह गोल होता है, जो कच्ची अवस्था में हरे और पक जाने पर पीले हो जाते हैं ।

८ लज्जावन्ती के क्षुप बेल की तरह होते हैं । मनुष्य को स्पर्श करते ही लज्जा के मारे सिकुड़ कर नीचे की ओर झुक जाता है । इसी से इसे लज्जावन्ती कहते हैं । इसकी जड़ लाल होती है । इसके पत्ते छोंकर या खैर के पत्तों की तरह होते हैं । इसके फूल नीला रंग मिला हुआ गुलाबी रंग के होते हैं ।

नमस्कारी (२) गराडकारी (३) समङ्गा (४) खदिरा ॥१४१॥

(पञ्च जीवन्त्याः)

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवनीया मधुस्रवा ।

[१]जीवन्ती के ५ नाम—(१) जीवन्ती (२) जीवनी (३) जीवा (४) जीवनीया (५) मधुस्रवा ।

(पञ्च जीवकस्य)

कूर्चशीर्षो मधुरकः शृङ्ग-ह्रस्वाङ्ग-जीवकाः ॥१४२

[२]जीवक के ५ नाम—(१) कूर्चशीर्ष (२) मधुरक (३) शृङ्ग (४) ह्रस्वाङ्ग (५) जीवक ॥१४२॥

(त्रीणि चिरात्तिक्तस्य)

किराततिक्तो भूनिम्बोऽनार्यतिक्तः

चिरायता के ३ नाम—(१) किराततिक्त (२) भूनिम्ब (३) अनार्यतिक्त ।

(पञ्च सप्तलायाः)

अथ सप्तला ।

विमला शातला भूरिफेना चर्मकषेत्यपि॥१४३॥

[३]सातला के ५ नाम—(१) सप्तला (२) विमला (३) शातला (४) भूरिफेना (५) चर्मकषा ॥१४३॥

(त्रीणि वायसोल्याः)

वायसोली स्वादुरसा वयस्था

[४]काकोली के ३ नाम—(१) वायसोली (२) स्वादुरसा (३) वयस्था ।

(पञ्च मकूलकस्य)

अथ मकूलकः ।

निकुम्भो दन्तिका प्रत्यक्श्रेण्युदुम्बरपर्ण्यपि॥

[५]छोटी दन्ती के ५ नाम—(१) मकूलक (२) निकुम्भ (३) दन्तिका (४) प्रत्यक्श्रेणी (५) उदुम्बरपर्णी ॥१४४॥

(द्वे अजमोदायाः)

अजमोदा तूग्रगन्धा

[६]अजमोदा के २ नाम—(१) अजमोदा (२) उग्रगन्धा ।

(द्वे यवानिकायाः)

ब्रह्मदर्भा यवानिका ।

[७]अजवायन के २ नाम—(१) ब्रह्मदर्भा (२) यवानिका ।

---

१ जीवन्ती की बेल होती है। यह जीवन्ती-बृहज्जीवन्ती, स्वर्णजीवन्ती, तिक्तजीवन्ती-आदि कई जाति की होती है। इसमें आक के समान दूध निकलता है।

२ यह अष्टवर्गान्तर्गत है। इस वर्ग में सात द्रव्य और होते हैं। जिनके ये नाम हैं:—

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ वृद्धि-ऋद्धिके ।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः ॥

अर्थात्-चरक आदि महर्षि (१) जीवक (२) ऋषभक [देखिए ११६ वाँ श्लोक], (३) मेदा (४) महामेदा (५) काकोली [देखिए १४४ वाँ श्लोक] (६) क्षीरकाकोली (७) वृद्धि (८) ऋद्धि [देखिए ११२ वाँ श्लोक]—इन एकत्र मिले हुए आठ द्रव्यों को अष्टवर्ग कहते हैं।

कैयदेवनिघण्टु में लिखा है—

'जीवन्तीसदृशैः पत्रैर्जीवको गुल्मकः स्मृतः ।
कण्टी क्षीरी तथाऽनूपे भवतीत्यब्रवीन्मुनिः ॥'

अर्थात्—जीवक का गुल्म अनूप देश में होता है। इसका पत्ता जीवन्ती की तरह होता है। यह बारीक काँटेदार होता है। इसमें दूध रहता है।

३ सातला के नाम वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार—

'सातला सप्तला सारा विमला विदुला च सा ।
तथा निगदिता भूरिफेना चर्म्मकषेत्यपि ॥'

सातला की बेल जङ्गलों में होती है। इसके पत्ते खैर के पत्तों की तरह छोटे होते हैं। इसका फूल पीला होता है और पीले रंग का दूध भी निकलता है।

४ निघण्टु ग्रन्थों में लिखा है कि काकोली दो प्रकार की होती है—(१) काकोली (२) क्षीर काकोली। यह मोरङ्ग आदि देशों में उत्पन्न होती है। कन्द सतावर की तरह होता है। और सुगन्धियुक्त दूध निकलता है।

५ दन्ती का क्षुप होता है। इसके पत्ते गूलर के आकार के होते हैं। फूल महुए की तरह होता है। इसका फल जमालगोटा है।

६ अजमोदा के सम्बन्ध में श्लोक १११ की टिप्पणी देखिए।

७ वैद्यक ग्रन्थों में अजवायन के पर्यायवाची शब्द ये बतलाए गए हैं—

(त्रीणि पुष्करमूलस्य)

मूले पुष्कर-काश्मीर-पद्मपत्राणि पौष्करे॥१४५॥

[1]पोहकर-मूल के ३ नाम—(१) पुष्कर (२) काश्मीर (३) पद्मपत्र ॥१४५॥

(पञ्च उत्तरदेशे प्रसिद्धायाः 'पद्मचारिण्याः स्थल-कमलिनी' इति ख्यातायाः)

अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी।

[2]स्थल कमलिनी के ५ नाम—(१) अव्यथा (२) अतिचरा (३) पद्मा (४) चारटी (५) पद्मचारिणी।

(पञ्च काम्पिल्यस्य)

काम्पिल्यः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनीत्यपि

[3]कबीला के ५ नाम—(१) काम्पिल्य (२) कर्कश (३) चन्द्र (४) रक्ताङ्ग (५) रोचनी ॥१४६॥

(षट् पद्माटस्य)

प्रपुन्नाडस्त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दकः।
पद्माट उरणाख्यश्च

[4]चकवड़ (पवाड, पमार) के ६ नाम—(१) प्रपुन्नाड (२) एडगज (३) दद्रुघ्न (४) चक्रमर्दक (५) पद्माट (६) उरणाख्य।

'यवानी दीप्यको दीप्यो भूतिकश्च यवानिका।'

कोई कोई 'अजमोदा⋯⋯यवानिका' इन चारों को अजवायन के पर्यायवाची शब्द मानते हैं। पारसी और खुरासानी अजवायन प्रसिद्ध है।

१ यह पुष्कर औषधि की सुगन्धयुक्त जड़ है।

२ स्थलकमल भी कमल की तरह होता है। किन्तु इसमें यह विशेषता है कि यह जमीन पर होता है। आकृति कमल के तुल्य होती है। परन्तु इसके पत्ते, फूल, फल उससे छोटे होते हैं।

३ पहाड़ों पर इसके पेड़ बहुत होते हैं। इसके पत्ते गूलर की तरह होते हैं। इसके फल छोटे बेर के आकार के होते हैं। उन पर लाल धूलि जमी रहती है, जिन्हें कबीला कहते हैं।

४ चकवड़ का क्षुप होता है। इसके पत्ते गोल-गोल और एक-एक डण्ठी में पाँच होते हैं। इसका साग खाया जाता है। इसका फूल पीला होता है। उस पर फली लगती है।

(द्वे पलाण्डोः)

पलाण्डुस्तु सुकन्दकः ॥१४७॥

प्याज के २ नाम—(१) पलाण्डु (२) सुकन्दक ॥१४७॥

(द्वे हरिद्वर्णपलाण्डोः)

लतार्क-द्रुद्रुमौ तत्र हरिते

हरे रंग के प्याज के २ नाम—(१) लतार्क (२) द्रुद्रुम।

(षट् लशुनस्य)

अथ महौषधम्।
लशुनं गृञ्जनारिष्ट-महाकन्द-रसोनकाः ॥१४८॥

[5]लहसुन के ६ नाम—(१) महौषध (२) लशुन (३) गृञ्जन (४) अरिष्ट (५) महाकन्द (६) रसोनक ॥१४८॥

(द्वे 'गदहपूर्णा' इति ख्यातायाः)

पुनर्नवा तु शोथघ्नी

[6]गदहपुन्ना, विषखपरा के २ नाम—(१) पुनर्नवा (२) शोथघ्नी।

(द्वे वितुन्नस्य)

वितुन्नं सुनिषण्णकम्।

[7]चौपतिया, उटिंगन के २ नाम—(१) वितुन्न (२) सुनिषण्णक।

(चत्वारि शणपर्ण्याः)

स्याद्वातकः शीतलोऽपराजिता शणपर्ण्यपि१४९

५ भावप्रकाश में लिखा है कि लहसुन भक्षण करने-वालों को चाहिए कि निम्नलिखित बातों को छोड़ देवें—(१) कसरत (२) धूप में घूमना (३) क्रोध करना (४) बहुत पानी पीना (५) दुग्धपान (६) गुड।

'व्यायाममातपं रोषमतिनीरं पयो गुडम्।
रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् ॥'

६ गदहपूर्णा का क्षुप पृथ्वी पर फैला हुआ होता है। इसके पत्ते गोल और लाल किनारेदार होते हैं। इसका फूल लाल होता है। सफेद फूलवाले क्षुप को विषखपरा कहते हैं।

७ चौपतिया के साग का छत्ता क्षुप के समान नम जमीन पर होता है। इसके पत्ते चार और चांगेरी की तरह होते हैं।

असनपर्णी, पटसन के ४ नाम—(१) वातक (२) शीतल (३) अपराजिता (४) शणपर्णी ॥१४९॥

(पञ्च ज्योतिष्मत्याः)

पारावताङ्घ्रिः कटभी पण्या ज्योतिष्मती लता ।

[१]माल कांगुनी के ५ नाम—(१) पारावताङ्घ्रि (२) कटभी (३) पण्या (४) ज्योतिष्मती (५) लता । ये (१–५) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(चत्वारि त्रायमाणायाः)

वार्षिकं त्रायमाणा स्यात्त्रायन्ती बलभद्रिका ॥

[२]त्रायमन के ४ नाम—(१) वार्षिक (२) त्रायमाणा (३) त्रायन्ती (४) बलभद्रिका ॥१५०॥

(चत्वारि वाराह्याः)

विष्वक्सेनप्रिया गृष्टिर्वाराही बदरेत्यपि ।

[३]वाराहीकन्द के ४ नाम—(१) विष्वक्सेनप्रिया (२) गृष्टि (३) वाराही (४) बदरा ।

(द्वे भृङ्गराजस्य)

मार्कवो भृङ्गराजः स्यात्

[४]भँगरैया के २ नाम—(१) मार्कव (२) भृङ्गराज ।

(द्वे काकमाच्याः, 'मकोय' इति ख्यातस्य)

काकमाची तु वायसी ॥१५१॥

[५]मकोय के २ नाम—(१) काकमाची (२) वायसी ॥१५१॥

(सप्त मधुरायाः)

शतपुष्पा सितच्छत्राऽतिच्छत्रा मधुरा मिसिः । अवाक्पुष्पी कारवी च

[६]सौंफ के ७ नाम—(१) शतपुष्पा (२) सितच्छत्रा (३) अतिच्छत्रा (४) मधुरा (५) मिसि (६) अवाक्पुष्पी (७) कारवी ।

(पञ्च प्रसारिण्याः)

सरणा तु प्रसारिणी ॥१५२॥

तस्यां कटम्भरा राजबला भद्रबलेत्यपि ।

[७]पसरन के ५ नाम—(१) सरणा (२) प्रसारिणी (३) कटम्भरा (४) राजबला (५) भद्रबला ॥१५२॥

(षट् जतूकायाः)

जनी जतूका रजनी जतुकृच्चक्रवर्तिनी ॥१५३॥ संस्पर्शा

[८]पनड़ी, जनी के ६ नाम—(१) जनी (२) जतूका (३) रजनी (४) जतुकृत् (५) चक्रवर्तिनी (६) संस्पर्शा । ये (१–६) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१५३॥

---

१ माल कौंगुनी की बेल होती है। इसके पत्ते गोल और कुछ अनीदार होते हैं।

२ इसके पत्ते गोभी की तरह, पृथ्वी पर फैले हुए होते हैं। बीच में दो दण्डी सी निकलती है। बीजों को त्रायमान कहते हैं। बहुत-से लोग भ्रम के कारण इसे गुलबनपसा कहते हैं।

३ यह कन्द अनूपदेश में होता है। यह गुड़ की भेली की तरह मालूम होता है। इसके पत्ते कँटीले और बड़े-बड़े अनीदार होते हैं। इसके ऊपर सूअर के समान बाल होते हैं, इसीलिए इसे वाराही कन्द कहते हैं।

४ भँगरैया का क्षुप प्रायः नम जमीन पर होता है। इसके पत्ते खरखरे होते हैं। पत्तों का रस काला होता है। सफेद, पीले और काले फूल की विभिन्नता से यह तीन जाति की होती है।

५ वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार मकोय के नाम -
'काकमाची ध्वांक्षमाची वायसी च घनाघना ।'
मकोय का क्षुप होता है। इसके पत्ते गोल और लम्बे होते हैं। फूल का आकार छोटा तथा वर्ण श्वेत होता है। इसके फल चोटली की तरह गोल और गुच्छों में आते हैं।

६ सौंफ के कुछ पर्यायवाची शब्द सोया के साग के पर्यायवाची शब्द से मिलते हैं। सौंफ का क्षुप सोया की तरह खेतों और बागों में होता है।

७ पसरन की आकृति आदि के सम्बन्ध में वैद्यों में मतभेद हैं। राजनिघण्टु में यह 'मलविष्टम्भहारिणी' कही गयी है।

८ वैद्यक शब्दसिन्धु में लिखा है कि यह 'मालवदेशप्रसिद्धस्वनामख्यातलता' है। इसके पर्यायवाची शब्द हैं-
"जतुका रञ्जनी कृष्णा पर्पटी चक्रवर्तिनी ।
जतुकृज्जनिसंस्पर्शा जनेष्टा जननी तथा ॥"

(पञ्च गन्धमूल्याः)

अथ शटी गन्धमूली षड्ग्रन्थिकेत्यपि ।
कर्चूरोऽपि पलाशः

[1]छोटा कचूर, कपूर कचरी, गन्धपलाशी के ५ नाम—(१) शटी (२) गन्धमूली (३) षड्ग्रन्थिका (४) कर्चूर (५) पलाश ।

(त्रीणि कारवेल्लस्य)

अथ कारवेल्लः कठिल्लकः ॥१५४॥
सुषवी च

करैला के ३ नाम—(१) कारवेल्ल (२) कठिल्लक (३) सुषवी ॥१५४॥

(चत्वारि तिक्तपटोलस्य)

अथ कुलकं पटोलस्तिक्तकः पटुः ।

[2]कड़वा परवल के ४ नाम—(१) कुलक (२) पटोल (३) तिक्तक (४) पटु ।

(द्वे कूष्माण्डस्य)

कूष्माण्डकस्तु कर्कारुः

[3]कोहड़ा के २ नाम—(१) कूष्माण्ड (२) कर्कारु ।

(द्वे कर्कट्याः)

उर्वारुः कर्कटी स्त्रियौ ॥१५५॥

[4]ककड़ी के २ नाम—(१) उर्वारु [इर्वारु, ईर्वारु ईर्वालु, एर्वारु] (२) कर्कटी इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग में भी होता है)। ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग है ॥१५५॥

(द्वे कटुतुम्ब्याः)

इक्ष्वाकुः कटुतुम्बी स्यात्

[5]तितलौकी, कड़वी लौआ के २ नाम—(१) इक्ष्वाकु (२) कटुतुम्बी । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे 'लौकी' इति ख्यातायाः)

तुम्ब्यलाबूरुभे समे ।

[6]लौकी, लौआ, कद्दू के २ नाम—(१) तुम्बी (२) अलाबू । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि गोडुम्बायाः)

चित्रा गवाक्षी गोडुम्बा

[7]गोमा ककड़ी के ३ नाम—(१) चित्रा (२) गवाक्षी (३) गोडुम्बा ।

(द्वे इन्द्रवारुण्याः)

विशाला त्विन्द्रवारुणी ॥१५६॥

[8]इन्द्रायन के २ नाम—(१) विशाला (२) इन्द्रवारुणी ॥१५६॥

(त्रीणि सूरणस्य)

अर्शोघ्नः सूरणः कन्दः

सूरन के ३ नाम—(१) अर्शोघ्न (२) सूरण (३) कन्द ।

(द्वे गण्डीराख्यशाकभेदस्य, कटुसूरणस्य वा)

गण्डीरस्तु समष्ठिला ।

[9]गण्डीर साग वा कड़वे सूरन के २ नाम—(१) गण्डीर (२) समष्ठिला ।

---

१ भावप्रकाश में गन्धपलाशी के पर्यायवाची शब्द ये बतलाये गये हैं—

'शठी पलाशी षड्ग्रन्था सुव्रता गन्धमूलिका ।
गन्धारिका गन्धवधूर्वधूः पृथुपलाशिका ॥'

इसकी बेल होती है। सुगन्धियुक्त कन्द की तरह इसकी जड़ होती है। टुकड़ा-टुकड़ा करके जब उसे सुखा लेते हैं तब उसे कपूरकचरी कहते हैं।

२ परवल—मीठा, कड़वा—दो प्रकार का होता है। कड़वा परवल का उपयोग औषधि में होता है। इसके फूल सफेद होते हैं। फल नीले और पकने पर लाल हो जाते हैं।

३ कोहड़ा की बेल होती है। यह सब जगह बोया जाता है। इसका बड़ा और नीला फल होता है।

४ ककड़ी अनेक जाति की होती है, किन्तु सबसे उत्तम ग्रीष्मऋतु की ककड़ी होती है।

५ तितलौकी की बेल होती है। फूल सफेद होते हैं।

६ इसकी भी बेल तितलौकी की तरह होती हैं। फूल और फल भी उसी प्रकार लगते हैं।

७ यह ग्रीष्मऋतु में उत्पन्न होती है।

८ इन्द्रायन अधिकतया खारी जमीन में होती है। इसके फूल काँटेदार और लाल रङ्ग के होते हैं। इसके फल पीले रङ्ग के और लम्बे पत्ते बीच-बीच में कटे हुए होते हैं। इन्द्रायन जुलाब देने के काम में आता है।

९ गण्डीर नाम का साग भी होता है और यह वैद्यक निघण्टु के अनुसार कड़वे सूरन का भी नाम है।

(एकं 'करेमू' इतिख्यातस्य)

कलम्बी

¹करेमू के साग का नाम—(१) कलम्बी। (स्त्रीलिङ्ग)

(एकं 'पोई' इति ख्यातस्य)

उपोदिका

²पोई के साग का नाम—(१) उपोदिका।

(एकं 'मूली' इति ख्यातस्य)

अस्त्री तु मूलकं

मूली के साग का नाम—(१) मूलक (पुँल्लिङ्ग-नपुंसक)।

(एकं 'हुरहुल' इतिख्यातस्य)

हिलमोचिका ॥१५७॥

³हुरहुल के साग का नाम—(१) हिलमोचिका ॥१५७॥

(एकं 'बथुआ' इति ख्यातस्य)

वास्तुकम्

⁴बथुआ के साग का नाम—(१) वास्तुक।

शाकभेदाः स्युः

ये (कलम्बी-उपोदिका-मूलक-हिलमोचिका-वास्तुक) साग के भेद हैं।

(षट् दूर्वायाः)

दूर्वा तु शतपर्विका।

सहस्रवीर्या-भार्गव्यौ रुहाऽनन्ता

⁵दूब के ६ नाम—(१) दूर्वा (२) शतपर्विका (३) सहस्रवीर्या (४) भार्गवी (५) रुहा (६) अनन्ता।

(चत्वारि श्वेतदूर्वायाः)

अथ सा सिता ॥१५८॥

गोलोमी शतवीर्या च गण्डाली शकुलाक्षकः।

⁶सफेद दूब के ४ नाम—(१) गोलोमी (२) शतवीर्या (३) गण्डाली (४) शकुलाक्षक ॥१५८॥

(चत्वारि मुस्तायाः)

कुरुविन्दो मेघनामा मुस्ता मुस्तकमस्त्रियाम् १५९

⁷मोथा के ४ नाम—(१) कुरुविन्द (२) मेघनामन् (३) मुस्ता (४) मुस्तक। इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग, (३) स्त्रीलिङ्ग (४) पुंल्लिङ्ग-नपुंसक में होता है ॥१५९॥

(द्वे भद्रमुस्तकस्य)

स्याद्भद्रमुस्तको गुन्द्रा

⁸भद्रमोथा के नाम—(१) भद्रमुस्तक (२) गुन्द्रा। इनमें (१) पुंल्लिङ्ग, (२) स्त्रीलिङ्ग है।

---

१ करेमू का साग खेतों में होता है। पोर से तोड़ कर बालक लोग साग की डंठो की सीटां बजाते हैं।

२ इसकी बेलि सब जगह पैदा हो जाती है। बेलि का रङ्ग सफेद और लाल होता है। इसके पत्ते गोल और बीज लाल होते हैं।

३ हुरहुल का आकार ब्राह्मी के समान होता है। हुरहुल जलाशय के समीपवर्ती स्थानों में होता है। इसका फूल छोटा छोटा और नीले रंग का होता है। इसका साग, भावप्रकाश के अनुसार, सूजन, कोढ़, कफ और पित्त को दूर करता है।

४ बथुआ के सम्बन्ध में पहले लिखा जा चुका है कि इसका साग नेत्रों को हितकारी है। इसीसे इसे 'शाकानामपि चोत्तमः' कहते हैं। इसके पत्तों में खार अधिक होता है। यह जौ और गेहूँ के खेत में बहुत पैदा होता है।

५ उपवनों में नीली (हरी) दूब होती है। यह पृथ्वी पर ही छत्ते सी फैल जाती है। पत्ते नालों पर छोटे-छोटे और लम्बे-लम्बे लगे होते हैं।

६ इसकी आकृति आदि उपरोक्त दूब के अनुसार ही होती है इसका छत्ता नीली दूब ही के यहाँ हो जाता है। इसका रङ्ग सफेद होता है।

७ भावप्रकाश में लिखा है कि—

'अनूपदेशे यज्जातं मुस्तकं तत्प्रशस्यते।
तत्रापि मुनिभिः प्रोक्तं वरं नागरमुस्तकम् ॥'

अर्थात्—यद्यपि अनूप देश में उत्पन्न होने वाला मोथा श्रेष्ठ होता है तथापि मुनियों ने नागरमोथा को उत्तम बतलाया है।

मेघ के जितने पर्यायवाची नाम (अम्बुवाह, तोयद, स्तनयित्नु आदि) हैं वे इसके भी हैं।

८ भद्रमोथा सजल भूमि में होता है। केवटी मोथा के सम्बन्ध में १३२वें श्लोक में लिखा जा चुका है।

(त्रीणि नागरमुस्तकस्य)

चूडाला चक्रलोच्चटा ।

[1]नागरमोथा के ३ नाम—(१) चूडाला (२) चक्रला (३) उच्चटा ।

(दश वेणोः)

वंशे त्वक्सार-कर्मार-त्वचिसार-तृणध्वजाः१६०
शतपर्वा यवफलो वेणु-मस्कर-तेजनाः ।

[2]बाँस के १० नाम—(१) वंश (२) त्वक्सार (३) कर्मार (४) त्वचिसार (५) तृणध्वज (६) शतपर्वन् (७) यवफल (८) वेणु (९) मस्कर (१०) तेजन ॥१६०॥

(एकं कीटादिकृतरन्ध्रगतवाताहतवेणूनाम्)

वेणवः कीचकास्ते स्युर्ये स्वनन्त्यनिलोद्धताः१६१

कीड़ों से खाए हुए छेद में घुसी हुई हवा से बजनेवाले–रन्ध्रबाँस–का नाम—(१) कीचक (पुँल्लिङ्ग) ॥१६१॥

(त्रीणि वंशादिग्रन्थेः)

ग्रन्थिर्ना पर्व-परुषी

गाँठ या पोर के ३ नाम—(१) ग्रन्थि (२) पर्वन् (३) परुष् । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और (२-३) नपुंसक हैं ।

(त्रीणि 'रामसर' इति ख्यातस्य)

गुन्द्रस्तेजनकः शरः ।

[3]सरपत, रामसर के ३ नाम—(१) गुन्द्र (२) तेजनक (३) शर ।

(त्रीणि धमनस्य)

नडस्तु धमनः पोटगलः

[4]नरसल के ३ नाम—(१) नड (२) धमन (३) पोटगल ।

(त्रीणि काशस्य)

अथो काशमस्त्रियाम् ॥१६२॥
इक्षुगन्धा पोटगलः

[5]कास के ३ नाम—(१) काश (२) इक्षुगन्धा (३) पोटगल । इनमें (१ला) पुं-नपुंसक, (२रा) स्त्रीलिङ्ग, (३रा) पुँल्लिङ्ग है ॥१६२॥

(एकं बल्वजतृणस्य)

पुंसि भूम्नि तु बल्वजाः ।

बल्वज तृण, बगई का नाम—(१) बल्वज । यह पुँल्लिङ्ग में बहुवचनान्त होता है ।

(द्वे इक्षोः)

रसाल इक्षुः

ईख के २ नाम—(१) रसाल (२) इक्षु । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकैकमिक्षुभेदानाम्)

तद्भेदाः पुण्ड्र-कान्तारकादयः ॥१६३॥

[6]पौंढा का नाम—(१) पुण्ड्र ।

काले पौंढा का नाम—(१) कान्तारक ॥१६३॥

(द्वे गण्डदूर्वायाः)

स्याद्वीरणं वीरतरम्

---

१ वैद्यकनिघण्टु के अनुसार नागरमोथा के नाम—
'नागरमुस्ता नादेयी वृषध्वांक्षी कच्छरुहा ।
चूडाला पिण्डमुस्ता च नागरोत्था कलापिनी ॥'
बरसात में साधारण खेतों में यह उत्पन्न होता है। वैद्यकग्रन्थों में इसकी बड़ी प्रशंसा है ।

२ बाँस गाँवों, जंगलों, पर्वतों की तलेटियों में उत्पन्न होते हैं। इसमें सफेद फूल लगते हैं । इसमें से वंशलोचन निकलता है।

३ यह पानी में होता है। इसके पत्ते बहुत लम्बे (करीब ४-५ फुट) और एक इञ्च चौड़े होते हैं। इसकी चटाई बनती है ।

४ यह जलाशय के करीब जंगलों में होता है। इसके पत्ते और आकृति ईख की तरह होती है ।

५ कास नदियों के किनारे कीचड़ में पैदा होती है । इसमें सफेद फूल लगते हैं। ये देखने में बहुत ही सुन्दर लगते हैं। शरद् ऋतु का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी लिखते हैं—'फूले कास सकल महि छाई । जिमि वर्षा कृत प्रकट बुढ़ाई ।'

६ ईख के द्वादश भेदों का वर्णन भावप्रकाश में मिलता है—
'पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः ।
कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥
नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत् ।
इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥'

[1]गांडर दूब के २ नाम—(१) वीरण (२) वीरतर ।

(द्वे 'खश' इतिख्यातस्य)

मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
अभयं नलदं सेव्यममृणालं जलाशयम् ॥१६४
लामज्जकं लघुलयमवदाहेष्टकापथे ।

[2]खस (गांडर दूब की जड़) के १० नाम—(१) उशीर (२) अभय (३) नलद (४) सेव्य (५) अमृणाल (६) जलाशय (७) लामज्जक (८) लघुलय (९) अवदाह (१०) इष्टकापथ । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग–नपुंसकलिङ्ग में और शेष (२–१०) नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ॥१६४॥

(एकैकं नडादिगर्मुच्छ्यामादिकानाम्)

नडादयस्तृणं गर्मुच्छ्यामाकप्रमुखा अपि॥१६५

ये नड, (काश) आदि का नाम—(१) तृण (नपुंसक) ।

तृणधान्य का नाम—(१) गर्मुत् (स्त्रीलिङ्ग) ।

,, सवां का नाम—(१) श्यामाक (पुँल्लिङ्ग) ।

'प्रमुख' शब्द से वक्ष्यमाण 'कुश' आदि का तृणत्व ग्रहण करना । तृणधान्य में 'नीवार' आदि का ग्रहण करना ॥१६५॥

(चत्वारि कुशस्य)

अस्त्री कुशं कुथो दर्भः पवित्रम्

[3]कुशा, दाभ के ४ नाम—(१) कुश (२) कुथ (३) दर्भ (४) पवित्र । इनमें (१) पुं-नपुंसक, (२–३) पुँल्लिङ्ग, (४) नपुंसक है ।

(षट् रोहिषाख्यतृणविशेषस्य)

अथ कत्तृणम् ।
पौर-सौगन्धिक-ध्याम-देवजग्धक-रौहिषम् १६६

[4]रोहिस तृण, गधेज घास के ६ नाम—(१) कत्तृण (२) पौर (३) सौगन्धिक (४) ध्याम (५) देवजग्धक (६) रौहिष ॥१६६॥

(द्वे छत्राकारजलजतृणविशेषस्य)

छत्रातिच्छत्र-पालघ्नौ

[5]काश्मीर के दिव्य सरोवर में उत्पन्न होने वाले और छत्राकार सुगन्धि तृण के २ नाम—(१) छत्रातिच्छत्र (२) पालघ्न । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे भूतृणस्य)

मालातृणक-भूस्तृणे ।

[6]सुगन्धित भूतृण के २ नाम—(१) मालातृणक (२) भूस्तृण । ये (१–२) नपुंसक हैं ।

---

१ वैद्यक शब्दसिन्धु में लिखा है कि 'गण्डदूर्वेति वीरणम् ।' यह एक प्रकार की घास होती हैं । इसके क्षुप दो-दो, तीन-तीन फुट ऊँचे होते हैं । जलाशय के समीप लगातार कोसों तक इसके खेत होते हैं । इसके तृण कास की तरह लम्बे होते हैं । इसी के तृण से मकानों के छप्पर डाले जाते हैं ।

२ 'वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ।'

अर्थात्-गाँडर घास की जड़ को 'उशीर', 'नलद' कहते हैं ।

३ वैद्यक शब्दसिन्धु में लिखा है—

'कुशो द्विविधः ह्रस्वदीर्घभेदेन । तयोर्दीर्घपत्रकुश एव सितदर्भ उच्यते । स एवाधिकगुणः । ह्रस्वोऽपि प्रायेण सितदर्भतुल्यगुणः । 'दर्भौ द्वौ च गुणतुल्यो तथापि च सिताधिकः । यदि श्वेतकुशाभावे त्वपरं योजयेद्भिषक् ॥' यद्यपि–कुशा और दाभ–दोनों एक ही जाति के तृण हैं तथापि कुशा अधिक गुण वाला है । यह रेतीली जमीन, दूहों और जंगलों में पैदा होती है । इसके पत्ते कास ही की तरह होते हैं ।

तृणगणपरिगणन—

'कुशः काशश्च दर्भश्च कत्तृणं भूतृणं तथा ।
शेतदूर्वा नीलदूर्वा गण्डदूर्वेति वीरणम् ॥'

४ मालवा और राजपूताना के जंगलों में रोहिस तृण बहुत होते हैं । इसके पत्ते छोटे और हरे होते हैं जो देखने में बहुत ही सुन्दर मालूम होते हैं । इसके प्रत्येक अङ्ग से सुगन्धि निकलती रहती है ।

५ वैद्यक शब्दसिन्धु में लिखा है—

'छत्रातिच्छत्रः—स जलजः, छत्राकारश्च भवति, काश्मीरस्थदिव्यसरसि दृश्यते ।

६ ये अधिकतया बागों एवं उपवनों में उत्पन्न होते हैं इसके बीज बहुत छोटे छोटे होते हैं ।

(द्वे कोमलतृणस्य)

शष्पं बालतृणम्

मुलायम और नये तृण के २ नाम—(१) शष्प (२) बालतृण ।

(द्वे गवादीनां भक्ष्यतृणस्य)

घासो यवसम्

घास के २ नाम—(१) घास (२) यवस । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग और (२) नपुंसक है ।

(द्वे तृणमात्रस्य)

तृणमर्जुनम् ॥१६७॥

सर्व प्रकार के तृणों के २ नाम—(१) तृण (२) अर्जुन ॥१६७॥

(एकं तृणसमुदायस्य)

तृणानां संहतिस्तृण्या

[1]तृणों के समूह या घूर का नाम—(१) तृण्या (स्त्रीलिङ्ग) ।

(एकं नडसमुदायस्य)

नड्या तु नडसंहतिः ।

नरकुल की ढेर का नाम—(१) नड्या (स्त्रीलिङ्ग) ।

(द्वे तालस्य)

तृणराजाह्वयस्तालः

[1]ताड़ के २ नाम—(१) तृणराज (२) ताल ।

(द्वे नारिकेलस्य)

नालिकेरस्तु लाङ्गली ॥१६८॥

[2]नारियल के २ नाम—(१) नालिकेर (२) लाङ्गली । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, (२ रा) स्त्रीलिङ्ग है । यह इन्नन्त पुँल्लिङ्ग (लाङ्गलिन्) में भी होता है ॥१६८॥

(पञ्च पूगवृक्षस्य)

घोण्टा तु पूगः क्रमुको गुवाकः खपुरः

[3]सुपारी के पेड़ के ५ नाम—(१) घोण्टा (२) पूग (३) क्रमुक (४) गुवाक (५) खपुर । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, (२–५) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकं क्रमुकफलस्य)

अस्य तु ।

फलमुद्वेगम्

[4]सुपारी के फल का नाम—(१) उद्वेग ।

(एकैकं तृणद्रुमभेदानाम्)

एते च हिन्तालसहितास्त्रयः ॥१६९॥

खर्जूरः केतकी ताली खर्जूरी च तृणद्रुमाः ।

हिन्ताल वृक्ष के सहित ये तीन (ताल–नारियल–सुपारी) वृक्ष, खजूर, केतकी, ताली और खर्जूरी को मिलाकर कुल ये ८ तृणवृक्ष कहलाते हैं ।

[5]हिन्ताल का नाम—(१) हिन्ताल (पुं०) ।

---

१ वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार ताड़ के नाम—
'तालस्तु लेख्यपत्रः स्यात्तृणराजो महोन्नतः ।'
ताड़ के पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इसके पत्ते खजूर की अनी की तरह कँटीले और चार-चार फुट लम्बे चौड़े होते हैं। पेड़ के रस को ताड़ी कहते हैं। ताड़के पंखे की महत्ता अनेक ग्रन्थों में मिलती है। इसके सम्बन्ध में अधिक जानने के लिए 'मनुष्यवर्ग' के अन्तिम श्लोक की टिप्पणी देखिए। प्राचीन काल में ताड़ पत्रों पर ग्रन्थ लिखे जाते थे।

२ वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार नारियल के नाम—
"नारिकेलो दृढफलो लाङ्गली कूर्चशीर्षकः ।
तुङ्गः स्कन्धफलश्चैव तृणराजः सदाफलः ॥"
नारियल नदी या समुद्र के नजदीक बहुत होते हैं। इसके पेड़ बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इनमें शाखाएँ नहीं होतीं। ऊपर के हिस्से में खजूर की तरह पत्ते होते हैं जिनके मध्य में नारियल पैदा होते हैं। नारियल के फल की आवश्यकता प्रत्येक माङ्गलिक कृत्यों में पड़ती है।

३ बागों में सुपारी के बड़े-बड़े पेड़ होते हैं। इसके पेड़ खम्भा की तरह सीधे ऊपर की ओर चले जाते हैं । इसके पत्ते नारियल के पत्तों की तरह बड़े होते हैं ।

४ इसके ऊपर कुछ लम्बाई लिए गोल-गोल फल लगते हैं जिनके छिलने से भीतर से सुपारी निकलती है।
'फलं पूगीफलं प्रोक्तमुद्वेगं च तदीरितम् ।'

५ यह ताड़ के पेड़ की एक जाति होती है। इसके पेड़ बहुत ही बड़े-बड़े और पत्ते बहुत ही लम्बे चौड़े होते हैं। यह दक्षिण देश में प्रसिद्ध है ।

[1]खजूर का नाम—(१) खर्जूर (पुं०) ।

केतकी के पेड़ का नाम—(१) केतकी (स्त्रीलिङ्ग), (पुँल्लिङ्ग में केतक) ।

छोटे ताड़ का नाम—(१) ताली (स्त्रीलिङ्ग) ।

[2]छुहारा का नाम—(१) खर्जूरी (स्त्रीलिङ्ग) ।

(इति वनौषधिवर्गः ४)

अथ सिंहादिवर्गः ५

(षट् सिंहस्य)

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यो हर्यक्षः केसरी[3] हरिः ।

शेर के ६ नाम--(१) सिंह (२) मृगेन्द्र (३) पञ्चास्य (४) हर्यक्ष (५) केसरिन् (६) हरि ।

(त्रीणि व्याघ्रस्य)

शार्दूल-द्वीपिनौ व्याघ्रे

[4]बाघ के ३ नाम—(१) शार्दूल (२) द्वीपिन् (३) व्याघ्र ।

(द्वे कुक्कुराकृतेः कृष्णरेखाचित्रितमृगविशेषस्य)

तरक्षुस्तु मृगादनः ॥१॥

[5]चीता, लकड़ बग्घा, तेंदुआ के २ नाम—(१) तरक्षु (२) मृगादन ॥ १ ॥

(द्वादश शूकरस्य)

वराहः सूकरो घृष्टिः कोलः पोत्री किरिः किटिः ।
दंष्ट्री घोणी स्तब्धरोमा क्रोडो भूदार इत्यपि ॥

[6]सूअर के १२ नाम--(१) वराह (२) सूकर (३) घृष्टि (४) कोल (५) पोत्रिन् (६) किरि [किर] (७) किटि (८) दंष्ट्रिन् (९) घोणिन् (१०) स्तब्धरोमन् (११) क्रोड (१२) भूदार । ये (१–१२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ २ ॥

(नव वानरस्य)

कपि-प्लवङ्ग-प्लवग-शाखामृग-वलीमुखाः ।
मर्कटो वानरः कीशो वनौकाः

बन्दर के ९ नाम--(१) कपि (२) प्लवङ्ग (३) प्लवग (४) शाखामृग (५) वलीमुख (६) मर्कट (७) वानर (८) कीश (९) वनौकस् ।

(चत्वारि भल्लुकस्य)

अथ भल्लुके ॥३॥

ऋक्षाच्छभल्ल—भाल्लूकाः

भालू, रीछ के ४ नाम--(१) भल्लुक (२) ऋक्ष (३) अच्छभल्ल (४) भल्लूक ॥३॥

---

१ खजूर के पेड़ और छुहारे के पेड़ सीधे ऊपर को ओर बढ़ते हैं। इनके पत्ते लम्बे होते हैं। इनमें शाखाएँ नहीं होतीं। ऊपर की ओर फल लगते हैं।

२ निघण्टु ग्रन्थों में कहा गया है कि—

'खर्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता ।
जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कीर्त्यते ॥'

अर्थात्—खर्जूरी और गोस्तनाकारा–ये दो नाम छुहारा के हैं। इसकी आकृति गौ के थन की तरह होती है। यह दूसरे टापू से भारत में आया है और पश्चिम देश में होता है।

३ अन्य पुस्तकों में ये ८ नाम शेर के अधिक मिलते हैं—

कण्ठीरवो मृगरिपुर्मृगदृष्टिर्मृगाशनः ।
पुण्डरीकः पञ्चनख-चित्रकाय-मृगद्विषः ॥

शेर के और ८ नाम—(१) कण्ठीरव (२) मृगरिपु (३) मृगदृष्टि (४) मृगाशन (५) पुण्डरीक (६) पञ्चनख (७) चित्रकाय (८) मृगद्विष ।

४ बाघ भारतीय जंगलों में पाया जाता है। परन्तु इस जाति के सबसे बड़े और बलवान् जन्तु उत्पन्न करने का गौरव बंगाल प्रान्त को है। इसके शरीर का रंग हलका पीला होता है जिस पर बादामी या काली धारियाँ होती हैं। भारतवर्ष में ये तीन प्रकार के होते हैं--(१) लोदिया बाघ (२) ऊँटिया बाघ और (३) नरभोजी बाघ।

५ एक कवि चीता का कैसा स्वाभाविक वर्णन करता है—

लांगूलेनाभिहत्य क्षितितलमसकृद्दारयन्नग्रपद्भ्या—
मात्मन्येवावलीय द्रुतमथ गगनं प्रोत्पतन्विक्रमेण ।
स्फूर्जद्धुङ्कारघोषः प्रतिदिशमखिलान्द्रावयन्नेष जन्तू—
न्कोपाविष्टः प्रविष्टः प्रतिवनमरुणोच्छूनचक्षुस्तरक्षुः ॥

६ सूअर के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन 'जन्तु जगत्' (पृष्ठ १७७-१८४) में पढ़िए।

(त्रीणि गण्डश्रृङ्गस्य)

गण्डके खड्ग-खड्गिनौ ।

[१]गैंडा के ३ नाम—(१) गण्डक (२) खड्ग (३) खड्गिन् ।

(पञ्च महिषस्य)

लुलायो महिषो वाहद्विषत्कासर-सैरिभाः ॥४॥

भैंसा के ५ नाम—(१) लुलाय [लुलाप] (२) महिष (३) वाहद्विषत् (४) कासर (५) सैरिभ ॥ ४ ॥

(दश जम्बुकस्य)

स्त्रियां शिवा भूरिमाय-गोमायु-मृगधूर्तकाः ।
शृगाल-वञ्चक-क्रोष्टु-फेरु-फेरव-जम्बुकाः ॥५॥

सियार, गीदड़ के १० नाम—(१) शिवा (२) भूरिमाय (३) गोमायु (४) मृगधूर्तक (५) शृगाल (६) वञ्चक (७) क्रोष्टु (८) फेरु (९) फेरव (१०) जम्बुक । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, (२–१०) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ५ ॥

(पञ्च बिडालस्य)

ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।

बिलार के ५ नाम—(१) ओतु (२) बिडाल (३) मार्जार (४) वृषदंशक (५) आखुभुज् । ये (१–५) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि गोधिकात्मजस्य)

त्रयो गौधेर-गौधार-गौधेया गोधिकात्मजे ॥६॥

[२]गोह के बच्चे के ३ नाम—(१) गौधेर (२) गौधार (३) गौधेय ॥ ६ ॥

(द्वे शल्यस्य)

श्वावित्तु शल्यः

साही के २ नाम—(१) श्वाविध् (२) शल्य ।

(त्रीणि शल्यलोम्नः)

तल्लोम्नि शलली शललं शलम् ।

[३]साही के रोएँ के ३ नाम—(१) शलली (२) शलल (३) शल । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, (२–३) नपुंसक हैं ।

(द्वे वातमृगस्य)

वातप्रमीर्वातमृगः

दौड़ने में हवा से बात करनेवाले मृग के २ नाम—(१) वातप्रमी (२) वातमृग । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि वृकस्य)

कोकस्त्वीहामृगो वृकः ॥७॥

भेड़िया, हुँड़ार के ३ नाम—(१) कोक (२) ईहामृग (३) वृक ॥ ७ ॥

(पञ्च हरिणस्य)

मृगे कुरङ्ग-वातायु-हरिणाऽजिनयोनयः ।

हरिन के ५ नाम—(१) मृग (२) कुरङ्ग (३) वातायु (४) हरिण (५) अजिनयोनि । ये (१-५) पुल्लिङ्ग हैं ।

(एकं हरिणीचर्माद्यस्य)

ऐणेयमेण्याश्चर्माद्यम्

---

१ भारतवर्ष में दो जाति के गैंड़े पाये जाते हैं । एक बृहत्काय जाति का होता है जो हिमालय की तराई में नैपाल से भूटान तक पाया जाता है । आसाम में भी होते हैं और प्रायः घने जंगलों में दलदलों के समीप वास किया करते हैं । दूसरा क्षुद्रकाय जाति का होता है । यह बंगाल प्रान्त में सुन्दर बन में अधिकता से पाया जाता है । इसकी नाक की हड्डी बड़ी मजबूत होती है और उस पर एक पैना सींग होता है जो चमड़े और बालों से ढका रहता है । गैंडे के विषय में विस्तृत वर्णन जन्तुजगत् नामक ग्रन्थ (पृष्ठ १४१-१५४) में पढ़िए ।

२ नर साँप और मादा गोह के संयोग से गोधिकात्मज पैदा होता है । गोह छिपकली की जाति का एक जंगली जन्तु होता है । यह आकार में नेवले से कुछ बड़ा होता है ।

३ यह एक प्रकार का जानवर होता है और हिन्दुस्तान में सब जगह पाया जाता है । यह खरगोश के आकार का होता है । इसके सारे शरीर पर काँटे होते हैं जो साही के काँटे के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हैं । इसके काँटे के सम्बन्ध में किम्वदन्ती भी सुनी जाती है । जब साही अपने नुकीले काँटे खड़े कर लेती है तो माँसभोजी जन्तु सहज ही उस पर मुँह मारने का साहस नहीं करते । यह प्रायः नदियों और तालाबों के ढालू किनारों में भाँटा खोद लिया करती है ।

काली हरिनी के चमड़े (मांस आदि) का नाम—(१) ऐणेय (पुं–स्त्री-नपुंसक)।

(एकं हरिणचर्माद्यस्य)

एणस्यैणम्

काले हरिन के चमड़े, मांस आदि का नाम—(१) ऐण (पुं०-स्त्री-नपुंसक)।

उभे त्रिषु ॥८॥

ये दोनों (ऐणेय, ऐण) तीनो लिङ्ग में होते हैं ॥ ८ ॥

(हरिणभेदानां पृथक्पृथगेकैकम्)

कदली कन्दली चीनश्चमूरु-प्रियकावपि ।
समूरुश्चेति हरिणा, अमी अजिनयोनयः ॥९

चिकारा, चौसिंगा हरिणों किस्म के ६ नाम—(१) कदलिन् (२) कन्दलिन् (३) चीन (४) चमूरु (५) प्रियक (६) समूरु । ये (१-६) पुँल्लिङ्ग हैं । इनमें कोई-कोई इन्नन्त (१-२) को ङीषन्त-स्त्रीलिङ्ग (कदली, कन्दली), कहते हैं । ये छ और आगे के कृष्णसार आदि 'अजिनयोनि' कहलाते हैं क्योंकि इनकी मृगछाला अच्छी होती है ॥९॥

(मृगभेदानां पृथक्पृथगेकैकम्)

कृष्णसार-रुरु-न्यंकु-रंकु-शम्बर-रौहिषाः ।
गोकर्ण-पृषतैणर्श्य-रोहिताश्चमरो मृगाः ॥१०

[1]लाल बारहसिंगा, साँभर, चीतल, माहा, काश्मीरी, पारा, काकुर, कस्तूरा आदि बारहसिंगों के किस्म के नाम—(१) कृष्णसार (२) रुरु (३) न्यंकु (४) रंकु (५) शम्बर (६) रौहिष (७) गोकर्ण (८) पृषत (९) एण (१०) ऋश्य (११) रोहित (१२) चमर । ये (१-१२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१०॥

(मृगभेदानामेकैकम्)

गन्धर्वः शरभो रामः सृमरो गवयः शशः ।
इत्यादयो मृगेन्द्राद्या गवाद्याः पशुजातयः॥११

मृगों के भेद-(१) गन्धर्व (२) शरभ (३) राम (४) सृमर (५) गवय (६) शश । इत्यादि (गन्धर्वादि) जो यहाँ कहे गये हैं, और जो 'सिंह' से लेकर 'चमर' शब्द पर्यन्त पहले कहे गये हैं, और जो 'गो-मेष-हस्त्यश्व' आदि अब कहे जायँगे वे पशुजाति के कहलाते हैं अर्थात् उनका सामूहिक नाम—(१) पशु (पुँल्लिङ्ग) ॥११॥

(त्रीणि मूषकस्य)

उन्दुरुर्मूषकोऽप्याखुः[2]

चूहे के ३ नाम—(१) उन्दुरु (२) मूषक (३) आखु । ये (१–३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे बालमूषिकायाः)

गिरिका बालमूषिका ।

चूहिया के २ नाम—(१) गिरिका (२) बाल-मूषिका ।

(द्वे सरटस्य)

सरटः कृकलासः स्यात्

[3]गिरगिट के २ नाम—(१) सरट (२) कृक-लास ।

(द्वे गृहगोधिकायाः)

मुसली गृहगोधिका ॥१२॥

छिपकली के २ नाम—(१) मुसली (२) गृह-गोधिका ॥१२॥

---

१ अनूचो माणवो ज्ञेय **एणः** कृष्णमृगः स्मृतः ।
रुरुर्गौरमुखः प्रोक्तः, **शम्बरः** शोण उच्यते ॥

रोहित-लाल बारहसिंगा का रंग हलकी सुर्खी लिए बदामी होता है ।

शम्बर-साँभर बारहसिंगा भारतीय बारहसिंगों में सुप्रसिद्ध है ।

गोकर्ण-गोइन बारहसिंगा हिमालय की तराई में पाया जाता है ।

२ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक पाया जाता है—

(पञ्च नामानि मूषकस्य)

अधोगन्ता तु खनको वृकः पुन्ध्वज उन्दुरः ।

चूहे के और ५ नाम—(१) अधोगन्तृ (२) खनक (३) वृक (४) पुन्ध्वज (५) उन्दुर ।

३ गिरगिट छिपकली की जाति का प्रायः एक बालिश्त लम्बा जन्तु होता है । यह सूर्य की किरणों की सहायता से अपने शरीर के अनेक रंग बदल सकता है ।

(चत्वारि ऊर्णनाभस्य)

लूता स्त्री तन्तुवायोर्णनाभ-मर्कटकाः समाः ।

मकड़ी के ४ नाम--(१) लूता (२) तन्तुवाय (३) ऊर्णनाभ (४) मर्कटक । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, और (२-४) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे क्षुद्रकीटमात्रस्य)

नीलंगुस्तु कृमिः

छोटे कीड़े के २ नाम--(१) नीलङ्गु (२) कृमि । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे कर्णजलौकायाः)

कर्णजलौकाः शतपद्युभे ॥१३॥

कनखजूरा के २ नाम--(१) कर्णजलौकस् (२) शतपदी । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१३॥

(द्वे ऊर्णादिभक्षककृमिविशेषस्य)

वृश्चिकः शूककीटः स्यात्

ऊन और रेशमी कपड़े को खा जानेवाले कीड़े के २ नाम--(१) वृश्चिक (२) शूककीट ।

(त्रीणि वृश्चिकस्य)

अलि-द्रुणौ तु वृश्चिके ।

बिच्छू के ३ नाम--(१) अलि (२) द्रुण (३) वृश्चिक । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं । इनमें (१ ला) इदन्त इन्नन्त (अलिन्) भी है ।

(त्रीणि कपोतस्य)

पारावतः कलरवः कपोतः

कबूतर के ३ नाम--(१) पारावत (२) कलरव (३) कपोत ।

(त्रीणि श्येनस्य)

अथ शशादनः ॥१४॥

पत्री श्येनः

बाज पक्षी के ३ नाम--(१) शशादन (२) पत्रिन् (३) श्येन । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१४॥

(त्रीणि घूकस्य)

उलूके तु वायसाराति-[1]पेचकौ ।

उल्लू के ३ नाम—(१) उलूक (२) वायसाराति (३) पेचक । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे भरद्वाजपक्षिणः)

व्याघ्राटः स्याद्भरद्वाजः

भरदूल, लवा चिड़िया के २ नाम—(१) व्याघ्राट (२) भरद्वाज ।

(द्वे खञ्जनस्य)

खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ १५ ॥

[2]खञ्जन, खँड़रैच के २ नाम—(१) खञ्जरीट (२) खञ्जन ॥ १५ ॥

---

[1] अन्य पुस्तकों में उल्लू के ये नाम और मिलते हैं—

दिवान्धः कौशिको घूको दिवाभीतो निशाटनः ।

अर्थात्—उल्लू के और ५ नाम—(१) दिवान्ध (२) कौशिक (३) घूक (४) दिवाभीत (५) निशाटन ।

'वायसाराति' की कथा जानने के लिए पञ्चतन्त्र का 'काकोलूकीय' तन्त्र पढ़िए ।

[2] खञ्जन पक्षी का दर्शन करना कल्याणदायक माना गया है । इस पर कवि-कुल-कुमुद-कलाधर कालिदास कहते हैं—

'ये ये खञ्जनमेकमेव कमले पश्यन्ति दैवात्क्वचि-
त्ते सर्वे कवयो भवन्ति सुतरां प्रख्यातभूमीभुजः ।
त्वद्वक्त्राम्बुजनेत्रखञ्जनयुगं पश्यन्ति ये जना-
स्ते ते मन्मथबाणजालविकला मुग्धे ! किमत्यद्भुतम् ॥

इस श्लोक का पूर्ण आशय समझने के लिए **'मास्टर मणिमाला** सीरीज़ में प्रकाशित **'शृङ्गारतिलक'** नामक ग्रन्थ देखिए ।

इसकी अनेक जातियाँ एशिया, युरोप और अफ्रिका में पायी जाती हैं । इनमें से भारतवर्ष का खंजन मुख्य और असली माना जाता है । भारत में हिमालय की तराई, आसाम और ब्रह्मदेश में अधिकता से पाया जाता है । इसका रंग बीच-बीच में कहीं सफेद, कहीं काला होता है । यह प्रायः एक बालिश्त लम्बा होता है और इसकी चोंच लाल और दुम हलकी काली झाईं लिए सफ़ेद और बहुत सुन्दर होती है । यह प्रायः निर्जनस्थानों में और अकेला ही रहता है और जाड़े के आरम्भ में पहाड़ों से नीचे उतर आता है । लोगों का विश्वास है कि यह पाला नहीं जा सकता ; और जब इसके सिर पर चोटी निकलती है तब यह छिप जाता है और किसीको दिखाई नहीं देता । यह पक्षी बहुत चञ्चल होता है, इसालिए कवि लोग इससे नेत्रों की उपमा देते हैं । जैसा कि ऊपरवाले श्लोक में कविसम्राट् कालिदास ने कहा है ।

(द्वे कङ्कस्य)

लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्यात्

सफेद चील के २ नाम—(१) लोहपृष्ठ (२) कङ्क ।

(द्वे चाषस्य)

अथ चाषः किकीदिविः ।

नीलकण्ठ के २ नाम—(१) चाष (२) किकीदिवि । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि भृङ्गस्य)

कलिङ्ग-भृङ्ग-धूम्याटाः

भुजङ्गा पक्षी के ३ नाम—(१) कलिङ्ग (२) भृङ्ग (३) धूम्याट ।

(द्वे दार्वाघाटस्य)

अथ स्याच्छतपत्रकः ॥१६॥

दार्वाघाटः

कठफोरवा पक्षी के २ नाम—(१) शतपत्रक (२) दार्वाघाट ॥१६॥

(त्रीणि चातकस्य)

अथ सारङ्गस्तोककश्चातकः समाः ।

[1]पपीहा के ३ नाम—(१) सारङ्ग (२) तोकक [स्तोकक] (३) चातक । ये (१–३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(चत्वारि कुक्कुटस्य)

कृकवाकुस्ताम्रचूडः कुक्कुटश्चरणायुधः ॥१७

[2]मुर्गा के ४ नाम—(१) कृकवाकु (२) ताम्रचूड (३) कुक्कुट (४) चरणायुध ॥१७॥

(द्वे चटकस्य)

चटकः कलविङ्कः स्यात्

[3]गौरा पक्षी के २ नाम—(१) चटक (२) कलविङ्क ।

(एकं चटकस्त्रियाः)

तस्य स्त्री चटका

गौरेया का नाम—(१) चटका ।

(एकं चटकपुमपत्यस्य)

तयोः ।

पुमपत्ये चाटकैरः

उन दोनों (गौरा-गौरेया) के पुरुष बच्चे का नाम—(१) चाटकैर ।

(एकं चटकस्त्र्यपत्यस्य)

स्त्र्यपत्ये चटकैव सा ॥१८॥

उन दोनों (गौरा-गौरेया) की स्त्री बच्ची का नाम—(१) चटका ॥१८॥

(द्वे अशुभवादिपक्षिभेदस्य)

कर्करेटुः करेटुः स्यात्

[4]कौड़िल्ला के २ नाम—(१) कर्करेटु (२) करेटु । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे 'क्रकर' इतिख्यातस्य)

कृकण-क्रकरौ समौ ।

करया पक्षी के २ नाम—(१) कृकण (२) क्रकर । इन दोनों का समान लिङ्ग (पुँल्लिङ्ग) है ।

(चत्वारि कोकिलस्य)

वनप्रियः परभृतः कोकिलः पिक इत्यपि॥१९

---

१ देश भेद से पपीहा कई रंग, रूप और आकार का पाया जाता है । उत्तर भारत में इसका डील प्रायः श्यामा पक्षी के बराबर और रंग हलका काला या मटमैला होता है । दक्षिण भारत का पपीहा डील में इससे कुछ बड़ा और रंग में चित्रविचित्र होता है । पपीहा पेड़ के नीचे प्रायः बहुत कम उतरता है । इसकी बोली 'पी कहाँ' बहुत रसमय होती है और उसमें कई स्वरों का समावेश रहता है । यह प्रवाद है कि यह केवल स्वाती नक्षत्र में होनेवाली वर्षा का ही जल पीता है ।

२ जिन्होंने मुर्गों की लड़ाई देखी होगी उन्हें अधोलिखित कविता में बड़ा आनन्द मिलेगा—

'न्यञ्चच्चलचन्चुचुम्बनचलच्चूडाग्रमुग्रंपत—
च्चक्राकारकरालकेसरसटास्फारस्फुरत्कन्धरम् ।
बारम्बारमुदङ्घ्रिचञ्चलघनभ्रश्यन्नखक्षुण्णयो—
र्दृष्टा कुक्कुटयोर्द्वयोः स्थितिरिति क्रूरक्रमं युध्यतोः ॥'

३ नगर के प्रायः सभी मकानों में गौरा-गौरैया पक्षी अपना घोंसला बनाते हैं । इनके स्वभाव से सभी लोग परिचित होते हैं । ये गरमी के दिनों में हिमालय की ओर चले जाते हैं और मादा वहीं चट्टानों के नीचे या पेड़ों पर अण्डे देती हैं ।

४ कौड़िल्ला एक प्रकार की चिड़िया होती है जो मछलियों को पकड़-पकड़ कर खा जाती है ।

[1]कोयल पक्षी के ४ नाम—(१) वनप्रिय (२) परभृत (३) कोकिल (४) पिक ॥१६॥

(दश काकस्य)

काके तु करटाऽरिष्ट-बलिपुष्ट-सकृत्प्रजाः ।
ध्वांक्षात्मघोष-परभृद्बलिभुग्वायसा[2] अपि २०

कौआ के १० नाम—(१) काक (२) करट (३) अरिष्ट (४) बलिपुष्ट (५) सकृत्प्रज (६) ध्वांक्ष (७) आत्मघोष (८) परभृत् (६) बलिभुज् (१०) वायस । ये (१–१०) पुँल्लिङ्ग हैं ॥२०॥

(द्वे द्रोणकाकस्य)

द्रोणकाकस्तु काकोलः

डोम कौआ के २ नाम—(१) द्रोणकाक (२) काकोल ।

(द्वे जलकाकस्य, श्यामकाकस्य वा)

दात्यूहः कालकण्ठकः ।

जल कौआ या काला कौआ के २ नाम—(१) दात्यूह (२) कालकण्ठक ।

(द्वे चिल्लस्य)

आतायि-चिल्लौ

[3]चील के २ नाम—(१) आतायिन् (२) चिल्ल । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे गृध्रस्य)

दाक्षाय्य-गृध्रौ

गिद्ध के २ नाम—(१) दाक्षाय्य (२) गृध्र ।

(द्वे शुकस्य)

कीर-शुकौ

तोता, सुग्गा के २ नाम—(१) कीर (२) शुक ।

समौ ॥ २१ ॥

('आतायि-चिल्लौ', 'दाक्षाय्य-गृध्रौ,' 'कीर-शुकौ') पुँल्लिङ्ग हैं ॥ २१ ॥

(द्वे क्रौञ्चस्य)

क्रुङ् क्रौञ्चः

[4]ढेक, कराकुलपक्षी के २ नाम—(१) क्रुङ् (२) क्रौञ्च ।

(द्वे बकस्य)

अथ बकः कह्वः

बगला के २ नाम—(१) बक (२) कह्व ।

(द्वे सारसस्य)

पुष्कराह्वस्तु सारसः ।

सारस के २ नाम—(१) पुष्कराह्व (२) सारस ।

---

१ कोयल अपने अण्डे को कौए के घोंसले में रख आती है। इस तरह कौए द्वारा लालन पालन कराती है। इसी को लक्ष्य कर अभिज्ञानशाकुन्तल (पञ्चम अङ्क) में राजा दुष्यन्त ने कहा है। कोयल को 'वसन्तदूत' कहते हैं यह वसन्त के आगमन पर ही बोलती है; अन्यथा कवि के शब्दों में—

'काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिक-काकयोः ।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥'

इसकी आँखें लाल, चोंच कुछ झुकी हुई और दुम चौड़ी तथा गोल होती है।

२ अन्य पुस्तकों में कौए के नाम इतने अधिक मिलते हैं—

स एव च चिरञ्जीवी चैकदृष्टिश्च मौकुलिः ।

कौआ के ३ और नाम—(१) चिरञ्जीविन् (२) एकदृष्टि (३) मौकुलि ।

साधारण कौआ आकार में डेढ़ बालिश्त होता है। यह बैशाख से भादों तक अण्डे देता है। पक्षियों में कौआ धूर्त माना गया है। यह भी कहावत प्रसिद्ध है कि क्या कौआ कभी हंस हो सकता है ?—

काकस्य गात्रं यदि काञ्चनस्य, माणिक्यरत्नं यदि चञ्चुदेशे ।
एकैकपक्षे ग्रथितं मणीनां तथापि काको न तु राजहंसः ॥

दूसरा डोम कौआ आकार में बड़ा और प्रायः एक हाथ लम्बा होता है। यह पूस से फागुन तक अण्डे देता है।

३ यह 'ची' 'ची' बहुत जोर से करती है, इसलिये इसे चील कहते हैं।

४ यह एक प्रकार का पक्षी है जो बगला जाति का होता है। इसी क्रौञ्च को एक व्याध ने मारा था जिससे दुःखित होकर महर्षि वाल्मीकि के मुँह से अचानक यह श्लोक निकल गया।

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमबधीः काममोहितम् ॥'

(उत्तररामचरित)

(चत्वारि चक्रवाकस्य)

कोकश्चक्रश्चक्रवाको रथाङ्गाह्वयनामकः ॥२२॥

चकवा के ४ नाम—(१) कोक (२) चक्र (३) चक्रवाक (४) रथाङ्ग ॥ २२ ॥

(द्वे कादम्बस्य)

कादम्बः कलहंसः स्यात्

बत्तख के २ नाम—(१) कादम्ब (२) कलहंस ।

(द्वे कुररस्य)

उत्क्रोश-कुररौ समौ ।

[1]कुररी के २ नाम—(१) उत्क्रोश (२) कुरर । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(चत्वारि हंसस्य)

हंसास्तु श्वेतगरुतश्चक्राङ्गा मानसौकसः॥२३॥

हंस के ४ नाम—(१) हंस (२) श्वेत-गरुत् (३) चक्राङ्ग (४) मानसौकस् (बहुवचन की विवक्षा में बहुवचनान्त दिए गये हैं) ॥२३॥

(एकं राजहंसस्य)

राजहंसास्तु ते चञ्चुचरणैर्लोहितैः सिताः ।

[2]सफेद शरीरवाले, लाल चोंच और लाल पैर वाले हंस का नाम—(१) राजहंस ।

(एकमिषद्धूम्रचञ्चुचरणयुतासितहंसस्य)

मलिनैर्मल्लिकाक्षास्ते

जिस हंस का शरीर सफेद, चोंच और चरण का रंग मटमैला हो उसका नाम—(१) मल्लिकाक्ष (या मल्लिकाख्य) ।

(एकं कृष्णचञ्चुचरणयुतसितहंसस्य)

धार्तराष्ट्राः सितेतरैः ॥ २४ ॥

जिस हंस का शरीर सफेद, चोंच और चरण का रंग काला हो उसका नाम—(१) धार्तराष्ट्र ॥ २४ ॥

(त्रीणि 'आडी' इति ख्यातायाः)

शरारिराटिराडिश्च

आडी, तीतर के ३ नाम—(१) शरारि (२) आटि (३) आडि । ये (१–३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे बकस्त्रियाः, बकभेदस्य वा)

बलाका बिसकण्ठिका ।

[3]बगला की स्त्री वा दूसरी जाति के बगले २ नाम—(१) बलाका (२) बिसकण्ठिका ।

(एकं हंसस्त्रियाः)

हंसस्य योषिद्वरटा

हंस की स्त्री का नाम—(१) वरटा ।

(एकं सारसपत्न्याः)

सारसस्य तु लक्ष्मणा ॥२५॥

सारस की स्त्री का नाम—(१) लक्ष्मणा ॥२५॥

(द्वे जतुकायाः)

जतुकाऽजिनपत्रा स्यात्

चमगीदड़ के २ नाम—(१) जतुका (२) अजिनपत्रा ।

(द्वे तैलपायिकायाः)

परोष्णी तैलपायिका ।

चपड़ा के २ नाम—(१) परोष्णी (२) तैलपायिका ।

---

१ जटायु ने श्रीरामचन्द्रजी से कहा था कि रावण सीता को 'लै दच्छिन दिसि गयो गुसाईं ।
बिलपति अति **कुररी** की नाईं ॥'

२ यह एक प्रकार का हंस है जिसे सोना पक्षी भी कहते हैं । यह प्रायः झुण्ड बाँध कर उड़ता है और झीलों के किनारे रहता है । इसके अनेक भेद हैं । इसके पैर और चोंच लाल रंग की होती है । यह अगहन-पूस में उत्तरीय भारत में उत्तर के शीत प्रदेशों से आता है ।

३ मेघदूत नामक खण्डकाव्य में यक्ष ने मेघ से कहा है—

'गर्भाधानक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः ।

सेविष्यन्ते नयनसुभगं खे भवन्तं **बलाकाः** ।'

उक्तञ्च कर्णोदये—

'गर्भं बलाका दधतेऽभ्रयोगान्नाके निबद्धावलयः समन्तात् ।'

मेघदूत के कई टीकाकारों ने 'बलाकाः' का अर्थ 'बकपत्न्यः' बतलाया है।

(त्रीणि मक्षिकायाः)

वर्वणा मक्षिका नीला

मक्खी के ३ नाम—(१) वर्वणा (२) मक्षिका (३) नीला ।

(द्वे मधुमक्षिकायाः)

सरघा मधुमक्षिका ॥२६॥

शहद की मक्खी के २ नाम—(१) सरघा (२) मधुमक्षिका ॥२६॥

(द्वे स्वल्पमधुमक्षिकायाः)

पतङ्गिका पुत्तिका स्यात्

छोटी शहद की मक्खी के २ नाम—(१) पतङ्गिका (२) पुत्तिका ।

(द्वे वनमक्षिकायाः)

दंशस्तु वनमक्षिका ।

वनमक्खी, डँस या मच्छर के २ नाम—(१) दंश (२) वनमक्षिका ।

(एकं 'मसा' इति ख्यातस्य)

दंशी तज्जातिरल्पा स्याद्

मसा का नाम—(१) दंशी ।

(द्वे वरटस्य)

गन्धोली वरटा द्वयोः ॥२७॥

बर्रे के २ नाम—(१) गन्धोली (२) वरटा । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग हैं ॥२७॥

(चत्वारि झिल्लिकायाः)

भृङ्गारी चीरुका चीरी झिल्लिका च समा इमाः ।

झिंगुर के ४ नाम—(१) भृङ्गारी (२) चीरुका (३) चीरी (४) झिल्लिका । ये (१–४) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे पतङ्गस्य)

समौ पतङ्ग-शलभौ

पतिङ्गा के २ नाम—(१) पतङ्ग (२) शलभ । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे 'सोनकीड़ा' इति ख्यातायाः)

खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥२८॥

जुगनू, पटबीजना, सोनकिरवा के २ नाम—(१) खद्योत (२) ज्योतिरिङ्गण ॥२८॥

(एकादश भ्रमरस्य)

मधुव्रतो मधुकरो मधुलिण्मधुपालिनः ।
द्विरेफ-पुष्पलिड्-भृङ्ग-षट्पद-भ्रमरालयः ॥२९

भौंरा के ११ नाम—(१) मधुव्रत (२) मधुकर (३) मधुलिह् (४) मधुप (५) अलिन् (६) द्विरेफ (७) पुष्पलिह् (८) भृङ्ग (९) षट्पद (१०) भ्रमर (११) अलि । ये (१–११) पुँल्लिङ्ग हैं ॥२९॥

(नव मयूरस्य)

मयूरो बर्हिणो बर्ही नीलकण्ठो भुजङ्गभुक् ।
शिखावलः शिखी केकी मेघनादानुलास्यपि ३०

मोर के ९ नाम—(१) मयूर (२) बर्हिण (३) बर्हिन् (४) नीलकण्ठ (५) भुजङ्गभुज (६) शिखावल (७) शिखिन् (८) केकिन् (९) मेघनादानुलासिन् । ये (१–९) पुँल्लिङ्ग हैं ॥३०॥

(एकं मयूरवाण्याः)

केका वाणी मयूरस्य

मोर की कूक (बोली) का नाम—(१) केका ।

(द्वे मयूरपिच्छस्य नेत्राकारचिह्नस्य)

समौ चन्द्रक-मेचकौ

मोरपंख पर के चिह्न के २ नाम—(१) चन्द्रक (२) मेचक । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे मयूरशिखायाः)

शिखा चूडा

मोर के शिर पर की चोटी के २ नाम—(१) शिखा (२) चूडा । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि मयूरपिच्छस्य)

शिखण्डस्तु पिच्छ-बर्हे नपुंसके ॥३१॥

मोरपंख के ३ नाम—(१) शिखण्ड (२) पिच्छ (३) बर्ह । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२–३) नपुंसक हैं ॥ ३१ ॥

(सप्तविंशतिः पक्षिमात्रस्य)

खगे विहङ्ग-विहग-विहङ्गम-विहायसः ।
शकुन्ति-पक्षि-शकुनि-शकुन्त-शकुन-द्विजाः ३२
पतत्रि-पत्रि-पतग-पतत्-पत्ररथाऽण्डजाः ।
नगौको-वाजि-विकिर-वि-विष्किर-पतत्रयः ३३
नीडोद्भवा गरुत्मन्तः पित्सन्तो नभसङ्गमाः ।

चिड़ियों, पक्षियों के २७ नाम—(१) खग (२) विहङ्ग (३) विहग (४) विहङ्गम (५) विहायस् (६) शकुन्ति (७) पक्षिन् (८) शकुनि (९) शकुन्त (१०) शकुन (११) द्विज (१२) पतत्रिन् (१३) पत्रिन् (१४) पतग (१५) पतत् (१६) पत्ररथ (१७) अण्डज (१८) नगौकस् (१९) वाजिन् (२०) विकिर (२१) वि (२२) विष्किर (२३) पतत्रि (२४) नीडोद्भव (२५) गरुत्मत् (२६) पित्सत् (२७) नभसङ्गम । ये (१–२७) पुँल्लिङ्ग हैं ॥३२–३३॥

(एकैकं पक्षिभेदानाम्)

तेषां विशेषा हारीतो मद्गुः कारण्डवः प्लवः ३४
तित्तिरिः कुक्कुभो लावो जीवञ्जीवश्चकोरकः ।
कोयष्टिकष्टिट्टिभको वर्तको वर्तिकादयः ॥३५॥

पक्षियों के विशेष भेद—

हारिल चिड़िया नाम—(१) हारीत ।

जल मुर्ग़ का नाम—(१) मद्गु ।

कौवे के समान ठोर, काले रंग और बड़े २ पांव वाली चिड़िया का नाम—(१) कारण्डव ।

एक प्रकार के सारस का नाम—(१) प्लव ।

तीतर का नाम—(१) तित्तिरि ।

जङ्गली मुर्ग़ का नाम—(१) कुक्कुभ ।

लवा चिड़िया का नाम—(१) लाव ।

जिसके दर्शनमात्र से जहर का असर दूर हो जाता है उस जीवाजीव चिड़िया का नाम—(१) जीवञ्जीव ।

[1]चकोर का नाम—(१) चकोरक ।

कोड़हा चिड़िया का नाम—(१) कोयष्टिक ।

[2]टिटिहरी का नाम—(१) टिट्टिभक ।

बटेर का नाम—(१) वर्तक ।

भरुई चिड़िया का नाम—(१) वर्तिका (स्त्रीलिङ्ग) ।

'आदि' शब्द से 'सारिका' 'कपिञ्जल' आदि का ग्रहण करना ॥३४–३५॥

(षट् पक्षस्य)

गरुत्पक्ष-च्छदाः पत्रं पतत्रं च तनूरुहम् ।

डैना, पँख, पर के ६ नाम—(१) गरुत् (२) पक्ष (३) छद (४) पत्र (५) पतत्र (६) तनूरुह । इनमें (१–३) पुँल्लिङ्ग, केवल (३ रा) नपुंसक में भी, (४–६) नपुंसक लिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे पक्षमूलस्य)

स्त्री पक्षतिः पक्षमूलम्

पंख की जड़ के २ नाम—(१) पक्षति (२)

---

१ यह एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर है जो नैपाल, नैनीताल, आदि स्थानों तथा पञ्जाब और अफ़ग़ानिस्तान के पहाड़ी जंगलों में बहुत पाया जाता है। इसके ऊपर का रङ्ग काला होता है, जिस पर सफ़ेद-सफ़ेद चित्तियाँ होती हैं। पेट का रङ्ग कुछ सफ़ेदी लिए होता है। इसकी चोंच और आँखें बहुत लाल होती हैं। यह पक्षी झुण्डों में रहता है और बैसाख-जेठ में बारह-बारह अण्डे देता है। भारत में चिरकाल से प्रसिद्ध है कि यह चन्द्रमा का बड़ा भारी प्रेमी है और उसकी ओर एक टक देखा करता है; यहाँ तक की यह आग की चिनगारियों को चन्द्रमा की किरनें समझ कर खा जाता है।

२ यह पानी के किनारे रहने वाली एक छोटी चिड़िया है जिसका सिर लाल, गरदन सफ़ेद, पर चितकबरे, पीठ खैरे रङ्ग की, दुम मिले जुले रङ्गों की और चोंच काली होती है। इसकी बोली कड़ुई होती है और सुनने में 'टीं टीं' की ध्वनि के समान जान पड़ती है। इस चिड़िया के सम्बन्ध में ऐसा कहा जाता है कि यह रात को इस भय से कि कहीं आकाश न टूट पड़े उसे रोकने के लिए दोनों पैर ऊपर करके चित सोती है। गो० तुलसीदास जी के शब्दों में—'उमा ! रावनहिं अस अभिमाना। जिमि टिट्टिभ खग सूत उताना ॥'

पत्त्रमूल। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुंसक है।

(द्वे पक्षितुण्डस्य)

चञ्चुस्त्रोटिरुभे स्त्रियौ ॥३६॥

चोंच, ठोर के २ नाम—(१) चञ्चु (२) त्रोटि। ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥३६॥

(पक्षिणां गतिविशेषाणां पृथक्पृथगेकैकम्)

प्रडीनोड्डीन-सण्डीनान्येताः खगगतिक्रियाः।

चिड़ियों के उड़ने की चाल—

तिरछे उड़ने का नाम—(१) प्रडीन (नपुं०)।

ऊपर की ओर उड़ने का नाम—(१) उड्डीन (नपुं०)।

सीधे उड़ने का नाम—(१) सण्डीन (नपुं०)।

(त्रीणि अण्डस्य)

पेशी कोशो द्विहीनेऽण्डम्

अण्डा के ३ नाम—(१) पेशी (२) कोश (३) अण्ड। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक, और (३) द्विहीन (पुं० और स्त्रीलिङ्ग में नहीं होता) है अर्थात् केवल नपुंसक लिङ्ग में ही होता है।

(द्वे पक्षिगृहस्य)

कुलायो नीडमस्त्रियाम् ॥३७॥

घोंसला, खोंता के २ नाम—(१) कुलाय (२) नीड। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥३७॥

(सप्त शिशुमात्रस्य)

पोतः पाकोऽर्भको डिम्भः पृथुकः शावकःशिशुः।

बच्चा के ७ नाम—(१) पोत (२) पाक (३) अर्भक (४) डिम्भ (५) पृथुक (६) शावक (७) शिशु।

(त्रीणि मिथुनस्य)

स्त्रीपुंसौ मिथुनं द्वन्द्वम्

स्त्री और पुरुष के जोड़े के २ नाम—(१) मिथुन (२) द्वन्द्व।

(त्रीणि यमलस्य)

युग्मं तु युगलं युगम् ॥ ३८ ॥

जुड़वा, जोड़ा के ३ नाम—(१) युग्म (२) युगल (३) युग ॥३८॥

(द्वाविंशतिः समूहस्य)

समूहो निवह-व्यूह-सन्दोह-विसर-व्रजाः।
स्तोमौघ-निकर-व्रात-वार-संघात-सञ्चयाः ३६
समुदायः समुदयः समवायश्चयो गणः।
स्त्रियां तु संहतिर्वृन्दं निकुरम्बं कदम्बकम् ४०

समूह (ढेर, राशि, झुण्ड) के २२ नाम—(१) समूह (२) निवह (३) व्यूह (४) सन्दोह (५) विसर (६) व्रज (७) स्तोम (८) ओघ (९) निकर (१०) व्रात (११) वार (१२) संघात (१३) सञ्चय (१४) समुदाय (१५) समुदय (१६) समवाय (१७) चय (१८) गण (१९) संहति (२०) वृन्द (२१) निकुरम्ब (२२) कदम्बक। इनमें (१–१८) पुँल्लिङ्ग, (१९) स्त्रीलिङ्ग, (२०–२२) नपुंसक में होते हैं ॥ ३९–४० ॥

(समुदायविशेषा उच्यन्ते)

वृन्दभेदाः

अब समूहों के विशेष भेद बतलाते हैं—

(एकं वर्गस्य)

समैर्वर्गः

सजातीय प्राणियों या अप्राणियों के समूह (यथा—मनुष्यवर्ग, शैलवर्ग) का नाम—(१) वर्ग।

(द्वे सङ्घस्य)

संघ-सार्थौ तु जन्तुभिः।

सजातीय और विजातीय प्राणियों के समूह (यथा—पशुसंघ, वणिक्सार्थ) के २ नाम—(१) संघ (२) सार्थ।

(एकं कुलस्य)

सजातीयैः कुलम्

सजातीयप्राणियों के समूह (जिसे वंश, घराना, खानदान कहते हैं, यथा विप्रकुल) का नाम—(१) कुल।

(एकं यूथस्य)

यूथं तिरश्चां पुं-नपुंसकम् ॥४१॥

[1]सजातीय पशु-पक्षुओं के झुण्ड (यथा मृगयूथ) का नाम—(१) यूथ। यह पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होता है ॥ ४१ ॥

(एकं समजस्य)

पशूनां समजः

पशुवृन्द का नाम—(१) समज ।

(एकं समाजस्य)

अन्येषां समाजः

पशु-व्यतिरिक्त औरों के समुदाय का नाम—(१) समाज ।

(एकं निकायस्य)

अथ सधर्मिणाम् ।

स्यान्निकायः

एक धर्मवालों (यथा [2]बौद्धधर्म) के समूह का नाम (१) निकाय ।

(चत्वारि धान्यादिराशेः)

पुञ्ज-राशी तूत्करः कूटमस्त्रियाम् ॥४२॥

अनाज आदि की ऊँची और बड़ी ढेरी के ४ नाम—(१) पुञ्ज (२) राशि (३) उत्कर (४) कूट । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग, (३) पुँल्लिङ्ग, (४) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होता है ॥ ४२ ॥

(कपोतादीनां गणस्य पृथक्पृथगेकैकम्)

कापोत-शौक-मायूर-तैत्तिरादीनि तद्गणे ।

कबूतरों के समूह का नाम—(१) कापोत(नपुं०)।

तोतों के समूह का नाम—(१) शौक (नपुं०) ।

मोरों के समूह का नाम—(१) मायूर (नपुं०) ।

तीतरों के समूह का नाम—(१) तैत्तिर(नपुं०) ।

(द्वे गृहासक्तपक्षिमृगाणाम्)

गृहासक्ताः पक्षिमृगाश्छेकास्ते गृह्यकाश्च ते४३

घर के पालतू पशुपक्षी के २ नाम—(१) छेक (२) गृह्यक । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥४३॥

(इति सिंहादिवर्गः ५)

अथ मनुष्यवर्गः ६

(षट् मनुष्यमात्रस्य)

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नराः ।

मनुष्य मात्र के ६ नाम—(१) मनुष्य (२) मानुष (३) मर्त्य (४) मनुज (५) मानव (६) नर ।

(पञ्च मनुष्यजातौ पुरुषस्य)

स्युः पुमांसः पञ्चजनाः पुरुषाः पूरुषा नरः॥१॥

पुरुष जाति के ५ नाम—(१) पुंस् (२) पञ्चजन (३) पुरुष (४) पूरुष (५) नृ (प्रथमा एकवचन 'ना') ।

(एकादश स्त्रीमात्रस्य)

स्त्री योषिदबला योषा नारी सीमन्तिनी वधूः।
प्रतीपदर्शिनी वामा वनिता महिला तथा ॥२॥

स्त्री के ११ नाम—(१) स्त्री (२) योषित् (३) अबला (४) योषा (५) नारी (६) सीमन्तिनी (७) वधू (८) प्रतीपदर्शिनी (९) वामा (१०) वनिता (११) महिला ॥२॥

(स्त्रीणां विशेषा भेदाः)

विशेषास्तु

स्त्रियों के विशेष भेद ये हैं—

(द्वादशभेदाः स्त्रीणाम्)

अङ्गना भीरुः कामिनी वामलोचना ।
प्रमदा मानिनी कान्ता ललना च नितम्बिनी॥३॥
सुन्दरी रमणी रामा

---

१ मनुष्य को छोड़ पशु पक्षी आदि जीव तिर्यक् कहलाते हैं क्योंकि खड़े होने में उनके शरीर का विस्तार ऊपर की ओर नहीं रहता, आड़ा होता है । इनका खाया हुआ अन्न सीधे ऊपर से नीचे की ओर नहीं जाता बल्कि आड़ा होकर पेट में जाता है ।

२ बौद्धों के सूत्तपिटक में कई निकायों—दीग्घ निकाय, मज्झिम निकाय, संयुक्त निकाय, अंगुत्तर निकाय, खुद्दक निकाय—का वर्णन है ।

अच्छे अङ्गवाली औरत का नाम—(१) अङ्गना ।
डरनेवाली औरत का नाम—(१) भीरु ।
कामयुक्त स्त्री का नाम—(१) कामिनी ।
तिरछी चितवनवाली औरत का नाम—(१) वामलोचना ।
मद में भरी हुई औरत का नाम—(१) प्रमदा ।
प्यार के समय रूठने वाली औरत का नाम—(१) मानिनी ।
मनको हरलेनेवाली स्त्री का नाम—(१) कान्ता ।
दुलारी औरत का नाम—(१) ललना ।
अच्छे नितम्बवाली स्त्री का नाम—(१) नितम्बिनी ।
गोरे अंगवाली स्त्री का नाम—(१) सुन्दरी ।
रमण करनेवाली स्त्री का नाम—(१) रमणी ।
विहार के योग्य स्त्री का नाम—(१) रामा ।

(द्वे कोपशीलायाः)

कोपना सैव भामिनी ।

गुस्सावर औरत के २ नाम—(१) कोपना (२) भामिनी ।

(चत्वारि गुणैरुत्कृष्टायाः स्त्रियाः)

वरारोहा मत्तकाशिन्युत्तमा [1]वरवर्णिनी ॥४॥

गुणों के कारण उत्कृष्ट स्त्री के ४ नाम—(१) वरारोहा (२) मत्तकाशिनी (३) उत्तमा (४) वरवर्णिनी ॥४॥

(एकं पट्टाभिषिक्तराजपत्न्याः)

कृताभिषेका महिषी

[2]पटरानी का नाम—(१) महिषी ।

(एकमन्यराजस्त्रियाम्)

भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।

अनभिषिक्त अन्य रानियों का नाम—(१) भोगिनी ।

(सप्त परिणीतायाः स्त्रियाः)

पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी॥५
भार्या जायाऽथ पुंभूम्नि दाराः

[3]विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री के ७ नाम—(१) पत्नी (२) पाणिगृहीती (३) द्वितीया (४) सहधर्मिणी (५) भार्या (६) जाया (७) दारा । इनमें (१–६) स्त्रीलिङ्ग और (७ वां) 'दाराः' शब्द पुँल्लिङ्ग और नित्य बहुवचनान्त होता है ॥५॥

(द्वे पतिपुत्रादिमत्याः)

स्यात्तु कुटुम्बिनी ।
पुरन्ध्री

पति-पुत्रादि से युक्त स्त्री के २ नाम—(१) कुटुम्बिनी (२) पुरन्ध्री ।

(चत्वारि पतिसेवातत्परायाः)

सुचरित्रा तु सती साध्वी पतिव्रता ॥६॥

[4]पतिव्रता स्त्री के ४ नाम—(१) सुचरित्रा (२) सती (३) साध्वी (४) पतिव्रता ।

(त्रीणि कृतानेकविवाहस्य पुंसो या प्रथमोढा स्त्री तस्याः)

कृतसापत्नकाऽध्यूढाऽधिविन्ना

पहिली स्त्री, जिसके पति ने उसके जीवन

---

१ रुद्रकोश के अनुसार 'वरवर्णिनी' का लक्षण—
'शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी, ग्रीष्मे या सुखशीतला ।
भर्तृभक्ता च या नारी, विज्ञेया **वरवर्णिनी** ॥'

२ भारतीय राजनीति शास्त्र में 'महिषी' को अत्यन्त उच्च आसन प्रदान किया गया है । 'राजसूय' आदि यज्ञों में उसकी अत्यन्त आवश्यकता पड़ती है (देखिए पञ्चविंश ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण आदि)

३ '**जायाया**स्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः' इति मनुः (९, ८) तथा च बहृचब्राह्मणम्—
'पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वेह मातरम् ।
तस्यां पुनर्नवो भूत्वा दशमे मासि जायते ।
तज्जाया **जाया** भवति यदस्यां जायते पुनः ॥'
अपि च—
'क्रीता द्रव्येण या नारी, सा न **पत्नी** विधीयते ।'

४ साध्वीलक्षण—(मनुस्मृति ९, २९)
'पतिं या नाभिचरति मनो-वाक्-काय-संयता ।
सा भर्तृलोकानाप्नोति सद्भिः **साध्वीति** चोच्यते ॥'
पतिव्रतालक्षण—
आर्तार्त्ते मुदिते हृष्टा प्रोषिते मलिना कृशा ।
मृते म्रियते या पत्युः सा स्त्री ज्ञेया **पतिव्रता** ॥

काल में ही दूसरा विवाह कर लिया हो, के ३ नाम—(१) कृतसापत्निका (२) अध्यूढा (३) अधिविन्ना ।

(त्रीणि स्वेच्छाकृतपतिवरणायाः)

अथ स्वयम्वरा ।

पतिंवरा च वर्या च

स्वयं पति चुनने वाली स्त्री के ३ नाम—(१) स्वयम्वरा (२) पतिंवरा (३) वर्या ।

(द्वे कुलवत्याः)

अथ कुलस्त्री कुलपालिका॥७॥

कुलवन्ती स्त्री, मर्यादा से रहनेवाली कुलबधू के २ नाम—(१) कुलस्त्री (२) कुलपालिका ॥७॥

(द्वे प्रथमवयसि वर्तमानायाः)

कन्या कुमारी

लड़की के २ नाम—(१) कन्या (२) कुमारी ।

(त्रीणि अदृष्टरजस्कायाः)

गौरी तु नग्निकाऽनागतार्तवा ।

रजस्वला न हुई स्त्री के ३ नाम—(१) गौरी (२) नग्निका (३) अनागतार्तवा ।

(द्वे प्रथमप्राप्तरजोयोगायाः)

स्यान्मध्यमा दृष्टरजाः

प्रथम रजस्वला स्त्री के २ नाम—(१) मध्यमा (२) दृष्टरजस् । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे तरुण्याः)

तरुणी युवतिः समे ॥८॥

जवान स्त्री के २ नाम—(१) तरुणी (२) युवति । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८॥

(त्रीणि पुत्रभार्यायाः)

समाः स्नुषा-जनी-बध्वः

पतोहू (पुत्रवधू) के ३ नाम—(१) स्नुषा (२) जनी (३) बधू । ये (१-३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे पितृगेहस्थायाः किञ्चिल्लब्धयौवनायाः)

चिरिण्टी तु सुवासिनी ।

पिता के घर रहने वाली उठती जवानी की सयानी लड़की के २ नाम—(१) चिरिण्टी (२) सुवासिनी ।

(द्वे धनादीच्छायुक्तायाः)

इच्छावती कामुका स्यात्

धन आदि की चाहना रखने वाली के २ नाम—(१) इच्छावती (२) कामुका ।

(द्वे अश्ववृषवन्मैथुनेच्छावत्याः)

वृषस्यन्ती तु कामुकी ॥९॥

[1]मैथुन की ही चाहना रखने वाली के २ नाम—(१) वृषस्यन्ती (२) कामुकी ॥९॥

(एकं भर्त्रिच्छया रतिस्थानं गच्छन्त्याः)

[2]**कान्तार्थिनी तु या याति सङ्केतं साऽभिसारिका**

नियत समय पर अपने यार से उसके बतलाए हुए इशारे पर मिलने के लिए जानेवाली औरत का नाम—(१) अभिसारिका ।

(अष्टौ कुलटायाः)

पुंश्चली धर्षिणी बन्धक्यसती कुलटेत्वरी॥१०॥
स्वैरिणी पांसुला च स्यात्

[3]छिनाल, व्यभिचारिणी, बदचलन औरत के ८ नाम—(१) पुंश्चली (२) धर्षिणी (३) बन्धकी (४) असती (५) कुलटा (६) इत्वरी (७) स्वैरिणी (८) पांसुला ॥१०॥

---

१ स्त्रीणां द्विगुणाहारो, लज्जा चापि चतुर्गुणाः ।
साहसं षड्गुणञ्चैव कामाश्चाष्टगुणाः स्मृताः ।

२ या कान्तार्थिनी भर्तुः सङ्केतस्थानं गच्छति सा अभिसारिका । यदुक्तम्—

'हित्वा लज्जाभये श्लिष्टा मदनेन मदेन या ।
अभिसारयते कान्तं सा भवेदभिसारिका ॥'

वासकसज्जा विरहोत्कण्ठिता खण्डिता विप्रलब्धा कलहान्तरिता तथा प्रोषितभर्तृका स्वाधीनदयितेत्यन्या सप्तान्वर्थत्वान्न दर्शिताः ।

३ कुल में दाग लगना, लोकनिन्दा, बन्धन और जिन्दगी को खतरे में डालना—इन सबको परपुरुषरता कुलटा स्वीकार कर लेती हैं—

'कुलपतनं जनगर्हां बन्धनमपि जीवितव्यसन्देहम् ।
अङ्गीकरोति कुलटा सततं परपुरुषसंसक्ता ॥'

(एकं शिशुरहितायाः)

अशिश्वी शिशुना विना ।

बिना बच्चेवाली औरत का नाम—(१) अशिश्वी ।

(एकं पतिपुत्ररहितायाः)

अवीरा निष्पतिसुता

पति और पुत्र से रहित स्त्री का नाम— (१) अवीरा ।

(द्वे धवरहितायाः)

विश्वस्ता-विधवे समे ॥११॥

राँड़, विधवा के २ नाम—(१) विश्वस्ता (२) विधवा । ये (१-२) समान लिङ्गवाले (स्त्रीलिङ्ग) हैं ॥ ११ ॥

(त्रीणि सख्याः)

आलिः सखी वयस्या च

सखी, सहेली के ३ नाम—(१) आलि (२) सखी (३) वयस्या ।

(द्वे जीवद्भर्तृकायाः)

पतिवत्नी सभर्तृका ।

सोहागिन या अहिवातिन के २ नाम—(१) पतिवत्नी (२) सभर्तृका ।

(द्वे वृद्धायाः)

वृद्धा पलिक्नी

बूढ़ी औरत के २ नाम—(१) वृद्धा (२) पलिक्नी ।

(द्वे स्वयं ज्ञात्र्याः)

प्राज्ञी तु प्रज्ञा

खुद जानकार औरत के २ नाम—(१) प्राज्ञी (२) प्रज्ञा ।

(द्वे बुद्धिमत्याः)

प्राज्ञा तु धीमती ॥१२॥

बुद्धिमती, समझदार या अक्लमन्द औरत के २ नाम—(१) प्राज्ञा (२) धीमती ॥१२॥

(एकं भिन्नजातीयाया अपि शूद्रभार्यायाः)

शूद्री शूद्रस्य भार्या स्यात्

विजातीय होने पर भी शूद्र की स्त्री का नाम— (१) शूद्री ।

(एकमन्यभार्याया अपि शूद्रजातीयायाः)

शूद्रा तज्जातिरेव च ।

उस (शूद्र) जाति की होकर, अन्य जाति के पुरुष की स्त्री होने पर उसका नाम होगा— (१) शूद्रा ।

(द्वे आभीर्याः)

आभीरी तु महाशूद्री जाति-पुंयोगयोः समा

महाशूद्र की आभीरजातीया स्त्री के २ नाम— (१) आभीरी (२) महाशूद्री । जाति (अर्थात् महाशूद्र की जाति) पुंयोग (अर्थात् महाशूद्र की स्त्री) में नामद्वय ङीष्प्रत्ययान्त है ॥१३॥

(द्वे वैश्यजातीयायाः)

अर्याणी स्वमर्या स्यात्

वैश्य जाति में पैदा हुई स्त्री के २ नाम— (१) अर्याणी (२) अर्या ।

(द्वे क्षत्रियजातीयायाः)

क्षत्रिया क्षत्रियाण्यपि ।

क्षत्रिय जाति में पैदा हुई क्षत्राणी के २ नाम—(१) क्षत्रिया (२) क्षत्रियाणी ।

(द्वे विद्योपदेशिन्याः)

उपाध्यायाप्युपाध्यायी

[1]स्वयं विद्या पढ़ानेवाली स्त्री के २ नाम— (१) उपाध्याया (२) उपाध्यायी ।

(एकं स्वयं मन्त्रव्याख्यात्र्याः)

स्यादाचार्यापि च स्वतः ॥१४॥

मन्त्र का अर्थ करनेवाली स्त्री का नाम— (१) आचार्या ॥ १४ ॥

---

१ 'पुरा कल्पे तु नारीणां व्रतबन्धनमिष्यते ।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा ॥' इति पाराशरमाधवीये यमः ।
"पत्नीमध्यापयेत् । कस्मात् ? 'पत्नी जुहुयादि' ति वचनात् । नहि खल्वनधीत्य शक्नोति होतुमिति ।"

(एकमाचार्यभार्यायाः)

आचार्यानी तु पुंयोगे

[1]आचार्य की स्त्री का नाम—(१) आचार्यानी।

(एकं वैश्यपत्न्याः)

स्यादर्यी

वैश्य की स्त्री का नाम—(१) अर्यी ।

(एकं क्षत्रियपत्न्याः)

क्षत्रियी तथा ।

क्षत्रिय की स्त्री का नाम—(१) क्षत्रियी ।

(द्वे उपाध्यायस्य भार्यायाः)

उपाध्यान्युपाध्यायी

[2]पढ़ानेवाले की स्त्री के २ नाम—(१) उपाध्यानी (२) उपाध्यायी ।

(एकं स्त्रीपुंसयोः स्तनश्मश्र्वादिचिह्नयुक्तायाः)

पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥१५॥

जिसमें स्त्री और पुरुष के लक्षण (कुच-मूछ-दाढ़ी) पाये जायँ उस औरत का नाम—(१) पोटा ॥१५॥

(द्वे वीरस्य भार्यायाः)

वीरपत्नी वीरभार्या

शूर वीर की स्त्री के २ नाम—(१) वीरपत्नी (२) वीरभार्या ।

(द्वे वीरमातुः)

वीरमाता तु वीरसूः ।

वीर की माता, बहादुर की माँ के २ नाम—(१) वीरमातृ (२) वीरसू ।

(चत्वारि प्रसूतायाः)

जातापत्या प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥१६॥

प्रसूता, सौरिही औरत के ४ नाम—(१) जातापत्या (२) प्रजाता (३) प्रसूता (४) प्रसूतिका ॥ १६ ॥

(द्वे नग्नायाः)

स्त्री नग्निका कोटवी स्यात्

नङ्गी स्त्री के २ नाम—(१) नग्निका (२) कोटवी । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे दूतिकायाः)

दूती-सञ्चारिके समे ।

[3]प्रेमी का सन्देसा प्रेमिका तक या प्रेमिका का सँदेसा प्रेमी तक पहुँचानेवाली स्त्री के २ नाम—(१) दूती (२) सञ्चारिका ।

(एकं विशेषत्रयविशिष्टायाः)

कात्यायन्यर्द्धवृद्धा या काषायवसनाऽधवा १७

गेरुआ कपड़ा पहिरनेवाली अधेड़ विधवा स्त्री का नाम—(१) कात्यायनी ॥१७॥

(एकं विशेषणत्रयवत्याः)

सैरन्ध्री परवेश्मस्था स्ववशा शिल्पकारिका ।

[4]बाल सँवारने वाली, चोटी गूँथनेवाली, पराये घर में रहते हुए भी स्वतन्त्र, नौकरानी का नाम—(१) सैरन्ध्री ।

(एकं कृष्णकेशादित्रिविशेषणायाः)

असिक्नी स्यादवृद्धा या प्रेष्यान्तःपुरचारिणी १८

रनिवास में रहनेवाली जवान या अधेड़ लौंडी या मजदूरनी का नाम—(१) असिक्नी ॥१८॥

(चत्वारि वेश्यायाः)

वारस्त्री गणिका वेश्या रूपाजीवा

रण्डी या पतुरिया के ४ नाम—(१) वारस्त्री (२) गणिका (३) वेश्या (४) रूपाजीवा ।

१–२ 'आचार्य' और 'उपाध्याय' किसे कहते हैं यह जानने के लिए ब्रह्मवर्ग का ७वाँ श्लोक देखिए ।

३ साहित्य में दूतियाँ तीन प्रकार की मानी गयी हैं—उत्तमा, मध्यमा और अधमा । उत्तमा दूती वह कहलाती है जो मीठी-मीठी बातें कहकर अच्छी तरह समझाती हो । मध्यमा दूती उसे कहते हैं जो कुछ मीठी और कुछ कड़वी बातें सुनाकर अपना काम निकालना चाहती हो । केवल डाँट-फटकार की बातें कहकर अपना काम निकालनेवाली दूती को अधमा दूती कहते हैं ।

४ सैरन्ध्री का लक्षण—

चतुःषष्टिकलाभिज्ञा शीलरूपादिसेविनी ।
प्रसाधनोपचारज्ञा सैरन्ध्री परिकीर्तिता ॥

(एकं जनैः सत्कृतवेश्यायाः)

अथ सा जनैः ।

सत्कृता वारमुख्या स्यात्

इज्जतदार रण्डी का नाम—(१) वारमुख्या ।

(द्वे परनारीं पुंसा संयोजयित्र्याः)

कुट्टनी शम्भली समे ॥१९॥

स्त्रियों को बहका कर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाली औरत 'कुटनी' के २ नाम—(१) कुट्टनी (२) शम्भली ॥१९॥

(त्रीणि शुभाशुभनिरुपिण्याः)

विप्रश्निका त्वीक्षणिका दैवज्ञा

लक्षण देखकर शुभ और अशुभ बतलानेवाली औरत के ३ नाम—(१) विप्रश्निका (२) ईक्षणिका (३) दैवज्ञा ।

(अष्टौ रजस्वलायाः)

अथ रजस्वला ।

स्त्रीधर्मिण्यविरात्रेयी मलिनी पुष्पवत्यपि २०
ऋतुमत्यप्युदक्याऽपि

[1]रजस्वला के ८ नाम—(१) रजस्वला (२) स्त्रीधर्मिणी (३) अवि (४) आत्रेयी (५) मलिनी (६) पुष्पवती (७) ऋतुमती (८) उदक्या ॥ २० ॥

(त्रीणि स्त्रीरजसः)

स्याद्रजः पुष्पमार्तवम् ।

[2]स्त्रियों के योनि-मार्ग से प्रतिमास निकलने वाले रक्त के ३ नाम—(१) रजस् (२) पुष्प (३) आर्तव । ये (१-३) नपुंसक हैं ।

(द्वे गर्भवशादन्नादिविशेषाभिलाषिण्याः)

श्रद्धालुर्दोहदवती

अभिलाषा वाली गर्भिणी स्त्री के २ नाम—(१) श्रद्धालु (२) दोहदवती ।

(द्वे हीनरजस्कायाः)

निष्कला विगतार्तवा ॥२१॥

जिस स्त्री का रजोधर्म रुक गया हो उसके २ नाम—(१) निष्कला (२) विगतार्तवा ॥२१॥

(चत्वारि गर्भिण्याः)

आपन्नसत्वा स्याद्गुर्विण्यन्तर्वत्नी च गर्भिणी

गर्भवती के ४ नाम—(१) आपन्नसत्वा (२) गुर्विणी (३) अन्तर्वत्नी (४) गर्भिणी ।

(एकैकं गणिकानां, गर्भिणीनां, युवतीनाञ्च समूहस्य)

गणिकादेस्तु गाणिक्यं गार्भिणं यौवतं गणे २२

गणिका समूह का नाम—(१) गाणिक्य ।
गर्भिणी समूह का नाम—(१) गार्भिण ।
युवती समूह का नाम—(१) यौवत ॥२२॥

(द्वे द्विवारं वृतायाः)

पुनर्भूर्दिधिषूरूढा द्विः

उढ़री (वह स्त्री जिसके दो ब्याह हुए हों) के २ नाम—(१) पुनर्भू (२) दिधिषू । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(एकं द्विरूढायाः पत्युः)

तस्या दिधिषुः पतिः ।

उढ़रा (पहले एकवार व्याही हुई स्त्री का दूसरा पति) का नाम—(१) दिधिषु (पुं०) ।

(एकं द्विरूढायाः प्रधानपत्युः)

स तु द्विजोऽग्रेदिधिषुः सैव यस्य कुटुम्बिनी २३

लड़का—लड़की पैदा कर चुकने पर दूसरे के साथ विवाही गयी उढ़री स्त्री के पहले द्विज पति का नाम—(१) अग्रेदिधिषु ॥ २३ ॥

(एकमनूढापत्यस्य)

कानीनः कन्यकाजातः सुतः

१ राजनिघण्टु में लिखा है—
द्वादशाद्वत्सरादूर्ध्वमापञ्चाशत्समाः स्त्रियः ।
मासि मासि भगद्वारा प्रकृत्यैवार्त्तवं स्रवेत् ॥
आर्त्तवस्रावदिवसादृतुः षोडशरात्रयः ।
गर्भग्रहणयोग्यस्तु स एव समयः स्मृतः ।
तथा च मदनपारिजाते दक्षः—
अञ्जनाभ्यञ्जने स्नानं प्रवासं दन्तधावनम् ।
न कुर्यात्सार्तवा नारी ग्रहाणामीक्षणं तथा ॥
२ सुश्रुतसंहिता में लिखा है—
रसादेव रसः स्त्रीणां मासि मासि त्र्यहं स्रवेत् ।

[1]बिना ब्याही कन्या के पुत्र का नाम—(१) कानीन।

(द्वे सुभगापुत्रस्य)

अथ सुभगासुतः।
सौभागिनेयः

सुलक्षणा स्त्री के पुत्र के २ नाम—(१) सुभगासुत (२) सौभागिनेय ॥२४॥

(एकं परभार्यापुत्रस्य)

स्यात्पारस्त्रैणेयस्तु परस्त्रियाः ॥२४॥

पराई स्त्री के (व्यभिचार के) पुत्र का नाम—(१) पारस्त्रैणेय।

(द्वे पितृभगिन्याः सुतस्य)

पैतृष्वसेयः स्यात्पैतृष्वस्रीयश्च पितृष्वसुः। सुतः

बुआ या फूफी के लड़कों के २ नाम—(१) पैतृष्वसेय (२) पैतृष्वस्रीय।

(द्वे मातृष्वसुः पुत्रस्य)

मातृष्वसुश्चैवम्

इसी प्रकार मौसी के लड़कों का भी जानना; अर्थात् मौसी के लड़कों के २ नाम—(१) मातृष्वसेय (२) मातृष्वस्रीय।

(द्वे अपरमातृसुतस्य)

वैमात्रेयो विमातृजः ॥ २५ ॥

सौतेली माँ के लड़कों के २ नाम—(१) वैमात्रेय (२) विमातृज ॥२५॥

(पञ्च कुलटापुत्रस्य)

अथ बान्धकिनेयः स्याद्बन्धुलश्चासतीसुतः। कौलटेरः कौलटेयः

व्यभिचारिणी, छिनाल या बदचलन औरत के लड़कों के ५ नाम—(१) बान्धकिनेय (२) बन्धुल (३) असतीसुत (४) कौलटेर (५) कौलटेय।

(द्वे भिक्षार्थं गेहं गेहमटन्त्याः सत्याः पुत्रस्य)

भिक्षुकी तु सती यदि ॥२६॥
तदा कौलटिनेयोऽस्याः कौलटेयोऽपि चात्मजः।

पतिव्रता भिखारिन के पुत्रों के २ नाम—(१) कौलटिनेय (२) कौलटेय ॥२६॥

(पञ्च पुत्रस्य)

आत्मजस्तनयः सूनुः सुतः पुत्रः

[2]पुत्र, बेटा के ५ नाम—(१) आत्मज (२) तनय (३) सूनु (४) सुत (५) पुत्र।

(षट् पुत्रिकायाः)

स्त्रियां त्वमी ॥२७॥
आहुर्दुहितरं सर्वे

पुत्री, लड़की के ६ नाम—(१) आत्मजा (२) तनया (३) सूनु (४) सुता (५) पुत्री (६) दुहितृ। (ये १–५ शब्द 'आत्मज' आदि के स्त्रीलिङ्ग में होने पर होते हैं।) ॥२७॥

(द्वे पुत्र-कन्ययोः)

अपत्यं तोकं तयोः समे।

इन दोनों (पुत्र-पुत्री), सन्तान, के २ नाम—(१) अपत्य (२) तोक। ये (१–२) नपुंसक लिङ्ग हैं।

(द्वे स्वस्माज्जातपुत्रस्य)

स्वजाते त्वौरसोरस्यौ

[3]सवर्णा स्त्री के गर्भ से उत्पन्न पुत्र के २ नाम—(१) औरस (२) उरस्य।

---

१ मनुस्मृति (१७२) में लिखा है—
पितृवेश्मनि कन्या तु यं पुत्रं जनयेद्रहः।
तं **कानीनं** वदेन्नाम्ना वोढुः कन्यासमुद्भवम् ॥

२ मनु भगवान् (६, १३८) कहते हैं—
पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात्त्रायते पितरं सुतः।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयम्भुवा।

३ मनुस्मृति (६, १६६)
स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम्।
तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥

निरुक्त (३, ४) में—
अङ्गादङ्गात्सम्भवसि हृदयादधिजायसे।
आत्मा वै पुत्रनामासि सजीव शरदः शतम् ॥

भवभूति ने उत्तररामचरित (६,२२) में 'अङ्गादङ्गात्सृत इव' इत्यादि लिखा है।

(त्रीणि पितुः)

तातस्तु जनकः पिता ॥२८॥

पिता, बाप के ३ नाम—(१) तात (२) जनक (३) पितृ ॥२८॥

(चत्वारि जनन्याः)

जनयित्री प्रसूर्माता जननी

माता, माँ के ४ नाम—(१) जनयित्री (२) प्रसू (३) मातृ (४) जननी ।

(द्वे भगिन्याः)

भगिनी स्वसा ।

बहिन के २ नाम—(१) भगिनी (२) स्वसृ ।

(एकं भर्तृभगिन्याः)

ननान्दा तु स्वसा पत्युः

ननद (पति के बहिन) का नाम—(१) ननान्दृ ।

(त्रीणि सुतस्य सुतायाश्चात्मजायाः)

नप्त्री पौत्री सुतात्मजा ॥२९॥

पोती या नतिनी के ३ नाम—(१) नप्त्री (२) पौत्री (३) सुतात्मजा ॥२९॥

(एकं भ्रातृवर्गभार्यायाः)

भार्यास्तु भ्रातृवर्गस्य यातरः स्युः परस्परम् ।

देवरानी-जेठानी का नाम—(१) यातृ (स्त्रीलिङ्ग) ।

(द्वे भ्रातृपत्न्याः)

प्रजावती भ्रातृजाया

भावज, भौजाई, भाभी के २ नाम—(१) प्रजावती (२) भ्रातृजाया ।

(द्वे मातुलभार्यायाः)

मातुलानी तु मातुली ॥३०॥

मामी के २ नाम—(१) मातुलानी (२) मातुली ॥३०॥

(एकं श्वश्र्वाः)

पति-पत्न्योः प्रसूः श्वश्रूः

सास, पति और पत्नी की माता, का नाम—(१) श्वश्रू (स्त्रीलिङ्ग) ।

(एकं श्वशुरस्य)

श्वशुरस्तु पिता तयोः ।

ससुर (पति और पत्नी के पिता) का नाम—(१) श्वशुर ।

(एक पितृव्यस्य)

पितुर्भ्राता पितृव्यः स्यात्

चाचा, काका, पितिया का नाम—(१) पितृव्य ।

(एकं मातुलस्य)

मातुर्भ्राता तु मातुलः ॥३१॥

मामा का नाम—(१) मातुल ॥३१॥

(एकं श्यालस्य)

श्यालाः स्युर्भ्रातरः पत्न्याः

साला (अपनी स्त्री के भाई) का नाम—(१) श्याल ।

(द्वे पत्युः कनिष्ठभ्रातुः)

स्वामिनो देवृ-देवरौ ।

देवर (पति के छोटे भाई) के २ नाम—(१) देवृ (२) देवर ।

(द्वे भगिनीसुतस्य)

स्वस्रीयो भागिनेयः स्यात्

भाञ्जा, भयने के २ नाम—(१) स्वस्रीय । (२) भागिनेय ।

(एकं जामातुः)

जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३२ ॥

[1]दामाद, जँवाई का नाम—(१) जामातृ ॥ ३२ ॥

(एकं पितामहस्य)

पितामहः पितृपिता

दादा का नाम—(१) पितामह ।

---

१ शास्त्रों के अनुसार दामाद के लक्षण—
'विद्याशौर्यधनाश्रयो गुणनिधिः ख्याता युवा सुन्दरः,
सच्चारः सुकुलोद्भवो मधुरवाग दाता दयासागरः ।
भोगी भूरिकुटुम्बवान् स्थिरमतिः पापार्त्तिहीनो बली,
जामाता परिवर्णितः कविवरैरेवंविधः सत्तमः ॥'

(एकं प्रपितामहस्य)

तत्पिता प्रपितामहः ।

बाबा, आजा, परदादा का नाम—(१) प्रपितामह ।

(एकैकं मातामहस्य)

मातुर्मातामहाद्येवम्

माता के पिता, नाना, का नाम—(१) मातामह ।

नाना के पिता, पर-नाना, का नाम—(१) प्रमातामह ।

(द्वे सपिण्डस्य)

सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ३३ ॥

[1]जिनके जन्म और मरण में अशौच लगता है उन बान्धवों के २ नाम—(१) सपिण्ड (२) (२) सनाभि ॥ ३३ ॥

(चत्वारि एकोदरोत्पन्नभ्रातुः)

समानोदर्य-सोदर्य-सगर्भ्य-सहजाः समाः ।

सगा भाई के ४ नाम—(१) समानोदर्य (२) सोदर्य (३) सगर्भ्य (४) सहज । ये (१–४) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(षट् सगोत्रस्य)

सगोत्र-बान्धव-ज्ञाति-बन्धु-स्व-स्वजनाःसमाः ३४

[2]गोतिया, भाई, बन्ध के ६ नाम—(१) सगोत्र (२) बान्धव (३) ज्ञाति (४) बन्धु (५) स्व (६) स्वजन । ये समान अर्थ और समान लिङ्ग (पुं०) वाले हैं ॥३४॥

(एकैकं ज्ञातिभावस्य, बन्धुसमूहस्य च)

ज्ञातेयं बन्धुता तेषां क्रमाद्भाव-समूहयोः ।

जाति-भाव का नाम—(१) ज्ञातेय (नपुं०) । बन्धु-समूह का नाम—(१) बन्धुता (स्त्री०) ।

(चत्वारि पत्युः)

धवः प्रियः पतिर्भर्ता

पति के ४ नाम—(१) धव (२) प्रिय (३) पति (४) भर्तृ ।

(द्वे मुख्यादन्यस्य भर्तुः)

जारस्तूपपतिः समौ ॥३५॥

यार, गुप्तपति के २ नाम—(१) जार (२) उपपति ॥ ३५ ॥

(एकं जीवति पत्यौ जारजातस्य)

अमृते जारजः कुण्डः

[3]पति के रहते उपपति से उत्पन्न सन्तान का नाम—(१) कुण्ड ।

(एकं विधवायां जारजातस्य)

मृते भर्तरि गोलकः ।

---

१ निम्नाङ्कित व्यक्ति सपिण्ड कहे गये हैं—

पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र ; विधवा, कन्या, कन्यापुत्र ;
पिता, माता, भ्राता, भतीजा, भाई का पोता; नाती ;
चचेरा भाई, चचेरे भाई का लड़का; दादा की लड़की का लड़का; दादा; दादी, दादा का भाई, दादा के भाई का लड़का, दादा के भाई का पोता; परदादा की लड़की का लड़का ।

विष्णु (१५, ४०) ने बतलाया है—'यश्चार्थहरः स पिण्डदायी ।' मिताक्षरा और दायभाग के अनुसार उत्तराधिकारियों का क्रम भिन्न २ हैं । मनु ने अथर्ववेद (१८,४,३५) के मन्त्र—'वैश्वानरे हविरिदं जुहोमि साहस्रं शतधारमुत्समम् । स बिभर्ति पितरं पितामहान् प्रपितामहान् बिभर्ति पिन्वमानः ॥' के अनुसार ९,१८६ में लिखा है—

'त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते ।
चतुर्थः सम्प्रदातैषां पञ्चमो नोपपद्यते ॥'

गौतमधर्मसूत्र (१४, १३) में लिखा है—'पिण्ड-निवृत्तिः सप्तमे पञ्चमे वा ।' एक स्थान पर, मनुस्मृति (५, ६०) और विष्णु (२२,५) में लिखा है—'सपिण्डता तु पुरुषे, सप्तमे विनिवर्तते ।' शंखलिखित 'सपिण्डता तु सर्वेषां गोत्रतः साप्तपौरुषी ।'

३ पद्मपुराण में लिखा है—

मुनीश ! जातयः प्रोक्ता धर्मशास्त्रेषु सर्वतः ।
सपिण्डा गोत्रसम्बन्धप्रवरस्थानदायिनः ॥
येषां जन्मविरामादिसूतकाशौचवृत्तयः ।
दायित्वेन भवेयुस्ते ज्ञातयश्चैकवंशजाः ॥

'बन्धु' के लिए गौतमधर्मसूत्र (४,३,५,६, ३) और आपस्तम्बधर्मसूत्र (२,५,११,१७) देखिए ।

¹विधवा के जार से उत्पन्न पुत्र का नाम—(१) गोलक।

(द्वे भ्रातृपुत्रस्य)

भ्रात्रीयो भ्रातृजः

भतीजा के २ नाम—(१) भ्रात्रीय (२) भ्रातृज।

(द्वे भ्रातृ-भगिन्योः)

भ्रातृ-भगिन्यौ भ्रातरावुभौ ॥३६॥

भाई-बहिन के २ नाम—(१) भ्रातृ-भगिन्यौ (२) भ्रातरौ। यहाँ भाई और बहिन दोनों का ग्रहण होने से द्विवचन है ॥३६॥

(चत्वारि माता-पित्रोः)

मातापितरौ पितरौ मातरपितरौ प्रसूजनयितारौ।

माता-पिता के संयुक्त ४ नाम—(१) माता-पितरौ (२) पितरौ (३) मातरपितरौ (४) प्रसूजनयितारौ।

(द्वे श्वश्रू-श्वशुरयोः)

श्वश्रूश्वशुरौ श्वशुरौ

सास-ससुर के संयुक्त २ नाम—(१) श्वश्रूश्वशुरौ (२) श्वशुरौ।

(एकं कन्या-पुत्रयोः)

पुत्रौ पुत्रश्च दुहिता च ॥३७॥

बेटा-बेटी का संयुक्त नाम—(१) पुत्रौ।३७।

(चत्वारि जायापत्योः)

दम्पती जम्पती जायापती भार्यापती च तौ।

पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष, जोरू-खसम के संयुक्त ४ नाम—(१) दम्पती (२) जम्पती (३) जायापती (४) भार्यापती। (१-४) शब्द द्विवचनान्त पुँल्लिङ्ग में होते हैं।

(त्रीणि गर्भवेष्टनचर्मणः)

गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्वं च

जिसमें गर्भस्थ बालक बँधा हुआ होता है उस झिल्ली (आँवल या खेड़ी) के ३ नाम—(१) गर्भाशय (२) जरायु (३) उल्व।

(एकं मिश्रितशुक्रशोणितरूपगर्भस्य)

कललोऽस्त्रियाम् ॥३८॥

प्रथम दिन वीर्य और रज के संयोग से जिस सूक्ष्म पिण्ड की सृष्टि होती है, उसका नाम—(१) कलल। यह पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ॥ ३८ ॥

(द्वे प्रसवमासस्य)

सूतिमासो वैजननः

प्रसवमास (गर्भस्थ बालक के पैदा होने के ९ वें या १० वें महिने) के २ नाम—(१) सूतिमास (२) वैजनन।

(द्वे कुक्षिस्थस्य प्राणिनः)

गर्भो भ्रूण इमौ समौ।

हमल, गर्भ के २ नाम—(१) गर्भ (२) भ्रूण। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(पञ्च नपुंसकस्य)

तृतीयाप्रकृतिः षण्ढः क्लीबः पण्डो नपुंसके ३९

²हिजड़ा, नामर्द के ५ नाम—(१) तृतीया-प्रकृति (२) षण्ढ (३) क्लीब (४) पण्ड (५) नपुंसक। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग, (२,४) पुँल्लिङ्ग, (३,५) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक, में होते हैं ॥ ३९ ॥

(त्रीणि शैशवस्य)

शिशुत्वं शैशवं बाल्यम्

लड़कपन के ३ नाम—(१) शिशुत्व (२) शैशव (३) बाल्य। ये (१-३) नपुंसक हैं।

(द्वे यौवनस्य)

तारुण्यं यौवनं समे।

जवानी, तरुणाई के २ नाम—(१) तारुण्य

१, १ परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ कुण्ड-गोलकौ।
पत्यौ जीवति **कुण्डः** स्यान्मृते भर्तरि **गोलकः** ॥
—मनुस्मृतिः (३,१७४)

२ उद्वाहतत्त्वे—
न मूत्रं फेणिलं यस्य विष्ठा वाप्सु निमज्जति।
मेढ्रश्चोन्मादशुक्राभ्यां हीनः **क्लीबः** स उच्यते ॥

(२) यौवन । ये (१–२) नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।

(त्रीणि वार्द्धकस्य, एकं वृद्धसमूहस्य च)

स्यात्स्थाविरं तु वृद्धत्वं वृद्धसंघेऽपि वार्धकम् ४०

बुढ़ापा, वृद्धावस्था के ३ नाम—(१) स्थाविर (२) वृद्धत्व (३) वार्धक ।

वृद्धों के समूह का नाम—(१) वार्धक ॥४०॥

(एकं पलितस्य)

पलितं जरसा शौक्ल्यं केशादौ

बुढ़ापा के कारण बाल, रोएँ आदि के पकने (सफेद होने) का नाम—(१) पलित । यह पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होता है ।

(द्वे जरायाः)

विस्रसा जरा ।

बुढ़ाई के २ नाम—(१) विस्रसा (२) जरा । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(चत्वारि स्तनन्धयस्य)

स्यादुत्तानशया डिम्भा स्तनपा च स्तनन्धयी४१

दूध पीने वाले बच्ची-बच्चे के ४ नाम—(१) उत्तानशया (२) डिम्भा (३) स्तनपा (४) स्तनन्धयी । ये ('त्रिषु जरावराः' ४६ वाँ श्लोक) और आगे के सब शब्द तीनों लिङ्ग में कहे जायंगे । यहाँ जो स्त्रीत्व है वह स्त्रीत्व में रूप-भेद के प्रदर्शन के लिए है । यद्यपि 'डिम्भ' शब्द पहले (सिंहादिवर्ग, श्लोक ३८ में) लिख आये हैं तथापि पुनः यहाँ स्त्रीलिङ्ग में रूप दिखलाने के लिए लिखा है ॥ ४१ ॥

(द्वे बालस्य)

बालस्तु स्यान्माणवकः

[1]सोलह वर्ष की उम्र तक के बालक के २ नाम—(१) बाल (२) माणवक ।

(त्रीणि यूनः)

वयस्थस्तरुणो युवा ।

[2]जवान आदमी के ३ नाम—(१) वयस्थ (२) तरुण (३) युवन् ।

(षट् वृद्धस्य)

प्रवयाः स्थविरो वृद्धो जीनो जीर्णो जरन्नपि४२

[3]बुड्ढा के ६ नाम—(१) प्रवयस् (२) स्थविर (३) वृद्ध (४) जीन (५) जीर्ण (६) जरत् ॥ ४२ ॥

(त्रीण्यतिवृद्धस्य)

वर्षीयान्दशमी ज्यायान्

बहुत बुड्ढा के ३ नाम—(१) वर्षीयस् (२) दशमिन् (३) ज्यायस् ।

(त्रीणि ज्येष्ठभ्रातुः)

पूर्वजस्त्वग्रियोऽग्रजः ।

बड़े (जेठे) भाई के ३ नाम—(१) पूर्वज (२) अग्रिय (३) अग्रज ।

(पञ्च कनिष्ठभ्रातुः)

जघन्यजे स्युः कनिष्ठ-यवीयोऽवरजाऽनुजाः ४३

छोटे (लहुरे) भाई के ५ नाम—(१) जघन्यज (२) कनिष्ठ (३) यवीयस् (४) अवरज (५) अनुज ॥ ४३ ॥

(त्रीणि निर्बलस्य)

अमांसो दुर्बलश्छातः

कमज़ोर (दुबला-पतला) के ३ नाम—(१) अमांस (२) दुर्बल (३) छात ।

---

१ 'बाल' के सम्बन्ध में कहा गया है—

'आषोडश भवेद्बालः तरुणस्तत उच्यते ।'

एक आचार्य के मत से—

'आपञ्चवर्षाद् बाल्यं स्यात्पौगण्डं नववर्षतः ।

आषोडशाच्च कैशोरं यौवनं च ततः परम् ॥'

१ 'बाला' के सम्बन्ध में राजनिघण्टु में लिखा है—

'बालेति गीयते नारी यावद्वर्षाणि षोडश ।

सा ग्रीष्म-शरत्कालयोः प्रशस्ता हर्षदा च ॥'

२ सोलहवर्ष के बाद से ५० वर्ष तक की उम्रवाला व्यक्ति, राजनिघण्टु के अनुसार, युवा है । और १६ वर्ष के बाद ३२ वर्ष तक की स्त्री, भावप्रकाश के अनुसार, युवती है ।

३ राजनिघण्टु के अनुसार ५१ वें वर्ष से वृद्धावस्था शुरु होती है ।

(त्रीणि बलवतः)

बलवान्मांसलोंऽसलः ।

बलवान (मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट) के ३ नाम—(१) बलवत् (२) मांसल (३) अंसल ।

(पञ्च स्थूलोदरस्य)

तुन्दिलस्तुन्दिभस्तुन्दी बृहत्कुक्षिः पिचण्डिलः

तोंदवाले, निकले हुए पेटवाले व्यक्ति के ५ नाम—(१) तुन्दिल (२) तुन्दिभ (३) तुन्दिन् (४) बृहत्कुक्षि (५) पिचण्डिल ॥४४॥

(चत्वारि चिपिटनासिकस्य)

अवटीटोऽवनाटश्चावभ्रटो नतनासिके ।

नक-चिपटा आदमी के ४ नाम—(१) अवटीट (२) अवनाट (३) अवभ्रट (४) नतनासिक ।

(त्रीणि प्रशस्तकेशस्य, स्थूलकेशस्य वा)

केशवः केशिकः केशी

सुन्दर बाल या लम्बे बालवाले व्यक्ति के ३ नाम—(१) केशव (२) केशिक (३) केशिन् ।

(द्वे जरया श्लथचर्मणः)

बलिनो बलिभः समौ ॥४५॥

बुढ़ाई के कारण शिकन (सिकुड़न) पड़े हुए चमड़े वाले व्यक्ति के २ नाम—(१) बलिन (२) बलिभ । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ४५ ॥

(द्वे निसर्गतो न्यूनाधिकावयवस्य)

विकलाङ्गस्त्वपोगण्डः

जिसके स्वाभाविक ही कोई अङ्ग कम या ज्यादा हों उसके २ नाम—(१) विकलाङ्ग (२) अपोगण्ड ।

(त्रीणि ह्रस्वस्य)

खर्वो ह्रस्वश्च वामनः ।

बौना, नाटा आदमी के ३ नाम—(१) खर्व (२) ह्रस्व (३) वामन ।

(द्वे तीक्ष्णनासिकस्य)

खरणाः स्यात्खरणसः

खड़ी नाक वाले व्यक्ति के २ नाम—(१) खरणस् (२) खरणस ।

(द्वे गतनासिकस्य)

विग्रस्तु गतनासिकः ॥४६॥

नकटा (जिसकी नाक कट गयी हो उस) के २ नाम—(१) विग्र (२) गतनासिक ॥४६॥

(द्वे पशुखुरसदृशनासिकस्य)

खुरणाः स्यात्खुरणसः

पशुओं के खुर की तरह फैली हुई नाकवाले आदमी के २ नाम—(१) खुरणस् (२) खुरणस ।

(द्वे वातादिना विरलजानुकस्य)

प्रज्ञुः प्रगतजानुकः ।

टेढ़ा मेढ़ा घुटनावाले (लचरा) व्यक्ति के २ नाम—(१) प्रज्ञु (२) प्रगतजानुक ।

(द्वे ऊर्ध्वजानुकस्य)

ऊर्ध्वज्ञुरूर्ध्वजानुः स्यात्

ऊँचे घुटनेवाले व्यक्ति के २ नाम—(१) ऊर्ध्वज्ञु (२) ऊर्ध्वजानु ।

(द्वे संलग्नजानुकस्य)

संज्ञुः संहतजानुकः ॥ ४७ ॥

मिले हुए जांघवाले पुरुष के २ नाम—(१) संज्ञु (२) संहतजानुक ॥४७॥

(द्वे श्रवणेन्द्रियहीनस्य)

स्यादेडे बधिरः

बहिरा आदमी के २ नाम—(१) एड (२) बधिर ।

(द्वे कुब्जस्य)

कुब्जे गडुलः

[1]कुबड़ा (वह पुरुष जिसकी पीठ टेढ़ी हो या झुक गयी हो) के २ नाम—(१) कुब्ज (२) गडुल ।

---

१ इसका लक्षण माधवनिदान में लिखा गया है कि—
'हृदयं यदि वा पृष्ठमुन्नतं क्रमशः सरुक् ।
क्रुद्धो वायुर्यदा कुर्यात्तदा तकुब्जमादिशेत् ॥'

(द्वे रोगादिना वक्रकरस्य)

कुकरे कुणिः ।

टूँटे के २ नाम—(१) कुकर (२) कुणि। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे अल्पशरीरस्य)

पृश्निरल्पतनौ

छोटी देहवाले के २ नाम—(१) पृश्नि (२) अल्पतनु । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे जंघाविकलस्य)

श्रोणः पङ्गौ

पङ्गुले के २ नाम—(१) श्रोण (२) पङ्गु ।

(द्वे कृतवपनस्य)

मुण्डस्तु मुण्डिते ॥४८॥

मुँड़े हुए, घुटे हुए के २ नाम—(१) मुण्ड (२) मुण्डित ॥४८॥

(द्वे नेत्रवियुक्तस्य)

वलिरः केकरे

कंजा, भेंगा, ऐंचा के २ नाम—(१) वलिर (२) केकर ।

(द्वे गतिविकलस्य)

खोडे खञ्जः

[1]लङ्गड़ के २ नाम—(१) खोड (२) खञ्ज ।

त्रिषु जरावराः ।

'जरा' शब्द के बाद 'उत्तानशया' (श्लोक ४१वाँ) से लेकर 'खञ्ज' पर्यन्त शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे कृष्णवर्णस्य देहगतचिह्नविशेषस्य)

जडुलः कालकः पिप्लुः

लहसन, महोसा (शरीर के ऊपर, जन्म से उत्पन्न चिह्न विशेष) के ३ नाम—(१) जडुल (२) कालक (३) पिप्लु ।

(द्वे आकृतितो वर्णतश्च कृष्णतिलतुल्यस्यदेहगतचिह्नस्य)

तिलकस्तिलकालकः ॥४९॥

तिल (काले-काले शरीर के दाग़) के २ नाम—(१) तिलक (२) तिलकालक ॥४९॥

(द्वे रोगाभावस्य)

अनामयं स्यादारोग्यम्

नीरोग्य, रोगहीनता (तन्दुरुस्ती) के २ नाम—(१) अनामय (२) आरोग्य ।

(द्वे रोगप्रतीकारस्य)

चिकित्सा रुक्प्रतिक्रिया ।

[2]इलाज (रोग दूर करने की युक्ति या क्रिया) के २ नाम—(१) चिकित्सा (२) रुक्प्रतिक्रिया ।

(पञ्चौषधस्य)

भेषजौषध-भैषज्यान्यगदो जायुरित्यपि ॥५०॥

दवा के ५ नाम—(१) भेषज (२) औषध (३) भैषज्य (४) अगद (५) जायु । इनमें (१–३) नपुंसक, (४–५) पुँल्लिङ्ग हैं ॥५०॥

(सप्त रोगमात्रस्य)

स्त्री रुग्रुजा चोपताप-रोग-व्याधि-गदाऽऽमयाः

[3]बीमारी, रोग, व्याधि के ७ नाम—(१) रुज् (२) रुजा (३) उपताप (४) रोग (५)

---

१ खञ्ज एक प्रकार का रोग होता है; जिसमें मनुष्य का पैर जकड़ जाता है और वह चल फिर नहीं सकता । वैद्यक के अनुसार इस रोग में कमर की वायु जाँघ की नसों को पकड़ लेती है, जिससे पैर स्तम्भित हो जाता है ।—(माधवनिदान)

२ आयुर्वेद के दो विभाग हैं, एक तो **निदान** जिसमें पहचान के लिए रोगों के लक्षण आदि का वर्णन रहता है और दूसरा **चिकित्सा** जिसमें भिन्न-भिन्न रोगों के लिए भिन्न-भिन्न औषधों की व्यवस्था रहती है । चिकित्सा तीन प्रकार की मानी गयी है—दैवी, मानुषी, और आसुरी । जिसमें पारे की प्रधानता हो वह दैवी, जो छः रसों के द्वारा की जाय वह मानुषी, और जो चीरफाड़ ('आपरेशन') के द्वारा हो वह आसुरी कहलाती है ।

भावप्रकाश में लिखा है—

'या क्रिया व्याधिहरणी सा चिकित्सा निगद्यते ।'

सा त्रिधा यथा—

आसुरी मानुषी दैवी चिकित्सा त्रिविधा मता ।
शस्त्रैः कषायैर्लौहाद्यैः क्रमेणान्त्या सुपूजिता ॥ (भै० र०)

३ '**रोगस्तु** दोषवषम्यं, दोषसाम्यमरोगता ।'

व्याधि (६) गद (७) आमय । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग, (३-७) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि क्षयरोगस्य)

क्षयः शोषश्च यक्ष्मा च

[1]क्षयी रोग के ३ नाम—(१) क्षय (२) शोष (३) यक्ष्मन् । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे नासारोगस्य)

प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥५१॥

[2]पीनस रोग के २ नाम—(१) प्रतिश्याय (२) पीनस ॥५१॥

(त्रीणि क्षुतरोगस्य)

स्त्री क्षुत् क्षुतं क्षवः पुंसि

[3]छींक के ३ नाम—(१) क्षुत् (२) क्षुत (३) क्षव । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, (२ रा) नपुंसक, (३ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे कासरोगस्य)

कासस्तु क्षवथुः पुमान् ।

[4]खांसी के २ नाम—(१) कास (२) क्षवथु । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि शोथस्य)

शोफस्तु श्वयथुः शोथः

[5]सूजन के ३ नाम—(१) शोफ (२) श्वयथु (३) शोथ । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे पादस्फोटस्य)

पादस्फोटो विपादिका ॥५२॥

[6]बिवाँई के २ नाम—(१) पादस्फोट (२) विपादिका । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, और (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ॥५२॥

(द्वे सिध्मस्य)

किलास-सिध्मे

[7]सेहुआँ रोग के २ नाम—(१) किलास (२) सिध्म । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

(चत्वारि क्षुद्रकुष्ठरोगविशेषस्य)

कच्छ्वां तु पाम पामा विचर्चिका ।

---

१ यक्ष्मा का निदान—

'वेगरोधात् क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशनात् ।
त्रिदोषो जायते यक्ष्मा गदो हेतु चतुष्टयात् ॥'

यक्ष्मा शब्द की निरुक्ति—

'वैद्यो व्याधिमता यस्माद्व्याधिर्यत्नेन यक्ष्यते ।
स यक्ष्मा प्रोच्यते लोके शब्दशास्त्रविशारदैः ॥
राज्ञश्चन्द्रमसो यक्ष्मादभूदेष किलामयः ।
तस्मात्तं राजयक्ष्मेति प्रवदन्ति मनीषिणः ॥
क्रियाक्षयकरत्वात्तु क्षय इत्युच्यते बुधैः ।
संशोषणाद्रसादीनां शोष इत्यभिधीयते ॥'

२ सुश्रुत के अनुसार पीनस रोग का लक्षण—

आनह्यते यस्य विधूप्यते च पापच्यते क्लिद्यति चापि नासा ।
न वेत्ति यो गन्धरसांश्च जन्तुर्जुष्टं व्यवस्येत् तमपीनसेन ॥
तच्चानिलश्लेष्मभवं विकारं ब्रूयात् प्रतिश्यायसमानलिङ्गम् ।'

३ शार्ङ्गधरसंहिता में लिखा है—

'उदानप्राणयोरूर्ध्वयोगान्मौलिकफस्रवात् ।
शब्दः सञ्जायते तेन क्षुतं तत्कथ्यते बुधैः ॥'

४ भावप्रकाश में लिखा है—

'धूमोपघाताद्रजसस्तथैव व्यायामरूक्षान्ननिषेवनाच्च ।
विमार्गगत्वादपि भोजनस्य वेगावरोधात् क्षवथोस्तथैव ॥
प्राणो ह्युदानानुगतः प्रदुष्टः सम्भिन्नकांस्यस्वनतुल्यघोषः ।
निरेति वक्त्रात्सहसा सघोषो मनीषिभिः कास इति प्रदिष्टः ॥'

५ सुश्रुतसंहिता में लिखा है—

'शुद्ध्यामयाऽभुक्तकृशाबलानां क्षाराम्लतीक्ष्णोष्णगुरूपसेवा ।
दध्याममृच्छाक विरोधि-पिष्ट-गरोपसृष्टान्ननिषेवणाच्च ॥
अर्शांस्यचेष्टा वपुषो ह्यशुद्धिर्मर्माभिघातो विषमा प्रसूतिः ।
मिथ्योपचारः प्रतिकर्मणाञ्च निजस्य हेतुः श्वयथोः प्रदिष्टः ॥'

६ सुश्रुतसंहिता के कथनानुसार बिवाई का लक्षण—

'स्विन्नस्यास्नाप्यमानस्य कण्डूः रक्तकफोद्भवा ।
कण्डूयनात्ततः क्षिप्रं स्फोटः स्रावश्च जायते ॥'

कहा जाता है कि—'जाके पाँव न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई ।'

७ सुश्रुतसंहिता के अनुसार इसका लक्षण—

'कण्डूवन्वितं श्वेतमपायि सिध्मं विद्यात्तनुप्रायशः ऊर्ध्वकाये ।'

माधवनिदान में लिखा है—

'श्वेतं ताम्रं तनु च यत् रजो घृष्टं विमुञ्चति ।
प्रायश्चोरसि तत् सिध्ममलाबुकुसुमोपमम् ॥'

[1]खाज-खसरा के ४ नाम—(१) कच्छू (२) पामन् (३) पामा (४) विचर्चिका। इनमें (२ रा) नपुंसक है; और शेष स्त्रीलिङ्ग हैं।

(त्रीणि गात्रविघर्षणस्य)

कण्डूः खर्जूश्च कण्डूया

खुजली के ३ नाम—(१) कण्डू (२) खर्जू (३) कण्डूया। ये (१-३) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे दुष्टस्फोटस्य)

विस्फोटः पिटकस्त्रिषु ॥५३॥

[2]फोड़ा के २ नाम—(१) विस्फोट (२) पिटक। इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग में; और (२ रा) पुँ०-स्त्री-नपुं० लिङ्ग में होता है ॥५३॥

(त्रीणि व्रणस्य)

व्रणोऽस्त्रियामीर्ममरुः क्लीबे

[3]घाव के ३ नाम—(१) व्रण (२) ईर्म (३) अरुस्। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में, (२-३) नपुंसकलिङ्ग में होते हैं।

(एकं सदा गलतो व्रणस्य)

नाडीव्रणः पुमान्।

[4]नासूर का नाम—(१) नाडीव्रण (पुँल्लिङ्ग)

(द्वे पिटकवन्मण्डलयुक्तक्षुद्ररोगान्तर्गतचर्म्मरोगस्य)

कोठो मण्डलकम्

[5]एक प्रकार का कोढ़ जो चकत्ते की तरह होता है उसके २ नाम—(१) कोठ (२) मण्डलक।

(द्वे श्वेतकुष्ठस्य)

कुष्ठ-श्वित्रे

[6]सफेद कोढ़ के २ नाम—(१) कुष्ठ (२) श्वित्र। ये (१-२) नपुंसक हैं।

(द्वे अर्शाख्यगुदरोगविशेषस्य)

दुर्नामकाऽर्शसी ॥५४॥

---

१ माधवनिदान और सुश्रुत निदानस्थान अ० १३ के कथनानुसार—

'सूक्ष्मा बह्वयः पिडकाः स्राववत्यः पामेत्युक्ताः कण्डुमत्यः सदाहाः।
सैव स्फोटैस्तीव्रदाहैरुपेता ज्ञेया पाण्योः कच्छुरुग्रा स्फिचोश्च॥'
'राज्योऽतिकण्ड्वर्त्तिरुजः सुरूक्षा भवन्ति गात्रेषु विचर्चिकायाम्'

हिन्दी का मुहाविरा 'कोढ़ में खाज निकलना' सुप्रसिद्ध है। गो० तुलसीदास जी कहते हैं—'एक तो कराल कलिकाल सूल मूल तामें, **कोढ़ में की खाज** सी सनीचरी है मीन की।'

२ तस्य निदानपूर्वा सम्प्राप्तिमाह—
'कट्वम्लतीक्ष्णोष्णविदाहिरूक्षक्षारैरजीर्णाध्यशनातपैश्च।
तथर्तुदोषेण विपर्ययेण कुप्यन्ति दोषाः पवनादयस्तु॥
त्वचमाश्रित्य ते रक्तं मांसास्थीनि प्रदूष्य च।
घोरान् कुर्वन्ति विस्फोटान् सर्वाञ्ज्वरपुरःसरान्॥ भा. प्र.

३ सुश्रुतसंहितायाम्—
'व्रणः द्विविधः (१) शारीर (२) आगन्तुश्चेति। तयोः शारीरः पवन-पित्त-कफ-शोणित-सन्निपातनिमित्तः।
आगन्तुरपि पुरुषपशुपक्षिव्यालसरीसृप-पीडनप्रहाराग्निक्षारविषतीक्ष्णौषधशकलकपालशृङ्गचक्रेषु-परशु-शक्तिकुन्ताद्यायुधाद्यभिघातनिमित्तः।'

४ वाग्भट्ट में लिखा है—
अभेदात्पक्वशोफस्य व्रणे चापथ्यसेविनः।
अनुप्रविश्य मांसादीन् दूरं पूयोऽभिधावति॥
गतिः सा दूरगमनात् नाडी नाडीव संस्रुते।
नाड्येकानृजुरन्येषां सैवानेकगतिर्गतिः॥

५ तस्य लक्षणं माधवनिदाने—
'असम्यग्वमनोदीर्णपित्तश्लेष्मान्ननिग्रहैः।
मण्डलानि सकण्डूनि रागवन्ति बहूनि च॥
उत्कोठः सानुबन्धस्तु **कोठ** इत्यभिधीयते।'

६ सुश्रुतसंहिता में लिखा है—
'मिथ्याहारविहाराचारस्य विशेषाद्गुरुविरुद्धासात्म्याजीर्णाहिताशिनः स्नेहपीतस्य वान्तस्य वा व्यायामग्राम्यधर्मसेविनो ग्राम्यानूपौदकमांसानि वा पयसाभीक्ष्णमश्नतो यो वा मज्जत्यप्सूष्माभितप्तः सहसा छर्दिं वा प्रतिहन्ति तस्य पित्तश्लेष्माणौ प्रकुपितौ परिगृह्यानिलः प्रवृद्धस्तिर्य्यगाः शिराः सम्प्रतिपद्य समुद्भूय बाह्यं मार्गं प्रति समन्ताद्विक्षिपति, यत्र यत्र च दोषो विक्षिप्तो निःसरति, तत्र तत्र मण्डलानि प्रादुर्भवन्ति, एवमुत्पन्नस्त्वचि दोषस्तत्र च परिवृद्धिं प्राप्याप्रतिक्रियमाणोऽभ्यन्तरं प्रतिपद्यते धातून्दूषयन्।

[1]बवासीर के २ नाम—(१) दुर्नामक (२) अर्शस् । ये (१–२) नपुंसक हैं ॥ ५४ ॥

(द्वे विण्मूत्रनिरोधस्य)

आनाहस्तु विबन्धः स्यात्

क़ब्जियत (मलबद्ध रोग) के २ नाम—(१) आनाह (२) विबन्ध ।

(द्वे संग्रहणीरोगस्य)

ग्रहणीरुक् प्रवाहिका ।

[2]संग्रहणी के २ नाम—(१) ग्रहणीरुक् (२) प्रवाहिका । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि वमनरोगस्य)

प्रच्छर्दिका वमिश्च स्त्री पुमांस्तु वमथुः समाः ॥५५

कै, उलटी, छाँट, वमन के ३ नाम—(१) प्रच्छर्दिका (२) वमि (३) वमथु । इनमें (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं, और (३ रा) पुँल्लिङ्ग ॥ ५५ ॥

(विद्रध्यादीनां रोगप्रभेदानां प्रत्येकमेकैकम्)

व्याधिभेदा विद्रधिः स्त्री ज्वर-मेह-[3]भगन्दराः ।

[4]व्यरथिया रोग का नाम—(१) विद्रधि (स्त्रीलिङ्ग)

[5]बुखार का नाम—(१) ज्वर (पुं०)

[6]प्रमेह, बहुमूत्र रोग का नाम—(१) मेह (पुं०)

[7]भगन्दर (गुदारोग विशेष) का नाम—(१) भगन्दर (पुं०)

(द्वे अश्मर्याः)

अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात्

[8]पथरी रोग के २ नाम—(१) अश्मरी (२) मूत्रकृच्छ्र । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, और (२ रा) नपुंसक है ।

---

१ अर्शोनिदानम्—

'दोषास्त्वङ्मांसमेदांसि सन्दूष्य विविधाकृतीन् ।
मांसाङ्कुरानपानादौ कुर्वन्त्यर्शांसि तां जगुः ॥
पृथग्दोषैः समस्तैश्च शोणितात्सहजानि च ।
अर्शांसि षट् प्रकाराणि विद्याद्गुदवलित्रये ॥

कर्मविपाकसंहितायाम्—

'दत्वाथ वेतनं योऽध्येत्यादायापि च वेतनम् ।
अध्यापयेच्च जुहुयाज्जपेद्वाऽर्शोयुतो भवेत् ॥'

२ सुश्रुत में लिखा है—

षष्ठी पित्तधरा नाम या कला परिकीर्तिता ।
पक्वामाशयमध्यस्था ग्रहणी सा प्रकीर्तिता ॥
ग्रहणी बलमग्निर्हि स चापि ग्रहणी मतः ।
तस्मादग्नौ प्रदुष्टे तु ग्रहण्यपि प्रदुष्यति ॥

३ किन्हीं २ पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

(द्वे पादरोगविशेषस्य)

श्लीपदं पादवल्मीकम्

पैर फूलजाने के रोग के २ नाम—(१) श्लीपद (२) पादवल्मीक ।

(द्वे केशघ्नरोगस्य)

केशघ्नस्त्विन्द्रलुप्तकः ।

चंदलाई (एक रोग का नाम जिसमें सिर के बाल उड़ जाते हैं और फिर नहीं जमते) के २ नाम—(१) केशघ्न (२) इन्द्रलुप्तक ।

४ माधवनिदान में लिखा है—

'त्वग्रक्तमांसमेदांसि सन्दूष्यास्थिसमाश्रिताः ।
दोषाः शोथं शनैर्घोरं जनयन्त्युच्छ्रिताभृशम् ॥
महाशूलं रुजावन्तं वृत्तं वाप्यथवायतम् ।
स **विद्रधि**रिति ख्यातो विज्ञेयः षड्विधश्च सः ॥'

५ ज्वर कई प्रकार का होता है—साधारण, सन्निपात आदि । इसके सम्बन्ध में कहा जाता है—

यथा मृगानां मृगयुर्बलिष्ठः तथा गदानां प्रबलो ज्वरोऽयम् ।
नान्योऽपि शक्तो मनुजं विहाय सोढुं भुवि प्राणभृतः सुराद्याः

६ माधवनिदान में प्रमेह के सम्बन्ध में कहा गया है—

आस्यासुखं स्वप्नसुखं दधीनि ग्राम्योदकानूपरसाः पयांसि ।
नवान्नपानं गुडवैकृतञ्च प्रमेहहेतुः कफकृच्च सर्वम् ।
मेदश्च मांसञ्च शरीरजञ्च क्लेदं कफो वस्तिगतः प्रदूष्य ।
करोति मेहान् समुदीर्णमुष्णैस्तानेव पित्तं परिदूष्य चापि ॥ इत्यादि ।

७ भगगुदवस्तिप्रदेशदारणाद्भगन्दरा इत्युच्यन्ते ।
गुदस्य द्व्यङ्गुले क्षेत्रे पार्श्वतः पिटकार्त्तिकृत् ।
भिन्नो **भगन्दरो** ज्ञेयः स च पञ्चविधो मतः ॥

८ असंशोधनशीलस्यापथ्यकारिणः प्रकुपितः श्लेष्मा ।
मूत्रसम्पृक्तोऽनुप्रविश्य वस्तिमश्मरीं जनयति ।

कहा जाता है—अश्मरी दारुणो व्याधिरन्तक प्रतिमो मतः ।
तरुणो भेषजैः साध्यः प्रवृद्धश्छेदमर्हति ॥

पूर्वं शुक्रावधेस्त्रिषु ॥५६॥

'वार्त' से आरम्भ होकर, शुक्र के पूर्व 'मूर्च्छित' (श्लोक ६१) तक के शब्द तीनों लिङ्ग में होते है ॥ ५६ ॥

(पञ्च वैद्यस्य)

रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यौ चिकित्सके ।

[1]वैद्य के ५ नाम—(१) रोगहारिन् (२) अगदङ्कार (३) भिषज् (४) वैद्य (५) चिकित्सक ।

(चत्वारि रोगमुक्तस्य)

वार्तो निरामयः कल्य उल्लाघो निर्गतो गदात्

रोगमुक्त के ३ नाम—(१) वार्त (२) निरामय (३) कल्य (४) उल्लाघ । ये (१–४) पुं० स्त्री-नपुंसक में होते हैं। किन्हीं के मत से (१–३) नीरोगी के नाम है और (४ था) उस व्यक्ति का नाम है जिसका रोग छूट गया हो ॥ ५७ ॥

(द्वे रोगादिवशात् हर्षरहितस्य)

ग्लान-ग्लास्नू

रोग से दुःखी के २ नाम—(१) ग्लान (२) ग्लास्नु । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

(सप्त रोगिणः)

आमयावी विकृतो व्याधितोऽपटुः ।
आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तः

रोगी के ७ नाम—(१) आमयाविन् (२) विकृत (३) व्याधित (४) अपटु (५) आतुर (६) अभ्यमित (७) अभ्यान्त । ये (१–७) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

(द्वे पामायुक्तस्य)

समौ पामन-कच्छुरौ ॥५८॥

खाज-खसरावाले के २ नाम—(१) पामन (२) कच्छुर । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥५८॥

(द्वे दद्रुयुक्तस्य)

दद्रुणो दद्रुरोगी स्यात्

दादवाले के २ नाम—(१) दद्रुण (२) दद्रुरोगिन् । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

(द्वे अर्शोयुक्तस्य)

अर्शोरोगयुतोऽर्शसः ।

बवासीर वाले के २ नाम—(१) अर्शोरोगयुत (२) अर्शस । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

(द्वे वातरोगयुक्तस्य)

वातकी वातरोगी स्यात्

वायुरोग (बादी) वाले के २ नाम—(१) वातकिन् (२) वातरोगिन् । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

(द्वे अतीसारयुक्तस्य)

सातिसारोऽतिसारकी ॥५९॥

संग्रहणी रोगवाले के २ नाम—(१) सातिसार (२) अतिसारकिन् । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥५९॥

---

१ वैद्यलक्षणम्—
आयुर्वेदकृताभ्यासो धर्मशास्त्रपरायणः ।
अध्याप्योऽध्यापनञ्चैव चिकित्सा वैद्यलक्षणम् ॥
सद्वैद्यलक्षणम्—
विप्रो वैद्यकपारगः शुचिरनूचानः कुलीनः कृती
धीरः कालकलाविदाऽऽस्तिकमतिर्दक्षः सुधीर्धार्मिकः ।
स्वाचारः समदृग्दयालुरखलो यः सिद्धमन्त्रक्षमः
शान्तः काममलोलुपः कृतयशाः वैद्यः स विद्योतते ॥
कुवैद्यलक्षणम्—
अधीरः कर्कशः स्तब्धः सरोगी न्यूनशिक्षितः ।
पञ्च वैद्या न पूज्यन्ते धन्वन्तरिसमा अपि ॥
अपि च भैषज्यरत्नावल्याम्—
व्याधेस्तत्त्वपरिज्ञानं वेदनायाश्च निग्रहः ।
एतद्वैद्यस्य वैद्यत्वं न वैद्यः प्रभुरायुषः ॥
एक कवि वैद्यजी को नमस्कार कर कहते हैं—
वैद्यराज ! नमस्तुभ्यं यमराजसहोदर !
यमस्तु प्राणान्हरते वैद्यः प्राणान्धनानि च ॥

(चत्वारि क्लिन्ननेत्ररोगयुक्तस्य)

स्युः क्लिन्नाक्षे चुल्ल-चिल्ल-पिल्लाः क्लिन्नेऽक्ष्णि चाप्यमी ।

चोंधराई आँख वाले (जिसकी आँख में से पीब की तरह पदार्थ निकला करता है उस) के ४ नाम—(१) क्लिन्नाक्ष (२) चुल्ल (३) चिल्ल (४) पिल्ल। ये (१–४) पुं–स्त्री–नपुंसक में होते हैं।

(द्वे उन्मादयुक्तस्य)

उन्मत्त उन्मादवति

बौरहा, पागल के २ नाम—(१) उन्मत्त (२) उन्मादवत्। ये (१–२) पुं–स्त्री–नपुंसक में होते हैं।

(त्रीणि कफयुक्तस्य)

श्लेष्मलः श्लेष्मणः कफी ॥६०॥

कफ (बलगम) वाले के ३ नाम—(१) श्लेष्मल (२) श्लेष्मण (३) कफिन्। ये (१–३) पुं–स्त्री–नपुंसक में होते हैं ॥६०॥

(एकं कुब्जस्य)

न्युब्जो भुग्ने रुजा

कुबड़ा (जिसकी पीठ रोग से टेढ़ी हो और मुँह नीचे की ओर झुक जाता है उस) का नाम—(१) न्युब्ज। यह पुं–स्त्री–नपुंसक में होता है।

(त्रीणि वातादिनोन्नतनाभियुक्तपुरुषस्य)

वृद्धनाभौ तुन्दिल-तुन्दिभौ ।

वायु के प्रकोप के कारण जिसकी नाभि बढ़ जाती है उस पुरुष के ३ नाम—(१) वृद्धनाभि (२) तुन्दिल (३) तुन्दिभ। ये (१–३) पुं–स्त्री–नपुंसक में होते हैं।

(द्वे क्षुद्रकुष्ठरोगयुक्तपुरुषस्य)

किलासी सिध्मलः

सेहुँआहाँ के २ नाम—(१) किलासिन् (२) सिध्मल। ये (१–२) तीनों लिङ्ग में होते हैं।

(द्वे नेत्रहीनस्य)

अन्धोऽदृक्

अन्धा के २ नाम—(१) अन्ध (२) अदृश्। ये (१–२) तीनों लिङ्ग में होते हैं।

(त्रीणि मूर्च्छायुक्तस्य)

मूर्च्छाले मूर्त-मूर्च्छितौ ॥६१॥

गश में पड़े हुए, बेहोश के ३ नाम—(१) मूर्च्छाल (२) मूर्त (३) मूर्च्छित। ये (१–३) तीनों लिङ्ग में होते है ॥ ६१ ॥

(षट् रेतसः)

शुक्रं तेजो-रेतसी च बीज-वीर्येन्द्रियाणि च ।

[1]वीर्य, धातु के ६ नाम—(१) शुक्र (२) तेजस् (३) रेतस् (४) बीज (५) वीर्य (६) इन्द्रिय। ये (१–६) नपुंसक लिङ्ग में होते हैं।

(द्वे पित्तस्य)

मायुः पित्तम्

[2]पित्त के २ नाम—(१) मायु (२) पित्त। इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग और (२ रा) नपुंसक है।

(द्वे कफस्य)

कफः श्लेष्मा

---

१ हमारे खाए हुए भोजन का अन्तिम परिणाम वीर्य ही है। हम जो कुछ खाते-पीते हैं, उसी में से क्रमशः रस, खून मांस, चर्बी, अस्थि, मज्जा और वीर्य बनता है।

भावप्रकाश में लिखा है—

रसाद्रक्तं, ततो मांसं, मांसान्मेदः प्रजायते।

मेदसोऽस्थि, ततो मज्जा, मज्ज्ञः शुक्रस्य सम्भवः ॥

खाये भोजन का, एक मास और ६ घड़ी बाद वीर्य बनता है। २० रतल खुराक में से २ रतल खून बनता है और २ रतल खून से २॥ तोला वीर्य बनता है। दो मन भोजन जितने दिनों में मनुष्य खाता है, उतने ही दिनों में यह २॥ तोला वीर्य पैदा होता है। यदि ताजे शुक्र की अणुवीक्षण यन्त्र (Microscope) द्वारा, परीक्षा की जावे तो उसमें बड़ी फुरती से इधर उधर फिरते हुए कीट सदृश चीज दिखाई देंगी। इसको शुक्राणु या शुक्रकीट कहते हैं। (देखिए हमारे शरीर की रचना, द्वितीयभाग, पृष्ठ ७६५)।

२ यकृत में जो पाचक रस बनता है उसको पित्त कहते हैं। पित्त के ५ प्रकार—पाचक पित्त, रञ्जक पित्त, साधक पित्त, आलोचक पित्त और भ्राजक पित्त।

[1]कफ के २ नाम—(१) कफ (२) श्लेष्मन् । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे चर्मणः)

स्त्रियां तु त्वगसृग्धरा ॥

[2]चाम, खाल के २ नाम—(१) त्वच् (२) असृग्धरा । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६२॥

(षट् मांसस्य)

पिशितं तरसं मांसं पललं क्रव्यमामिषम् ।

[3]मांस के ६ नाम—(१) पिशित (२) तरस (३) मांस (४) पलल (५) क्रव्य (६) आमिष ।

(त्रीणि शुष्कमांसस्य)

उत्तप्तं शुष्कमांसं स्यात्तद्वल्लूरं त्रिलिङ्गकम् ६३

सूखा मांस के ३ नाम—(१) उत्तप्त (२) शुष्कमांस (३) वल्लूर । इनमें (१-२) नपुंसक, (३ रा) पुं०-स्त्री-नपुंसक है ॥ ६३ ॥

(सप्त रक्तस्य)

रुधिरेऽसृग्लोहितास्र-रक्त-क्षतज-शोणितम् ।

[4]लोहू, खून के ७ नाम—(१) रुधिर (२) असृज् (३) लोहित (४) अस्र (५) रक्त (६) क्षतज (७) शोणित । ये (१-७) नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे हृदयान्तर्गतमांसविशेषस्य)

बुक्काऽग्रमांसम्

[5]कलेजा के २ नाम—(१) बुक्का (२) अग्रमांस । इनमें (१ला) पुं-स्त्री-नपुं०, (२रा) नपुं० है ।

(द्वे हृदयस्य)

हृदयं हृत्

[6]हृदय के २ नाम—(१) हृदय (२) हृद् । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

(त्रीणि मेदस्य)

मेदस्तु वपा वसा ॥६४॥

[7]चर्बी के ३ नाम—(१) मेदस् (२) वपा (३) वसा । इनमें (१ला) नपुं-पुं०, (२-३) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥६४॥

(एकं ग्रीवायाः पश्चाद्भागे स्थितशिरायाः)

पश्चाद्ग्रीवाशिरा मन्या

[8]गले के पीछे की नस का नाम—(१) मन्या ।

(त्रीणि धमन्याः)

नाडी तु धमनिः शिरा ।

---

१ अवलम्बक इत्येकः क्लेदकः श्लेष्मकोऽपरः ।
बोधकस्तर्पकश्चेति **श्लेष्मा** पञ्चविधः स्मृतः ॥

२ हाड़-पिञ्जर के सबसे ऊपरी भाग को चाम कहते हैं । इसके द्वारा शरीर के भीतरी अङ्गों की रक्षा होती है । इसी में से पसीना निकलता है ।

३ मांसस्वरूप—
शोणितं स्वाग्निना पक्वं वायुना च घनीकृतम् ।
तदेव मांसं जानीयात्…… ॥

रक्त में रहनेवाली अग्नि द्वारा पके और वायु द्वारा गाढ़े हुए रुधिर का नाम मांस है । रक्ताशय में गया हुआ रस, रक्त हो जाता है और मांस के स्थान में गया हुआ रुधिर, मांस बन जाता है ।

४ रक्तस्वरूपं शार्ङ्गधरसंहितायाम्—
रसस्तु हृदयं याति समानमारुतेरितः ।
रञ्जितः पाचितस्तत्र पित्तेनायाति रक्तताम् ॥
रक्तं सर्वशरीरस्थं जीवस्याधारमुत्तमम् ।
स्निग्धं गुरु चलं स्वादु विदग्धं पित्तवद्भवेत् ॥

अर्थात्—आमाशय से जब भोजन का रस कलेजे में जाता है, तब पित्त के संयोग द्वारा, वह रंगदार बनता है । फिर परिपक्व हो जाने से इसे रक्त की संज्ञा मिल जाती है । रक्त सारे शरीर में रहता है । यही जीव का सर्वोत्तम आहार है । यह स्निग्ध, भारी, गतिवाला तथा मधुर है ।

५ 'वक्षोऽधः पार्श्वभागे'—वैद्यकशब्दसिन्धुः ।

६ रक्त परिचालक यन्त्र का नाम हृदय है । यह अंग अनैच्छिक माँस से निर्मित है और दोनों फुफ्फुसों के बीच में वक्ष के भीतर रहता है । हृदय नियमानुसार सिकुड़ता और फैलता रहता है । फैलने पर उसमें रक्त का प्रवेश होता है और सिकुड़ने पर उसमें से रक्त बाहर निकलता है । संकोच और प्रसार से एक शब्द उत्पन्न होता है जो लूब-डप, लूब-डप जैसा सुनाई दिया करता है ।

७ 'कारबन' और 'हाइड्रोजन' के संयोग से चर्बी बनती है ।

८ कानों के पीछे मध्यरेखा में जो शिर का नीचे का भाग है वह 'गुद्दी' (Nape of neck) कहलाता है ।

[1]नाड़ी के ३ नाम—(१) नाडी (२) धमनि (३) शिरा । ये (१-३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे मांसपिण्डविशेषस्य 'फुफ्फुस' इति ख्यातस्य)

तिलकं क्लोम

[2]क्लोम या फुफ्फुस के २ नाम—(१) तिलक (२) क्लोमन् । ये (१–२) नपुंसक हैं ।

(द्वे मस्तकसम्भूतघृताकारस्नेहस्य)

मस्तिष्कं गोर्दम्

[3]गुरदा के २ नाम—(१) मस्तिष्क (२) गोर्द ।

(द्वे कर्णादिगतमलस्य)

किट्टं मलोऽस्त्रियाम् ॥६४॥

[4]कान आदि के मैल के २ नाम—(१) किट्ट (२) मल । इनमें (१ला) नपुंसकलिङ्ग में और (२ रा) पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग में होता है ॥६४॥

(द्वे अन्त्रस्य)

अन्त्रं पुरीतत्

[5]आँत के २ नाम—(१) अन्त्र (२) पुरीतत् । इनमें (१ ला) नपुंसक में, और (२रा) पुँल्लिङ्ग—नपुंसक में होता है ।

(द्वे वामकुक्षिस्थमांसपिण्डविशेषस्य)

गुल्मस्तु प्लीहा पुंसि

[6]तिल्ली के २ नाम—(१) गुल्म (२) प्लीहन् । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं । किसी २ आचार्य के मत से 'प्लीहा' शब्द स्त्रीलिङ्ग भी है ।

(द्वे अङ्गप्रत्यङ्गसन्धिबन्धनरूपायाः स्नायोः)

अथ वस्नसा ।

स्नायुः स्त्रियाम्

[7]नस, मांस के डोरे के २ नाम—(१) वस्नसा (२) स्नायु । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे दक्षिणकुक्षिगतमांसपिण्डस्य)

कालखण्ड-यकृती तु समे इमे ॥६६॥

[8]पेट के दाहिने ओर का मांसखण्ड (जिगर, जिसे अंग्रेजी में 'लिवर' Liver कहते हैं) के

---

१ शरीर में रक्त, नलियों के भीतर रहता है। रक्त की नलियाँ दो प्रकार की हैं:—(अ) वे नलियाँ जिनकी दीवारें मोटी होती हैं और जिनके भीतर शुद्ध रक्त रहता है । इन्हें **धमनियाँ** कहते हैं ।

(ब) वे नलियाँ जिनकी दीवारें पतली होती हैं और जिनमें अशुद्ध रक्त रहता है । ये **शिराएँ** कहलाती हैं ।

२ भावप्रकाश में लिखा है—'अधस्तु दक्षिणे भागे हृदयात् क्लोम तिष्ठति ।' यह ग्रन्थि उदर में रीढ़ के सामने आमाशय और अन्त्र के पीछे रहती है। इसका रस एक नली द्वारा पक्वाशय में जाता है और भोजन को पचाता है।

फुफ्फुस या फेफड़े (Lungs) दो होते हैं। वे छाती में हृदय के दाहिनी और बाईं ओर रहते हैं। भारतीयों के दोनों फुफ्फुसों का भार एक सेर के लगभग होता है ।

३ शिर के ऊपर का भाग भीतर से खोखला होता है; इसके भीतर मस्तिष्क या दिमाग़ रहता है। ऊपरी हिस्से पर कभी २ चिकनाहट लिए एक पदार्थ उत्पन्न होता है जिसे गुरदा कहते हैं ।

४ 'वसा शुक्रमसृक् मज्जा कर्णविण्मूत्रविण्नखाः ।
श्लेष्माश्रुदूषिकाः स्वेदो द्वादशैते नृणां मलाः ॥'

५ अन्ननली में आमाशय के नीचे के भाग से जो नली जुड़ी हुई है, उसे आँत कहते हैं। यह आँत ३० फीट लम्बी होती है।

६ प्लीहा या तिल्ली (spleen) उदर में बायीं ओर रहती है; कोई प्रणाली नहीं होती । ज्वरों में विशेष कर मलेरिया ज्वर (मौसिमी बुख़ार) और काला अज़ार में यह बहुत बड़ी हो जाया करती है । स्वस्थ मनुष्य में इसका भार ५ छटाँक के लगभग होता है। तिल्ली का काम खून को शुद्ध करना है।

७ शरीर की प्रत्येक हरक़त इन मांस के डोरों द्वारा होती है। चलना, खाना, हाथ हिलाना, बोलना और आँख फेरना—इन सब शरीर के कामों में स्नायुओं की ही जरूरत होती है। शारीरिक तत्ववेत्ताओं का मत है कि शरीर में इनकी संख्या ५०० है ।

८ जिगर शरीर भर में सबसे बड़ा ग्रन्थि है और उदर के ऊपर के भाग वक्षउदरमध्यस्थ पेशी के नीचे पसलियों की आड़ में रहता है ।

'अधो दक्षिणतश्चापि हृदयाद्यकृतस्थितिः ।
तत्तु रञ्जकपित्तस्य स्थानं शोणितजं मतम् ॥
—(भा० प्र०)

२ नाम—(१) कालखण्ड (२) यकृत् । ये (१-२) नपुंसक हैं ॥६६॥

(त्रीणि लालायाः)

सृणिका स्यन्दिनी लाला

[1]लार के ३ नाम—(१) सृणिका (२) स्यन्दिनी (३) लाला ।

(एकं नेत्रमलस्य)

दूषिका [2]नेत्रयोर्मलम् ।

आँख के कीचड़ का नाम—(१) दूषिका ।

(द्वे मूत्रस्य)

मूत्रं प्रस्रावः

मूत, पेशाब के २ नाम—(१) मूत्र (२) प्रस्राव । इनमें (१ ला) नपुंसक और (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(नव विष्ठायाः)

उच्चारावस्करौ शमलं शकृत् ॥६७॥
गूथं पुरीषं वर्चस्कमस्त्री विष्ठा-विशौ स्त्रियौ ।

गूह, पाखाना, विष्ठा के ९ नाम—(१) उच्चार (२) अवस्कर (३) शमल (४) शकृत् (५) गूथ (६) पुरीष (७) वर्चस्क (८) विष्ठा (९) विश् । इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३–६) नपुंसक, (७ वाँ) पुँल्लिङ्ग–नपुंसक लिङ्ग, (८–९) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥ ६७ ॥

(द्वे शिरोस्थिखण्डस्य)

स्यात्कर्परः कपालोऽस्त्री

[3]खोपड़ी, कपार के २ नाम—(१) कर्पर (२) कपाल । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, और (२ रा) पुँल्लिङ्ग—नपुंसक है ।

(त्रीणि अस्थिमात्रस्य)

कीकसं कुल्यमस्थि च ॥६८॥

[4]हाड़, हड्डी के ३ नाम—(१) कीकस (२) कुल्य (३) अस्थि । ये (१–३) नपुंसक हैं ॥ ६८ ॥

(एकं त्वङ्मांसरहितशरीरास्थ्नः)

स्याच्छरीरास्थ्नि कङ्कालः

[5]पाँजर, अस्थिपञ्जर (जिसे अँग्रेजी में 'स्केलिटन' skeleton कहते हैं) का नाम—(१) कङ्काल ।

(एकं पृष्ठमध्यगतास्थिदण्डस्य)

पृष्ठास्थ्नि तु कशेरुका ।

[6]रीढ़ का नाम—(१) कशेरुका ।

(एकं शिरोऽस्थ्नः)

शिरोऽस्थनि करोटिः स्त्री

---

१ दाँतों की जड़ों से रस या लार निकलती है और यही रस भोजन पचाने में सहायक होता है । इसीलिए वैद्यक ग्रन्थों में खूब चबा-चबा कर भोजन करने के लिए आदेश है ।

२ अन्य पुस्तकों में यह श्लोक अधिक मिलता है—

(एकं नासामलस्य)

नासामलं तु सिंघाणम्

नाक की मैल, नकटी, का नाम—(१) सिंघाण ।

(एकं कर्णमलस्य)

पिञ्जूषं कर्णयोर्मलम् ।

कान की मैल, खूँट, का नाम—(१) पिञ्जूष ।

३ खोपड़ी में २२ अस्थियाँ होती हैं । इसका वह भाग जो आठ अस्थियों के परस्पर मेल से बना है **कपाल** कहलाता है ।

४ मेद अपनी अन्दर की अग्नि से पकता और वायु उसका रस सोखता है । इसके इस रूपान्तर को ही हाड़ कहते हैं । शरीर में हाड़ों की संख्या ३०० है ।

अस्थिस्वरूपम्—

'मेदो यत्स्वाग्निना पक्वं वायुना चातिशोधितम् ।
तदास्थिसंज्ञां लभते च सारः सर्वविग्रहे ॥'(वै०श०सि)

५ यदि त्वचा, मांस, वसा के मांस और सौत्रिक तंतु से निर्मित कोमल अङ्गों को काट—छाँट कर शरीर से निकाल दिया जाय तो शरीर का दृढ़ ढाँचा बाकी रहेगा । इस कुल ढाँचे को **कंकाल** कहते हैं । शरीर के १०० भागों में १६ भाग कंकाल के होते हैं ।

६ ग्रीवा, पीठ और कमर की मध्य रेखा में अंगुली से टटोलने से जो डण्डे जैसी कड़ी चीज मालूम होती है, उसको रीढ़, पृष्ठवंश या कशेरु कहते हैं । यह २६ अस्थियों से बना है ।

खोपड़ी की हड्डी का नाम—(१) करोटि (स्त्रीलिङ्ग)।

(एकं पार्श्वास्थ्नः)

पार्श्वास्थनि तु पर्शुका ॥६९॥

[1]पसली का नाम—(१) पर्शुका ॥६९॥

(चत्वारि देहावयवस्य)

अङ्गं प्रतीकोऽवयवोऽपघनः

[2]अङ्ग, जिस्म के ४ नाम—(१) अङ्ग (२) प्रतीक (३) अवयव (४) अपघन।

(द्वादश देहस्य)

अथ कलेवरम्।
गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ॥७०॥
कायो देहः क्लीब-पुंसोः स्त्रियां मूर्तिस्तनुस्तनूः

[3]देह के १२ नाम—(१) कलेवर (२) गात्र (३) वपुष् (४) संहनन (५) शरीर (६) वर्ष्मन् (७) विग्रह (८) काय (९) देह (१०) मूर्ति (११) तनु (१२) तनू। इनमें (१–६) नपुंसक, (७–८) पुँल्लिङ्ग, (९ वाँ) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग, (१०–१२) स्त्रीलिङ्ग में होते हैं ॥७०॥

(द्वे पादाग्रस्य)

पादाग्रं प्रपदम्

[4]पैर की अँगुलियों के पीछे वाले भाग के २ नाम—(१) पादाग्र (२) प्रपद।

(चत्वारि चरणस्य)

पादः पदंघ्रिश्चरणोऽस्त्रियाम् ॥७१॥

पांव, पैर के ४ नाम—(१) पाद (२) पद् (३) अङ्घ्रि (४) चरण। इनमें (१–३) पुँल्लिङ्ग, (४ था) पुं०-नपुंसक में होता है ॥७१॥

(द्वे पादग्रन्थ्योः)

तद्ग्रन्थी घुटिके गुल्फौ

[5]गट्टे के २ नाम—(१) घुटिका (२) गुल्फ। गट्टे दो होते हैं इसलिए द्विवचन में रूप दिया गया है। इनमें (१–ला) स्त्रीलिङ्ग, (२ रा) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में होता है।

(एकं पादपश्चाद्भागस्य)

पुमान्पार्ष्णिस्तयोरधः।

[6]एड़ी का नाम—(१) पार्ष्णि (पुँल्लिङ्ग)।

(द्वे जङ्घायाः)

जंघा तु प्रसृता

जंघा के २ नाम—(१) जङ्घा (२) प्रसृता। ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(त्रीणि जान्वोः)

जानूरुपर्वाऽष्ठीवदस्त्रियाम् ॥७२॥

[7]घुटना के ३ नाम—(१) जानु (२) ऊरुपर्वन् (३) अष्ठीवत्। ये (१–३) पुँल्लिङ्ग और नपुँसकलिङ्ग में होते हैं ॥७२॥

(द्वे जानूपरिभागस्य)

सक्थि क्लीबे पुमानूरुः

घुटना के ऊपर के हिस्से के २ नाम—(१) सक्थि (२) ऊरु। इनमें (१ला) नपुंसक, और (२रा) पुँल्लिङ्ग, है।

(एकमूरुसन्धेः)

तत्सन्धिः पुंसि वंक्षणः।

[8]जंघासा का नाम— (१) वंक्षण (पुँल्लिङ्ग)

---

१ दोनों ओर बारह-बारह पसलियाँ होती हैं।

२ अवयव को अंग्रेजी में Organ (आर्गन) कहते हैं।

३ देह को अंग्रेजी में Body (बाडी) कहते हैं।

४ राजनिघण्टु में लिखा है—'पादाग्रं प्रपदं मतम्।' त्रिपार्श्विक वा घन अस्थियों के सामने और अंगुलियों के पीछे पैर का जो भाग है वह प्रपद या प्रपाद कहलाता है।

५ जिस स्थान पर टाँग पैर से जुड़ी रहती है और जहाँ इन दोनों में गति होती है वह स्थान 'टखना' कहलाता है। टखने में इधर उधर दो उभार होते हैं जो 'गट्टे' कहलाते हैं।

६ टखने के नीचे जो पीछे को निकला हुआ पैर का भाग है वह एड़ी कहलाता है।

७ जिस स्थान पर टाँग जाँघ पर पीछे को मुड़ जाती है वह जानु है। इसे अंग्रेजी में Knee (नी) कहते हैं।

८ घुटने और उदर के बीच में जो भाग है उसको ऊरु कहते हैं। जाँघ उदर पर मुड़ जाती है। जिस स्थान से

(त्रीणि विष्ठानिर्गमद्वारस्य)

गुदं त्वपानं पायुर्ना

[1]मलद्वार, गुदा के ३ नाम—(१) गुद (२) अपान (३) पायु । इनमें (१–२) नपुंसक, (३ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(एकं मूत्राशयस्य)

वस्तिर्नाभेरधो द्वयोः ॥ ७३ ॥

[2]मूत्राशय, मसाना का नाम—(१) वस्ति । यह पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में होता है ॥७३॥

(द्वे कटीफलकस्य)

कटो ना श्रोणिफलकम्

कमर के दोनों बगल के २ नाम—(१) कट (२) श्रोणिफलक । (१ला) पुं०, (२रा) नपुं० ।

(त्रीणि कटेः)

कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।

कमर के ३ नाम—(१) कटि (२) श्रोणि (३) ककुद्मती । ये (१–३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(एकं स्त्रीकट्याः पश्चाद्भागस्य)

पश्चान्नितम्बः स्त्रीकट्याः

[3]स्त्री के चूतड़ का नाम—(१) नितम्ब ।

(एकं स्त्रीकट्याः पुरोभागस्य)

क्लीबे तु जघनं पुरः ॥७४॥

[4]स्त्री के कोख का नाम—(१) जघन (नपुंसक) ॥७४॥

(एकं पृष्ठवंशादधोगर्तयोः)

कूपकौ तु नितम्बस्थौ द्वयहीने कुकुन्दरे ।

[5]चूतड़ में स्थित और पीठ की रीढ़ के अधो भाग में विद्यमान, कूप सदृश गड्ढों का नाम—(१) कुकुन्दर । यह द्वयहीन (पुं–स्त्रीलिङ्ग वर्जित) केवल नपुंसक में होता है ।

(द्वे कटिदेशस्थमांसपिण्डयोः)

स्त्रियां स्फिचौ कटिप्रोथौ

कूल्हे के २ नाम—(१) स्फिच् (२) कटिप्रोथ । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(एकं भगशिश्नयोः)

उपस्थो वक्ष्यमाणयोः ॥७५॥

वक्ष्यमाण भग और लिङ्ग का संयुक्त नाम—(१) उपस्थ (पुँल्लिङ्ग) ॥७५॥

(द्वे स्मरमन्दिरस्य)

भग योनिर्द्वयोः

[6]भग के २ नाम—(१) भग (२) योनि । इनमें (१ ला) नपुंसकलिङ्ग में और (२ रा)

जाँघ का आरम्भ होता है वह भाग कुछ दबा रहता है; यह स्थान भग या शिश्न के इधर उधर होता है और इसको जंघासा (वंक्षण) कहते हैं ।

१ जनन इन्द्रियों के पीछे पुरुष और स्त्री दोनों में चूतड़ों के बीच में एक छिद्र होता है उसमें से मल निकलता है, इसको मलद्वार या चूति कहते हैं । मलद्वार से ऊपर एक या डेढ़ इन्च लम्बा भाग गुदा कहलाता है । गुदा से ऊपर का चार या पाँच इन्च लम्बा भाग मलाशय कहलाता है ।

२ उदर के नीचे का भाग एक कटोरे की शक्ल का है इसमें आँत का नीचे का या अन्तिम भाग और मूत्र को थैली और ऐसे अंग जो उत्पादन संस्थान के हैं, रहते हैं । मूत्राशय (urinary bladder) वस्तिगह्वर में विटपसन्धि (भगसन्धि) के पीछे रहता है ।

३ चूतड़ों के पास जो जाँघ का पिछला मोटा भाग है वह नितम्ब कहलाता है । अधिक चर्बी के कारण स्त्रियों के नितम्ब पुरुषों से कहीं ज्यादा मोटे होते हैं ।

४ जघन प्रदेश को अंग्रेजी में Iliac Region कहते हैं ।

५ कोख (जघन) के नीचे टटोलने से जो अस्थि मालूम होती है वह इसी अस्थि का ऊपरी किनारा (जघन चूड़ा) है । कूल्हे में यह अस्थि मोटी-मोटी पेशियों से ढकी रहती है; इस कारण इसको आसानी से टटोल कर स्पर्श नहीं कर सकते । चूतड़ में दबाने से जो अस्थि मालूम होती है वह इसी अस्थि का निचला भाग है । जब हम बैठते हैं तब इसीके सहारे बैठते हैं । नितम्बास्थियों के ऊपर की त्वचा बहुत कड़ी होती है । इस उभार को कुकुन्दरपिण्ड कहते हैं ।

६ जिस स्थान में पुरुष में शिश्न और अण्डकोष होते हैं उस स्थान में स्त्री में जो अंग दिखाई देते हैं वे सब मिलकर भग कहलाते हैं ।

पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग में होता है।

(चत्वारि लिङ्गस्य)

शिश्नो मेढ्रो मेहन-शेफसी।

लिङ्ग के ४ नाम—(१) शिश्न (२) मेढ्र (३) मेहन (४) शेफस्। इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग (केवल दूसरा नपुंसक में भी), (३–४) नपुंसक हैं।

(त्रीणि वृषणस्य)

मुष्कोऽण्डकोशो वृषणः

[१]अण्डकोष के ३ नाम—(१) मुष्क (२) अण्डकोश (३) वृषण।

(एकं पृष्ठवंशाधरे त्रिभिरस्थिभिर्घटितस्थानस्य)

पृष्ठवंशाधरे त्रिकम् ॥७६॥

[२]त्रिक (पीठ की रीढ़ का निचला हिस्सा जिसकी शकल तिकोनी होती है और जिसे अंग्रेजी में Sacral कहते हैं) का नाम—(१) त्रिक ॥७६॥

(पञ्च जठरस्य)

पिचण्ड-कुक्षी जठरोदरं तुन्दम्

पेट के ५ नाम—(१) पिचण्ड (२) कुक्षि (३) जठर (४) उदर (५) तुन्द। इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३) पुं०-नपुंसक, (४–५) नपुंसक हैं।

(द्वे वक्षोजस्य)

स्तनौ कुचौ।

[४]स्तन के २ नाम—(१) स्तन (२) कुच।

(द्वे स्तनाग्रस्य)

चूचुकं तु कुचाग्रं स्यात्

[५]चूची की ढेपनी के २ नाम—(१) चूचुक (२) कुचाग्र। इनमें (१ ला) पुं०-नपुंसक में, (२ रा) नपुंसक में होता है।

(द्वे अङ्कस्य)

न ना क्रोडं भुजान्तरम् ॥७७॥

[६]गोद, कोरा के २ नाम—(१) क्रोड (२) भुजान्तर। इनमें (१ ला) नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग में होता है (न ना=पुँल्लिङ्ग में नहीं), (२ रा) नपुंसक है ॥७७॥

(त्रीणि वक्षसः)

उरो वत्सं च वक्षश्च

[७]छाती के ३ नाम—(१) उरस् (२) वत्स (३) वक्षस्। ये (१–३) नपुंसक हैं।

---

१ शिश्न के नीचे एक थैली होती है जिसको अण्डकोष कहते हैं। थैली की त्वचा बहुत पतली होती है और उसमें बाल होते हैं। त्वचा के नीचे वसा नहीं रहती; वसा के जगह अनैच्छिक मास की एक तह रहती है। इस मांस के सङ्कोच और प्रसार से थैली छोटी और बड़ी हो जाती है।

२ कहा गया है कि—'स्फिक्सकथ्नोः पृष्ठवंशास्थ्नयोः सन्धिस्तत्त्रिकं मतम्।' त्रिक देश में दो अस्थियाँ हैं जिनमें से ऊपर की बड़ी होती है और नीचे की छोटी। बड़ी अस्थि वास्तव में पाँच मोहरों के आपस में जुड़ जाने से बनी है; इस बात के चिह्न स्पष्ट दिखाई देते हैं। अस्थि के अगले पृष्ठ पर चौड़ाई के रुख चार उभरी रेखाएँ होती हैं, यहीं पर इन मोहरों के गात्र आपस में जुड़े हैं। गात्रों के इधर उधर अस्थि का जो भाग है वह पार्श्व प्रवर्द्धनों के आपस में मिल जाने से बना है, इनके आपस में जुड़ जाने से एक नली बन जाती है जिसके भीतर नाड़ियाँ रहती हैं। ऊपर वाले मोहरों के नीचे वालों से बड़े होने के कारण इस अस्थि की शकल तिकोनी होती है। इस अस्थि के अगले और पिछले पृष्ठों पर ८, ८ छिद्र होते हैं, चार मध्य रेखा के एक ओर, चार दूसरी ओर। इन छिद्रों में से होकर नाड़ियाँ बाहर निकलती हैं और रक्त की नलियाँ आती जाती हैं। इस अस्थि के पार्श्वों से नितम्बास्थियाँ जुड़ी रहती हैं। (हमारे शरीर की रचना, प्रथम भाग, १००–१०१ पृष्ठ)

४ स्त्री के दो स्तन या दुग्ध ग्रन्थियाँ होती हैं। ग्रन्थि कुछ-कुछ अर्ध गोलाकार होती है और त्वचा से ढकी रहती है; उसके पीछे वसा और मांस पेशियाँ होती हैं।

५ ग्रन्थि के मध्य में एक बेलनाकार उभार होता है जिसको चूचुक या स्तनवृन्त कहते हैं। चूचुक के शिखर में दुग्ध स्रोतों के १२–२० छिद्र होते हैं।

६ वह स्थान, जो वक्षस्थल के पास एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से बनता है और जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं, गोद कहलाता है।

७ गरदन के नीचे जो धड़ का ऊपरी भाग है उसको वक्षस्थल कहते हैं।

(एकं तनोः पश्चाद्भागस्य)

पृष्ठं तु चरमं तनोः।

पीठ (शरीर का पिछला भाग) का नाम—(१) पृष्ठ।

(त्रीणि स्कन्धस्य)

स्कन्धो भुजशिरोऽसोऽस्त्री

कन्धा के ३ नाम—(१) स्कन्ध (२) भुजशिरस् (३) अंस। इनमें (१ ला) पुं०, (२ रा) नपुंसक, (३ रा) पुं०-नपुंसक है।

(एकमंसकक्षयोः सन्धेः)

संधी तस्यैव जत्रुणी ॥७८॥

हँसली (गले के सामने की दोनों ओर की वह हड्डी जो कन्धे तक कमानी की तरह लगी रहती है) का नाम—(१) जत्रु (नपुंसक) ७८

(द्वे कक्षस्य)

बाहुमूले उभे कक्षौ

काँख के २ नाम—(१) बाहुमूल (२) कक्ष। इनमें (१ला) नपुंसक, (२रा) पुँल्लिङ्ग है।

(एकं कक्षयोरधोभागस्य)

पार्श्वमस्त्री तयोरधः।

बगल (कन्धा के नीचे का भाग) का नाम—(१) पार्श्व (पुं०-नपुं०)।

(त्रीणि देहमध्यभागस्य)

मध्यमं चावलग्नं च मध्योऽस्त्री

मध्यदेह, कमर के ३ नाम—(१) मध्यम (२) अवलग्न (३) मध्य। ये (१-३) पुँल्लिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग में होते हैं।

(चत्वारि भुजस्य)

द्वौ परौ द्वयोः ॥७९॥

भुज-बाहू प्रवेष्टो दोः स्यात्

बाँह, भुजा के ४ नाम—(१) भुज (२) बाहु (३) प्रवेष्ट (४) दोस्। इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग, (३-४) पुँल्लिङ्ग, हैं ॥७९॥

(द्वे कूर्परस्य)

कफोणिस्तु कूर्परः।

केहुनी के २ नाम—(१) कफोणि (२) कूर्पर। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त स्त्रीलिङ्ग में भी होते हैं।

(एकं कूर्परोपरिभागस्य)

अस्योपरि प्रगण्डः स्यात्

मुश्क (केहुनी का ऊपरी हिस्सा) का नाम—(१) प्रगण्ड।

(एकं कफोणेरधो मणिबन्धपर्यन्तस्य)

प्रकोष्ठस्तस्य चाप्यधः ॥ ८० ॥

हाथ का पहुँचा (कलाई और केहुनी के बीच का भाग) का नाम—(१) प्रकोष्ठ ॥८०॥

(एकं करपृष्ठस्य)

मणिबन्धादाकनिष्ठं करस्य करभो बहिः।

कलाई से लेकर सबसे छोटी उँगली तक हाथ के बाहरी हिस्सा (Dorsum of hand) का नाम—(१) करभ।

(त्रीणि करस्य)

पञ्चशाखः शयः पाणिः

हाथ के ३ नाम—(१) पञ्चशाख (२) शय (३) पाणि। ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे अङ्गुष्ठसमीपाङ्गुल्याः)

तर्जनी स्यात्प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

अँगूठे के पास की अँगुली के २ नाम—(१) तर्जनी (२) प्रदेशिनी ॥ ८१ ॥

(द्वे अङ्गुलिमात्रस्य)

अङ्गुल्यः करशाखाः स्युः

अङ्गुली के २ नाम—(१) अङ्गुली (२) करशाखा। ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(एकैकं क्रमेण समस्ताङ्गुलीनाम्)

पुंस्यङ्गुष्ठः प्रदेशिनी।

मध्यमाऽनामिका चापि कनिष्ठा चेति ताःक्रमात्

अँगूठा का नाम—(१) अङ्गुष्ठ (पु०)।

अँगूठा के पास की अँगुली Index finger का नाम—(१) प्रदेशिनी।

बीचवाली अंगुली का नाम—(१) मध्यमा।

कानी अंगुली के पास की अंगुली Ring finger का नाम—(१) अनामिका ।

छिगुनी का नाम—(१) कनिष्ठा ॥८२॥

(चत्वारि नखस्य)

पुनर्भवः कररुहो नखोऽस्त्री नखरोऽस्त्रियाम् ।

नाखून, नह के ४ नाम—(१) पुनर्भव (२) कररुह (३) नख (४) नखर। इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग, (३-४) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग हैं।

(तर्जन्यादिसहिते विस्तृतेऽङ्गुष्ठे क्रमेणैकैकम्)

प्रादेश-ताल-गोकर्णास्तर्जन्यादियुते तते ॥८३॥

तर्जनी सहित फैला हुआ अंगूठा का नाम—(१) प्रादेश (पुं०)।

मध्यमा सहित फैला हुआ अंगूठा का नाम—ताल (पुं०)।

अनामिका सहित फैला हुआ अंगूठा का नाम—(१) गोकर्ण (पुं०) ॥८३॥

(द्वे वितस्तेः)

अङ्गुष्ठे सकनिष्ठे स्याद्वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलः ।

बालिश्त, बित्ता (कानी अंगुली से लेकर फैले अंगूठे तक के परिमाण) के २ नाम—(१) वितस्ति (२) द्वादशाङ्गुल । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग-पुँल्लिङ्ग, (२ रा) पुँल्लिङ्ग है।

(त्रीणि विस्तृताङ्गुलिहस्तस्य)

पाणौ चपेट-प्रतल-प्रहस्ता विस्तृताङ्गुलौ ॥८४

झापड़, थप्पड़, तमाचा के ३ नाम—(१) चपेट (२) प्रतल (३) प्रहस्त ॥८४॥

(द्वे वामदक्षिणयोः पाण्योर्मिलितयोर्विस्तृताङ्गुल्योः)

द्वौ संहतौ संहतल-प्रतलौ वाम-दक्षिणौ ।

दुहत्था चटकना के २ नाम—(१) संहतल (२) प्रतल ।

(एकं प्रसृतेः)

पाणिर्निकुब्जः प्रसृतिः

पसर का नाम—(१) प्रसृति (पुँल्लिङ्ग) ।

(एकमञ्जलेः)

तौ युतावञ्जलिः पुमान् ॥८५॥

दो पसर = (१) अञ्जलि (पुँल्लिङ्ग) ॥८५॥

(एकं विस्तृतकरस्य)

प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हस्तः

केहुनी से लेकर बीचवाली अंगुली तक के नाप (जो चौबीस अंगुल या लगभग १८ इञ्च होता है) का नाम—(१) हस्त ।

(एकं बद्धमुष्टिहस्तस्य)

मुष्ट्या तु बद्धया ।

सरत्निः स्यात्

केहुनी से लेकर बँधी मुठ्ठी के अन्तभाग तक के नाप का नाम—(१) सरत्नि (पुं०-स्त्रीलिङ्ग) ।

(एकमरत्निहस्तस्य)

अरत्निस्तु निष्कनिष्ठेन [1]मुष्टिना ॥८६॥

केहुनी से लेकर खुली हुई कानी अंगुली तक के परिमाण का नाम—(१) अरत्नि (पुं०-स्त्रीलिङ्ग) ॥८६॥

(एकं स्वे स्वे पार्श्वे प्रसारितयोर्बाह्वोर्मध्यस्य)

व्यामो बाह्वोः स-करयोस्ततयोस्तिर्यगन्तरम् ।

हाथों के आड़ा फैलाने पर दोनों हाथ की अंगुलियों की अन्तिम सीमा तक के नाप का नाम—(१) व्याम ।

(एकमूर्ध्वविस्तृतदोःपाणिपुरुषपरिमाणस्य)

ऊर्ध्वविस्तृतदोष्पाणिनृमाने पौरुषं त्रिषु ॥८७

पुरसा (पाँच हाथ का माप, हाथ ऊपर फैलाने पर अंगुली से लेकर पैर की अंगली तक का माप) का नाम—(१) पौरुष (पुं०-स्त्री-नपुंसक) ।

(द्वे ग्रीवाग्रभागस्य)

कण्ठो गलः

गला के २ नाम—(१) कण्ठ (२) गल ।

(त्रीणि ग्रीवायाः)

अथ ग्रीवायां शिरोधिः कन्धरेत्यपि ।

१ ऊपर वाले श्लोक में 'मुष्ट्या' का प्रयोग है और इस श्लोकमें 'मुष्टिना' है । इससे स्पष्ट है कि 'मुष्टि' शब्द पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

गरदन के ३ नाम—(१) ग्रीवा (२) शिरोधि (३) कन्धरा । ये (१–३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(एकं शङ्खाकृतिरेखात्रयाख्यग्रीवायाः)

कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा

जिस गरदन का आकार शङ्ख की तरह होता है और उस पर तीन लकीर खींची हुई होती है उसका नाम—(१) कम्बुग्रीवा (स्त्रीलिङ्ग) ।

(त्रीणि ग्रीवापश्चाद्भागस्य)

अवटुर्घाटा कृकाटिका ॥८८॥

[1]गरदन के पिछले भाग (किसी के मत से 'गले की घराटी') के ३ नाम—(१) अवटु (२) घाटा (३) कृकाटिका । इनमें (१ ला) पुं०-स्त्रीलिङ्ग, (२–३) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८८॥

(सप्त मुखस्य)

वक्त्रास्ये वदनं तुण्डमाननं लपनं मुखम् ।

मुँह के ७ नाम—(१) वक्त्र (२) आस्य (३) वदन (४) तुण्ड (५) आनन (६) लपन (७) मुख । ये (१–७) नपुंसक हैं ।

(पञ्च नासिकायाः)

क्लीबे घ्राणं गन्धवहा घोणा नासा च नासिका

[2]नाक के ५ नाम—(१) घ्राण (२) गन्धवहा (३) घोणा (४) नासा (५) नासिका । इनमें (१ ला) नपुंसक; (२–५) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८६॥

(चत्वार्युत्तराधरोष्ठमात्रस्य)

ओष्ठाधरौ तु रदनच्छदौ दशनवाससी ।

ओठ, होठ के ४ नाम—(१) ओष्ठ (२) अधर (३) रदनच्छद (४) दशनवासस् । इनमें (१–३) पुँल्लिङ्ग, (४था) नपुंसक है ।

(एकमोष्ठाधोभागस्य)

अधस्ताच्चिबुकम्

[3]ठुड्डी, ठोढ़ी का नाम—(१) चिबुक ।

(द्वे कपोलस्य)

गण्डौ कपोलौ

गाल के २ नाम—(१) गण्ड (२) कपोल ।

(द्वे कपोलाधोभागस्य)

तत्परो हनुः ॥६०॥

[4]जबड़ा का नाम—(१) हनु (पुं–स्त्रीलिङ्ग) ॥ ६० ॥

(चत्वारि दन्तस्य)

रदना दशना दन्ता रदाः

दाँत के ४ नाम—(१) रदन (२) दशन (३) दन्त (४) रद । (१–४) पुँलिङ्ग हैं; इनमें केवल (३रा) नपुंसक में भी होता है ।

(द्वे तालुनः)

तालु तु काकुदम् ।

[5]तालु के २ नाम—(१) तालु (२) काकुद । ये (१–२) नपुंसक हैं ।

(त्रीणि जिह्वायाः)

रसज्ञा रसना जिह्वा

जीभ के ३ नाम—(१) रसज्ञा (२) रसना (३) जिह्वा ।

(एकमोष्ठप्रान्तयोः)

प्रान्तावोष्ठस्य सृक्कणी ॥६१॥

ओठों के दोनों कोनों का नाम—(१) सृक्कणी ॥६१॥

---

१ गरदन के पिछले भाग को **कृकाटिका** कहते हैं (हमारे शरीर की रचना, प्रथम भाग, पृष्ठ ३१)

—२ उच्छ्वास क्रिया से हवा नासारन्ध्रों द्वारा नासिका में प्रवेश करती है; मध्य और अधो सुरंगों में होती हुई पश्चिम द्वारों द्वारा वह कण्ठ में पहुँचती है; कण्ठ से स्वरयन्त्र और टटुवे में से होकर फुफ्फुसों में जाती है। प्रत्येक नासागुहा में ऊर्ध्व शुक्तिका तथा उसके सम्मुख परदे की श्लैष्मिक कला का काम गन्ध पहचानने का है ।

३ निम्न ओष्ठ के नीचे जो उभरा हुआ भाग दिखाई देता है वह ठुड्डी कहलाता है ।

४ दोनों जबड़ों में दाँत जड़े रहते हैं ।

५ मुँह के भीतर दाँतों की जड़ों में लाल मसूड़े होते हैं । मुँह खोला जाय तो ऊपर के दाँतों के पीछे एक छत दिखाई देगी । इसको **तालु** कहते हैं ।

(त्रीणि भालस्य)

ललाटमलिकं गोधिः

भाल के ३ नाम—(१) ललाट (२) अलिक (३) गोधि। इनमें (१–२) नपुंसक, (३रा) पुँल्लिङ्ग है।

(एकं नेत्रोपरिभागस्थरोमराजेः)

ऊर्ध्वे दृग्भ्यां भ्रुवौ स्त्रियौ।

भौंह का नाम—(१) भ्रू (स्त्रीलिङ्ग)। श्लोक में द्विवचनान्त प्रयोग है।

(एकं नासोपरिभ्रूद्वयमध्यस्य)

कूर्चमस्त्री भ्रुवोर्मध्यम्

दोनों भौंहों के बीच के स्थान का नाम—(१) कूर्च (पुँल्लिङ्ग-नपुंसक)।

(द्वे नेत्रकनीनिकायाः)

तारकाक्ष्णः कनीनिका ॥६२॥

आँखों की तारा (पुतली) के २ नाम—(१) तारका (२) कनीनिका ॥६२॥

(अष्टौ नेत्रस्य)

लोचनं नयनं नेत्रमीक्षणं चक्षुरक्षिणी। दृग्दृष्टी च

आँख के ८ नाम—(१) लोचन (२) नयन (३) नेत्र (४) ईक्षण (५) चक्षुष् (६) अक्षि (७) दृश् (८) दृष्टि। इनमें (१–६) नपुंसक, (७–८) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(पञ्च नेत्रोदकस्य)

अस्रु नेत्राम्बु रोदनं चास्रमश्रु च ॥६३॥

आँसू के ५ नाम—(१) अस्रु (२) नेत्राम्बु (३) रोदन (४) अस्र (५) अश्रु। ये (१–५) नपुंसक हैं ॥६३॥

(एकं नेत्रप्रान्तयोः)

अपाङ्गौ नेत्रयोरन्तौ

आँखों के कोनों (नेत्र-कोण) का नाम—(१) अपाङ्ग।

(एकं कटाक्षस्य)

कटाक्षोऽपाङ्गदर्शने।

[1]तीरछी नज़र से देखने का नाम—(१) कटाक्ष।

(षट् कर्णस्य)

कर्ण-शब्दग्रहौ श्रोत्रं श्रुतिः स्त्री श्रवणं श्रवः६४

कान के ६ नाम—(१) कर्ण (२) शब्द-ग्रह (३) श्रोत्र (४) श्रुति (५) श्रवण (६) श्रवस्। इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३ रा) नपुंसक, (४ था) स्त्रीलिङ्ग, (५ वाँ) नपुंसक-पुँल्लिङ्ग, (६ठा) नपुंसक है ॥ ६४ ॥

(पञ्च शिरसः)

उत्तमाङ्गं शिरः शीर्षं मूर्धा ना मस्तकोऽस्त्रियाम्

सिर, माथा के ५ नाम—(१) उत्तमाङ्ग (२) शिरस् (३) शीर्ष (४) मूर्धन् (५) मस्तक। इनमें (१–३) नपुंसक; (४ था) पुँल्लिङ्ग, (५ वाँ) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक है।

(षट् केशस्य)

चिकुरः कुन्तलो बालः कचः केशः शिरोरुहः॥

सिर के बाल के ६ नाम—(१) चिकुर (२) कुन्तल (३) बाल (४) कच (५) केश (६) शिरोरुह ॥ ६५ ॥

(द्वे केशसमूहस्य)

तद्वृन्दे कैशिकं कैश्यम्

बालों के झुण्ड के २ नाम—(१) कैशिक (२) कैश्य।

(द्वे कुटिलकेशानाम्)

अलकाश्चूर्णकुन्तलाः।

जुल्फ, टेढ़ीलटों, घूँघराले बालों के २ नाम—(१) अलक (२) चूर्णकुन्तल।

(एकं ललाटगतकेशानाम्)

ते ललाटे भ्रमरकाः

ललाट पर झुकी हुई जुल्फों का नाम—(१) भ्रमरक।

---

१ एक कविजी जाँते को सम्बोधन कर कहते हैं—
'रे रे घरट्ट! मा रोदीः, कं कं न भ्रामयन्त्यमूः।
कटाक्षवीक्षणादेव, कराकृष्टस्य का कथा॥'

(द्वे बालानां शिखायाः)

काकपक्षः शिखण्डकः ॥९६॥

लड़कों की बुलबुली के २ नाम—(१) काकपक्ष (२) शिखण्डक ॥ ९६ ॥

(द्वे केशबन्धरचनायाः)

कबरी केशवेशः

बालों में पटिया सँवारने के २ नाम—(१) कबरी (२) केशवेश । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(एकं मौक्तिकदामादिबद्धकेशसमूहस्य)

अथ धम्मिल्लः संयताः कचाः ।

मोती की माला आदि से गूँथी हुई चोटी या जूड़ा का नाम—(१) धम्मिल्ल ।

(त्रीणि शिरोमध्यस्थचूडायाः)

शिखा चूडा केशपाशी

चुरकी, चुन्दी, चोटी के ३ नाम—(१) शिखा (२) चूडा (३) केशपाशी । ये (१–३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे व्रतिनः शिखायाः)

व्रतिनस्तु जटा सटा ॥९७॥

साधुओं की जटा (एक में उलझे हुए सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल) के २ नाम—(१) जटा (२) सटा ॥ ९७ ॥

(द्वे सर्पाकाररचितकेशवेशस्य)

वेणिः प्रवेणी

बेनी (सर्प के आकार की तरह सजाकर गूथी गयी या लुटुरी चोटी) के २ नाम—(१) वेणि (२) प्रवेणी । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे विस्तृतकचस्य)

शीर्षण्य-शिरस्यौ विशदे कचे ।

विस्तृत, विशाल एवं सुन्दर बाल के २ नाम —(१) शीर्षण्य (२) शिरस्य । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि केशसमूहस्य)

पाशः पक्षश्च हस्तश्च कलापार्थाः कचात्परे ।

'कच' पर्याय (चिकुर, कुन्तल, बाल, कच, केश, शिरोरुह) से परे ये तीन शब्द कलापार्थ (केशसमूहवाचक, जैसे कचपाश, कचपक्ष, कचहस्त, केशपाश, कुन्तलहस्त) हैं—(१) पाश (२) पक्ष (३) हस्त ॥ ९८ ॥

(त्रीणि रोम्णः)

तनूरुहं रोम लोम

रोआँ, रोंगटा के ३ नाम—(१) तनूरुह (२) रोमन् (३) लोमन् । इनमें (१ ला) नपुंसक-पुँल्लिङ्ग, (२–३) नपुंसक हैं ।

(एकं दाढ़िकायाः)

तद्वृद्धौ श्मश्रु पुंमुखे ।

दाढ़ी-मूँछ का नाम—(१) श्मश्रु (नपुंसक) ।

(पञ्चालङ्काररचनादिकृतशोभायाः)

आकल्प-वेषौ नेपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ९९

सजावट के ५ नाम—(१) आकल्प (२) वेष (३) नेपथ्य (४) प्रतिकर्मन् (५) प्रसाधन । इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३–५) नपुंसक हैं ॥ ९९ ॥

दशैते त्रिषु

ये दश ('अलङ्कर्ता' से लेकर 'रोचिष्णु' तक) शब्द तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

(द्वे अलङ्करणशीलस्य)

अलङ्कर्ताऽलङ्करिष्णुश्च

सजानेवाले के २ नाम—(१) अलङ्कर्तृ (२) अलङ्करिष्णु । ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ।

(पञ्चालङ्कृतस्य)

मंडितः ।

प्रसाधितोऽलङ्कृतश्च भूषितश्च परिष्कृतः ॥

सजे हुए के ५ नाम—(१) मण्डित (२) प्रसाधित (३) अलङ्कृत (४) भूषित (५) परिष्कृत । ये (१–५) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥ १०० ॥

(त्रीण्यलङ्कारादिनाऽतिशयेन शोभमानस्य)

विभ्राड् भ्राजिष्णु-रोचिष्णू

आभूषण द्वारा अत्यन्त दीप्तिमान् के ३ नाम—(१) विभ्राज् (२) भ्राजिष्णु (३) रोचिष्णु । ये (१–३) पुं-स्त्री-नपुंसक में होते हैं।

(द्वे भूषायाः)

भूषणं स्यादलङ्क्रिया ।

शृङ्गार के २ नाम—(१) भूषण [भूषा] (२) अलङ्क्रिया ।

(पञ्चालङ्कारस्य)

अलङ्कारस्त्वाभरणं परिष्कारो विभूषणम् १०१ मण्डनं च

गहना, ज़ेवर के ५ नाम—(१) अलङ्कार (२) आभरण (३) परिष्कार (४) विभूषण (५) मण्डन । इनमें (१, ३) पुँल्लिङ्ग, (२, ४–५) नपुंसक हैं ॥ १०१ ॥

(द्वे किरीटस्य)

अथ मुकुटं किरीटं पुं-नपुंसकम् ।

मुकुट, ताज के २ नाम—(१) मुकुट (२) किरीट । इनमें (१ ला) नपुंसक, (२रा) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक है ।

(द्वे शिरोमणेः)

चूडामणिः शिरोरत्नम्

सिर में पहनने का 'शीश फूल' नामक गहना के २ नाम—(१) चूडामणि (२) शिरोरत्न । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, (२ रा) नपुंसक है ।

(एकं हारमध्यमणेः)

तरलो हारमध्यगः ॥१०२॥

हार के बीच की बड़ी मणि 'टिकड़ा' का नाम—(१) तरल ॥१०२॥

(द्वे सीमन्तभूषणस्य)

बालपाश्या पारितथ्या

बेंदी (महिलाओं की माँग में पहरने का आभूषण विशेष) के २ नाम—(१) बालपाश्या (२) पारितथ्या ।

(द्वे ललाटभूषणस्य)

पत्रपाश्या ललाटिका ।

सोने का टीका (महिलाओं के मस्तक पर धारण करने वाला आभूषण विशेष) के २ नाम—(१) पत्रपाश्या (२) ललाटिका ।

(द्वे ताटङ्कस्य)

कर्णिका तालपत्रं स्यात्

तरकी, कर्णफूल, ऐरन (Ear-ring) के २ नाम—(१) कर्णिका (२) तालपत्र ।

(द्वे कुण्डलस्य)

कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ॥१०३॥

कुण्डल (पुरुषों का कर्ण भूषण विशेष, या पहिए के आकार का गोल गहना जो सींग, लकड़ी, काँच या गैंड़े की खाल, या सोने का बना होता है और जिसे आजकल गोरखनाथी साधु कानों में पहनते हैं) के २ नाम—(१) कुण्डल (२) कर्णवेष्टन ॥ १०३ ॥

(द्वे ग्रीवाभरणस्य)

ग्रैवेयकं कण्ठभूषा

हँसुली, हुमेल, चम्पाकली, कण्ठमाला, टीक आदि के २ नाम—(१) ग्रैवेयक (२) कण्ठभूषा । इनमें (१ ला) नपुंसक, (२ रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

(द्वे आनाभिलम्बितकण्ठिकायाः)

लम्बनं स्याल्ललन्तिका ।

गले से लेकर नाभिपर्यन्त लम्बी कंठी के २ नाम—(१) लम्बन (२) ललन्तिका ।

(एकं स्वर्णरचितकण्ठिकायाः)

स्वर्णैः प्रालम्बिका

गले से लेकर नाभिपर्यन्त लम्बी सोने की बनी हुई कण्ठी का नाम—(१) प्रालम्बिका ।

(एकं मुक्ताग्रथितकण्ठिकायाः)

अथोरःसूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥१०४॥

गले से लेकर नाभिपर्यन्त लम्बी मोती की बनी हुई कण्ठी का नाम-(१) उरःसूत्रिका॥ १०४॥

(द्वे मुक्ताहारस्य)

हारो मुक्तावली

मोतियों के हार के २ नाम—(१) हार (२) मुक्तावली । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, (२ रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

(एकं शतलतिकहारस्य)

देवच्छन्दोऽसौ शतयष्टिका ।

सौ लड़ीवाले हार का नाम—(१) देवच्छन्द ।

(हारभेदानां प्रत्येकमेकैकम्)

हारभेदा यष्टिभेदाद् गुच्छ-गुच्छार्द्ध-गोस्तनाः
अर्धहारो माणवक एकावल्येकयष्टिका ।
सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः १०६

लड़ी के भेद से हार के किस्म में विभिन्नता होती है, यथा—

३२ लड़ी के हार का नाम—(१) गुच्छ (पुं०)।
२४ लड़ी के हार का नाम–(१) गुच्छार्द्ध (पुं०)।
४ लड़ी के हार का नाम—(१) गोस्तन (पुं०)।
१२ लड़ी के हार का नाम–(१) अर्धहार (पुं०)।
२० लड़ी के हार का नाम–(१)*माणवक (पुं०)
१ लर के हार का नाम–(१) एकावली(स्त्री०)।
२७ मोतियों की एकावली हार का नाम—
(१) नक्षत्रमाला (स्त्री०) ॥१०५-१०६॥

(चत्वारि प्रकोष्ठाभरणस्य)

आवापकः पारिहार्यः कटको वलयोऽस्त्रियाम्

पहुँची (आभूषण विशेष, जिसे अंग्रेजी में Bracelet कहते हैं) के ४ नाम—(१) आवापक (२) पारिहार्य (३) कटक (४) वलय । इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग, (३-४) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में होते हैं ।

(द्वे प्रगण्डभूषणस्य)

केयूरमङ्गदं तुल्ये

बिजायठ, भुजबन्द के २ नाम—(१) केयूर (२) अङ्गद । (१-२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में होते हैं ।

(द्वे अङ्गुल्याभरणस्य)

अङ्गुलीयकमूर्मिका ॥१०७॥

अँगूठी, मुँदरी, छल्ला के २ नाम—(१) अंगुलीयक (२) ऊर्मिका । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, (२ रा) स्त्रीलिंग में होता है ॥१०७॥

(एकं रामनामाद्यङ्किताङ्गुलीयस्य)

साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा

मोहर करनेवाली अंगूठी (Seal Ring) का नाम—(१) अङ्गुलिमुद्रा ।

(द्वे मणिबन्धभूषणस्य)

कङ्कणं करभूषणम् ।

कंगन, ककनी के २ नाम—(१) कङ्कण (२) करभूषण । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक में, (२ रा) नपुंसक में होता है ।

(पञ्च स्त्रीकटिभूषणस्य)

स्त्रीकट्यां मेखला काञ्ची सप्तकी रशना तथा ।
क्लीबे सारसनं च

स्त्रियों के कमर का गहना, करधनी, के ५ नाम—(१) मेखला (२) काञ्ची (३) सप्तकी (४) रशना (५) सारसन । इनमें (१-४) स्त्रीलिङ्ग हैं (५ वाँ) नपुंसक ॥१०८॥

(एकं पुरुषकटिभूषणस्य)

अथ पुंस्कट्यां शृङ्खलं त्रिषु ।

आदमियों के कमर का गहना, करधन, का नाम—(१) शृङ्खल (पुं-स्त्री-नपुंसक) ।

(षट् नूपुरस्य)

पादाङ्गदं तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियाम्
हंसकः पादकटकः

पायजेब (पैंजनी, पायल), बिछिया के ६ नाम—(१) पादाङ्गद (२) तुलाकोटि (३) मञ्जीर (४) नूपुर (५) हंसक (६) पादकटक । इनमें (१ ला) नपुंसक, (२ रा) पुँल्लिङ्ग,

---

* 'विंशतियष्टिको हारो माणवः परिकीर्तितः ।'

१ एकयष्टिर्भवेत्काञ्ची, मेखला त्वष्टयष्टिका ।
रसना षोडश ज्ञेया, कलापः पञ्चविंशकः ॥

(३–४) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, (५–६) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ १०६ ॥

(द्वे किङ्किण्याः)

किङ्किणी क्षुद्रघण्टिका ।

[१]घुँघुरु (पैर का गहना जो छुम-छुम शब्द करने के लिए नाचने के समय पहना जाता है) के २ नाम—(१) किङ्किणी (२) क्षुद्रघण्टिका

(एकं वस्त्रयोनेः)

त्वक्-फल-कृमि-रोमाणि वस्त्रयोनिः

वृक्षों की छाल, फल, कीड़े और जानवरों के रोंए वस्त्रों के उत्पन्न होने के कारण हैं; अर्थात् इन चार उत्पत्तिकारकों का नाम—(१) वस्त्र-योनि (स्त्रीलिङ्ग) ।

दश त्रिषु ॥११०॥

ये दश ('वाल्क' से लेकर 'निष्प्रवाणि' तक) और 'तन्त्रक' तीनोंलिङ्ग में होते हैं ॥११०॥

(एकं त्वङ्मयस्य)

वाल्कं क्षौमादि

अलसी और सन आदि के रेशों से बुने हुए कपड़ों का नाम—(१) वाल्क (पुं-स्त्री-नपुंसक) ।

(त्रीणि फलविकारस्य कार्पासवस्त्रस्य)

फालं तु कार्पासं बादरं च तत् ।

सूती–कपास के बने हुए–कपड़ों के ३ नाम—फाल (२) कार्पास (३) बादर । ये (१-३) पुं–स्त्री–नपुंसक हैं ।

(द्वे कृमिकोशोद्भववस्त्रस्य)

कौशेयं कृमिकोशोत्थम्

रेशमी कपड़ों—पीताम्बर, बनारसी साड़ी आदि–के २ नाम—(१) कौशेय (२) कृमि-कोशोत्थ । ये (१–२) पुं–स्त्री–नपुंसक हैं ।

(द्वे पशुरोमरचितवस्त्रस्य)

राङ्कवं मृगरोमजम् ॥१११॥

ऊनी कपड़ों—दुशाला, कम्बल आदि—के २ नाम—(१) राङ्कव (२) मृगरोमज । ये (१–२) पुं–स्त्री–नपुंसक हैं ॥ १११ ॥

(चत्वारि नूतनवस्त्रस्य)

अनाहतं निष्प्रवाणि तन्त्रकं च नवाम्बरम् ।

कोरा कपड़ा—बिना धुला हुआ नयनसुख आदि–के ४ नाम—(१) अनाहत (२) निष्प्र-वाणि (३) तन्त्रक (४) नवाम्बर । इनमें (१–३) पुं–स्त्री–नपुंसक हैं; और (४ था) नपुंसक ।

(एकं धौतवस्त्रयुगस्य)

तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम् ११२

धुला हुआ जोड़ा कपड़ा का नाम—(१) उद्गमनीय ॥११२॥

(द्वे प्रक्षालितकौशेयस्य)

पत्त्रोर्णं धौतकौशेयम्

धुले हुए रेशमी कपड़ों के २ नाम—(१) पत्त्रोर्ण (२) धौतकौशेय ।

(द्वे बहुमूल्यस्य)

बहुमूल्यं महाधनम् ।

कीमती कपड़ों—जैसे ज़री का दुशाला, काश्मीरी शाल आदि—के २ नाम—(१) बहुमूल्य (२) महाधन ।

(द्वे पट्टवस्त्रस्य)

क्षौमं दुकूलं स्यात्

रेशमी दुपट्टा, सिल्क के २ नाम—(१) क्षौम (२) दुकूल ।

(द्वे प्रावृतवस्त्रस्य)

द्वे तु निवीतं प्रावृतं त्रिषु ॥११३॥

कपड़ों के किनारे, गोट के २ नाम—(१) निवीत (२) प्रावृत । ये (१-२) तीनोंलिङ्ग में होते हैं॥११३॥

(द्वे वस्त्रान्तावयवानाम्)

स्त्रियां बहुत्वे वस्त्रस्य दशाः स्युर्वस्तयोर्द्वयोः ।

दसी (छीर, कपड़े के छोर पर का सूत,

---

१ केशव कवि कहते हैं—

'बिछिया अनौट बाँके घूँघरी, जराय जरी, जेहरि छबीली **क्षुद्रघण्टिका** की जालिका ।'

कपड़े का पल्ला, थान का आञ्चल) के २ नाम—(१) दशा (२) वस्ति । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग नित्य बहुवचनान्त है और (२ रा) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग में होता है ।

(त्रीणि वस्त्रादेर्दैर्ध्यस्य)

दैर्घ्यमायाम आरोहः

कपड़ों की लम्बाई के ३ नाम—(१) दैर्घ्य (२) आयाम (३) आरोह (आनाह)। इनमें (१ ला) नपुंसक, (२–३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे परिणाहस्य)

परिणाहो विशालता ॥११४॥

पनहा, कपड़ों की चौड़ाई, के २ नाम—(१) परिणाह (२) विशालता ॥११४॥

(द्वे जीर्णवस्त्रस्य)

पटच्चरं जीर्णवस्त्रम्

पुराना कपड़ा के २ नाम—(१) पटच्चर (२) जीर्णवस्त्र ।

(द्वे जीर्णवस्त्रखण्डस्य)

समौ नक्तक-कर्पटौ ।

चिथड़ा के २ नाम—(१) नक्तक (२) कर्पट । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(षट् वस्त्रस्य)

वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ११५

कपड़ा के ६ नाम—(१) वस्त्र (२) आच्छादन (३) वासस् (४) चैल (५) वसन (६) अंशुक । ये (१–६) नपुंसक हैं ॥११५॥

(द्वे शोभनवस्त्रस्य)

सुचेलकः पटोऽस्त्री स्यात्

अच्छा कपड़ा के २ नाम—(१) सुचेलक (२) पट । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, (२रा) पुं०-नपुंसक है ।

(द्वे स्थूलवाससः)

वराशिः स्थूलशाटकः ।

मोटा कपड़ा के २ नाम—(१) वराशि (२) स्थूलशाटक । इनमें (१ ला) पुल्लिङ्ग-नपुंसक में (२ रा) पुँल्लिङ्ग-स्त्री-नपुंसक में होता है ।

(द्वे डोलिकाद्यावरणपटस्य)

निचोलः प्रच्छदपटः

ओहार, परदा, बेंठन, आच्छादन वस्त्र, पलंग पोश आदि के २ नाम—(१) निचोल (२) प्रच्छदपट । इनमें (१ ला) पुं०-स्त्री-नपुंसक में, (२ रा) पुँल्लिङ्ग में होता है ।

(द्वे कम्बलस्य)

समौ रल्लक-कम्बलौ ॥११६॥

कम्बल के २ नाम—(१) रल्लक (२) कम्बल । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥११६॥

(चत्वारि परिधानवस्त्रस्य)

अन्तरीयोपसंव्यान-परिधानान्यधोऽंशुके ।

धोती के ४ नाम—(१) अन्तरीय (२) उपसंव्यान (३) परिधान (४) अधोंशुक । ये (१–४) नपुंसक हैं ।

(पञ्चोत्तरीयस्य)

द्वौ प्रावारोत्तरासङ्गौ समौ बृहतिका तथा ११७ संव्यानमुत्तरीयं च

अंगौछा या दुपट्टा के ५ नाम—(१) प्रावार (२) उत्तरासङ्ग (३) बृहतिका (४) संव्यान (५) उत्तरीय । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३ रा) स्त्रीलिङ्ग, (४–५) नपुंसक हैं ॥११७॥

(द्वे स्त्रीणां स्तनादिपिधायकस्य)

चोलः कूर्पासकोऽस्त्रियाम् ।

अंगिया, चोली (Breast supporter) के २ नाम—(१) चोल (२) कूर्पासक । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग के अतिरिक्त स्त्रीलिङ्ग में भी, (२ रा) पुं० -नपुंसक में होता है ।

(एकं हिमानिलनिवारकवस्त्रस्य)

नीशारः स्यात्प्रावरणे हिमानिलनिवारणे ११८

रज़ाई, दुलाई, ओढ़ना, लिहाफ़ का नाम—(१) नीशार ॥११८॥

(एकं वरस्त्रीणामर्द्धोरुपिधायिकवस्त्रस्य)

अर्धोरुकं वरस्त्रीणां स्याच्चण्डातकमस्त्रियाम् ।

स्त्रियों की कुरती, जाकेट, जम्पर का नाम—(१) चण्डातक (पुं०-नपुंसक)।

(एकं पादाग्रपर्यन्तलम्बमानवस्त्रस्य)

स्यात्त्रिष्वाप्रपदीनं तत्प्राप्नोत्याप्रपदं हि यत्

शाया, लहँगा का नाम—(१) आप्रपदीन (पुं०-स्त्री-नपुंसक) ॥११९॥

(द्वे आतपाद्यपनयार्थमुपरिबद्धस्य चन्द्रकाख्यस्य वाससः)

अस्त्री वितानमुल्लोचः

चँदवा के २ नाम—(१) वितान (२) उल्लोच । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में, (२ रा) पुँल्लिङ्ग में होता है ।

(एकं वस्त्ररचितगृहस्य)

दूष्याद्यं वस्त्रवेश्मनि ।

तम्बू, खेमा, रावटी का नाम—(१) दूष्य (नपुंसक)।

(त्रीणि जवनिकायाः)

प्रतिसीरा जवनिका स्यात्तिरस्करिणी च सा

परदा, कनात के ३ नाम—(१) प्रतिसीरा (२) जवनिका (३) तिरस्करिणी ॥१२०॥

(द्वे कुङ्कुमादिना शरीरे संस्कारमात्रस्य)

परिकर्माऽङ्गसंस्कारः

देह में चन्दन, केसर आदि लगाने के २ नाम—(१) परिकर्मन् (२) अङ्गसंस्कार । इनमें (१ ला) नपुंसक, (२ रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(त्रीणि प्रोक्षणादीना देहनिर्मलीकरणस्य)

स्यान्मार्ष्टिर्मार्जना मृजा ।

पोंछने आदि से देह को निर्मल करने के ३ नाम—(१) मार्ष्टि (२) मार्जना (३) मृजा । ये (१–३) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे उद्वर्तनद्रव्येण शरीरमलापकरणस्य)

उद्वर्तनोत्सादने द्वे समे

उबटन से शरीर के मैल दूर करने के २ नाम—(१) उद्वर्तन । (२) उत्सादन । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

(त्रीणि स्नानस्य)

आप्लाव आप्लवः ॥१२१॥

स्नानम्

नहाने के ३ नाम—(१) आप्लाव (२) आप्लव (३) स्नान । इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं और (३ रा) नपुंसक ॥१२१॥

(त्रीणि चन्दनादिना देहविलेपनस्य)

चर्चा तु चार्चिक्यं स्थासकः

लेपन के ३ नाम—(१) चर्चा (२) चार्चिक्य (३) स्थासक ।

(द्वे गतगन्धस्य पुनर्गन्धव्यक्तीकरणस्य)

अथ प्रबोधनम् ।

अनुबोधः

गयी सुगन्ध के फिर प्रकट करने के २ नाम—(१) प्रबोधन (२) अनुबोध । इनमें (१ला) नपुंसक, (२ रा) पुंल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे स्तनकपोलादौ केसरादिना रचितपत्रवल्ल्याः)

पत्रलेखा पत्राङ्गुलिरिमे समे ॥१२२॥

स्तन और कपोल आदि पर की जानेवाली चित्रकारी; कस्तूरी, चन्दन आदि से रचित बेल बूटे के २ नाम—(१) पत्रलेखा (२) पत्राङ्गुलि । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१२२॥

(चत्वारि कस्तूर्यादिना ललाटे कृततिलकस्य)

तमालपत्र-तिलक-चित्रकाणि विशेषकम् ।
द्वितीयं च तुरीयं च न स्त्रियाम्

तिलक, टीका (वह चिह्न जिसे गीले चन्दन केसर आदि से मस्तक पर शोभा के लिए लगाते हैं) के ४ नाम—(१) तमालपत्र (२) तिलक (३) चित्रक (४) विशेषक । इनमें (द्वितीय) 'तिलक' और (तुरीय=४था) 'विशेषक' पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में होते हैं, शेष (१ ला, ३ रा) नपुंसक में ।

(एकादश कुङ्कुमस्य)

अथ कुङ्कुमम् ॥१२३॥

काश्मीरजन्माऽग्निशिखं वरं बाह्लीक-पीतने।
रक्त-सङ्कोच-पिशुनं धीरं लोहितचन्दनम् १२४

[1]केसर, कुङ्कम के ११ नाम—(१) कुङ्कुम (२) काश्मीरजन्मन् (३) अग्निशिख (४) वर (५) वाह्लीक (६) पीतन (७) रक्त (८) संकोच (९) पिशुन (१०) धीर (११) लोहितचन्दन ॥ १२३-१२४ ॥

(षट् लाक्षायाः)

लाक्षा राक्षा जतु क्लीबे यावोऽलक्तो द्रुमामयः

[2]लाह, अलता, महावर के ६ नाम—(१) लाक्षा (२) राक्षा (३) जतु (४) याव (५) अलक्त (६) द्रुमामय। इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग, (३ रा) नपुंसक, (४-६) पुंल्लिङ्ग हैं।

---

१ भावप्रकाश में लिखा है—
'काश्मीरदेशजक्षेत्रे कुङ्कुमं यद्भवेद्धि तत्।
सूक्ष्मकेशरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम् ॥
बाह्लीकदेशसञ्जातं कुङ्कुमं पाण्डुरं भवेत्।
केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेशरम् ॥
कुङ्कुमं पारसीकेयं मधुगन्धि तदीरितम्।
ईषत्पाण्डुरवर्णं तदधमं स्थूलकेशरम् ॥'

२ एक प्रकार के बहुत छोटे कीड़े होते हैं, जिनकी कई जातियाँ होती हैं। ये कीड़े पीपल, पलास, कुसुम, बेर, अरहर आदि अनेक प्रकार के वृक्षों पर आप से आप हो जाते हैं। वृक्षों पर ये अपने शरीर से एक प्रकार का लसदार लाल पदार्थ निकाल कर उससे घर बनाते हैं और उसीमें बहुत अधिक अण्डे देते हैं। लोग बैशाख और अगहन में वृक्षों की शाखाओं पर से खुरच कर यह लाल द्रव्य निकाल लेते हैं और तब इसे कई तरह से साफ करके काम में लाते हैं। इससे कई प्रकार के रंग, तेल, वारनिश, और चूड़ियाँ, कुमकुमे आदि द्रव्य बनते हैं। चपड़ा भी इसीसे तैयार होता है। लाख केवल भारत में ही होती है और कहीं नहीं होती। यहीं से यह सारे संसार में जाती है। यहाँ इसका व्यवहार बहुत प्राचीन-काल से, सम्भवतः वैदिककाल से, होता आया है। पहले यहाँ इससे कपड़े और चमड़े आदि रँगते थे और पैर में लगाने के लिए अलता या महावर बनाते थे।

(त्रीणि लवङ्गस्य)

लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञम्

[3]लौंग के ३ नाम—(१) लवङ्ग (२) देवकुसुम (३) श्रीसंज्ञ।

(त्रीणि पीतचन्दनस्य)

अथ जायकम् ॥१२५॥

कालीयकं च कालानुसार्यं च

[4]कलम्बक, पीलाचन्दन के ३ नाम—(१) जायक (२) कालीयक (३) कालानुसार्य॥ १२५॥

(षट् अगुरुणः)

अथ समार्थकम्।

वंशिकाऽगुरु-राजार्ह-लोहं कृमिज-जोङ्गकम् १२६

[5]अगर के ६ नाम—(१) वंशिक (२) अगुरु (३) राजार्ह (४) लोह (५) कृमिज (६) जोङ्गक। ये (१-६) नपुंसक हैं; किन्तु केवल (२ रा) पुंल्लिङ्ग में भी होता है ॥१२६॥

(द्वे कृष्णागुरुणः)

कालागुर्वगुरुः

---

३ निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार लौंग के पर्यायवाची शब्द—लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं कलिकोत्तमम्।
भृङ्गारं सुषिरं तीक्ष्णं वारिजं शेखरं लवम् ॥

लौंग के वृक्ष मालाबार, जंजीबार, मलाया, जावा, अफ्रिका के समुद्र तट आदि में होते हैं। लौंग की खेती के लिए कालीमिट्टी और विशेषतः वह मिट्टी जो ज्वालामुखी की राख हो या जिसमें बालू मिली हो, अच्छी मानी जाती है। लौंग का प्रयोग विशेष कर मसाले में होता है। श्रीसंज्ञ से स्पष्ट है कि लक्ष्मी के पर्यायवाची शब्द जितने हैं, वे इसके भी हैं।

४ पीलाचन्दन के पर्यायवाची शब्द—
'नारायणप्रियं पीतं पीताभं हरिचन्दनम्।
कालीयकं पीतकाष्ठं जायकं कान्तिदायकम् ॥'

५ भावप्रकाश के अनुसार अगर के पर्यायवाची शब्द—
अगरु क्रिमिजं लोहं राजार्हं वंशिकं लघु।
लोहाख्यं जोङ्गकं चापि कृष्णं वर्णप्रसादनम् ॥

अगर के पेड़ आसाम के पहाड़ी जङ्गलों और प्रशान्त-सागर के टापुओं में पाये जाते हैं।

¹काली अगर के २ नाम—(१) कालागुरु (२) अगुरु। इनमें (१ ला) नपुंसक, (२ रा) पुं-नपुंसक है।

(एकं स्वनाम्ना केदारदेशे प्रसिद्धागुरुणः)

स्यात्तन्मङ्गल्या मल्लिगन्धि यत्।

²मङ्गलागरु का नाम—(१) मङ्गल्या (स्त्रीलिङ्ग)।

(पञ्च रालस्य)

यक्षधूपः सर्जरसो राल-सर्वरसावपि ॥१२७॥ बहुरूपोऽपि

³राल के ५ नाम—(१) यक्षधूप (२) सर्जरस (३) राल (४) सर्वरस (५) बहुरूप ॥ १२७ ॥

(द्वे अनेकपदार्थकृतधूपस्य)

अथ वृकधूप-कृत्रिमधूपकौ।

⁴दशाङ्ग धूप के २ नाम—(१) वृकधूप (२) कृत्रिमधूपक।

(चत्वारि सिह्लाख्यगन्धद्रव्यस्य)

तुरुष्कः पिण्डकः सिह्लो यावनोऽपि

⁵लोबान के ४ नाम—(१) तुरुष्क (२) पिण्डक (३) सिह्ल (४) यावन।

(पञ्च सरलद्रवस्य)

अथ पायसः ॥१२८॥

श्रीवासो वृकधूपोऽपि श्रीवेष्ट-सरलद्रवौ।

चीड़ के धूप के ५ नाम—(१) पायस (२) श्रीवास (३) वृकधूप (४) श्रीवेष्ट (५) सरलद्रव १२८

(त्रीणि कस्तूर्याः)

मृगनाभिर्मृगमदः कस्तूरी च

⁶कस्तूरी के ३ नाम—(१) मृगनाभि (२) मृगमद (३) कस्तूरी। इनमें (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं और (३रा) स्त्रीलिङ्ग।

(त्रीणि कङ्कोलकस्य)

अथ कोलकम् ॥ १२९ ॥

कङ्कोलकं कोशफलम्

⁷शीतल चीनी, कबाब चीनी के ३ नाम—(१) कोलक (२) कंकोलक (३) कोशफल ॥१२९॥

---

१ अगर अनेक प्रकार की होती है। उनमें काली अगर ही उत्तम और वैद्यक में लिखित औषधियों के साथ व्यवहृत होती है। भारी होने के कारण यह जल में डूब जाती है और नरम ऐसी होती है कि दाँतों में रखकर खाने से चिपक जाती है। इसको पीसकर जलाने से सुगन्ध निकलती है। कृष्णागुरु के नाम—

कृष्णागुरु स्याद्वसुकं मङ्गल्यं विश्वरूपकम्।

२ मंगलागुरु के नाम—

मङ्गल्या मल्लिका गन्धमङ्गलाऽगरुवाचका।

३ शाल के पेड़ देहरादून में पाये जाते हैं। इसकी लकड़ी किसी काम की नहीं होती है। पर इसकी गोंद जिसे राल कहते हैं, बहुत काम का होता है। इसका व्यवहार प्रायः वार्निश आदि के काम में होता है; और अतिसार प्रदर आदि रोगों में भी दिया जाता है। राल के तैल को 'तारपिन' कहते हैं।

४ कृत्रिम अर्थात् कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई धूप कई प्रकार की होती है; जैसे पञ्चाङ्ग धूप, अष्टाङ्ग धूप, दशाङ्ग धूप, द्वादशाङ्ग धूप, षोडशाङ्ग धूप। इनमें से दशाङ्ग धूप अधिक प्रसिद्ध है जिसमें दस चीजों का मेल होता है। ये दस चीजें क्या क्या होनी चाहिए इसमें मतभेद है। पद्मपुराण के अनुसार कपूर, कुष्ठ, अगर, गुग्गुल, चंदन, केसर, सुगन्धवाला, तेजपत्ता, खस और जायफल-ये दस चीजें होनी चाहिए। सारांश यह कि साल और सलई का गोंद, मैनसिल, अगर, देवदार, पद्माख, मोचरस, मोथा, जटामांसी इत्यादि सुगन्धित द्रव्य धूप देने के काम में आते हैं।

५ यह एक वृक्ष का सुगन्धित गोंद है। यह वृक्ष अफ्रिका के पूर्वी किनारे पर, सुमालीलैण्ड में और अरब के दक्षिणी तट पर होता है। और वहीं से लोबान भारत में आता है। लोबान प्रायः जलाने के काम में लाया जाता है, जिससे सुगन्धित धुआँ निकलता है।

६ कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है। हिरन को मार कर उसकी नाभि को काट लेते हैं। उसको कस्तूरी का नाभा कहते हैं। वह आकार में गोल होता है। उस नाभा को चीरकर कस्तूरी निकालते हैं। जिन हिरनों की नाभि से कस्तूरी निकलती है, वे काश्मीर, नेपाल और कामरूप देश में पाये जाते हैं।

७ वैद्यक निघण्टु ग्रन्थों के अनुसार शीतलचीनी के पर्यायवाची शब्द-'कङ्कोलकं कोशफलं कोलकं तैलसाधनम्।'

(पञ्च कर्पूरस्य)

अथ कर्पूरमस्त्रियाम् ।
घनसारश्चन्द्रसंज्ञः सिताभ्रो हिमवालुका१३०

[1]कपूर के ५ नाम—(१) कर्पूर (२) घनसार (३) चन्द्रसंज्ञ (४) सिताभ्र (५) हिमवालुका। इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, (२–४) पुँल्लिङ्ग, (५ वाँ) स्त्रीलिङ्ग है ॥१३०॥

(चत्वारि चन्दनस्य)

गन्धसारो मलयजो भद्रश्रीश्चन्दनोऽस्त्रियाम्

[2]चन्दन के ४ नाम—(१) गन्धसार (२) मलयज (३) भद्रश्री (४) चन्दन। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२) पुं-नपुंसक (३) स्त्रीलिङ्ग, (४) पुं-नपुसंक है।

(एकं धवलशीतलचन्दनविशेषस्य)

तैलपर्णिक—

उज्ज्वल और शीतल चन्दन का नाम—(१) तैलपर्णिक (नपुंसक)।

(एकमुत्पलगन्धिचन्दनस्य)

गोशीर्षे

कमल की तरह गन्धवाले चन्दन का नाम—(१) गोशीर्ष (नपुंसक)।

(एकं कपिलवर्णचन्दनस्य)

हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥१३१॥

[3]पीले रंग के चन्दन का नाम—(१) हरिचन्दन (पुं-नपुंसक) ॥ १३१ ॥

(पञ्च रक्तचन्दनस्य)

तिलपर्णी तु पत्राङ्गं रञ्जनं रक्तचन्दनम् ।
कुचन्दनं च

[4]लाल चन्दन के ५ नाम—(१) तिलपर्णी (२) पत्राङ्ग (३) रञ्जन (४) रक्तचन्दन (५) कुचन्दन। इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, (२–५) नपुंसक हैं।

(द्वे जातीफलस्य)

अथ जातीकोश-जातीफले समे ॥१३२॥

[5]जायफल के २ नाम—(१) जातीकोश (२) जातीफल। ये (१–२) नपुंसक हैं ॥१३२॥

(एकं कर्पूरादिभिः समभागैः पिण्डीकृतलेपविशेषस्य)

कर्पूरागुरु-कस्तूरी-कङ्कोलैर्यक्षकर्दमः ।

[6]महासुगन्धित लेप विशेष—जो कपूर, अगर, कस्तूरी, और शीतलचीनी के सम भाग से बनता है—का नाम—(१) यक्षकर्दम।

---

१ 'चन्द्रसंज्ञ' से स्पष्ट है कि इसके नाम चन्द्र के पर्यायवाची शब्द के अनुसार होते हैं—

ओषधीशश्च कर्पूरं सोमसंज्ञं सिताभ्रकम् ।
शिला हिमांशुः शीतांशुश्चन्द्रभस्म निशापतिः ॥

कपूर के वृक्ष भारत के अतिरिक्त चीन और जापान में भी होते हैं। कपूर की अनेक जाति होती है जैसे भीमसेनी कपूर, चिनियाकपूर आदि।

२. भावप्रकाश में लिखा है—

'स्वादे तिक्तं, कषे पीतं, छेदे रक्तं, तनौ सितम् ।
ग्रन्थिकोटरसंयुक्तं चन्दनं श्रेष्ठमुच्यते ॥'

अर्थात्—जो स्वाद में कड़वा हो, घिसने में पीला हो, तोड़ने में लाल हो, देखने में सफेद हो, और गांठदार, कोटरयुक्त हो वह चन्दन श्रेष्ठ होता है।

३ हरिचन्दन के सम्बन्ध में कहा जाता है—

हरिचन्दनं सुरार्हं हरिगन्धं चन्द्रचन्दनं दिव्यम् ।
दिविजं च महागन्धं नन्दनजं लोहितजं नवसंज्ञम् ॥
हरिचन्दनं तु दिव्यं तिक्तहिमं तदिह दुर्लभं मनुजैः ।
पित्ताटोपविलेपि चन्दनवच्छ्रमहरं च शोषहरम् ॥(रा०नि०)

४ लाल चन्दन के सम्बन्ध में राजनिघण्टु में लिखा है—

रक्तपित्तहरं बल्यं चक्षुष्यं रक्तचन्दनम् ।

५ जायफल की उत्पत्ति जावा, बताविया और पिनाङ्ग के टापुओं में होती है। इसकी गुल्म जाति होती है और फल जामुन की तरह होता है। इसकी छाल के भीतर लाल गुच्छा होता है, जिसे जावित्री कहते हैं। कुछ समय के बाद उसका रङ्ग पीला हो जाता है। उसके भीतर कठिन वल्कल का बीज होता है जो तोड़ जाने पर जायफल कहलाता है।

६ कर्पूरागुरु-कस्तूरी-कङ्कोल-घुसृणानि च ।
एकीकृतमिदं सर्वं **यक्षकर्दम** इष्यते ॥ इति **व्याडिः**।
कुङ्कुमागुरुकस्तूरी कर्पूरं चन्दनं तथा ।

(चत्वारि गात्रानुलेपनयोग्यस्य घृष्टपिष्टसुगन्धिद्रव्यस्य)

गात्रानुलेपनी वर्तिर्वर्णकं स्याद्विलेपनम् १३३

शरीर पर अनुलेप के योग्य पीसे हुए और घिसे हुए सुगन्धित द्रव्य—जिसे [1]चोआ कहते हैं—के ४ नाम—(१) गात्रानुलेपनी (२) वर्ति (३) वर्णक (४) विलेपन। इनमें (१–२) स्त्रीलिङ्ग, (३ रा) पुं–नपुंसक, (४था) नपुंसक, है ॥ १३३ ॥

(द्वे पटवासादिचूर्णमात्रस्य)

चूर्णानि वासयोग्याः स्युः

सुगन्धित 'पाउडर' (Powder बुकनी) के २ नाम—(१) चूर्ण (२) वासयोग्य। इनमें (१) नपुं०, (२) पुं० है।

(द्वे गन्धद्रव्येन वासितस्य वस्तुनः)

भावितं वासितं त्रिषु।

गन्धद्रव्य से सुगन्धित की गयी चीज़ के २ नाम—(१) भावित (२) वासित। ये (१–२) पुं-स्त्री-नपुंसक हैं।

(एकं गन्धपुष्पोपचारस्य)

संस्कारो गन्धमाल्याद्यैर्यः स्यात्तदधिवासनम्

कपड़ा, पान आदि की सुगन्धि बढ़ाने के लिए जो अतर, फूलमाला, धूप आदि से संस्कार किया जाता है उसका नाम—(१) अधिवासन ॥ १३४ ॥

(त्रीणि मूर्ध्नि धृतायाः कुसुमावलेः)

माल्यं माला-स्रजौ मूर्ध्नि

सिर पर की धरी हुई पुष्पमाला के ३ नाम—(१) माल्य (२) माला (३) स्रज्। इनमें (१ ला) नपुंसक, (२–३) स्त्रीलिंग हैं।

(एकं केशमध्यस्थितमाल्यस्य)

केशमध्ये तु गर्भकः।

सिर के बीचोबीच रखी हुई माला का नाम—(१) गर्भक।

(एकं शिखालम्बिमाल्यस्य)

प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि

सिर से चोटी तक लटकती हुई माला का नाम—(१) प्रभ्रष्टक।

(एकं पुरस्थललाटपर्यन्तमाल्यस्य)

पुरो न्यस्तं ललामकम् ॥१३५॥

सिर से ललाट तक की माला का नाम—(१) ललामक ॥ १३५॥

(एकं कण्ठे सरललम्बमानमाल्यस्य)

प्रालम्बमृजुलम्बि स्यात्कण्ठात्

कण्ठ से सीधी लटकनेवाली माला का नाम—(१) प्रालम्ब।

(एकमुरसि यज्ञोपवीतवत्तिर्यग्धृतमाल्यस्य)

वैकक्षिकं तु तत्।

यत्तिर्यक् क्षिप्तमुरसि

जनेव की तरह छाती पर टेढ़ी लटकती हुई माला का नाम—(१) वैकक्षिक।

(द्वे शिखासु न्यस्तमाल्यस्य)

शिखास्वापीड-शेखरौ ॥१३६॥

शिखा में पहनी हुई माला के २ नाम—(१) आपीड (२) शेखर ॥१३६॥

(द्वे माल्यादिरचनायाः)

रचना स्यात्परिस्यन्दः

फूलों से माला या गुच्छे आदि बनाने का

महासुगन्धमित्युक्तं नामतो **यक्षकर्दमः**। इति **धन्वन्तरिः**
कर्पूरागुरुकस्तूरीकंकोलैर्यक्षधूपकः।
चन्दनागुरुकुरङ्गनाभिकाचन्द्रचन्दनसमांशसम्भृतम्।
त्र्यक्षपूजनपरैकगोचरं **यक्षकर्दममिमं** प्रचक्षते ॥
इति **राजनिघण्टुः**।

१ एक प्रकार का सुगन्धित द्रव पदार्थ जो कई गन्ध-द्रव्यों को एक साथ मिलाकर गरमी की सहायता से उसका रस टपकाने से तैयार होता है। इसके तैयार करने की कई रीतियाँ हैं—(क) चन्दन का बुरादा, देवदार का बुरादा और मरसे के फूलों को एक में मिलाते और गरम करके उनमें से रस टपकाते हैं। (ख) केसर, कस्तूरी आदि को मरसे के फूलों के रस में मिलाते और गरम करके उसमें से रस टपकाते हैं।

गूँथने की क्रिया के २ नाम—(१) रचना (२) परिस्यन्द ।

(द्वे सर्वोपचारपरिपूर्णतायाः)

आभोगः परिपूर्णता ।

परिपूरनता, सम्पूर्णता के २ नाम—(१) आभोग (२) परिपूर्णता ।

(द्वे शिरोनिधानस्य)

उपधानं तूपबर्हः

तकिया (कपड़े का बना हुआ वह लम्बोतरा, गोल या चौकोर थैला जिसमें रूई, पर आदि भरते हैं और जिसे सोने लेटने आदि के समय सिर के नीचे रखते हैं) के २ नाम—(१) उपधान (२) उपबर्ह ।

(त्रीणि शय्यायाः)

शय्यायां शयनीयवत् ॥१३७॥

शयनम्

सेज (बिछौना, बिस्तर) के ३ नाम—(१) शय्या (२) शयनीय (३) शयन । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, (२-३) नपुंसक हैं ॥१३७॥

(चत्वारि पर्यङ्कस्य)

मञ्च-पर्यङ्क-पल्यङ्काः खट्वया समाः ।

मँचिया, खटिया, पलङ्ग, चारपाई, मशहरी के ४ नाम—(१) मञ्च (२) पर्यङ्क (३) पल्यङ्क (४) खट्वा । इनमें (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं, (४ था) स्त्रीलिङ्ग ।

(द्वे कन्दुकस्य)

गेन्दुकः कन्दुकः

गेंद, गेन्दवा (छोटी तकिया) के २ नाम— (१) गेन्दुक (२) कन्दुक ।

(द्वे दीपस्य)

दीपः प्रदीपः

दीया, चिराग़, लालटेन के २ नाम— दीप (२) प्रदीप ।

(द्वे आसनस्य)

पीठमासनम् ॥१३८॥

[1]आसन, पीढ़ा के २ नाम—(१) पीठ (२) आसन ॥ १३८ ॥

(द्वे सम्पुटस्य)

समुद्गकः सम्पुटकः

डब्बा, चौघड़ा (बिलहरा) के २ नाम—(१) समुद्गक (२) सम्पुटक ।

(द्वे पतद्ग्रहस्य)

प्रतिग्राहः पतद्ग्रहः ।

पीकदानी के २ नाम—(१) प्रतिग्राह (२) पतद्ग्रह ।

(द्वे केशमार्जन्याः)

प्रसाधनी कङ्कतिका

कङ्घी के २ नाम—(१) प्रसाधनी (२) कङ्कतिका ।

(द्वे पिष्टातस्य)

पिष्टातः पटवासकः ॥१३९॥

बुकवा (सुगन्धित पाउडर) के २ नाम— (१) पिष्टात (२) पटवासक ॥१३९॥

(त्रीणि दर्पणस्य)

दर्पणे मुकुराऽऽदर्शौ

शीशा, ऐना के ३ नाम—(१) दर्पण (२) मुकुर (३) आदर्श । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, (२-३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे तालपत्रादिनिर्मितव्यजनस्य)

व्यजनं तालवृन्तकम् ।

[2]बेना, ताड़ के पंखे के २ नाम—(१) व्यजन (२) तालवृन्तक ॥

(इति मनुष्यवर्गः ६)

---

१ विचलितकुललक्ष्मीस्तम्भनायोद्यतेन
क्षितितलशयनीये येन नीता त्रियामा ।
समुदितबलकोषान्पुष्यमित्रांश्च जित्वा
क्षितिपचरणपीठे स्थापितो वामपादः ॥
स्कन्दगुप्त का शिलालेख (फ्लीट नं० १३)

२ बौद्धकालीन तथा गुप्तकालीन पत्थर की चित्रकारी में पंखे कई प्रकार के मिलते हैं। उनसे स्पष्ट है कि प्राचीनकाल में कोई पंखे गोल, कोई लम्बे, कोई डंडीदार, कोई बीच

अथ ब्रह्मवर्गः ७

(नव वंशस्य)

सन्ततिर्गोत्र-जनन-कुलान्यभिजनान्वयौ । वंशोऽन्ववायः सन्तानः

वंश, खानदान के ६ नाम—(१) सन्तति (२) गोत्र (३) जनन (४) कुल (५) अभिजन (६) अन्वय (७) वंश (८) अन्ववाय (९) सन्तान । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, (२-४) नपुंसक, (५-९) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकं वर्णस्य)

वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥

[1]ब्राह्मण आदि का नाम—(१) वर्ण ॥१॥

(एकं चातुर्वर्ण्यस्य)

विप्र-क्षत्रिय-विट्-शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमितिस्मृतम्

[2]चारो वर्ण का नाम—(१) चातुर्वर्ण्य ।

(द्वे राजवंशोत्पन्नस्य)

राजबीजी राजवंश्यः

राजकुल में उत्पन्न हुए के २ नाम—(१) राजबीजिन् (२) राजवंश्य । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

में सुराख वाले होते थे। वैद्यक ग्रंथों में लिखा है कि ताड़ के पंखे की हवा त्रिदोषनाशक और हल्की होती है। यथा—'तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः ।'

१ पहले आर्यों का रंग गोरा होता था और यहाँ की आदिम निवासी अनार्यों—जिन्हें ऋग्वेद में 'दास' 'दस्यु' आदि नामों से सम्बोधित किया गया है—का रंग काला था। आर्यों-अनार्यों में न केवल रंग में बल्कि धर्म, संस्कृति एवं सामाजिक प्रथाओं में भी भिन्नता थी । इसलिए इन्द्र के सम्बन्ध में ऋग्वेद (१,१२, ४) में कहा गया है कि—'यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।' तदन्तर आर्यों में तीन रंग के हिसाब से तीन वर्ण हुए—'ब्राह्मणानां सितो वर्णः, क्षत्रियाणां च लोहितः । वैश्यानां पीतको वर्णः, शूद्राणामसितस्तथा ॥ (महाभारत, शांतिपर्व) ।

२ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत (यजुर्वेद)

राष्ट्र रूपी शरीर की रक्षा के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्णों (मुख-बाहु-ऊरु-पद) की नितांत आवश्यकता होती है ।

(द्वे कुलमात्रोत्पन्नस्य)

बीज्यस्तु कुलसम्भवः ॥ २ ॥

कुल में उत्पन्न हुए के २ नाम—(१) बीज्य (२) कुलसम्भव ॥ २ ॥

(षट् सज्जनस्य)

महाकुल-कुलीनाऽऽर्य-सभ्य-सज्जन-साधवः ।

उत्तम कुल में उत्पन्न, सज्जन, के ६ नाम—(१) महाकुल (२) कुलीन (३) आर्य (४) सभ्य (५) सज्जन (६) साधु ।

(एकैकं ब्रह्मचार्यादीनाम्)

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥३॥ आश्रमोऽस्त्री

[3]यज्ञोपवीत के अनन्तर नियमपूर्वक गुरुकुल में पचीस वर्ष की अवस्थातक वेदाभ्यास करनेवाले का नाम—(१) ब्रह्मचारिन् (पुँल्लिङ्ग) ।

ब्रह्मचर्य के उपरान्त विवाह करके स्त्री-पुत्र आदि के साथ रहनेवाले गृहस्थ का नाम—(१) गृहिन् (पुं०) ।

पुत्र-पौत्रादि उत्पन्न हो जाने पर एकान्त ध्यान के लिए वन में निवास करनेवाले का नाम—(१) वानप्रस्थ (पुं०) ।

संन्यासी, भीख से जीनेवाले (या बौद्धभिक्खु) का नाम—(१) भिक्षु (पुं०) ।

ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, संन्यास-इन चार प्रकार की अवस्थाओं का संयुक्त नाम-(१) आश्रम (पुं-नपुंसक) ॥३॥

(षट् ब्राह्मणस्य)

द्विजात्यग्रजन्म-भूदेव-वाडवाः । विप्रश्च ब्राह्मणः

ब्राह्मण के ६ नाम—(१) द्विजाति (२) अग्रजन्मन् (३) भूदेव (४) वाडव (५) विप्र (६) ब्राह्मण । ये (१-६) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकं षट्कर्मणो विप्रस्य)

असौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥४॥

---

३ कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
सर्वत्र मैथुनत्यागो ब्रह्मचर्यं तदुच्यते ॥

[1]अध्ययन, अध्यापन, यजन, याजन, दान और प्रतिग्रह इन ६ कर्मों को करनेवाले ब्राह्मण का नाम—(१) षट्कर्मन् (पुं०) ॥४॥

(द्वाविंशतिः पण्डितस्य)

विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञःसन्सुधीःकोविदो बुधः धीरो मनीषी ज्ञःप्राज्ञःसंख्यावान्पण्डितःकविः५ धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः। दूरदर्शी दीर्घदर्शी

[2]पण्डित के २२ नाम—(१) विद्वस् (२) विपश्चित् (३) दोषज्ञ (४) सत् (५) सुधी (६) कोविद (७) बुध (८) धीर (९) मनीषिन् (१०) ज्ञ (११) प्राज्ञ (१२) संख्यावत् (१३) पण्डित (१४) कवि (१५) धीमत् (१६) सूरि (१७) कृतिन् (१८) कृष्टि (१९) लब्धवर्ण (२०) विचक्षण (२१) दूरदर्शिन् (२२) दीर्घदर्शिन् ॥ ५ ॥

(द्वे वेदाध्यायिनः)

श्रोत्रियच्छान्दसौ[2] समौ ॥६॥

वेदपाठी के २ नाम—(१) श्रोत्रिय (२) छान्दस । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥६॥

(द्वे उपाध्यायस्य)

उपाध्यायोऽध्यापकः

[3]वेद पढ़ाने वाले के २ नाम—(१) उपाध्याय (२) अध्यापक ।

(एकं संस्कारादिकर्तुर्गुरोः)

अथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ।

[4]निषेक (गर्भाधान) आदि (पुंसवन इत्यादि)

---

१ इज्याध्ययनदानानि याजनाध्यापने तथा ।
प्रतिग्रहश्च तैर्युक्तः **षट्कर्मा** विप्र उच्यते ॥

भागवतमाहात्म्य (अ० ६, २२) के अनुसार 'पंडित' शब्द की परिभाषा—
'पंडितः संशयच्छेत्ता लोकबोधनतत्परः ।'

गीता के अनुसार 'पंडित' शब्द की परिभाषा—
'यस्य सर्वे समारम्भाः कामसङ्कल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पंडितं बुधाः ॥'

२ कुछ पुस्तकों में इतने श्लोक अधिक मिलते हैं—

(द्वे मीमांसाशास्त्रवेत्तुः)

मीमांसको जैमिनीये

मीमांसा (जैमिनि कृत पूर्वमीमांसादर्शन) शास्त्र के जाननेवाले के २ नाम– (१) मीमांसक (२) जैमिनीय ।

(द्वे वेदान्तशास्त्रज्ञस्य)

वेदान्ती ब्रह्मवादिनि ।

वेदान्त (व्यासकृत ब्रह्मसूत्र वेदान्त दर्शन) के जानने वाले के २ नाम—(१) वेदान्तिन् (२) ब्रह्मवादिन् ।

(द्वे वैशेषिकशास्त्रवेत्तुः)

वैशेषिके स्यादौलूक्यः

परमाणुवाद (कणाद, उलूक कृत वैशेषिकदर्शन) के जाननेवाले के २ नाम—(१) वैशेषिक (२) औलूक्य ।

[द्वे बौद्धशास्त्रज्ञस्य)

सौगतः शून्यवादिनि ॥१॥

शून्यवाद (बौद्धदर्शन) के जानने वाले के २ नाम—(१) सौगत (२) शून्यवादिन् ॥१॥

(द्वे न्यायशास्त्रज्ञस्य)

नैयायिकस्त्वक्षपादः स्यात्

न्यायशास्त्र (अक्षपादगौतम कृत न्यायदर्शन) विशारद के २ नाम—(१) नैयायिक (२) अक्षपाद ।

(द्वे जैनशास्त्रज्ञस्य)

स्याद्वादिक आर्हकः ।

स्याद्वाद (जैनदर्शन) के जाननेवाले के २ नाम—(१) स्याद्वादिक (२) आर्हक (आर्हत) ।

(द्वे चार्वाकशास्त्रज्ञस्य)

चार्वाक-लौकायतिकौ

अनीश्वर वाद (बृहस्पति के शिष्य चार्वाक का शास्त्र, जिनके मत का उल्लेख सर्वदर्शनसंग्रह, सर्वदर्शनशिरोमणि, बृहस्पतिसूत्र और नैषध के १७ वें सर्ग में मिलता है) के जानने वाले के २ नाम—(१) चार्वाक (२) लौकायतिक ।

(द्वे सांख्यशास्त्रज्ञस्य)

सत्कार्ये सांख्य-कापिलौ ॥२॥

प्रकृति—पुरुषवाद (महर्षि कपिलकृत सांख्यदर्शन) के जानने वाले के २ नाम—(१) सांख्य (२) कापिल ॥२॥

३ एकदेशं तु वेदस्य वेदाङ्गान्यपि वा पुनः ।
योऽध्यापयति वृत्यर्थमु**पाध्यायः** स उच्यते [मनुः २।१४]

४ निषेकादीनि कर्माणि यः करोति यथाविधिः ।
सम्भावयति चान्नेन स विप्रो **गुरु**रुच्यते ॥ [मनुः]

संस्कारों के करनेवाले (पिता आदि) का नाम—(१) गुरु ।

(एकमाचार्यस्य)

मन्त्रव्याख्याकृदाचार्यः

[1]वेद की व्याख्या करनेवाले का नाम—(१) आचार्य ।

(त्रीणि यजमानस्य)

आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥७॥

यष्टा च यजमानश्च

यजमान के ३ नाम—(१) व्रतिन् (२) यष्टृ (३) यजमान । ये (१–३) पुल्लिङ्ग हैं ॥७॥

(एकं सोमयाजियजमानस्य)

स सोमवति दीक्षितः ।

सोम यज्ञ करने वाले यजमान का नाम—(१) दीक्षित ।

(द्वे यजनशीलस्य)

इज्याशीलो यायजूकः

बार बार यज्ञ करने वाले के २ नाम—(१) इज्याशील (२) यायजूक ।

(एकं सविधियज्ञकर्तृकस्य)

यज्वा तु विधिनेष्टवान् ।

विधि पूर्वक यज्ञ कर लेने वाले का नाम—(१) यज्वन् (पुं०) ॥८॥

(एकं बृहस्पतियागकर्तुः)

स गीष्पतीष्टया स्थपतिः

बृहस्पति यज्ञ के करने वाले का नाम—(१) स्थपति ।

[1] उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः ।
साङ्गं च सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ (मनुः २।१४०)
व्याख्यालक्षणं तु—
पदच्छेदः पदार्थोक्तिर्विग्रहो वाक्ययोजना ।
आक्षेपोऽथ समाधानं व्याख्यानं षड्विधं मतम् ॥
गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित 'कृष्णाङ्क' (वर्ष ६, सं० १, पृ० ६७) में—आचिनोति हि शास्त्राणि स्वाचारे स्थापयत्यपि । आचारयति तं लोके तमाचार्यं प्रचक्षते ॥

(द्वे सोमयाजिनः)

सोमपीथी तु सोमपाः ।

सोमयज्ञ करनेवाले के २ नाम—(१) सोमपीथिन् (२) सोमपा ।

(एकं सर्वस्वदक्षिणयागकर्तृकस्य)

सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥९

सर्वस्व दक्षिणा से विश्वजित् आदि यज्ञ के करनेवाले का नाम—(१) सर्ववेदस् (पुं०) ॥९॥

(एकं साङ्गवेदविशारदस्य)

अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती

साङ्ग (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण, छन्द सहित) प्रवचन (वेद) पढ़े हुए का नाम—(१) अनूचान ।

(एकं गुरुकुलवासान्निवृत्तस्य)

गुरोस्तु यः ।

लब्धानुज्ञः समावृत्तः

जिस अनूचान ने गुरु से गृहस्थ्यादि आश्रमों के लिए आज्ञा पायी है उसका नाम—(१) समावृत्त ।

(एकं स्नातकस्य)

सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥१०॥

अभिषव स्नान करनेवाले का नाम—(१) सुत्वन् (पुं०) ॥१०॥

(त्रीणि शिष्यस्य)

छात्राऽन्तेवासिनौ शिष्ये

शिष्य, विद्यार्थी, चेला के ३ नाम—(१) छात्र (२) अन्तेवासिन् (३) शिष्य ।

(द्वे आरब्धाध्ययनानां बटूनाम्)

शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ।

वेद पढ़ना शुरु करनेवाले लड़कों के २ नाम—(१) शैक्ष (२) प्राथमकल्पिक ।

(एकं समानशाखाध्येतॄणाम्)

एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥११

एक शाखा के पढ़नेवाले ब्रह्मचारियों का

आपस में (सपाठी) का नाम—(१) सब्रह्मचारिन् ॥११॥

(एकं सहाध्यायिनाम्)

सतीर्थ्यास्त्वेकगुरवः

एक गुरु के यहाँ के पढ़नेवालों का पारस्परिक नाम—(१) सतीर्थ्य ।

(एकं कृताग्निचयनस्य)

चितवानग्निमग्निचित् ।

अग्नि संग्रह करनेवाले का नाम—(१) अग्निचित् (पुं०) ।

(द्वे पारम्पर्योपदेशस्य)

पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् १२

परम्परा से प्राप्त उपदेश के २ नाम—(१) ऐतिह्य (२) इतिह । इनमें (१ला) नपुंसक, (२रा) अव्यय है ॥१२॥

(एकमाद्यज्ञानस्य)

उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात्

(उपदेश के बिना, ईश्वरदत्त) प्रथम ज्ञान का नाम—(१) उपज्ञा (स्त्री०) ।

(एकं ज्ञात्वा प्रथमारम्भस्य)

ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।

समझकर ग्रन्थ के आरम्भ करने का नाम—(१) उपक्रम ।

(सप्त यज्ञस्य)

यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः

यज्ञ के ७ नाम—(१) यज्ञ (२) सव (३) अध्वर (४) याग (५) सप्ततन्तु (६) मख (७) क्रतु । ये (१-७) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१३॥

(पञ्चमहायज्ञानामेकैकम्)

पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।
एते पञ्च महायज्ञा [1]ब्रह्मयज्ञादिनामकाः १४

पाठ, होम, अतिथियों की सेवा, तर्पण, बलि—इन ब्रह्मयज्ञ आदिकों का नाम—(१) महायज्ञ ।

अर्थात्—पाठ (विधिपूर्वक वेदाध्ययन) का नाम—(१) ब्रह्मयज्ञ ।

(वैश्वदेव का) हवन का नाम—(१) देवयज्ञ ।

अतिथि-सपर्या (गृहागत अतिथियों को अन्न आदि से सन्तुष्ट करने) का नाम-(१) मनुष्ययज्ञ ।

तर्पण (पितरों को अन्न-जल से सन्तुष्ट करने का नाम—(१) पितृयज्ञ ।

बलि (जीवों को अन्न दानादि से सन्तुष्ट करने) का नाम—(१) भूतयज्ञ ॥१४॥

(नव सभायाः)

समज्या परिषद्गोष्ठी सभा-समिति-संसदः ।
आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोःसदः१५

[2]सभा के ९ नाम—(१) समज्या (२) परिषद् (३) गोष्ठी (४) सभा (५) समिति (६) संसद् (७) आस्थानी (८) आस्थान (९) सदस् । इनमें (१-७) स्त्रीलिङ्ग हैं, (८ वाँ) नपुंसक, (९ वाँ) स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकमें होता है ॥१५॥

(एकं हविर्गेहात्पूर्वदेशे स्थितस्य सदस्यगृहस्य)

प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात्

हविगृह के सामनेवाली कोठरी—जिसमें यज्ञकर्ता के परिवारवाले और सुहृद्वर्ग बैठते हैं—का नाम—(१) प्राग्वंश ।

(द्वे सदस्यानाम्)

सदस्या विधिदर्शिनः ।

---

[1] अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः, पितृयज्ञस्तु तर्पणम् ।
होमो दैवो बलिर्भौतो नृयज्ञोऽतिथिपूजनम् ॥
(मनुस्मृतिः ३।७०)

[2] वैदिक काल में 'सभा' और 'समिति' के कार्य पृथक् थे । दोनों प्रजापति की लड़कियाँ कही गयी हैं ('सभा च मा समितिश्चावतां प्रजापतेर्दुहितरौ संविदाने'—अथर्ववेद, ७, १२) । समिति में उपस्थित रहना राजा का परम कर्तव्य था । सभा में प्रस्तावों पर खूब बहस होती थी और अन्त में जो निर्णय होता था उसे सब लोग मानते थे ('विद्म ते सभे नाम नरिष्टानाम वा असि । ये ते के च सभासदस्ते मे सन्तु सवाचसः'—अथर्ववेद) । मेम्बरों और सभापति को जनता श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी ('नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यः'—शुक्ल यजुर्वेद, १६,२४) ।

यज्ञ के प्रत्येक कार्य विधिपूर्वक सम्पादित होते हैं या नहीं, यह देखनेवाले और विपरीत होने पर संशोधन करनेवाले यज्ञदर्शक ऋत्विग्विशेष के २ नाम—(१) सदस्य (२) विधिदर्शिन्।

(चत्वारि सामाजिकानाम्)

सभासदः सभास्तारा: सभ्याः सामाजिकाश्च ते

सभा में बैठनेवालों के ४ नाम—(१) सभासद (२) सभास्तार (३) सभ्य (४) सामाजिक ॥१६॥

(ऋत्विग्विशेषाणां क्रमादेकैकम्)

अध्वर्यूद्गातृ-होतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात्

यजुर्वेद के जाननेवाले ऋत्विज का नाम—(१) अध्वर्यु (पुं०)।

सामवेद के जाननेवाले ऋत्विज का नाम—(१) उद्गातृ (पुं०)।

ऋग्वेद के जाननेवाले ऋत्विज का नाम—(१) होतृ (पुं०)।

(द्वे ऋत्विजाम्)

आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते

यजमान धन से जिन आग्नीध्र आदि (ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु आदि १६) को यज्ञ में वरण करता है उन ऋत्विजों के २ नाम—(१) ऋत्विज् (२) याजक ॥१७॥

(एकं यज्ञवेदिकायाः)

वेदिः परिष्कृता भूमिः

होम करने के चबूतरे का नाम—(१) वेदि (स्त्री०)।

(द्वे यज्ञार्थं संस्कृतस्य भूभागस्य)

समे स्थण्डिल-चत्वरे।

होम के लिए साफ़ किए हुए स्थान के २ नाम—(१) स्थण्डिल (२) चत्वर। ये (१-२) नपुंसक हैं।

(द्वे यूपकटकस्य)

चषालो यूपकटकः

यज्ञ के यूप में लगी हुई पशु बाँधने की गराड़ी के २ नाम—(१) चषाल (२) यूपकटक।

(एकं यागभूमावन्त्यजादिदर्शनवारणाय निबिडवेष्टनस्य)

कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥

यज्ञभूमि में अन्त्यजों को देखने से रोकने के लिए लगायी गयी घनी टट्टी का नाम—(१) कुम्बा (स्त्री०) ॥१८॥

(द्वे यूपाग्रभागस्य)

यूपाग्रं तर्म

यज्ञस्तम्भ के अगले हिस्से (सिर) के २ नाम—(१) यूपाग्र (२) तर्मन्। ये (१-२) नपुंसक हैं।

(एकमरणेः)

निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः।

जिस काष्ठविशेष को घिसकर अग्नि निकालते हैं उस लकड़ी का नाम—(१) अरणि (पुं०, स्त्रीलिङ्ग)

(एकैकमग्निविशेषस्य)

दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः॥१९॥

यज्ञाग्नि विशेषों के एक-एक नाम—(१) दक्षिणाग्नि (२) गार्हपत्य (३) आहवनीय। ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ १९ ॥

(एकमग्नित्रयस्य)

अग्नित्रयमिदं त्रेता

तीनों अग्नियों का संयुक्त नाम—(१) त्रेता (स्त्रीलिङ्ग)।

(एकं संस्कृतानलस्य)

प्रणीतः संस्कृतोऽनलः।

यज्ञमन्त्र द्वारा संस्कृत (प्रज्वलित) अग्नि का नाम—(१) प्रणीत।

(त्रीणि यज्ञाग्निधारणार्थस्य स्थलविशेषस्य)

समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः २०

यज्ञाग्निधारणार्थ स्थलविशेष के ३ नाम—(१) समूह्य (२) परिचाय्य (३) उपचाय्य।

(एकं गार्हपत्यानीताग्निविशेषस्य)

यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते।

तस्मिन्नानाय्यः

गार्हपत्याग्नि से निकालकर जो दक्षिणाग्नि स्थापित की जाती है उसका नाम—(१) आनाय्य ।

(त्रीण्यग्नेः प्रियायाः)

अथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥२१॥

अग्नि की स्त्री 'स्वाहा' के ३ नाम—(१) अग्नायी (२) स्वाहा (३) हुतभुक्प्रिया ॥२१॥

(द्वे 'समित्प्रक्षेपेण वह्निज्वलने या ऋक् प्रयुज्यते' तस्याः)

ऋक् सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने

समिधाओं को फेंकते हुए अग्नि के जलाने में जो ऋचा पढ़ी जाती है उसके २ नाम—(१) सामिधेनी (२) धाय्या ।

(एकं गायत्र्यादीनाम्)

गायत्री प्रमुखं छन्दः

गायत्री (उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती) आदि का नाम—(१) छन्दस् (नपुंसक)।

(एकं हविष्यान्नस्य)

हव्यपाके चरुः पुमान् ॥२२॥

हवन या यज्ञ की आहुति के लिए पकाया हुआ (चावल, घृत, तिल, जौ आदि) अन्न का नाम—(१) चरु (पुं०) ॥२२॥

(एकं 'पक्वोष्णक्षीरे दधियोगतो या विकृति'तस्याः)

आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः

औटे हुए गरम दूध में दही के मिलाने से जो विकार होता है उसका नाम—(१) आमिक्षा (स्त्री०)।

(एकं मृगचर्मणा रचितव्यजनस्य)

धवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥२३॥

मृग के चमड़े से बने हुए पंखे का नाम—(१) धवित्र ॥ २३ ॥

(एकं दधियुक्तघृतस्य)

पृषदाज्यं सदध्याज्ये

दही मिला घी का नाम—(१) पृषदाज्य ।

(द्वे क्षीरान्नस्य)

परमान्नं तु पायसम् ।

खीर के २ नाम—(१) परमान्न (२) पायस । ये (१–२) नपुंसक हैं, (केवल २ रा पुँल्लिङ्ग में भी) ।

(द्वे हव्यकव्ययोः)

हव्यकव्ये दैवपित्र्ये अन्ने

देवताओं को दिये जानेवाले अन्न का नाम—(१) हव्य (नपुं०)

पितरों को दिए जानेवाले अन्नका नाम—(१) कव्य (नपुं०)

(एकं स्रुवादिकस्य)

पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥

यज्ञीय पात्र (स्रुव, चमसा, उलूखलादि) का नाम—(१) पात्र ॥ २४ ॥

(चत्वारि स्रुवभेदानाम्)

ध्रुवोपभृज्जुहूर्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ।

[1]यज्ञपात्र जो बैकंड की लकड़ी का बनता है, उसका नाम--(१) ध्रुवा (स्त्रीलिङ्ग) ।

गोलाकार यज्ञपात्र का नाम—(१) उपभृत् (स्त्री०)

अर्ध चन्द्रमा के समान शक्लवाले यज्ञपात्र का नाम—(१) जुहू (स्त्री०)

स्रुवा का नाम—(१) स्रुव । यह पुँल्लिङ्ग में (और स्त्रीलिङ्ग में भी) होता है ।

(एकं क्रतावभिमन्त्रितपशोः)

उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः२५

जो पशु यज्ञ में अभिमन्त्रित कर मारा जाता है उसका नाम—(१) उपाकृत ॥२५॥

---

१ खादिरो बाहुमात्रस्तु 'जुहूस्रुक्संज्ञकः' स्रुवः ।
अरत्निमात्रो हंसास्यो वर्तुलोऽङ्गुष्ठपर्ववत् ।
अर्धपर्वप्रणाल्या च युक्तो नासाकृतिर्भवेत् ॥
'उपभृत्स्रुक्' 'ध्रुवास्रुक्' च 'पुष्करस्रुक्' तथैव च ।
'अग्निहोत्रस्य हवणी' तथा वैकङ्कतः स्रुवः ॥
एते चान्ये च बहवः स्रुवभेदाः प्रकीर्तिताः ॥

(त्रीणि यागार्थपशुहननस्य)

परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।

यज्ञ के लिए पशुओं के वध के ३ नाम—(१) परम्पराक (२) शमन (३) प्रोक्षण ।

(त्रीणि यज्ञहतपशोः)

वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसम्पन्न-प्रोक्षिता हते२६

यज्ञ के निमित्त मारे गये पशुमात्र के ३ नाम–(१) प्रमीत (२) उपसम्पन्न (३) प्रोक्षित । ये (१–३) वाच्यलिङ्ग हैं, अतः पुं०, स्त्री०, नपुंसक में होते हैं ॥ २६ ॥

(द्वे हविषः)

सान्नायं हविः

हविविशेष, साकल्य के २ नाम—(१) सान्नाय (२) हविष् । ये (१–२) नपुंसक हैं ।

(एकं हुतस्य)

अग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।

अग्नि में हूनी वस्तु का नाम—(१) वषट्कृत यह पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसक में होता है ।

(एकमिष्टिपूर्वकस्नानविशेषस्य)

दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे

यज्ञ में दीक्षान्त (दीक्षा की समाप्ति) का बोधक इष्टिपूर्वक स्नान विशेष का नाम—(१) अवभृथ ।

(एकं यज्ञकर्मयोग्यद्विजद्रव्यादेः)

तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥२७॥

त्रिषु

यज्ञ कर्म के योग्य वस्तु का नाम—(१) यज्ञिय । यह तीनों लिङ्गों में होता है ॥२७॥

(एकं यज्ञकर्मणः)

अथ क्रतुकर्मेष्टम्[1]

यज्ञादि कर्म का नाम—(१) इष्ट (नपुंसक) ।

(एकं खातादिकर्मणः)

[2]**पूर्तं खातादिकर्मणि ।**

तालाब-कुआ-बावड़ी-देवालय आदि कर्म का नाम—(१) पूर्त (नपुं०) ।

(एकैकं यज्ञशेष-भोजनशेषयोः)

अमृतं विघसो[3] **यज्ञशेष-भोजनशेषयोः ॥२८॥**

यज्ञ से बचे हुए (पुरोडाश आदि) का नाम—(१) अमृत ।

(देव पितर के) भोजन से बचे हुए का नाम—(१) विघस ॥२८॥

(त्रयोदश दानस्य)

त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जन-विसर्जने ।
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥२९॥
प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।

दान के १३ नाम—(१) त्याग (२) विहापित (३) दान (४) उत्सर्जन (५) विसर्जन (६) विश्राणन (७) वितरण (८) स्पर्शन (९) प्रतिपादन (१०) प्रादेशन (११) निर्वपण (१२) अपवर्जन (१३) अंहति । इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, (२-१२) नपुंसक, (१३) स्त्रीलिङ्ग है ॥ २९ ॥

(एकमौर्ध्वदेहिकदानस्य)

मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥३०

मृतक के निमित्त मरण दिन से लेकर दशाह पर्यन्त पिण्डादिक दान का नाम—(१) औेर्ध्वदेहिक (पुं–स्त्री–नपुंसक) ॥ ३० ॥

(द्वे सपिण्डनादूर्ध्वं पितृुद्देशेन दानस्य)

पितृदानं निवापः स्यात्

पितरों के निमित्त जो दान किया जाता है उसके २ नाम—(१) पितृदान (२) निवाप । इनमें (१ला) नपुंसक और (२रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(एकं श्राद्धस्य)

श्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।

१ एकाग्निकर्महवनं त्रेतायां यच्च हूयते ।
अन्तर्वेद्यां च यद्दानमिष्टं तदभिधीयते ॥ इति मनुः ॥

२ पुष्करिण्यः सभा वापी देवतायतनानि च ।
आरामश्च विशेषेण **पूर्तं** कर्म विनिर्दिशेत् ॥

३ विघसाशी भवेन्नित्यं नित्यं चाऽमृतभोजनः ।
विघसो भुक्तशेषं तु यज्ञशेषं तथाऽमृतम् ॥(मनुः ३।२८५)

¹शास्त्र के अनुसार पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण, पिण्डदान आदि का नाम—(१) श्राद्ध (नपुं०)।

(द्वे मासिकश्राद्धस्य)

अन्वाहार्यं मासिके

²मासिक (अमावस्याके) श्राद्ध के २ नाम–(१) अन्वाहार्य (२) मासिक। ये (१-२) नपुंसक हैं।

(एकं श्राद्धकालविशेषस्य)

अंशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥३१॥

³दिन के आठवें मुहूर्त (जो मध्याह्न समय में होता है) का नाम—(१) कुतप। यह पुँल्लिङ्ग-नपुंसक में होता है ॥३१॥

(द्वे श्राद्धे द्विजभक्तिशुश्रूषायाः)

पर्येषणा परीष्टिश्च

श्राद्ध में ब्राह्मणों की भक्तिपूर्वक शुश्रूषा के २ नाम—(१) पर्येषणा (२) परीष्टि। ये स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे धर्मादिमार्गणस्य)

अन्वेषणा च गवेषणा ।

धर्म के अन्वेषण करने के २ नाम—(१) अन्वेषणा (२) गवेषणा।

(द्वे गुर्वादेः क्वचिदर्थे प्रार्थनया नियोजनस्य)

सनिस्त्वध्येषणा

गुरु आदि से किसी निमित्त प्रार्थना-पूर्वक विनती करने के २ नाम—(१) सनि (२) अध्येषणा। ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(चत्वारि याचनायाः)

याच्ञाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥३२॥

याचना (माँगने) के ४ नाम—(१) याच्ञा (२) अभिशस्ति (३) याचना (४) अर्थना। ये (१-४) स्त्रीलिङ्ग हैं॥ ३२ ॥

षट् तु त्रिषु

ये (अर्घ्य, पाद्य, आतिथ्य, आतिथेय, आवेशिक, आगन्तु) छ शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं (अर्थात् वाच्यलिङ्ग हैं)।

(एकमर्घ्यस्य)

अर्घ्यमर्घार्थे

पूजोपचारार्थ जल का नाम—(१) अर्घ्य (पुं-स्त्री-नपुंसक)

(एकं पाद्यस्य)

पाद्यं पादाय वारिणि ।

पाँव धोने के निमित्त जल का नाम—(१) पाद्य (पुं–स्त्री-नपुंसक)

(एकैकमतिथ्यर्थकर्मकस्याऽतिथिनिमित्तसिद्धस्यच)

क्रमादातिथ्यातिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥

अतिथि के निमित्त कर्म (मेहमान के लिए भोजन आदि के पदार्थ) का नाम—(१) आतिथ्य (पुं० स्त्री० नपुंसक)।

अतिथिसेवाकारक का नाम—(१) आतिथेय (पुं० स्त्री० नपुंसक)।३३।

---

१ मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि—

कन्यागते सवितरि दिनानि दश पञ्च च।
पार्वणेनैव विधिना तत्र श्राद्धं विधीयते ॥

यम महाराज कहते हैं—

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं वृद्धिश्राद्धं तथापरम्।
पार्वणं चेति विज्ञेयं श्राद्धं पञ्चमिदं बुधैः ॥

श्राद्ध की प्रथा बहुत प्राचीन है। पितर लोग की पूजा का उल्लेख ऋग्वेदादि में मिलता है। यह प्रथा केवल भारत ही में नहीं बल्कि संसार भर में उन दिनों प्रचलित थी। चीन, जापान, रोम, ग्रीस आदि देशों में पितृ पूजा होती थी।

२ 'पिण्डान्वाहार्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम्'—मनुः।

३ मिताक्षरा के अनुसार श्राद्ध में आठ वस्तुओं की आवश्यकता होती है—मध्याह्न, खड्गपात्र या गैंड़े के चमड़े का पात्र, नेपाली कम्बल, चाँदी का बरतन, कुश, तिल, गाय और दौहित्र। मनु (३;२३५) महाराज कहते हैं—

'त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः।'

महर्षि शातातप का कथन है—

दिवसस्याष्टमे भागे मन्दीभवति भास्करे।
स कालः कुतपो ज्ञेयः पितॄणां दत्तमक्षयम् ॥

(चत्वारि गृहागतस्य)

स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते।

[1]मेहमान (जिनके आने की तिथि नियत न हो) के ४ नाम—(१) आवेशिक (२) आगन्तु (३) अतिथि (४) गृहागत। इनमें (१-२) पुं-स्त्री-नपुंसक, (३-४) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे अभ्यागतस्य)

प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्च

[2]पाहुन, अभ्यागत के २ नाम—(१) प्राघूर्णिक (२) प्राघुणक।

(द्वे उत्थानपूर्वकसत्कारस्य)

अभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥३४॥

किसी आए हुए पुरुष के सम्मानार्थ उठ खड़े होने के २ नाम—(१) अभ्युत्थान (२) गौरव ॥ ३४ ॥

(षट् पूजायाः)

पूजा नमस्याऽपचितिः सपर्याऽर्चाऽर्हणाः समाः

पूजा के ६ नाम—(१) पूजा (२) नमस्या (३) अपचिति (४) सपर्या (५) अर्चा (६) अर्हणा। ये (१-६) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(चत्वारि शुश्रूषायाः)

वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याऽप्युपासना ५

सेवा, टहल के ४ नाम—(१) वरिवस्या (२) शुश्रूषा (३) परिचर्या (४) उपासना। ३५।

(चत्वारि पर्यटनस्य)

व्रज्याऽटाऽट्या पर्यटनम्

घूमने के ४ नाम—(१) व्रज्या (२) अटा (३) अट्या (४) पर्यटन। इनमें (१-३) स्त्रीलिङ्ग हैं, (४ था) नपुंसक।

(एकमीर्यापथे ध्यानाद्युपाये परिव्राजकादीनां स्थितेः

चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥

[3]ईर्यापथ (ध्यान-मौनादि योग मार्ग) में जो स्थिति है उसका नाम—(१) चर्या।

(द्वे आचमनस्य)

उपस्पर्शस्त्वाचमनम्

आचमन (नित्य किए जानेवाले कर्मों के पहले थोड़ा जल हथेली पर रखकर पीने) के २ नाम—(१) उपस्पर्श (२) आचमन। इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग, (२ रा) नपुंसक है।

(द्वे मौनस्य)

अथ मौनमभाषणम्[4] ॥३६॥

मौन (चुपचाप) रहने के २ नाम—(१) मौन (२) अभाषण ॥३६॥

(पञ्च अनुक्रमस्य)

आनुपूर्वी स्त्रियां वाऽऽवृत्परिपाटी अनुक्रमः। पर्यायश्च

परिपाटी, रीति-भाँति के ५ नाम-(१) आनुपूर्वी (२) आवृत् (३) परिपाटी (४) अनुक्रम (५) पर्याय। इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक, में (२-३) स्त्रीलिङ्ग (४-५) पुँल्लिङ्ग हैं।

(त्रीण्यतिक्रमस्य)

अतिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ॥३७॥

क्रम-भङ्ग करने के ३ नाम—(१) अतिपात (२) पर्यय (३) उपात्यय ॥ ३७ ॥

---

१ दूराच्चोपगतं श्रान्तं वैश्वदेव उपस्थितम्। अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः ॥ इति व्यासः।

२ तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना। सोऽतिथिः सर्वभूतानां शेषानभ्यागतान्विदुः ॥ इतियमः।

३ हिन्दुओं में दिनचर्या-रात्रिचर्या पृथक् २ हैं। बौद्धों में उनके आचरणों का वर्णन 'चर्यापिटक' में मिलता है।

४ अन्य पुस्तकों में ये श्लोक अधिक पाये जाते हैं—

प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः। वाल्मीकिश्च

वाल्मीकि मुनिके ४ नाम—(१) प्राचेतस (२) आदिकवि (३) मैत्रावरुणि (४) वाल्मीकि।

अथ गाधेयो विश्वामित्रश्चः कौशिकः।

विश्वामित्रके ३ नाम—(१) गाधेय (२) विश्वामित्र (३) कौशिक। **व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः ॥** व्यास मुनि के ४ नाम—(१) व्यास (२) द्वैपायन (३) पाराशर्य (४) सत्यवतीसुत।

(द्वे व्रतमात्रस्य)

नियमो व्रतमस्त्री

व्रत मात्र के २ नाम—(१) नियम (२) व्रत । इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग, (२रा) पुं–नपुंसक है ।

(एकमुपवासादेर्विहितव्रतस्य)

तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥

चान्द्रायण आदि उपवास का नाम—(१) पुण्यक ।

(द्वे उपवासस्य)

औपवस्तं तूपवासः

उपवास (भूखा रहने) के २ नाम—(१) औपवस्त (२) उपवास ।

(द्वे विवेकस्य)

विवेकः पृथगात्मता ॥ ३८॥

चैतन्य और जड़ पदार्थों की निर्णयात्मिका बुद्धि के २ नाम—(१) विवेक (२) पृथगात्मता । इनमें (१ला) पुं०, (२) स्त्रीलिङ्ग है ॥३८॥

(एकं सदाचारपालन-वेदाभ्यासयोः सम्पत्तेः)

स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्द्धिः

सदाचार और वेदाभ्यास की सम्पत्ति (या तेज) का नाम—(१) ब्रह्मवर्चस ।

(एकं वेदाध्ययने कृताऽञ्जलेः)

अथाञ्जलिः ।

पाठे ब्रह्माञ्जलिः

वेदपाठ के आरम्भ में प्रणवोच्चारपूर्वक शान्ति-पाठ की अंजुली का नाम-(१) ब्रह्माञ्जलि (पुँल्लिङ्ग)।

(एकं वेदपाठे मुखनिर्गतजलबिन्दूनाम्)

पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ॥३९॥

वेदपाठ के समय मुँह से निकले हुए जलविन्दु का नाम—(१) ब्रह्मविन्दु (पुँल्लिङ्ग) ॥३९॥

(एकं ध्यानयोगयोरासनस्य)

ध्यानयोगासने ब्रह्मासनम्

ध्यान[१] (एकाग्र मन से स्मरण करने) और योग (चित्त की वृत्तियों के निरोध करने) के आसन का नाम—(१) ब्रह्मासन ।

(त्रीणि विधानस्य)

कल्पे विधिक्रमौ ॥

वैदिक विधान (अमुक कार्य करना) के ३ नाम—(१) कल्प (२) विधि (३) क्रम । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकमाद्यविधेः)

मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पः

मुख्य विधि (जैसे 'व्रीहिभिर्यजेत') का नाम—(१) मुख्य ।

(एकं गौणविधेः)

अनुकल्पस्तु ततोऽधमः ॥

गौण विधि (जैसे 'व्रीह्यभावे नीवारैर्यजेत') का नाम—(१) अनुकल्प ॥ ४० ॥

(एकं संस्कारपूर्वकश्रुतिग्रहणस्य)

संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ।

उपनयन संस्कार पूर्वक वेदाध्ययन का नाम—(१) उपाकरण ।

(द्वे नामगोत्रोक्तिपूर्वकनमस्कारविशेषस्य)

समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ॥ ४१ ॥

नाम और गोत्र बतलाते हुए पादग्रहणपूर्वक प्रणाम 'पालागन' के २ नाम—(१) पादग्रहण (२) अभिवादन । ये (१-२) नपुंसक हैं ॥४१॥

(पञ्च संन्यासिनाम्)

भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी॥

परिव्राजक (संन्यासी) के ५ नाम—(१) भिक्षु (२) परिव्राज् (३) कर्मन्दिन् (४) पाराशरिन् (५) मस्करिन् । ये (१-५) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि तपस्विनः)

तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी

तपस्वी के ३ नाम-(१) तपस्विन् (२) तापस (३) पारिकांक्षिन् ।

(द्वे मौनव्रतिनः)

वाचंयमो मुनिः ॥४२॥

१ 'एकतानेन मनसा स्मरणं ध्यानमुच्यते । चित्तवृत्तिनिरोधस्तु सद्भिर्योगः इति स्मृतः ॥

मौनी तपस्वी के २ नाम—(१) वाचंयम (२) मुनि ॥४२॥

(एकं तपःक्लेशसहस्य)

तपःक्लेशसहो दान्तः

तपस्या के कष्टों के सहन करनेवाले का नाम—(१) दान्त।

(द्वे ब्रह्मचारिणः)

वर्णिनो ब्रह्मचारिणः।

ब्रह्मचारी के २ नाम—(१) वर्णिन् (२) ब्रह्मचारिन्।

(द्वे ऋषिसामान्यस्य)

ऋषयः सत्यवचसः

ऋषि के २ नाम—(१) ऋषि (२) सत्यवचस्।

(एकं कृतसमावर्तनस्य)

स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती ॥४३॥

[1]स्नातक (वेदव्रत धारणकर गुरु की आज्ञा से समावर्तन संस्कार किए गए) का नाम—(१) स्नातक ॥४३॥

(द्वे यतीनाम्)

ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते ॥

जितेन्द्रिय के २ नाम—(१) यतिन् (२) यति। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे नियमवशाद्भूमिविशेषशायिनः)

यःस्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ। स्थाण्डिलश्च

नियम के कारण भूमि विशेष (चबूतरा आदि) पर शयन करनेवाले के २ नाम—स्थण्डिलशायिन् (२) स्थाण्डिल ॥४४॥

(द्वे निवृत्तरजस्तमोगुणानां व्यासादीनाम्)

अथ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः।

रजोगुण और तमोगुण से रहित ऋषियों (सत्वगुणपरायण व्यासादिकों) के २ नाम—विरजस्तमस् (२) द्वयातिग।

१ गुरवे तु वरं दत्वा स्नायाद्वा तदनुज्ञया।
वेदव्रतानि वा पा नीत्वा ह्युभयमेव वा॥

(त्रीणि पवित्रस्य)

पवित्रः प्रयतः पूतः

पवित्र के ३ नाम—(१) पवित्र (२) प्रयत (३) पूत।

(द्वे दुश्शास्त्रवर्तिनां बौद्धक्षपणकादीनाम्)

पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः ॥४५॥

[2]पाखण्डी के २ नाम—(१) पाखण्ड (२) सर्वलिङ्गिन्। ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ४५

(एकं पालाशदण्डस्य)

पालाशो दण्ड आषाढो व्रते

पलाश—(ढाक, टेसू)--दण्ड का नाम—(१) आषाढ।

(एकं वैणवदण्डस्य)

राम्भस्तु वैणवः।

बाँस के दण्ड का नाम—(१) राम्भ।

(द्वे व्रतिनां जलपात्रस्य)

अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी

कमण्डल के २ नाम—(१) कमण्डलु (२) कुण्डी। इनमें (१ ला) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक, (२ रा) स्त्रीलिङ्ग है।

(एकं व्रतिनामासनस्य)

व्रतिनामासनं वृषी ॥४६॥

व्रतधारियों के आसन का नाम—(१) वृषी (स्त्रीलिंग) ॥ ४६ ॥

(त्रीणि मृगचर्मणः)

अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री

(मृगा के) चाम (मृगछाला) के ३ नाम—

२ प्रसिद्ध बौद्ध राजा अशोक के पञ्चम तथा द्वादश शिलालेखों में 'पाषण्ड' का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया गया है। यह कहा जाता है कि—

'पालनाच्च त्रयीधर्मः पा-शब्देन निगद्यते।
तं खण्डयन्ति ते तस्मात्पाखण्डास्तेन हेतुना॥'

मनु महाराज (९।२२५) कहते हैं कि—

'कितवान्कुशीलवान्क्रूरान्पाषण्डस्थांश्च मानवान्।
विकर्मस्थाञ्छौण्डिकांश्च क्षिप्रं निर्वासयेत्पुरात्॥'

पाषण्डस्थान्—श्रुतिस्मृतिबाह्यव्रतधारिणः (कुल्लूकः)

(१) अजिन (२) चर्मन् (३) कृत्ति। इनमें (१-२) नपुंसक हैं और (३ रा) स्त्रीलिङ्ग।

(एकं भिक्षासमूहस्य)

भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥

भिक्षा के समूह का नाम—(१) भैक्ष।

(द्वे वेदाध्ययनस्य)

स्वाध्यायः स्याज्जपः

[1]वेदाभ्यास के २ नाम—(१) स्वाध्याय (२) जप।

(त्रीणि सोमलताकण्डनस्य)

सुत्याऽभिषवः सवनं च सा ॥४७॥

सोमलता या यज्ञौषधी के कूटने के ३ नाम—(१) सुत्या (२) अभिषव (३) सवन। इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग, (२ रा) पुँल्लिङ्ग, (३ रा) नपुंसक है।

(एकं सर्वपापनाशनमन्त्रस्य)

सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥

सर्वपापों के नाश करनेवाले मन्त्र का नाम—(१) अघमर्षण (पुं-स्त्री-नपुंसक) ॥४७॥

(अमावस्यापौर्णमासयागयोः यथाक्रममेकैकम्)

दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ४८

अमावस्या के दिन किए जानेवाले यज्ञ का नाम—(१) दर्श।

पूर्णिमा के दिन किए जानेवाले यज्ञ का नाम—(१) पौर्णमास ॥४८॥

(एकं शरीरमात्रसाध्यनित्यकर्मणः)

शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः।

[2]शरीर मात्र से साध्य नित्य कर्म का नाम—(१) यम।

(एकं बाह्यसाधननित्यकर्मणः)

नियमस्तु स यत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम्[3] ४९

[4]बाह्य (मिट्टी-जलादि) साधनों से साध्य कृत्रिम कर्म का नाम—(१) नियम ॥४९॥

(द्वे वामस्कन्धार्पितयज्ञोपवीतस्य)

उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे।

[5]बाँए काँधे पर रक्खे हुए और दहिने हाथ के नीचे लटकते हुए जनेव के २ नाम—(१) उपवीत (२) ब्रह्मसूत्र।

(एकं विपरीतधृतब्रह्मसूत्रस्य)

प्राचीनावीतमन्यस्मिन्

[6]दहिने काँधे पर रक्खे हुए और बाएँ हाथ

---

१ वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रितः। तं ह्यस्याहुः परं धर्ममुपधर्मोऽन्य उच्यते ॥ मनु० ४।१४७

२ पातञ्जल सूत्र [२-३०] में कहा गया है—'अहिंसासत्याऽस्तेय-ब्रह्मचर्याऽपरिग्रहा यमाः।' मनुजी [४,२०४] कहते हैं—'यमान्सेवेत सततम्'।

३ यह श्लोक कहीं-कहीं अधिक पाया जाता है—

'क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु।'

मुण्डन के ४ नाम—[१] क्षौर [२] भद्राकरण [३] मुण्डन [४] वपन। ये तीनों लिङ्गों में होते हैं।

४ पातञ्जल सूत्र [२।३२] में लिखा है—'शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।'

५ उपनयन की प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से हैं। हमारे यहाँ उपनयन के समय जैसा मन्त्र 'ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः' है वैसा ही पारसी लोगों के यहाँ—जो ईरान में बस गये हैं—पाया जाता है। यथा—'फ्राते मजदाओ बरत् पौरवनिम् आयभ्य ओंघनेम् स्तेहर पाए संघेम् मैन्युतस्तेम। बंधुहिम दायनम् मजदयास्निम्।' अर्थात् हे मजदा यासनिन धर्म के चिह्न! तारों से जड़े यज्ञोपवीत! तुझे पूर्वकाल में मजदाने धारण किया था।'

उपनयन काल	कारण	ऋतु	कारण	गौण काल	९६ चौआ का रहस्य
ब्राह्मण८ क्षत्रि.११ वैश्य १२	गायत्री त्रिष्टुभ् जगती	वसन्त ग्रीष्म शरद्	शान्ति सूर्यताप कृषि	१६ २२ २४ मुख्यकाल का [illegible]	तिथि वारश्च नक्षत्रं तत्वं वेदा गुणत्रयम्। कालत्रयश्च मासाश्च ब्रह्मसूत्रं षण्णव

गोभिल सूत्र [१।२।२] में लिखा है—'दक्षिणं बाहुमुद्धृत्य शिरोऽवधाय सव्येंऽसे प्रतिष्ठापयति दक्षिणकक्षमन्वलम्बं भवत्येवं यज्ञोपवीती भवति।'

६ गोभिलसूत्र [१।२।३] में लिखा है—

के नीचे लटकते हुए जनेव का नाम—(१) प्राचीनावीत।

(एकं कण्ठलम्बितयज्ञसूत्रस्य)

निवीतं कण्ठलम्बितम् ॥५०॥

कण्ठ में सीधा लटकते हुए जनेव का नाम—(१) निवीत ॥५०॥

(एकं देवतीर्थस्य)

अंगुल्यग्रे तीर्थं दैवम्

[1]अंगुलियों के आगे (से देवताओं का तर्पण करना चाहिए) के तीर्थ का नाम—(१) दैव।

(एकं कायतीर्थस्य)

स्वल्पांगुल्योर्मूले कायम् ।

अनामिका और कनिष्ठिका के मूल के तीर्थ का नाम—(१) काय।

(एकं पितृतीर्थस्य)

मध्येऽङ्गुष्ठांगुल्याः पित्र्यम्

अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य भाग का नाम—(१) पित्र्य।

(एकं ब्राह्मतीर्थस्य)

मूले त्वंगुष्ठस्य ब्राह्मम् ॥५१॥

अंगुष्ठ के मूल भाग का नाम—(१) ब्राह्म ॥५१॥

(त्रीणि ब्रह्मसायुज्यस्य)

स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ।

ब्रह्म में लय होने (मिल जाने) के ३ नाम—(१) ब्रह्मभूय (२) ब्रह्मत्व (३) ब्रह्मसायुज्य।

(त्रीणि देवसायुज्यस्य)

देवभूयादिकं तद्वत्

देवताओं में लय होने के ३ नाम—(१) देवभूय (२) देवत्व (३) देवसायुज्य।

(एकं सान्तपनादेः)

कृच्छ्रं सान्तपनादिकम् ॥५२॥

[2]सान्तपन (चान्द्रायण-प्राजापत्य-पराक) आदि का नाम—(१) कृच्छ्र ॥५२॥

(एकं प्रायोपवेशस्य)

संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायः

संन्यासपूर्वक भोजनत्यागने का नाम—(१) प्राय (पुँल्लिङ्ग)।

(द्वे नष्टाग्नेः)

अथ वीरहा ।

नष्टाग्निः

नष्टाग्नि वाले के २ नाम—(१) वीरहन् (२) नष्टाग्नि। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(एकं परधनाद्यभिलाषाद्दम्भेन कृतध्यानमौनादेः)

कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ॥५३॥

लोभ से (परधन की अभिलाषा से) दम्भपूर्वक ध्यान-मौनादि करने (मक्कारी, बगुलाभगती) का नाम—(१) कुहना (स्त्री०) ॥५३॥

(एकमुपनयनसंस्कारहीनस्य)

व्रात्यः संस्कारहीनः स्यात्

[3]गौणकाल के अनन्तर भी उपनयन संस्कार से रहित व्यक्ति का नाम—(१) व्रात्य।

(द्वे वेदाध्ययनरहितस्य)

अस्वाध्यायो निराकृतिः ।

वेदाभ्यास रहित के २ नाम—(१) अस्वाध्याय (२) निराकृति। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे जीविकार्थं जटादिधारिणः)

धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिः

जीविका के निमित्त जटादि धारण करनेवाले (बहुरूपिया, ठग) के २ नाम—(१) धर्मध्वजिन् (२) लिङ्गवृत्ति। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

सव्यं बाहुमुद्धृत्य शिरोऽवधाय दक्षिणेंऽसे प्रतिष्ठापयति सव्यं कक्षमन्ववलम्बं भवत्येवं प्राचीनावीती भवति।

१ याज्ञवल्क्यः—
कनिष्ठा-तर्जन्यङ्गुष्ठ-मूलान्यग्रं करस्य च।
प्रजापति-पितृ-ब्रह्म-देवतीर्थान्यनुक्रमात् ॥

२ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।
एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं **सान्तपनं** स्मृतम् ॥
—मनुः ११।२१२

३ सावित्रीपतिता व्रात्या व्रात्यस्तोमादृते: क्रतोः।
'वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य' [मनुः १०।८०]
'वेदमेवाभ्यसेन्नित्यम्' [मनुः ४।१४७]
अनधीत्य तु यो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥

(द्वे खण्डितब्रह्मचर्यस्य)

अवकीर्णी क्षतव्रतः ॥५४॥

नष्ट ब्रह्मचर्य वाले व्यक्ति के २ नाम—(१) अवकीर्णिन् (२) क्षतव्रत। ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ५४ ॥

(एकैकमभिनिर्मुक्ताभ्युदितयोः)

सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ।
अंशुमानभिनिर्मुक्ताऽभ्युदितौ च यथाक्रमम् ५५

जिसके सोने में सूर्य अस्त हो जाता है उस (सूर्यास्त तक सोनेवाले) का नाम-(१) अभिनिर्मुक्त।

जिसके सोने में सूर्य उगा है उस (सूर्योदय तक सोनेवाले) का नाम—(१) अभ्युदित ॥५५॥

(एकं ज्येष्ठे विवाहरहिते विवाहितकनिष्ठस्य)

परिवेत्ताऽनुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥

[1]जिसका बड़ा भाई न ब्याहा गया हो और पहिले छोटा ब्याहा जाय उस छोटे भाई का नाम-(१) परिवेत्तृ (पुं०)

(एकं कनिष्ठे विवाहितेऽविवाहितज्येष्ठस्य)

परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान्

उसके बिना ब्याहे गए बड़े भाई का नाम-(१) परिवित्ति (पुं०)

(षट् विवाहस्य)

विवाहोपयमौ समौ ॥५६॥
तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥

[2]विवाहके ६ नाम-(१) विवाह (२) उपयम (३) परिणय (४) उद्वाह (५) उपयाम (६) पाणिपीडन। ये (१–५) पुं० (६) नपुं० हैं ॥ ५६ ॥

(पञ्च मैथुनस्य)

व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।५७।

मैथुन के ५ नाम-(१) व्यवाय (२) ग्राम्यधर्म (३) मैथुन (४) निधुवन (५) रत। इनमें (१–२) पुँल्लिङ्ग, (३–५) नपुंसक हैं ॥५७॥

(एकं त्रिवर्गस्य)

त्रिवर्गो धर्मकामार्थैः

धर्म-अर्थ-काम के समुदाय का नाम-(१) त्रिवर्ग।

(एकं चतुर्वर्गस्य)

चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के समुदाय का नाम-(१) चतुर्वर्ग।

(एकं चतुर्भद्रस्य)

सबलैस्तैश्चतुर्भद्रम्

मनुष्यों की अभिलाषाओं (बल, धर्म, सुख, धन) का संयुक्त नाम-(१) चतुर्भद्र।

(एकं वरवयस्यादीनाम्)

जन्याः स्निग्धा वरस्य ये ॥५८॥

दूलह के मित्र, सहबाला, सम्बन्धी आदि का नाम-(१) जन्य ॥ ५८ ॥

(इति ब्रह्मवर्गः ७)

(पञ्च क्षत्रियस्य)

मूर्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट्

क्षत्रिय के ५ नाम-(१) मूर्धाभिषिक्त (२) राजन्य (३) बाहुज (४) क्षत्रिय (५) विराज्।

(सप्त राज्ञो नामानि)

राज्ञि राट्पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥१॥

[3]राजा के ७ नाम-(१) राजन् (२) राज्

---

१ ये प्रजेष्वकलत्रेषु कुर्वते दारसंग्रहम्।
ज्ञेयास्ते परिवेत्तारः परिवित्तिस्तु पूर्वजः ॥

२ विवाह का इतिहास अत्यन्त विस्तृत एवं मनोरञ्जक है, किन्तु ग्रन्थविस्तरभयात् उल्लेख नहीं किया जायगा।
अष्टाविमान्समासेन स्त्रीविवाहान्निबोधत।
ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः।
गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥
(मनु ३।२१)

३ महाराज युधिष्ठिर, शान्तिपर्व महाभारत (५९,१२५) में, भीष्म पितामह से पूछते हैं—
य एष राजन् राजेति शब्दश्चरति भारत !
कथमेष समुत्पन्नस्तन्मे ब्रूहि पितामह !

(३) पार्थिव (४) दमाभृत् (५) नृप (६) भूप (७) महीक्षित् ॥ १ ॥

(एकं सर्वसन्निहितनृपवशकारिणः)

राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।

जिसकी देश-देशान्तरों के राजा नमस्कार कर अधीनता स्वीकार करते हैं उस महाराजा का नाम--(१) अधीश्वर ।

(द्वे आसमुद्रक्षितीशस्य)

चक्रवर्ती सार्वभौमः

जिसके रथ का पहिया प्रत्येक स्थल पर जा सके, या समुद्र पर्यन्त पृथ्वी का शासन करनेवाले, या (कौटिल्य की परिभाषा के अनुसार) कन्याकुमारी से काश्मीर तक राज्य करनेवाले महाराजाधिराज के २ नाम—(१) चक्रवर्तिन् (२) सार्वभौम ।

(एकं माण्डलिकस्य)

नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥२॥

[1]माण्डलिक राजाओं (कमिश्नरों) का नाम—(१) मण्डलेश्वर ॥२॥

(एकमिष्टराजसूयादिविशेषणत्रयविशिष्टसार्वभौमस्य)

येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।
शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः सः सम्राट्

[2]राजसूय यज्ञ के करनेवाले, बारह मण्डलों का अधिपति और अपनी इच्छा से राजाओं पर शासन करनेवाले का नाम—(१) सम्राज् ।

(एकैकं नृपतिगणस्य क्षत्रियगणस्य च)

अथ राजकम् ॥३॥
राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ।

[3]राजाओं के गण का नाम—(१) राजक॥३॥
क्षत्रियों के गण का नाम—(१) राजन्यक ।

(त्रीणि धीसचिवस्य)

मन्त्री धीसचिवोऽमात्यः

भीष्म पितामह का इस पर बड़ा लम्बा-चौड़ा उत्तर है किन्तु उसका सारांश अन्त में बतलाया गया है—

रञ्जिताश्च प्रजास्सर्वा तेन राजेति शब्द्यते ।

शुक्रनीति (१, १८८) में लिखा है—

स्वभागभृत्या दास्यत्वे प्रजानां च नृपः कृतः ।
ब्रह्मणा स्वामिरूपस्तु पालनार्थं हि सर्वदा ॥

कौटिल्य महाराज कहते हैं—

विद्याविनीतो राजा हि प्रजानां विनये रतः ।
अनन्यां पृथिवीं भुंक्ते सर्वभूतहिते रतः ॥

१ एक-एक मण्डल में १००० से ४००० तक गाँव होते थे। आठवीं सदी का एक शिलालेख हुणक (वर्तमान पूना) को सहस्र विषयवर्ती बतलाता है। ऐसे ऐसे तीन या चार मण्डलों (कमिश्नरियों) का अधिपति होता था ।

२ राजसूय यज्ञ लगभग २७ महीनों में समाप्त होता था। ऐतरेय ब्राह्मण (८, १२) के अनुसार इस यज्ञके करनेवाले को साम्राज्य, भौज्य, स्वाराज्य, वैराज्य, पारमेष्ठ्य, महाराज्य और दीर्घजीवनकी प्राप्ति होती थी। शतपथ ब्राह्मण (५,१,१,१२) के अनुसार केवल स्वाराज्य मिलता था (राजा स्वाराज्यकामो राजसूयेन यजेत)। शांख्यायन श्रौत सूत्र (१५,१२, १) के अनुसार इसके द्वारा श्रैष्ठ्य, स्वाराज्य और आधिपत्य की प्राप्ति होती थी। आपस्तम्बश्रौतसूत्र (१८, ८, १) में भी इसी तरह बतलाया गया है। राजा को क्रमशः सेनानी, पुरोहित, क्षत्र, महिषी, सूत, ग्रामणी, क्षत्तृ, संग्रहितृ, भागदुघ, अक्षावाप, गोविकर्तन, पालागल और परिवृक्ति की पूजा करनी पड़ती थी। महाभारत काल में परिवर्तन हुआ। दिग्विजय करने के बाद शूर वीर राजा राजसूय यज्ञ करते थे। महाभारत (सभापर्व, १३, ४७) में लिखा है—

यस्मिन् सर्वं सम्भवति यश्च सर्वत्र पूज्यते ।
यश्च सर्वेश्वरो राजा राजसूयं स विन्दन्ति ॥

३ वीरमित्रोदय में लिखा है—'कुलानां समूहस्तु गणः सम्प्रकीर्तितः।' संस्कृत साहित्य में प्रजातन्त्रके लिए 'गण' शब्द का प्रयोग किया गया है। बाद में गण राज्य असेम्बली द्वारा शासित गवर्नमेण्ट या पार्लियामेण्ट के अर्थ में व्यवहृत होने लगा। गणराज्य का वर्णन महाभारत शान्तिप० अध्याय १०७ में मिलता है। महाराज युधिष्ठिर ने प्रश्न किया है और भीष्मपितामह ने विस्तृत उत्तर दिया है। पाणिनि छ जातियों का वर्णन करते हैं जो उनके समय तक गणराज्य के रूप में थे। उनके नाम हैं राजन्य (४।२।५३), अन्धकवृष्णि (४।२।३४) मद्र (४।२।१३१), वृजि (४।२।५३), भर्ग (४।२।३४)

वृष्णि राजन्यगण का एक सिक्का मिला है जो ई० पू० प्रथम शताब्दी का है।

[1]मन्त्री या वजीर के ३ नाम—(१) मन्त्रिन् (२) धीसचिव (३) अमात्य ।

(एकं कर्मसचिवस्य)

अन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥४॥

मुसाहिब या छोटे वज़ीर का नाम—(१) कर्मसचिव ॥४॥

(द्वे प्रधानस्य)

महामात्राः प्रधानानि

[2]प्रधान के २ नाम—(१) महामात्र (२) प्रधान । इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग, (२रा) नपुंसकपुं० में है ।

(द्वे धर्माध्यक्षस्य)

पुरोधास्तु पुरोहितः ।

[3]पुरोहित के २ नाम—(१) पुरोधस् (२) पुरोहित ।

(द्वे प्राडविवाकस्य)

द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विवाकाक्षदर्शकौ॥५॥

[4]व्यवहारों (ऋणादिकों) के विषय में वादी-प्रतिवादी (मुद्दई-मुद्दालेह) द्वारा बनाए मुकदमे के निर्णय करनेवाले न्यायाधीश विचाराधीश के २ नाम—(१) प्राड्विवाक (२) अक्षदर्शक ॥५॥

(पञ्च द्वारपालस्य)

प्रतीहारो द्वारपालद्वाःस्थद्वाःस्थितदर्शकाः ।

द्वारपाल के ५ नाम—(१) प्रतीहार (२) द्वारपाल (३) द्वाःस्थ (४) द्वाःस्थित (५) दर्शक ।

(द्वयं राजरक्षकगणस्य)

रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थः

रक्षक (राजाओं के अंगरक्षक) के २ नाम—(१) रक्षिवर्ग (२) अनीकस्थ ।

(द्वे अध्यक्षस्य)

अथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥६॥

अध्यक्ष या अधिकारी के २ नाम—(१) अध्यक्ष (२) अधिकृत ॥६॥

(एकमेकग्रामाधिकृतस्य)

स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे

[5]एक गाँव के अधिकारी का नाम—(१) स्थायुक ।

(एकं बहुग्रामाधिकृतस्य)

गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।

[6]बहुत से गाँवों के अधिकारी का नाम—(१) गोप ।

(द्वे स्वर्णाध्यक्षस्य)

भौरिकः कनकाध्यक्षः

[7]सुवर्णाध्यक्ष के २ नाम—(१) भौरिक (२) कनकाध्यक्ष ।

---

१ नीतिग्रन्थों के अध्ययन से पता चलता है कि मन्त्री का वही काय था जो आजकल परराष्ट्र सचिव का है । अमात्य की कार्यप्रणाली का विशद वर्णन शुक्रनीति (२, १०३–१०५) में मिलता है ।

२ प्रधान का कार्य आजकल के प्राइम मिनिस्टरों की तरह था ।

महती च मात्रा येषां महामात्राश्च ते स्मृताः ।

अशोक के समय उन्हें 'धर्ममहामात्य', सातवाहनों के समय 'श्रमणानां महामात्य', गुप्तों के समय 'विनयस्थिति-स्थापक' राष्ट्रकूटों के समय 'धर्माङ्कुश' आदि कहते थे ।

३ मन्त्रिमण्डल के १० मन्त्रियों में से एक का नाम पुरोधस् था । —शुक्रनीति ।

४ विवादानुगतं पृष्ट्वा पूर्ववाक्यं प्रयत्नतः ।
विचारयति येनासौ प्राड्विवाकस्ततः स्मृतः ॥

यह चीफ जस्टिस की हैसियत से राजधानी की सुप्रीम कोर्ट का सञ्चालन करते थे । बाद में वह एक स्वतन्त्र जाति 'प्राड्कर' बन गयी ।

५ कुलाल जातक में लिखा है कि ग्रामाधिप टैक्स वसूल करे ।

६ गोप नामक अधिकारी के मातहत पाँच से दस बड़े-बड़े गाँवों का शासनाधिकार था । ये अपने रजिस्टर में गाँवों के खेत, गाँवों की सीमा, जंगल और गाँवों के सड़क का सविस्तर वर्णन लिखते थे । अनेक स्थानों पर गोप के अधिकार क्षेत्र में बीस या चालिस गाँव भी होते थे । मौर्य राज्यकाल से लेकर गुप्त राज्यकाल तक यह पद बना रहा है । कौटिल्य अर्थ शास्त्र (२-३५, ३६) में विस्तार पूर्वक लिखा है ।

७ खान से निकले हुए सोने आदि धातुओं को जिस

(द्वे रूप्याध्यक्षस्य)

रूपाध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥७॥

[१]रूपयों के अधिकारी के २ नाम—(१) रूपाध्यक्ष (२) नैष्किक ॥७॥

(एकमन्तःपुराधिकृतजनस्य)

अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ।

रनिवास के अध्यक्ष का नाम—(१) अन्तर्वंशिक ।

(चत्वारि राज्ञां स्त्र्यगारे बही रक्षाधिकृतस्य)

सौविदल्लाःकञ्चुकिनःस्थापत्याःसौविदाश्च ते

रनिवास पर बेंत की छड़ी लेकर पहरा देनेवाले के ४ नाम—(१) सौविदल्ल (२) कञ्चुकिन् (३) स्थापत्य (४) सौविद ॥८॥

(द्वे अन्तः पुरचारिणो क्लीबमात्रस्य)

षण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ

[२]रनिवास में रहनेवाले हिजड़े या खोजा के २ नाम—(१) षण्ढ (२) वर्षवर ।

(त्रीणि सेवकस्य)

सेवकार्थ्यनुजीविनः ।

नौकर के ३ नाम—(१) सेवक (२) अर्थिन् (३) अनुजीविन् ।

(एकं स्वदेशादन्यतरस्य राज्ञः)

विषयानन्तरो राजा शत्रुः

पड़ोसी राजा का नाम—(१) शत्रु ।

(एकं मित्रस्य)

मित्रमतः परम् । ६॥

[३]शत्रु से भिन्न राजा का नाम—(१) मित्र ॥६॥

(एकं शत्रुमित्राभ्यां परस्य राज्ञः)

उदासीनः परतरः

तटस्थ रहनेवाले राजा का नाम—(१) उदासीन ।

(एकं जिगीषोः पृष्ठभागस्थितस्य राज्ञः)

पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।

शत्रु को जीतने के लिए राजा के आगे बढ़ जाने पर पीछे से उसके राज्य पर हमला करनेवाले राजा का नाम—(१) पार्ष्णिग्राह ।

(एकोनविंशतिः शत्रोः)

रिपौ वैरि-सपत्नारि-द्विषद्-द्वेषण-दुर्हृदः॥१०
द्विड्-विपक्षाऽहिताऽमित्र-दस्यु-शात्रव-शत्रवः
अभिघाति-पराऽराति-प्रत्यर्थि-परिपन्थिनः ॥

शत्रु, बैरी, दुश्मन के १९ नाम—(१) रिपु (२) वैरिन् (३) सपत्न (४) अरि (५) द्विषत् (६) द्वेषण (७) दुर्हृद (८) द्विष् (९) विपक्ष (१०) अहित (११) अमित्र (१२) दस्यु (१३) शात्रव (१४) शत्रु (१५) अभिघातिन् (१६) पर (१७) अराति (१८) प्रत्यर्थिन् (१९) परिपन्थिन् । ये (१–१९) पुँल्लिङ्ग हैं ॥१०–११॥

(त्रीणि तुल्यवयस्कप्रियस्य)

वयस्यः स्निग्धः सवयाः

तुल्य अवस्थावाले प्रिय, लंगोटिया यार, हमजोली दोस्त के ३ नाम—(१) वयस्य (२) स्निग्ध (३) सवयस् । ये (१–३) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि मित्रस्य)

अथ मित्रं सखा सुहृत् ॥

[४]मित्र के ३ नाम—(१) मित्र (२) सखिन् (३) सुहृद् ।

(एकं मैत्र्याः)

सख्यं साप्तपदीनं स्यात्

स्थान पर संशोधन कर तैयार किया जाय उसे अक्षशाला कहते हैं । इस कार्य का निरीक्षण करनेवाला जो अधिकारी पुरुष होता है उसका नाम सुवर्णाध्यक्ष है । इसके विषय में कौटिल्य अर्थ शास्त्र (२।१३) में सविस्तर लिखा गया है।

१ 'निष्क' एक प्रकार का प्राचीन सिक्का था, जिसके अधिकारी को नैष्किक कहते थे। ऋग्वेद में पहले पहल निष्कका उल्लेख पाया जाता है यथा–शतं राज्ञो नाधमानस्य निष्कान्छतमश्वान् प्रयतान्त्सद्य आदम् (१,१२६,२)। अर्हन्बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम् ।

२ 'ये त्वल्पसत्त्वाः प्रथमाः क्लीबाश्च स्त्रीस्वभाविनः । जात्या न दुष्टाः कार्येषु ते वै वर्षवराः स्मृताः ॥'

३ 'यावदुपकरोति तावन्मित्रं भवत्युपकारलक्षणमिति' कौटिल्यः (७ । ६)

४ अत्यागसहनो बन्धुः सदैवानुगतः सुहृत् । एकक्रियं भवेन्मित्रं समप्राणः सखा मतः ॥

मित्रता, मिताई के २ नाम—(१) सख्य (२) साप्तपदीन ।

(द्वे आनुकूल्यस्य)

अनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥१२॥

माफिक, मुलाहजा के २ नाम—(१) अनुरोध (२) अनुवर्तन ॥१२॥

(सप्त चारपुरुषस्य)

यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।
चारश्च गूढ़पुरुषश्च

जासूस, भेदिया, खुफिया के ७ नाम—(१) यथार्हवर्ण (२) प्रणिधि (३) अपसर्प (४) चर (५) स्पश (६) चार (७) गूढपुरुष । ये (१–७) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(विश्वासाधारस्य)

आप्त-प्रत्ययितौ समौ ॥१३॥

विश्वासी, विश्वस्त व्यक्ति के २ नाम—(१) आप्त (२) प्रत्ययित । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग-स्त्रीलिङ्ग-नपुंसकलिङ्ग में होते हैं ॥१३॥

(अष्टौ ज्यौतिषिकस्य)

सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञ-गणकावपि ।
स्युर्मौहूर्तिक-मौहूर्त-ज्ञानि-कार्तान्तिका अपि ॥

ज्योतिषी, जोशी के ८ नाम—(१) सांवत्सर (२) ज्यौतिषिक (३) दैवज्ञ (४) गणक (५) मौहूर्तिक (६) मौहूर्त (७) ज्ञानिन् (८) कार्तान्तिक ॥१४॥

(द्वे ज्ञातसिद्धान्तस्य)

तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः

शास्त्रतत्वज्ञ के २ नाम–(१) तान्त्रिक (२) ज्ञातसिद्धान्त ।

(द्वे गृहपतेः)

सत्री गृहपतिः समौ ॥

घर के मालिक के २ नाम–(१) सत्रिन् (२) गृहपति ।

(चत्वारि लेखकस्य)

लिपिकरोऽक्षरचणोऽक्षरचञ्चुश्च लेखके॥१५॥

[1]लेखक के ४ नाम–(१) लिपिकर (२) अक्षरचण (३) अक्षरचञ्चु (४) लेखक ॥१५॥

(चत्वारि लिखिताक्षरस्य)

लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ।

[2]लिखा हुआ, लेख के ४ नाम–(१) लिखित (२) अक्षरविन्यास (३) लिपि (४) लिबि । इनमें (१–२) नपुंसक, (३–४) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे संदेशहरस्य)

स्यात्संदेशहरो दूतः

[3]दूत, हलकारा, सन्देशिया के २ नाम–(१) सन्देशहर (२) दूत ।

(एकं दूतकर्मणः)

दूत्यं तद्भावकर्मणि ॥१६॥

दूतकर्म का नाम–(१) दूत्य (नपुंसक) ॥१६॥

(पञ्च पथिकस्य)

अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि

बटोही, यात्री, मुसाफिर, रास्ता चलनेवाला, राहगीर के ५ नाम–(१) अध्वनीन (२) अध्वग (३) अध्वन्य (४) पान्थ (५) पथिक ।

(सप्त राज्याङ्गानाम्)

स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥१७॥
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥

---

१ कौटिल्य अर्थ शास्त्र में लिखा है—

'तस्मादमात्यसम्पदोपेतः सर्वसमयविदाशुग्रन्थश्चार्वक्षरो लेखवाचनसमर्थो लेखकः स्यात् ।'

दीघ निकाय (पाली टेक्स्ट सोसायटी का संस्करण, २रा खण्ड, २२०–२२५ पृष्ठ) से पता चलता है कि लेखक लोग संघशासन के पार्लियामेण्ट का एक-एक अक्षर लिखते थे और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी ।

२ वाराही तन्त्र में लिखा हैं—

मुद्रालिपिः शिल्पलिपिर्लिपिर्लेखनसम्भवा ।
गुण्डिकाघुणसम्भूता स्याल्लिपिः पञ्चधा स्मृता ॥

पं० श्री गौरीशशङ्कर हीराचन्द्र ओझाजी की 'प्राचीन लिपि माला' में ब्राह्मीलिपि, खरोष्ठी लिपि आदिकों का विस्तृत वर्णन है ।

३ कौटिल्य अर्थ शास्त्र (१,१६) में 'दूतस्तु त्रिविधः' बतलाया गया है ।

[1] राज्य के अङ्ग और प्रकृति-(१) राज्याङ्ग (२) प्रकृति का वर्णन—(१) स्वामिन् (राजा), (२) अमात्य (मन्त्री) (३) सुहृद् (मित्रराष्ट्र), (४) कोष (खजाना), (५) राष्ट्र (देश), (६) दुर्ग (किला), (७) बल (फौज) ॥१७॥

नागरिकशासनका भी नाम—(१) प्रकृति ।

(एकं षड् गुणानाम्)

संधिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥१८
षड्गुणाः

[2]सोना आदि देकर शत्रु के साथ मेल करने का नाम—(१) सन्धि (पुँल्लिङ्ग)

शत्रु से झगड़ा मोल लेने का नाम—(१) विग्रह (पुं.)।

शत्रु राज्य पर चढ़ाई करने का नाम—(१) यान (नपुं.)

निज शक्ति की वृद्धि के निमित्त दुर्ग आदि में रहने का नाम—(१) आसन (नपुंसक)।

बली के साथ सन्धि और निर्बल के साथ विग्रह करने का नाम—(१)—द्वैध (नपुंसक)।

दूसरे बलवान राजा के सामने अपने पुत्र, स्त्री, आत्मा तथा सर्वस्व समर्पण करने का नाम—(१) आश्रय (पुं.)।

इन ६ (सन्धि-विग्रह-यान-आसन-द्वैधीभाव-संश्रय) का संयुक्त नाम—(१) गुण (पुं.) ॥१८॥

(एकं तिसृणां शक्तीनाम्)

शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ॥

[3] प्रभाव (कोश-दण्ड से उत्पन्न हुआ तेज), उत्साह (पराक्रम-आदि करने से उन्नत) और मन्त्रज (सन्धि-विग्रह आदि को मन्त्र से यथावत् स्थापन करने) का सामूहिक नाम—(१) शक्ति (स्त्रीलिङ्ग)

(त्रीणि नीतिवेदिनां त्रिवर्गस्य)

क्षयःस्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम्

[4] नीतिज्ञों के त्रिवर्ग का नाम—(१) क्षय (२) स्थान (३) वृद्धि । इनमें (१) पुं., (२) नपुं., (३) स्त्री. है ॥१९॥

संयुक्त नाम—(१) त्रिवर्ग (पुं.) ॥ १९ ॥

(द्वे कोषदण्डजतेजसः)

स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोशदण्डजम् ॥

धनसमूह, दण्ड अर्थात् दम या सेना—इन दोनों से उत्पन्न हुए तेज के २ नाम—(१) प्रताप (२) प्रभाव ।

(एकैकं नृपोपायचतुष्टयानाम्)

सामदाने भेददण्डावित्युपायचतुष्टयम् ॥२०॥

राजा के चारो उपायों—मीठी वाणी से अर्पण करने, धन देने, भेद पैदा करने और दण्ड देने-के एक-एक नाम—(१) सामन् (२) दान (३) भेद (४) दण्ड । इनका संयुक्त नाम—(१) उपाय (पुं.) ॥ २० ॥

(त्रीणि दण्डस्य)

साहसं तु दमो दण्डः

---

१ 'स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रञ्च दुर्गं कोशो बलं सुहृत् ।
परस्परोपकारीदं सप्ताङ्ग राज्यमुच्यते । इति कामन्दकीये (४।१) । कौटिल्य अर्थ शास्त्र (६ १) में—

स्वाम्यमात्य-जनपद-दुर्ग-कोश-दण्ड-मित्राणि प्रकृतयः ।

२ कौटिल्य अर्थ शास्त्र (७।१) में—

'सन्धि-विग्रहासन-यान-संश्रय-द्वैधीभावाः षाड्गुण्य-मित्याचार्याः । तत्र पणबन्धः सन्धिः । अपकारो विग्रहः । उपेक्षणमासनम् । अभ्युच्चयो यानम् । परार्पणं संश्रयः । सन्धिविग्रहोपादानं द्वैधीभाव इति षड् गुणाः ॥'

३ कौटिल्य अर्थ शास्त्र (६।२) में लिखा है—

शक्ति-स्त्रिविधा—ज्ञानबलं मन्त्रशक्तिः; कोशदण्डबलं प्रभुशक्तिः; विक्रमबलमुत्साहशक्तिः ।

शिशुपालवध द्वितीयसर्ग में इसके सम्बन्ध में कहा गया है ।

४ 'पुण्यपुरुषापचयः क्षयः' (कौ० अ० शा० ६।४) । अष्टवर्ग का लक्षण—

कृषिर्वणिक्पथो दुर्गं सेतुः कुञ्जरबन्धनम् ।
खनिर्बलं करादानं शून्यानां च निवेशनम् ॥

दण्ड के ३ नाम—(१) साहस (२) दम (३) दण्ड ।

(द्वे साम्नः)

साम सान्त्वम् अथो समौ ।

[1]मनोहर वाणी से बर्ताव करने के २ नाम—(१) सामन् (२) सान्त्व । ये दोनों (१–२) नपुंसक हैं ।

(द्वे भेदस्य)

भेदोपजापौ

फूट डालने के २ नाम—(१) भेद (२) उपजाप ।

(एकं राज्ञा धर्मार्थकामभयैरमात्यादेः परीक्षणस्य)

उपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥२१॥

[2]धर्म, अर्थ, काम और भय से मन्त्री आदि के आशय जानने का नाम—(१) उपधा (स्त्री.) ।

पञ्च त्रिषु

ये पाँच (अषडक्षीण–विविक्त–विजन–छन्न–निःशलाक) तीनों लिङ्ग में होते हैं ।

(एकं द्वाभ्यामेव कृतस्य मन्त्रस्य)

अषडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ॥

[3] दो आदमियों द्वारा की गयी सलाह का नाम—(१) अषडक्षीण (पुं.–स्त्री.–नपुं.)

(सप्त विजनस्य)

विविक्त-विजन-च्छन्न-निःशलाकास्तथा रहः॥२२ रहश्चोपांशु चालिङ्गे

एकान्त स्थल के ७ नाम—(१) विविक्त (२) विजन (३) छन्न (४) निःशलाक (५) रहस् (६) रह (७) उपांशु । इनमें (१–४) पुं.स्त्री. नपुंसक, (५) नपुंसक, (६–७) अव्यय हैं ॥२२॥

(एकं रहोभवस्य)

रहस्यं तद्भवे त्रिषु ॥

एकान्त की बात, गुप्त ('प्राइवेट') बात का नाम—(१) रहस्य (पुं–स्त्री–नपुंसक) ।

(द्वे विश्वासस्य)

समौ विस्रम्भ–विश्वासौ

विश्वास के २ नाम—(१) विस्रम्भ (२) विश्वास । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे रूपाद्भ्रंशस्य)

भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥२३॥

मूल स्वरूप से पतन के २ नाम—(१) भ्रेष (२) भ्रंश (पुं.) ॥ २३ ॥

(पञ्च न्यायस्य)

अभ्रेष-न्याय-कल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।

न्याय के ५ नाम (१) अभ्रेष (२) न्याय (३) कल्प (४) देशरूप (५) समञ्जस । इनमें (१–३) पुँल्लिग (४–५) नपुंसक हैं ।

(षट् न्यायादनपेतस्य द्रव्यादेः)

युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत्॥२४ न्याय्यं च त्रिषु षट्

न्याय से युक्त वस्तु के ६ नाम—(१) युक्त (२) औपयिक (३) लभ्य (४) भजमान (५) अभिनीत (६) न्याय्य । ये (१–६) तीनों लिंग में होते हैं ॥२४॥

(द्वे युक्तायुक्तपरीक्षायाः)

संप्रधारणा तु समर्थनम् ।

उचित अनुचित की परीक्षा करने के २ नाम—(१) सम्प्रधारणा (२) समर्थनम् ।

(षडाज्ञायाः)

अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः॥२५॥

---

[1] कामन्दकीय नीतिसार (१७,४-५) में लिखा है–
परस्परोपकाराणां दर्शनं गुणकीर्तनम् ।
सम्बन्धस्य समाख्यानमायत्याः सम्प्रकाशनम् ॥
वाचा पेशलया साधु तवाहमिति चार्पणम् ।
इति सामविधानज्ञैः **साम** पञ्चविधं स्मृतम् ॥

[2] कौटिल्य अर्थशास्त्र (१।१०) में—
मन्त्रिपुरोहितसखः सामान्येष्वधिकरणेषु स्थापयित्वाऽमात्यानुपधाभिः शोधयेत् ।

[3] क्योंकि कहा गया है कि—षट्कर्णो भिद्यते मंत्रः ।

शिष्टिश्चाज्ञा च

आज्ञा के ६ नाम—(१) अपवाद (२) निर्देश (३) निदेश (४) शासन (५) शिष्टि (६) आज्ञा। इनमें (१–३) पुं., (४) नपुं०, (५–६) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥ २५ ॥

(चत्वारि न्यायमार्गस्थितेः)

संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः।

मर्य्यादा के ४ नाम—(१) संस्था (२) मर्यादा (३) धारणा (४) स्थिति।

(त्रीण्यपराधस्य)

आगोऽपराधो मन्तुश्च

अपराध के ३ नाम—(१) आगस् (२) अपराध (३) मन्तु। इनमें (१ ला) नपुंसक (२–३) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे बन्धनस्य)

समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥

बन्धन (कैद) के २ नाम—(१) उद्दान (२) बन्धन। ये समान लिंगवाले (नपुंसक) हैं ॥२६॥

(एकं द्विगुणदण्डस्य)

द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डः

दूने दण्डका नाम—(१) द्विपाद्य।

(त्रीणि कर्षकादिभ्यो राजग्राह्यभागस्य)

भागधेयः करो बलिः।

कर (मालगुजारी, टैक्स) के ३ नाम—(१) भागधेय (२) कर (३) बलि। ये (१–३) पुँल्लिङ्ग हैं।

(एकं घट्टादिदेयराजग्राह्यभागस्य)

घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री

चुङ्गी, घाट वगैरह में दिए जानेवाले महसूल का नाम—(१) शुल्क। यह पुं०-नपुंसक है।

(षट् नृपगुर्वादिदर्शनादौ समर्प्यमाणस्य वस्तुनः)

प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥

उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा।

मित्र आदि को भेंट वा नजर देने के ६ नाम—(१) प्राभृत (२) प्रदेशन (३) उपायन (४) उपग्राह्य (५) उपहार (६) उपदा ॥२७॥

(द्वे कन्यादानकाले व्रतभिक्षादौ दीयमानद्रव्यस्य)

यौतुकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥२८॥

दहेज वा भाई-बन्धुओंके देने की वस्तु के २ नाम—(१) सुदाय (२) हरण ॥ २८ ॥

(द्वे वर्तमानकालस्य)

तत्कालस्तु तदात्वं स्यात्

वर्तमान समय के २ नाम—(१) तत्काल (२) तदात्व।

(एकमुत्तरकालस्य)

उत्तरः काल आयतिः।

आनेवाले समय का नाम–(१) आयति (स्त्री०)

(एकं व्यापारानन्तरं जायमानफलस्य)

सांदृष्टिकं फलं सद्यः

तुरन्त के फल का नाम—(१) सांदृष्टिक।

(एकं भाविकर्मफलस्य)

उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥

आगे के (होनेवाले) फल का नाम—(१) उदर्क ॥२९॥

(एकमग्न्यतिवृष्ट्यादिकृतभयस्य)

अदृष्टं वह्नितोयादि

आग लगने और अतिवृष्टि होने आदि उत्पातका नाम—(१) अदृष्ट।

(एकं स्वपरराष्ट्रजन्यभयस्य)

दृष्टं स्वपरचक्रजम्।

अपने या पराये राज्य से चौरादि के भय का नाम—(१) दृष्ट।

(एकं राज्ञां स्वसहायजन्यभयस्य)

महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥३०॥

राजाओं को अपने सहायक से होनेवाले भय का नाम—(१) अहिभय ॥३०॥

(द्वे व्यवस्थास्थापनस्य)

प्रक्रिया त्वधिकारः स्यात्

कानून चलाने के २ नाम—(१) प्रक्रिया (२) अधिकार।

(द्वे चामरस्य)

चामरं तु प्रकीर्णकम् ।

चँवर के २ नाम—(१) चामर (२) प्रकीर्णक

(द्वे मण्यादिकृतराज्यासनस्य)

नृपासनं यत्तद्भद्रासनम्

मणि आदि से बनी हुई राजगद्दी के २ नाम—(१) नृपासन (२) भद्रासन ।

(एकं सुवर्णनिर्मितासनस्य)

सिंहासनं तु तत् ॥३१॥

हैमम्

वही राजा के बैठने का स्थान कदाचित् सोने से बना हो तो उसका नाम-(१) सिंहासन ॥३१॥

(द्वे छत्रस्य)

छत्रं त्वातपत्रम्

छतरी के २ नाम—(१) छत्र (२) आतपत्र ।

(एकं नृपच्छत्रस्य)

राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।

राजा के छत्र का नाम—(१) नृपलक्ष्मन् ।

(द्वे पूर्णकलशस्य)

भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः

भरे घड़े के २ नाम—(१) भद्रकुम्भ (२) पूर्णकुम्भ ।

(द्वे स्वर्णरचितपात्रविशेषस्य)

भृङ्गारः कनकालुका ॥३२॥

झारी या गड़ुवे के २ नाम—(१) भृंगार (२) कनकालुका ॥३२॥

(द्वे सैन्यवासस्थानस्य)

निवेशः शिबिरं षण्डे

छावनी, पड़ाव, डेरा के २ नाम—(१) निवेश (२) शिविर ।

(द्वे सैन्यरक्षणाय नियुक्तप्रहरिकादिविन्यासस्य)

सज्जनं तूपरक्षणम् ।

पहरे के २ नाम—(१) सज्जन (२) उपरक्षण ।

(एकं हस्त्यश्वरथपादातस्य)

हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥३३

हाथी, घोड़ा, रथ, सिपाही इन सबका संयुक्त नाम—(१) सेनाङ्ग ॥ ३३ ॥

(पञ्चदश हस्तिनः)

दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः ।
मतंगजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ।३४।
इभः स्तम्बेरमः पद्मी

हाथी के १५ नाम—(१) दन्तिन् (२) दन्तावल (३) हस्तिन् (४) द्विरद (५) अनेकप (६) द्विप (७) मतंगज (८) गज (९) नाग (१०) कुञ्जर (११) वारण (१२) करिन् (१३) इभ (१४) स्तम्बेरम (१५) पद्मिन् ॥३४॥

(द्वे यूथमुख्यगजस्य)

यूथनाथस्तु यूथपः ।

हाथियों के सरदार हाथी के २ नाम—(१) यूथनाथ (२) यूथप ।

(द्वे मदोन्मत्तस्य)

मदोत्कटो मदकलः—

मदान्ध हाथी के २ नाम—(१) मदोत्कट (२) मदकल ।

(द्वे करिपोतस्य)

कलभः करिशावकः ॥३५॥

हाथी के बच्चों के २ नाम—(१) कलभ (२) करिशावक ॥ ३५ ॥

(त्रीणि क्षरन्मदस्य)

प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः

जिसके मद बहता हो उसके ३ नाम—(१) प्रभिन्न (२) गर्जित (३) मत्त ।

(द्वे गतमदस्य)

समावुद्वान्तनिर्मदौ ।

बिना मदवाले हाथी के २ नाम—(१) उद्वान्त (२) निर्मद ।

(द्वे गजसमूहस्य)

हास्तिकं गजता वृन्दे

हाथियों के समूह के २ नाम—(१) हास्तिक (२) गजता ।

(त्रीणि हस्तिन्याः)

करिणी धेनुका वशा ॥३६॥

हथिनी के ३ नाम—(१) करिणी (२) धेनुका (३) वशा ॥३६॥

(द्वे गजकपोलयोः)

गण्डः कटः

हाथी के गाल के २ नाम—(१) गण्ड (२) कट।

(द्वे मदोदकस्य)

मदो दानम्

हाथी के मद के २ नाम—(१) मद (२) दान।

(द्वे करिकराग्निर्गतजलस्य)

वमथुः करशीकरः।

हाथी की सूँड़ से पानी निकलने के २ नाम—(१) वमथु (२) करशीकर।

(एकं गजशिरसो मांसपिण्डस्य)

कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः

हाथी के मस्तक के मांस का नाम—(१) कुम्भ।

(एकं गजकुम्भमध्यभागस्य)

तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥३७॥

दोनो कुम्भों के मध्य में जो खाली स्थान रहता है उसका नाम—(१) विदु (पुं०) ॥३७॥

(एकं गजललाटस्य)

अवग्रहो ललाटं स्यात्

हाथी के लिलार का नाम—(१) अवग्रह।

(द्वे नेत्रगोलकस्य)

ईषिका त्वक्षिकूटकम्।

उसके नेत्रों की गोलाई के २ नाम—(१) ईषिका (२) अक्षिकूटक।

(एकं गजस्यापाङ्गदेशस्य)

अपांगदेशो निर्याणम्

उसके निहारने का नाम—(१) निर्याण।

(एकं करिकर्णमूलस्य)

कर्णमूलं तु चूलिका ॥३८॥

हाथी के जहाँ से कान जमते हैं, उस जगह (कान की जड़) का नाम—(१) चूलिका ॥३८॥

(एकं गजकुम्भाधोभागस्य)

अधः कुम्भस्य वाहित्थम्

हाथी के लिलार के नीचे का १ नाम—(१) वाहित्थ।

(एकं वाहित्थाधोभागस्य दन्तमध्यस्य)

प्रतिमानमधोऽस्य यत्।

वाहित्थ के नीचेका नाम—(१) प्रतिमान।

(द्वे गजस्कन्धस्य)

आसनं स्कन्धदेशः स्यात्-

हाथी के कन्धेका १ नाम—(१) आसन।

(द्वे गजमुखादिस्थबिन्दुसमूहस्य)

पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥३९॥

हाथी के मुख आदि पर स्थित बिन्दुओं का नाम-(१) पद्मक ॥३९॥

(द्वे गजपार्श्वभागस्य)

पार्श्वभागः पक्षभागः

हाथी की बगल के २ नाम—(१) पार्श्वभाग (२) पक्षभाग।

(एकमग्रभागस्य)

दन्तभागस्तु योऽग्रतः।

हाथी के आगे के भाग का नाम—(१) दन्तभाग।

(एकैकं गजजंघापूर्वापरभागयोः)

द्वौ पूर्वपश्चाज्जंघादिदेशौ गात्रावरे क्रमात्॥४०॥

हाथी के आगे के जंघादि भागका १ नाम—(१) गात्र।

हाथी के पीछे के भाग का नाम—(१) अवर ॥ ४० ॥

(द्वे तोदनदण्डस्य)

तोत्रं वैणुकम्

चाबुक की डण्डी के २ नाम—(१) तोत्र (२) वैणुक।

(एकं बन्धनस्तम्भस्य)

आलानं बन्धस्तम्भे

हाथी के खूंटे का नाम—(१) आलान।

(त्रीणि शृङ्खलस्य)

अथ शृंखले

अन्दुका निगडोऽस्त्री स्यात्

हाथी की जंजीर के ३ नाम—(१) शृङ्खला (२) अन्दुक (३) निगड। इनमें (१) पुं० स्त्री० नपुं०; (२) पुं०, (३) पुं०-नपुं० है।

(द्वे अङ्कुशस्य)

अंकुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१॥

अंकुश के २ नाम—(१) अंकुश (२) सृणि। इनमें (१) पुं०-नपुं०, (२) स्त्रीलिङ्ग है।

(त्रीणि मध्यबन्धनोपयोगिन्याश्चर्मरज्ज्वाः)

दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात्

हाथी की कमर में बाँधने की रस्सी के ३ नाम—(१) दूष्या (२) कच्या (३) वरत्रा ॥४१॥

(द्वे नायकारोहणार्थं गजसज्जीकरणस्य)

कल्पना सज्जना समे।

मालिक के चढ़ने के वास्ते हाथी को तैयार करने के २ नाम—(१) कल्पना (२) सज्जना।

(पञ्च गजपृष्ठोपर्यास्तरणस्य)

प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः॥

गद्दी वा झूल के ५ नाम—(१) प्रवेणी (२) आस्तरण (३) वर्ण (४) परिस्तोम (५) कुथ। इनमें (१) स्त्री०, (२) नपुं०, (३-४) पुं०, (५) पुं०-स्त्री० है ॥४२॥

(एकं बलरहितगजाश्वस्य)

वीतं त्वसारं हस्त्यश्वम्

युद्धादि करने में असमर्थ हाथी घोड़े का नाम—(१) वीत।

(एकं गजबन्धनशालायाः)

वारी तु गजबन्धनी।

हथसार (जिस भूमि में हाथी बाँधे जायँ) उसका नाम—(१) वारी।

(त्रयोदश घोटकस्य)

घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३ ॥

वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः।

घोड़े के १३ नाम—(१) घोटक (२) वीति (३) तुरग (४) तुरङ्ग (५) अश्व (६) तुरङ्गम (७) वाजिन् (८) वाह (९) अर्वन् (१०) गन्धर्व (११) हय (१२) सैन्धव (१३) सप्ति ॥४३॥

(एकं कुलीनाश्वानाम्)

आजानेयाः कुलीनाः स्युः

[1]कुलीन घोड़े का नाम—(१) आजानेय।

(द्वे सुशिक्षिताश्वानाम्)

विनीताः साधुवाहिनः ॥४४॥

सीखे हुए घोड़े के २ नाम—(१) विनीत (२) साधुवाहिन् ॥ ४४ ॥

(हयविशेषाणामेकैकम्)

वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लिका हयाः

[2]अरबी, खुरासानी, इराकी, यमनी, तुर्की, तातारी, खोतन, अदन के घोड़े (वनायु देश में पैदा हुए घोड़े) का नाम—(१) वनायुज। पारसदेशोत्पन्न घोड़े का नाम—(१) पारसीक। काबुली घोड़े का नाम—(१) वाह्लिक।

(एकमश्वमेधीयाश्वस्य)

ययुरश्वोऽश्वमेधीयः

अश्वमेध के श्यामकर्णवाले घोड़े का नाम—(१) ययु।

(एकमधिकवेगशालिनोऽश्वस्य)

जवनस्तु जवाधिकः। ४५॥

जल्दी चलनेवाले घोड़े का नाम—(१) जवन ॥४५॥

(द्वे भारवाहिनोऽश्वस्य)

पृष्ठ्यः स्थौरी

लदुआ घोड़े के २ नाम—(१) पृष्ठ्य (२) स्थौरिन्। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं।

---

१ शक्तिभिर्भिन्नहृदयाः स्खलन्तश्च पदे पदे।
आजानन्ति यतः संज्ञामाजानेयास्ततः स्मृताः॥

२ ताजिकाः खुरसानाश्च तुषाराश्चोत्तमा हयाः।
—नकुलः।

(एकं शुक्लाश्वस्य)

सितः कर्कः

उजले घोड़े का नाम—(१) कर्क ।

(एकं रथवाहकाश्वस्य)

रथ्यो वोढा रथस्य यः ।

रथ के घोड़े का नाम—(१) रथ्य ।

(एकमश्वबालस्य)

बालः किशोरः

घोड़े के बच्चे का नाम—(१) किशोर ।

(त्रीण्यश्वायाः)

वाम्यश्वा वडवा

घोड़ी के ३ नाम—(१) वामी (२) अश्वा (३) वडवा ।

(एकमश्वसमूहस्य)

वाडवं गणे ॥४६॥

घोड़ी के समूह का नाम—(१) वाडव । (नपुंसक) ॥४६॥

(एकं अश्वेनैकदिनगम्यदेशस्य)

त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।

घोड़े की एक दिन की मञ्जिल का नाम—(१) आश्वीन ।

(एकमश्वमध्यभागस्य)

कश्यं तु मध्यमाश्वानां

घोड़े की बिचली देह का नाम—(१) कश्य ।

(द्वे अश्वशब्दस्य)

हेषा ह्रेषा च निःस्वनः ॥४७॥

घोड़े के हिनहिनाने के २ नाम—(१) हेषा (२) ह्रेषा । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥४७॥

(द्वे गलजत्रुसन्धेः)

निगालस्तु गलोद्देशे

[1]घोड़े के गले का नाम—(१) निगाल ।

(द्वे अश्ववृन्दस्य)

वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।

घोड़ों के झुण्ड के २ नाम—(१) अश्वीय (२) आश्व । ये (१-२) नपुंसक हैं ।

(ऐकैकमश्वगतिविशेषाणाम्)

आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥४८॥

गतयोऽमूः पञ्च धारा

घोड़े की सरपट चाल (जिसमें वेग से आर्त अश्व नहीं सुनता और न देखता है उस गति) का नाम—(१) आस्कन्दित ।

घोड़े की दुलकी चाल (जिसमें चतुराई से घोड़ा सीधा चलता है उस गति) का नाम—(१) धौरितक ।

घोड़े की पोइयां चाल (जिसमें मध्यम वेग से घोड़ा चक्राकार घूमता है उस गति) का १ नाम—(१) रेचित ।

घोड़े की उछलती हुई चाल (जिसमें घोड़ा अगले शरीर को समेट कर कुत्सित स्थलादि में मुँह टेढ़ा कर चलता है उस गति) का १ नाम—(१) वल्गित ।

घोड़े की चौकड़ी मारकर चलने का नाम—(१) प्लुत ।

इन पांचों चालों का नाम—(१) धारा (स्त्री०) ॥४८॥

(द्वे नासिकायाः)

घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।

घोड़े की नाक के २ नाम—(१) घोणा (२) प्रोथ । इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग, (२रा) पुं०-नपुंसक है।

(द्वे लोहादिनिर्मितस्य मुखमध्ये निहितस्य)

कविका तु खलीनोऽस्त्री

घोड़े की लगाम के २ नाम—(१) कविका (२) खलीन । (१ला) स्त्री०, (२रा) पुं०-नपुंसक है ।

(द्वे खुरस्य)

शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥४९॥

घोड़े की टाप के २ नाम—(१) शफ (२) खुर । इनमें (१ला) नपुंसक (२रा) पुंल्लिङ्ग है ॥४९॥

---

१ घण्टाबन्धसमीपस्थो निगालः कीर्तितो बुधैः ।
तस्मिन्नेव मणिर्नाम रोमजः शुभकृन्मतः ॥
इत्यश्वशास्त्रम् ।

(त्रीणि पुच्छस्य)

पुच्छोऽस्त्री लूमलांगूले

पूँछ के ३ नाम—(१) पुच्छ (२) लूम (३) लाङ्गूल । इनमें (१ला) पुं०-नपुंसक (२–३) नपुंसक है ।

(द्वे केशसमूहयुक्तस्य पुच्छाग्रभागस्य)

बालहस्तश्च बालधिः ।

बालसहित पूँछ के २ नाम—(१) बालहस्त (२) बालधि । ये (१–२) पुंल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे श्रमशान्त्यर्थं मुहुर्भुवि पार्श्वाभ्यां परावृत्तस्य लुठिताश्वस्य)

त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥५०॥

जमीन पर लोटने के २ नाम—(१) उपावृत्त (२) लुठित । ये (१–२) पुं०-स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥५०॥

(त्रीणि रथस्य)

याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।

युद्ध के रथ के ३ नाम—(१) शतांग (२) स्यन्दन (३) रथ ।

(एकं युद्धं विना यात्रोत्सवादौ सुखभ्रमणार्थस्य रथस्य)

असौ पुष्परथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥५१॥

हवाखोरी आदि के लिए सुसज्जित रथ (बग्घी) का नाम—(१) पुष्परथ ॥५१॥

(त्रीणि स्त्रीणां वाहनार्थं कृतस्योपरि वस्त्रादिना पिहितरथविशेषस्य)

कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।

जनानी गाड़ी (डोला वगैरः) के ३ नाम—(१) कर्णीरथ (२) प्रवहण (३) डयन । इनमें (१ ला) पुँ० (२–३) नपुंसक हैं ।

(द्वे शकटस्य)

क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्यात्

सग्गड़ के २ नाम—(१) अनस् (२) शकट । इनमें (१ ला) नपुंसक (२ रा) पुं०-नपुंसक है ।

(द्वे शकटिकायाः)

गन्त्रीकम्बलिवाह्यकम् ॥५२॥

बैलगाड़ी के २ नाम—(१) गन्त्री (२) कम्बलिवाह्यक । इनमें (१ ला) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुंसक है ॥५२॥

(द्वे पुरुषवाह्ययानविशेषस्य)

शिबिका याप्ययानं स्यात्

पालकी के २ नाम—(१) शिबिका (२) याप्ययान ।

(द्वे दोलायाः)

दोला प्रेंखादिका स्त्रियाम् ।

डोली वा हिंडोले के २ नाम—(१) दोला (२) प्रेंखा ।

(द्वे वैयाघ्रचर्मवेष्टितरथस्य)

उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥५३॥

बाघ के चाम के परदे से ढके रथ के २ नाम—(१) द्वैप (२) वैयाघ्र । ये (१–२) पुं० स्त्री-नपुंसक में होते हैं ॥५३॥

(एकं शुक्लकम्बलवेष्टितरथस्य)

पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।

कुछ सफेद (पीलापन लिए) कम्बल के परदे से युत रथ का नाम—(१) पाण्डुकम्बली । (पुं०-स्त्री-नपुंसक)

(एकैकं कम्बलाद्यावृतरथस्य)

रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥५४॥

कम्बल युक्त परदेवाले रथ का नाम—(१) काम्बल । कपड़ावाले परदायुक्त रथ का नाम—(१) वास्त्र । ये पुं०-स्त्री०-नपुंसक में हैं ॥५४॥

त्रिषु द्वैपादयोः—

ये द्वैप आदि (से लेकर वास्त्रान्त) शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(द्वे रथसमूहस्य)

रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।

रथ के समूह के २ नाम—(१) रथ्या (२) रथकट्या ।

(द्वे वोढबन्धनस्थानस्य)

धूः स्त्री, क्लीबे यानमुखम्

धुरा या धुरी के २ नाम-(१) धुर् (२) यानमुख। इनमें (१ला) स्त्रीलिङ्ग और (२रा) नपुंसक है।

(द्वे रथावयवमात्रस्य)

स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥५५॥

तांगे के २ नाम—(१) रथांग (२) अपस्कर ॥५५॥

(द्वे चक्रस्य)

चक्रं रथाङ्गम्

पहिये के २ नाम—(१) चक्र (२) रथाङ्ग।

(द्वे चक्रस्यान्तस्य)

तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान्।

पुट्ठी या हाल के २ नाम—(१) नेमि (२) प्रधि।

(द्वे चक्रकाष्ठाधारभूतमण्डलाकारचक्रमध्यस्य)

पिण्डिका नाभिः

नाह के २ नाम—(१) पिण्डिका (२) नाभि।

(द्वे अक्षाग्रकीलकस्य)

अक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥५६॥

कुलावा का नाम—(१) अणि (पुं०-स्त्रीलिङ्ग) ॥५६॥

(द्वे शस्त्रादिभ्यः परिरक्षणार्थं रथस्य लोहादिमयावरणस्य)

रथगुप्तिर्वरूथो ना—

शस्त्रादि से बचाने के लिए रथ के लोहमय परदे के २ नाम—(१) रथगुप्ति (२) वरूथ। इनमें (१ला) स्त्री (२रा) पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे युगकाष्ठबन्धनस्थानस्य)

कूबरस्तु युगन्धरः।

जुए के काठ के २ नाम—(१) कूबर (२) युगंधर।

(एकं रथस्याधःस्थलभागदारुणः)

अनुकर्षो दार्वधःस्थम्

रथ के नीचे के काठ का नाम-(१) अनुकर्ष।

(एकमन्यवृषयुग्मस्य)

प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥५७॥

जुए का नाम—(१) प्रासंग ॥५७॥

(पञ्च वाहनमात्रस्य)

सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्रं च धोरणम्।

सवारी के ५ नाम—(१) वाहन (२) यान (३) युग्य (४) पत्र (५) धोरण।

(एकं परम्परावाहनस्य)

परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥५८॥

जो परम्परा से वाहन है और कहार वगैरः से ले जाने लायक है उस सवारी (पालकी, रिक्शा) का नाम--(१) वैनीतक ॥५८॥

(चत्वारि हस्तिपकस्य)

आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः।

पीलवान, महावत के ४ नाम-(१) आधोरण (२) हस्तिपक (३) हस्त्यारोह (३) निषादिन् (४) (१-४) पुँल्लिङ्ग हैं।

(अष्टौ रथकुटुम्बिनः)

नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः
सव्येष्ठदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः॥५९॥

रथवान, गाड़ीवान के ८ नाम--(१) नियन्तृ (२) प्राजितृ (३) यन्तृ (४) सूत (५) क्षत्तृ (६) सारथि (७) सव्येष्ठ (८) दक्षिणस्थ ॥५९॥

(द्वे रथारूढस्य योद्धुः)

रथिनः स्यन्दनारोहा—

रथ पर चढ़कर लड़नेवालों के २ नाम—(१) रथिन् (२) स्यन्दनारोह। ये (१-२) पुंल्लिङ्ग हैं।

(द्वे अश्ववाराणाम्)

अश्वारोहास्तु सादिनः ॥६०॥

घुड़सवारों के २ नाम—(१) अश्वारोह (२) सादिन्। ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ॥६०॥

(त्रीणि भटस्य)

भटा योधाश्च योद्धारः

लड़नेवाले के ३ नाम—(१) भट (२) योध (३) योद्धृ ।

(द्वे सेनारक्षकस्य)

सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।

सेना के पहरा देनेवाले यानी गश्त देनेवाले के २ नाम—(१) सेनारक्ष (२) सैनिक ।

(द्वे सेनायां मिलितस्यैकदेशीभूतस्य)

सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्चते।६१।

फौज में रहनेवाले के २ नाम—(१) सैन्य (२) सैनिक ॥६१॥

(द्वे सहस्रसंख्याकेन गजादिना बलवतः)

बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ॥

हजार सिपाहियों के मालिक के २ नाम—(१) साहस्र (२) सहस्रिन् ।

(द्वे रथगजादेश्चक्रपादादिरक्षकस्य)

परिधिस्थः परिचरः

सूबेदार मेजर के २ नाम—(१) परिधिस्थ (२) परिचर ।

(द्वे सेनापतेः)

सेनानीर्वाहिनीपतः ॥६२॥

सेनापति के २ नाम—(१) सेनानी (२) वाहिनीपति ॥६२॥

(द्वे सन्नाहस्य चोलकादेः)

कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री

जिरहबख्तर के २ नाम—(१) कञ्चुक (२) वारबाण । (१ला) पुंल्लिङ्ग (२रा) पुं०-नपुंसक है ।

(द्वे कञ्चुकदाढ्यार्थं मध्यकाये निबद्धस्य)

यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।

बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गः

कमरपेटी के २ नाम—(१) सारसन (२) अधिकांग ।

(त्रीणि शीर्षकस्य)

अथ शीर्षकम् ॥६३॥

शीर्षण्यं च शिरस्त्रे

टोप के ३ नाम—(१) शीर्षक (२) शीर्षण्य (३) शिरस्त्र । (१–३) नपुंसक हैं ॥६३॥

(सप्त कवचस्य)

अथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।

उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम्६४

कवच के ७ नाम—(१) तनुत्र (२) वर्मन् (३) दंशन (४) उरश्छद (५) कंकटक (६) जगर (७) कवच । इनमें (१–३) नपुंसक (४–६) पुंल्लिङ्ग (७) पुं०-नपुंसक है ।।६४।।

(चत्वारि परिहितकवचादेः)

आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।

झिल्लम आदि पहिरे हुए सैनिक के ४ नाम—(१) आमुक्त (२) प्रतिमुक्त (३) पिनद्ध(४) अपिनद्ध । ये (१–४) पुं०-स्त्री०-नपुंसक है ।

(पञ्च कवचभृतः)

संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः६५

पहने हुए कवच के ५ नाम—(१) संनद्ध (२) वर्मित (३) सज्ज (४) दंशित (५) व्यूढकंकट । ये (१-५) पुं०-स्त्री०-नपुंसक हैं ॥६५॥

त्रिष्वामुक्तादयः

आमुक्त आदि से लेकर व्यूढकंकट तक के शब्द तीनों लिङ्गों में होते हैं ।

(एकं धृतसन्नाहानां गणस्य)

वर्मभृतां कावचिकं गणे ।

कवचधारियों के समूह का नाम—(१) कावचिक (नपुंसक) ।

(सप्त पदातेः)

पदाति-पत्ति-पदग-पादातिक-पदाजयः ॥६६॥

पद्गश्च पदिकश्च

पैदल सेना के ७ नाम—(१) पदाति (२) पत्ति (३) पदग (४) पादातिक (५) पदाजि (६) पद्ग (७) पदिक । ये (१–७) पुँल्लिङ्ग हैं ॥६६॥

(द्वे पदातिसमूहस्य)

अथ पादातं पत्तिसंहतिः ।

पैदलसमूह के २ नाम—(१) पादात (२) पत्तिसंहति । इनमें (१ला) नपुंसक (२रा) स्त्रीलिङ्ग है ।

(चत्वारि आयुधजीविनः)

शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ६७

[1]जो हथियार बाँधकर जीविका करते हैं, उनके ४ नाम—(१) शस्त्राजीव (२) काण्डपृष्ठ (३) आयुधीय (४) आयुधिक ॥६७॥

(त्रीणि शरनिक्षेपनिष्णातस्य)

कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुंखवत् ।

अच्छे तीरन्दाज़ निशाना मारनेवाले के ३ नाम—(१) कृतहस्त (२) सुप्रयोगविशिख (३) कृतपुंख ।

(एकं लक्ष्याप्राप्तशरस्य)

अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याच्च्युतसायकः ।६८

निशाना से चूके तीरन्दाज का नाम—(१) अपराद्धपृषत्क ॥६८॥

(षट् धनुर्धरस्य)

धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः

धनुषधारी के ६ नाम—(१) धन्विन् (२) धनुष्मत् (३) धानुष्क (४) निषंगिन् (५) अस्त्रिन् (६) धनुर्धर ।

(द्वे शरधारिणः)

स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः

बाणधारी के २ नाम—(१) काण्डवत् (२) काण्डीर ।

(द्वे शक्त्यायुधधारकस्य)

शाक्तीकः शक्तिहेतिकः ॥६९॥

बर्छीधारी के २ नाम—(१) शाक्तीक (२) शक्तिहेतिक ॥६९॥

(एकैकं यष्टिपरशुधृतोः)

याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपर्श्वधहेतिकौ ।

लट्ठबाज का नाम—(१) याष्टीक।

फरसेबाज का नाम—(१) पारश्वधिक ।

(द्वे खड्गायुधस्य)

नैस्त्रिंशकोऽसिहेतिः स्यात्

तरवरिहा (तलवार बाँधनेवाले) के २ नाम—(१) नैस्त्रिंशिक (२) असिहेति । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकैकं प्रासकुन्तायुधिनोः)

समौ प्रासिक-कौन्तिकौ ॥७०॥

बल्लमधारी का नाम—(१) प्रासिक ।

भालेवाले का नाम—(१) कौन्तिक ॥७०॥

(द्वे चर्मधारिणः)

चर्मी फलकपाणिः स्यात्

ढाल बाँधनेवाले के २ नाम—(१) चर्मिन् (२) फलकपाणि ।

(द्वे ध्वजधारकस्य)

पताकी वैजयन्तिकः ।

झण्डावाले के २ नाम—(१) पताकिन् (२) वैजयन्तिक ।

(चत्वारि सहायस्य)

अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिचरः समाः ७१

सहायक के ४ नाम—(१) अनुप्लव (२) सहाय (३) अनुचर (४) अभिचर ॥७१॥

(सप्त पुरोगामिनः)

पुरोगाऽग्रेसर-प्रष्ठाऽग्रतःसरपुरःसराः ।
पुरोगमः पुरोगामी

आगे चलनेवाले (अगुआ) के ७ नाम—(१) पुरोग (२) अग्रेसर (३) प्रष्ठ (४) अग्रतःसर (५) पुरःसर (६) पुरोगम (७) पुरोगामिन् ।

(द्वे शनैर्गामिनः)

मन्दगामी तु मन्थरः ॥७२॥

धीरे २ चलनेवाले के २ नाम—(१) मन्दगामिन् (२) मन्थर ॥७२॥

(द्वे अतिवेगवतः)

जंघालोऽतिजवस्तुल्यः

जल्द चलनेवाले के २ नाम—(१) जंघाल (२) अतिजव ।

---

१ कौटिलीय अर्थशास्त्र (अधिकरण ११,अ०१, श्लो० ५) में लिखा है—'काम्भोजसुराष्ट्रक्षत्रियश्रेण्यादयो वार्ताशस्त्रोपजीविनः ।' अर्थात् काम्बोज और गुजरात के क्षत्रियों का संघशासन था और उनकी आजीविका खेती व लड़ाई-भिड़ाई थी ।

(द्वे जंघाजीविनः)

जंघाकरिक-जांघिकौ ।

हरकारे के २ नाम—(१) जंघाकरिक (२) जांघिक ।

(षड् वेगवन्मात्रस्य)

तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः॥७३॥

जल्दबाज के ६ नाम—(१) तरस्विन् (२) त्वरित (३) वेगिन् (४) प्रजविन् (५) जवन (६) जव । ये (१–६) पुँल्लिङ्ग हैं ॥७३॥

(एकं जेतुं शक्यस्य)

जय्यो यः शक्यते जेतुम्

जिसे जीत सके उसका नाम—(१) जय्य ।

(एकं जेतुं योग्यस्य)

जेयो जेतव्यमात्रके ।

जीतने लायक का नाम—(१) जेय ।

(द्वे जेतुः)

जैत्रस्तु जेता

जो जीत सके उस जीतनेवाले के २ नाम—(१) जैत्र (२) जेतृ । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(त्रीणि सामर्थ्येन शत्रूणां सम्मुखं गच्छतः)

यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥७४॥

सोऽभ्यामित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि

सामर्थ्य से शत्रुओंके सम्मुख लड़ने के लिए जानेवाले के ३ नाम—(१) अभ्यमित्र्य (२) अभ्यमित्रीय (३) अभ्यमित्रीण । ये (१–३) पुँल्लिंग हैं ॥७४॥

(द्वे बलातिविशेषतः)

ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः

पहलवान के २ नाम—(१) ऊर्जस्वल (२) ऊर्जस्विन् ॥७५॥

(द्वे विशालवक्षसः)

स्यादुरस्वानुरसिलः

बड़ी (लम्बी-चौड़ी) छातीवाले के २ नाम—(१) उरस्वत् (२) उरसिल ।

(त्रीणि रथस्वामिनः)

रथिनो रथिको रथी ।

रथ के स्वामी के ३ नाम—(१) रथिन् (२) रथिक (३) रथिन् ।

(द्वे यथेच्छं गमनशीलस्य)

कामङ्गाम्यनुकामीनः

मनमाना चलनेवाले का नाम—(१) अनुकामीन ।

(एकमतिगमनशीलस्य)

ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥७६॥

बारंबार चलनेवाले का नाम—(१) अत्यन्तीन ॥७६॥

(त्रीणि शूरस्य)

शूरो वीरश्च विक्रान्तः

शूर वीर बहादुर के ३ नाम—(१) शूर (२) वीर (३) विक्रान्त ।

(त्रीणि जयशीलस्य)

जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।

जीतनेवाले के ३ नाम—(१) जेतृ (२) जिष्णु (३) जित्वर ।

(एकं युद्धकुशलस्य)

सांयुगीनो रणे साधुः

रणकुशल का नाम—(१) सांयुगीन ।

शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥७७॥

'शस्त्राजीव' (श्लोक ६७) से लेकर 'सांयुगीन'शब्द तक तीनों लिंगों में होते हैं ॥७७॥

(एकादश सेनायाः)

ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनानीकिनी चमूः ।

वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥७८

सेना फौज के ११ नाम—(१) ध्वजिनी (२) वाहिनी (३) सेना (४) पृतना (५) अनीकिनी (६) चमू (७) वरूथिनी (८) बल (९) सैन्य (१०) चक्र (११) अनीक । इनमें (१-७) स्त्रीलिङ्ग, (८-१०) नपुंसक, (११वाँ) पुं०-नपुंसक है ॥७८॥

(द्वे व्यूहस्य)

[1]व्यूहस्तु बलविन्यासः

सेना की रचना किलेबन्दी के २ नाम—(१) व्यूह (२) बलविन्यास।

(एकैकं सेनाविशेषभेदानाम्)

भेदा दण्डादयो युधि।

[2]सेना की रचना के अनेक भेद हैं। यथा—(१) दण्ड आदि।

(द्वे व्यूहपश्चाद्भागस्य)

प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः

व्यूह के पिछले भाग के २ नाम—(१) प्रत्यासार (२) व्यूहपार्ष्णि। ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे सेनायाः पश्चाद्भागस्य)

सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥७९॥

फौज के पिछले भाग के २ नाम—(१) सैन्यपृष्ठ (२) प्रतिग्रह ॥७९॥

(एकं सेनाविशेषस्य)

एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्च पदातिका।

[3]जिसमें १ हाथी २ रथ ३ घोड़े और ५ पैदल हों उस सेना का नाम—(१) पत्ति (स्त्री०)

(एकैकं सेनाविशेषस्य)

पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम्।
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः।
अनीकिनी

क्रम से तिगुने पत्ति (पैदलों) के नाम ये हैं—तीन पत्ति का नाम—(१) सेनामुख (पुं०)

तीन सेनामुख का नाम—(१) गुल्म (पुं०-नपुंसक)

तीन गुल्म का नाम—(१) गण (पुं०)।

तीन गण का नाम—(१) वाहिनी (स्त्री०)।

तीन वाहिनी का नाम—(१) पृतना (स्त्री०)।

तीन पृतना का नाम—(१) चमू (स्त्री०)।

तीन चमू का नाम—(१) अनीकिनी (स्त्री०) ॥ ८० ॥

(एकमक्षौहिण्याः)

दशानीकिन्यक्षौहिणी

[4]दश अनीकिनी का नाम—(१) अक्षौहिणी।

(चत्वारि सम्पदः)

अथ संपदि ॥८१॥
संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च

सम्पत्ति के ४ नाम—(१) सम्पद् (२)

---

१ व्यूहलक्षणम्—
मुखे रथा हयाः पृष्ठे तत्पृष्ठे च पदातयः।
पार्श्वयोश्च गजाः कार्या व्यूहोयं परिकीर्तितः॥

व्यूह के विषय में कौटिलीय अर्थशास्त्र में (अधिकरण १०, अ० ५७६) लिखा है।

इसमें समव्यूह, विषमव्यूह, प्रकृतिव्यूह, दण्डव्यूह, भोगव्यूह, असंहतव्यूह, प्रदरव्यूह, दृढकव्यूह, असरयव्यूह, श्येनव्यूह, सञ्जयव्यूह, विजयव्यूह, स्थूलकर्णव्यूह, विशालविजयव्यूह, चमूमुखव्यूह, भाषाख्यव्यूह, सूचीव्यूह, बलव्यूह, दुर्जयव्यूह, शकटव्यूह, मकरव्यूह, मण्डलव्यूह, सर्वतोभद्रव्यूह, आदि का उल्लेख है।

२ कामन्दक ने दण्ड का लक्षण बतलाया है—
तिर्यग्वृत्तिस्तु दण्डः स्याद्भोगोऽन्वावृत्तिरेव च।
मण्डलः सर्वतोवृत्तिः पृथग्वृत्तिरसंहतः॥

३ पत्तिलक्षणम्—
एको रथो गजश्चैको नराः पञ्च पदातयः।
त्रयश्च तुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयते॥—भरतः।

४ अक्षौहिणी का प्रमाण अन्य ग्रन्थ से—
अक्षौहिण्यामित्यधिकैः सप्तत्या ह्यष्टभिः शतैः।
संयुक्तानि सहस्राणि गजानामेकविंशतिः। २१८७०
एवमेव रथानां तु संख्यानं कीर्तितं बुधैः। २१८७०।
पञ्चषष्टिसहस्राणि षट् शतानि दशैव तु॥
संख्यातास्तुरगास्तज्ज्ञैर्विना रथतुरंगमैः ६५६१०।
नृणां शतसहस्राणि सहस्राणि तथा नव।
शतानि त्रीणि चान्यानि पञ्चाशच्च पदातयः १०९३५०

अक्षौहिणीप्रमाणन्तु महाभारते—
अक्षौहिणी प्रमाणं तु खाङ्गाष्टैकद्विकैर्गजैः।
रथैरेतैर्हयैस्त्रिघ्नैः पञ्चघ्नैस्तु पदातयः।

महाक्षौहिणी प्रमाणम्—
खद्वयं ०० निधि ९ वेदा ४ क्षि २ चन्द्रा १ द्वय २ ग्नि ३ हिमांशुभिः १।
महाक्षौहिणिका प्रोक्ता संख्या गणितकोविदैः॥

सम्पत्ति (३) श्री (४) लक्ष्मी । (१–४) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥८१॥

(त्रीणि विपत्तेः)

विपत्त्यां विपदापदौ ।

विपत्ति के ३ नाम—(१) विपत्ति (२) विपद् (३) आपद् ।

(चत्वारि शस्त्रस्य)

आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रम्

शस्त्र के ४ नाम—(१) आयुध (२) प्रहरण (३) शस्त्र (४) अस्त्र ।

(सप्त धनुषः)

अथास्त्रियौ ॥८२॥

धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् । इष्वासोऽपि

धनुष के ७ नाम—(१) धनुष् (२) चाप (३) धन्वन् (४) शरासन (५) कोदण्ड (६) कार्मुक (७) इष्वास । इनमें (१–२) नपुंसक तथा पुँल्लिङ्ग (३–६) नपुंसक और (७) पुँल्लिङ्ग हैं ॥८२॥

(एकं कर्णस्य धनुषः)

अथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥८३॥

कर्ण के धनुष का १ नाम—(१) [1]काल-पृष्ठ ॥ ८३ ॥

(द्वे अर्जुनस्य धनुषः)

कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुंनपुंसकौ ।

अर्जुन के धनुष के २ नाम—(१) गाण्डीव (२) गांडिव । ये (१–२) दोनों पुँल्लिङ्ग और नपुंसक हैं ।

(द्वे धनुषः प्रान्तस्य)

कोटिरस्याटनी

धनुष के नीचे-ऊपरवाले दो कोनों के २ नाम—(१) कोटि (२) अटनी ।

(द्वे ज्याघातवारणस्य)

गोधातले ज्याघातवारणे ॥८४॥

धनुष की डोरी से हाथ न कटे, इस लिए पहने जानेवाले दस्ताने के २ नाम—(१) गोधा (२) तला । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक हैं ॥८४॥

(एकं धनुषो मध्यस्य)

लस्तकस्तु धनुर्मध्यम्

धनुष के बिचले भाग का नाम—(१) लस्तक ।

(धनुर्गुणस्य चत्वारि)

मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।

धनुष की डोरी (ताँत) के ४ नाम—(१) मौर्वी (२) ज्या (३) शिञ्जिनी (४) गुण । इनमें (१–३) स्त्रीलिङ्ग हैं और (४ था) पुँल्लिङ्ग है ।

(पञ्च धनुर्धारिणामासनभेदानाम्)

स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम्

[2]धनुर्धारी वीरों के पाँच पैंतरों के नाम-

[1] काल इव पृष्ठं यस्यासौ कालपृष्ठं अथवा कालं (कालवर्णं) पृष्ठं यस्येति विग्रहः ।

[2] धनुर्धारियों के शेष ३ पैंतरा इस प्रकार कहे गये हैं—समपद, विशाख और मण्डल । पाँवों के तुल्याकार स्थिति का नाम—(१) समपद ।

अक्षौहिणी सेना का प्रमाण

सेना	पत्ति	सेनामुख	गुल्म	गण	वाहिनी	पृतना	चमू	अनीकिनी	अक्षौहिणी
हाथी, रथ	१	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	२१८७०
घोड़े	३	९	२७	८१	२४३	७२९	२१८७	६५६१	६५६१०
पैदल	५	१५	४५	१३५	४०५	१२१५	३६४५	१०९३५	१०९३५०

बायीं जंघा को फैलाने तथा दाहिनी जंघा के समेटने की स्थिति का नाम—(१) प्रत्यालीढ। दाहिनी जंघा को फैलाने तथा बायीं जंघा को समेटने की ि थति का नाम—(१) आलीढ।

(त्रीणि लक्ष्यस्य)

लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च

निशाने के ३ नाम—(१) लक्ष (२) लक्ष्य (३) शरव्य।

(द्वे बाणाक्षेपाभ्यासस्य)

शराभ्यास उपासनम्।

बाण चलाना सीखने के २ नाम—(१) शराभ्यास (२) उपासन।

(बाणस्य द्वादश)

पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः॥८६॥
कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः।

बाण के १२ नाम—(१) पृषत्क (२) बाण (३) विशिख (४) अजिह्मग (५) खग (६) आशुग (७) कलम्ब (८) मार्गण (९) शर (१०) पत्रिन् (११) रोप (१२) इषु। इनमें (१ से ११ तक) पुँल्लिङ्ग, तथा (१२वाँ) इषु शब्द पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों है॥८६॥

(द्वे लोहमयबाणस्य)

प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः

लोहे के बाणों के २ नाम—(१) प्रक्ष्वेडन (२) नाराच।

(द्वे बाणपक्षस्य)

पक्षो वाजः

बाण में लगनेवाले कंकादि पंख के २ नाम—(१) पक्ष (२) वाज।

त्रिषूत्तरे॥८७॥

'निरस्त' शब्द से लेकर 'लिप्तक' शब्द पर्यन्त सभी शब्द पुं-स्त्री-नपुंसक तीनों लिंगों में कहे गये हैं॥ ८७॥

(एकं धनुषा प्रहितबाणस्य)

निरस्तः प्रहिते बाणे

धनुष से छूटे हुए बाण का नाम—(१) निरस्त।

(त्रीणि विषाक्तबाणस्य)

विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ।

जहरीले बाणों के ३ नाम—(१) विषाक्त (२) दिग्ध (३) लिप्तक।

(षट् तूणीरस्य)

तूणोपासङ्गतूणीरनिषंगा इषुधिर्द्वयोः॥८८॥
तूण्याम्

जिसमें बाण रखा जाता है, उस तरकस के ६ नाम—(१) तूण (२) उपासङ्ग (३) तूणीर (४) निषङ्ग (५) इषुधि (६) तूणी। इनमें (५ वाँ) शब्द पुँलिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों है और (६ वाँ) केवल स्त्रीलिंग है। शेष पुँलिंग हैं॥ ८८॥

(नव खड्गस्य)

खड्गे तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः।
कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ८९

खड्ग (तलवार) के ९ नाम—(१) खड्ग (२) निस्त्रिंश (३) चन्द्रहास (४) असि (५) रिष्टि (६) कौक्षेयक (७) मण्डलाग्र (८) करवाल (९) कृपाण॥ ८९॥

(खड्गमुष्टेरेकम्)

त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यात्

तलवार की मूठ का नाम—(१) त्सरु।

(एकं मेखलायाः)

मेखला तन्निबन्धनम्।

तलवार की म्यान का नाम—(१) मेखला।

(त्रीणि 'ढाल' इति ख्यातस्य चर्मणः)

फलकोऽस्त्री फलं चर्म

बारह अंगुल के अन्तर से पाँवों को ठहरा कर स्थित होने का नाम—(१) विशाख।

मण्डलाकार करके स्थित होनेका नाम—(१) मण्डल। इन्द्र से लड़ने के लिये रघु आलीढ पैतरे से खड़े हुए थे। देखिए रघुवंश।

१ आदिना कटारखंजीरादीनां ग्रहणम्।

ढाल के ३ नाम—(१) फलक (२) फल (३) चर्मन् । इनमें (१ ला) शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक (२-३रा) नपुंसकलिङ्ग हैं ।

(फलकस्य मुष्टेरेकम्)

संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥९०॥

जहाँ से ढाल पकड़ी जाती है, उस मूठ का नाम—(१) संग्राह ॥९०॥

(त्रीणि मुद्गरस्य)

द्रुघणो मुद्गरघनौ

मुद्गर के ३ नाम—(१) द्रुघण (२) मुद्गर (३) घन ।

(द्वे ह्रस्वखड्गस्य)

स्यादीली करवालिका ।

[१]खांडे के २ नाम—(१) ईली (२) करवालिका ।

(द्वे अश्मप्रक्षेपसाधनस्य)

भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ

जिससे पत्थर फेंका जाता है, उस ढेलवाँस के २ नाम—(१) भिन्दिपाल (२) सृग ।

(द्वे परिघस्य)

परिघः परिघातनः ॥९१॥

परिघ के २ नाम—(१) परिघ (२) परिघातन ॥ ९१ ॥

(चत्वारि कुठारस्य)

द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।

कुठार के ४ नाम—(१) कुठार (२) स्वधिति (३) परशु (४) परश्वध ।

(चत्वारि छुरिकायाः)

स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका॥

छूरी के ४ नाम—(१) शस्त्री (२) असिपुत्री (३) छुरिका (४) असिधेनुका ॥९२॥

(द्वे शल्यस्य)

वा पुंसि शल्यं शंकुर्ना

बर्छी के २ नाम—(१) शल्य (२) शंकु । इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसक दोनों है, और (२रा) केवल पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे तोमरस्य)

शर्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ।

गंडासे के २ नाम—(१) शर्वला (२) तोमर[२] । इनमें (१) स्त्रीलिंग (२) पुँलिङ्ग है ।

(द्वे कुन्तस्य)

प्रासस्तु कुन्तः

भाले के २ नाम—(१) प्रास (२) कुन्त ।

(चत्वारि खड्गादिप्रान्तभागस्य)

कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥९३॥

खड्ग आदि की नोक के ४ नाम—(१) कोण (२) पालि (३) अश्रि (४) कोटि । इनमें (१) पुंल्लिङ्ग (२-३-४) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥९३॥

(त्रीणि चतुरङ्गसैन्यसंनहनस्य)

सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।

सेना की जमाव के ३ नाम—(१) सर्वाभिसार (२) सर्वौघ (३) सर्वसंनहन ।

(एकमस्त्रभृतां नृपाणां महानवम्यां दशम्यां वा नीराजनासमये शस्त्रादिसमर्पणलक्षणस्य विधेः)

लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः

शस्त्र धारण करनेवाले राजाओं के यहाँ महानवमी अथवा विजय दशमी के अवसर पर पूजन के समय अस्त्र आदि अर्पण के विधान का नाम—(१) लोहाभिसार ॥९४॥

(एकं सेनया शत्रौ गमनस्य)

तत्सैनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।

सेना लेकर शत्रु पर चढ़ाई करने का नाम—(१) अभिषेणन ।

(षट्कं प्रयाणस्य)

यात्रा व्रज्याऽभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः॥९५

यात्रा के ६ नाम—(१) यात्रा (२) व्रज्या (३) अभिनिर्याण (४) प्रस्थान (५) गमन (६) गम ॥९५॥

१ इसीको कुछ लोग गुप्ती भी कहते हैं ।

२ तौर्गन्ता म्रियतेऽनेनेति तोमरः ।

(द्वे सेनायाः प्रसरणस्य)

स्यादासारः प्रसरणम्

सेना की फैलाव के २ नाम—(१) आसार (२) प्रसरण ।

(द्वे प्रस्थितायाः सेनायाः)

प्रचक्रं चलितार्थकम् ।

प्रस्थित सेना के २ नाम—(१) प्रचक्र (२) चलित ।

(एकं रणे निर्भीकतया गमनस्य)

अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥९६॥

निर्भीक भाव से संग्राम में गमन करने का नाम—(१) अभिक्रम ॥९६॥

(द्वे वैतालिकस्य)

वैतालिका बोधकराः

प्रातःकाल स्तुति पाठ करके राजा को जगाने वाले भाट के २ नाम—(१) वैतालिक (२) बोधकर ।

(द्वे वन्दिविशेषस्य)

चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।

घण्टा बजानेवालों के २ नाम—(१) चाक्रिक (२) घाण्टिक ।

(द्वे राजाग्रतो वंशक्रमस्य स्तावकादीनाम्)

स्युर्मागधास्तु मगधाः

राजा के समस्त राजवंश का वर्णन करने वालों के २ नाम—(१) मागध (२) मगध ।

(द्वे वन्दिनः)

वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥९७॥

स्तुति करनेवाले बन्दीजनों के २ नाम—(१) वन्दी (२) स्तुतिपाठक ॥ ९७ ॥

(शपथाद्यै संग्रामादनिवर्तिनो वीरास्तेषामेकम्)

संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।

शपथ करके संग्राम में जाकर पीछे न लौटने-वाले का नाम—(१) संशप्तक[१] ।

[१] महाभारत में संशप्तकों के युद्ध का हृदयग्राही वर्णन है ।

(चत्वारि रजसः)

रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः

धूल के ४ नाम—(१) रेणु (२) धूलि (३) पांसु (४) रजस् इनमें (१) पुं० स्त्री, (२) स्त्री०, (३) पुं०, (४) नपुंसक है ॥९८॥

(द्वे पिष्टस्य रजसः)

चूर्णे क्षोदः

चूर्ण के २ नाम—(१) चूर्ण (२) क्षोद । इनमें (१) पुं०-नपुंसक दोनों है ।

(द्वे अत्यन्तमाकुले सैन्यादौ)

समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।

अतिशय भयभीत सेना आदि के २ नाम—(१) समुत्पिञ्ज (२) पिञ्जल ।

(चत्वारि पताकायाः)

पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम्

झण्डे के ४ नाम—(१) पताका (२) वैजयन्ती (३) केतन (४) ध्वज । इनमें (१-२) स्त्रीलिङ्ग (३-४) नपुंसक और पुँल्लिङ्ग दोनों हैं ॥९९॥

(एकं या युद्धभूमिः खण्डितैर्गजादिभिरतिभयदातस्याः)

सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्याऽतिभयप्रदा ।

हाथी, घोड़े, पैदल आदि के कट जाने से जो युद्ध भूमि विशेष भयावनी मालूम पड़ती हो, उसका नाम—(१) वीराशंसन ।

(एकं अहमग्रे भवामीत्याग्रहपुरःसरं युद्धकारिणः)

अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम्॥१००॥

जिस संग्राम में वीर लोग 'पहले मैं लड़ूँगा पहले मैं लड़ूँगा' इस प्रकार का उत्साह दिखा रहे हों, उस संग्राम का नाम—(१) अहंपूर्विका । यह शब्द स्त्रीलिङ्ग है ॥१००॥

(अहं पुरुषः शक्तोहं इति भावाभिव्यञ्जयतां सैनिका-नामेकम्)

आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्संभावनात्मनि ।

मैं पुरुष हूँ, इस प्रकार अभिमान के साथ

होनेवाली लड़ाई का १ नाम—(१) आहोपुरुषिका ।

(यः परस्परमहं शक्त इत्यहंकारस्तस्यैकम्)

अहमहमिका तु सा स्यात्

परस्परं यो भवत्यहंकारः

'मैं शक्तिशाली हूँ' इस तरह परस्पर अहंकार पूर्वक लड़ाई का नाम–(१) अहमहमिका ॥१०१॥

(दश पराक्रमस्य)

द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च । शक्तिः पराक्रमः प्राणः

पराक्रम के १० नाम—(१) द्रविण (२) तरस् (३) सहस् (४) बल (५) शौर्य (६) स्थामन् (७) शुष्म (८) शक्ति (९) पराक्रम (१०) प्राण । इनमें (१-७) नपुंसक (८) स्त्री, (९-१०) पुँल्लिङ्ग, हैं ।

(द्वे अतिपराक्रमस्य)

विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥१०२॥

अतिशय पराक्रम के २ नाम—(१) विक्रम (२) अतिशक्तिता ॥१०२॥

(वृत्ते भाविनि वा युद्धे यत्पानं तस्यैकम्)

वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

लड़ने के लिए पहले या लड़ने के बाद वीर लोग जो नशा-पानी करते हैं, उसका नाम—(१) वीरपान ।

(युद्धस्यैकत्रिंशत्)

युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥१०३॥ मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम् । अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥१०४॥ संप्रहाराभिसम्पातकलिसंस्फोटसंयुगाः । अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः १०५ समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।

युद्ध के ३१ नाम—(१) युद्ध (२) आयोधन (३) जन्य (४) प्रधन (५) प्रविदारण (६) मृध (७) आस्कन्दन (८) संख्य (९) समीक (१०) सांपरायिक (११) समर (१२) अनीक (१३) रण (१४) कलह (१५) विग्रह (१६) संप्रहार (१७) अभिसम्पात (१८) कलि (१९) संस्फोट (२०) संयुग (२१) अभ्यामर्द (२२) समाघात (२३) संग्राम (२४) अभ्यागम (२५) आहव (२६) समुदाय (२७) संयत् (२८) समिति (२९) आजि (३०) समित् (३१) युध् । इनमें (१–१०) शब्द नपुंसक (११–१३) शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिंग दोनों हैं । (२७-३१) स्त्रीलिंग हैं ॥१०३–१०५॥

(द्वे बाहुयुद्धस्य)

नियुद्धं बाहुयुद्धे

हाथों हाथ युद्ध के २ नाम—(१) नियुद्ध (२) बाहुयुद्ध ।

(रणसंकुलस्यैकम्)

अथ तुमुलं रणसंकुले ॥१०६॥

घोर युद्ध का १ नाम—(१) तुमुल ॥१०६॥

(द्वे वीराणां सिंहनादतुल्यगर्जनस्य)

क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात्

वीरगर्जन के २ नाम—(१) क्ष्वेडा (२) सिंहनाद । इनमें (१) स्त्री०, (२) पुं० है ।

(द्वे करिणां समूहस्य)

करिणां घटना घटा ।

हाथियों की कतार के २ नाम—(१) घटना (२) घटा ।

(योधानामाक्रोशपूर्वकशब्दस्यैकम्)

क्रन्दनं योधसंरावः

वीरों को निन्दापूर्वक ललकारने का नाम—(१) क्रन्दन ।

(करिगर्जनस्यैकम्)

बृंहितं करिगर्जितम् ॥१०७॥

हाथियों की चिग्घाड़ का नाम—(१) बृंहित ॥ १०७ ॥

(धनुषः शब्दस्यैकम्)

विस्फारो धनुषः स्वानः

धनुष के शब्द का नाम—(१) विस्फार ।

(द्वे संग्रामध्वनेः)

पटहाडम्बरौ समौ ।

जुझाऊ नगाड़े की ध्वनि के २ नाम—(१) पटह (२) आडम्बर ।

(त्रीणि बलात्कारस्य)

प्रसभं तु बलात्कारो हठः

हठ के ३ नाम—(१) प्रसभ (२) बलात्कार (३) हठ ।

(द्वे युद्धमर्यादाया उल्लंघनस्य)

अथ स्खलितं छलम् ॥१०८॥

युद्ध की मर्यादा को उल्लंघन करने (धोखा देने) के २ नाम—(१) स्खलित (२) छल ॥ १०८ ॥

(त्रीणि उत्पातस्य)

अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।

उत्पात के ३ नाम—(१) अजन्य (२) उत्पात (३) उपसर्ग । इनमें (१) नपुंसक तथा (२-३) पुंल्लिग हैं ।

(त्रीणि मोहस्य)

मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽपि

मोह के ३ नाम—(१) मूर्च्छा (२) कश्मल (३) मोह । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग है ।

(द्वे शत्रुदेशपीडनस्य)

अवमर्दस्तु पीडनम् ॥१०६॥

धान्य आदि से पूर्ण शत्रु के देश को तहस-नहस करने के २ नाम—(१) अवमर्द (२) पीडन ॥१०६॥

(द्वे छलादाक्रमणस्य)

अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनम्

धोखे से आक्रमण करने के २ नाम—(१) अभ्यवस्कन्दन (२) अभ्यासादन ।

(द्वे जयस्य)

विजयो जयः ।

जीत के २ नाम—(१) विजय (२) जय ।

(त्रीणि प्रतीकारस्य)

वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥११०॥

वैर मिटाने के ३ नाम—(१) वैरशुद्धि (२) प्रतीकार (३) वैरनिर्यातन ॥ ११० ॥

(अष्टौ पलायनस्य)

प्रद्रावोद्राव-संद्राव-संदावा विद्रवो द्रवः ।
अपक्रमोऽपयानं च

संग्राम से भागने के ८ नाम—(१) प्रद्राव (२) उद्राव (३) संद्राव (४) संदाव (५) विद्रव (६) द्रव (७) अपक्रम (८) अपयान ।

(एकं पराजयस्य)

रणेभङ्गः पराजयः ॥१११॥

पराजय का नाम—(१) पराजय ॥ १११ ॥

(द्वे पराजितस्य)

पराजितपराभूतौ

हारे हुए के २ नाम—(१) पराजित (२) पराभूत ।

(द्वे निलीनस्य)

त्रिषु नष्टतिरोहितौ ।

छिपे हुए के २ नाम—(१) नष्ट (२) तिरोहित । तीनों लिंगों में इनका पाठ है ।

(त्रिंशद् वधस्य)

प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥११२॥
प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् ।
निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥११३॥
निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम् ।
निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥११४॥
उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च ।
आलम्भपिंजविशरघातोन्माथवधा अपि ॥११५॥

वध के ३० नाम—(१) प्रमापण (२) निबर्हण (३) निकारण (४) विशारण (५) प्रवासन (६) परासन (७) निषूदन (८) निहिंसन (९) निर्वासन (१०) संज्ञपन (११) निर्ग्रन्थन (१२) अपासन (१३) निस्तर्हण (१४) निहनन (१५) क्षणन (१६) परिवर्जन (१७) निर्वापण (१८) विशसन (१९) मारण (२०) प्रतिघातन (२१) उद्वासन (२२) प्रमथन (२३) क्रथन (२४) उज्जासन (२५)

आलम्भ (२६) पिञ्ज (२७) विशर (२८) घात (२९) उन्माथ (३०) वध ॥११२-११५॥

(मृत्योर्दश)

स्यात्पंचता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः ।
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम्

मृत्यु के १० नाम—(१) पंचता (२) कालधर्म (३) दिष्टान्त (४) प्रलय (५) अत्यय (६) अन्त (७) नाश (८) मृत्यु (९) मरण (१०) निधन । इनमें (८ वाँ) स्त्री-पुंल्लिग दोनों है । (१०) पुं-नपुंसक लिङ्ग है ॥ ११६ ॥

(सप्त मृतस्य)

परासु-प्राप्तपञ्चत्व-परेत-प्रेत-संस्थिताः ।
मृत-प्रमीतौ त्रिष्वेते

मरे हुए के ७ नाम—(१) परासु (२) प्राप्तपंचत्व (३) परेत (४) प्रेत (५) संस्थित (६) मृत (७) प्रमीत । तीनों लिंगों में इनका पाठ है ।

(चितेस्त्रीणि)

चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥११७॥

चिता के ३ नाम—(१) चिता (२) चित्या (३) चिति । ये तीनों स्त्रीलिंग हैं ॥११७॥

(अपगतमूर्ध्नः कलेवरस्यैकम्)

कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम् ।

सिर कटे किन्तु तड़फड़ाते हुए धड़ का नाम—(१) कबन्ध (पुं-नपुंसक) ।

(द्वे श्मशानस्य)

श्मशानं स्यात्पितृवनम्

श्मशान के २ नाम—(१) श्मशान (२) पितृवन ।

(द्वे शवस्य)

कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥११८॥

मुर्दे के २ नाम—(१) कुणप (२) शव । इनमें (२) पुँल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों है ॥११७॥

(त्रीणि 'कैदी' इति ख्यातस्य)

प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्याम्

कैदी के ३ नाम—(१) प्रग्रह (२) उपग्रह (३) बन्दी ।

(एकं बन्धनगृहस्य)

कारा स्याद्बन्धनालये ।

जेल का नाम—(१) कारा ।

(द्वे प्राणधारणस्य)

पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवम्

प्राण के २ नाम—(१) असु (२) प्राण । ये (१-२) पुँल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होते हैं ।

(द्वे जीवस्य)

जीवोऽसुधारणम् ॥११९॥

जीव के २ नाम—(१) जीव (२) असुधारण ॥११९॥

(जीवितकालस्यैकम्)

आयुर्जीवितकालः

जीवित समय (उम्र) का नाम—(१) आयुष् । (नपुं०)

(जीवितौषधस्यैकम्)

ना जीवातुर्जीवनौषधम् ।

जीवन की रक्षा करनेवाली औषधि का नाम—(१) जीवातु (पुँल्लिङ्ग) ।

(इति क्षत्रियवर्गः ८)

अथ वैश्यवर्गः ९

(षट् वैश्यस्य)

ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः

वैश्य के ६ नाम—(१) ऊरव्य (२) ऊरुज (३) अर्य (४) वैश्य (५) भूमिस्पृश् (६) विश् ।

(षट् जीविकायाः)

आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने॥१॥

रोजी के ६ नाम—(१) आजीव (२) जीविका (३) वार्ता (४) वृत्ति (५) वर्तन (६) जीवन । (इनमें (१) पुं. (२-४) स्त्री. (५-६) नपुंसक हैं ॥१॥

(त्रीणि वृत्तिभेदस्य)

स्त्रियां कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः।

वृत्तिभेद के ३ नाम—खेती करना (१) कृषि=स्त्री० (२) पशुओं को पालकर जीविका चलाना पाशुपाल्य=नपुं० (३) व्यवहार अथवा देन लेन करना [1] वाणिज्य (नपुंसक)=क्रय-विक्रय ।

(द्वे सेवायाः)

सेवा श्ववृत्तिः

[2]नौकरी के २ नाम—(१) सेवा (२) श्ववृत्ति ।

(द्वे कृषेः)

अनृतं कृषिः

खेती के २ नाम—(१) अनृत (२) कृषि ।

(त्रीणि उञ्छवृत्तेः)

उञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

उञ्छशिल वृत्ति का नाम—(१) ऋत । बाजार आदि में क्रय-विक्रय के अनन्तर गिरे हुए दानों के चुनने का नाम-(१) 'उञ्छ' ।

खेत कट जाने के बाद खेत का स्वामी जिन दानों को खेत में छोड़ देता है, उनके नाम--(१) शिला ।

(एकं याञ्चालब्धवस्तुनः याञ्चाविरहित-वस्तुनोऽप्येकमेव)

द्वे याचितायाचितयोर्यथासंख्यं मृतामृते ।

माँगने पर मिली हुई वस्तु का नाम—(१) मृत और बिना माँगे अपने आप मिली वस्तु का नाम—(१) अमृत ।

(वाणिज्यस्यैकम्)

सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात् ।

वाणिज्य व्यवसाय (बनियई) का नाम—(१) सत्यानृत (नपुं०) ।

(त्रीणि ऋणस्य)

ऋणं पर्युदञ्चनम् ॥ ३ ॥

उद्धारः

ऋण के ३ नाम—(१) ऋण (२) पर्युदञ्चन (३) उद्धार ॥३॥

(त्रीणि वृद्धिजीविकायाः)

अर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका ।

सूद के ३ नाम—(१) अर्थप्रयोग (२) कुसीद (३) वृद्धिजीविका ।

(एकं याञ्चया लब्धवस्तुनः)

याञ्चयाऽऽप्तं याचितकम्

माँगे से मिली हुई वस्तु का नाम—(१) याचितक ।

(एकं परिवर्तादाप्तवस्तुनः)

नियमादापमित्यकम् ॥ ४ ॥

विनिमय (लेनदेन, बदले) में मिली हुई वस्तु का नाम—(१) आपमित्यक ॥४॥

(ऋणदातुर्ग्राहकस्य चैकैकम्)

उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात् ।

ऋण देनेवाले साहूकार का नाम-(१) उत्तमर्ण ।

कर्ज लेनेवाले असामी का नाम (१) अधमर्ण ।

(चत्वारि ऋणं दत्वा तद्वृद्धया जीविनः)

कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः

सूदखोर के ४ नाम—(१) कुसीदिक (२) वार्धुषिक (३) वृद्ध्याजीव (४) वार्धुषि ॥५॥

(चत्वारि कृषकस्य)

क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषकश्च कृषीवलः ।

किसान के ४ नाम—(१) क्षेत्राजीव (२) कर्षक (३) कृषक (४) कृषीवल ।

(एकं व्रीह्युद्भवोचितक्षेत्रस्य शाल्युद्भवोचितक्षेत्रस्याप्येकमेव)

क्षेत्रं व्रैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवोचितम् ॥६॥

धान के खेत का नाम—(१) व्रैहेय । (पुं–स्त्री–नपुं०)

---

१ महाभारत और गीता में भी लिखा है—

कृषिगोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम् ।

२ स्मृतियाँ भी सेवावृत्ति की निन्दा करती हुई कहती हैं—

मृतामृताभ्यां जीवेत मृतेन प्रमृतेन वा ।
सत्यानृताभ्यामपि वा न श्ववृत्त्या कथंचन ॥
शुनो वृत्तिः स्मृता सेवा गर्हितं तद्द्विजन्मनाम् ।
हिंसादोषप्रधानत्वादनृतं कृषिरुच्यते ॥

साठी के खेत का नाम—(१) शालेय (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ॥ ६ ॥

(एकं यवक्षेत्रस्य)

यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि यत् ।

जौ के खेत का नाम-(१) यव्य । (पुं-स्त्री-नपुं०)

छोटे जौ के खेत का नाम—(१) यवक्य । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

साठ रात में पकनेवाले जौ के खेत का नाम—(१) षष्टिक्य । (पुं-स्त्री-नपुं०) ।

(द्वे द्वे तिल-माषोमाणुभंगक्षेत्राणां)

तिल्यं तैलीनवन्माषोमाणुभंगा द्विरूपता॥७॥

तिल के खेत के २ नाम—(१) तिल्य (२) तैलीन । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

उड़द के खेत के २ नाम—(१) माष्य (२) माषीण । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

तीसी के खेत के २ नाम —(१) उम्य (२) औमीन । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

अरवा चावल के खेत के २ नाम—(१) अणव्य (२) आणवीन । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

भाँग के खेत के २ नाम—(१) भंग्य (२) भंगीन (पुं॰- स्त्री-नपुं॰) ॥७॥

(मुद्गकोद्रवादिक्षेत्राणामप्येकैकम्)

मौद्गीनकौद्रवीणादिशेषधान्योद्भवत्तमम्[१] ।

मूँग उत्पन्न होनेवाले खेत का नाम—(१) मौद्गीन । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

कोदों उत्पन्न होनेवाले खेत का नाम—(१) कोद्रवीण । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

इसी तरह और और खेतों के भी नाम समझ लें। जैसे—गेहूँ उत्पन्न होने योग्य खेत का नाम—(१) गोधूमीन । चने उत्पन्न होने योग्य खेत का नाम—(१) चाणकीन आदि ।

(द्वे उप्तकृष्टक्षेत्रस्य)

बीजाकृतं तूप्तकृष्टम्

बीज बो कर जोते जानेवाले खेत का नाम—(१) बीजाकृत । (२) उप्तकृष्ट । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

(त्रीणि कृष्टक्षेत्रस्य)

सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥

जोते हुए खेत के ३ नाम—(१) सीत्य (२) कृष्ट (३) हल्य । ये (१-३) पुं॰-स्त्री-नपुं॰ हैं ॥८॥

(चत्वारि त्रिहल्यक्षेत्रस्य)

त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं
त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।

तीन बार जोते हुए खेत के ४ नाम—(१) त्रिगुणाकृत (२) तृतीयाकृत (३) त्रिहल्य (४) त्रिसीत्य । ये (१-३) पुं॰-स्त्री-नपुं॰ हैं ।

(पञ्च द्विहल्यक्षेत्रस्य)

द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥९॥

दो बार जोते हुए खेत के ५ नाम—(१) द्विगुणाकृत (२) द्वितीयाकृत (३) द्विहल्य (४) द्विसीत्य (५) शम्बाकृत ॥९॥

(द्रोणादिपरिमितधान्यस्यावापोचितक्षेत्रस्य)

[१]द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।

१६ सेर बीज जिस खेत में बोया जाय, उसका नाम—(१) द्रौणिक । (पुं॰-स्त्री-नपुं॰) ।

४ सेर बीज जिस खेत में बोया जाय, उसका नाम—(१) आढकिक । (पुं॰-स्त्री०-नपुं॰) ।

इसी तरह एक सेर बीज जिस खेत में बोया जाय, उसका नाम—(१) प्रास्थिक आदि ।

---

१ यह श्लोक कहीं २ अधिक पाया जाता है—

शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम् ।

साग के खेत के २ नाम—(१) शाकशाकट (२) शाकशाकिन ।

१ द्रोणादिलक्षणम्—

पलं प्रकुञ्चकं मुष्टिः कुडवस्तच्चतुष्टयम् ।
खारः कुडवाः प्रस्थश्चतुष्पथं तथाढकम् ॥
अष्टाढको भवेद्द्रोणः द्विद्रोणः शूर्पं उच्यते ।
सार्धशूर्पो भवेत्खारी द्विशूर्पा द्रोण्युदाहृता ॥
तमेव भारं जानीयाद्वाहो भारचतुष्टयम् ।

(एकं खारीवापक्षेत्रस्य)

खारीवापस्तु खारीक

जिस में १ खारी (१ मन ८ सेर) बीज बोया जाय, उस खेत का नाम—(१) खारीक।

उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥१०॥

(५ वें श्लोक के) उत्तमर्ण शब्द से लेकर खारीक (१० श्लोक में) शब्द तक जितने नाम आये हैं, वे पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग इन तीनों ही लिङ्गों में कहे गये हैं ॥१०॥

(त्रीणि क्षेत्रस्य)

पुंनपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रम्

खेत के ३ नाम—(१) वप्र (२) केदार (३) क्षेत्र। ये (१-२) पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों में कहे गये है। (३रा) नपुंसक है।

(चत्वारि क्षेत्रसमूहस्य)

अस्य तु।

कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षेत्रं कैदारिकं गणे ॥११॥

बहुत से खेतों के ४ नाम—(१) कैदारक (२) केदार्य (३) क्षेत्र (४) कैदारिक ॥११॥

(द्वे लोष्टस्य)

लोष्टानि लेष्टवः पुंसि

ढेले के २ नाम—(१) लोष्ट (२) लेष्टु। इनमें (१ ला) पुं-नपुंसक तथा (२ रा) पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे लोष्टभेदनमुद्गरस्य)

कोटिशो लोष्टभेदनः।

ढेला फोड़नेवाली मुँगरी के २ नाम—(१) कोटिश (२) लोष्टभेदन।

(त्रीणि वृषभादेस्ताडनोपयोगिनस्तोत्रस्य)

प्राजनं तोदनं तोत्रम्

जिससे बैल आदि पशु हाँके जाते हैं, उस पैने के ३ नाम—(१) प्राजन (२) तोदन (३) तोत्र।

(द्वे खनित्रस्य)

खनित्रमवदारणे ॥१२॥

कुदाल के २ नाम—(१) खनित्र (२) अवदारण ॥१२॥

(द्वे लवित्रस्य)

दात्रं लवित्रम्

खुरपा, हँसुआ, फावड़ा आदि के २ नाम—(१) दात्र (२) लवित्र।

(त्रीणि युगबन्धनोपयोगिरज्जोः)

आबन्धो योत्रं योक्त्रम्

जिससे बैल नाथा जाता है, उस रस्सी के ३ नाम—(१) आबन्ध (२) योत्र (३) योक्त्र।

(पञ्च हलफालस्य)

अथो फलम्।

निरीशं कुटकं फालः कृषकः

हल में लगनेवाले फाल के ५ नाम—(१) फल (२) निरीश (३) कुटक (४) फाल (५) कृषक।

(चत्वारि लाङ्गलस्य)

लाङ्गलं हलम् ॥१३॥

गोदारणं च सीरः

हल के ४ नाम—(१) लाङ्गल (२) हल (३) गोदारण (४) सीर ॥१३॥

(द्वे युगकीलकस्य)

अथ शम्या स्त्री युगकीलकः।

जुए में लगनेवाली सैल के २ नाम—(१) शम्या (२) युगकीलक। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग और (२) पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे लाङ्गलदण्डस्य)

ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात्

हल में लगनेवाली हरिस के २ नाम—(१) ईषा (२) लाङ्गलदण्ड। इनमें (१) स्त्री, (२) पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे लाङ्गलपद्धतेः)

सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥१४॥

जोतते समय खेत में हल की जो रेखा पड़ती है, उस (कूँड़) के २ नाम—(१) सीता (२) लाङ्गलपद्धति ॥१४॥

(द्वे पशुबन्धनकाष्ठस्य)

पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने।

मेढ़ी, खलिहान में पशुओं को बाँधने के निमित्त गाड़े हुए काष्ठ के २ नाम—(१) मेधि (२) खलेदारु । इनमें (१) शब्द पुंल्लिङ्ग और (२) नपुंसकलिङ्ग है ।

(त्रीणि व्रीहेः)

आशुर्व्रीहिः पाटलः स्यात्

साठी धान के ३ नाम—(१) आशु (२) व्रीहि (३) पाटल ।

(द्वे यवस्य)

शितशूक-यवौ समौ ॥१५॥

जौ के २ नाम—(१) शितशूक (२) यव ॥१५॥

(एकं हरितयवस्य)

तोक्मस्तु तत्र हरिते

हरे जौका नाम—(१) तोक्म (पुं०) ।

(चत्वारि कलायस्य)

कलायस्तु सतीनिकः ।

हरेणुरेणुकौ चास्मिन्

मटर के ४ नाम—(१) कलाय (२) सतीनिक (३) हरेणु (४) रेणुक ।

(द्वे कोद्रवस्य)

कोद्रूषस्तु कोद्रवः ॥१६॥

कोदौ के २ नाम—(१) कोदूष (२) कोद्रव ॥ १६ ॥

(द्वे मसूरस्य)

मङ्गल्यको मसूरः

मसूर के २ नाम—(१) मङ्गल्यक (२) मसूर ।

(त्रीणि मकुष्ठकस्य)

अथ मकुष्ठकमयुष्ठकौ ।

वनमुद्गे

मोथी, मोठ, वनमूंग (भँटवास) के ३ नाम—(१) मकुष्ठक (२) मयुष्ठक (३) वनमुद्ग ।

(त्रीणि सर्षपस्य)

सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥१७॥

सरसों के ३ नाम—(१) सर्षप (२) तन्तुभ (३) कदम्बक ॥१७॥

(एकं श्वेतसर्षपस्य)

सिद्धार्थस्त्वेष धवलः

सफेद सरसों का नाम—(१) सिद्धार्थ ।

(द्वे गोधूमस्य)

गोधूमः सुमनः समौ ।

गेहूँ के २ नाम—गोधूम (२) सुमन ।

(द्वे कुल्माषस्य)

स्याद्यावकस्तु कुल्माषः

कुलथी के २ नाम—(१) यावक (२) कुल्माष ।

(द्वे चणकस्य)

चणको हरिमन्थकः ॥१८॥

चने के २ नाम—(१) चणक (२) हरिमन्थक ॥ १८ ॥

(द्वे फलहीनतिलस्य)

द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिंजश्च निष्फले ।

फलविहीन (बाँझ) तिल के २ नाम—(१) तिलपेज (२) तिलपिंज ।

(पञ्च राजिकायाः)

क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकाऽऽसुरी१९

राई के ५ नाम—(१) क्षव (२) क्षुताभिजनन (३) राजिका (४) कृष्णिका (५) आसुरी ॥१९॥

(द्वे प्रियंगोः)

स्त्रियौ कंगुप्रियङ्गू द्वे

ककुनी के २ नाम—(१) कंगु (२) प्रियङ्गु । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(त्रीणि अतस्याः)

अतसी स्यादुमा क्षुमा ।

अलसी के ३ नाम—(१) अतसी (२) उमा (३) क्षुमा ।

(द्वे भङ्गायाः)

मातुलानी तु भङ्गायाम्

भाँग के २ नाम—(१) मातुलानी (२) भंगा ।

(व्रीहिभेदस्यैकम्)

व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥२०॥

साँवाँ, धान्यविशेष का नाम—(१) अणु। यह पुँल्लिङ्ग है ॥२०॥

(द्वे यवादीनां सूचितुल्याग्रभागस्य)

किंशारुः सस्यशूकं स्यात्

यव, धान आदि की बाल के सुई सदृश अग्र भाग (टूँड़) के २ नाम—(१) किंशारु (२) सस्यशूक।

(द्वे सस्यमंजर्याः)

कणिशं सस्यमञ्जरी ।

धान्य आदि की बाल के २ नाम—(१) कणिश (२) सस्यमंजरी।

(त्रीणि धान्यस्य)

धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः

धान्य के ३ नाम—(१) धान्य (२) व्रीहि (३) स्तम्बकरि।

(द्वे तृणयवादेर्गुच्छस्य)

स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥२१॥

तृण, यव आदि के गुच्छों के २ नाम—(१) स्तम्ब (२) गुच्छ ॥२१॥

(द्वे गुच्छनालस्य)

नाडी नालं च काण्डोऽस्य

गुच्छा के डंठल, नरई के २ नाम—(१) नाडी (२) नाल।

(एकं गृहीतफलस्य काण्डस्य)

पलालोऽस्त्री स निष्फलः ।

जिसका अनाज निकाल लिया गया है, उस पुआल का नाम—(१) पलाल। यह पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे बुसस्य)

कडङ्गरो बुसं क्लीबे

भूसे के २ नाम—(१) कडङ्गर (२) बुस। इनमें (१ला) पुँल्लिङ्ग (२रा) नपुंसक लिङ्ग है।

(एकं धान्यत्वचः)

धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥२२॥

धान्य की भूसी का नाम—(१) तुष। यह पुँल्लिङ्ग है ॥२२॥

(एकं यवादेरग्रस्य)

शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे

यव, धान्य आदि के चिकने और सुई की तरह तीखे अग्रभाग (टूँड़े) का नाम—(१) शूक।

(द्वे माषादिफलस्य)

शमी शिम्बा

छीनी उड़द-मटर आदि की फली के २ नाम—(१) शमी (२) शिम्बा।

त्रिषूत्तरे ।

आगे कहे जानेवाले २३वें श्लोक के सभी नाम पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक हैं।

(द्वे आवसितधान्यस्य)

ऋद्धमावसितं धान्यम्

पुआल से निकाले हुए धान्य के २ नाम—(१) ऋद्ध (२) आवसित (पुं-स्त्री-नपुं०)।

(एकं बहुलीकृतधान्यस्य)

पूतं तु बहुलीकृतम् ॥२३॥

साफ करके एकत्रित किये हुए ओसाए धान्य के २ नाम—(१) पूत (२) बहुलीकृत ॥२३॥

(शमीधान्यानि)

माषादयः शमीधान्ये

उड़द, मूँग, मटर आदि फली के भीतर रहनेवाले अन्न शमीधान्य कहे जाते हैं।

(शूकधान्यानि)

शूकधान्ये यवादयः ।

जौ, गेहूँ तथा धान आदि बाल से उत्पन्न होनेवाले अन्न शूकधान्य कहलाते हैं।

(शालिधान्यानि)

शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी २४

अगहनी, साठी तथा राजशालि आदि अन्न शालिधान्य कहे जाते हैं।

ये माष, यव, कलम (अगहनी धान) षष्टिक आदि पुँल्लिङ्ग हैं ॥२४॥

(एकं तृणधान्यस्य)

[1]तृणधान्यानि नीवाराः

तिन्नी, सावाँ आदि तृणधान्य का नाम—(१) नीवार ।

(द्वे मुन्यन्नविशेषस्य)

स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।

[2]कसेई, कौड़िल्ला के २ नाम—(१) गवेधु (२) गवेधुका । ये दोनों स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(द्वे मुसलस्य)

अयोग्रं मुसलोऽस्त्री स्यात्

मूसल के २ नाम—(१) अयोग्र (२) मुसल । (१-२) पुँल्लिङ्ग-नपुंसक दोनों हैं ।

(द्वे उलूखलस्य)

उदूखलमुलूखलम् ॥२५॥

ओखली के २ नाम—(१) उदूखल (२) उलूखल ॥ २५ ॥

(द्वे शूर्पस्य)

प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री

सूप के २ नाम—(१) प्रस्फोटन (२) शूर्प । ये दोनों नपुंसकलिङ्ग हैं । (केवल २रा) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे चालन्याः)

चालनी तितउः पुमान् ।

चलनी के २ नाम—(१) चालनी (२) तितउ । इनमें (१) स्त्री तथा (२) पुँल्लिग है ।

(द्वे धान्यभरणार्थं कृतवस्त्रभाण्डस्य)

स्यूतप्रसेवौ

अन्न भरने के लिए सन या सूत के बने थैले, बोरे के २ नाम—(१) स्यूत (२) प्रसेव ।

(द्वे 'टोकरी'ति ख्यातस्य पिटस्य)

कण्डोलपिटौ

टोकरी के २ नाम—(१) कण्डोल (२) पिट ।

(द्वे कटस्य)

कटकिलिञ्जकौ ॥२६॥

समानौ

चटाई के २ नाम—(१) कट (२) किलिञ्जक । ये दोनों ही पुँल्लिङ्ग हैं ॥२६॥

(त्रीणि महानसस्य)

रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।

रसोई घर के ३ नाम—(१) रसवती (२) पाकस्थान (३) महानस ।

(द्वे महानसाध्यक्षस्य)

पौरोगवस्तदध्यक्षः

रसोई घर के अध्यक्ष के २ नाम—(१) पौरोगव (२) महानसाध्यक्ष ।

(सप्त सूपकारस्य)

सूपकारास्तु बल्लवाः ॥२७॥

आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः

रसोइये के ७ नाम—(१) सूपकार (२) बल्लव (३) आरालिक (४) आन्धसिक (५) सूद (६) औदनिक (७) गुण ॥ २७ ॥

(त्रीणि आपूपिकस्य)

आपूपिकः कान्दविका भक्ष्यकार इमे त्रिषु ॥२८

पुआ बनानेवाले के ३ नाम—(१) आपूपिक (२) कान्दविक (३) भक्ष्यकार । ये सब तीनों लिङ्ग हैं ॥२८॥

(पंच चुल्लिकायाः)

अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ।

चूल्हे के ५ नाम—(१) अश्मन्त (२) उद्धान (३) अधिश्रयणी (४) चुल्लि (५) अन्तिका । इनमें (१-२) नपुंसक, (३-५) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(चत्वारि अंगारधानिका 'बोरसी'ति ख्यातायाः)

अंगारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥२९॥

हसन्यपि

बोरसी, अंगीठी के ४ नाम—(१) अंगारधानिका (२) अंगारशकटी (३) हसन्ती (४) हसनी ॥ २९ ॥

---

१ मुद्गो माषो राजमाषः कुलित्थश्चणकस्तिलः ।
कलायस्तूवर इति शमीधान्यगणः स्मृतः ॥

२ ब्राह्मणग्रन्थों के अनुसार रुद्र देवता के लिए गवेधुक के चरु की आहुति दी जाती थी ।

(एकं अंगारस्य)

अथ त्रि स्त्री स्यादङ्गारः

अंगारे का नाम—(१) अंगार। यह पुँल्लिङ्ग-नपुंसक है।

(द्वे उल्मुकस्य)

अलातमुल्मुकम्।

जलती हुई लुआठी के २ नाम—(१) अलात (२) उल्मुक।

(द्वे भ्राष्ट्रस्य)

क्लीबेऽम्बरीष भ्राष्ट्रः

भाड़ के २ नाम—(१) अम्बरीष (२) भ्राष्ट्र। इनमें (१) नपुंसक और (२) पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे 'कड़ाही' ति ख्यातायाः स्वेदन्याः)

ना कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥३०॥

कड़ाही के २ नाम—(१) कन्दु (२) स्वेदनी। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग-स्त्री-नपुंसक और (२) केवल स्त्रीलिङ्ग है ॥३०॥

(द्वे 'कमोरा' इति ख्यातस्यालिञ्जरस्य)

अलिञ्जरः स्यान्मणिकः

कमोरे, मटके के २ नाम—(१) अलिञ्जर (२) मणिक।

(त्रीणि कर्कर्याः)

कर्कर्यालुर्गलन्तिका।

कठवत के ३ नाम—(१) कर्करी (२) आलु (३) गलन्तिका।

(चत्वारि स्थाल्याः)

पिठरः स्थाल्युखा कुण्डम्

बटलोई के ४ नाम—(१) पिठर (२) स्थाली (३) उखा (४) कुण्ड।

(चत्वारि कलशस्य)

कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥३१॥

घटः कुटनिपौ

कलश (गगरे) के ४ नाम—(१) कलश। (२) घट। (३) कुट (४) निप। इनमें (१) तीनों लिङ्ग (२) पुं-नपुंसक लिङ्ग है ॥३१॥

(द्वे शरावस्य)

अस्त्री शरावो वर्धमानकः।

कसोरे के २ नाम—(१) शराव (२) वर्धमानक। ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं।

(द्वे ऋजीषस्य)

ऋजीषं पिष्टपचनम्

तवे के २ नाम—(१) ऋजीष (२) पिष्टपचन।

(द्वे कंसस्य)

कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥३२॥

कटोरी के २ नाम—(१) कंस (२) पानभाजन। इनमें (१) पुँल्लिङ्ग और नपुंसक (२) नपुंसकलिङ्ग है ॥३२॥

(एकं कृत्तेः स्नेहपात्रस्य)

कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रम्

घी आदि रखने के लिए चमड़े के बने कुप्पे का नाम—(१) कुतू (स्त्री०)।

(एकम् अल्पकृत्तिस्नेहपात्रस्य)

सैवाल्पः कुतुपः पुमान्।

कुप्पी का नाम—(१) कुतुप। यह पुँल्लिङ्ग है।

(पञ्च भाण्डस्य)

सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ३३

बरतनों के ५ नाम—(१) आवपन (२) भाण्ड (३) पात्र (४) अमत्र (५) भाजन ॥३३॥

(त्रीणि दर्व्याः)

दर्विः कम्बिः खजाका च

करछुल के ३ नाम—(१) दर्वि (२) कम्बि (३) खजाका।

(द्वे दारुनिर्मितदर्व्याः)

स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः।

काठ की बनी कलछुल के २ नाम—(१) तर्दू (२) दारुहस्तक। (१) पुं० स्त्री (२) पुं० है।

(त्रीणि शाकस्य)

अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रुः

शाक के ३ नाम—(१) शाक (२) हरितक (३) शिग्रु । इनमें (१–२) नपुंसक (२रा) पुं० और (३) पुँल्लिङ्ग है ।

(त्रीणि शाकनालस्य)

अस्य तु नाडिका ॥३४॥

कलम्बश्च कडम्बश्च

शाक के डंठल के ३ नाम—(१) नाडिका (२) कलम्ब (३) कडम्ब ॥३४॥

(द्वे उपस्करस्य)

वेसवार उपस्करः ।

शाग-भाजी आदि में डाले जानेवाले गरम मसाले के २ नाम—(१) वेसवार (२) उपस्कर ।

(त्रीणि चुक्रस्य)

तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्लम्

चूक (अमचुर आदि) के ३ नाम—(१) तिन्तिडीक (२) चुक्र (३) वृक्षाम्ल ।

(षट् मरीचस्य)

अथ वेल्लजम् ॥३५॥

मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

काली मिर्च के ६ नाम—(१) वेल्लज (२) मरीच (३) कोलक (४) कृष्ण (५) ऊषण (६) धर्मपत्तन ॥३५॥

(चत्वारि जीरकस्य)

जीरको जरणोऽजाजी कणा

जीरे के ४ नाम—(१) जीरक (२) जरण (३) अजाजी (४) कणा। (१-२) पुं०,(३-४) स्त्री० ।

(षट् कृष्णजीरकस्य)

कृष्णे तु जीरके ॥३६॥

सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुंचिका ।

काले जीरे के ६ नाम—(१) सुषवी (२) कारवी (३) पृथ्वी (४) पृथु (५) काला (६) उपकुंचिका ॥३६॥

(द्वे आर्द्रकस्य)

आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यात्

अदरख के २ नाम-(१) आर्द्रक (२) शृङ्गवेर ।

(चत्वारि धान्याकस्य)

अथ च्छत्रा वितुन्नकम् ॥३७॥

कुस्तुम्बुरु च धान्याकम्

धनिये के ४ नाम-(१) छत्रा (२) वितुन्नक (३) कुस्तुम्बुरु (४) धान्याक (१) स्त्री (२-४)नपुं०॥३७॥

(पंच शुण्ठ्याः)

अथ शुण्ठी महौषधम् ।

स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ३८

सोंठ के ५ नाम—(१) शुण्ठी (२) महौषध (३) विश्व (४) नागर (५) विश्वभेषज । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२-५) नपुंसक तथा केवल (३) स्त्रीलिङ्ग में भी है ॥ ३८ ॥

(सप्त सौवीरस्य)

आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च ।

अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके३९

कांजी के ७ नाम—(१) आरनालक (२) सौवीर (३) कुल्माषाभिषुत (४) अवन्तिसोम (५) धान्याम्ल (६) कुञ्जल (७) काञ्जिक ॥ ३९ ॥

(पंच बाह्लीकस्य)

सहस्रवेधि जतुकं वाह्लीकं हिंगु रामठम् ।

हींग के ५ नाम--(१) सहस्रवेधि (२) जतुक (३) बाह्लीक (४) हिंगु (५) रामठ ।

(पंच हिंगुनः पत्रकस्य)

तत्पत्री कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथुः४०

हिंगुवृक्ष की पत्ती के ५ नाम—(१) कारवी (२) पृथ्वी (३) वाष्पिका (४) कवरी (५) पृथु ॥ ४० ॥

(पंच हरिद्रायाः)

निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी ।

हलदी के ५ नाम—(१) निशाख्या (२) काञ्चनी (३) पीता (४) हरिद्रा (५) वरवर्णिनी ।

(द्वे सामुद्रलवणस्य)

सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत्॥४१॥

सामुद्र लवण के २ नाम—(१) अक्षीव (२) वशिर ॥ ४१ ॥

(चत्वारि सैन्धवस्य)

सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे

सेंधा नमक के ४ नाम—(१) सैन्धव (२) शीतशिव (३) माणिमन्थ (४) सिन्धुज।

(द्वे शाम्भरलवणस्य)

रौमकं वसुकम्

साँभरनमक के २ नाम-(१) रौमक (२) वसुक।

(द्वे कृत्रिमलवणस्य)

पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥४२॥

बनावटी (खारी) नमक के २ नाम—(१) पाक्य (२) विड ॥ ४२ ॥

(त्रीणि सौवर्चलस्य)

सौवर्चलेऽक्षरुचके

सोंचल नमक के ३ नाम—(१) सौवर्चल (२) अक्ष (३) अक्षरुचक। ये (१-३) नपुंसक हैं।

(एकं कृष्णसौवर्चलस्य)

तिलकं तत्र मेचके।

सोंचल काले नमक का नाम—(१) तिलक।

(द्वे खण्डविकारस्य)

मत्स्यण्डी फाणितं खण्डविकारे

राव के २ नाम—(१) मत्स्यण्डी (२) फाणित।

(द्वे सितायाः)

शर्करा सिता ॥४३॥

मिश्री के २ नाम-(१) शर्करा (२) सिता ॥४३॥

(द्वे कूर्चिकायाः)

कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्यात्

खोये के २ नाम—कूर्चिका (२) क्षीरविकृति।

(द्वे श्रीखण्डस्य)

[1]रसाला तु मार्जिता।

शिखरन के २ नाम—(१) रसाला (२) मार्जिता।

(द्वे तेमनस्य)

स्यात्तेमनं तु निष्ठानं

कढ़ी के २ नाम—(१) तेमन (२) निष्ठान।

त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥४४॥

'शूलाकृत' से (४६ श्लोक के) वासित शब्द पर्यन्त सब शब्द स्त्री-पुं-नपुंसक तीनों लिङ्ग हैं ॥४४॥

(त्रीणि शूलाकृतस्य)

शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्यम्

लोहे की शलाका में पिरोकर पकाये मांस के ३ नाम—(१) शूलाकृत (२) भटित्र (३) शूल्य।

(द्वे स्थालीपक्वमांसस्य)

उख्यं तु पैठरम्।

बटलोई में पकाये हुए मांस के २ नाम—(१) उख्य (२) पैठर।

(द्वे सिद्धस्य व्यञ्जनादेः)

प्रणीतमुपसम्पन्नम्

बनाकर तैयार की हुई रसदार रसोई के २ नाम—(१) प्रणीत (२) उपसम्पन्न।

(द्वे प्रयत्ननिष्पन्नस्य घृतपक्वादेः)

प्रयस्तं स्यात्सुसंस्कृतम् ॥४५॥

बड़ी मेहनत के साथ घी में बनाये हुए पकवान के २ नाम—(१) प्रयस्त (२) सुसंस्कृत ॥ ४५ ॥

(द्वे मण्डदध्यादियुक्तान्नस्य)

स्यात्पिच्छिलं तु विजिलं

दही, माड़ आदि युक्त पनिहाली रसोई के २ नाम—(१) पिच्छिल (२) विजिल।

(द्वे शोधितस्यान्नस्य)

संमृष्टं शोधितं समे।

बीन कर साफ किये हुए अन्न के २ नाम—(१) संमृष्ट (२) शोधित।

(त्रीणि चिक्कणस्य)

चिक्कणं मसृणं स्निग्धं

चिकने के ३ नाम—(१) चिक्कण (२) मसृण (३) स्निग्ध।

---

१ अर्धाढकः सुचिरपर्युषितस्य दध्नः
खण्डस्य षोडश पलानि शशिप्रभस्य।
सर्पिष्पलं मधु पलं मरिचं द्विकर्षं
शुण्ठ्याः पलार्धमपि चार्धपलं चतुर्णाम् ॥
सूक्ष्मे पटे ललनया मृदु पाणिघृष्टा
कर्पूरधूलिसुरभीकृतपात्रसंस्था।
एषा वृकोदरकृता सरसा रसाला
याऽऽस्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥

(द्वे भावितस्यान्नस्य)

तुल्ये भावितवासिते ॥४६॥

छौंकी-बघारी हुई चीज के २ नाम—(१) भावित (२) वासित ॥ ४६ ॥

(त्रीणि अर्धस्विन्नयवादेः)

आपक्वं पौलिरभ्यूषः

घी आदि में अधपकी (तली हुई) वस्तु के ३ नाम—(१) आपक्व (२) पौलि (३) अभ्यूष।

(एकं लाजायाः)

लाजाः पुंभूम्नि चाक्षताः ।

धान के लावे का नाम—(१) लाजा। यह नित्य पुँल्लिग है और सर्वदा बहुवचन ही रहता है। अक्षत शब्द भी इसी तरह सर्वदा पुँल्लिङ्ग और बहुवचन है।

(द्वे पृथुकस्य)

पृथुकः स्याच्चिपिटकः

चिउड़े के २ नाम-(१) पृथुक (२) चिपिटक।

(द्वे भृष्टयवस्य)

धाना भृष्टयवे स्त्रियः ॥४७॥

भूनी हुई बहुरी के २ नाम—(१) धाना (२) भृष्टयव ॥ ४७ ॥

(त्रीणि अपूपस्य)

पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात्

पुए के ३ नाम—(१) पूप (२) अपूप (३) पिष्टक।

(द्वे दधियुक्तसक्तुनः)

करम्भो दधिसक्तवः ।

दही से सने सत्तू के २ नाम—(१) करम्भ (२) दधिसक्तु। (२) यह शब्द नित्य पुँल्लिङ्ग और बहुवचन है।

(षट् ओदनस्य)

भिस्सा स्त्री भक्तमन्धोऽन्न-
मोदनोऽस्त्री सदीदिविः ॥४८॥

भात के ६ नाम—(१) भिस्सा (२) भक्त (३) अन्धस् (४) अन्न (५) ओदन (६) दीदिवि। इनमें (१) स्त्री, (२-४) नपुं०, (५) पुं-नपुंसक, (६) पुं० है ॥४८॥

(द्वे दग्धान्नस्य)

भिस्सटा दग्धिका

आँच की तेजी से जले हुए अन्न के २ नाम-(१) भिस्सटा (२) दग्धिका।

(एकं सर्वरसाग्रिमद्रवस्य)

सर्वरसाग्रे मण्डमस्त्रियाम् ।

माँड का नाम--(१) मण्ड। यह पुं०-नपुंसक लिङ्ग है।

(त्रीणि भक्तसमुद्भवमण्डस्य)

मासराचामनिस्त्रावा मण्डे भक्तसमुद्भवे ॥४९॥

भात से निकलनेवाले माँड के ३ नाम—(१) मासर (२) आचाम (३) निस्राव ॥४९॥

(पंच द्रवदोदनस्य)

यवागूरुष्णिका श्राणा विलेपी तरला च सा ।

पनिहा भात के ५ नाम—(१) यवागू (२) उष्णिका (३) श्राणा (४) विलेपी (५) तरला।

(एकं गोर्भवद्रव्यस्य)

गव्यं त्रिषु गवां सर्वम्

गौ से उत्पन्न होनेवाली वस्तु (गोबर, मूत्र, दुग्ध, घी आदि) का नाम-(१) गव्य। यह तीनों लिङ्ग हैं।

(द्वे गोमयस्य)

गोविट् गोमयमस्त्रियाम् ॥५०॥

गोबर के २ नाम—(१) गोविष् (२) गोमय। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग और (२) पुं०-नपुंसक लिङ्ग है ॥५०॥

(द्वे तैलस्य)

१ "**म्रक्षणाभ्यञ्जने तैलं**

तैल के २ नाम—(१) म्रक्षण (२) अभ्यञ्जन।

(द्वे कृसरान्नस्य)

कृसरस्तु तिलौदनः ॥"

खिचड़ी के २ नाम—(१) कृसर (२) तिलौदन।

(एकं शुष्कगोमयस्य)

तत्तु शुष्कं करीषोऽस्त्री

सूखे गोवर (गोहरे या कंडे) का नाम— (१) करीष। यह पुँल्लिङ्ग और नपुंसक है।

(त्रीणि दुग्धस्य)

दुग्धं क्षीरं पयः समम्।

दूध के ३ नाम—(१) दुग्ध (२) क्षीर (३) पयस्। ये (१-३) नपुंसक हैं।

(एकं दुग्धोद्भवद्रव्यस्य)

पयस्यमाज्यदध्यादि

दूध से तैयार होनेवाली वस्तु घी, दही आदि का नाम--(१) पयस्य। (नपुं०)

(एकं द्रवदध्नः)

द्रप्सं दधि घनेतरत् ॥५१॥

पतले दही का नाम--(१) द्रप्स ॥५१॥

(चत्वारि घृतस्य)

घृतमाज्यं हविः सर्पिः

घी के ४ नाम--(१) घृत (२) आज्य (३) हविष् (४) सर्पिष्। ये (१-४) नपुंसक हैं।

(द्वे नवनीतस्य)

नवनीतं नवोद्धृतम्।

मक्खन के २ नाम--(१) नवनीत (२) नवोद्धृत।

(एकं पूर्वदिनप्राप्तगोक्षीरघृतस्य)

तत्तु हैयङ्गवीनं यद्ध्यो गोदोहोद्भवं घृतम् ॥५२॥

एक दिन पहले के दूध से निकले घी का नाम--(१) हैयङ्गवीन ॥ ५२ ॥

(चत्वारि गोरसस्य)

दण्डाहतं कालशेयमरिष्टमपि गोरसः।

गोरस (मट्ठे) के ४ नाम—(१) दण्डाहत (२) कालशेय (३) अरिष्ट (४) गोरस।

(दण्डाहतस्य भेदाः)

तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥५३॥

जिस मट्ठे में एक चौथाई पानी मिलाया जाय, उसका नाम--(१) तक्र।

जिस मट्ठे में दो चौथाई यानी आधे-आध पानी मिलाया जाय, उसका नाम--(१) उदश्वित्।

जिसमें पानी बिल्कुल न मिलाकर केवल मथ भर दिया जाय, उसका नाम--(१) मथित ॥५३॥

(एकं दध्नो मण्डस्य)

मण्डं दधिभवं मस्तु

दही से निकलनेवाले पानी (तोड़) का नाम--(१) मस्तु। यह नपुंसक लिङ्ग है।

(एकं नवप्रसूताया गोर्दुग्धस्य)

पीयूषोऽभिनवं पयः।

नई ब्याई हुई गौ के सात दिन तक के दूध (पेऊँस) का नाम--(१) पीयूष।

(त्रीणि बुभुक्षायाः)

अशना या बुभुक्षा क्षुद्

भूख के ३ नाम—(१) अशना (२) बुभुक्षा (३) क्षुध्।

(द्वे ग्रासस्य)

ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥५४॥

ग्रास (कौर) के २ नाम--(१) ग्रास (२) कवल। ये दोनों पुँल्लिङ्ग हैं ॥ ५४ ॥

(द्वे सहपानस्य)

सपीतिः स्त्री तुल्यपानम्

साथ-साथ पी जानेवाली वस्तु के २ नाम– (१) सपीति (२) तुल्यपान। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग और (२) नपुंसक लिङ्ग है।

(द्वे सहभोजस्य)

सग्धिः स्त्री सहभोजनम्।

एक साथ भोजन के २ नाम--(१) सग्धि (२) सहभोजन। इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग और (२) नपुंसकलिंग है।

(चत्वारि पिपासायाः)

उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षः

प्यास के ४ नाम--(१) उदन्या (२) पिपासा (३) तृष् (४) तर्ष।

(सप्त आहारस्य)

जग्धिस्तु भोजनम् ॥५५॥

जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।

भोजन के ७ नाम--(१) जग्धि (२) भोजन (३) जेमन (४) लेह (५) आहार (६) निघास (७) न्याद । इनमें (१) स्त्री, (२-३) नपुं०, (४-७) पुं० हैं ॥ ५५ ॥

(त्रीणि तृप्तेः)

सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः

तृप्ति के ३ नाम--(१) सौहित्य (२) तर्पण (३) तृप्ति ।

(एकं भुक्तोत्सृष्टस्य)

फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥५६॥

भोजन करके छोड़ी हुई वस्तु, जूठन का नाम—(१) फेला ॥ ५६ ॥

(षट् ईप्सितस्य)

कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।

चाह, इच्छा के ६ नाम--(१) काम (२) प्रकाम (३) पर्याप्त (४) निकाम (५) इष्ट (६) यथेप्सित ।

(षट् आभीरस्य)

गोपगोपालगोसंख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ५७

व्यापारी ग्वाले के ६ नाम--(१) गोप (२) गोपाल (३) गोसंख्य (४) गोदुह् (५) आभीर (६) वल्लव ॥ ५७ ॥

(एकं गोमहिष्यादिकस्य)

गोमहिष्यादिकं पादबन्धनम्

गाय-भैंस आदि चौपाओं का नाम—(१) पादबन्धन ।

(द्वे गोस्वामिनोः)

द्वौ गवीश्वरे ।

गोमान् गोमी

गौ के मालिक के २ नाम—(१) गोमत् (२) गोमिन् ।

(द्वे गोः समूहस्य)

गोकुलं गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥५८॥

गौओं के झुण्ड के २ नाम—(१) गोकुल (२) गोधन ॥५८॥

(यत्र पुरा गाव आशितास्तत्स्थानस्यैकम्)

त्रिष्वाशितंगवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा ।

जहाँ कि पहले कभी गैया खिलायी गयी हो, उस स्थान का नाम—(१) आशितङ्गवीन । यह पुं-स्त्री-नपुंसक तीनों लिङ्ग है ।

(नव वृषभस्य)

उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः॥५९॥

अनड्वान् सौरभेयो गौः

बैल के ९ नाम—(१) उक्षन् (२) भद्र (३) बलीवर्द (४) ऋषभ (५) वृषभ (६) वृष (७) अनड्वान् (८) सौरभेय (९) गो ॥५९॥

(एकं वृषभसमूहस्य)

उक्ष्णां संहतिरौक्षकम् ।

बैलों के झुण्ड का नाम—(१) औक्षक ।

(द्वे गवां समुदायस्य)

गव्या गोत्रा गवाम्

गो के झुण्ड के २ नाम—(१) गव्या (२) गोत्रा ।

(एकं वत्सस्य धेनोश्च समूहस्य)

वत्सधेन्वोर्वात्सक-धैनुके ॥६०॥

बछड़ों के झुण्ड का नाम—(१) वात्सक । धेनु के समुदाय का नाम—(१) धैनुक ॥६०॥

(एकं महावृषस्य)

वृषो महान् महोक्षः स्यात्

बड़े बैल का नाम—(१) महोक्ष ।

(द्वे वृद्धवृषभस्य)

वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।

बूढ़े बैल के २ नाम—(१) वृद्धोक्ष (२) जरद्गव ।

(एकं प्राप्तबलीवर्दभावस्य)

उत्पन्न उक्षा जातोक्षः

युवा बछड़े का नाम—(१) जातोक्ष ।

(एकं सद्योजातवत्सस्य)

सद्योजातस्तु तर्णकः ॥६१॥

तुरन्त के उत्पन्न बछड़े का नाम—(१) तर्णक ॥६१॥

(द्वे वत्सस्य)

शकृत्करिस्तु वत्सः स्यात्

बछड़े के २ नाम—(१) शकृत्करि (२) वत्स।

(द्वे स्पष्टतारुण्यस्य वत्सस्य)

दम्यवत्सतरौ समौ।

जिसमें तरुणता झलकने लग गयी है, उस बछड़े के २ नाम—(१) दम्य (२) वत्सतर।

(एकं षण्डतायोग्यस्य वृषभस्य)

आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः

बधिया करने लायक बैल का नाम—(१) आर्षभ्य।

(त्रीणि स्वेच्छाचारिणो वृषभस्य)

षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥६२॥

छुटे हुए साँड़ के ३ नाम—(१) षण्ड (२) गोपति (३) इट्चर ॥६२॥

(एकं वृषभस्कन्धदेशस्य)

स्कन्धदेशं त्वस्य वहः

बैल के कंधे का १ नाम—(१) वह। (पुं०)

(द्वे कंठे लम्बमानचर्मणः)

सास्ना तु गलकम्बलः।

गाय या बैल के गले में लटकनेवाले चमड़े के २ नाम—(१) सास्ना (२) गलकंबल।

(द्वे स्यूतनासिकस्य)

स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः

नाथे हुए बैल के २ नाम—(१) नस्तित (२) नस्योत।

(द्वे दमनार्थं युग्येन सह स्कन्धे बद्धकाष्ठस्य)

प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥६३॥

बैल को साधने के लिए लगे हुए जुए के २ नाम—(१) प्रष्ठवाट् (२) युगपार्श्वग ॥६३॥

(वृषभभेदाः)

युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः।

जुआ सम्हालनेवाले बैल का नाम—(१) युग्य।

नये बछड़ों को ठीक करने के लिए उनके कन्धे पर एक प्रकार का काष्ठ लगाया जाता है, जिसका नाम है प्रासङ्ग। वह प्रासङ्ग ढोनेवाले बैल का नाम—(१) प्रासङ्ग्य।

शकट (बैलगाड़ी) खींचनेवाले बैल का नाम—(१) शाकट।

(खनतीत्याद्यर्थे भेदः)

खनति तेन तद्वोढाऽस्येदं हालिकसैरिकौ ६४

हल में जुतकर खेत जोतनेवाले बैल का नाम—(१) हालिक।

हल अथवा सीर को ढोनेवाले का नाम—(१) हालिक अथवा सैरिक ॥६४॥

(पंच धुरन्धरवृषभस्य)

धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरंधराः।

बोझा ढोनेवाले बैल के ५ नाम—(१) धूर्वह (२) धुर्य (३) धौरेय (४) धुरीण (५) सधुरंधर।

(एकं धूर्वहस्य त्रीणि)

उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥६५॥

केवल एक बोझा ढोनेवाले बैल के ३ नाम—(१) एकधुरीण (२) एकधुर (३) एकधुरावह ॥ ६५ ॥

(द्वे सर्वधुरावहवृषभस्य)

स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः।

सब प्रकार के बोझ ढोनेवाले बैल के २ नाम—(१) सर्वधुरीण (२) सर्वधुरावह।

(नव गोः)

माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ६६
अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यात्

गौ के ९ नाम—(१) माहेयी (२) सौरभेयी (३) गौ (४) उस्रा (५) माता (६)

शृङ्गिणी (७) अर्जुनी (८) अघ्न्या (९) रोहिणी ॥ ६६ ॥

(एकं उत्तमाया गोः)

उत्तमा गोषु नैचिकी ।

उत्तमा गौंका नाम—(१) नैचिकी ।

(गोभेदाः)

वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबरीधवलादयः॥६७॥

रंग के भेद से 'शबरी' 'धवला' आदि गौओं के अनेक नाम होते हैं ।

चितकबरी गाय का नाम—(१) शबरी ।

सफेद गाय का नाम—(१) धवला ॥६७॥

(द्वे द्विवर्षाया गोः)

द्विहायनी द्विवर्षा गौः

दो वर्ष की गाय के २ नाम—(१) द्विहायनी (२) द्विवर्षा ।

(एकं एकवर्षाया गोः)

एकाब्दा एकहायनी ।

एक वर्ष की गौं के २ नाम—(१) एकाब्दा (२) एकहायनी ।

(द्वे चतुर्वर्षाया गोः)

चतुरब्दा चतुर्हायणी

चार वर्ष की गौं के २ नाम—(१) चतुरब्दा (२) चतुर्हायणी ।

(द्वे त्रिवर्षायाः)

एवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥६८॥

तीन वर्ष की गौं के २ नाम—(१) त्र्यब्दा (२) त्रिहायणी ॥ ६८ ॥

(द्वे वंध्याया गोः)

वशा वन्ध्या

बाँझ गौं के २ नाम—(१) वशा (२) वंध्या ।

(द्वे स्रवद्गर्भायाः)

अवतोका तु स्रवद्गर्भा

जिसका गर्भ गिर गया हो, उस गौं के २ नाम—(१) अवतोका (२) स्रवद्गर्भा ।

(एकं वृषभेणाक्रान्तायाः)

अथ सन्धिनी ।

आक्रान्ता वृषभेण

(एकं वृषभसंसर्गाद्गर्भोपघातिन्याः)

अथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥६९॥

साँड़ के संसर्ग से गर्भ गिरा देनेवाली गौं का नाम—(१) वेहत् ॥ ६९ ॥

(एकं गर्भग्रहणप्राप्तकालायाः)

काल्योपसर्या प्रजने

बरधाने योग्य गाय का नाम—(१) काल्योपसर्या ।

(बालगर्भिण्या गोरेकम्)

प्रष्ठौही बालगर्भिणी ।

बैल के साथ लगाई हुई गौं का नाम—(१) सन्धिनी ।

बचपन में ही गर्भिणी होनेवाली गाय का १ नाम—(१) प्रष्ठौही ।

(द्वे अकोपनायाः)

स्यादचण्डी तु सुकरा

सीधी गाय के २ नाम—(१) अचण्डी (२) सुकरा ।

(द्वे बहुवारं प्रसूतायाः)

बहुसूतिः परेष्टुका ॥७०॥

बहुत बार ब्यायी हुई गाय के २ नाम—(१) बहुसूति (२) परेष्टुका ॥७०॥

(द्वे चिरप्रसूतायाः)

चिरप्रसूता बष्कयिणी

बहुत दिन की ब्यायी हुई गाय के २ नाम—(१) चिरप्रसूता (२) बष्कयिणी ।

(द्वे नवसूतिकायाः)

धेनुः स्यान्नवसूतिका ।

नयी ब्यायी हुई गाय के २ नाम—(१) धेनु (२) नवसूतिका ।

(सुखसन्दोह्याया गोर्द्वे)

सुव्रता सुखसन्दोह्या

बिना अड़चन के जो गौ दुही जा सकती हो, उसके २ नाम—(१) सुव्रता (२) सुखसन्दोह्या ।

(द्वे स्थूलस्तन्याः)

पीनोध्नी पीवरस्तनी ॥७१॥

मोटे-मोटे स्तनवाली गाय के २ नाम—(१) पीनोध्नी (२) पीवरस्तनी ॥७१॥

(द्वे द्रोणपरिमितदुग्धदायिन्याः)

द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा

द्रोण भर दूध देनेवाली गाय के २ नाम—(१) द्रोणदुग्धा (२) द्रोणक्षीरा । १ द्रोण का परिमाण १२ सेर माना गया है ।

(एकं बन्धके स्थितायाः)

धेनुष्या बन्धके स्थिता ।

जो गाय किसी महाजन के यहाँ इस शर्त पर रखी जाय कि 'जब तक आपका रुपया न चुक जाय तब तक इस गौ का दूध आप अपने काम में लें ।' उस गाय का १ नाम—(१) धेनुष्या ।

(एकं या प्रतिवर्षं प्रसूयते तस्याः)

समांसमीना सा यव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥७२॥

हर साल ब्यानेवाली गाय का नाम—(१) समांसमीना ॥७२॥

(द्वे गोस्तनस्य)

ऊधस्तु क्लीबमापीनम्

गो के थन के २ नाम—(१) ऊधस् (२) आपीन । ये दोनों नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(द्वे बन्धनकीलकस्य)

समौ शिवककीलकौ ।

जिसमें गाय-बैल आदि पशु बाँधे जाते हैं, उस खूँटे के २ नाम—(१) शिवक (२) कीलक ।

(द्वे बन्धनरज्जोः)

न पुंसि दाम सन्दानं

पशु को बाँधने की रस्सी के २ नाम—(१) दाम (२) सन्दान । ये दोनों नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(द्वे पशुबन्धनरज्जोः)

पशुरज्जुस्तु दामनी ॥७३॥

जिस रस्सी में एक साथ बहुत से पशु बाँधे जाते हैं, उसके २ नाम—(१) पशुरज्जु (२) दामनी ॥७३॥

(मन्थनदण्डस्य पंच)

वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।

मन्थनदण्ड के ५ नाम—(१) वैशाख (२) मन्थ (३) मन्थान (४) मन्था (५) मन्थदण्डक ।

(द्वे मन्थनदण्डस्तम्भस्य)

कुठरो दण्डविष्कम्भः

जिसमें मन्थनदण्ड बँधता है, उस स्तम्भ के २ नाम—(१) कुठर (२) दण्डविष्कम्भ ।

(मध्यमानदधिपात्रस्य द्वे)

मन्थनी गर्गरी समे ॥७४॥

जिसमें दही मथा जाता है, उस पात्र के २ नाम —(१) मन्थनी (२) गर्गरी ॥७४॥

(चत्वारि उष्ट्रस्य)

उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः

ऊँट के ४ नाम—(१) उष्ट्र (२) क्रमेलक (३) मय (४) महाङ्ग ।

(एकं उष्ट्रशिशोः)

करभः शिशुः ।

ऊँट के बच्चे का १ नाम—(१) करभ ।

(एकं पादबन्धनयुक्तकरभस्य)

करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ७५

जिस उष्ट्रशावक के पैर बाँधे जाते हों, उसका नाम—(१) शृङ्खलक ॥७५॥

(द्वे अजायाः)

अजा छागी

बकरी के २ नाम—(१) अजा (२) छागी ।

(पंच अजस्य)

शुभच्छागबस्तच्छगलका अजे ।

बकरे के ५ नाम—(१) शुभ (२) छाग (३) बस्त (४) छगलक (५) अज ।

(सप्त मेषस्य)

मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥७६॥

मेढ़े के ७ नाम—(१) मेढ्र (२) उरभ्र (३) उरण (४) ऊर्णायु (५) मेष (६) वृष्णि (७) एडक ॥७६॥

(एकं मेषोष्ट्राजसमुदायस्य)

उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

ऊँट के झुण्ड का नाम—औष्ट्रक ।

मेढ़ों के झुण्ड का नाम--(१) औरभ्र ।

बकरों के झुण्ड का नाम—(१) आजक ।

(पञ्च गर्दभस्य)

चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः७७

गधे के ५ नाम--(१) चक्रीवान् (२) बालेय (३) रासभ (४) गर्दभ (५) खर ॥७७॥

(अष्टौ वणिजः)

वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः७८

[1]साहूकार (बनिये) के ८ नाम—(१) वैदेहक (३) नैगम (४) वाणिज (५) वणिक् (६) पण्याजीव (७) आपणिक (८) क्रय-विक्रयिक ॥ ७८ ॥

(द्वे विक्रेतुः)

विक्रेता स्याद्विक्रयिकः

अन्न-वस्त्रादि वस्तुएँ बेचकर जीविका करने वाले के २ नाम—(१) विक्रेता (२) विक्रयिक ।

(द्वे क्रेतुः)

क्रायकक्रयिकौ समौ ।

खरीदार के २ नाम—(१) क्रायक (२) क्रयिक ।

(द्वे वाणिज्यस्य)

वाणिज्यं तु वणिज्या स्यात्

व्यापार के २ नाम—(१) वाणिज्य (२) वणिज्या ।

(त्रीणि विक्रेयवस्तूनां मूल्यस्य)

मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥७६॥

किसी चीज के दाम के ३ नाम—(१) मूल्य (२) [2]वस्न (३) अवक्रय ।

(त्रीणि मूलधनस्य)

नीवी परिपणो मूलधनं

पूँजी (मूलधन) के ३ नाम—(१) नीवी (२) परिपण (३) मूलधन ।

(एकं लाभस्य)

लाभोऽधिकं फलम् ।

मुनाफे का नाम—(१) लाभ ।

(चत्वारि परिवर्तनस्य)

परिदानं परीवर्तो नैमेयनिमयावपि ॥८०॥

बदले, लेनदेन के ४ नाम—(१) परिदान (२) परीवर्त (३) नैमेय (४) निमय ॥८०॥

(द्वे न्यासस्य)

पुमानुपधिर्न्यासः

धरोहर के २ नाम— (१) उपधि (२) न्यास। ये दोनों ही पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकं न्यस्तवस्तुनोऽर्पणस्य)

प्रतिदानं तदर्पणम् ।

धरोहर के लौटाने का नाम—(१) प्रतिदान।

(एकं आपणे प्रसारितवस्तुनः)

क्रये प्रसारितं क्रय्यम्

बाजार में बेचने के लिये फैलायी वस्तु का नाम—(१) क्रय्य ।

(एकं क्रेतव्यवस्तुनः)

क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥८१॥

खरीदी जानेवाली चीज का नाम–(१) क्रेय ॥८१॥

(त्रीणि विक्रेयवस्तुनः)

विक्रयं पणितव्यं च पण्यं क्रय्यादयस्त्रिषु ।

बिकाऊ चीज के ३ नाम—(१) विक्रेय (२) पणितव्य (३) पण्य । उपर्युक्त 'क्रय्य' शब्द

---

१ निगम—'बहूपकारो देवस्स चेव नेगमस्स च— विनयपिटक पहला खण्ड । निगम का अर्थ है 'कारपोरेशन' प्राचीनकाल में सार्थवाह और कुलिकों के निगम होते थे ।

२ वसत्यस्मिन् वस्तुप्राप्तिरिति वस्नः ।

से लेकर 'पराय' शब्द तक के सब शब्द तीनों लिङ्ग हैं।

(त्रीणि मयैतत्कर्तव्यमित्यादिरूपेण सत्यकरणस्य)

क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिःपुमान्॥८२

बयाना देने के ३ नाम—(१) सत्यापन (२) सत्यङ्कार (३) सत्याकृति। इनमें (१ला) नपुंसक (२रा) पुँल्लिङ्ग तथा (३रा) स्त्रीलिङ्ग है ॥८२॥

(द्वे विक्रयस्य)

विपणो विक्रयः

बिक्री के २ नाम-(१) विपण। (२) विक्रय।

संख्याः संख्येये ह्यादश त्रिषु।

एक से लेकर अट्ठारह तक की संख्या संख्येय (गिनी जानेवाली) वस्तु में ही रहती है और वह स्त्री-पुं-नपुंसक तीनों लिङ्ग है।

विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः॥८३

विंशति आदि संख्यायें सदा एकवचन ही रहती हैं। संख्या और संख्येय (गिनी जानेवाली वस्तु में) रहती हैं ॥८३॥

संख्यार्थे द्विबहुत्वे स्तः

विंशति आदि शब्द जब संख्या के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, तब उनके द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं। जैसे—'द्वे विंशती' 'तिस्रो विंशतयः' आदि।

तासु चानवतेः स्त्रियः।

'विंशति' से लेकर 'नवति' तक की सभी संख्यायें स्त्रीलिङ्ग हैं।

पंक्तेः [1]शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥८४॥

दश की संख्या से लेकर क्रमशः दसगुना करते जाने पर सौ, हजार आदि होते हैं। जैसे—दस पंक्ति (दस संख्या) के सौ, दस सौ का हजार आदि ॥८४॥

(त्रीणि मानार्थस्य)

यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम्।

तौल या नाप के ३ नाम—(१) यौतव (२) द्रुवय (३) पाय्य।

(मानस्य भेदाः)

[2]मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थैः

वह मान तीन प्रकार का होता है। जैसे—(१) तुलामान—अर्थात् तौलने से जिसका मान किया जाय। (२) अंगुलिमान—गज आदि से नापना और प्रस्थमान अर्थात् किसी निर्दिष्ट बर्तन से नापना।

(एकं माषकस्य)

गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥८५॥

पाँच घुँघचियों का १ मासा=(१) आद्यमाषक॥८५॥

(द्वे कर्षस्य)

ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री

सोलह मासा का १ अक्ष, उसके २ नाम—(१) अक्ष (२) कर्ष। ये दोनों ही पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग हैं।

(एकं कर्षचतुष्टयस्य)

पलं कर्षचतुष्टयम्।

उस चार अक्ष या कर्ष का नाम—(१) पल।

(द्वे कर्षकस्य)

सुवर्णबिस्तौ हेम्नोऽक्षे

कर्ष भर सुवर्ण के २ नाम—(१) सुवर्ण (२) बिस्त।

(एकं सुवर्णपलस्य)

कुरुबिस्तस्तु तत्पले ॥८६॥

एक पल अर्थात् चार कर्ष सुवर्ण का नाम—(१) कुरुबिस्त ॥ ८६ ॥

---

१ एकदशशतसहस्रायुतलक्षप्रयुतकोट्यः क्रमशः। अर्बुदमब्जं खर्वनिखर्वं महापद्मशङ्कवस्तस्मात् ॥ जलधिश्चान्त्यं मध्यं परार्धमिति दशगुणोत्तराः संज्ञाः। संख्यायाः स्थानानां व्यवहारार्थं कृता पूर्वैरिति।

२ ऊर्ध्वमानं किलोन्मानं परिमाणं तु सर्वतः। आयामस्तु प्रमाणं स्यात्संख्या भिन्ना तु सर्वतः ॥ मानापेक्षितमाचार्या भेषजानां प्रकल्पनम्। मेनिरे यत्ततो मानमुच्यते पारिभाषिकम्। वैद्यकशब्दसिंधुः ॥८१५॥

(एकं पलानां शतस्य)

तुला स्त्रियां पलशतम्

सौ पल का नाम—(१) तुला। यह स्त्रीलिङ्ग है।

(एकं तुलाया विंशते)

भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।

बीस तुला का नाम—(१) भार ।

(एकं दशभारस्य)

आचितो दश भाराः स्युः

दस भार का नाम—(१) आचित ।

(एकं शकटेन वोढुं शक्यस्य भारस्य)

शाकटो भार आचितः ॥८७॥

बैलगाड़ी से ढोये जानेवाले भार का भी नाम—(१) आचित ॥८७॥

(द्वे कार्षापणस्य)

कार्षापणः कार्षिकः स्यात्

कर्ष भर चाँदी के बने सिक्के (रुपये) के २ नाम—(१) कार्षापण (२) कार्षिक ।

(एकं ताम्रिककार्षापणस्य)

कार्षिके ताम्रिके पणः ।

कर्ष भर तामे के बने सिक्के (पैसे) का नाम—(१) पण ।

(आढकद्रोणादीनां भेदाः)

अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारीवाहो निकुञ्चकः ८८

कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक् ।

ये आढक, द्रोण आदि शब्द परिमाणवाचक हैं और इनके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं। जैसे चार सेर का १ आढक। आठ आढक का १ द्रोण। तीन द्रोण की १ खारी। आठ द्रोण का १ वाह। मुठ्ठी भर का १ निकुंच। पाव भर का १ कुडव। एक सेर का १ प्रस्थ ॥ ८८ ॥

(एकं चतुर्थांशस्य)

पादस्तुरीयो भागः स्यात्

चतुर्थांश (जैसे रुपए का चौथा हिस्सा चवन्नी) का नाम—(१) पाद ।

(त्रीणि अंशस्य)

अंशभागौ तु वण्टके ॥८६॥

बाँट के ३ नाम—(१) अंश (२) भाग (३) वंटक ॥८६॥

(त्रयोदश धनस्य)

द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु ।

हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि ॥९०॥

धन के १३ नाम—(१) द्रव्य (२) वित्त (३) स्वापतेय (४) रिक्थ (५) ऋक्थ (६) धन (७) वसु (८) हिरण्य (९) द्रविण (१०) द्युम्न (११) अर्थ (१२) रै (१३) विभव ॥९०॥

(द्वे घटिताघटितयोर्हेमरूप्यस्य)

स्यात्कोषश्च हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृते ।

गढ़कर आभूषण बनाये हुए या बिना गढ़े हुए सोने और चाँदी के २ नाम—(१) हिरण्य (२) कोष ।

(एक हेमरूप्याभ्यामन्यत्ताम्रादिधातोः)

ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं

सोने चाँदी के अतिरिक्त (ताँबा आदि) अन्य धातुओं का नाम—(१) कुप्य ।

(एकं कुप्याकुप्यस्य)

रूप्यं तद्द्वयमाहतम् ॥९१॥

ताँबा और रूपा के मेल का नाम—(१) आहत ॥९१॥

(चत्वारि मरकतमणेः)

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः ।

मरकत मणि (पन्ना) के ४ नाम—(१) गारुत्मत (२) मरकत (३) अश्मगर्भ (४) हरिन्मणि ।

(त्रीणि पद्मरागमणेः)

शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागः

[1]पद्मरागमणि (माणिक) के ३ नाम—(१) शोणरत्न (२) लोहितक (३) पद्मराग ।

---

१ कहा गया है कि

'सिंहले तु भवेद्रक्तं पद्मरागमनुत्तमम् ।'

(द्वे मौक्तिकस्य)

अथ मौक्तिकम् ॥९२॥

मुक्ता

मोती के २ नाम—(१) मौक्तिक (२) मुक्ता ॥९२॥

(द्वे प्रवालस्य)

अथ विद्रुमः प्रवालं पुंनपुंसकम् ।

मूँगे के २ नाम—(१) विद्रुम (२) प्रवाल । ये दोनों क्रमशः पुँल्लिङ्ग और नपुंसक हैं ।

(द्वे अश्मजातेर्मुक्तादिमणेः)

रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च९३

मरकत आदि अश्मजाति तथा मुक्तादि मणियों के २ नाम—(१) रत्न (२) मणि ॥९३॥

(एकोनविंशतिः सुवर्णस्य)

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥९४॥
चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम्९५

[2]सुवर्ण के १९ नाम—(१) स्वर्ण (२) सुवर्ण (३) कनक (४) हिरण्य (५) हेम (६) हाटक (७) तपनीय (८) शातकुम्भ (९) गाङ्गेय (१०) भर्म (११) कर्बुर (१२) चामीकर (१३) जातरूप (१४) महारजत (१५) कांचन (१६) रुक्म (१७) कार्तस्वर (१८) जाम्बूनद (१९) अष्टापद । ये नपुंसक हैं और केवल १९वां पुंनपुंसकलिङ्ग है ॥९४॥९५॥

(एकं अलङ्कारसुवर्णस्य)

अलङ्कारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।

सोने के गहने का नाम—(१) शृङ्गीकनक।

(पंच रजतस्य)

दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥९६॥

चाँदी के ५ नाम—(१) दुर्वर्ण (२) रजत (३) रूप्य (४) खर्जूर (५) श्वेत ॥९६॥

(द्वे पित्तलस्य)

रीतः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियाम्

पीतल के २ नाम—(१) रीति (२) आरकूट । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग और (२) पुँल्लिङ्ग है ।

(षट् ताम्रस्य)

अथ ताम्रकम् ।

शुल्बं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च९७

तामे के ६ नाम—(१) ताम्र (२) शुल्ब (३) द्व्यष्ट (४) म्लेच्छमुख (५) वरिष्ठ (६) उदुम्बर ॥९७॥

(सप्त लोहस्य)

लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी।
अश्मसारः

लोहे के ७ नाम—(१) लोह (२) शस्त्र (३) तीक्ष्ण (४) पिण्ड (५) कालायस (६) अयस् (७) अश्मसार । ये सभी नाम पुँल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग हैं ।

(द्वे लोहमलस्य)

अथ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥९८॥

लोह के मुर्चा, जंग के २ नाम—(१) मण्डूर (२) सिंहाण ॥९८॥

(एकं धातुमात्रस्य)

सर्वं च तैजसं लोहं

सब धातुओं का १ नाम—(१) लोह ।

(एकं लोहफालस्य)

विकारस्त्वयसः कुशी ।

लोह के फाल का नाम—(१) कुशी । यह स्त्रीलिङ्ग है ।

---

२ स्वर्णोत्पत्ति के सम्बन्ध में कहा जाता है कि—

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां जितात्मनाम् ।
मरीचिरङ्गिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ॥
वसिष्ठश्चेति सप्तैते कीर्तिताः परमर्षयः ।
पत्नीर्विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाः ॥
कन्दर्पार्दर्पविध्वस्तचेतसो जातवेदसः ।
पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तद्धेमतामगात् ॥
कृत्रिमश्चादि भवति तद्रसेन्द्रस्य वेधतः ।

(द्वे काचस्य)

काचः सारः

शीशे (काँच) के २ नाम—(१) काच (२) सार ।

(चत्वारि पारदस्य)

अथ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥९९॥

पारे के ४ नाम—(१) चपल (२) रस (३) सूत (४) पारद ॥९९॥

(एकं महिषशृंगस्य)

गवलं माहिषं शृङ्गं

भैंसे की सींग का नाम—(१) गवल ।

(त्रीणि अभ्रकस्य)

अभ्रकं गिरिजामले ।

अबरख के ३ नाम—(१) अभ्रक (२) गिरिज (३) अमल ।

(चत्वारि स्रोतोऽञ्जनस्य)

स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने१००

सुरमे के ४ नाम—(१) स्रोतोञ्जन (२) सौवीर (३) कापोताञ्जन (४) यामुन ॥१००॥

(चत्वारि तुत्थाञ्जनस्य)

तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ।

तूतिया (नीला थोथा) के ४ नाम—(१) तुत्थाञ्जन (२) शिखिग्रीव (३) वितुन्नक (४) मयूरक ।

(तुत्थाञ्जनस्य भेदाः)

कर्परी दार्विकाक्वाथोद्भवं तुत्थं

मोचरस का नाम—(१) कर्परी ।

दारुहरदी के बने हुए क्वाथ में समभाग बकरी के दूध से संस्कार किये हुए तूतिया का नाम—(२) दार्विकाक्वाथोद्भव ।

रसाञ्जन का नाम—(३) तुत्थ ।

(त्रीणि संस्कृततुत्थस्य)

रसाञ्जनम् ॥१०१॥

रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं

रसौंत के ३ नाम—(१) रसाञ्जन (२) रसगर्भ (३) तार्क्ष्यशैल ॥१०१॥

(त्रीणि गन्धाश्मनः)

गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।

सौगन्धिकश्च

गन्धक के ३ नाम—(१) गन्धाश्मन् (२) गंधिक (३) सौगन्धिक ।

(त्रीणि तुत्थविशेषस्य)

चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥१०२॥

काले सुरमे के ३ नाम—(१) चक्षुष्या (२) कुलाली (३) कुलत्थिका ॥१०२॥

(चत्वारि सन्तप्तपित्तलादुत्पन्नाञ्जनस्य)

रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।

तपाये हुए पीतल के अंजन के ४ नाम—(१) रीतिपुष्प (२) पुष्पकेतु (३) पौष्पक (४) कुसुमाञ्जन ।

(पंच हरितालस्य)

पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके१०३

हरताल के ५ नाम—(१) पिंजर (२) पीतन (३) ताल (४) आल (५) हरिताल ॥१०३॥

(पंच शिलाजतुनः)

गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।

शिलाजीत के ५ नाम—(१) गैरेय (२) अर्थ्य (३) गिरिज (४) अश्मज (५) शिलाजतु ।

(पञ्च गन्धरसस्य)

बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः १०४

गन्धरस के ५ नाम—(१) बोल (२) गन्धरस (३) प्राण (४) पिण्ड (५) गोपरस॥१०४॥

(चत्वारि सामुद्रफेनस्य)

डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः

समुद्रफेन के ३ नाम—(१) डिण्डीर (२) अब्धिकफ (३) फेन ।

---

१ उक्तं च ग्रन्थान्तरे—

सुवर्णं रजतं ताम्रं रीतिः कांस्यं तथा त्रपु ।
सीसं कालायसं चैवमष्टौ लोहानि चक्षते ॥

(त्रीणि सिन्दूरस्य)

सिन्दूरं नागसम्भवम् ।

सिन्दूर के ३ नाम—(१) सिन्दूर (२) नागसम्भव ।

(चत्वारि सीसकस्य)

नागसीसकयोगेष्टवप्राणि

सीसे के ४ नाम—(१) नाग (२) सीसक (३) योगेष्ट (४) वप्र ।

(चत्वारि वंगस्य)

त्रपु पिच्चटम् ॥१०५॥

रंगवंगे

राँगे के ४ नाम—(१) त्रपु (२) पिच्चट (३) रंग (४) वंग ॥ १०५ ॥

(द्वे तूलस्य)

अथ पिचुस्तूलः

रुई के २ नाम—(१) पिचु (२) तूल ।

(चत्वारि कुसुम्भस्य)

अथ कमलोत्तरम् ।

स्यात् कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि१०६

कुसुम्भ के ४ नाम—(१) कमलोत्तर (२) कुसुम्भ (३) वह्निशिख (४) महारजन ॥१०६॥

(द्वे कम्बलस्य)

मेषकम्बल ऊर्णायुः

कम्बल के २ नाम—(१) मेषकम्बल (२) ऊर्णायु ।

(द्वे शशलोम्नः)

शशोर्णं शशलोमनि ।

खरगोश के ऊन के २ नाम—(१) शशोर्ण (२) शशलोम ।

(त्रीणि मधुनः)

मधु क्षौद्रं माक्षिकादि

शहद के ३ नाम—(१) मधु (२) क्षौद्र (३) माक्षिक ।

(द्वे सिक्थकस्य)

मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥१०७॥

मोम के ३ नाम—(१) मधूच्छिष्ट (२) सिक्थक ॥ १०७ ॥

(सप्त मनःशिलायाः)

मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।

नैपाली कुनटी गोला

मैनसिल के ७ नाम—(१) मनःशिला (२) मनोगुप्ता (३) मनोह्वा (४) नागजिह्विका (५) नैपाली (६) कुनटी (७) गोला ।

(त्रीणि यवक्षारस्य)

यवक्षारो यवाग्रजः ॥१०८॥

पाक्यः

जवाखार (शोराविशेष) के ३ नाम—(१) यवक्षार (२) यवाग्रज (३) पाक्य ॥ १०८ ॥

(त्रीणि सर्जिकाक्षारस्य)

अथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।

सज्जीखार (खारी मिट्टी) के ३ नाम—(१) सर्जिकाक्षार (२) कापोत (३) सुखवर्चक ।

(द्वे क्षारभेदस्य)

सौवर्चलं स्याद्रुचकं

क्षारभेद (संचलखार) के २ नाम—(१) सौवर्चल (२) रुचक ।

(द्वे वंशरोचनायाः)

त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥१०९॥

वंशलोचन के २ नाम—(१) त्वक्क्षीरी (२) वंशरोचना ॥१०९॥

(द्वे श्वेतमरिचस्य)

सिन्धुजं श्वेतमरिचं

सफेद मरिच के २ नाम—(१) सिन्धुज (२) श्वेत मरिच ।

(एकमिक्षुमूलस्य)

मोरटं मूलमैक्षवम् ।

ऊँख की जड़ का नाम—(१) मोरट ।

(त्रीणि पिप्पलीमूलस्य)

ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि११०

पिपरामूल के ३ नाम—(१) ग्रन्थिक

पिप्पलीमूल (३) चटकाशिरस् ॥११०॥

(द्वे 'जटामासी'तिनाम्ना ख्यातायाः)

गोलोमी भूतकेशो ना

जटामासी के २ नाम—(१) गोलोमी (२) भूतकेश । इनमें (१) स्त्री (२) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे रक्तचन्दनसदृशवर्णपतंगस्य)

पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।

पतंग के २ नाम—(१) पत्राङ्ग (२) रक्तचन्दन ।

(त्रीणि शुण्ठीपिप्पलीमरिचानां समाहारस्य)

त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषम्

सोंठ, काली मिर्च और पिप्पली, इनके समुदाय के ३ नाम—(१) त्रिकटु (२) त्र्यूषण (३) व्योष ।

(त्रीणि त्रिफलायाः)

त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥१११॥

आँवला, हर्र और बहेड़ा, इनके समुदाय के २ नाम—(१) त्रिफला (२) फलत्रिक ॥१११॥

इति वैश्यवर्गः ॥९॥

अथ शूद्रवर्गः १०

(चत्वारि शूद्रस्य)

शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।

[1]शूद्र के ४ नाम—(१) शूद्र (२) अवरवर्ण (३) वृषल (४) जघन्यज ।

(एकं चण्डालस्य)

आचण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः॥१॥

किसी ब्राह्मणी का किसी शूद्र से संसर्ग हो जाय और उससे सन्तति उत्पन्न हो, उसका नाम—(१) चण्डाल । चण्डाल से लेकर अम्बष्ठ करण आदि संकर सन्तानों का नाम—(१)—संकीर्ण ॥१॥

(एकं शूद्रायां विशो जातस्य)

शूद्राविशोस्तु करणः

[2]शूद्रा स्त्री और वैश्य पुरुष के संसर्ग से जायमान सन्तति का नाम—(१) करण ।

(एकं वैश्यायां ब्राह्मणाज्जातस्य)

अम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।

वैश्या स्त्री और ब्राह्मण पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) अम्बष्ठ ।

(एकं शूद्रायां क्षत्रियाज्जातस्य)

शूद्राक्षत्रिययोरुग्रः

शूद्रा स्त्री में क्षत्रिय के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान का नाम—(१) उग्र ।

(एकं क्षत्रियायां वैश्याज्जातस्य)

मागधः क्षत्रियाविशोः ॥२॥

क्षत्रियाणी में वैश्य से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) मागध ॥२॥

(एकं वैश्यायां क्षत्रियाज्जातस्य)

माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः

वैश्य स्त्री और क्षत्रिय पुरुष के संसर्ग से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) माहिष्य ।

(एकं वैश्यायां शूद्राज्जातस्य)

क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

वैश्य स्त्री में शूद्र के संसर्ग से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) क्षत्ता ।

---

१ 'दीर्घवैरमसूया च, असत्यं ब्रह्मदूषणम् ।
पैशुन्यं निर्दयत्वञ्च, जानीयाच्छूद्रलक्षणम् ॥

२ याज्ञवल्क्यः—
विप्रान्मूर्धावसिक्तस्तु क्षत्रियायां विशः स्त्रियाम् ।
जातोऽम्बष्ठस्तु शूद्रायां **निषादः पार्शवो**ऽपि वा ।
माहिष्योग्रौ प्रजायेते विट्शूद्राङ्गनयोर्नृपात् ।
शूद्रायां **करणो** वैश्याद्विन्नास्वेष विधिः स्मृतः ॥
ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्**सूतो** वैश्याद्**वैदेहकः** स्मृतः ।
शूद्राज्जातस्तु **चाण्डालः** सर्वधर्मबहिष्कृतः ।
क्षत्रिया**मागध**वैश्याच्छूद्रात्**क्षत्तारमेव** च ।
शूद्रादा**योगवं** वैश्याज्जनयामास वै सुतम् ।
माहिष्येण करण्यां तु **रथकारः** प्रजायते ।
असत्सन्तस्तु विज्ञेयाः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥

(एकं ब्राह्मण्यां क्षत्रियाज्जातस्य)

ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतः

ब्राह्मणी में क्षत्रिय से उत्पन्न सन्तति का नाम—(१) सूत ।

(एकं ब्राह्मण्यां वैश्याज्जातस्य)

तस्यां वैदेहको विशः ॥३॥

ब्राह्मणी में वैश्य के संयोग से उत्पन्न सन्तान का नाम—(१) वैदेहक ॥३॥

(एकं करण्यां माहिष्याज्जातस्य)

रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य सम्भवः ।

करणी (शूद्रा में वैश्य के संसर्ग से उत्पन्न पुरुष की स्त्री) में उत्पन्न माहिष्य (वैश्या में क्षत्रिय पुरुष के संयोग से उत्पन्न पुरुष) सन्तति का नाम—(१) रथकार ।

(एकं ब्राह्मण्यां वृषलेन जनितस्य)

स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः॥४॥

ब्राह्मणी में शूद्र के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान का नाम—(१) चण्डाल ॥४॥

(द्वे शिल्पिनः)

कारुः शिल्पी

कारीगर के २ नाम—(१) कारु (२) शिल्पिन् ।

(एकं शिल्पिनां संहतेः)

संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः ।

शिल्पियों के समुदाय का नाम-(१) श्रेणि ।

(द्वे शिल्पिकुलप्रधानस्य)

कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी

शिल्पियों के अध्यक्ष के २ नाम—(१) कुलक (२) कुलश्रेष्ठिन् ।

(द्वे मालाकारस्य)

मालाकारस्तु मालिकः ॥५॥

माली के २ नाम—(१) मालाकार (२) मालिक ॥५॥

(द्वे कुलालस्य)

कुम्भकारः कुलालः स्यात्

कुम्हार के २ नाम—(१) कुम्भकार (२) कुलाल ।

(द्वे गृहादौ लेपनकर्मकारिणः)

पलगण्डस्तु लेपकः ।

पुताई का काम करनेवाले के २ नाम—(१) पलगण्ड (२) लेपक ।

(द्वे तन्तुवायस्य)

तन्तुवायः कुविन्दः स्यात्

जुलाहे के २ नाम-(१) तन्तुवाय (२) कुविन्द ।

(द्वे सौचिकस्य)

तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥६॥

दरजी के २ नाम-(१) तुन्नवाय (२) सौचिक॥६॥

(द्वे चित्रकारस्य)

रंगाजीवश्चित्रकरः

चित्रकार (रंगसाज) के २ नाम—(१) रंगाजीव (२) चित्रकर ।

(द्वे शस्त्रघर्षणोपजीविनः)

शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।

शिकिलीगर, शस्त्र साफ करनेवालों के २ नाम—(१) शस्त्रमार्ज (२) असिधावक ।

(द्वे चर्मकारस्य)

पादूकृच्चर्मकारः स्यात्

चमार के २ नाम—(१) पादूकृत् (२) चर्मकार ।

(द्वे लोहकारकस्य)

व्योकारो लोहकारकः ॥७॥

लोहार के २ नाम—(१) व्योकार (२) लोहकारक ॥७॥

(चत्वारि स्वर्णकारस्य)

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः

सोनार के ४ नाम—(१) नाडिन्धम (२) स्वर्णकार (३) कलाद (४) रुक्मकारक ।

(द्वे कङ्कणकारस्य)

स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः

चुरिहार के २ नाम—(१) शाङ्खिक (२) काम्बविक ।

(द्वे शौल्बिकस्य)

शौल्बिकस्ताम्रकुट्टकः ॥८॥

ठठेरे के २ नाम—(१) शौल्बिक (२) ताम्रकुट्टक ॥८॥

(पंच रथकारस्य)

तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारस्तु काष्ठतट् ।

बढ़ई के ५ नाम—(१) तक्षा (२) वर्धकि (३) त्वष्टृ (४) रथकार (५) काष्ठतक्ष् ।

(द्वे ग्राम्यरथकारस्य)

ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः

ग्रामीण बढ़ई के २ नाम—(१) ग्रामाधीन (२) ग्रामतक्ष ।

(द्वे स्वतंत्ररथकारस्य)

कौटतक्षोऽनधीनकः ॥९॥

स्वतंत्रतापूर्वक काम करनेवाले प्रधान बढ़ई के २ नाम—(१) कौटतक्ष (२) अनधीनक ॥९॥

(पंच नापितस्य)

क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्तिर्नापितान्तावसायिनः

नाई के ५ नाम—(१) क्षुरी (२) मुण्डिन् (३) दिवाकीर्ति (४) नापित (५) अन्तावसायिन् ।

(द्वे रजकस्य)

निर्णेजकः स्याद्रजकः

[1]धोबी के २ नाम—(१) निर्णेजक (२) रजक ।

(द्वे शौण्डिकस्य)

शौण्डिको मण्डहारकः ॥१०॥

कलवार के २ नाम—(१) शौण्डिक (२) मण्डहारक ॥१०॥

(द्वे अजाजीवस्य)

जाबालः स्यादजाजीवः

गड़रिये के २ नाम—(१) जाबाल (२) अजाजीव ।

[1] धोबी, चमार आदि अंगिरा के मतानुसार अन्त्यज हैं-
रजकश्चर्मकारश्च नटो बुरुड एव च ।
कैवर्तमेदभिल्लाश्च सप्तैते अन्त्यजाः स्मृताः ॥

(द्वे देवलस्य)

देवाजीवस्तुदेवलः ।

पण्डे के २ नाम--(१) देवाजीव (२) देवल ।

(द्वे इन्द्रजालस्य)

स्यान्माया शाम्बरी

इन्द्रजाल (नजरबन्दी) के २ नाम--(१) माया (२) शाम्बरी ।

(द्वे इन्द्रजालिनः)

मायाकारस्तु प्रतिहारकः ॥११॥

मदारी, बाजीगर के २ नाम--(१) मायाकार (२) प्रतिहारक ॥११॥

(षट् शैलूषस्य)

शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः ।
भरता इत्यपि नटाः

नट के ६ नाम—(१) शैलालिन् (२) शैलूष (३) जायाजीव (४) कृशाश्वी (५) भरत (६) नट ।

(द्वे चारणस्य)

चारणास्तु कुशीलवाः ॥१२॥

कत्थक, बन्दीजन के २ नाम—(१) चारण (२) कुशीलव ॥१२॥

(द्वे मार्दंगिकस्य)

मार्दंगिका मौरजिकाः

मृदंग बजानेवाले के २ नाम—(१) मार्दङ्गिक (२) मौरजिक ।

(द्वे पाणिवादस्य)

पाणिवादास्तु पाणिघाः ।

ताली बजानेवाले के २ नाम—(१) पाणिवाद (२) पाणिघ ।

(द्वे वैणविकस्य)

वेणुध्माः स्युर्वैणविकाः

बांसुरी बजानेवाले के २ नाम—(१) वेणुध्म (२) वैणविक ।

(द्वे वीणावादस्य)

वीणावादास्तु वैणिकाः ॥१३॥

वीणा बजानेवाले के २ नाम—(१) वीणावाद (२) वैणिक ॥१३॥

(द्वे जीवान्तकस्य)

जीवान्तकः शाकुनिकः

चिड़ीमार के २ नाम —(१) जीवान्तक (२) शाकुनिक ।

(द्वे व्याधस्य)

द्वौ वागुरिक-जालिकौ ।

बहेलिये के २ नाम—(१) वागुरिक (२) जालिक ।

(त्रीणि मांसिकस्य)

वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम् १४

कसाई के ३ नाम—(१) वैतंसिक (२) कौटिक (३) मांसिक ॥१४॥

(चत्वारि वैतनिकस्य)

भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः ।

मजदूर के ४ नाम—(१) भृतक (२) भृतिभुज् (३) कर्मकर (३) वैतनिक ।

(द्वे वार्ताहारिणः)

वार्तावहो वैवधिकः

सन्देश लेजानेवाले (सन्देसिहा) के २ नाम–(१) वार्तावह (२) वैवधिक ।

(द्वे भारवाहस्य)

भारवाहस्तु भारिकः ॥१५॥

बोझा ढोनेवाले के २ नाम—(१) भारवाह (२) भारिक ॥१५॥

(दश नीचस्य)

विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।
निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः१६

नीच के १० नाम—(१) विवर्ण (२) पामर (३) नीच (४) प्राकृत (५) पृथग्जन (६) निहीन (७) अपसद (८) जाल्म (९) क्षुल्लक (१०) इतर ॥१६॥

(एकादश दासस्य)

भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।
नियोज्यकिंकरप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥१७

[1]दास (टहलुआ) के ११ नाम—(१) भृत्य (२) दासेर (३) दासेय (४) दास (५) गोप्यक (६) चेटक (७) नियोज्य (८) किंकर (९) प्रैष्य (१०) भुजिष्य (११) परिचारक ॥१७॥

(चत्वारि परैधितस्य)

पराचितपरिस्कंदपरजातपरैधिताः ।

पराई कमाई पर जीनेवाले के ४ नाम—(१) पराचित (२) परिस्कन्द (३) परजात (४) परैधित ।

(षट् मन्दस्य)

मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥१८॥

सुस्त, आलसी के ६ नाम—(१) मन्द (२) तुन्दपरिमृज (३) आलस्य (४) शीतक (५) अलस (६) अनुष्ण ॥ १८ ॥

(षट् पटोः)

दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।

चतुर के ६ नाम—(१) दक्ष (२) चतुर (३) पेशल (४) पटु (५) सूत्थान (६) उष्ण ।

(दश चाण्डालस्य)

चण्डालप्लवमातंगदिवाकीर्तिजनंगमाः॥१९॥
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।

[2]चाण्डाल के १० नाम—(१) चण्डाल (२) प्लव (३) मातङ्ग (४) दिवाकीर्ति (५) जनंगम (६) निषाद (७) श्वपच (८) अन्तेवासिन् (९) चाण्डाल (१०) पुक्कस ॥१९॥

(चाण्डालस्य भेदाः)

भेदाःकिरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥२०॥

[3]चाण्डाल के भेद--(१) किरात (२) शबर (३) पुलिन्द । ये सभी म्लेच्छ हैं ॥२०॥

---

१ मनुस्मृति के अनुसार ७ प्रकार के दास होते हैं—
ध्वजाहृतो भक्तदासः गृहजः क्रीतदत्रिमौ ।
पैत्रिको दण्डदासश्च सप्तैते दासयोनयः ॥

२ उशना महाराज कहते हैं—
ब्राह्मण्यां शूद्रसंसर्गाज्जातश्चाण्डाल उच्यते ।
चाण्डालाद्वैश्यकन्यायां जातः श्वपच उच्यते ॥

३ पहाड़ी भीलों को 'किरात' कहते हैं। इन्हीं का

(चत्वारि मृगवधव्यवसायिनः)

व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।

मृग मारनेवाले बहेलिये के ४ नाम—(१) व्याध (२) मृगवधाजीव (३) मृगयु (४) लुब्धक ।

(सप्त सारमेयस्य)

कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः॥२१॥ शुनको भषकः श्वा स्यात्

कुत्ते के ७ नाम (१) कौलेयक (२) सारमेय (३) कुक्कुर (४) मृगदंशक (५) शुनक (६) भषक (७) श्वन् ॥२१॥

(एकं प्रयोगोन्मत्तशुनः)

अलर्कस्तु स योगितः ।

शिकार के लिए छोड़ने पर उन्मत्त हो जानेवाले कुत्ते का नाम—(१) अलर्क ।

(एकं मृगयापटोः कुक्कुरस्य)

श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः

शिकारी कुत्ते का नाम—(१) विश्वकद्रु ।

(द्वे शुन्याः)

सरमा शुनी ॥२२॥

कुतिया के २ नाम—(१) सरमा (२) शुनी ॥२२॥

(एकं ग्राम्यसूकरस्य)

विट्चरः सूकरो ग्राम्यः

गाँव के सूअर का नाम—(१) विट्चर ।

(एकं तरुणपशुमात्रस्य)

बर्करस्तरुणः पशुः ।

बकरा या तरुण पशु का नाम—(१) बर्कर ।

(चत्वारि आखेटस्य)

आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटोमृगयास्त्रियाम् २३

शिकार के ४ नाम--(१) आच्छोदन (२) मृगव्य (३) आखेट (४) मृगया । इनमें (४) स्त्रीलिङ्ग (१-२) नपुंसक लिङ्ग (३) पुँल्लिङ्ग हैं ॥२३॥

(एकं दक्षिणाङ्गे व्रणवतः कुरङ्गस्य)

दक्षिणारुर्लुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।

व्याध द्वारा दहिने अङ्ग से घायल हिरन का नाम--(१) दक्षिणेर्मन् ।

(दश चौरस्य)

चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥२४॥ प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।

चोर के १० नाम--(१) चोर (२) ऐकागारिक (३) स्तेन (४) दस्यु (५) तस्कर (६) मोषक (७) प्रतिरोधिन् (८) परास्कन्दिन् (९) पाटच्चर (१०) मलिम्लुच ॥२४॥

(चत्वारि स्तेयस्य)

चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयम्

चोरी के ४ नाम--(१) चौरिका (२) स्तैन्य (३) चौर्य (४) स्तेय ।

(एकं चौर्याप्तधनस्य)

लोप्त्रं च तद्धने ॥२५॥

चोरी के माल का नाम-(१) लोप्त्र ॥२५॥

(एकं मृगपक्षिणां बन्धनोपकरणस्य)

वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।

मृग और पक्षियों को बाँधने की सामग्री (पिंजड़ा, जंजीर, जाल आदि) का नाम-(१) वीतंस ।

(द्वे छलेन मृगपक्षिणां बन्धनजालस्य)

उन्माथः कूटयंत्रं स्यात्

फन्दे के २ नाम-(१) उन्माथ (२) कूटयन्त्र ।

(द्वे जालस्य)

वागुरा मृगबन्धनी ॥२६॥

जाल के २ नाम--(१) वागुरा (२) मृगबन्धनी ॥२६॥

(पंच रज्जोः)

शुल्बं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।

रस्सी के ५ नाम--(१) शुल्ब (२) वराटक (३) रज्जु (४) वटी (५) गुण । इनमें (१-२) नपुंसक (३) स्त्री (४) तीनों लिंग है ।

स्वरूप महादेवजी ने धारण किया था (देखिए किरातार्जुनीय) । ये शिकार कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं । प्रसिद्ध यूनानी लेखक एरियन (Arrian) ने इन kirrhadoe को भारत का मूल निवासी बतलाया है ।

और (५) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे येन कूपाज्जलमूर्ध्वं बाह्यते तस्य)

उद्घाटनं घटीयंत्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥२७॥

कुएँ से जल निकालनेवाले रहट (पुरवट) के २ नाम--(१) उद्घाघटन (२) घटीयंत्र ॥२७॥

(द्वे वस्त्रव्यूतिदण्डस्य)

पुंसि वेमा वायदण्डः

जिससे कि कपड़ा बुना जाता है उस करघे के २ नाम--(१) वेमन् (२) वायदण्ड । ये दोनों ही पुँल्लिङ्ग हैं ।

(द्वे सूत्रस्य)

सूत्राणि नरि तन्तवः ।

सूत के २ नाम--(१) सूत्र (२) तन्तु । इनमें (१) नपुंसक (२) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे व्यूतेः)

वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये

कपड़ा बुनने के २ नाम--(१) वाणि (२) व्यूति । ये (१-२) स्त्रीलिङ्ग हैं ।

(एकं लेप्यादिकर्मणः)

[1]पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥२८॥

लीपने-पोतने का नाम--(१) पुस्त ॥२८॥

(द्वे पाञ्चालिकायाः)

पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिःकृता ।

कपड़े या दाँत की बनी गुड़िया के २ नाम--(१) पाञ्चालिका (२) पुत्रिका ।

(एकैकं जतुना त्रपुणा वा निर्मितायाः)

जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु ॥२९॥

लाख से बनी वस्तु का नाम--(१) जातुष । राँगा की बनी वस्तु का नाम--(१) त्रापुष ॥२९॥

(चत्वारि पेटकस्य)

पिटकः पेटकः पेटा मंजूषा

पेटारे के ४ नाम--(१) पिटक (२) पेटक (३) पेटा (४) मंजूषा ।

(द्वे भारयष्टेः)

अथ विहङ्गिका ।

भारयष्टिः

बहँगी के २ नाम--(१) विहंगिका (२) भारयष्टि ।

(द्वे शिक्यस्य)

तदालम्बि शिक्यं काचः

बँहगी में लटकनेवाले छींके के २ नाम--(१) शिक्य (२) काच ।

(त्रीणि उपानहः)

अथ पादुका ॥३०॥

पादूरुपानत् स्त्री

जूते के ३ नाम--(१) पादुका (२) पादू (३) उपानह ॥३०॥

(एकमनुपदीनायाः)

सैवानुपदीना पदायता ।

मोजा का नाम--(१) अनुपदीना ।

(त्रीणि चर्मरज्जोः)

नध्री वध्री वरत्रा स्यात्

चमड़े की रस्सी के ३ नाम--(१) नध्री (२) वध्री (३) वरत्रा ।

(एकं अश्वादेस्ताडन्या रज्जोः)

अश्वादेस्ताडनी कशा ॥३१॥

चाबुक (ज़ेरबन्द) का नाम--(१) कशा ॥३१॥

(त्रीणि अन्त्यजवीणायाः)

चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी

किंगिरी बाजे के ३ नाम--(१) चाण्डालिका (२) कण्डोलवीणा (३) चण्डालवल्लकी ।

(द्वे स्वर्णकारलोहशलाकायाः)

नाराची स्यादेषणिका

सोनार के काँटे तराजू के २ नाम--(१) नाराची (२) एषणिका ।

(त्रीणि निकषस्य)

शाणस्तु निकषः कषः ॥३२॥

सान, कसौटी के ३ नाम--(१) शाण (२) निकष (३) कष ॥३२॥

---

१ आदिना काष्ठपुत्तलिकाकर्म गृह्यते । यदुक्तम्—
मृदा वा दारुणा वाथ वस्त्रेणाप्यथ चर्मणा ।
लोहरत्नैः कृतं वापि पुस्तमित्यभिधीयते ॥

(द्वे व्रश्चनायाः)

व्रश्चना पत्रपरशुः

रेती के २ नाम—(१) व्रश्चना (२) पत्रपरशु।

(द्वे ईषिकायाः)

ईषिका तूलिका समे ।

सलाई के २ नाम—(१) ईषिका (२) तूलिका। दोनों ही स्त्रीलिङ्ग हैं।

(द्वे मूषायाः)

तैजसावर्तनी मूषा

सोना-चाँदी गलाने की घरिया के २ नाम—(१) तैजसावर्तनी (२) मूषा।

(द्वे भस्त्रायाः)

भस्त्रा चर्मप्रसेविका ॥३३॥

धौंकनी, भाथी के २ नाम—(१) भस्त्रा (२) चर्मप्रसेविका ॥३३॥

(द्वे आस्फोटन्याः)

आस्फोटनी वेधनिका

बर्मा के २ नाम—(१) आस्फोटनी (२) वेधनिका।

(द्वे कर्तर्याः)

कृपाणी कर्तरी समे ।

कतरनी, सोना चाँदी आदि धातु काटनेवाली कैंची के २ नाम—(१) कृपाणी (२) कर्तरी।

(द्वे वृक्षभेदन्याः)

वृक्षादनी वृक्षभेदी

बसूले के २ नाम—(१) वृक्षादनी (२) वृक्षभेदी।

(द्वे टंकस्य)

टंकः पाषाणदारणः ॥३४॥

टाँकी (बड़ी छीनी) के २ नाम—(१) टंक (२) पाषाणदारण ॥३४॥

(द्वे क्रकचस्य)

क्रकचोऽस्त्री करपत्रम्

आरा-आरी के २ नाम—(१) क्रकच (२) करपत्र।

(द्वे आरायाः)

आरा चर्मप्रभेदिका ।

चमार के चाकू के २ नाम—(१) आरा (२) चर्मप्रभेदिका।

(त्रीणि अयसः प्रतिमायाः)

सूर्मी स्थूणाऽयःप्रतिमा

लोहे की मूर्ति के ३ नाम—(१) सूर्मी (२) स्थूणा (३) अयःप्रतिमा।

(एकं कलादिकर्मणः)

शिल्पं कर्म कलादिकम् ॥३५॥

कारीगरी के काम का नाम-(१) शिल्प ॥३५॥

(अष्टौ प्रतिमायाः)

प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ।

प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधिः

प्रतिमा के ८ नाम—(१) प्रतिमान (२) प्रतिबिम्ब (३) प्रतिमा (४) प्रतियातना (५) प्रतिच्छाया (६) प्रतिकृति (७) अर्चा (८) प्रतिनिधि। इनमें (१-२) नपुंसक, (३-७) स्त्रीलिङ्ग (८) पुँल्लिङ्ग है।

(द्वे उपमानस्य)

उपमोपमानं स्यात् ॥३६॥

उपमान (मिसाल) के २ नाम—(१) उपमा (२) उपमान ॥३६॥

(सप्त सदृशस्य)

वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षः सदृशः सदृक् ।

साधारणः समानश्च

बराबरी के ७ नाम—(१) सम (२) तुल्य (३) सदृक्ष (४) सदृश (५) सदृश् (६) साधारण (७) समान। (१-७) सब तीनों लिङ्ग हैं।

(पंच समानस्य)

स्युरुत्तरपदे त्वमी ॥३७॥

निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ।

समान के ५ नाम—(१) निभ (२)

संकाश (३) नीकाश (४) प्रतीकाश (५) उपमा। [विशेष करके उपमा के समय उत्तरपद में ही इनका प्रयोग होता है। जैसे—'पितृनिभः पुत्रः' पिता के समान पुत्र है इत्यादि] ॥३७॥

(एकादश वेतनस्य)

कर्मण्या तु विधा भृत्या भृतयो भर्म वेतनम्
भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि।

वेतन, मजदूरी के ११ नाम—(१) कर्मण्या (२) विधा (३) भृत्या (४) भृति (५) भर्मन् (६) वेतन (७) भरण्य (८) भरण (९) मूल्य (१०) निर्वेश (११) पण ॥३८॥

(त्रयोदश मद्यस्य)

सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा ३९
गन्धोत्तमा प्रसन्नेरा कादम्बर्यः परिस्रुता।
मदिरा कश्यमद्ये चापि

शराब, मदिरा के १३ नाम—(१) सुरा (२) हलिप्रिया (३) हाला (४) परिस्रुत् (५) वरुणात्मजा (६) गन्धोत्तमा (७) प्रसन्ना (८) इरा (९) कादम्बरी (१०) परिस्रुता (११) मदिरा (१२) कश्य (१३) मद्य ॥३९॥

(एकं पानरुचिजननाय यद्द्रव्यं जनादिकं भक्ष्यते तस्य)

अवदंशस्तु भक्षणम् ॥४०॥

पीते समय मदिरा के साथ खायी जानेवाली वस्तु का नाम—(१) अवदंश ॥४०॥

(द्वे मदस्थानस्य)

शुण्डापानं मदस्थानम्

कलवरिया, मद्यपान के स्थान के २ नाम—(१) शुण्डापान (२) मदस्थान।

(द्वे मद्यपानसमयस्य)

मधुवारा मधुक्रमाः।

मदिरा पीने के समय के २ नाम—(१) मधुवार (२) मधुक्रम।

(द्वे धातकीपुष्पमधुसंहितमधूकपुष्पासवस्य)

मध्वासवो माधवको मधुमाध्वीकमद्वयोः ४१

[१]महुआ के शराब के ४ नाम—(१) मध्वासव (२) माधवक (३) मधु (४) माध्वीक ॥४१॥

(त्रीणि धातकीपुष्पगुडधान्याम्लसंहितस्य सुराविशेषस्य)

मैरेयमासवः सीधुः

गुड़ शाकादि से बनी मदिरा के ३ नाम—(१) मैरेय (२) आसव (३) सीधु। इनमें (१) नपुंसक (२) पुँल्लिङ्ग (३) पुं-नपुंसकलिङ्ग है।

(द्वे सुराकल्कस्य)

मेदको जगलः समौ।

शराब के काढ़े के २ नाम—(१) मेदक (२) जगल।

(द्वे मद्यसंधानस्य)

संधानं स्यादभिषवः

मदिरा बनाने के २ नाम—(१) संधान (२) अभिषव।

(तण्डुलादिद्रव्यकृतबीजस्य)

किण्वं पुंसि तु नग्नहूः ॥४२॥

तण्डुलादि द्रव्य से बनी मदिरा के २ नाम—(१) किण्व (२) नग्नहू। इनमें (१) नपुंसक (२) पुँल्लिङ्ग है ॥ ४२ ॥

(द्वे सुरामण्डस्य)

कारोत्तरः सुरामण्डः

मदिरा के माड़ के २ नाम—(१) कारोत्तर (२) सुरामण्ड।

(द्वे पानगोष्ठिकायाः)

आपानं पानगोष्ठिका।

मद्यपान के लिए एकत्र शराबियों की मण्डली के २ नाम—(१) आपान (२) पानगोष्ठिका।

(द्वे पानपात्रस्य)

चषकोऽस्त्री पानपात्रम्

शराब पीने के प्याले के २ नाम—(१) चषक (२) पानपात्र। इनमें (१) पुं-नपुंसक, (२) नपुंसक है।

---

१ शुद्धशौनकः—
मध्वासवः स विज्ञेयो धातकीक्वाथमाक्षिकात्।

(द्वे मद्यपानक्रियायाः)

सरकोऽप्यनुतर्षणम् ॥४३॥

मदिरा पीने के २ नाम—(१) सरक (२) अनुतर्षण ॥४३॥

(पंच द्यूतकृतः)

धूर्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्तो द्यूतकृत्समाः ।

जुआरी के ५ नाम—(१) धूर्त (२) अक्षदेविन् (३) कितव (४) अक्षधूर्त (५) द्यूतकृत् ।

(द्वे ऋणादौ प्रतिनिधिभूतस्य)

स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः

जामीन, जमानतदार के २ नाम—(१) लग्नक (२) प्रतिभू ।

(द्वे द्यूतकारकस्य)

सभिका द्यूतकारकाः ॥४४॥

जुआ खेलानेवाले (नालिया, फड़बाज) के २ नाम—(१) सभिक (२) द्यूतकारक ॥४४॥

(चत्वारि द्यूतस्य)

द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ।

जुए के ४ नाम—(१) द्यूत (२) अक्षवती (३) कैतव (४) पण । इनमें (१ ला) पुं-नपुंसक है ।

(द्वे पणस्य)

पणोऽक्षेषु ग्लहः

बाजी लगाने के २ नाम—(१) पण (२) ग्लह ।

(त्रीणि पाशकस्य)

अक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ॥४५॥

पाँसे के ३ नाम—(१) अक्ष (२) देवन (३) पाशक ॥ ४५ ॥

(एकं शारीणामितस्ततो नयनस्य)

परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयने

पासे, गोटी को इधर-उधर फेंकने का नाम—(१) परिणाय ।

(द्वे शारिफलकस्य)

ऽस्त्रियाम्

अष्टापदं शारिफलम्

चौपड़ के २ नाम—(१) अष्टापद (२) शारिफल । ये (१–२) पुं-नपुंसक हैं ।

(द्वे प्राणिद्यूतस्य)

प्राणिद्यूतं समाह्वयः ॥४६॥

मुरगा, तीतर आदि की लड़ाई पर जुआ खेलने के २ नाम—(१) प्राणिद्यूत (२) समाह्वय ॥४६॥

उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ।
ताद्धर्म्यादन्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते॥४७

इस शूद्रवर्ग में यौगिक (कुम्भकार–मालाकार आदि) बहुत से शब्द केवल एक ही लिङ्ग में कहे गये हैं । क्योंकि काव्य-पुराण आदि में ज्यादातर पुँल्लिङ्ग में ही इनका प्रयोग देखा जाता है । सो जहाँ कहीं उन शब्दों को स्त्रीलिङ्ग आदि में प्रयोग करने का अवसर आ पड़े तो तद्धर्मानुसार प्रयोग कर लेना चाहिए । जैसे–मालाकार की स्त्री मालाकारी । कुम्भकार की स्त्री कुम्भकारी । कुम्भकार का कुल कुम्भकारम् आदि ॥४७॥

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
भूम्यादिकाण्डो द्वितीयः साङ्ग एव समर्थितः १

इस प्रकार श्रीअमरसिंह के बनाए हुए नाम और लिङ्गों को बतलानेवाले ग्रन्थ अमरकोष में भूमि आदि शब्दों का काण्ड साङ्गोपाङ्ग कहा ॥१॥

इति श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए० विरचितायां 'धरा' ख्यामरकोषटीकायां

द्वितीयः काण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

अमरकोषः

तृतीयं काण्डम्

विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।
लिङ्गादिसंग्रहैर्वर्गाः सामान्ये वर्गसंश्रयाः ॥१॥

इस तृतीय काण्ड में विशेष्यनिघ्न, संकीर्ण, नानार्थ, अव्यय और लिंगादिसंग्रह वर्गों के द्वारा विविध शब्द कहे जायँगे । इस काण्ड में कहे जानेवाले शब्द स्वतंत्र न होंगे, बल्कि पूर्व के काण्डों में जो कह आये हैं, उन्हींके आश्रित रहेंगे ॥१॥

स्त्रीदाराद्यैर्यद्विशेष्यं यादृशैः प्रस्तुतं पदैः ।
गुणद्रव्यक्रियाशब्दास्तथा स्युस्तस्य भेदकाः ॥२॥

स्त्री तथा दार आदि शब्दों का जहाँ विशेष्यरूप से प्रयोग किया गया हो, वहाँ उसका जो गुण, द्रव्य, क्रिया लिंग और वचन हो उसीके अनुसार द्रव्य गुण क्रिया लिङ्ग और वचन युक्त उनके विशेषणीभूत शब्दों का भी प्रयोग होना चाहिए ।

गुणविशिष्ट वाक्य जैसे-सुकृतिनी स्त्री । सुकृतिनो दाराः । सुकृति कुलम् ।

द्रव्यविशिष्ट वाक्य जैसे--दण्डिनी स्त्री । दण्डिनो दाराः । दण्डि कुलम् ।

क्रियाविशिष्ट वाक्य जैसे-पाचिका स्त्री । पाचका दाराः । पाचकं कुलम् आदि । अतएव आगे आनेवाले सभी शब्दों को त्रिलिङ्गी समझना ॥२॥

(त्रीणि भाग्यसम्पन्नस्य)

सुकृती पुण्यवान् धन्यः

भाग्यवान् के ३ नाम—(१) सुकृतिन् (२) पुण्यवत् (३) धन्य ।

(द्वे उदारचेतसः)

महेच्छस्तु महाशयः ।

उदार चित्तवाले दयालु के २ नाम—(१) महेच्छ (२) महाशय ।

(द्वे प्रशस्तचेतसः)

हृदयालुः सुहृदयः

सीधा आदमी, प्रशस्त चित्तवाले पुरुष के २ नाम—(१) हृदयालु (२) सुहृदय ।

(द्वे दुरापेऽपि कृत्येऽध्यवसितक्रियस्य)

महोत्साहो महोद्यमः ॥३॥

दुःसाध्य कार्य में भी प्रवृत्त होनेवाले उत्साही पुरुष के २ नाम-(१) महोत्साह (२) महोद्यम ॥३॥

(दश प्रवीणस्य)

प्रवीणे निपुणाभिज्ञविज्ञनिष्णातशिक्षिताः ।
वैज्ञानिकः कृतमुखः कृती कुशल इत्यपि ॥४॥

प्रवीण पुरुष के १० नाम—(१) प्रवीण (२) निपुण (३) अभिज्ञ (४) विज्ञ (५) निष्णात (६) शिक्षित (७) वैज्ञानिक (८) कृतमुख (९) कृतिन् (१०) कुशल ॥४॥

(द्वे मान्यस्य)

पूज्यः प्रतीक्ष्यः

मान्य के २ नाम—(१) पूज्य (२) प्रतीक्ष्य ।

(द्वे संशयापन्नचेतसः)

सांशयिकः संशयापन्नमानसः ।

संशय युक्त चित्तवाले पुरुष (शक्की आदमी) के २ नाम—(१) सांशयिक (२) संशयापन्नमानस ।

(त्रीणि दक्षिणार्हस्य)

दक्षिणीयो दक्षिणार्हस्तत्र दक्षिण्य इत्यपि ॥५॥

दक्षिणा पाने योग्य पुरुष के ३ नाम—(१) दक्षिणीय (२) दक्षिणार्ह (३) दक्षिण्य ॥५॥

(चत्वारि दानशूरस्य)

स्युर्वदान्यस्थूललक्ष्यदानशौण्डा बहुप्रदे ।

दानवीर पुरुष के ४ नाम—(१) वदान्य

(२) स्थूललक्ष्य (३) दानशौण्ड (४) बहुप्रद ।

(द्वे आयुष्मतः)

जैवातृकः स्यादायुष्मान्

दीर्घायु के २ नाम—(१) जैवातृक (२) आयुष्मत् ।

(द्वे शास्त्रज्ञस्य)

अन्तर्वाणिस्तु शास्त्रवित् ॥६॥

शास्त्रज्ञ पुरुष के २ नाम—(१) अन्तर्वाणि (२) शास्त्रवित् ॥ ६ ॥

(द्वे परीक्षकस्य)

परीक्षकः कारणिकः

परीक्षक, पारखी के २ नाम—(१) परीक्षक (२) कारणिक ।

(द्वे वराणां दातुः)

वरदस्तु समर्धकः ।

वर देनेवाले पुरुष के २ नाम—(१) वरद (२) समर्धक ।

(चत्वारि प्रसन्नचेतसः)

हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना हृष्टमानसः ॥७।

प्रसन्न चित्त के ४ नाम—(१) हर्षमाण (२) विकुर्वाण (३) प्रमनस् (४) हृष्टमानस ॥७॥

(त्रीणि व्याकुलचेतसः)

दुर्मना विमना अन्तर्मनाः

उदास चित्त, अनमना के ३ नाम-(१) दुर्मनस् (२) विमनस् (३) अन्तर्मनस् ।

(द्वे उत्कण्ठितस्य)

स्यादुत्क उन्मनाः ।

उत्कण्ठित के २ नाम—(१) उत्क (२) उन्मनस् ।

(त्रीणि सरलस्य)

दक्षिणे सरलोदारौ

उदार, सीधे के ३ नाम—(१) दक्षिण (२) सरल (३) उदार ।

(एकं दातृभोक्तुः)

सुकलो दातृभोक्तरि ॥८॥

दानी और भोग करनेवाले का नाम—(१) सुकल ॥८॥

(त्रीणि तात्पर्ययुक्तस्य)

तत्परे प्रसितासक्तौ

काम में व्यग्र पुरुष के ३ नाम—(१) तत्पर (२) प्रसित (३) आसक्त ।

(द्वे अभिमतार्थे सोद्योगस्य)

इष्टार्थोद्युक्त उत्सुकः ।

अभिलषित वस्तु की प्राप्ति में लगे पुरुष के २ नाम—(१) इष्टार्थोद्युक्त (२) उत्सुक ।

(षट् ख्यातस्य)

प्रतीते प्रथितख्यातवित्तविज्ञातविश्रुताः ॥९॥

विख्यात पुरुष के ६ नाम—(१) प्रतीत (२) प्रथित (३) ख्यात (४) वित्त (५) विज्ञात (६) विश्रुत ॥९॥

(द्वे गुणविख्यातस्य)

गुणैः प्रतीते तु कृतलक्षणाहतलक्षणौ ।

गुणों द्वारा ख्यात पुरुष के २ नाम—(१) कृतलक्षण (२) आहतलक्षण ।

(त्रीणि धनिनः)

इभ्य आढ्यो धनी

धनी पुरुष के ३ नाम—(१) इभ्य (२) आढ्य (३) धनिन् ।

(दश स्वामिनः)

स्वामी त्वीश्वरः पतिरीशिता ॥१०॥
अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः ।

स्वामी के १० नाम—(१) स्वामिन् (२) ईश्वर (३) पति (४) ईशितृ (५) अधिभू (६) नायक (७) नेतृ (८) प्रभु (९) परिवृढ (१०) अधिप ॥१०॥

(द्वे समृद्धस्य)

अधिकर्द्धिः समृद्धः स्यात्

समृद्ध पुरुष, भरे पूरे के २ नाम—(१) अधिकर्द्धि (२) समृद्ध ।

(त्रीणि कुटुम्बपालनतत्परस्य)

कुतुम्बव्यापृतस्तु यः ॥११॥

स्यादभ्यागारिकस्तस्मिन्नुपाधिश्च पुमानयम्

कुटुम्ब का भरण-पोषण करने में तत्पर पुरुष के ३ नाम—(१) कुटुम्बव्यापृत (२) अभ्यागारिक (३) उपाधि। (३रा) पुँल्लिङ्ग है ॥११॥

(एकम् वराङ्गरूपयुक्तस्य)

वराङ्गरूपोपेतो यः सिंहसंहननो हि सः॥१२॥

सुडौल और सुन्दर शरीरवाले आदमी का नाम—(१) सिंहसंहनन ॥१२॥

(यः सत्त्वसम्पदायुक्तोव्यसनेऽपि कार्यासक्तस्तस्य)

निर्वार्यः कार्यकर्ता यः सम्पन्नः सत्त्वसंपदा।

[१]विपत्ति में भी (खुशी मन) सात्विक भाव से जो अपना काम करता जाय, उसका नाम–(१) निर्वार्य।

(द्वे मूकस्य)

अवाचि मूकः

गूँगे के २ नाम—(१) अवाच् (२) मूक।

(द्वे पितृतुल्यस्य)

अथ मनोजवसः पितृसन्निभः ॥१३॥

पिता के समान पुरुष के २ नाम–(१) मनोजवस (२) पितृसन्निभ ॥१३॥

(एकमादरपूर्वकालंकृतकन्याप्रदस्य)

सत्कृत्यालंकृतां कन्यां यो ददाति स कूकुदः।

जो वरका सत्कार करके वस्त्राभूषण से सुसज्जित कन्यादान दे, उसका नाम (१) कूकुद।

(चत्वारि लक्ष्मीवतः)

लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणः श्रीलः श्रीमान्

लक्ष्मीवान् के ४ नाम—(१) लक्ष्मीवत् (२) लक्ष्मण (३) श्रील (४) श्रीमत्।

(द्वे वत्सलस्य)

स्निग्धस्तु वत्सलः ॥१४॥

स्नेही पुरुष के २ नाम—(१) स्निग्ध (२) वत्सल ॥१४॥

---

१ सत्त्व का लक्षण—

व्यसनेऽभ्युदये चापि ह्यविकारं सदा मनः।

तत्सत्त्वमिति च प्रोक्तं नयविद्भिर्बुधैः किल ॥

(चत्वारि कृपालोः)

स्याद्दयालुः कारुणिकः कृपालुः सूरतः समाः।

दयालु के ४ नाम—(१) दयालु (२) कारुणिक (३) कृपालु (४) सूरत। ये सभी पुँल्लिङ्ग हैं।

(पंच स्वतंत्रस्य)

स्वतंत्रोऽपावृतः स्वैरी स्वच्छन्दो निरवग्रहः

स्वतंत्र के ५ नाम—(१) स्वतंत्र (२) अपावृत (३) स्वैरिन् (४) स्वच्छन्द (५) निरवग्रह ॥१५॥

(चत्वारि पराधीनस्य)

परतन्त्रः पराधीनः परवान्नाथवानपि।

पराधीन के ४ नाम—(१) परतंत्र (२) पराधीन (३) परवत् (४) नाथवत्।

(पंच अधीनस्य)

अधीनो निघ्न आयत्तोऽस्वच्छन्दोगृह्यकोऽप्यसौ

अधीन के ५ नाम—(१) अधीन (२) निघ्न (३) आयत्त (४) अस्वच्छन्द (५) गृह्यक ॥१६॥

(द्वे सम्मार्जनादिकारिणः)

खलपूः स्याद्बहुकरः

झाड़ू लगानेवाले के २ नाम—(१) खलपू (२) बहुकर।

(द्वे यः स्वल्पकालसाध्यं कार्यं चिरेण करोति तस्यालसविशेषस्य)

दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः।

थोड़े समय का काम बड़ी देर में पूरा करने वाले काहिल के २ नाम—(१) दीर्घसूत्र (२) चिरक्रिय।

(द्वे गुणदोषानविमृश्यकारिणः)

जाल्मोऽसमीक्ष्यकारी स्यात्

बिना विचारे काम करनेवाले के २ नाम—(१) जाल्म (२) असमीक्ष्यकारिन्।

(एकं क्रियासु मन्दस्य कुण्ठस्य वा)

कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ॥१७॥

काम करने में आलसी या कुन्द बुद्धि का नाम—(१) कुण्ठ ॥१७॥

(द्वे कर्मणि शक्तस्य)

कर्मक्षमोऽलंकर्मीणः

काम करने में समर्थ पुरुष के २ नाम—(१) कर्मक्षम (२) अलंकर्मीण ।

(एकं कर्मण्युद्युक्तस्य)

क्रियावान्कर्मसूद्यतः ।

काम में लगे हुए पुरुष का नाम—(१) क्रियावत् ।

(द्वे नित्यं कर्मणि प्रवृत्तस्य)

सः कार्मः कर्मशीलो यः

सर्वदा काम में लगे रहनेवाले के २ नाम—(१) कार्म (२) कर्मशील ।

(द्वे यः प्रयत्नेनारब्धं कर्म समापयति तस्य)

कर्मशूरस्तु कर्मठः ॥१८॥

जो प्रयत्नपूर्वक प्रारम्भ किये हुए कर्म को समाप्त करे, उसके २ नाम-(१) कर्मशूर (२) कर्मठ । १८॥

(द्वे वेतनमादाय कर्मकारिणः)

भरण्यभुक्कर्मकरः

मजदूर के २ नाम—(१) भरण्यभुज् (२) कर्मकर ।

(एकं वेतनं विनापि कर्मकारिणः)

कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।

जो बिना वेतन के भी (बेगार) काम कर दे, उसका नाम—(१) कर्मकार ।

(द्वे मृतमुद्दिश्य स्नातस्य)

अपस्नातो मृतस्नातः

किसी के मरने पर स्नान किये हुए मृतस्नायी पुरुष के २ नाम—(१) अपस्नात (२) मृतस्नात ।

(द्वे मत्स्यमांसभक्षणशीलस्य)

आमिषाशी तु शौष्कुलः ॥१९॥

मांस-मछली खाने वाले के २ नाम—(१) आमिषाशिन् (२) शौष्कुल ॥१९॥

(चत्वारि बुभुक्षितस्य)

बुभुक्षितः स्यात्क्षुधितो जिघत्सुरशनायितः ।

भूखे पुरुष के ४ नाम—(१) बुभुक्षित (२) क्षुधित (३) जिघत्सु (४) अशनायित ।

(द्वे परान्नोपजीविनः)

परान्नः परपिण्डादः

पराये अन्न पर जीनेवाले के २ नाम—(१) परान्न (२) परपिण्डाद ।

(त्रीणि भक्षणशीलस्य)

भक्षको घस्मरोऽद्मरः ॥२०॥

खवैया के ३ नाम—(१) भक्षक (२) घस्मर (३) अद्मर ॥२०॥

(द्वे बुभुक्षयात्यन्तपीडितस्य)

आद्यूनः स्यादौदरिको विजिगीषाविवर्जिते ।

मरभूखे के २ नाम—(१) आद्यून (२) औदरिक ।

(द्वे स्वोदरभरणशीलस्य)

उभौ त्वात्मम्भरिः कुक्षिम्भरिः स्वोदरपूरके॥२१

पेट पालनेवाले के २ नाम—(१) आत्मम्भरि (२) कुक्षिम्भरि ॥२१॥

(द्वे सर्वान्नभोजिनः)

सर्वान्नीनस्तु सर्वान्नभोजी

सर्वभक्षी के २ नाम—(१) सर्वान्नीन (२) सर्वान्नभोजिन् ।

(पंच लुब्धस्य)

गृध्नस्तु गर्धनः ।

लुब्धोऽभिलाषुकस्तृष्णक्

लोभी के ५ नाम (१) गृध्नु (२) गर्धन (३) लुब्ध (४) अभिलाषुक (५) तृष्णज् ।

(द्वे अतिशय लुब्धस्य)

समौ लोलुपलोलुभौ ॥२२॥

अतिशय लोभी के २ नाम—(१) लोलुप (२) लोलुभ ॥२२॥

(द्वे उन्मादशीलस्य)

सोन्मादस्तून्मदिष्णुः स्यात्

सनकी, सिड़ी, पागल के २ नाम—(१) सोन्माद (२) उन्मदिष्णु ।

(द्वे दुर्विनीतस्य)

अविनीतः समुद्धतः ।

अक्खड़ पुरुष के २ नाम—(१) अविनीत समुद्धत ।

(चत्वारि मत्तस्य)

मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबाः

मतवाले के ४ नाम—(१) मत्त (२) शौण्ड (३) उत्कट (४) क्षीब ।

(नव कामुकस्य)

कामुके कमितानुकः ।।२३।।
कम्रः कामयिताभीकः कमनः कामनोऽभिकः।

कामी पुरुष के ९ नाम—(१) कामुक (२) कमितृ (३) अनुक (४) कम्र (५) कामयितृ (६) अभीक (७) कमन (८) कामन (९) अभिक ।।२३।।

(चत्वारि वचनग्राहिणः)

विधेय विनयग्राही वचनेस्थित आश्रवः २४।।

बात मानने वाले के ४ नाम—(१) विधेय (२) विनयग्राहिन् (३) वचनेस्थित (४) आश्रव।।२४।।

(द्वे वशंगतस्य)

वश्यः प्रणेयः

वशीभूत पुरुष के २ नाम—(१) वश्य (२) प्रणेय ।

(त्रीणि विनीतस्य)

निभृतविनीतप्रश्रिताः समाः ।

विनीत पुरुष के ३ नाम—(१) निभृत (२) विनीत (३) प्रश्रित ।

(त्रीणि अविनीतस्य)

धृष्टे धृष्णग्वियातश्च

ढीठ पुरुष के ३ नाम—(१) धृष्ट (२) धृष्णज् वियात ।

(द्वे सप्रतिभस्य)

प्रगल्भः प्रतिभान्विते ।।२५।।

अति निर्भीक के २ नाम—(१) प्रगल्भ (२) प्रतिभान्वित ।।२५।।

(द्वे सलज्जस्य)

स्यादधृष्टे तु शालीनः

लज्जायुक्त पुरुष के २ नाम—(१) अधृष्ट (२) शालीन ।

(द्वे परकीयधर्मादौ प्राप्ताश्चर्यस्य)

विलक्षो विस्मयान्विते ।

विस्मय में पड़े हुए पुरुष के २ नाम—(१) विलक्ष (२) विस्मयान्वित ।

(द्वे कातरस्य)

अधीरे कातरः

घबड़ाये मनुष्य के २ नाम—(१) अधीर (२) कातर ।

(चत्वारि भीरोः)

त्रस्ते भीरुभीरुकभीलुकाः ।।२६।।

डरपोक पुरुष के ४ नाम—(१) त्रस्त (२) भीरु (३) भीरुक (४) भीलुक ।।२६।।

(द्वे वाञ्छाशीलस्य)

आशंशुराशंसितरि

अभीष्ट वस्तु प्राप्ति की इच्छावाले के २ नाम– (१) आशंसु (२) आशंसितृ ।

(द्वे ग्रहणशीलस्य)

गृहयालुर्ग्रहीतरि ।

लेने वाले के २ नाम—(१) गृहयालु (२) ग्रहीतृ ।

(एकं श्रद्धया युक्तस्य)

श्रद्धालुः श्रद्धया युक्ते

श्रद्धावान् का नाम—(१) श्रद्धालु ।

(द्वे पतनशीलस्य)

पतयालुस्तु पातुके ।।२७।।

गिरनेवाले के २ नाम—(१) पतयालु (२) पातुक ।।२७।।

(द्वे लज्जावतः)

लज्जाशीलेऽपत्रपिष्णुः

लज्जावान् के २ नाम—(१) लज्जाशील (२) अपत्रपिष्णु ।

(द्वे वन्दनशीलस्य)

वन्दारुरभिवादके ।

वन्दना करनेवाले के २ नाम—(१) वन्दारु (२) अभिवादक ।

(त्रीणि हिंस्रस्य)

शरारुर्घातुको हिंस्रः

हत्यारा, घातक के ३ नाम—(१) शरारु (२) घातुक (३) हिंस्र ।

(द्वे वर्धनशीलस्य)

स्याद्वर्धिष्णुस्तु वर्धनः ॥२८॥

बढ़नेवाले के २ नाम--(१) वर्धिष्णु (२) वर्धन ॥२८॥

(द्वे उत्पतनशीलस्य)

उत्पतिष्णुस्तूत्पतिता

उछलने, कूदने वाले के २ नाम--(१) उत्पतिष्णु (२) उत्पतितृ ।

(द्वे अलङ्करणशीलस्य)

अलंकरिष्णुस्तु मण्डनः ।

गहना की इच्छावाले के २ नाम—(१) अलंकरिष्णु (२) मण्डन ।

(त्रीणि भवनशीलस्य)

भूष्णुर्भविष्णुर्भविता

होने की इच्छा वाले के ३ नाम—(१) भूष्णु (२) भविष्णु (३) भवितृ ।

(द्वे वर्तनशीलस्य)

वर्तिष्णुर्वर्तनः समौ ॥२६॥

वर्तनेवाले के २ नाम—(१) वर्तिष्णु (२) वर्तन ॥२६॥

(द्वे तिरस्करणशीलस्य)

निराकरिष्णुः क्षिप्नुः स्यात्

निकालने वाले के २ नाम—(१) निराकरिष्णु (२) क्षिप्नु ।

(एकम् सघनचिक्कणस्य)

सान्द्रस्निग्धस्तु मेदुरः ।

सघन और चिकनी चीज़ का नाम-(१) मेदुर ।

(त्रीणि ज्ञातुः)

ज्ञाता तु विदुरो विन्दुः

जाननेवाले के ३ नाम—(१) ज्ञातृ (२) विदुर (३) विन्दु ।

(द्वे विकसनशीलस्य)

विकासी तु विकस्वरः ॥३०॥

फूलनेवाले, विकाशशील के २ नाम—(१) विकासिन् (२) विकस्वर ॥३०॥

(चत्वारि प्रसरणशीलस्य)

विसृत्वरो विसृमरो प्रसारी च विसारिणि ।

फैलने के स्वभाववाले के ४ नाम—(१) विसृत्वर (२) विस्मृर (३) प्रसारिन् (४) विसारिन् ।

(षट् क्षमाशीलस्य)

सहिष्णुः सहनः क्षन्ता तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ३१

सहनशील के ६ नाम—(१) सहिष्णु (२) सहन (३) क्षन्तृ (४) तितिक्षु (५) क्षमितृ (६) क्षमिन् ॥३१॥

(त्रीणि कोपशीलस्य)

क्रोधनोऽमर्षणः कोपी

क्रोधी के ३ नाम—(१) क्रोधन (२) अमर्षण (३) कोपिन् ।

(द्वे अतिक्रोधशीलस्य)

चण्डस्त्वत्यन्तकोपनः ।

अतिशय क्रोधी के २ नाम—(१) चण्ड (२) अत्यन्तकोपन ।

(द्वे जागरणशीलस्य)

जागरूको जागरिता

जागने के स्वभाववाले के २ नाम—(१) जागरूक (२) जागरितृ ।

(द्वे निद्राघूर्णितस्य)

घूर्णितः प्रचलायितः ॥३२॥

नींद में आँखें नचाने के २ नाम-(१) घूर्णित (२) प्रचलायित ॥३२॥

(त्रीणि निद्राशीलस्य)

स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुः

निद्राशील पुरुष के ३ नाम—(१) स्वप्नज (२) शयालु (३) निद्रालु ।

(द्वे सुप्तस्य)

निद्राणशयितौ समौ ।

सोये हुए पुरुष के २ नाम—(१) निद्राण (२) शयित ।

(द्वे विमुखस्य)

पराङ्मुखः पराचीनः

विमुख के २ नाम—(१) पराङ्मुख (२) पराचीन ।

(द्वे अधोमुखस्य)

स्यादवाङप्यधोमुखः ॥३३॥

अधोमुख के २ नाम—(१) अवाञ्च् (२) अधोमुख ॥३३॥

(एकं देवपूजकस्य)

देवानञ्चति देवद्र्यङ्

देवता की पूजा करनेवाले का नाम—(१) देवद्र्यच् ।

(एकम् विष्वग्गमनशीलस्य)

विष्वद्र्यङ् विष्वगञ्चति ।

जो चारो ओर जाय या पूजन करे, उसका नाम—(१) विष्वद्र्यच् ।

(एकम् सहगमनशीलस्य)

यः सहाञ्चति सध्र्यङ् सः

जो साथ-साथ चले, उसका नाम—(१) सध्र्यच् ।

(एकम् यस्तिरोऽञ्चति तस्य)

स तिर्यङ् यस्तिरोऽञ्चति ॥३४॥

जो टेढ़ा चले, उसका १ नाम-(१) तिर्यच् ॥३४

(त्रीणि वक्तुः)

वदो वदावदो वक्ता

वक्ता के ३ नाम--(१) वद (२) वदावद (३) वक्तृ ।

(द्वे अनवद्योद्दामवादिनः)

वागीशो वाक्पतिः समौ ।

जो स्पष्ट और उग्र रीति से भाषण करे, उसके २ नाम—(१) वागीश (२) वाक्पति ।

(द्वे नैयायिकस्य)

वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी

नैयायिक के २ नाम—(१) वाचोयुक्तिपटु (२) वाग्मिन् ।

(द्वे बहुभाषिकस्य)

वावदूकोऽतिवक्तरि ॥३५॥

ज्यादा बक-बक करनेवाले के २ नाम—(१) वावदूक (२) अतिवक्तृ ॥३५॥

(चत्वारि निंद्यभाषणशीलस्य)

स्याज्जल्पाकस्तु वाचालो वाचाटो बहुगर्ह्यवाक्

बुरी और न कहने लायक बातें बकने वाले के ४ नाम—(१) जल्पाक (२) वाचाल (३) वाचाट (४) बहुगर्ह्यवाच् ।

(त्रीणि अप्रियवादिनः)

दुर्मुखे मुखराबद्धमुखौ

कड़वी बात बोलनेवाले के ३ नाम—(१) दुर्मुख (२) मुखर (३) अबद्धमुख ।

(द्वे प्रियंवदस्य)

शक्लः प्रियंवदे ॥३६॥

मीठी बात बोलनेवाले के २ नाम—(१) शक्ल (२)प्रियंवद ॥३६॥

(द्वे अस्पष्टभाषिणः)

लोहलः स्यादस्फुटवाक्

साफ न बोलनेवाले के २ नाम—(१) लोहल (२) अस्फुटवाच् ।

(द्वे गर्ह्यवादिनः)

गर्ह्यवादी तु कद्वदः ।

निन्दित बात बकनेवाले के २ नाम—(१) गर्ह्यवादिन् (२) कद्वद ।

(द्वे दोषकथनशीलस्य)

समौ कुवादकुचरौ

दूसरों के दोष कहनेवाले (खुचर निकालने वाले) के २ नाम—(१) कुवाद (२) कुचर ।

(द्वे अपस्वरयुक्तस्य)

स्यादसौम्यस्वरोऽस्वरः ॥३७॥

कर्णकटु स्वरवाले के २ नाम-(१) असौम्य-स्वर (२) अस्वर ॥३७॥

(द्वे शब्दशीलस्य)

रवणः शब्दनः

चिल्लानेवाले के २ नाम—(१) रवण (२) शब्दन ।

(द्वे स्तुतिविशेषवादिनः)

नान्दीवादी नान्दीकरः समौ ।

[१]नाटक के आरम्भ में मंगलाचरण करनेवाले के २ नाम—(१) नान्दीवादिन् (२) नान्दीकर ।

(द्वे अतिशयमूढस्य)

[२]जडोऽज्ञः

निपट गँवार (मूर्ख) के २ नाम—(१) जड (२) अज्ञ ।

(एकं यः श्रोतुं वक्तुं च शिक्षितो न भवति तस्य)

एडमूकस्तु वक्तुं श्रोतुमशिक्षिते ॥३८॥

जो सुनना या बोलना कुछ भी न जानता हो, उस (गूंगे बहरे) का नाम--(१) एडमूक ॥३८॥

(द्वे तूष्णींभावयुक्तस्य)

तूष्णींशीलस्तु तूष्णीको

चुप रहनेवाले के २ नाम-(१) तूष्णींशील (२) तूष्णीक ।

(त्रीणि नग्नस्य)

नग्नोऽवासा दिगम्बरे ।

नंगे पुरुष के ३ नाम--(१) नग्न (२) अवास् (३) दिगम्बर ।

(द्वे निष्कासितस्य)

निष्कासितोऽवकृष्टः स्यात्

निकाले हुए के २ नाम—(१) निष्कासित (२) अवकृष्ट ।

(द्वे धिक्कृतस्य)

अपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥३९॥

धिक्कारे हुए पुरुष के २ नाम—(१) अपध्वस्त (२) धिक्कृत ॥३९॥

(द्वे भग्नदर्पस्य)

आत्तगर्वोऽभिभूतः स्यात्

जिसका घमंड दूर किया जा चुका है, उसके २ नाम—(१) आत्तगर्व (२) अभिभूत ।

(द्वे धनादिकं दापयित्वा वशीकृतस्य)

दापितः साधितः समौ ।

धन आदि दिलाकर वश में किये हुए के २ नाम—(१) दापित (२) साधित ।

(चत्वारि निराकृतस्य)

प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात्प्रत्याख्यातो निराकृतः॥

अपमानित मनुष्य के ४ नाम —(१) प्रत्यादिष्ट (२) निरस्त (३) प्रत्याख्यात (४) निराकृत ॥४०॥

(द्वे विवर्णीकृतस्य)

निकृतः स्याद्विप्रकृतः

जिसकी सूरत खराब कर दी गयी हो, उसके २ नाम--(१) निकृत (२) विप्रकृत ।

(द्वे वंचितस्य)

विप्रलब्धस्तु वंचितः ।

ठगाये हुए मनुष्य के २ नाम--(१) विप्रलब्ध (२) वंचित ।

(चत्वारि मनसि हतस्य)

मनोहतः प्रतिहतः प्रतिबद्धो हतश्च सः ॥४१॥

मन मारे हुए मनुष्य के ४ नाम--(१) मनोहत (२) प्रतिहत (३) प्रतिबद्ध (४) हत ॥४१॥

(द्वे कृताक्षेपस्य)

अधिक्षिप्तः प्रतिक्षिप्तः

जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया गया हो, उसके २ नाम-(१) अधिक्षिप्त (२) प्रतिक्षिप्त ।

(त्रीणि बद्धस्य)

बद्धे कीलितसंयतौ ।

बँधे हुए पुरुष के ३ नाम--(१) बद्ध (२)

१—आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात्प्रवर्तते ।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति कीर्त्यते ॥ इति भरतः।

२—इष्टं वानिष्टं वा सुखदुःखे वा न वेद यो मोहात् ।
विन्दति परवशगः स भवेदिह जडसंज्ञकः पुरुषः ॥

कीलित (३) संयत ।

(द्वे आपद्ग्रस्तस्य)

आपन्न आपत्प्राप्तः स्यात्

आपत्ति में पड़े हुए के २ नाम--(१) आपन्न (२) आपत्प्राप्त ।

(द्वे भयात्पलायितस्य)

कांदिशीको भयद्रुतः ॥४२॥

भय से भागे हुए मनुष्य के २ नाम—(१) कांदिशीक (२) भयद्रुत ॥४२॥

(त्रीणि लोकापवादेन दूषितस्य)

आक्षारितः क्षारितोऽभिशस्ते

झूठ-मूठ मैथुन का दोष लगाये गये मनुष्य के ३ नाम—(१) आक्षारित (२) क्षारित (३) अभिशस्त ।

(द्वे चलप्रकृतेः)

संकसुकोऽस्थिरे ।

चंचल प्रकृतिवाले के २ नाम--(१) संकसुक (२) अस्थिर ।

(द्वे व्यसनपीडितस्य)

व्यसनार्तोपरक्तौ द्वौ

दैवी या मानुषी पीड़ा से पीड़ित मनुष्य के २ नाम--(१) व्यसनार्त (२) उपरक्त ।

(द्वे शोकादिभिरितिकर्तव्यतामूढस्य)

विहस्तव्याकुलौ समौ ॥४३॥

शोक आदि के कारण जिसकी बुद्धि मारी गई हो, उसके २ नाम-(१) विहस्त (२) व्याकुल ॥४३॥

(द्वे शोकादिना गात्रभङ्गं प्राप्तस्य)

विक्लवो विह्वलः स्यात्तु

शोक आदि से जिसका अंगभंग हो गया हो, उसके २ नाम—(१) विक्लव (२) विह्वल ।

(द्वे आसन्नमरणदूषितबुद्धेः)

विवशोऽरिष्टदुष्टधीः ।

मृत्यु समीप आ जाने से जिसकी बुद्धि खराब हो गयी हो, उसके २ नाम—(१) विवश (२) अरिष्टदुष्टधी ।

(द्वे कशाघातयोग्यस्य)

कश्यः कशार्हे

कोड़े लगने योग्य मनुष्य के २ नाम—(१) कश्य (२) कशार्ह ।

(एकं जिघांसोः)

सन्नद्धे त्वाततायी वधोद्यते ॥४४॥

किसी की हत्या करने पर उद्यत का नाम—(१) आततायिन् ॥४४॥

(द्वे द्वेषार्हस्य)

द्वेष्ये त्वक्षिगतः

द्वेष करने योग्य व्यक्ति के २ नाम—(१) द्वेष्य (२) अक्षिगत ।

(द्वे वधार्हस्य)

वध्यः शीर्षच्छेद्य इमौ समौ ।

वध (शिर काटने के) योग्य मनुष्य के २ नाम—(१) वध्य (२) शीर्षच्छेद्य ।

(एकं विषेण वध्यस्य)

विष्यो विषेण यो वध्यः

जहर (माहुर) देने योग्य मनुष्य का नाम—(१) विष्य ।

(एकं मुसलेन वधार्हस्य)

मुसल्यो मुसलेन यः ॥४५॥

मूसर से मारने योग्य मनुष्य का नाम—(१) मुसल्य ॥४५॥

(द्वे पुण्यकर्मणः)

शिश्विदानोऽकृष्णकर्मा

पवित्र कार्य करनेवाले के २ नाम—(१) शिश्विदान (२) अकृष्णकर्मन् ।

(द्वेऽविचार्य वधादिकर्मकर्तुः)

चपलश्चिकुरः समौ ।

बिना (दोषादि) विचार किये ही मार देनेवाले के २ नाम—(१) चपल (२) चिकुर ।

(द्वे दोषमात्रं पश्यतः)

दोषैकदृक्पुरोभागी

केवल दोष देखनेवाले के २ नाम--(१)

दोषैकदृश् (२) पुरोभागिन् ।

(त्रीणि कुटिलहृदयस्य)

निकृतस्त्वनृजुः शठः ॥४६॥

कपटी, कुटिल हृदयवाले मनुष्य के ३ नाम–(१) निकृत (२) अनृजु (३) शठ ॥४६॥

(द्वे परापवादं वदतः)

कर्णेजपः सूचकः स्यात्

चुगलखोर के २ नाम--(१) कर्णेजप (२) सूचक ।

(त्रयं परस्परं भेदनशीलस्य)

पिशुनो दुर्जनः खलः ।

आपस में फूट डालनेवाले के ३ नाम--(१) पिशुन (२) दुर्जन (३) खल ।

(चत्वारि क्रूरस्य)

नृशंसो घातुकः क्रूरः पापः

क्रूर मनुष्य के ४ नाम--(१) नृशंस (२) घातुक (३) क्रूर (४) पाप ।

(द्वे प्रतारणशीलस्य)

धूर्तस्तु वंचकः । ४७ ।

ठगहारी करनेवाले के २ नाम--(१) धूर्त (२) वंचक ॥४७॥

(षण्मूर्खस्य)

अज्ञे मूढयथाजातमूर्खवैधेयबालिशाः ।

मूर्ख के ६ नाम—(१) अज्ञ (२) मूढ (३) यथाजात (४) मूर्ख (५) वैधेय (६) बालिश ।

(पंच कृपणस्य)

कदर्ये कृपणक्षुद्रकिंपचानमितंपचाः ॥४८॥

कंजूस के ५ नाम—(१) कदर्य (२) कृपण (३) क्षुद्र (४) किंपचान (५) मितंपच॥४८॥

(पंच दरिद्रस्य)

निःस्वस्तु दुर्विधो दीनो दरिद्रो दुर्गतोऽपि सः

दरिद्र के ५ नाम—(१) निःस्व (२) दुर्विध (३) दीन (४) दरिद्र (५) दुर्गत ।

(पंच याचकस्य)

वनीयको याचनको मार्गणो याचकार्थिनौ॥४९

याजक के ५ नाम—(१) वनीयक (२) याचनक (३) मार्गण (४) याचक (५) अर्थिन् ॥४९॥

(द्वे अहंकारिणः)

अहंकारवानहंयुः

अहंकार युक्त पुरुष के २ नाम—(१) अहंकारवत् (२) अहंयु ।

(द्वे शुभान्वितस्य)

शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।

कल्याणयुक्त पुरुष के २ नाम—(१) शुभंयु (२) शुभान्वित ।

(एकं देवानाम्)

दिव्योपपादुका देवाः

बिना माता-पिता के उत्पन्न देवों का नाम—(१) दिव्योपपादुक ।

(एकं नृगवादीनाम्)

नृगवाद्या जरायुजाः ॥५०॥

मनुष्य, गौ आदि गर्भाशय से उत्पन्न होनेवाले जीवों का नाम—(१) जरायुज ॥५०॥

(एकं कृमिदंशादीनाम्)

स्वेदजाः कृमिदंशाद्याः

कीड़े और मच्छड़ आदि का नाम—(१) स्वेदज ।

(एकं पक्षिसर्पादीनाम्)

पक्षिसर्पाद्योऽण्डजाः ।

पक्षी और साँप आदि का नाम—(१) अण्डज ।

(इति प्राणिवर्गः)

(एकं तरुगुल्मादीनाम्)

उद्भिदस्तरुगुल्माद्याः

वृक्ष, लता और घास आदि का नाम—(१) उद्भिद ।

(त्रीणि उद्भिदः)

उद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥५१॥

उद्भिद् के ३ नाम—(१) उद्भिद् (२) उद्भिज्ज (३) उद्भिद ।

(द्वादश सुन्दरस्य)

सुन्दरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोभनम् ।
कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ५२

सुन्दर के १२ नाम—(१) सुन्दर (२) रुचिर (३) चारु (४) सुषम (५) साधु (६) शोभन (७) कान्त (८) मनोरम (९) रुच्य (१०) मनोज्ञ (११) मञ्जु (१२) मंजुल ॥५२॥

(एकं यस्य दर्शनाद्दृङ्मनसोस्तृप्तिर्नास्ति तस्य)

तदासेचनकं तृप्तेर्नास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् ।

जिसको देखने से मन तथा नेत्रों की तृप्ति न हो, उसका नाम—(१) आसेचनक ।

(षडभीष्टस्य)

अभीष्टेऽभीप्सितं हृद्यं दयितं वल्लभं प्रियम् ५३

प्यारे के ६ नाम—(१) अभीष्ट (२) अभीप्सित (३) हृद्य (४) दयित (५) वल्लभ (६) प्रिय ॥ ५३ ॥

(त्रयोदशाधमस्य)

निकृष्टप्रतिकृष्टार्वरेफयाप्यावमाधमाः ।
कुपूयकुत्सितावद्यखेटगर्ह्याणकाः समाः ॥५४॥

अधम के १३ नाम—(१) निकृष्ट (२) प्रतिकृष्ट (३) अर्वन् (४) रेफ (५) याप्य (६) अवम (७) अधम (८) कुपूय (९) कुत्सित (१०) अवद्य (११) खेट (१२) गर्ह्य (१३) अणक ॥५४॥

(चत्वार्यनुज्ज्वलस्य)

मलीमसं तु मलिनं कच्चरं मलदूषितम् ।

मैली वस्तु के ४ नाम—(१) मलीमस (२) मलिन (३) कच्चर (४) मलदूषित ।

(त्रीणि पवित्रस्य)

पूतं पवित्रं मेध्यं च

पवित्र, साफ के ३ नाम—(१) पूत (२) पवित्र (३) मेध्य ।

(एकं स्वभावतो निर्मलस्य)

वीध्रं तु विमलार्थकम् ॥५५॥

स्वभाव से विमल का नाम-(१) वीध्र ॥५५॥

(पंच मृष्टस्य)

निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निःशोध्यमनवस्करम् ।

साफ किये हुए के ५ नाम—(१) निर्णिक्त (२) शोधित (३) मृष्ट (४) निःशोध्य (५) अनवस्कर ।

(द्वे निर्बलस्य)

असारं फल्गु

सार रहित वस्तु के २ नाम—(१) असार (२) फल्गु ।

(चत्वारि शून्यस्य)

शून्यं तु वशिकं तुच्छरिक्तके ॥५६॥

शून्य, सूना, खाली के ४ नाम—(१) शून्य (२) वशिक (३) तुच्छ (४) रिक्तक ॥५६॥

(सप्तदश प्रधानस्य)

क्लीबे प्रधानं प्रमुखप्रवेकानुत्तमोत्तमाः ।
मुख्यवर्यवरेण्याश्च प्रवर्होऽनवराध्र्यवत् ॥५७॥
पराध्र्याग्रप्राग्रहरप्राग्र्याग्र्याग्रीयमग्रियम् ।

प्रधान के १७ नाम—(१) प्रधान (२) प्रमुख (३) प्रवेक (४) अनुत्तम (५) उत्तम (६) मुख्य (७) वर्य (८) वरेण्य (९) प्रवर्ह (१०) अनवराध्र्य (११) पराध्र्य (१२) अग्र (१३) प्राग्रहर (१४) प्राग्र्य (१५) अग्र्य (१६) अग्रीय (१७) अग्रिय । इनमें (१) नित्य नपुंसक लिङ्ग है ॥५७॥

(पंचात्यन्तशोभनस्य)

श्रेयान् श्रेष्ठः पुष्कलः स्यात्सत्तमश्चातिशोभने

अतिशय सुन्दर के ५ नाम—(१) श्रेयस् (२) श्रेष्ठ (३) पुष्कल (४) सत्तम (५) अतिशोभन ॥५८॥

(एते श्रेष्ठार्थवाचकाः)

स्युरुत्तरपदे व्याघ्रपुंगवर्षभकुञ्जराः ।
सिंहशार्दूलनागाद्याः पुंसि श्रेष्ठार्थगोचराः ५९

व्याघ्र, पुंगव, ऋषभ, कुञ्जर, सिंह, शार्दूल, नाग आदि शब्द जब किसी शब्द के उत्तर पद में लग जाते हैं, तब वे श्रेष्ठार्थवाचक हो जाते हैं। जैसे—पुरुषव्याघ्र, नरपुंगव आदि। ये सभी शब्द पुँल्लिङ्ग हैं ॥५६॥

(त्रीण्यप्रधानस्य)

अप्राग्र्यं द्वयहीने द्वे अप्रधानोपसर्जने ।

अप्रधान के ३ नाम—(१) अप्राग्र्य (२) अप्रधान (३) उपसर्जन । इनमें (१) पुं-स्त्री-नपुंसक, (२-३) नपुंसक में होते हैं ।

(नव विशालस्य)

विशङ्कटं पृथु बृहद्विशालं पृथुलं महत् ॥६०॥
वड्रोरुविपुलम्

चौड़ाई के ६ नाम—(१) विशंकट (२) पृथु (३) बृहत् (४) विशाल (५) पृथुल (६) महत् (७) वड्र (८) उरु (६) विपुल ॥६०॥

(चत्वारि स्थूलस्य)

पीनपीव्नी तु स्थूलपीवरे ।

मोटे के ४ नाम—(१) पीन (२) पीवन् (३) स्थूल (४) पीवर ।

(त्रीण्यल्पस्य)

स्तोकाल्पक्षुल्लकाः

थोड़े के ३ नाम—(१) स्तोक (२) अल्प (३) क्षुल्लक ।

(एकादश सूक्ष्मस्य)

सूक्ष्मं श्लक्ष्णं दभ्रं कृशं तनु ॥६१॥
स्त्रियां मात्रा त्रुटिः पुंसि लवलेशकणाणवः ।

सूक्ष्म, बारीक, महीन के ११ नाम—(१) सूक्ष्म (२) श्लक्ष्ण (३) दभ्र (४) कृश (५) तनु (६) मात्रा (स्त्री०) (७) त्रुटि (स्त्री०) (८) लव (६) लेश (१०) कण (११) अणु॥६१॥

(पञ्चात्यल्पस्य)

अत्यल्पेऽल्पिष्ठमल्पीयः कनीयोऽणीय इत्यपि ६२

बहुत थोड़े के ५ नाम-(१) अत्यल्प (२) अल्पिष्ठ (३) अल्पीयस् (४) कनीयस् (५) अणीयस् ॥६२॥

(द्वादश प्रभूतस्य)

प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यमदभ्रं बहुलं बहु ।
पुरुहूः पुरु भूयिष्ठं स्फारं भूयश्च भूरि च ॥६३

अधिकता के १२ नाम—(१) प्रभूत (२) प्रचुर (३) प्राज्य (४) अदभ्र (५) बहुल (६) बहु (७) पुरुहू (८) पुरु (६) भूयिष्ठ (१०) स्फार (११) भूयस् (१२) भूरि ॥६३॥

(येषां संख्येयानां संख्या शतात् सहस्राच्च परास्तेषामेकैकम्)

परः शताद्यास्ते येषां परा संख्या शतादिकात्।

जिन संख्येय पदार्थों की संख्या सौ तथा सहस्रादि से अधिक हो, उनके एक-एक नाम—परःशत आदि ।

(द्वे गणयितुं शक्यस्य)

गणनीये तु गणेयम्

गिनने योग्य वस्तु के २ नाम—(१) गणनीय (२) गणेय ।

(द्वे गणितस्य)

संख्याते गणितम्

जिसकी गणना की जा चुकी है, उसके २ नाम—(१) संख्यात (२) गणित ।

(चतुर्दश समग्रस्य)

अथ समं सर्वम् ॥६४॥
विश्वमशेषं कृत्स्नं समस्तनिखिलाखिलानि निःशेषम्
समग्रं सकलं पूर्णमखण्डं स्यादनूनके॥६५॥

समग्र के १४ नाम—(१) सम (२) सर्व (३) विश्व (४) अशेष (५) कृत्स्न (६) समस्त (७) निखिल (८) अखिल (६) निःशेष (१०) समग्र (११) सकल (१२) पूर्ण (१३) अखण्ड (१४) अनूनक ॥६४॥६५॥

(त्रीणि निविडस्य)

घनं निरन्तरं सान्द्रम्

घने के ३ नाम—(१) घन (२) निरन्तर (३) सान्द्र ।

(त्रीणि विरलस्य)

पेलवं विरलं तनु ।

विरले (अलग-अलग) के ३ नाम--(१) पेलव (२) विरल (३) तनु ।

(पञ्चदश समीपस्य)

समीपे निकटासन्नसन्निकृष्टसनीडवत् ॥६६॥
सदेशाभ्याशसविधसमर्यादसवेशवत् ।
उपकण्ठान्तिकाभ्यर्णाभ्यग्रा अप्यभितोव्ययम्

समीप, पास के १५ नाम--(१) समीप (२) निकट (३) आसन्न (४) सन्निकृष्ट (५) सनीड (६) सदेश (७) अभ्याश (८) सविध (९) समर्याद (१०) सवेश (११) उपकण्ठ (१२) अन्तिक (१३) अभ्यर्ण (१४) अभ्यग्र (१५) अभितस् । इनमें "अभितः" शब्द अव्यय है ॥ ६६॥६७ ॥

(त्रीणि संलग्नस्य)

संसक्तं त्वव्यवहितमपदान्तरमित्यपि ।

सटे हुए के ३ नाम—(१) संसक्त (२) अव्यवहित (३) अपदान्तर ।

(द्वे अतिनिकटस्य)

नेदिष्ठमन्तिकतमम्

अतिशय नज़दीक के २ नाम—(१) नेदिष्ठ (२) अन्तिकतम ।

(द्वे दूरस्य)

स्याद्दूरं विप्रकृष्टकम् ॥६८॥

दूर के २ नाम-(१) दूर (२) विप्रकृष्ट ॥६८॥

(त्रीण्यत्यन्तदूरस्य)

दवीयश्च दविष्ठं च सुदूरम्

बहुत दूर के ३ नाम-(१) दवीयस् (२) दविष्ठ (३) सुदूर ।

(द्वे दीर्घस्य)

दीर्घमायतम् ।

लम्बा के २ नाम—(१) दीर्घ (२) आयत ।

(त्रीणि वर्तुलस्य)

वर्तुलं निस्तलं वृत्तम्

वर्तुल (गोल) के ३ नाम—(१) वर्तुल (२) निस्तल (३) वृत्त ।

(एकं यत्स्वभावादुन्नतमुपाधिवशादीषन्नतं तस्य)

बन्धुरं तून्नतानतम् ॥६९॥

जो स्वभावतः ऊँचा है, किन्तु उपाधि वश कुछ नीचा हो गया है, उसका नाम—(१) बन्धुर ॥६९॥

(षट उन्नतस्य)

उच्चप्रांशून्नतोदग्रोच्छ्रितास्तुङ्गे

ऊँचाई के ६ नाम—(१) उच्च (२) प्रांशु (३) उन्नत (४) उदग्र (५) उच्छ्रित (६) तुङ्ग ।

(पञ्च ह्रस्वस्य)

अथ वामने ।
न्यङ्नीचखर्वह्रस्वाः स्युः

छोटाई के ५ नाम—(१) वामन (२) न्यच (३) नीच (४) खर्व (५) ह्रस्व ।

(त्रीण्यधोमुखस्य)

अवाग्रेऽवनतानतम् ॥७०॥

नीचे मुख (औंधे मुँह) के ३ नाम—(१) अवाग्र (२) अवनत (३) आनत ॥७०॥

(एकादश वक्रस्य)

अरालं वृजिनं जिह्ममूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ।
आविद्धं कुटिलं भुग्नं वेल्लितं वक्रमित्यपि ७१

टेढ़ाई के ११ नाम—(१) अराल (२) वृजिन (३) जिह्म (४) ऊर्मिमत् (५) कुंचित (६) नत (७) आविद्ध (८) कुटिल (९) भुग्न (१०) वेल्लित (११) वक्र ॥७१॥

(त्रीण्यवक्रस्य)

ऋजावजिह्मप्रगुणौ

सिधाई के ३ नाम—(१) ऋजु (२) अजिह्म (३) प्रगुण ।

(त्रीण्याकुलस्य)

व्यस्ते त्वप्रगुणाकुलौ ।

आकुल के ३ नाम—(१) व्यस्त (२) अप्रगुण (३) आकुल ।

(पञ्च नित्यस्य)

शाश्वतस्तु ध्रुवो नित्यसदातनसनातनाः ७२

नित्य के ५ नाम—(१) शाश्वत (२) ध्रुव (३) नित्य (४) सदातन (५) सनातन ॥७२॥

(त्रीण्यतिस्थिरस्य)

स्थास्नुः स्थिरतरः स्थेयान्

अतिशय स्थिर के ३ नाम—(१) स्थास्नु (२) स्थिरतर (३) स्थेयस् ।

(एकं निश्चलस्य)

एकरूपतया तु यः ।
कालव्यापी स कूटस्थः

[1]जो सदा एकरूप से बहुत समय तक स्थिर रहे, उस आकाशादि का नाम—(१) कूटस्थ ।

(द्वे अचरस्य)

स्थावरो जङ्गमेतरः ॥७३॥

अचल वस्तु, वृक्ष आदि के २ नाम—(१) स्थावर (२) जङ्गमेतर ॥७३॥

(षट् चरस्य)

चरिष्णु जङ्गमचरं त्रसमिङ्गं चराचरम् ।

चल वस्तु के ६ नाम—(१) चरिष्णु (२) जङ्गम (३) चर (४) त्रस (५) इङ्ग (६) चराचर ।

(त्रीणि कम्पनशीलस्य)

चलनं कम्पनं कम्प्रम्

काँपनेवाली वस्तु के ३ नाम—(१) चलन (२) कम्पन (३) कम्प्र ।

(सप्त चंचलस्य)

चलं लोलं चलाचलम् ॥७४॥
चञ्चलं तरलं चैव पारिप्लवपरिप्लवे ।

चंचलता के ७ नाम—(१) चल (२) लोल (३) चलाचल (४) चंचल (५) तरल (६) पारिप्लव (७) परिप्लव ॥७४॥

१—सांख्य में 'कूटस्थ' ऐसे आत्मा-पुरुष को कहते हैं, जो परिणामरहित हो और जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्त तीनों अवस्थाओं में एक समान रहे। न्याय में परमेश्वर को 'कूटस्थ' कहा है और उसे जन्मगुणरहित माना है।

(द्वे अधिकस्य)

अतिरिक्तः समधिकः

अधिक के २ नाम—(१) अतिरिक्त (२) समधिक ।

(द्वे दृढसन्धानयुक्तस्य)

दृढसन्धिस्तु संहतः ॥७५॥

बड़ा मेली (मिलापी) या मजबूत जोड़वाली वस्तु के २ नाम–(१) दृढसन्धि (२) संहत ॥७५॥

(नव कठिनस्य)

कर्कशं कठिनं क्रूरं कठोरं निष्ठुरं दृढम् ।
जठरं मूर्तिमन्मूर्तम्

कठिनता के ९ नाम—(१) कर्कश (२) कठिन (३) क्रूर (४) कठोर (५) निष्ठुर (६) दृढ (७) जठर (८) मूर्तिमत् (९) मूर्त ।

(त्रीणि प्रवृद्धस्य)

प्रवृद्धं प्रौढमेधितम् ॥७६॥

बहुत बढ़े हुए के ३ नाम—(१) प्रवृद्ध (२) प्रौढ (३) एधित ॥७६॥

(पंच पुरातनस्य)

पुराणे प्रतनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ।

पुरातन के ५ नाम—(१) पुराण (२) प्रतन (३) प्रत्न (४) पुरातन (५) चिरन्तन ।

(सप्त नूतनस्य)

प्रत्यग्रोऽभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
नूत्नश्च

नवीन के ७ नाम—(१) प्रत्यग्र (२) अभिनव (३) नव्य (४) नवीन (५) नूतन (६) नव (७) नूत्न ॥७७॥

(चत्वारि कोमलस्य)

सुकुमारं तु कोमलं मृदुलं मृदु ।

कोमल के ४ नाम—(१) सुकुमार (२) कोमल (३) मृदुल (४) मृदु ।

(चत्वार्यनुगस्य)

अन्वगन्वक्षमनुगेऽनुपदं क्लीबमव्ययम् ॥७८॥

बाद, पीछे के ४ नाम—(१) अन्वक् (२)

अन्वक्ष (३) अनुग (४) अनुपद । ये सभी शब्द नपुंसक एवं अव्यय हैं ॥७८॥

(द्वे इन्द्रियग्राह्यस्य)

प्रत्यक्षं स्यादैन्द्रियकम्

इन्द्रियग्राह्य, प्रत्यक्ष वस्तु के २ नाम—(१) अप्रत्यक्ष (२) ऐन्द्रियक ।

(द्वे इन्द्रियैरग्राह्यस्य धर्मादेः)

अप्रत्यक्षमतीन्द्रियम् ।

अप्रत्यक्ष (धर्म आदि) के २ नाम—(१) अप्रत्यक्ष (२) अतीन्द्रिय ।

(सप्तैकाग्रस्य)

एकतानोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रैकायनावपि ॥७६॥
अप्येकसर्ग एकाग्रयोऽप्येकायनगतोऽपि सः ।

एकाग्रता के ७ नाम—(१) एकतान (२) अनन्यवृत्ति (३) एकाग्र (४) एकायन (५) एकसर्ग (६) एकाग्रय (७) एकायनगत ॥७६॥

(पञ्चकमाद्यस्य)

पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्याः

आदि के ५ नाम—(१) आदि (२) पूर्व (३) पौरस्त्य (४) प्रथम (५) आद्य । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग है। शेष (२–५) पुं० स्त्री० नपुंसक हैं ।

(षडन्त्यस्य)

अथास्त्रियाम् ॥८०॥
अन्तो जघन्यं चरममन्त्यपाश्चात्यपश्चिमाः ।

अन्त के ६ नाम—(१) अन्त (२) जघन्य (३) चरम (४) अन्त्य (५) पाश्चात्य (६) पश्चिम । इनमें (१) पुंनपुंसक है, (२–६) त्रिलिङ्गी हैं ॥८०॥

(द्वे व्यर्थस्य)

मोघं निरर्थकम्

व्यर्थ के २ नाम—(१) मोघ (२) निरर्थक ।

(चत्वारि स्पष्टस्य)

स्पष्टं स्फुटं प्रव्यक्तमुल्बणम् ॥८१॥

साफ़ के ४ नाम—(१) स्पष्ट (२) स्फुट (३) प्रव्यक्त (४) उल्बण ॥८१॥

(द्वे सामान्यस्य)

साधारणं तु सामान्यम्

साधारण के २ नाम—(१) साधारण (२) सामान्य ।

(त्रीण्यसहायस्य)

एकाकी त्वेक एककः ।

अकेले के ३ नाम—(१) एकाकिन् (२) एक (३) एकक ।

(षड् भिन्नार्थकस्य)

भिन्नार्थका अन्यतर एकस्त्वोऽन्येतरावपि॥८२॥

भिन्न के ६ नाम—(१) भिन्न (२) अन्यतर (३) एक (४) त्व (५) अन्य (६) इतर ॥ ८२ ॥

(द्वे बहुविधस्य)

उच्चावचं नैकभेदम्

बहुत तरह के २ नाम—(१) उच्चावच (१) नैकभेद ।

(द्वे तूर्णस्य)

उच्चण्डं अविलम्बितम् ।

तुरन्त के २ नाम—(१) उच्चण्ड (२) अविलम्बित ।

(द्वे मर्मभेदिनः)

अरुन्तुदस्तु मर्मस्पृक्

मर्मभेदी के २ नाम—(१) अरुन्तुद (२) मर्मस्पृश् ।

(द्वे निर्बाधस्य)

अबाधं तु निरर्गलम् ॥८३॥

बिना अड़चन के २ नाम—(१) अबाध (२) निरर्गल ॥८३॥

(चत्वारि विपरीतस्य)

प्रसव्यं प्रतिकूलं स्यादपसव्यमपष्ठु च ।

विपरीत, उलटा के ४ नाम—(१) प्रसव्य (२) प्रतिकूल । (३) प्रतिसव्य (४) अपष्ठु ।

(एकं वामशरीरस्य)

वामं शरीरं सव्यं स्यात्

बायें अंग का नाम—(१) सव्य ।

(एकं दक्षिणशरीरस्य)

अपसव्यं तु दक्षिणम् ॥८४॥

दहिने अंग का नाम—(१) अपसव्य ॥८४॥

(द्वे अल्पावकाशस्य वर्त्मादेः)

संकटं ना तु संबाधः

गली आदि के सकरेपन के २ नाम—(१) संकट (२) संबाध । इनमें (१) तीनों लिङ्गों में और (२) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे दुरधिगम्यस्य)

कलिलं गहनं समे ।

कठिनाई से प्राप्त होने, दुष्प्रवेश के २ नाम—(१) कलिल (२) गहन । जैसे—'गहनं शास्त्रम्' यानी शास्त्रज्ञान कठिनाई से प्राप्त होता है ।

(त्रीणि जनादिभिरत्यंतमिश्रस्य)

संकीर्णे संकुलाकीर्णे

मनुष्य आदि से खचाखच भरे हुए के ३ नाम—(१) संकीर्ण (२) संकुल (३) आकीर्ण ।

(द्वे कृतमुण्डनस्य)

मुण्डितं परिवापितम् ॥८५॥

सिर मुड़ाये मनुष्य के २ नाम—(१) मुण्डित (२) परिवापित ॥८५॥

(त्रीणि गुम्फितस्य)

ग्रन्थितं सन्दितं दृब्धम्

गुथे हुए के ३ नाम—(१) ग्रन्थित (२) सन्दित (३) दृब्ध ।

(त्रीणि विस्तृतस्य)

विसृतं विस्तृतं ततम् ।

फैलाव के ३ नाम—(१) विसृत (२) विस्तृत (३) तत ।

(द्वे विस्मृतस्य)

अन्तर्गतं विस्मृतं स्यात्

भूली बात के २ नाम—(१) अन्तर्गत (२) विस्मृत ।

(द्वे लब्धस्य)

प्राप्तप्रणिहिते समे ॥८६॥

प्राप्त वस्तु के २ नाम—(१) प्राप्त (२) प्रणिहित ॥८६॥

(षट् ईषत्कम्पितस्य)

वेल्लितप्रेंखिताधूतचलिताकम्पिता धुते ।

थोड़ा काँपने के ६ नाम—(१) वेल्लित (२) प्रेंखित (३) आधूत (४) चलित (५) आकम्पित (६) धुत ।

(सप्त प्रेरितस्य)

नुत्तनुन्नास्तनिष्ठ्यूताविद्धक्षिप्तेरिताःसमाः॥८७

भेजे हुए के ७ नाम—(१) नुत्त (२) नुन्न (३) अस्त (४) निष्ठ्यूत (५) आविद्ध (६) क्षिप्त (७) ईरित ॥८७॥

(द्वे प्राकारादिना सर्वतो वेष्टितस्य)

परिक्षिप्तं तु निवृतं

खाई आदि के द्वारा चौतरफा घिरे स्थान के २ नाम—(१) परिक्षिप्त (२) निवृत ।

(द्वे चोरितस्य)

मूषितं मुषितार्थकम् ।

चोरी की हुई वस्तु के २ नाम—(१) मूषित (२) मुषित ।

(द्वे प्रसरणयुक्तस्य)

प्रवृद्धप्रसृते

फैलायी हुई चीज के २ नाम—(१) प्रवृद्ध (२) प्रसृत ।

(द्वे निक्षिप्तस्य)

न्यस्तनिसृष्टे

धरोहर में रखी हुई वस्तु के २ नाम—(१) न्यस्त (२) निसृष्ट ।

(द्वे अभ्यावर्तितस्य)

गुणिताहते ॥८८॥

गुणा की हुई संख्या के २ नाम—(१) गुणित (२) आहत ॥८८॥

(द्वे समृद्धस्य)

निदिग्धोपचिते

समृद्ध, बढ़े हुए के २ नाम—(१) निदिग्ध (२) उपचित ।

(द्वे गोपनयुक्तस्य)

गूढगुप्ते

छिपी वस्तु के २ नाम—(१) गूढ़ (२) गुप्त ।

(द्वे धूलिलिप्तस्य)

गुण्ठितरूषिते ।

धूल से सनी वस्तु के २ नाम—(१) गुण्ठित (२) रूषित ।

(द्वे द्रवीभूतस्य)

द्रुतावदीर्णे

रसीले के २ नाम—(१) द्रुत (२) अवदीर्ण ।

(द्वे उत्तोलितस्य शस्त्रादेः)

उद्गूर्णोद्यते

किसी को मारने के लिये शस्त्र उठाये हुए के २ नाम—(१) उद्गूर्ण (२) उद्यत ।

(द्वे शिक्ये स्थापितस्य)

काचितशिक्यिते ॥८६॥

छींके (शिकहर) पर रखी हुई वस्तु के २ नाम—(१) काचित (२) शिक्यित ॥८६॥

(द्वे नासिकया गृहीतगन्धस्य पुष्पादेः)

घ्राणघ्राते

नासिका से सूँघी सुगन्धि के २ नाम—(१) घ्राण (२) घ्रात ।

(द्वे विलिप्तस्य)

दिग्धलिप्ते

पंक आदि से सनी वस्तु के २ नाम—(१) दिग्ध (२) लिप्त ।

(द्वे उन्नीतस्य कूपादेर्जलादेः)

समुदक्तोद्धृते समे ।

ओगारे हुए कुएँ तथा जल आदि के २ नाम—(१) समुदक्त (२) उद्धृत ।

(पञ्च वेष्टितस्य)

वेष्टितं स्याद्वलयितं संवीतं रुद्धमावृतम् ॥९०॥

नदी या सेना आदि से घिरे नगर आदि के ५ नाम—(१) वेष्टित (२) वलयित (३) संवीत (४) रुद्ध (५) आवृत ॥९०॥

(द्वे व्यथितस्य)

रुग्णं भुग्ने

रोगार्त व्यक्ति के २ नाम—(१) रुग्ण (२) भुग्न ।

(चत्वारि शाणादिना तीक्ष्णीकृतस्य शस्त्रादेः)

निशितक्ष्णुतशातानि तेजिते ।

शान आदि पर चढ़ाकर तीखे किये हुए शस्त्र आदि के ४ नाम—(१) निशित (२) क्ष्णुत (३) शात (४) तेजित ।

(एकं विनाशोन्मुखस्य)

स्याद्विनाशोन्मुखं पक्वम्

जिसका विनाश समीप है, उस (पके) का नाम—(१) पक्व ।

(त्रीणि लज्जितस्य)

ह्रीणह्रीतौ तु लज्जिते ॥९१॥

लज्जित व्यक्ति के ३ नाम—(१) ह्रीण (२) ह्रीत (३) लज्जित ॥९१॥

(त्रीणि कृतावरणस्य)

वृत्ते तु वृतव्यावृत्तौ

जिसका वरण किया जा चुका है, उसके ३ नाम—(१) वृत्त (२) वृत (३) व्यावृत्त ।

(द्वे संयोगं प्रापितस्य)

संयोजित उपाहितः ।

मिलाए हुए के २ नाम—(१) संयोजित (२) उपाहित ।

(त्रीणि प्राप्तुं शक्यस्य)

प्राप्यं गम्यं समासाद्यम्

मिलने के लायक चीज के ३ नाम—(१) प्राप्य (२) गम्य (३) समासाद्य ।

(चत्वारि प्रस्नुतस्य)

स्यन्नं रीणं स्नुतं स्रुतम् ॥९२॥

पिघल कर टपकती हुई वस्तु के ४ नाम—

(१) स्यन्न (२) रीण (३) स्नुत (४) स्रुत ॥९२॥

(द्वे योजितस्याङ्कादेः)

संगूढः स्यात्संकलितः

जोड़ी हुई संख्या आदि के २ नाम—(१) संगूढ़ (२) संकलित ।

(द्वे निन्दितस्य)

अवगीतः ख्यातगर्हणः ।

निन्दित मनुष्य आदि के २ नाम—(१) अवगीत (२) ख्यातगर्हण ।

(चत्वारि पृथग्विधस्य)

विविधः स्याद्बहुविधो नानारूपः पृथग्विधः ९३

नाना प्रकार के ४ नाम—(१) विविध (२) बहुविध (३) नानारूप (४) पृथग्विध ॥९३॥

(द्वे निन्दितमात्रस्य)

अवरीणो धिक्कृतश्चापि

निन्दित मनुष्य, धिक्कारे हुए के २ नाम—(१) अवरीण (२) धिक्कृत ।

(द्वे चूर्णीकृतस्य)

अवध्वस्तोऽवचूर्णितः ।

पीसी चीज के २ नाम—(१) अवध्वस्त (२) अवचूर्णित ।

(एकं अनायासकृतकषायविशेषस्य)

अनायासकृतं फाण्टम्

[1]कूटे हुए १ पल द्रव्य को ४ पल गरम पानी में डाल मृत्तभाण्ड में क्षण भर रख कर मले और छाने हुए का नाम—(१) फाण्ट ।

(द्वे शब्दितस्य)

स्वनितं ध्वनितं समे ॥९४॥

किये हुए शब्द के २ नाम—(१) स्वनित (२) ध्वनित ॥९४॥

(षट् बद्धस्य)

बद्धे संदानितं मूतमुद्दितं संदितं सितम् ।

बँधे हुए के ६ नाम—(१) बद्ध (२) संदानित (३) मूत (४) उद्दित (५) संदित (६) सित।

(द्वे साकल्येन पक्वस्य)

निष्पक्वे क्वथितम्

अच्छी तरह पकी वस्तु के २ नाम—(१) निष्पक्व (२) क्वथित ।

(क्षीरादीनां पाकस्यैकम्)

क्षीराज्यहविषां शृतम् ॥९५॥

[2]दूध, घी आदि से पकी वस्तु का नाम—(१) शृत ॥९५॥

(मुनिवह्न्यादौ प्रयुज्यमानस्य शब्दविशेषस्यैकम्)

निर्वाणो मुनिवह्न्यादौ

मुनि और अग्नि आदि के लिए प्रयुक्त होनेवाले शब्द का नाम—(१) निर्वाण ।

(एकं गतानिलस्य)

निर्वातस्तु गतेऽनिले ।

जिसमें से हवा निकल गयी है, उसका नाम—(१) निर्वात ।

(द्वे पाकं प्राप्तस्य)

पक्वं परिणते

पकी हुई चीज के २ नाम—(१) पक्व (२) परिणत ।

(द्वे कृतपुरीषोत्सर्गस्य)

गूनं हन्ने

पुरीषोत्सर्ग किए के २ नाम–(१) गून (२) हन्न ।

(द्वे कृतमूत्रोत्सर्गस्य)

मीढं तु मूत्रिते ॥९६॥

पेशाब किए के २ नाम—(१) मीढ (२) मूत्रित ॥९६॥

(द्वे कृतपोषणस्य)

पुष्टं तु पुषिते

मोटे के २ नाम—(१) पुष्ट (२) पुषित ।

(द्वे क्षमां प्रापितस्य)

सोढे क्षान्तम्

---

[1] शार्ङ्गधर संहिता तथा अत्रिसंहिता आदि वैद्यक ग्रन्थों में इसका उल्लेख है ।

[2] "वह्नौ तु क्वथितं द्रव्यं शृतमाहुः"—परिभाषाप्रदीपे ।

जिसको क्षमा प्राप्त हो चुकी है, उसके २ नाम—(१) सोढ (२) क्षान्त ।

(द्वे वमनेन त्यक्तस्यान्नादेः)

उद्वान्तं उद्गते ।

उल्टी कै किये हुए अन्न आदि के २ नाम—(१) उद्वान्त (२) उद्गत ।

(द्वे दमं प्रापितस्य)

दान्तस्तु दमिते

इन्द्रियजीत के २ नाम—(१) दान्त (२) दमित ।

(द्वे शमं प्रापितस्य)

शान्तः शमिते

मिट जाने के २ नाम—(१) शान्त (२) शमित ।

(द्वे याचितस्य)

प्रार्थितेऽर्दितः ॥९७॥

माँगी हुई वस्तु के २ नाम—(१) प्रार्थित (२) अर्दित ॥९७॥

(द्वे बोधं प्रापितस्य)

ज्ञप्तस्तु ज्ञपिते

जिसको ज्ञान प्राप्त कराया गया हो, उसके २ नाम—(१) ज्ञप्त (२) ज्ञपित ।

(द्वे आच्छादितस्य)

छन्नश्छादिते

ढँकी वस्तु के २ नाम—(१) छन्न (२) छादित ।

(द्वे पूजितस्य)

पूजितेऽञ्चितः ।

पूजित व्यक्ति के २ नाम—(१) पूजित (२) अञ्चित ।

(द्वे पूर्णस्य)

पूर्णस्तु पूरितः

पूर्ण के २ नाम—(१) पूर्ण (२) पूरित ।

(द्वे क्लेशं प्राप्तस्य)

क्लिष्टः क्लिशिते

क्लेशित के २ नाम—(१) क्लिष्ट (२) क्लिशित ।

(द्वे समाप्तस्य)

अवसिते सितः ॥९८॥

समाप्त के २ नाम—(१) अवसित (२) सित ॥९८॥

(चत्वारि दग्धस्य)

प्रुष्टप्लुष्टोषिता दग्धे

जली हुई वस्तु के ४ नाम—(१) प्रुष्ट (२) प्लुष्ट (३) उषित (४) दग्ध ।

(त्रीणि तनूकृतस्य)

तष्टत्वष्टौ तनूकृते ।

छीलकर पतली की हुई चीज के ३ नाम—(१) तष्ट (२) त्वष्ट (३) तनूकृत ।

(त्रीणि विद्धस्य)

वेधितच्छिद्रितौ विद्धे

बिंधी भयी या छेदी वस्तु के ३ नाम—(१) वेधित (२) छिद्रित (३) विद्ध ।

(त्रीणि प्राप्तविचारस्य)

विन्नवित्तौ विचारिते ॥९९॥

विचारित वस्तु के ३ नाम—(१) विन्न (२) वित्त (३) विचारित ॥९९॥

(त्रीणि दीप्तिहीनस्य)

निष्प्रभे विगतारोकौ

निस्तेज के ३ नाम—(१) निष्प्रभ (२) विगत (३) अरोक ।

(त्रीणि द्रवीभूतस्य घृतादेः)

विलीने विद्रुतद्रुतौ ।

पिघली, घी आदि वस्तु के ३ नाम—(१) विलीन (२) विद्रुत (३) द्रुत ।

(त्रीणि सिद्धस्य)

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नः

सिद्ध वस्तु के ३ नाम—(१) सिद्ध (२) निर्वृत्त (३) निष्पन्न ।

(त्रीणि भेदं प्रापितस्य)

दारिते भिन्नभेदिता १००॥

फाड़े गए के ३ नाम—(१) दारित (२) भिन्न (३) भेदित ॥१००॥

(त्रीणि तन्तुसन्ततेः)

ऊतं स्यूतमुतं चेति तन्तुसन्तते ।

बीने हुए सूत के ३ नाम—(१) ऊत (२) स्यूत (३) उत ।

(षडर्चितस्य)

स्यादर्हिते नमस्यितं नमसितमपचायितार्चिता-पचितम् ॥१०१॥

पूजित व्यक्ति के ६ नाम—(१) अर्हित (२) नमस्यित (३) नमसित (४) अपचायित (५) अर्चित (६) अपचित ॥१०१॥

(चत्वारि शुश्रूषितस्य)

वरिवसिते वरिवस्यितमुपासितं चोपचरितं च

सेवित पुरुष के ४ नाम—(१) वरिवसित (२) वरिवस्यित (३) उपासित (४) उपचरित ।

(पञ्च सन्तापितस्य)

सन्तापितसन्तप्तौ धूपितधूपायितौ च दूनश्च ।

सन्तापित मनुष्य के ५ नाम—(१) सन्तापित (२) सन्तप्त (३) धूपित (४) धूपायित (५) दून ॥१०२॥

(षट् प्रमुदितस्य)

हृष्टे मत्तस्तृप्तः प्रह्लन्नः प्रमुदितः प्रीतः ।

प्रसन्न मनुष्य के ६ नाम—(१) हृष्ट (२) मत्त (३) तृप्त (४) प्रह्लन्न (५) प्रमुदित (६) प्रीत ।

(अष्टौ खण्डितस्य)

छिन्नं छातं लूनं कृतं दात्तं दितं छितं वृक्णम्

खण्डित, कटे के ८ नाम—(१) छिन्न (२) छात (३) लून (४) कृत (५) दात (६) दित (७) छित (८) वृक्ण ॥१०३॥

(सप्त च्युतस्य)

स्रस्तं ध्वस्तं भ्रष्टं स्कन्नं पन्नं च्युतं गलितम् ।

गिरे, चूए के ७ नाम—(१) स्रस्त (२) ध्वस्त (३) भ्रष्ट (४) स्कन्न (५) पन्न (६) च्युत (७) गलित ।

(षट् प्राप्तस्य)

लब्धं प्राप्तं विन्नं भावितमासादितं च भूतं च

प्राप्त वस्तु के ६ नाम—(१) लब्ध (२) प्राप्त (३) विन्न (४) भावित (५) आसादित (६) भूत ॥१०४॥

(पञ्च गवेषितस्य)

अन्वेषितं गवेषितमन्विष्टं मार्गितं मृगितम् ।

खोजी हुई वस्तु के ५ नाम—(१) अन्वेषित (२) गवेषित (३) अन्विष्ट (४) मार्गित (५) मृगित ।

(सप्त आर्द्रस्य)

आर्द्रं सार्द्रं क्लिन्नं तिमितं स्तिमितं समुन्नमुत च ॥१०५॥

भीगी वस्तु के ७ नाम—(१) आर्द्र (२) सार्द्र (३) क्लिन्न (४) तिमित । (५) स्तिमित (६) समुन्नत ।

(षट् रक्षितस्य)

त्रातं त्राणं रक्षितमवितं गोपायितं च गुप्तं च

रक्षित वस्तु के ६ नाम—(१) त्रात (२) त्राण (३) रक्षित (४) अवित (५) गोपायित (६) गुप्त ।

(पंच अपमानितस्य)

अवगणितमवमतावज्ञातेऽवमानितं च परिभूते

बेइज्जत किये हुए मनुष्य के ५ नाम—(१) अवगणित (२) अवमत (३) अवज्ञात (४) अवमानित (५) परिभूत ॥१०६॥

(षट् उत्सृष्टस्य)

त्यक्तं हीनं विधुतं समुज्झितं धूतमुत्सृष्टे ।

त्यागे हुए के ६ नाम—(१) त्यक्त (२) हीन (३) विधुत (४) समुज्झित (५) धूत (६) उत्सृष्ट ।

(षडभिहितवाक्यस्य)

उक्तं भाषितमुदितं जल्पितमाख्यातमभिहितं लपितम् ॥१०७॥

कही बात के ६ नाम—(१) उक्त (२) भाषित (३) जल्पित (४) आख्यात (५) अभिहित (६) लपित ॥१०७॥

(सप्त अवगतस्य)

बुद्धं बुधितं मनितं विदितं प्रतिपन्नमवसितावगते ।

समझी या जानी हुई बात के ७ नाम—(१) बुद्ध (२) बुधित (३) मनित (४) विदित (५) प्रतिपन्न (६) अवसित (७) अवगत ।

(एकादश अङ्गीकृतस्य)

ऊरीकृतमुररीकृतमङ्गीकृतमाश्रुतं प्रतिज्ञातम् ॥१०८॥
संगीर्णविदितसंश्रुतसमाहितोपश्रुतोपगतम्

अंगीकार के ११ नाम—(१) ऊरीकृत (२) उररीकृत (३) अङ्गीकृत (४) आश्रुत (५) प्रतिज्ञात (६) संगीर्ण (७) विदित (८) संश्रुत (९) समाहित (१०) उपश्रुत (११) उपगत॥१०८॥

(द्वादश स्तुतार्थानाम्)

ईलितशस्तपणायितपनायितप्रणुत-पणितपनितानि ॥१०९॥
अपि गीर्णवर्णिताभिष्टुतेडितानि स्तुतार्थानि।

स्तुति के अर्थ में प्रयुक्त किये जानेवाले वाक्य के १२ नाम—(१) ईलित (२) शस्त (३) पणायित (४) पनायित (५) प्रणुत (६) पणित (७) पनित (८) गीर्ण (९) वर्णित (१०) अभिष्टुत (११) ईडित (१२) स्तुत ॥१०९॥

(चतुर्दश खादितस्य)

भक्षितचर्वितलीढप्रत्यवसितगिलितखादित-प्सातम् ॥११०॥
अभ्यवहृतान्नजग्धग्रस्तग्लस्ताशितं भुक्ते ।

खाये हुए अन्न के १४ नाम—(१) भक्षित (२) चर्वित (३) लीढ (४) प्रत्यवसित (५) गिलित (६) खादित (७) प्सात (८) अभ्यवहृत (९) अन्न (१०) जग्ध (११) ग्रस्त (१२) ग्लस्त (१३) अशित (१४) भुक्त ॥११०॥

(क्षेपिष्ठादयः क्षिप्रादीनां प्रकृष्टार्थकाः)

क्षेपिष्ठक्षोदिष्ठप्रेष्ठवरिष्ठस्थविष्ठबंहिष्ठाः १११
क्षिप्रक्षुद्राभीप्सितपृथुपीवरबहुलप्रकर्षार्थाः ।

बहुत जल्दबाजी का नाम—(१) क्षेपिष्ठ ।
अतिशय छिछोरे के नाम—(१) क्षोदिष्ठ ।
अत्यन्त प्रिय का नाम—(१) प्रेष्ठ ।
अतिशय बड़े का नाम—(१) वरिष्ठ ।
बहुत मोटे का नाम—(१) स्थविष्ठ ।
बहुत ज्यादा का नाम—(१) बंहिष्ठ ॥१११॥

(बाढादीनामतिशयार्थे साधिष्ठादयः स्युः)

साधिष्ठद्राघिष्ठस्फेष्ठगरिष्ठह्रसिष्ठवृन्दिष्ठाः ११२
बाढव्यायतबहुगुरुवामनवृन्दारकातिशये ।

अतिशय बाढ (अच्छे) का नाम—(१) साधिष्ठ ।
बहुत बड़े का नाम—(१) द्राघिष्ठ ।
बहुत अधिक का नाम—(१) स्फेष्ठ ।
बहुत भारी का नाम—(१) गरिष्ठ ।
बहुत छोटे का नाम—(१) वृन्दिष्ठ ॥११२॥

इति विशेष्यनिघ्नवर्गः ॥१॥

अथ सङ्कीर्णवर्गः २

प्रकृतिप्रत्ययार्थाद्यैः संकीर्णे लिङ्गमुन्नयेत् ।

इस संकीर्णवर्ग में प्रकृति और प्रत्यय के अर्थ द्वारा लिङ्ग का विचार करना चाहिए । जैसे—'शान्तिः' यहाँ स्त्रीलिङ्ग में क्तिन् प्रत्यय हुआ है । 'विधूननम्' यहां नपुंसक लिङ्ग में ल्युट् प्रत्यय हुआ है । कहीं-कहीं रूपभेद से भी लिङ्ग-निर्देश होता है ।

(द्वे क्रियायाः)

कर्म क्रिया

क्रिया के २ नाम—(१) कर्म (२) क्रिया ।

(एकं नैरन्तर्येण क्रियायाः क्रियावतश्च)

तत्सातत्ये गम्ये स्युरपरस्पराः ॥१॥

निरन्तर चलनेवाली क्रिया और क्रियावान् का नाम—(१) अपरस्पर ॥ १ ॥

(एकैकं साकल्यासङ्गवचनयोः)

साकल्यासङ्गवचने पारायणपरायणे ।

साकल्य वचन का नाम—(१) पारायण । आसङ्ग (आसक्ति) वचन का नाम—(१) परायण ।

(द्वे स्वच्छन्दतायाः)

यदृच्छा स्वैरिता

स्वच्छन्दता के २ नाम—(१) यदृच्छा (२) स्वैरिता ।

(एकं हेतुशून्यास्थायाः)

हेतुशून्या त्वास्था विलक्षणम् ॥२॥

बिना कारण की स्थिति का नाम—(१) विलक्षण ॥२॥

(त्रीणि चित्तोपशमस्य)

शमथस्तु शमः शान्तिः

मनःशान्ति के ३ नाम —(१) शमथ (२) शम (३) शान्ति ।

(त्रीणीन्द्रियनिग्रहस्य)

दान्तिस्तु दमथो दमः ।

इन्द्रियदमन के ३ नाम—(१) दान्ति (२) दमथ (३) दम ।

(द्वे प्रशस्तकर्मणः भूतपूर्वचरित्रस्य वा)

अवदानं कर्म वृत्तम्

भूतपूर्व चरित्र अथवा सुकर्म का नाम—(१) अवदान ।

(द्वे काम्यदानस्य)

काम्यदानं प्रवारणम् ॥३॥

कामनापूर्ण दान के २ नाम—(१) काम्यदान (२) प्रवारण ॥३॥

(द्वे मणिमंत्रादिना वशीकरणस्य)

वशक्रिया संवननम्

मणि-मन्त्र के द्वारा वश में करने (वशीकरण) के २ नाम—(१) वशक्रिया (२) संवनन ।

(एकमोषधादीनां मूलैरुच्चाटनकर्मणः)

मूलकर्म तु कार्मणम् ।

औषधि आदि की जड़ से उच्चाटन का नाम—(१) कार्मण ।

(द्वे कम्पनस्य)

विधूननं विधुवनम्

कम्पन के २ नाम—(१) विधूनन (२) विधुवन ।

(त्रीणि तृप्तेः)

तर्पणं प्रीणनावनम् ॥४॥

तृप्ति (अघाए) के ३—नाम (१) तर्पण (२) प्रीणन (३) अवन ॥४॥

(त्रीणि मारणोद्यतनिवारणस्य)

पर्याप्तिः स्यात्परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।

किसी को मार डालने के लिए तैयार व्यक्ति को रोक देने के ३ नाम--(१) पर्याप्ति (२) परित्राण (३) हस्तवारण ।

(त्रीणि सूचीक्रियायाः)

सेवनं सीवनं स्यूतिः

सिलाई के ३ नाम--(१) सेवन (२) सीवन (३) स्यूति ।

(त्रीणि द्विधाभावस्य)

विदरः स्फुटनं भिदा ॥५॥

दो टुकड़े हो जाने के ३ नाम--(१) विदर (२) स्फुटन (३) भिदा ॥५॥

(द्वे गालिप्रदानस्य)

आक्रोशनमभीषङ्गः

गाली देने के २ नाम--(१) आक्रोशन (२) अभीषङ्ग ।

(द्वे अनुभवस्य)

संवेदो वेदना न ना ।

अनुभव के २ नाम--(१) संवेद (२) वेदना । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग (२) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक है ।

(द्वे सर्वतो व्याप्तेः)

सम्मूर्छनमभिव्याप्तिः

चौतरफा फैलाव के २ नाम--(१) संमूर्छन (२) अभिव्याप्ति ।

(चत्वारि याच्ञायाः)

याच्ञा भिक्षार्थनाऽर्दना ॥६॥

भीख माँगने के ४ नाम--(१) याच्ञा (२) (३) अर्थना (४) अर्दना ॥६॥

(द्वे कर्तनस्य)

वर्धनं छेदने

काटने के २ नाम--(१) वर्धन (२) छेदन ।

(त्रीणि स्वागतसंप्रश्नादिना विहितस्यानन्दस्य)

अथ द्वे आनन्दनसभाजने ।

आप्रच्छन्नम्

स्वागत करके कुशल प्रश्न पूछने के ३ नाम—(१) आनन्दन (२) सभाजन (३) आप्रच्छन्न ।

(द्वे गुरुपरम्परागतस्य समुपदेशस्य)

अथाम्नायः संप्रदायः

गुरुपरम्परा से प्राप्त उपदेश के २ नाम—(१) आम्नाय (२) संप्रदाय ।

(द्वे अपचयस्य)

क्षये क्षिया ॥७॥

घटती के २ नाम—(१) क्षय (२) क्षिया ॥७॥

(द्वे ग्रहणस्य)

ग्रहे ग्राहः

ग्रहण करने के २ नाम—(१) ग्रह (२) ग्राह ।

(द्वे इच्छायाः)

वशः कान्तौ

इच्छा के २ नाम-(१) वश (२) कान्ति (स्त्री०) ।

(द्वे रक्षणस्य)

रक्षणस्त्राणे

रक्षा करने के २ नाम—(१) रक्षण (२) त्राण । इनमें (१) पुँल्लिङ्ग, (२) नपुंसक है ।

(द्वे शब्दकरणस्य)

रणः क्वणे ।

शब्द करने के २ नाम—(१) रण (२) क्वण ।

(द्वे वेधनस्य)

व्यधो वेधे

बींधने के २ नाम—(१) व्यध (२) वेध ।

(द्वे पाकस्य)

पचा पाके

पकाने के २ नाम—(१) पचा (२) पाक ।

(द्वे आह्वानस्य)

हवो हूतौ

पुकारने के २ नाम—(१) हव (२) हूति ।

(द्वे वेष्टनस्य संभक्तस्य च)

वरो वृतौ ॥८॥

वेष्टन अथवा चुनाव के २ नाम—(१) वर (२) वृति ॥ ८ ॥

(द्वे दाहस्य)

ओषः प्लोषे

दाह के २ नाम—(१) ओष (२) प्लोष ।

(द्वे नीतेः)

नयो नाये

नीति के २ नाम—(१) नय (२) नाय ।

(द्वे जीर्णतायाः)

ज्यानिर्जीर्णौ

पुरानेपन के २ नाम—(१) ज्यानि (२) जीर्णि । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग है ।

(द्वे भ्रान्तेः)

भ्रमो भ्रमौ ।

भूल के २ नाम-(१) भ्रम (२) भ्रमि (स्त्री०) ।

(द्वे वृद्धेः)

स्फातिर्वृद्धौ

वृद्धि के २ नाम—(१) स्फाति (२) वृद्धि ।

(द्वे ख्यातेः)

प्रथा ख्यातौ

प्रसिद्धि के २ नाम—(१) प्रथा (२) ख्याति ।

(द्वे स्पर्शस्य)

स्पृष्टिः पृक्तौ

स्पर्श के २ नाम—(१) स्पृष्टि (२) पृक्ति ।

(द्वे प्रस्रवणस्य)

स्रवः स्रवे ॥४॥

झरने के २ नाम—(१) स्रव (२) स्रव ॥६॥

(द्वे उपचयस्य)

एधा समृद्धौ

समृद्धि के २ नाम—(१) एधा (२) समृद्धि ।

(द्वे स्फुरणस्य)

स्फुरणे स्फुरणा

फरकने के २ नाम—(१) स्फुरण (२) स्फुरणा ।

(द्वे प्रमाज्ञानस्य)

प्रमितौ प्रमा ।

सच्चे ज्ञान के २ नाम—(१) प्रमिति (२) प्रमा ।

(द्वे प्रसवनस्य प्रेरणस्य वा)

प्रसूतिः प्रसवे

गर्भत्याग (प्रसव) के २ नाम—(१) प्रसूति (२) प्रसव । इनमें (१) स्त्री (२) पुं० है ।

(द्वे घृतादेः क्षरणस्य)

श्च्योते प्राघारः

घी आदि के बहने के २ नाम—(१) श्च्योत (२) प्राघार । ये (१-२) पुं० हैं ।

(द्वे ग्लानेः)

क्लमथः क्लमे ॥१०॥

ग्लानि के २ नाम—(१) क्लमथ (२) क्लम ॥१०॥

(द्वे प्रकर्षस्य)

उत्कर्षोऽतिशये

बड़ाई के २ नाम—(१) उत्कर्ष (२) अतिशय ।

(द्वे संधानस्य)

सन्धिः श्लेषे

जोड़ने, मेल के २ नाम—(१) सन्धि (२) श्लेष ।

(द्वे आश्रयस्य)

विषय आश्रये ।

सहारे के २ नाम—(१) विषय (२) आश्रय ।

(द्वे प्रेरणस्य)

क्षिपायां क्षेपणम्

प्रेरणा के २ नाम—(१) क्षिपा (२) क्षेपण ।

(द्वे निगरणस्य)

गीर्णिर्गिरौ

निगलने के २ नाम—(१) गीर्णि (२) गिरि ।

(द्वे भाराद्युद्यमनस्य)

गुरणमुद्यमे ॥११॥

बोझा आदि उठाने, उद्योग करनेके २ नाम—(१) गुरण (२) उद्यम । इनमें (१) नपुं० (२) पुं० है ॥११॥

(द्वे ऊर्ध्वं नयनस्य ऊहस्य वा)

उन्नये उन्नाये

ऊपर उठाने अथवा तर्क के २ नाम—(१) उन्नाय (२) उन्नय । ये (१-२) पुं० है ।

(द्वे सेवायाः)

श्रायः श्रयणे

सेवा के २ नाम--(१) श्राय (२) श्रयण (नपुं०)।

(द्वे जयस्य)

जयने जयः ।

जय के २ नाम--(१) जयन (नपुं) (२) जय ।

(द्वे कथनस्य)

निगादो निगदे

कहने के २ नाम--(१) निगाद (२) निगद ।

(द्वे हर्षस्य)

मादो मदः

खुशी के २ नाम--(१) माद (२) मद ।

(द्वे उद्वेजनस्य)

उद्वेग उद्भ्रमे ॥१२॥

उद्विग्न करने के २ नाम--(१) उद्वेग (२) उद्भ्रम ॥१२॥

(द्वे कुंकुमादिमर्दनस्य)

विमर्दनं परिमलः

कुमकुम आदि मलने के २ नाम--(१) विमर्दन (२) परिमल । इनमें (१) नपुं० (२) पुँल्लिङ्ग है ।

(द्वे अंगीकारस्य)

अभ्युपपत्तिरनुग्रहः ।

अङ्गीकार के २ नाम––(१) अभ्युपपत्ति (२) अनुग्रह । ये (१–२) पुँल्लिङ्ग हैं ।

(एकं तद्विरुद्धस्य)

निग्रहस्तद्विरुद्धः स्यात्

(अनुग्रह के विरुद्ध) विरोध का नाम––(१) निग्रह ।

(द्वे कलहाह्वानस्य)

अभियोगस्त्वभिग्रहः ॥१३॥

लड़ाई में पुकारने के २ नाम––(१) अभियोग (२) अभिग्रह ॥१३॥

(द्वे मुष्टिना दृढग्रहणस्य)

मुष्टिबन्धस्तु संग्राहः

मुट्ठी से कसकर पकड़ने के २ नाम––(१) मुष्टिबन्ध (२) संग्राह ।

(त्रीणि नरलुण्ठनादेरुपसर्गविशेषस्य)

डिम्बे डमरविप्लवौ ।

मनुष्यों को लूटने के ३ नाम—(१) डिम्ब (२) डमर (३) विप्लव ।

(त्रीणि बन्धनस्य)

बन्धनं प्रसितिश्चारः

बन्धन के ३ नाम—(१) बन्धन (२) प्रसिति (३) चार । इनमें (२) स्त्रीलिङ्ग है ।

(त्रीणि उपतापाख्यरोगस्य)

स्पर्शः स्प्रष्टोपतप्तरि ॥१४॥

उपताप नामक रोगविशेष के ३ नाम—(१) स्पर्श (२) स्प्रष्टृ (३) उपतप्तृ ॥१४॥

(द्वे अपकारस्य)

निकारो विप्रकारः स्यात्

अपकार के २ नाम—(१) निकार (२) विप्रकार ।

(त्रीण्यभिप्रायानुरूपचेष्टितस्य)

आकारस्त्विङ्ग इङ्गितम् ।

अभिप्राय के अनुरूप इशारे के ३ नाम—(१) आकार (२) इङ्ग (३) इङ्गित ।

(द्वे प्रकृतेरन्यथाभावस्य)

परिणामो विकारो द्वे समे

प्रकृति के परिवर्तन के २ नाम– (१) परिणाम (२) विकार ।

(द्वे विरुद्धक्रियायाः)

विकृतिविक्रिये ॥१५॥

विरुद्ध क्रिया के २ नाम—(१) विकृति (२) विक्रिया । ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं ॥१५॥

(द्वे अपहरणस्य)

अपहारस्त्वपचयः

अपहरण (छीन लेने) के २ नाम—(१) अपहार (२) अपचय ।

(द्वे राशीकरणस्य)

समाहारः समुच्चयः ।

इकट्ठा करने के २ नाम—(१) समाहार (२) समुच्चय ।

(द्वे इन्द्रियाकर्षणस्य)

प्रत्याहार उपादानम्

इन्द्रियों को (विषयों की ओर से) समेटने के २ नाम—(१) प्रत्याहार (२) उपादान ।

(द्वे पद्भ्यां गमनस्य)

विहारस्तु परिक्रमः ॥१६॥

पैर से चलने के २ नाम—(१) विहार (२) परिक्रम ॥१६॥

(द्वे चौर्यकर्मणः)

अभिहारोऽभिग्रहणम्

चोरी करने के २ नाम—(१) अभिहार (२) अभिग्रहण ।

(द्वे शल्यादेर्निष्काशनस्य)

निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।

काँटा आदि निकालने के २ नाम—(१) निर्हार (२) अभ्यवकर्षण ।

(द्वे विडम्बनस्य)

अनुहारोऽनुकारः स्यात्

नकल करने के २ नाम—(१) अनुहार (२) अनुकार ।

(धनादेरपगमस्यैकम्)

अर्थस्यापगमे व्ययः ॥१७॥

धन खर्च हो जाने का नाम-(१) व्यय ॥१७॥

(द्वे जलादीनां निरन्तरगमनस्य)

प्रवाहस्तु प्रवृत्तिः स्यात्

जल आदि के निरन्तर बहाव के २ नाम—(१) प्रवाह (२) प्रवृत्ति ।

(एकं बहिर्गमनस्य)

प्रवहो गमनं बहिः ।

जल आदि के बाहर निकालने का नाम—(१) प्रवह ।

(षट् संयमस्य)

वियामो वियमो यामो यमः संयामसंयमौ॥१८॥

संयम के ६ नाम—(१) वियाम (२) वियम (३) याम (४) यम (५) संयाम (६) संयम ॥१८॥

(एकं हिंसामयकर्मणः)

हिंसाकर्माऽभिचारः स्यात्

जारण-मारण आदि हिंसामय कर्म का नाम—(१) अभिचार ।

(द्वे जागरणस्य)

जागर्या जागरा द्वयोः ।

जागरण के २ नाम-(१) जागर्या (२) जागरा । इनमें (१) पुँ० (२) पुँल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग दोनों है ।

(त्रीणि विघ्नस्य)

विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः

विघ्न के ३ नाम—(१) विघ्न (२) अन्तराय (३) प्रत्यूह ।

(द्वे आश्रयस्य)

स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रये ॥१९॥

समीप के निवास का नाम-(१) उपघ्न ॥१९॥

(द्वे उपभोगस्य)

निर्वेश उपभोगः स्यात्

उपभोग के २ नाम—(१) निर्वेश (२) उपभोग ।

(द्वे परिजनादिवेष्टनस्य)

परिसर्पः परिक्रिया ।

परिवारवालों को एक में समेट रखने के २ नाम—(१) परिसर्प (२) परिक्रिया ।

(द्वे अत्यन्तवियोगस्य)

विधुरं तु प्रविश्लेषे

बड़े वियोग के २ नाम—(१) विधुर (२) प्रविश्लेष । इनमें (१) नपुं० (२) पुं० है ।

(त्रीण्यभिप्रायस्य)

अभिप्रायश्छन्द आशयः ॥२०॥

अभिप्राय के ३ नाम—(१) अभिप्राय (२) छन्द (३) आशय ॥२०॥

(द्वे अविस्तारस्य)

संक्षेपणं समसनम्

अविस्तार (संक्षेप) के २ नाम—(१) संक्षेपण (२) समसन ।

(द्वे विरोधस्य)

पर्यवस्था विरोधनम् ।

विरोध के २ नाम—(१) पर्यवस्था (२) विरोधन । इनमें (१) स्त्रीलिङ्ग (२) नपुं० है ।

(द्वे परितः सरणस्य)

परिसर्या परीसारः

चौतरफा फैलाव के २ नाम—(१) परिसर्या (२) परीसार ।

(त्रीणि आसनस्य)

स्यादास्था त्वासना स्थितिः ॥२१॥

बैठने के ३ नाम—(१) आस्या (२) आसन (३) स्थिति ॥२१॥

(त्रीणि विस्तारस्य)

विस्तारो विग्रहो व्यासःस च शब्दस्य विस्तरः

विस्तार के ३ नाम—(१) विस्तार (२) विग्रह (३) व्यास ।

शब्द-विस्तार का नाम—(१) 'विस्तर' ।

(द्वे अङ्गमर्दनस्य)

संवाहनं मर्दनं स्यात्

शरीर दबाने के २ नाम—(१) संवाहन (२) मर्दन ।

(द्वे तिरोधानस्य)

विनाशः स्याददर्शनम् ॥२२॥

विनाश के २ नाम—(१) विनाश (२) अदर्शन ॥२२॥

(द्वे परिचयस्य)

संस्तवः स्यात्परिचयः

परिचय के २ नाम—(१) संस्तव (२) परिचय ।

(द्वे व्रणादिप्रसरणस्य)

प्रसरस्तु विसर्पणम् ।

घाव के फैलने के २ नाम—(१) प्रसर (२) विसर्पण ।

(द्वे धनधान्यादिषु जनानामादरातिशयस्य)

नीवाकस्तु प्रयामः स्यात्

धन-धान्यादि में समाज के आदराधिक्य के २ नाम—(१) नीवाक (२) प्रयाम ।

(द्वे सांनिध्यस्य)

सन्निधिः सन्निकर्षणम् ॥२३॥

नजदीकी के २ नाम--(१) सन्निधि (२) सन्निकर्षण । इनमें (१) पुं०, (२) नपुं० है ॥२३॥

(त्रीणि धान्यादिच्छेदनस्य)

लवोऽभिलावो लवने

धान्य आदि काटने के ३ नाम--(१) लव (२) अभिलाव (३) लवन ।

(त्रीणि धान्यादीनां पूतीकरणस्य)

निष्पावः पवने पवः ।

धान्य आदि को साफ करने के ३ नाम--(१) निष्पाव (२) पवन (नपुं०) (३) पव ।

(द्वे प्रस्तावस्य)

प्रस्तावः स्यादवसरः

प्रसंग के २ नाम--(१) प्रस्ताव (२) अवसर । जैसे 'अवसरपठिता वाणी' इत्यादि ।

(द्वे तन्तुवायकृतसूत्रवेष्टनभेदस्य)

त्रसरः सूत्रवेष्टनम् ॥२४॥

जुलाहे के सूत लपेटने के भेदविशेष, नरी के २ नाम—(१) त्रसर (२) सूत्रवेष्टन ॥२४॥

(द्वे गर्भग्रहणस्य)

प्रजनः स्यादुपसरः

गर्भ धारण करने के २ नाम—(१) प्रजन (२) उपसर ।

(द्वे प्रेम्णः)

प्रश्रयप्रणयौ समौ ।

प्रेम के २ नाम--(१) प्रश्रय (२) प्रणय ।

(द्वे बुद्धिसामर्थ्यस्य)

धीशक्तिर्निष्क्रमः

[1]बुद्धिसामर्थ्य के २ नाम—(१) धीशक्ति (२) निष्क्रम । इनमें (१) स्त्री (२) पुं० है ।

(द्वे दुर्गमार्गस्य)

अस्त्री तु संक्रमो दुर्गसंचरः ॥२५॥

दुर्गम मार्ग के २ नाम--(१) संक्रम (२) दुर्गसंचर । (१) पुं० नपुं०, (२) पुँल्लिङ्ग है ॥२५॥

(युद्धार्थमतिशयोद्योगस्य)

प्रत्युत्क्रमः प्रयोगार्थः

युद्ध के लिये अतिशय उद्योग के २ नाम--(१) प्रत्युत्क्रम (२) प्रयोगार्थ ।

(द्वे प्रथमारम्भस्य)

प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।

प्रथम आरम्भ के २ नाम--(१) प्रक्रम (२) उपक्रम ।

(त्रीण्यारम्भमात्रस्य)

स्यादभ्यादानमुद्घात आरम्भः

आरम्भमात्र के ३ नाम--(१) अभ्यादान (२) उद्घात (३) आरम्भ ।

---

१ शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहौ च विज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥

(द्वे संवेगस्य)

संभ्रमस्त्वरा ॥२६॥

जल्दबाज़ी के २ नाम—(१) संभ्रम (२) त्वरा ॥२६॥

(द्वे कार्यप्रतिघातस्य)

प्रतिबन्धः प्रतिष्टम्भः

प्रतिघात (रुकावट) के २ नाम--(१) प्रतिबन्ध (२) प्रतिष्टम्भ ।

(द्वे अधोनयनस्य)

अवनायस्तु निपातनम् ।

नीचे गिराने के २ नाम--(१) अवनाय (२) निपातन ।

(द्वे साक्षात्कारस्य)

उपलम्भस्त्वनुभवः

साक्षात्कार के २ नाम--(१) उपलम्भ (२) अनुभव ।

(द्वे कुंकुमादिना लेपनस्य)

समालम्भो विलेपनम् ॥२७॥

कुमकुम आदि लेपन के २ नाम--(१) समालम्भन (२) विलेपन ॥२७॥

(द्वे रागिणोर्वियोगस्य)

विप्रलम्भो विप्रयोगः

दो प्रेमियों के वियोग के २ नाम--(१) विप्रलम्भ (२) विप्रयोग ।

(द्वे अतिदानस्य)

विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ।

अतिशय दान के २ नाम--(१) विलम्भ (२) अतिसर्जन ।

(द्वे अतिप्रसिद्धेः)

विश्रावस्तु प्रतिख्यातिः

अतिशय प्रसिद्धि के २ नाम--(१) विश्राव (२) प्रतिख्याति ।

(द्वे वस्तूनां अवेक्षणस्य)

अवेक्षा प्रतिजागरः ॥२८॥

वस्तुओं की देख-भाल के २ नाम--(१) अवेक्षा (२) प्रतिजागर । (१) स्त्रीलिङ्ग है ॥२८॥

(त्रीणि पठनस्य)

निपाठनिपठौ पाठे

पढ़ने के ३ नाम--(१) निपाठ (२) निपठ (३) पाठ । ये (१-३) पुँल्लिङ्ग हैं।

(त्रीण्यार्द्रीभावस्य)

तेमस्तेमौ समुन्दने ।

नरम हो जाने के ३ नाम--(१) तेम (२) स्तेम (३) समुन्दन । इनमें (३रा) नपुंसक है ।

(त्रीणि क्लेशस्य)

आदीनवास्रवौ क्लेशे

क्लेश के ३ नाम--(१) आदीनव (२) आस्रव (३) क्लेश । ये (१-३) पुं० हैं ।

(त्रीणि संगमस्य)

मेलके संगसंगमौ ॥२९॥

मेल-मिलाप के ३ नाम--(१) मेलक (२) संग (३) संगम ॥२९॥

(पंच तात्पर्येण वस्तूनां गवेषणस्य)

संवीक्षणं विचयनं मार्गणं मृगणा मृगः ।

किसी मतलब से वस्तुओं की छान-बीन के ५ नाम--(१) संवीक्षण (२) विचयन (३) मार्गण (४) मृगणा (५) मृग ।

(चत्वारि आलिङ्गनस्य)

परिरम्भः परिष्वङ्गः संश्लेष उपगूहनम् ॥३०॥

आलिङ्गन (लिपटाने) के ४ नाम--(१) परिरम्भ (२) परिष्वङ्ग (३) संश्लेष (४) उपगूहन ॥ ३० ॥

(पंच निरीक्षणस्य)

निर्वर्णनं तु निध्यानं दर्शनालोकनेक्षणम् ।

देखने के ५ नाम--(१) निर्वर्णन (२) निध्यान (३) दर्शन (४) आलोकन (५) ईक्षण ।

(चत्वारि निराकरणस्य)

प्रत्याख्यानं निरसनं प्रत्यादेशो निराकृतिः ३१

निराकरण (ठुकराने) के ४ नाम--(१) प्रत्याख्यान (२) निरसन (३) प्रत्यादेश (४) निराकृति । इनमें (४था) स्त्रीलिङ्ग है ॥३१॥

(द्वे प्रहरकादीनां शयनस्य)

उपशायो विशायश्च पर्यायशयनार्थकौ ।

पहरा देनेवालों के बारी-बारी सोने के २ नाम--(१) उपशाय (२) विशाय ।

(चत्वारि घृणायाः)

अर्तनं च ऋतीया च हृणीया च घृणार्थकाः ३२

घिनाने के ४ नाम--(१) अर्तन (२) ऋतीया (३) हृणीया (४) घृणा ॥३२॥

(चत्वारि व्यतिक्रमस्य)

स्याद्व्यत्यासो विपर्यासो व्यत्ययश्च विपर्यये ।

उलटा-पुलटा के ४ नाम--(१) व्यत्यास (२) विपर्यास (३) व्यत्यय (४) विपर्यय ।

(चत्वार्यतिक्रमस्य)

पर्ययोऽतिक्रमस्तस्मिन्नतिपात उपात्ययः॥३३॥

अतिक्रम के ४ नाम--(१) पर्यय (२) अतिक्रम (३) अतिपात (४) उपात्यय ॥३३॥

(एकं भृत्यादिप्रेषणस्य)

प्रेषणं यत्समाहूय तत्र स्यात्प्रतिशासनम् ।

सिपाही आदि को बुलाकर कहीं भेजने का नाम—(१) प्रतिशासन ।

(एकं यज्ञे स्तावकद्विजावस्थानभूमेः)

स संस्तावः क्रतुषु या स्तुतिभूर्द्विजन्मनाम् ३४

यज्ञ में जहाँ बैठकर ब्राह्मण स्तुति करते हैं, उस स्थान का नाम—(१) संस्ताव ॥३४॥

(द्वे तृणादिगुच्छोन्मूलसाधनस्य)

स्तम्बघ्नस्तु स्तम्बघनः स्तम्बो येन निहन्यते ।

जिससे घास छीली या काटी चाती है, उस खुरपे-हँसुये आदि के २ नाम—(१) स्तम्बघ्न (२) स्तम्बघन ।

(एकं भ्रमरसूच्यादेः)

आविधो विध्यते येन

जिससे लकड़ी आदि छेदी जाती है, उस बर्मे का नाम—(१) आविध ।

(एकं तुल्यारोहपरिणाहवृक्षादेः)

तत्र विष्वक्समे निघः ॥३५॥

जिसकी जड़ और ऊपरी भाग एक सा ऊँचा और चौड़ा हो, उस वृक्ष का नाम—(१) निघ॥३५॥

(द्वे धान्यस्योत्क्षेपणार्थस्य)

उत्कारश्च निकारश्च द्वौ धान्ये त्क्षेपणार्थकौ ३६

अनाज आदि को फटकने के २ नाम—(१) उत्कार (२) निकार ॥३६॥

(एकैकं गरणादिषु)

निगारोद्गारविक्षावोद्ग्राहास्तु गरणादिषु ।

खाकर निगलने का नाम—(१) निगार ।

उगलने का नाम—(१) उद्गार ।

खाँसने, छींकने का नाम—(१) विक्षाव ।

डकारने का नाम—(१) उद्ग्राह ।

(चत्वार्युपरमणस्य)

आरत्यवरतिविरतय उपरामे

विश्राम के ४ नाम—(१) आरति (२) अवरति (३) विरति (४) उपराम । (१-३) स्त्री, (४) पुं० है ।

(चत्वारि निष्ठीवनस्य)

अथास्त्रियां तु निष्ठेवः ॥३७॥

निष्ठ्यूतिर्निष्ठेवनं निष्ठीवनमित्यभिन्नानि ।

थूकने के ४ नाम--(१) निष्ठेव (२) निष्ठ्यूति (३) निष्ठेवन (४) निष्ठीवन । इनमें (१) पुं० स्त्री० (२) स्त्री (३-४) नपुं० हैं ॥३७॥

(द्वे वेगस्य)

जवने जूतिः

वेग के २ नाम—(१) जवन (२) जूति । इनमें (१) नपुं० (२) स्त्री है ।

(द्वे अन्तस्य)

सातिस्त्ववसाने स्यात्

अन्त के २ नाम—(१) साति (२) अवसान । इनमें (१) स्त्री, (२) नपुं० है ।

(द्वे ज्वरस्य)

अथ ज्वरे जूर्तिः ॥३८॥

ज्वर के २ नाम—(१) ज्वर (२) जूर्ति ॥३८॥

(एकं पशुप्रेरणस्य)

उदजस्तु पशुप्रेरणम्

जानवरों के हाँकने का नाम—(१) उदज।

(एकं शापादौ)

अकरणिरित्यादयः शापे।

शाप के अर्थ में प्रयुक्त होनेवाले शब्द का नाम—(१) अकरणि (पुं०)।

आदि शब्द से 'अजीवनि, अजननि, अवग्राह, निग्राह' शब्द भी शापार्थक समझने चाहिए।

(एकं अपत्यप्रत्ययान्तस्य समूहार्थे)

गोत्रान्तेभ्यस्तस्य वृन्दमित्यौपगवादिकम् ॥३९

जिस अपत्यप्रत्यय में समूह का अर्थ विद्यमान हो, वहाँ 'औपगव' आदि नाम होते हैं। आदि शब्द से 'गार्गक' 'दात्तक' आदि शब्द समझने चाहिए ॥३९॥

(अपूपशष्कुलिसमूहस्यैकैकम्)

आपूपिकं शाष्कुलिकमेवमाद्यमचेतसाम्।

पुए के समूह का नाम—(१) आपूपिक।

शष्कुली (पूड़ी) के समूह का नाम —(१) शाष्कुलिक।

आदि शब्द से सक्तु (सत्तू) के समूह का नाम—(१) साक्तुक।

(द्वे बालकानां समूहस्य)

माणवानां तु माणव्यम्

बालकों के समूह का नाम—(१) माणव्य।

(एकं मित्राणां समूहस्य)

सहायानां सहायता ॥४०॥

मित्रों के समूह का नाम—(१) सहायता॥४०॥

(एकं हलानां समूहस्य)

हल्या हलानाम्

हलों के समुदाय का नाम—(१) हल्या।

(द्वे द्विजसमूहस्य)

ब्राह्मण्यवाडव्ये तु द्विजन्मनाम्।

ब्राह्मणों के समूह के २ नाम—(१) ब्राह्मण्य (२) वाडव्य।

(एकैकं पर्शुकानां पृष्ठानां च समूहस्य)

द्वे पर्शुकानां पृष्ठानां पार्श्वं पृष्ठ्यमनुक्रमात् ॥४१

पर्शु, पसलियों के समूह का नाम —(१) पार्श्व।

पृष्ठ, पीठ के समूह का नाम–(१) पृष्ठ्य ॥४१॥

(द्वे खलानां समूहस्य)

खलानां खलिनि खल्यापि

खलों के समूह के २ नाम—(१) खलिनी (२) खल्या। ये (१–२) स्त्रीलिङ्ग हैं।

(एकं मनुष्याणां समूहस्य)

अथ मानुष्यकं नृणाम्।

मनुष्यों के समूह का नाम—(१) मानुष्यक।

(एकैकं ग्रामादीनां समूहस्य)

ग्रामता जनता धूम्या पाश्या गल्या पृथक् पृथक्

ग्रामों के समूह का नाम—(१) ग्रामता।

मनुष्यों के समूह का नाम—(१) जनता।

धूम, धूआँ के समूह का नाम—(१) धूम्या।

पाश, के समूह का नाम—(१) पाश्या।

गला, बड़े कास के समूह का नाम—(१) गल्या ॥४२॥

(एकैकं सहस्रादीनां समूहस्य)

अपि साहस्रकारीषवार्मणाथर्वणादिकम्।

सहस्र के समूह का नाम—(१) साहस्र।

करीष, सूखे गोबर के समूह का नाम—(१) कारीष।

वर्म, कवच के समूह का नाम—(१) वार्मण।

अथर्वण के समूह का नाम—(१) आथर्वण।

आदिशब्द से चर्म के समूह का नाम—(१) चार्मण।

इति संकीर्णवर्गः ॥ २ ॥

अथ नानार्थवर्गः।

नानार्थाः केऽपि कान्तादिवर्गेष्वेवात्र कीर्तिताः
भूरिप्रयोगा ये येषु पर्यायेष्वपि तेषु ते ॥१॥

इस नानार्थ वर्ग के ककारान्तादि बहुत से ऐसे शब्द हैं कि जो पिछले वर्गों में भी कहे जा

चुके हैं। वहाँ उनका उल्लेख केवल उसी अर्थ में है कि जो अर्थ विशेषरूप से प्रयोग में आता है, किन्तु यहाँ उनके कई-कई अर्थ कहे जायँगे ॥१॥

आकाशे त्रिदिवे नाकः

नाकः—आकाश, स्वर्ग।

लोकस्तु भुवने जने।

लोकः—जगत्, मनुष्य।

पद्ये यशसि च श्लोकः

श्लोकः—पद्य, कीर्ति।

शरे खड्गे च सायकः ॥२॥

सायकः—बाण, तलवार ॥ २ ॥

जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ

जम्बुकः—सियार (गीदड़), वरुण।

पृथुकौ चिपिटार्भकौ।

पृथुकः—चिउड़ा, बच्चा।

आलोको दर्शनोद्योतौ

आलोकः—दर्शन, दीप्ति।

भेरी पटहमानकौ ॥३॥

आनकः—धौंसा, नगाड़ा ॥३॥

उत्सङ्गचिह्नयोरङ्कः

अङ्कः—गोद, चिह्न।

कलङ्कोऽङ्कापवादयोः।

कलङ्कः—चिह्न, अपयश।

तक्षको नागवर्धक्योः

तक्षकः—नागविशेष, बढ़ई।

अर्कः स्फटिकसूर्ययोः ॥४॥

अर्कः—स्फटिक, सूर्य ॥४॥

मारुते वेधसि ब्रध्ने पुंसि कः कं शिरोऽम्बुनोः

कः—(पुँल्लिङ्ग) वायु, ब्रह्मा, सूर्य।

कं—(नपुंसकलिङ्ग) शिर, जल।

स्यात्पुलाकस्तुच्छधान्ये संक्षेपे भक्तसिक्थके ॥५

पुलाकः—तिन्नी चावल रहित धान (कटकरी), संक्षेप, भात का सीथ ॥५॥

उलूके करिणः पुच्छमूलोपान्ते च पेचकः

पेचकः—उल्लू, हाथी की पूँछ के आस-पास का हिस्सा।

कमण्डलौ च करकः

करकः—कमण्डल, (करवा) ओला।

सुगते च विनायकः ॥६॥

विनायकः—बुद्ध भगवान्, गणेशजी, गरुड़ ॥६॥

किष्कुर्हस्ते बितस्तौ च

किष्कुः—हाथ भर की नाप, बित्ता, बालिश्त।

शूककीटे च वृश्चिकः।

वृश्चिकः—बिच्छू, आठवीं राशि।

प्रतिकूले प्रतीकस्त्रिष्वेकदेशे तु पुंस्ययम् ॥७॥

प्रतीकः—प्रतिकूल, अङ्ग। प्रतिकूल अर्थ में यह पुं०-स्त्री०-नपुंसक लिङ्ग है, किन्तु अङ्ग अर्थ में पुँल्लिङ्ग है ॥७॥

स्याद्भूतिकं तु भूनिम्बे कत्तृणे भूस्तृणेऽपि च।

भूतिकः—भूनिम्ब (चिरायता), रोहिष, कुकुरमुत्ता।

ज्योत्स्निकायां च घोषे च कोशातकी—

कोशातकी—छोटा परवल, घोष (अपामार्ग)।

अथ कट्फले ॥८॥

सिते च खदिरे सोमवल्कः स्यात्

सोमवल्कः—कायफल, सफेद खैर ॥८॥

अथ सिह्लके।

तिलकल्के च पिण्याकः

पिण्याकः—सेल्हा, तिलकी खली।

बाह्लीकं रामठेऽपि च ॥९॥

बाह्लीकम्—हींग, बाह्लीक देश का घोड़ा, धैर्यशाली मनुष्य ॥९॥

महेन्द्रगुग्गुलूलूकव्यालग्राहिषु कौशिकः।

कौशिकः—इन्द्र, गूगुल, उल्लू, सँपेरा।

रुक्तापशंकास्वातङ्कः

आतंकः—रोग, सन्ताप, शंका।

स्वल्पेऽपि क्षुल्लकस्त्रिषु ॥१०॥

क्षुल्लकः—थोड़ा, नीच, छोटा, दरिद्र। तीनों लिङ्गों में इसका पाठ है ॥१०॥

जैवातृकः शशाङ्केऽपि

जैवातृकः—चन्द्रमा, दीर्घायु मनुष्य, कुश ।

खुरेऽप्यश्वस्य वर्तकः ।

वर्तकः—घोड़े का खुर, बटेर पक्षी ।

व्याघ्रेऽपि पुण्डरीको ना

पुण्डरीकः—(पुं०) बाघ, अग्नि, दिग्गज, सफेद कमल ।

यवान्यामपि दीपकः ॥११॥

दीपकः—अजवाइन, मोर की चोटी, प्रकाश ॥११॥

शालावृकाः कपिक्रोष्टुश्वानः

शालावृकः—बन्दर, सियार, कुत्ता ।

स्वर्णेऽपि गैरिकम् ।

गैरिकम्—गेरू, सोना ।

पीडार्थेऽपि व्यलीकं स्यात्

व्यलीकम्—अप्रिय कार्य, पीड़ा ।

अलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥१२॥

अलीकम्—झूठ, अप्रिय ॥१२॥

शीलान्वयावनूके

अनूकम्—स्वभाव, वंश, पूर्वजन्म ।

द्वे शल्के शकलवल्कले ।

शल्कम्—खण्ड, पेड़ का छिलका ।

साष्टे शते सुवर्णानां हेम्न्युरोभूषणे पले ॥१३॥
दीनारेऽपि च निष्कोऽस्त्री

निष्कः—(पुं०, नपुं०) एक सौ आठ कर्ष सुवर्ण, गले का आभूषण, पल ॥१३॥

कल्कोऽस्त्री शमलैनसोः ।
दम्भेऽपि

कल्कः—(पुं-नपुं०) पुरीष, पाप, पाखण्ड, हाथी का दाँत, घी, तेल आदि का शेष ।

अथ पिनाकोऽस्त्री शूलशंकरधन्वनोः ॥१४॥

पिनाकः (पुं-नपुं०) त्रिशूल, शंकरजी का धनुष, धूल की वर्षा ॥१४॥

धेनुका तु करेण्वां च

धेनुका—हथिनी, जल्द की ब्यायी हुई गाय ।

मेघजाले च कालिका ।

कालिका—मेघ का समूह, काली देवी ।

कारिका यातनावृत्त्योः

कारिका—नरक का कष्ट, विवरण के श्लोक । जैसे 'गृहकारिका ।'

कर्णिका कर्णभूषणे ॥१५॥
करिहस्तेऽङ्गुलौ पद्मबीजकोश्याम्

कर्णिका—कर्णफूल, हाथी की सूँड़, उँगली, कमल के बीज की मींगी ॥१५॥

त्रिषूत्तरे ।

आगे कहे जानेवाले शब्द तीनों लिङ्ग के होंगे ।

वृन्दारकौ रूपमुख्यौ

वृन्दारकः–(पुं-स्त्री-नपुं०) रूप, मुख्य, देवता, सुन्दर, श्रेष्ठ ।

एके मुख्यान्यकेवलाः ॥१६॥

एकम्—(पुं-स्त्री-नपुं०) मुख्य, अन्य, केवल ॥१६॥

स्याद्दाम्भिकः कौक्कुटिको यश्चादूरेरितेक्षणः।

कौक्कुटिकः—(त्रिलिङ्ग) पाखण्डी, समीप से देखनेवाला ।

लालाटिकः प्रभोर्भालदर्शी कार्याक्षमश्च यः१७

लालाटिकः—(त्रिलिङ्ग) स्वामी के कोप और प्रसन्नता को देखनेवाला (मुँहदेखा), काम करने में असमर्थ अर्थात् आलसी ॥१७॥*

(इति ककारान्ताः शब्दाः)

---

* क्वचिदेते पंच श्लोकाः क्षेपकत्वेन वर्तमाना दृश्यंते—
भूभृन्नितम्बवलयचक्रेषु **कटको**ऽस्त्रियाम् ।
सूच्यग्रे क्षुद्रशत्रौ च रोमहर्षे च **कंटकः** ॥१॥
पाकौ पक्तिशिशू मध्यरत्ने नेतरि **नायकः** ।
पर्यङ्कः स्यात्परिकरे स्याद्व्याघ्रेऽपि च **लुब्धकः** ॥२॥
आर्द्रायामपि लुब्धक इत्यपि पाठः ।
पेटकस्त्रिषु वृन्देऽपि गुरौ देश्ये च **देशिकः** ।
खेटकौ ग्रामफलकौ धीवरेऽपि च **जालिकः** ॥३॥
पुष्परेणौ च **किंजल्कः शुल्को**ऽस्त्री स्त्रीधनेऽपि च ।
स्यात्कल्लोलेऽप्युत्कलिका **वार्धकं** भाववृन्दयोः ॥४॥
करिण्यां चापि **गणिका दारकौ** बालभेदकौ ।
अन्धेऽप्य**नेडमूकः** स्या**ट्टङ्कौ** दर्पाश्मदारणौ ॥५॥

मयूखस्त्विट् करज्वालासु

मयूखः—कान्ति, किरण, आग की लपट।

अलिबाणौ शिलीमुखौ।

शिलीमुखः—भौंरा, बाण।

शंखो निधौ ललाटास्थ्नि कम्बौ

शंखः–(पुं.-नपुंसक) खजाना, मस्तक की हड्डी, शंख (आकाश)।

इन्द्रियेऽपि खम् ॥१८॥

खम्—इन्द्रिय, नगर, खेत, शून्य, बिन्दु, आकाश ॥१८॥

घृणिज्वाले अपि शिखे

शिखा—किरण, आग की लपट, चोटी।

(इति खान्ताः)

शैलवृक्षौ नगावगौ।

नगः—पर्वत, वृक्ष। ये नग और अग दोनों कहलाते हैं।

आशुगौ वायुविशिखौ

आशुगः—वायु, बाण।

शरार्कविहगाः खगाः॥१९॥

खगः—सूर्य, शर, पक्षी ॥१९॥

पतंगौ पक्षिसूर्यौ च

पतङ्गः–पक्षी, सूर्य।

पूगे क्रमुकवृन्दयोः।

पूगः— सुपारी, समूह।

पशवोऽपि मृगाः

मृगः—हरिण आदि वन्य पशु, मृगशीर्ष नक्षत्र, खोजना।

वेगः प्रवाहजवयोरपि ॥२०॥

वेगः–प्रवाह, वेग, पुरीषोत्सर्ग का वेग ॥२०॥

परागः कौसुमे रेणौ स्नानीयादौ रजस्यपि।

परागः—फूल की धूलि, स्नान करने का सामान उबटन आदि, धूल। आदिशब्द से कामशास्त्र में कथित कपूर आदि का चूर्ण। अपि शब्द से उपराग।

गजेऽपि नागमातङ्गौ

नागः, मातङ्गः—हाथी चाण्डाल।

अपाङ्गस्तिलकेऽपि च ॥२१॥

अपाङ्गः—नेत्र का अन्तिम भाग, तिलक, अङ्गहीन ॥२१॥

सर्गः स्वभावनिर्मोक्षनिश्चयाध्यायसृष्टिषु।

सर्गः—स्वभाव, त्याग, निश्चय, ग्रन्थ का अध्याय, सृष्टि।

योगः संनहनोपायध्यानसंगतियुक्तिषु ॥२२॥

योगः—कवच, उपाय यानी सामदानादि नीति, चित्त की चंचलता को रोकना, मिलाप, युक्ति ॥२२॥

भोगः सुखे स्त्र्यादिभृतावहेश्च फणकाययोः।

भोगः—सुख, स्त्री या वेश्या, हाथी घोड़ आदि का मूल्य, सर्प का फन, शरीर।

चातके हरिणे पुंसि सारङ्गः शबले त्रिषु ॥२३॥

सारङ्गः—(पुं०) पपीहा, हरिण।

सारंग–(पुं०-स्त्री० नपुं०) चितकबरा ॥२३॥

कपौ च प्लवगः

प्लवगः—वानर, मेढक, कोचवान।

शापे त्वभिषङ्गः पराभवे।

अभिषङ्गः—शाप, पराभव (तिरस्कार)।

यानाद्यङ्गे युगः पुंसि

युगः (पुं०)—रथ तथा शकट आदि का अङ्ग, दो की संख्या, कलियुग-सत्ययुग आदि, चार हाथ की नाप।

युगं युग्मे कृतादिषु ॥२४॥

युगम्—औषधिविशेष (नपुं०) ॥२४॥

स्वर्गेषु पशुवाग्वज्रदिङ्नेत्रघृणिभूजले।
लक्ष्यदृष्ट्या स्त्रियां पुंसि गौः

गौः (स्त्री०, पुं०)—स्वर्ग, बाण, पशु (गाय-बैल) वचन, वज्र, दिशा, नेत्र, किरण, पृथ्वी, जल।

लिङ्गं चिह्नशेफसोः ॥२५॥

लिङ्गम्—चिह्न, उपस्थ इन्द्रिय ॥२५॥

शृङ्गं प्राधान्यसान्वोश्च

शृङ्गम्–श्रेष्ठता, पर्वत की चोटी, पशु की सींग।

वराङ्गं मूर्धगुह्ययोः।

वराङ्गम्—मस्तक, स्त्री की योनि ।

भगं श्रीकाममाहात्म्यवीर्ययत्नार्ककीर्तिषु॥२६॥

भगम्—लक्ष्मी, इच्छा, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रयत्न, सूर्य, यश ॥२६॥

(इति गान्ताः ।)

परिघः परिघातेऽस्त्रेऽपि

परिघः—चौतरफा की मार, गँड़ासा, लोहाँगी और अपिशब्द से योगविशेष ।

ओघो वृन्देऽम्भसां रये ।

ओघः—समूह, जल का प्रवाह, परम्परा, नृत्यविशेष ।

मूल्ये पूजाविधावर्घः

अर्घः—दाम, पूजा का सामान, खरीदी हुई वस्तु ।

अंहो दुःखव्यसनेष्वघम् ॥२७॥

अघम्—पाप, दुःख, शिकार, जुआ या नशे की आदत ॥२७॥

त्रिष्विष्टेऽल्पे लघुः

लघुः—(पुं०-स्त्री-नपुं०) प्रिय, छोटा, थोड़ा ।

(इति घान्ताः)

काचाः शिक्यमृद्भेददृग्रुजः ।

काचः—सिकहर, एक विशेष प्रकार की मिट्टी, नेत्र का रोगविशेष ।

विपर्यासे विस्तरे च प्रपञ्चः

प्रपंचः—उलटा, विस्तार, फसाद ।

पावके शुचिः ॥२८॥

मास्यमात्ये चाप्युपधे पुंसि मेध्ये सिते त्रिषु ।

शुचिः—(पुं०) अग्नि, आषाढ़ महीना, मंत्री, शुद्ध मन (पुं०-स्त्री०-नपुं०) पवित्र, सफेद ॥२८॥

अभिष्वङ्गे स्पृहायां च गभस्तौ च रुचिः स्त्रियाम् ॥२९॥

रुचिः—(स्त्रीलिङ्ग) अतिशय आसक्ति, इच्छा किरण, शोभा ॥२९॥

(इति चान्ताः)

"**प्रसन्ने भल्लुकेऽप्यच्छो गुच्छः स्तबकहारयोः ।**

अच्छः—प्रसन्न, भालू, स्फटिक मणि ।

गुच्छः (त्रिलि.–डंठल, फूल का गुच्छा, समुदाय

परिधानाञ्चले कच्छो जलप्रान्ते त्रिलिङ्गकः ॥१॥"

कच्छः—(त्रिलिङ्ग) वस्त्र का अंचल (धोती की लाँग) कच्छः (त्रिलिङ्ग) कछार देश ॥१॥

इति क्षेपकश्छान्तः ।

केकिताक्ष्यावहिभुजौ दन्तविप्राण्डजा द्विजाः ।

द्विजः—अहिभुज् (पुं०) मोर, गरुड, दाँत, ब्राह्मण-क्षत्रिय वैश्य, पक्षी ।

अजा विष्णुहरच्छागाः

अजः—विष्णु, शिव, बकरा, कामदेव, ब्रह्मा, रघु के पुत्र ।

गोष्ठाध्वनिवहा व्रजाः ॥३०॥

व्रजः—गोशाला, रास्ता, समूह ॥३०॥

धर्मराजौ जिनयमौ

धर्मराजः—बुद्ध भगवान्, यमराज, युधिष्ठिर ।

कुञ्जो दन्तेऽपि न स्त्रियाम् ।

कुञ्जः—(पुँल्लिङ्ग-नपुंसक) हाथी का दाँत, लतागृह ।

वलजे क्षेत्रपूर्द्वारे वलजा वल्गुदर्शना ॥३१॥

वलजम्—खेत, नगर का द्वार ।

वलजा—सुन्दरी स्त्री ॥३१॥

समे क्ष्मांशे रणेऽप्याजिः

आजिः—(स्त्री०) समतल भूमि, संग्राम ।

प्रजा स्यात्सन्ततौ जने ।

प्रजाः (स्त्री०)—सन्तान, जनता (रैयत) ।

अब्जौ शङ्खशशाङ्कौ च

अब्जः—शंख, चन्द्रमा, कमल ।

स्वके नित्ये निजं त्रिषु ॥३२॥

निजम्—(त्रिलिङ्ग) अपना, नित्य ॥३२॥

(इति जान्ताः)

पुंस्यात्मनि प्रवीणे च क्षेत्रज्ञो वाच्यलिङ्गकः ।

क्षेत्रज—(पुं०) पुरुष (स्त्री० पुं० नपुं०) प्रवीण

संज्ञा स्याच्चेतना नाम हस्ताद्यैश्चार्थसूचना३३॥[१]

संज्ञा--होश, हाथ भौं तथा नेत्र का संकेत, गायत्री, सूर्य की स्त्री ॥३३॥

(इति ञान्ताः)

काकेभगण्डौ करटौ

करटः--कौआ, हाथी का गण्डस्थल।

गजगण्डकटी कटौ।

कटिः (पुं०)—हाथी का गण्डस्थल, कमर।

शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे॥३४॥

शिपिविष्टः—खल्वाट (गंजा), खराब चमड़ा, शिवजी ॥३४॥

देवाशल्पिन्यपि त्वष्टा

त्वष्टृ--विश्वकर्मा, सूर्यविशेष, बढ़ई।

दिष्टं दैवेऽपि न द्वयोः।

दिष्टम्—पूर्वजन्म का कर्म, भाग्य।

दिष्टः—समय।

रसे कटुः कट्वकार्ये त्रिषु मत्सरतीक्ष्णयोः।

कटुः (पुं०)--पिप्पली आदि का रसविशेष

कटुं (नपुं०) खराब काम।

कटु (त्रिलिङ्ग)—ईर्ष्या, तीखा।

रिष्टं क्षेमाशुभाभावे

रिष्टम्--कल्याण, अमंगल, अभाव।

अरिष्टं तु शुभाशुभे ॥३५॥

अरिष्टम्--शुभ, अशुभ ॥३५॥

मायानिश्चलयंत्रेषु कैतवानृतराशिषु।

अयोघने शैलशृङ्गे सीराङ्गे कूटमस्त्रियाम् ३६

कूटम् (पुं-नपुं०)—माया, निश्चल (जिसका कभी नाश न हो), यंत्र (मृगों को फँसाने का जाल) कपट, झुठाई, समूह, लोहे का घन, पर्वत की चोटी, हल का अगला हिस्सा (फाल) ॥३६॥

सूक्ष्मैलायां त्रुटिः स्त्री स्यात्कालेऽल्पे

संशयेऽपि सा

त्रुटिः (स्त्री०)–छोटी (गुजराती) इलायची, समय, केवल उतना समय कि जितनी देर में ह्रस्व अक्षर की चौथाई मात्रा बोली जा सके, थोड़ा, सन्देह।

आत्युत्कर्षाश्रयः कोट्यः

कोटिः (स्त्री०)--पीड़ा, उन्नति, कोना।

मूले लग्नकचे जटा ॥३७॥

जटा--जड़, उलझा केश, जटामांसी, वेद का पाठविशेष ॥३७॥

व्युष्टिः फले समृद्धौ च

व्युष्टिः—फल, बढ़ी हुई दौलत।

दृष्टिर्ज्ञानेऽक्ष्णि दर्शने।

दृष्टिः—ज्ञान, आँख, देखना।

इष्टिर्यागेच्छयोः

इष्टिः—यज्ञ, इच्छा।

सृष्टं निश्चिते बहुनि त्रिषु ॥३८॥

सृष्टम्—निश्चित (तैं पायी हुई बात), अधिक (त्रिलिङ्ग) ॥३८॥

कष्टे तु कृच्छ्रगहने

कष्टम्—कठिनाई, (त्रिलिङ्ग) घना वन।

दक्षामन्दागदेषु च।

पटुः

पटुः—चलता-पुरजा, आरोग्य।

द्वौ वाच्यलिङ्गौ च

उपर्युक्त कष्ट और पटु शब्द वाच्यलिङ्ग हैं यानी चाहे जिस लिङ्ग में इनका प्रयोग किया जा सकता है।

(इति टान्ताः)

नीलकण्ठः शिवेऽपि च ॥३९॥

नीलकण्ठः—शिव, मयूर ॥३९॥

पुंसि कोष्ठोऽन्तर्जठरं कुसूलोऽन्तर्गृहं तथा।

कोष्ठः (पुं)—पेट का भीतरी भाग, कोठिला, घर का भीतरी हिस्सा।

निष्ठा निष्पत्तिनाशान्ताः

निष्ठा—उपपत्ति, गायब होना, विनाश।

---

१ यह श्लोक क्षेपक है—

दोषज्ञौ वैद्यविद्वांसौ **ज्ञो** विद्वान्सोमजोऽपि च।

विज्ञौ प्रवीणकुशलौ **कालज्ञो** ज्ञानिकुक्कुटौ ॥

काष्ठोत्कर्षे स्थितौ दिशि ॥४०॥

काष्ठा–वृद्धि, दशा, दिशा, समयविशेष ॥४०॥

त्रिषु ज्येष्ठोऽतिशस्तेऽपि

ज्येष्ठः––बहुत अच्छा, सबसे बड़ा लड़का या भाई, ज्येष्ठ महीना ।

कनिष्ठोऽतियुवाल्पयोः ।

कनिष्ठः (त्रिलिङ्ग)––बहुत छोटा, छोटा भाई ।

(इति ठान्ताः)

दण्डोऽस्त्री लगुडेऽपि स्यात्

दण्डः—लाठी, दमन, मानखण्डन, यमराज, सेना, व्यूहभेद, प्रकाण्ड, घोड़ा, कोडा, मन्थन, ग्रह, सूर्य के पारिपर्श्वक ।

गुडो गोलेक्षुपाकयोः ॥४१॥

गुडः—मिट्टी आदि का गोला, गुड़ ॥४१॥

सर्पमांसात्पशू व्यालौ

व्यालः—साँप, मांसाहारी पशु सिंह व्याघ्रादि ।

गोभूवाचस्त्विडा इलाः ।

इडा––गाय, पृथ्वी, वाणी, बुध की स्त्री ।

'डलयोरेकत्वविधानात्' इस नियम से 'इला' शब्द भी उन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होता है ।

क्ष्वेडा वंशशलाकाऽपि

क्ष्वेडा (स्त्री०)––बाँस की तीली । अपिशब्द से पींजरा, सूप, सिंहनाद आदि ।

क्ष्वेडा (पुं०)–विष ।

नाडी नालेऽपि षट् क्षणे ॥४२॥

नाडी–क्षण भर का समय, डंठल, नसें ॥४२॥

काण्डोऽस्त्री दण्डबाणार्ववर्गावसरवारिषु ।

काण्डः (पुं०-नपुं०)––लाठी, बाण, निकृष्ट, परिच्छेद, अवसर (मौका, समय), जल ।

स्याद्भाण्डमश्वाभरणेऽमत्रे मूलवणिग्धने ४३

भाण्डम्––घोड़े का अलंकार, बरतन, मूल धन, बनिये की पूँजी ॥४३॥

(इति डान्ताः)

भृशप्रतिज्ञयोर्बाढम्

बाढम्––अतिशय, प्रतिज्ञा, स्वीकार ।

प्रगाढं भृशकृच्छ्रयोः ।

प्रगाढम्––दृढ, कठिनाई ।

शक्तस्थूलौ त्रिषु दृढौ

दृढः (पुं–स्त्री०–नपुं०)–सामर्थ्य, मोटापन ।

व्यूढौ विन्यस्तसंहतौ ॥४४॥

व्यूढः (पुं–स्त्री–नपुं०)––छोड़ा या रक्खा, दृढ़ या परस्पर मिलित, सेना का विशेष संस्थापन ॥४४॥

(इति ढान्ताः)

भ्रूणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे

भ्रूणः––बच्चा, स्त्री का गर्भ ।

बाणो बलिसुते शरे ।

बाणः—राजा बलिका पुत्र, तीर ।

कणोऽतिसूक्ष्मे धान्यांशे

कणः––बहुत सूक्ष्म, अन्न का कण ।

संघाते प्रमथे गणः ॥४५॥

गणः––समुदाय, शिव के पारिषद ॥४५॥

पणो द्यूतादिषूत्सृष्टे भृतौ मूल्ये धनेऽपि च ।

पणः––जुए में खर्च किया धन, आदि शब्द से मेढ़े, तीतर, मुर्गे आदि की लड़ाई में लगी बाजी, नौकर का वेतन, किसी वस्तु का दाम, ४ काकिणी का दाम ।

मौर्व्यां द्रव्याश्रिते सत्त्वशौर्यसन्ध्यादिके गुणः

गुणः—धनुष की डोरी, रस गन्ध आदि, बल, बहादुरी, सन्धि आदि ॥४६॥

निर्व्यापारस्थितौ कालविशेषोत्सवोः क्षणः ।

क्षणः—बेकारी, एक मुहूर्त का बारहवाँ हिस्सा, पुत्रादि के जन्म-विवाह आदि का उत्सव ।

वर्णो द्विजादौ शुक्लादौ स्तुतौ वर्णं तु वाक्षरे४७

वर्णः (पुं०)––ब्राह्मण आदि वर्ण, शुक्लनील-पीतादि रंग, स्तुति ।

वर्णम् (नपुं०)—अक्षर ॥४७॥

अरुणो भास्करेऽपि स्याद्वर्णभेदेऽपि च त्रिषु ।

अरुणः--सूर्य, (त्रिलिङ्ग०) सूर्य का सारथि, वर्णभेद (प्रातःकाल और सन्ध्या के समय आकाश की लालिमा)।

स्थाणुः शर्वोऽपि

स्थाणुः--शिव, थून (खम्भा), चिरस्थायी पर्वत, वृक्ष (ठूँठ)।

अथ द्रोणः काकेऽपि

द्रोणः--कौआ, अपिशब्द से अश्वत्थामा के पिता, परिमाणविशेष (४ आढ़क=१ द्रोण)

आजौ रवे रणः ॥४८॥

रणः--संग्राम, शब्द ॥४८॥

ग्रामणीर्नापिते पुंसि श्रेष्ठे ग्रामाधिपे त्रिषु ।

ग्रामणीः (पुँ०)--नाई, प्रधान, गाँव का मालिक ।

ग्रामणी[1]--(त्रिलिङ्ग)।

ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्ते चान्तरा भ्रुवोः

ऊर्णा--मेढ़े आदि का रोआँ (ऊन), भौंहों के बीच की भौंरी ॥४९॥

हरिणी स्यान्मृगी हेमप्रतिमा हरिता च या ।

हरिणी--मृगी, सुवर्ण की बनी हरी प्रतिमा ।

त्रिषु पाण्डौ च हरिणः ।

हरिणः (त्रिलिङ्ग)—मृग, पाण्डुर वर्ण ।

स्थूणा स्तम्भेऽपि वेश्मनः ॥५०॥

स्थूणा—खूँटा, घर का खम्भा, लोह की बनी प्रतिमा ॥५०॥

तृष्णा स्पृहा पिपासे द्वे

तृष्णा—कामना, प्यास ।

जुगुप्साकरुणे घृणे ।

घृणा—निन्दा, दया ।

वणिक्पथे च विपणिः

विपणिः—बाजार की गली, दूकान ।

सुरा प्रत्यक् च वारुणी ॥५१॥

वारुणी—शराब, पश्चिम दिशा । च शब्द से गण्डदूर्वा ॥५१॥

करेणुरिभ्यां स्त्री, नेभे

करेणुः—हाथी, हथिनी । हाथी के अर्थ में 'करेणु' शब्द पुँल्लिङ्ग है और हथिनी के अर्थ में स्त्रीलिङ्ग है ।

द्रविणं तु बलं धनम् ।

द्रविणम् (नपुं०-पुं०)—बल, धन ।

शरणं गृहरक्षित्रोः

शरणम्—घर, रक्षक ।

श्रीपर्णं कमलेऽपि च ॥५२॥

श्रीपर्णम्–कमल, अग्निमन्थ वृक्ष ॥५२॥

विषाभिमरलोहेषु तीक्ष्णं क्लीबे खरे त्रिषु ।

तीक्ष्णम्—विष, युद्ध, लोह, अतिशय तीखा, सेंधा नमक ।

प्रमाणं हेतुमर्यादाशास्त्रेयत्ताप्रमातृषु ॥५३॥

प्रमाणम्—कारण, मर्यादा (सीमा), शास्त्र की इयत्ता, ज्ञानी ॥५३॥

करणं साधकतमं क्षेत्रगात्रेन्द्रियेष्वपि ।

करणम्—कार्यसिद्धि में प्रधान कारण, खेत, शरीर, इन्द्रिय । अपिशब्द से वैश्य के संसर्ग से शूद्रा स्त्री में उत्पन्न सन्तान ।

प्राण्युत्पादे संसरणमसंबाधचमूगतौ ॥५४॥

घण्टापथे

संसरणम्—प्राणियों का जन्म, जिधर से बिना रुकावट सेना चली जा सके, वह राजमार्ग ॥५४॥

अथ वान्तान्ने समुद्गिरणमुन्नये ।

समुद्गिरणम्—वमन किया हुआ अन्न, जल-पात्र आदि का ऊपर उठाना, उखाड़ना ।

अतस्त्रिषु

आगे कहे जानेवाले सब णान्त शब्द पुं० स्त्री० नपुंसक तीनों लिङ्ग हैं ।

विषाणं स्यात्पशुशृङ्गेभदन्तयोः ॥५५॥

---

१ ग्रामणी=गाँव का पटवारी (शुक्रनीति)। हाल की गाथासप्तशती से पता चलता है कि ग्रामणी गाँव का फौजी सरदार होता था। जिसका कार्य डाकुओं से गाँवों की रक्षा करना था।

विज्झारुग्रणालावं पल्ली मा कुणौ ग्रामणी ससै ।
पच्चुज्जीवई यदि कहवि सुखयिता जोवितं मुअई ॥

विषाणम् (त्रिलिङ्ग)—पशुओं की सींग, हाथी के दाँत ॥ ५५॥

प्रवणं क्रमनिम्नोर्व्यां प्रह्वे ना तु चतुष्पथे ।

प्रवणम् (त्रिलिङ्ग)—क्रमशः ढालुआ जमीन, नम्र, चौराहा ।

संकीर्णौ निचिताशुद्धौ

संकीर्ण (त्रिलिङ्ग)—गहन, व्याप्त, अशुद्ध, वर्णसंकर ।

ईरिणं शून्यमूषरम्[१] ॥ ५६॥

ईरिणम् (त्रिलि.)—आश्रयहीन देश, ऊसर भूमि ॥५६॥

(इति णान्ताः)

देवसूर्यौ विवस्वन्तौ

विवस्वत्—देवता, सूर्य ।

सरस्वन्तौ नदार्णवौ ।

सरस्वत्—नद, समुद्र ।

पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ

गरुत्मत्—पक्षी, गरुड़ ।

शकुन्तौ भासपक्षिणौ ॥५७॥

शकुन्तः—भास पक्षी, पक्षीमात्र ॥५७॥

अग्न्युत्पातौ धूमकेतू

धूमकेतुः—अग्नि, उत्पातसूचक ताराविशेष ।

जीमूतौ मेघपर्वतौ ।

जीमूतः—मेघ, पर्वत ।

हस्तौ तु पाणिनक्षत्रे

हस्तः—हाथ, हस्तनक्षत्र ।

मरुतौ पवनामरौ ॥५८॥

मरुत्—वायु, देवता ॥५८॥

यन्ता हस्तिपके सूते

यन्तृ—हाथीवान्, सारथी ।

भर्ता धातरि पोष्टरि ।

भर्तृ—ब्रह्मा, स्वामी ।

यानपात्रे शिशौ पोतः

पोतः—नाव, बालक ।

प्रेतः प्राण्यन्तरे मृते ॥५९॥

प्रेतः—दूसरा जीवन, मृतक ॥५९॥

ग्रहभेदे ध्वजे केतुः

केतुः—ग्रहविशेष, पताका ।

पार्थिवे तनये सुतः ।

सुतः—राजा, पुत्र ।

स्थपतिः कारुभेदेऽपि

स्थपतिः—कारीगर । अपिशब्द से कंचुकी, जीवेष्टियाजी ।

भूभृद्भूमिधरे नृपे ॥६०॥

भूभृत्—पर्वत, राजा ॥६०॥

मूर्धाभिषिक्तो भूपेऽपि

मूर्धाभिषिक्तः—राजा, क्षत्रियमात्र ।

ऋतुः स्त्रीकुसुमेऽपि च ।

ऋतुः (पुं०)—स्त्रीरज, बसन्त आदि छ ऋतुयें (स्त्री०)

विष्णावप्यजिताव्यक्तौ

अजितः अव्यक्तः—विष्णु भगवान्, अपराजित, शिव ।

सूतस्त्वष्टरि सारथौ ॥६१॥

सूतः—बढ़ई, सारथी, बन्दीजन ॥६१॥

व्यक्तः प्राज्ञेऽपि

व्यक्तः (त्रिलिङ्ग)—पण्डित, स्पष्ट (स्फुट) दृश्य, स्थूल ।

दृष्टान्तावुभौ शास्त्रनिदर्शने ।

दृष्टान्तः—तर्कादि शास्त्र, उदाहरण ।

क्षत्ता स्यात्सारथौ द्वाःस्थे क्षत्रियायां च शूद्रजे

क्षत्तृ—सारथी, द्वारपाल, शूद्र के संसर्ग से क्षत्रिया में उत्पन्न सन्तति ॥६२॥

वृत्तान्तः स्यात्प्रकरणे प्रकारे कार्त्स्न्यवार्तयोः ।

वृत्तान्तः—प्रकरण, प्रकार, पूर्णता, सन्देश, समाचार ।

आनर्तः समरे नृत्यस्थाननीवृद्विशेषयोः॥६३॥

१—यह श्लोक क्षेपक है—

सेतौ च वरणा वेणी नदीभेदे कचोच्चये ।

आनर्तः—संग्राम, नाट्यशाला, द्वारिकापुरी॥६३॥

कृतान्तो यमसिद्धान्तदैवाकुशलकर्मसु ।

कृतान्तः—यमराज, सिद्धान्त, पूर्वजन्म का (प्रारब्ध) कर्म, पाप ।

श्लेष्मादिरसरक्तादिमहाभूतानि तद्गुणाः ।
इन्द्रियाण्यश्मविकृतिः शब्दयोनिश्च धातवः॥६४

धातुः—श्लेष्मा आदि (वात, पित्त, कफ) रस, रक्त आदि (आदि शब्द से वसा, मज्जा आदि महाभूत (पृथिवी, जल, तेज, वायु और पृथिवी आदि) गुण (गन्ध आदि) इन्द्रियाँ, पत्थर का विकार (शिलाजीत, संखिया आदि), शब्दों की उत्पत्ति के कारण भू आदि धातु ॥६४॥

कक्षान्तरेऽपि शुद्धान्तो नृपस्यासर्वगोचरे॥६५॥

शुद्धान्तः—राजा की राजधानी का स्थान-विशेष (गुप्त स्थान) रनिवास, आशौचान्त ॥६५॥

कासूसामर्थ्ययोः शक्तिः

शक्तिः—साँगा, बर्छी, सामर्थ्य ।

मूर्तिः काठिन्यकाययोः ।

मूर्तिः—मजबूती, शरीर ।

विस्तारवल्ल्योर्व्रततिः

व्रततिः—फैलाव, लता ।

वसती रात्रिवेश्मनोः ॥६६॥

वसतिः (स्त्री०)—रात्रि, मकान ॥६६॥

क्षयार्चयोरपचितिः

अपचितिः (स्त्री०)—नुकसान, पूजा ।

सातिर्दानावसानयोः ।

सातिः (स्त्री०)—दान, अन्त ।

अर्तिः पीडा धनुष्कोट्योः

अर्तिः—पीडा, धनुष का अग्रभाग ।

जातिः सामान्यजन्मनोः ॥६७॥

जातिः—मनुष्य-पशु आदि जाति, जन्म, मालती, जायफल ॥६७॥

प्रचारस्यन्दयो रीतिः

रीतिः–प्रणाली, झरना, पीतल लोहे की कीट ।

ईतिर्डिम्बप्रवासयोः ।

[1]ईतिः—विप्लव, परदेश ।

उदयेऽधिगमे प्राप्तिः

प्राप्तिः—उत्पत्ति, लाभ ।

त्रेता त्वग्नित्रये युगे ॥६८॥

त्रेता—दक्षिण, गार्हपत्य और आहवनीय ये तीन प्रकार की अग्नि, त्रेतायुग ॥६८॥

वीणाभेदेऽपि महती

महती—नारद की वीणा, महिमामयी स्त्री आदि ।

भूतिर्भस्मनि सम्पदि ॥६९॥

भूतिः—अणिमा महिमा आदि सिद्धियाँ, भस्म, सम्पत्ति ॥६९॥

नदीनगर्योर्नागानां भोगवत्यः

भोगवती—नागों की नदी, सर्पों की पुरी ।

अथ संगरे ।

सङ्गे सभायां समितिः

समितिः—संग्राम, साथ, सभा ।

क्षयवासावपि क्षितिः ।

क्षितिः—नाश, निवासस्थान, पृथ्वी ।

रवेरर्चिश्च शस्त्रं च वह्निज्वाला च हेतयः॥७०॥

हेतिः—सूर्य की किरण, हथियार, आग की लपट ॥७०॥

जगती जगतिच्छन्दोविशेषेऽपि क्षितावपि ।

जगती—संसार, एक प्रकार का छन्द, भूमि, जन-समुदाय ।

पंक्तिश्छन्दोऽपि दशमम्

पंक्तिः–दस अक्षर के चरण का छन्द, श्रेणी ।

स्यात्प्रभावेऽपि चायतिः ॥७१॥

आयतिः—आगामी समय, प्रभाव, संयम, विस्तार ॥७१॥

पत्तिर्गतौ च

पत्तिः—पैदल सेना, गमन ।

---

१ ईतयः सप्तविधाः—
अतिवृष्टिरनावृष्टिर्मूषिकाः शलभाः खगाः ।
प्रत्यासन्नाश्च राजानः सप्तैता ईतयः स्मृताः ॥

मूले तु पक्षतिः पक्षभेदयोः ।

पक्षतिः—प्रतिपदा तिथि, पंख की जड़ ।

प्रकृतिर्योनिलिङ्गे च

प्रकृतिः—स्वभाव, योनि, लिङ्ग, राजा के मंत्री आदि ।

[1]कैशिक्याद्याश्च वृत्तयः ॥७२॥

वृत्तिः—नाट्य-शास्त्र की कैशिकी आदि वृत्ति, सूत्र का विवरण ॥७२॥

सिकताः स्युर्वालुकाऽपि

सिकताः—(स्त्रीलिङ्ग बहुवचनान्त) बालू, बालुकामय देश (रेगिस्तान)

वेदे श्रवसि च श्रुतिः ।

श्रुतिः—वेद, कान, सुनना ।

वनिता जनितात्यर्थानुरागायां च योषिति॥७३॥

वनिता—स्त्रीमात्र, बड़ी प्यारी स्त्री ॥७३॥

गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि

गुप्तिः—पृथ्वी के भीतर का गड्हा, गुफा या जेलखाना ।

धृतिर्धारणधैर्ययोः ।

धृतिः—धारण करना, धैर्य ।

बृहती क्षुद्रवार्ताकी छन्दोभेदे महत्यपि॥७४॥

बृहती—छोटा भण्टा, एक प्रकार का छन्द, बड़ी ॥७४॥

वासिता स्त्री-करिण्योश्च

वासिता—स्त्री, हथिनी ।

वार्ता वृत्तौ जनश्रुतौ ।

वार्ता—जीविका, अफवाह, समाचार ।

वार्तं फल्गुन्यरोगे च त्रिषु

वार्तम्-(त्रिलिङ्ग) कुशल, आरोग्य, असार, तत्वहीन ।

अप्सु च घृतामृते ॥७५॥

घृतम्—घी, जल ।

अमृतम्—अमृत, जल, मुक्ति, यज्ञ शेष का वाचक, विना मांगे मिली भीख ॥७५॥

कलधौतं रूप्यहेम्नोः

कलधौतम्—चाँदी, सोना ।

निमित्तं हेतुलक्ष्मणोः ।

निमित्तम्—कारण, चिह्न ।

श्रुतं शास्त्रावधृतयोः

श्रुतम्—शास्त्र, सुनी बात ।

युगपर्याप्तयोः कृतम् ॥७६॥

कृतम्—सत्ययुग, पर्याप्त ॥७६॥

अत्याहितं महाभीतिः कर्म जीवानपेक्षि च ।

अत्याहितम्—बड़ा भय, साहसमय कर्म ।

युक्ते क्ष्मादावृते भूतं प्राण्यतीते समे त्रिषु ॥७७॥

भूतम् (त्रिलिङ्ग)—न्याय, पृथिवी अप् तेज वायु आकाश, सत्य, प्राणी, बीता समय ॥७७॥

वृत्तं पद्ये चरित्रे त्रिष्वतीते दृढनिस्तले ।

वृत्तम् (त्रिलिङ्ग)—श्लोक, चरित्र, बीता समय, मजबूत, गोल ।

महद्राज्यं च

महत्—राज्य, बड़ा ।

अवगीतं जन्ये स्याद्गर्हिते त्रिषु ॥७८॥

अवगीतम् (त्रिलिङ्ग)—बदनामी, निन्दित व्यक्ति ॥७८॥

श्वेतं रूप्येऽपि

श्वेतम्—चाँदी, सफेद रंग, द्वीपविशेष ।

रजतं हेम्नि रूप्ये सिते त्रिषु ।

रजतम् (त्रिलिङ्ग)—सोना, चाँदी, सफेद रंग ।

त्रिष्वतः

इस 'रजत' शब्द से आगे 'जगत्' (७९वां श्लोक) से लेकर 'आहत' (८४वें श्लोक) तक सब शब्द तीनों लिङ्ग हैं ।

जगदिङ्गेऽपि

जगत् (त्रि०)—संसार, जंगम (चलने फिरने-वाले) प्राणी ।

रक्तं नील्यादि रागि च ॥७९॥

---

[1] भारती सात्वती चैव कैशिक्यारभटी तथा ।
चतस्रो वृत्तयश्चैता यासु नाट्यं प्रतिष्ठितम् ॥

रक्तम् (त्रि०)—नील आदि रंग, रुधिर, प्रेमी ।७६।

अवदातः सिते पीते शुद्धे

अवदातः (त्रि०)—उज्ज्वल वस्तु, पीला रंग, शुद्ध (निर्मल) ।

बद्धार्जुनौ सितौ ।

सितः (त्रि०)—बँधुआ (कैदी), सफेद रंग ।

युक्तेऽतिसंस्कृते मर्षिण्यभिनीतः

अभिनीतः (त्रि०)—युक्त, न्यायसंगत, अतिश्रेष्ठ, क्षमावान् ।

अथ संस्कृतम् ॥८०॥

कृत्रिमे लक्षणोपेतेऽपि

संस्कृतम् (त्रि०)—संस्कारयुक्त, बनावटी, घड़े आदि रँगना, लक्षणयुक्त ॥८०॥

अनन्तोऽनवधावपि ।

अनन्तः (त्रि०)—निःसीम, शेषनाग, विष्णु भगवान् ।

ख्याते हृष्टे प्रतीतः

प्रतीतः (त्रि०)—प्रसिद्ध, प्रसन्न ।

अभिजातस्तु कुलजे बुधे ॥८१॥

अभिजातः (त्रि०)—कुलीन, पंडित ॥८१॥

विविक्तौ पूतविजनौ

विविक्तः (त्रि०)—पवित्र, एकान्त, निर्जन ।

मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ।

मूर्च्छितः (त्रि०)—बेहोश, वृद्धियुक्त ।

द्वौ चाम्लपरुषौ शुक्तौ

शुक्तः (त्रि०)—चूक, कठोर ।

शिती धवलमेचकौ ॥८२॥

शितिः (त्रि०)—उज्ज्वल, काला ॥८२॥

सत्ये साधौ विद्यमाने प्रशस्तेऽभ्यर्हिते च सत् ।

सत् (त्रि०)—सत्य, सज्जन, विद्यमान, अच्छा, पूज्य ।

पुरस्कृतः पूजितेऽरात्यभियुक्तेऽग्रतः कृते ॥८३॥

पुरस्कृतः (त्रि०)—अगुवा, पूजित, शत्रु से दबोचा हुआ, आगे किया हुआ ॥८३॥

निवातावाश्रयावातौ शस्त्राभेद्यं च वर्म यत् ।

निवातः (त्रि०)—निवासस्थान, वायुरहित, जो शस्त्र से न भेदन किया जा सके, वह कवच (जिरहबख्तर) ।

जातोन्नद्धप्रवृद्धाः स्युरुच्छ्रिताः

उच्छ्रितः (त्रि०)—उत्पन्न, बढ़ा हुआ, ऊँचा घमण्डी ।

उत्थितास्त्वमी ॥८४॥

वृद्धिमत्प्रोद्यतोत्पन्नाः

उत्थितः (त्रि०)—बढ़ता हुआ, उदयोन्मुख, उत्पन्न ॥८४॥

आदृतौ सादरार्चितौ ।

आदृतः (त्रि०)—आदर किया हुआ, पूजित ।

इति तान्ताः ।

अर्थोऽभिधेय-रै-वस्तु-प्रयोजन-निवृत्तिषु ॥८५॥

अर्थः—अभिप्राय, धन, वस्तु, प्रयोजन, निवृत्ति, विषय ॥८५॥

निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ ।

तीर्थम्—पौंसरा, शास्त्र, ऋषिसेवित जल, गुरु, अध्यापक ।

समर्थस्त्रिषु शक्तिस्थे सम्बद्धार्थे हितेऽपि च ॥८६॥

समर्थः (पुं-स्त्री-नपुं०)—बलवान्, सम्बन्ध युक्त अर्थ, अनुकूल ॥८६॥

दशमीस्थौ क्षीणरागवृद्धौ

दशमीस्थः—रागविहीन, अतिवृद्ध ।

वीथी पद्व्यपि ।

वीथी—रास्ता, पंक्ति ।

आस्थानीयत्नयारास्था

आस्थानी—सभा, उपाय ।

प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः[1] ॥८७॥

---

१ यह अर्ध श्लोक क्षेपक है—

शास्त्रद्रविणयोर्ग्रन्थः संस्थाधारे स्थितौ मृतौ ॥१॥

ग्रन्थ—शास्त्र, धन ।

संस्था—आधार, स्थिति, मृत्यु ॥१॥

प्रस्थः (पुँ-नपुंसक)—पहाड़ की चोटी, एक सेर ॥८७॥

इति थान्ताः।

अभिप्रायवशौ छन्दौ

[1] छन्दः—अभिप्राय, अधीन, पद्य।

अब्दौ जीमूतवत्सरौ।

अब्दः—मेघ, वर्ष, एक पर्वत, मोथा, इन्द्र।

अपवादौ तु निन्दाज्ञे

अपवादः—निन्दा, आज्ञा।

दायादौ सुतबान्धवौ ॥८८॥

दायादः—पुत्र, जाति, बन्धुजन, कुटुम्ब, सपिण्ड ॥८८॥

पादा रश्म्यंघ्रितुर्यांशाः

पादः—किरण, पैर, चौथाई हिस्सा, श्लोक का का चतुर्थांश।

चन्द्राग्न्यर्कास्तमोनुदः॥

तमोनुदः—चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य।

निर्वादो जनवादेऽपि

निर्वादः—लोकापवाद, सिद्धान्तवाद।

शादो जम्बालशष्पयोः ॥८९॥

शादः—कीचड़, छोटी २ घास ॥८९॥

आरावे रुदिते त्रातर्याक्रन्दो दारुणे रणे।

आक्रन्दः—दयनीय स्वर, फूट २ कर रोना, रक्षक, कठोर संग्राम।

स्यात्प्रसादोऽनुरागेऽपि

प्रसादः—अनुग्रह, प्रसन्नता, काव्य का गुण विशेष, नैवेद्य।

सूदः स्याद्व्यञ्जनेऽपि च ॥९०॥

सूदः—रसोई, रसोइया ॥९०॥

गोष्ठाध्यक्षेऽपि गोविन्दः

गोविन्दः—गोशाले का मालिक, बृहस्पति, कृष्ण।

[1] प्राचीन गणराज्यों के समय 'छन्दः' आजकल के 'वोट' (Vote) को कहते थे।

हर्षेऽप्यामोदवन्मदः।

आमोदः—हर्ष, दूर ही से मन हरनेवाली सुगन्धि।

मदः—हर्ष, अभिमान, गज का मद, वीर्य।

प्राधान्ये राजलिङ्गे च वृषाङ्गे ककुदोऽस्त्रियाम्

ककुदः—(पुं-नपुंसक) प्रधान, राजचिह्न, बैल का कंधा ॥९१॥

स्त्री संविज्ज्ञानसंभाषाक्रियाकाराजनामसु।

संविद्—(स्त्री०) ज्ञान, सम्भाषण, कर्म का नियम, युद्ध, संज्ञा, संकेत।

धर्मे रहस्युपनिषद्

उपनिषद्—धर्म, एकान्त, वेदान्त।

स्यादृतौ वत्सरे शरत् ॥९२॥

शरद् (स्त्री०)—शरद् ऋतु, वर्ष ॥९२॥

पदं व्यवसितत्राणस्थानलक्ष्माङ्घ्रिवस्तुषु।

पदम्—व्यवसाय, रक्षा, स्थान, चिह्न, पैर, वस्तु, सुबन्त-तिङन्तरूप शब्दभेद।

गोष्पदं सेविते माने

गोष्पदम्—गोसेवित देश, गोके खुर भर नाप की जमीन।

प्रतिष्ठा कृत्यमास्पदम् ॥९३॥

आस्पदम्—प्रतिष्ठा (स्थान), कार्य ॥९३॥

त्रिष्विष्टमधुरौ स्वादू

स्वादुः (पु-स्त्री-नपुं०)—प्रिय, मीठा। यहाँ से दकारान्त सब शब्द तीनों लिङ्ग के होंगे।

मृदू चातीक्ष्णकोमलौ।

मृदुः—(पुं-स्त्री-नपुं०) अतीक्ष्ण, कोमल।

मूढाल्पापटुनिर्भाग्या मन्दाः स्युः

मन्दः—(पुं-स्त्री-नपुं०) मूर्ख, थोड़ा, अनाड़ी, अभागा।

द्वौ तु शारदौ ॥९४॥

प्रत्यग्राप्रतिभौ

शारदः (पुं-स्त्री-नपुं)—नवीन, डरपोक, वर्ष ॥९४॥

विद्वत्सु प्रगल्भौ विशारदौ।

विशारदः (पुं-स्त्री-नपुं०)—विद्वान्, ढीठ।

(इति दान्ताः)

व्यामो वटश्च न्यग्रोधौ

न्यग्रोधः—व्याम, अँकवार (दोनों हाथ फैला कर टेढ़ा करके जोड़ना) बरगद ।

उत्सेधः काय उन्नतिः ॥९५॥

उत्सेधः—शरीर, उँचाई ॥९५॥

पर्याहारश्च मार्गश्च विवधौ वीवधौ च तौ ।

विवधः, वीवधः–ध्यान आदि, रास्ता, बोझा ।

परिधिर्यज्ञियतरोः शाखायामुपसूर्यके ॥९६॥

परिधिः (पुं०)—यज्ञीय वृक्ष की शाखा (समिधा), चन्द्र-सूर्य का मंडल, वह रेखा जो किसी गोल पदार्थ के चारों ओर खींचने से बने ॥९६॥

बन्धकं व्यसनं चेतःपीडाधिष्ठानमाधयः ।

आधिः (पुं०)—बन्धक (गिरवी रखना), व्यसन, मानसिक कष्ट, आश्रय ।

स्युः समर्थननीवाकनियमाश्च समाधयः॥९७॥

समाधिः (पुं०)--शंका का समाधान, चुप रह जाना, स्वीकार करना ॥९७॥

दोषोत्पादेऽनुबन्धः स्यात्प्रकृत्यादिविनश्वरे ।
मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥९८॥

अनुबन्धः--दोष की उत्पत्ति, प्रकृति-प्रत्यय-आगम-आदेश में जिस वर्ण का नाश हो गया हो वह, बड़ों का अनुसरण करनेवाला बालक, प्रकृत वस्तु की परम्परा से चलना ॥९८॥

विधुर्विष्णौ चन्द्रमसि

विधुः--विष्णु भगवान्, चन्द्रमा, कपूर ।

परिच्छेदे बिलेऽवधिः ।

अवधिः (पुं०)--सीमा, गड्हा, बिल ।

विधिर्विधाने दैवेपि

विधिः (पुं०)--विधान, भाग्य, ब्रह्मा ।

प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥९९॥

प्रणिधिः (पुं०)--प्रार्थना, दूत ॥९९॥

बुधवृद्धौ पण्डितेऽपि

बुधः--पण्डित, विद्वान्, वृद्धजन, ग्रहविशेष (चन्द्रमा का पुत्र बुध) ।

स्कन्धः समुदयेपि च ।

स्कन्धः--समूह, काण्ड, राजा, कन्धा ।

देशे नदविशेषेऽब्धौ सिन्धुर्ना सरिति स्त्रियाम्

सिन्धुः (पुँल्लिङ्ग)--सिन्ध देश, नदविशेष, समुद्र ।

सिन्धुः--(स्त्री०) नदी ॥१००॥

विधा विधौ प्रकारे च

विधा (स्त्री)--विधान, प्रकार ।

साधू रम्येऽपि च त्रिषु ।

साधुः (पुं-स्त्री--नपुं०)-सज्जन, कुलीन, रमणीक ।

वधूर्जाया स्नुषा स्त्री च

वधूः—भार्या, पतोहू, स्त्रीमात्र ।

सुधा लेपोऽमृतं स्नुही ॥१०१॥

सुधा—चूना, अमृत, सेंहुड़ ॥१०१॥

सन्धा प्रतिज्ञा मर्यादा

सन्धा—प्रतिज्ञा, मर्यादा, स्वीकृति ।

श्रद्धा सम्प्रत्ययः स्पृहा ।

श्रद्धा—आदर, विश्वास, आकांक्षा ।

मधु मद्ये पुष्परसे क्षौद्रेऽपि

मधु—शराब, फूल का रस (शहद), अपि शब्द से चैत्र का महीना, महुआ ।

अन्धं तमस्यपि ॥१०२॥

अन्धम्—अन्धकार, अन्धा प्राणी ॥१०२॥

अतस्त्रिषु

यहाँ से लेकर धकारान्त सभी शब्द पुं०-स्त्री०-नपुंसक तीनों लिङ्ग हैं ।

समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ।

समुन्नद्धः-(त्रिलिं.) अपने को पंडित माननेवाला, अभिमानी ।

ब्रह्मबन्धुरधिक्षेपे निर्देशे

ब्रह्मबन्धुः (त्रिलि.)—ब्राह्मण के प्रति निन्दासूचक, आदेश ।

अथावलम्बितः ॥१०३॥

अविदूरोऽप्यवष्टब्धः

अवष्टब्धः (त्रिलि०)—अधीन, समीपवर्ती,

रुका हुआ, बँधा हुआ ॥१०३॥

प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।

प्रसिद्धः (त्रिलि.)— विख्यात, अलंकृत ।

(इति धान्ताः)

सूर्यवह्नी चित्रभानू

चित्रभानुः (पुं०)—सूर्य, अग्नि ।

भानू रश्मिदिवाकरौ ॥१०४॥

भानुः (पुं०)—किरण, सूर्य ॥१०४॥

भूतात्मानौ धातृदेहौ

भूतात्मन्—(पुं०) ब्रह्मा, (नपुं०) शरीर ।

मूर्खनीचौ पृथग्जनौ ।

पृथग्जनः—मूर्ख, नीच ।

ग्रावाणौ शैलपाषाणौ

ग्रावन् (पुं०)—पर्वत, पत्थर ।

पत्रिणौ शरपक्षिणौ ॥१०५॥

पत्रिन् (पुं०)—बाण, पक्षी, वृक्ष ॥१०५॥

तरुशैलौ शिखरिणौ

शिखरिन् (पुं०)—वृक्ष, पर्वत ।

शिखिनौ वह्निबर्हिणौ ।

शिखिन् (पुं०)—अग्नि, मयूर, केतुग्रह, बाण, मुर्गा ।

प्रतियत्नावुभौ लिप्सोपग्रहौ

प्रतियत्नः—इच्छा, किसी को पटाना अर्थात् अनुकूल करना ।

अथ सादिनौ ॥१०६॥

द्वौ सारथिहयारोहौ

सादिन्—घुड़सवार, कोचवान ॥१०६॥

वाजिनोऽश्वेषुपक्षिणः ।

वाजिन्— घोड़ा, बाण, पक्षी ।

कुलेऽप्यभिजनो जन्मभूम्यामपि

अभिजनः—कुल, विख्यात, जन्मभूमि ।

अथ हायनाः ॥१०७॥

वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च

हायनः—वर्ष, किरण, अन्नविशेष ॥१०७॥

चन्द्राग्न्यर्का विरोचनाः ।

विरोचनः—चन्द्रमा, अग्नि, सूर्य, प्रह्लाद का पुत्र ।

क्लेशेऽपि वृजिनः

वृजिनः—दुःख, विष्णु (पुं०), पाप, टेढ़ा (नपुं०) ।

विश्वकर्माऽर्कसुरशिल्पिनोः ॥१०८॥

विश्वकर्मन्—सूर्य, देवताओं का बढ़ई ॥१०८॥

आत्मा यत्नो धृतिर्बुद्धिः स्वभावो ब्रह्म वर्ष्म च

आत्मन्—उपाय, धैर्य, बुद्धि, स्वभाव, चित्त, ब्रह्म, देह ।

शक्रो घातुकमत्तेभो वर्षुकाब्दो घनाघनः ।१०९

घनाघनः—इन्द्र, खूनी, मतवाला हाथी, बरसनेवाला मेघ ॥१०९॥

घनो मेघे मूर्तिगुणे त्रिषु मूर्ते निरन्तरे ।

घनः—(त्रि०) मेघ, मूर्तिका गुण, सँटा हुआ, लोह का बड़ा हथौड़ा ।

अभिमानोऽर्थादिदर्पे ज्ञाने प्रणयहिंसयोः ११०

अभिमानः—धन आदि का घमण्ड, ज्ञान, प्रेम, हिंसा ॥११०॥

इनः सूर्ये प्रभौ

इनः—सूर्य, स्वामी ।

राजा मृगाङ्के क्षत्रिये नृपे ।

राजन् (पुं०)—चन्द्रमा, क्षत्रिय, नृप, स्वामी, इन्द्र ।

वाणिन्यौ नर्तकी दूत्यौ

वाणिनी—नाचनेवाली वेश्या, दूती, कुटनी ।

स्रवन्त्यामपि वाहिनी ॥१११॥

वाहिनी—नदी, सेना ॥१११॥

ह्लादिन्यौ वज्रतडितौ

ह्लादिनी—वज्र, बिजली ।

वन्दायामपि कामिनी ।

कामिनी—बन्दालबेल, कामुकी स्त्री, सब प्रकार की स्त्री ।

त्वग्देहयोरपि तनुः

तनुः (स्त्री०)—चमड़ी, शरीर, कृश (दुर्बल) ।

सूनाऽधोजिह्विकाऽपि च ॥११२॥

सूना—गले की घंटी, वधस्थान, पुत्री ॥११२॥

क्रतुविस्तारयोरस्त्री वितानं त्रिषु तुच्छके। मन्दे

वितानम्—(पुं-नपुंसक) यज्ञ, विस्तार, आलसी (त्रिलिङ्ग) शून्य, ।

अथ केतनं कृत्ये केतावुपनिमंत्रणे ॥११३॥

केतनम्—कार्य, ध्वजा, उपनिमंत्रण, घर ११३

वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म ब्रह्मा विप्रः प्रजापतिः।

ब्रह्मन्—वेद, तत्त्व, तपस्या, ब्रह्म (नपुं०) ब्रह्मा, ब्राह्मण, प्रजापति (पुं०)।

उत्साहने च हिंसायां सूचने चापि गन्धनम् ११४

गन्धनम्—प्रोत्साहन, हिंसा, आशय प्रकट करना ॥११४॥

आतञ्चनं प्रतीवाप-जवनाऽप्यायनार्थकम्।

आतञ्चनम्–दूध में जावन डालना, वेग, प्रसन्न करना।

व्यञ्जनं लाञ्छनं श्मश्रुनिष्ठानावयवेष्वपि ११५

व्यञ्जनम्—चिह्न, दाढ़ी-मूँछ, भोजन, स्त्री, पुरुषों के गुह्यादि ॥११५॥

स्यात्कौलीनं लोकवादे युद्धे पश्वहिपक्षिणाम्

कौलीनम्—लोकनिन्दा, पशुओं, सांपों और पक्षियों की लड़ाई।

स्यादुद्यानं निःसरणे वनभेदे प्रयोजने॥११६॥

उद्यानम्–निकलना, बगीचा, प्रयोजन॥११६॥

अवकाशे स्थितौ स्थानम्

स्थानम्—अवकाश, ठिकाना, घर।

क्रीडादावपि देवनम्।

देवनम्—क्रीडा, व्यवहार (बर्ताव), जीतने की इच्छा।

उत्थानं पौरुषे तंत्रे सन्निविष्टोद्गमेऽपि च॥११७॥

उत्थानम्—उन्नति, पुरुषार्थ, उद्योग, कुटुम्ब-कार्य, सिद्धान्त, उत्तम औषधि, ऊँचे उठना ॥११७॥

व्युत्थानं प्रतिरोधे च विरोधाचरणेऽपिच।

व्युत्थानम्—तिरस्कार, विरुद्ध व्यवहार, स्वतंत्र कार्य।

मारणे मृतसंस्कारे गतौ द्रव्येऽर्थदापने ॥११८॥ निवर्तनोपकरणानुव्रज्यासु च साधनम्।

साधनम्—मारण (पारा आदि शोधना) मृतक का अग्निदाह, चलना, धन, धन दिलाना, धन कमाना, (औजार आदि) उपाय, अनुसरण ११८

निर्यातनं वैरशुद्धौ दाने न्यासार्पणेऽपिच ॥११९

निर्यातनम्—बदला लेना, दान, धरोहर लौटाना ॥११९॥

व्यसनं विपदि भ्रंशे दोषे कामजकोपजे।

व्यसनम्—विपत्ति, विनाश, कामज दोष, (शिकार, द्यूत, स्त्री, मदिरापान) कोपज दोष (वाक्पारुष्य आदि)।

पक्ष्मातिलोम्निकिञ्जल्के तन्त्वाद्यंशेऽप्यणीयसि

पक्ष्मन् (नपुं०)–आँख की बरौनी, केसर, सूत का बहुत छोटा टुकड़ा ॥१२०॥

तिथिभेदे क्षणे पर्व

पर्वन् (नपुं०)—अष्टमी-अमावास्या आदि तिथि, उत्सव।

वर्त्म नेत्रच्छदेऽध्वनि।

वर्त्मन् (नपुं०)—आँख की पलक, रास्ता।

अकार्यगुह्ये कौपीनम्

कौपीनम्—अकार्य, लंगोट।

मैथुनं संगतौ रते ॥१२१॥

मैथुनम्—स्त्री-पुरुष का संसर्ग, सुरत ॥१२१॥

प्रधानं परमात्मा धीः

प्रधानम्—परमात्मा, बुद्धि, सर्वश्रेष्ठ, राजा का मुख्य मंत्री।

प्रज्ञानं बुद्धिचिह्नयोः।

प्रज्ञानम्—बुद्धि, चिह्न।

प्रसूनं पुष्पफलयोः

प्रसूनम्—फूल, फल।

निधनं कुलनाशयोः ॥१२२॥

निधनम्—वंश, नाश, हत्या, ज्योतिषोक्त लग्न से अष्टम स्थान ॥१२२॥

क्रन्दने रोदनाह्वाने

क्रन्दनम्—रोदन, बुलाहट, चिल्लाहट ।

वर्ष्म देहप्रमाणयोः ।

वर्ष्मन्—(नपुं०) शरीर, नाप ।

गृहदेहत्विट्प्रभावा धामानि

धामन् (नपुं०)—घर, शरीर, कान्ति, कोष-दण्ड-जन्य प्रभाव ।

अथ चतुष्पथे ॥१२३॥

संनिवेशे च संस्थानम्

संस्थानम्—चौराहा, अंगविभाग, मृत्यु, आकृति ॥१२३॥

लक्ष्म चिह्नप्रधानयोः ।

लक्ष्मन् (नपुं०)—चिह्न, श्रेष्ठ ।

आच्छादने संपिधानमपवारणमित्युभे॥१२४॥

आच्छादनम्—छिप जाना, ढांकना, वस्त्र, ओढ़ना या ओढ़ाना ॥१२४॥

आराधनं साधने स्यादवाप्तौ तोषणेऽपि च ।

आराधनम्—कोई काम पूरा करना, लाभ, प्रसन्न करना ।

अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ॥१२५॥

अधिष्ठानम्—रथ आदि का पहिया, नगर, प्रभाव, आक्रमण ॥१२५॥

रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि

रत्नम्—अपनी जाति में उत्तम, जवाहर ।

वने सलिलकानने ।

वनम्—जल, जंगल ।

तलिनं विरले स्तोके

तलिनम् (त्रिलि०)—विरला, थोड़ा ।

वाच्यलिङ्गं तथोत्तरे ॥१२६॥

यहाँ से अगले सभी नान्त शब्द वाच्यलिङ्ग होंगे ॥१२६॥

समानाः सत्समैके स्युः

समानः (त्रि०)—अच्छा, पण्डित, बराबर, सदृश, एक ।

पिशुनौ खलसूचकौ ।

पिशुनः—(त्रिलि०) दुष्ट, चुगलखोर, केसर, वानर का मुँह, कौआ ।

हीनन्यूनावूनगर्ह्यौ

हीनः, न्यूनः (त्रिलि०)-थोड़ा, कम, निन्दनीय ।

वेगिशूरौ तरस्विनौ ॥१२७॥

तरस्विन् (त्रिलि०)—वेगवान्, बली ॥१२७॥

अभिपन्नोऽपराद्धोऽभिग्रस्तव्यापद्गतावपि ।

अभिपन्नः (त्रिलि०)—कसूरवार, शत्रु से आक्रान्त, विपत्ति में पड़ा हुआ ।

(इति नान्ताः ।)

कलापो भूषणे बर्हे तूणीरे संहतावपि ॥१२८॥

कलापः—अलंकार, मोर का पंख, तरकस, समुदाय, करधनी ॥१२८॥

परिच्छदे परीवापः पर्युप्ते सलिलस्थितौ ।

परीवापः—तम्बू-कनात आदि की सामग्री, चारों ओर से बीज बोया जाना, पानी की टंकी ।

गोधुग्गोष्ठपती गोपौ

गोपः—गौ दुहनेवाला, गोशाले का मालिक, राजा, जमीन्दार ।

हरविष्णू वृषाकपी ॥१२९॥

वृषाकपी—शिव, विष्णु, अग्नि ॥१२९॥

वाष्पमूष्माश्रु

वाष्पम्—गर्मी, भाफ, आँसू ।

---

१ लेख्ये भूम्यादिदानार्थे **यातना**ज्ञा च **शासनम्** ।
निदानमवसाने च सार्थे वार्धुषिके **धनी** ॥१॥
कक्षापटेऽपि **कौपीनं** न ना खेदेऽपि **वेदना** ।
घुस्नं बलेऽथ भार्याऽपि जातिदोषेषु **लाञ्छनम्** ॥२॥

यातना—पृथ्वी आदि दान के निमित्त लिखना ।

शासनम्—आज्ञा ।

निदानम्—अन्त ।

धनिन्—धनी, सूद लेनेवाला महाजन ।

कौपीनम्—काँख का कपड़ा ।

वेदना—(स्त्री-नपुं०) खेद ।

घुस्नम्—ल ।

लाञ्छनम्—दाग, धब्बा ।

कशिपु त्वन्नमाच्छादनं द्वयम्।

कशिपु (पुं-नपुं०)—भोजन, वस्त्र।

तल्पं शय्याट्टदारेषु

तल्पम् (पुं-नपुं०)—सेज, अटारी, स्त्री।

स्तम्बेऽपि विटपोऽस्त्रियाम् ॥१३०॥

विटपः—(पुं०-नपुं०) घास का पूरा, डंठल, डाली ॥१३०॥

प्राप्तरूपस्वरूपाभिरूपा बुधमनोज्ञयोः।
भेद्यलिङ्गा अमी

प्राप्तरूपः, स्वरूपः, अभिरूपः (त्रिलि०)—पण्डित, सुन्दर।

कूर्मी वीणाभेदश्च कच्छपी ॥१३१॥

कच्छपी—कछुई, सरस्वतीजी की वीणा ॥१३१

कुतपो मृगरोमोत्थपटे चाह्नोऽष्टमेंऽशके[1]।

कुतपः—हिरन के रोएँ का कपड़ा, दिन का आठवाँ हिस्सा।

(इति पान्ताः)

अन्तराभवसत्त्वेऽश्वे गंधर्वो दिव्यगायने॥१३२

गन्धर्वः--जन्म-मरण के बीच में स्थित प्राणी, घोड़ा, विश्वावसु आदि स्वर्ग के गायक, गायकमात्र, कस्तूरीमृग, नर कोयल ॥१३२॥

कम्बुर्ना वलये शंखे

कम्बुः--(पुँ०) कंगन, शंख, हाथी के दाँत का मध्य, सीपी।

द्विजिह्वौ सर्पसूचकौ।

द्विजिह्वः—साँप, चुगलखोर।

पूर्वोऽन्यलिङ्गःप्रागाह पुंबहुत्वेऽपि पूर्वजान्१३३

पूर्वः--पूर्व दिशा (त्रिलिङ्ग) पूर्वज (पुं०) ब्रह्मा, पहला ॥१३३॥

(इति बान्ताः)

कुम्भौ घटेभमूर्धांशौ

कुम्भः--घड़ा, हाथी का मस्तक, कुम्भकर्ण का बेटा, वेश्यापति, राशिविशेष।

डिम्भौ तु शिशुबालिशौ।

डिम्भः--बच्चा, मूर्ख।

स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ

स्तम्भः--खंभा, जड़ता।

शम्भू ब्रह्मत्रिलोचनौ ॥१३४॥

शम्भुः--ब्रह्मा, शिव ॥१३४॥

कुक्षिभ्रूणार्भका गर्भाः

गर्भः--पेट, गर्भ का बच्चा, बालक, सन्धि, कटहल का काँटा।

विस्रम्भः प्रणयेऽपि च।

विस्रम्भः-प्रेम, शृङ्गार की प्रार्थना, विश्वास।

स्याद्भेर्यां दुन्दुभिः पुंसि
स्यादक्षे दुन्दुभिः स्त्रियाम् ॥१३५॥

दुन्दुभिः—नगाड़ा (पुं०), लड़कों के खेलने की फिरकी (स्त्री०), वरुण, दैत्य ॥१३५॥

स्यान्महारजने क्लीबं कुसुम्भं करके पुमान्।

कुसुम्भम्--कुसुम का फूल।

कुसुम्भः--कमण्डल (करवा)।

क्षत्रियेऽपि च नाभिर्ना

नाभिः--ढोढ़ी (पुं० स्त्री०), क्षत्रिय (पुं०) प्रधान राजा, पहिये का बिचला भाग।

सुरभिर्गवि च स्त्रियाम् ॥१३६॥

सुरभिः--गौ (स्त्री०) वसन्त, जायफल, चम्पा (पुं०), सुगन्धि, मनोहर (त्रिलि०), सुवर्ण, कमल (नपुं०) ॥१३६॥

सभा संसदि सभ्ये च

---

[1] कुछ लोग इस श्लोक को क्षेपक मानते हैं।
रवणे पुंसि रेफःस्यात् कुत्सिते वाच्यलिङ्गकः।

शिफा शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि ॥१॥
शफं मूले तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च।
गुम्फः स्याद्गुम्फने बाह्वोरलङ्कारे च कीर्तितः ॥२॥
(इति फान्ताः)

रेफ—(पुं०) बुरा (वाच्यलिङ्ग)।

शिफा—चोटी, नदी, जटामांसी, माता ॥१॥

शफम्—वृक्षों की जड़, गौ आदि पशुओं की खुर।

गुम्फः—गूँथना, भुजा का गहना।

सभा--(स्त्री०) सभाभवन, सभा के सदस्य, सामाजिक परिषद् ।

त्रिष्वध्यक्षेऽपि वल्लभः ।

वल्लभः (त्रिलि०)--प्रिय, मालिक, सुलक्षण घोड़ा (पुं०) ।

(इति भान्ताः)

किरण-प्रग्रहौ रश्मी

रश्मि (पुं०)—किरण, रस्सी (घोड़े आदि के बाँधने का पगहा) ।

कपिभेकौ प्लवङ्गमौ ॥१३७॥

प्लवङ्गमः--(पुं०) वानर, मेढक ॥१३७॥

इच्छामनोभवौ कामौ

[१]**कामः**--(पुं०) इच्छा, कामदेव ।

शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ।

पराक्रमः--(पुं०) बहादुरी, उद्योग ।

धर्माः पुण्ययमन्यायस्वभावाचारसोमपाः१३८

धर्मः-(पुं०) पुण्य, यमराज, न्याय, स्वभाव, आचरण, सोमरस पान करनेवाले ॥१३८॥

उपायपूर्व आरम्भ उपधा चाप्युपक्रमः ।

उपक्रमः-(पुं०) उपाय सोचकर काम आरम्भ करना, मंत्री की प्रकृतिपरीक्षा का उपाय, इलाज, बल ।

वणिक्पथः पुरं वेदो निगमः

निगमः—बनियई, नगर, वेद ।

नागरो वणिक् ॥१३९॥

नैगमौ द्वौ

नैगमः—नागरिक, बनिया, वैदिकवस्तु, उपनिषद् ॥१३९॥

बले रामो नीलचारुसिते त्रिषु ।

रामः—बलराम, परशुराम, राम (पुं०), काला रंग, सफेद, सुन्दर (त्रि०) ।

शब्दादिपूर्वो वृन्देऽपि ग्रामः

ग्रामः—गाँव, किसी शब्द के पूर्व रहने पर समूह (जैसे-'शब्दग्राम'), स्वर ।

क्रान्तौ च विक्रमः ॥१४०॥[२]

विक्रमः—आक्रमण करना, बल ॥१४०॥

स्तोमः स्तोत्रेऽध्वरे वृन्दे

स्तोमः—स्तुति, यज्ञ, समुदाय ।

जिह्मस्तु कुटिलेऽलसे ॥१४१॥

जिह्मः—कुटिल, आलसी ॥१४१॥

गुल्मो रुक्स्तम्बसेनाश्च

गुल्मः—प्लीहा रोग, गुच्छा, सेना ।

[३]**जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।**

जामिः—बहिन, कुल की स्त्री ।

क्षितिक्षान्त्योः क्षमा

क्षमा—(स्त्री०) पृथिवी, क्षमा ।

युक्ते क्षमं शक्ते हिते त्रिषु ॥१४२॥

क्षमम्--योग्य (नपुं), समर्थ, हितकारी (त्रिलि०)॥१४२॥

त्रिषु श्यामौ हरित्कृष्णौ

श्यामः (त्रिलि०)--हरा रंग, काला रंग ।

श्यामा स्याच्छारिवा निशा ।

श्यामा--सरिवन, सतावर, रात्रि, हलदी ।

ललामं पुच्छपुंड्राश्वभूषाप्राधान्यकेतुषु॥१४३॥

ललामम्—(न०) पूँछ, गाय या घोड़े के माथे

शिफा शिखायां सरिति मांसिकायां च मातरि ॥१॥
शफं मूले तरूणां स्याद्गवादीनां खुरेऽपि च ।
गुम्फः स्याद्गुम्फने बाहारलङ्कारे च कीर्तितः ॥२॥

१ कामस्य केतनो मीनो धनुस्तस्य च कौसुमम् ।
बाणाश्च पौष्पाः कथ्यन्ते शिञ्जिनी भृंगमालिका ।
भिद्यतेऽस्य शरैर्यूनां हृदयं मदमेति च ॥

२ उष्णेऽपि घर्मश्चेष्टालंकारे भ्रान्तौ च विभ्रमः ।

घर्मः—गर्म, पसीना, हावभाव, भ्रान्ति, शोभा ।

विभ्रमः—हाव, शोभा, भूल ।

३ मेधातिथि-गोविन्दराजौ तु-'नवोढा दुहितृस्नुषाद्या जामय' इत्याहतुः । जामिशब्दश्च श्रुतिष्वपि प्रयुक्तो दृष्टः ।
यथा ऋग्वेदे सप्तमाष्टकस्य द्वितीयेऽध्याये—
'स्वसारो जामयस्पतिम् ।' इति ।
तृतीयाष्टकस्य चतुर्थेऽध्याये त्रयोविंशे वर्गे च-
'जामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रुम् ।' इति ।
मनुस्मृतावपि—'जामयो यानि गेहानीति ।'

पर बने तिलक का चिह्न, घोड़ा, घोड़े का साज, प्रधान, पताका ॥१४३॥

सूक्ष्ममध्यात्ममपि

सूक्ष्मम्—आत्मा, कपट, बहुत छोटा।

आद्ये प्रधाने प्रथमः

प्रथमः—आदि, प्रधान।

त्रिषु

यहाँ से मान्त सब शब्द तीनों लिङ्ग में हैं।

वामौ वल्गुप्रतीपौ द्वौ

वामः—सुन्दर, विपरीत, बायाँ, स्तन या मेघ, शिव (पुं०) वामा (स्त्री०)।

अधमौ न्यूनकुत्सितौ ॥१४४॥

अधमः—कम, बदनाम ॥१४४॥

जीर्णं च परिभुक्तं च यातयाममिदं द्वयम्।

यातयामम्—पुराना (बासी), खाने से बचा हुआ भोजन।

(इति मान्ताः।)

तुरंगगरुड़ौ तार्क्ष्यौ

तार्क्ष्यः—(पुं०) घोड़ा, गरुड़, रथ, वाहन।

निलयापचयौ क्षयौ।

क्षयः—(पुं०) घर, ह्रास, कल्प का अन्त (प्रलय), रोग।

श्वशुर्यौ देवरश्यालौ

श्वशुर्यः—(पुं०) देवर, साला।

भ्रातृव्यौ भ्रातृजद्विषौ ॥१४५॥

भ्रातृव्यः-(पुं०) भतीजा, शत्रु ॥१४५॥

पर्जन्यौ रसदब्देन्द्रौ

पर्जन्यः—गरजता हुआ मेघ, इन्द्र।

स्यादर्यः स्वामिवैश्ययोः।

अर्यः—(पुं०) स्वामी, बनिया।

तिष्यः पुष्ये कलियुगे

तिष्यः—(पुं०) पुष्य नक्षत्र, कलियुग।

पर्यायोऽवसरे क्रमे ॥१४६॥

पर्यायः-प्रस्ताव, क्रम, निर्माण, मौका॥१४६॥

प्रत्ययोऽधीनशपथज्ञानविश्वासहेतुषु। रन्ध्रे शब्दे

प्रत्ययः—(पुं०) अधीन, कसम, ज्ञान, विश्वास कारण, छिद्र, शब्द (सन् प्रत्यय आदि)।

अथानुशयो दीर्घद्वेषानुतापयोः ॥१४७॥

अनुशयः—पुराना बैर, पश्चात्ताप ॥१४७॥

स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये नागानां मध्यमे गते।

स्थूलोच्चयः—अपूर्ण, हाथी की मध्यम चाल, पहाड़ों से गिरे पत्थर के बड़े २ ढोंके।

समयाः शपथाचारकालसिद्धान्तसंविदः॥१४८॥

समयः—कसम, आचरण, समय, सिद्धान्त, संभाषण, सम्पत्ति, संकेत, गणराज्य[१] के कानून ॥१४८॥

व्यसनान्यशुभं दैवं विपदित्यनयास्त्रयः।

अनयः—बुरी आदत, अशुभ भाग्य, विपत्ति अन्याय।

अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽपि

अत्ययः—उल्लंघन, कष्ट, दोष, दण्ड, नाश।

अथापदि ॥१४९॥ युद्धयात्योः सम्परायः

संपरायः—आपत्ति, युद्ध, आनेवाला समय ॥१४९॥

पूज्यस्तु श्वशुरेऽपि च।

पूज्यः—पूजनीय, ससुर।

पश्चादवस्थायिबलं समवायश्च संनयौ ॥१५०॥

संनयः—सेना के पीछे रहनेवाली सेना, समूह, अच्छा न्याय ॥१५०॥

संघाते संनिवेशे च संस्त्यायः

संस्त्यायः—समूह, स्थानविशेष, विस्तार।

प्रणयास्त्वमी। विस्रम्भयाच्ञाप्रेमाणः

प्रणयः—विश्वास, माँगना, प्रेम।

विरोधेऽपि समुच्छ्रयः ॥१५१॥

समुच्छ्रयः—उन्नति, विरोध (बैर) ॥१५१॥

विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि।

---

१ देखिए वीरमित्रोदय पृष्ठ ४२३-४२५।

विषयः--जो बात जिसे मालूम हो, शब्द (शब्दरूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि), देश ।

निर्यासेऽपि कषायोऽस्त्री

कषायः (पुं-नपुं०)—काढ़ा, कसैला रस, गेरुआ रंग ।

सभायां च प्रतिश्रयः ॥१५२॥

प्रतिश्रयः-सभा, अवलम्ब, स्वीकार ॥१५२॥

प्रायो भून्म्यन्तगमने

प्रायः—बहुतायत, अनशन, मृत्यु, समान, ज्ञान ।

मन्युर्दैन्ये क्रतौ क्रुधि ।

मन्युः—दीनता, यज्ञ, क्रोध, शोक ।

रहस्योपस्थयोर्गुह्यम्

गुह्यम्—गोपनीय, लिङ्ग, भग ।

सत्यं शपथसत्ययोः ॥१५३॥

सत्यम्—कसम, सचाई ॥१५३॥

वीर्यं बले प्रभावे च

वीर्यम्—बल, प्रभाव, बीज (शुक्र), शक्ति ।

द्रव्यं भव्ये गुणाश्रये ।

द्रव्यम्-सत्त्व गुण का आश्रय, धन, औषधि।

धिष्ण्यं स्थाने गृहे भेऽग्नौ

धिष्ण्यम्—स्थान, घर, नक्षत्र, अग्नि ।

भाग्यं कर्म शुभाशुभम् ॥१५४॥

भाग्यम्—जन्मान्तर का शुभ-अशुभ कर्म, ऐश्वर्य ॥१५४॥

कशेरु हेम्नोर्गाङ्गेयम्

गांगेयम्-कसेरू,सुवर्ण,भीष्म पितामह (पुं०) ।

विशल्या दन्तिकाऽपि च ।

विशल्या--दन्तिका नाम की औषधी, अग्नि-शिखा, गुरुच ।

वृषाकपायी श्रीगौर्योः

वृषाकपायी—लक्ष्मी, पार्वती ।

अभिख्या नामशोभयोः ॥१५५॥

अभिख्याः—नाम, शोभा, कीर्ति ॥१५५॥

आरम्भो निष्कृतिः शिक्षा पूजनं संप्रधारणम् ।

उपायः कर्म चेष्टा च चिकित्सा च नव क्रियाः १५६

क्रिया—आरम्भ, प्रायश्चित्त, शिक्षा, पूजन, विचार, उपाय, कर्म, चेष्टा, चिकित्सा ॥१५६॥

छाया सूर्यप्रिया कान्तिः प्रतिबिम्बमनातपः ।

छाया—शनैश्चर की माता, कान्ति, परछाईं ('focus'), आतप (धूप) का अभाव (छाँह) अन्धकार ।

कक्ष्या प्रकोष्ठे हर्म्यादेः काञ्च्यां मध्येभबन्धने

कक्ष्या—महल की ड्योढ़ी के भीतर, कांची (क्षुद्रघंटिका, करधन) हाथी की कमर में बाँधने का बन्धन ॥१५७॥

कृत्या क्रिया देवतयोस्त्रिषु भेद्ये धनादिभिः ।

कृत्या—कार्य, भूत-प्रेत आदि अधम देवता, धन-स्त्री-भूमि से भेद डाले जानेवाले पराये राज्य के आदमी ।

जन्यं स्याज्जनवादेऽपि

जन्यम्--अफवाह, बाजार, संग्राम ।

जघन्योऽन्त्येऽधमेऽपि च ॥१५८॥

जघन्यः--अन्त्यज, अधम, लिङ्ग ॥१५८॥

गर्ह्याधीनौ च वक्तव्यौ

वक्तव्य-निन्दनीय, अधीन, कहनेवाली बात ।

कल्यौ सज्जनिरामयौ ।

कल्यः--मन्त्रादि उपाय से रक्षित, नीरोग, कलाकुशल, प्रातःकाल ।

आत्मवाननपेतोऽर्थादर्थ्यः

अर्थ्य--बुद्धिमान्, धनवान्, प्रार्थना करके मांगी जानेवाली वस्तु, न्यायसंगत, विज्ञ ।

पुण्यं तु चार्वपि ॥१५९॥

पुण्यम्-सुन्दर,अच्छा काम,धर्म,पवित्र॥१५९॥

रूप्यं प्रशस्तरूपेऽपि

रूप्यम्--सुन्दर रूप, गढ़ा सोना-चाँदी (अर्थात् अशर्फी, रुपया) रमणीक ।

वदान्यो वल्गुवागपि ।

वदान्यः--मीठी बातें करनेवाला, दाता, उदार ।

न्यायेऽपि मध्यम्

मध्यम्--उचित, बिचला भाग ।

सौम्यं तु सुन्दरे सोमदैवते ॥१६०॥

सौम्यम्—सुन्दर, सीधा, चन्द्रमा को निवेदित वस्तु, बुध (पुं०) ॥१६०॥

इति यान्ताः ।

निवहावसरौ वारौ

वारः--समूह, पारी, सूर्य-चन्द्र आदि दिन ।

संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।

संस्तरः--जिसकी मुठ्ठी में कुशा हो या कुश का विछौना, यज्ञ ।

गुरू गीष्पतिपित्राद्यौ

गुरुः--बृहस्पति, पिता, अध्यापक, मान्य, बड़े लोग ।

द्वापरौ युगसंशयौ ॥१६१॥

द्वापरः--युगविशेष, सन्देह ॥१६१॥

प्रकारौ भेदसादृश्ये

प्रकारः—विशेष, समानता ।

आकाराविङ्गिताकृती ।

आकारः—चेष्टा, इशारा, सूरत ।

किंशारुः सस्यशूकेषू

किंशारुः—धान-जौ आदि की बाल का टूँड़ा, बाण, कंकपक्ष ।

मरू धन्वधराधरौ ॥१६२॥

मरुः—जलरहित भूमि, पर्वत ॥१६२॥

अद्रयो द्रुमशैलार्काः

अद्रिः—वृक्ष, पर्वत, सूर्य, इन्द्र ।

स्त्रीस्तनाब्दौ पयोधरौ ।

पयोधरः—स्त्री का स्तन, मेघ, नारियल ।

ध्वान्तारिदानवा वृत्राः

वृत्रः—वृत्रासुर, अन्धकार, शत्रु ।

बलिहस्तांशवः कराः ॥१६३॥

करः—टैक्स, हाथ, किरण ॥१६३॥

प्रदरा भङ्गनारीरुग्बाणाः

प्रदरः—स्त्री का रोगविशेष, भांग, बाण ।

अस्राः कचा अपि ।

अस्रः—केश, आँसू, कोना, रुधिर ।

अजातशृङ्गो गौः कालेऽप्यश्मश्रुर्ना च तूबरौ ।

तूबरः—(पुँ०) बिना सींग का बैल, समय पर जिसके मूछें न जमीं हों, वह मनुष्य (खोभा) ॥१६४॥

स्वर्णेऽपि राः

रै—धन, सुवर्ण ।

परिकरः पर्यङ्कपरिवारयोः ।

परिकरः—बिछौना, परिवार, समूह, यत्न, आरम्भ ।

मुक्ताशुद्धौ च तारः स्यात्

तारः—मोती की सफाई का काम, चाँदी, ऊँचा स्वर, पारा उतरना ।

शारो वायौ स तु त्रिषु ॥१६५॥

कर्बुरे

शारः—(त्रिलिङ्ग) वायु, चितकबरा, चौसर खेलने की गोटी ॥१६५॥

अथ प्रतिज्ञाजिसंविदापत्सु संगरः ।

संगरः—प्रतिज्ञा, सभा, विपत्ति, संग्राम, विपत्ति, स्वीकृति ।

वेदभेदे गुप्तवादे मन्त्रः

मन्त्रः—वेद का अंश, गुप्त सलाह, देवादि की साधना ।

मित्रो रवावपि ॥१६६॥

मित्रः— (पुं०) सूर्य, (नपुं०) मित्र ॥१६६॥

मखेषु यूपखण्डेऽपि स्वरुः

स्वरुः—यज्ञस्तंभ छीलते समय निकला पहला टुकड़ा, इन्द्र का वज्र ।

गुह्येऽप्यवस्करः ।

अवस्करः—भग-लिङ्ग, विष्ठा ।

आडम्बरस्तूर्यरवे गजेन्द्राणां च गर्जिते ॥१६७॥

आडम्बरः—तुड़ही का शब्द, हाथियों का गर्जन, तैयारी ॥१६७॥

अभिहारोऽभियोगे च चौर्ये संनहनेऽपि च ।

अभिहारः—शस्त्र आदि धारण करना, नालिश, चोरी, कवचादि ग्रहण करना ।

स्याज्जङ्गमे परीवारः खड्गकोशे परिच्छदे१६८

परीवारः—जंगम विशेष, परिजन, तलवार की म्यान, ओहार ॥१६८॥

विष्टरो विटपी दर्भमुष्टिः पीठाद्यमासनम् ।

विष्टरः—बैठने का आसन, वृक्ष, [1]मुट्ठी भर कुशा, पीढ़ा आदि आसन, कृष्णमृगचर्म ।

द्वारि द्वाःस्थे प्रतीहारः प्रतीहार्यप्यनन्तरे १६९

प्रतीहारः—द्वारपाल । प्रतीहारी (स्त्री०) भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ॥१६९॥

विपुले नकुले विष्णौ बभ्रुर्ना पिंगले त्रिषु ।

बभ्रुः—बड़ा नेवला, विष्णु (पुं०), पीला रंग (त्रिलिङ्ग)।

सारो बले स्थिरांशे च न्याय्ये क्लीबं वरे त्रिषु

सारः—पराक्रम, वृक्ष का साल, (पु०) उचित, (नपुं०) श्रेष्ठ (त्रि०), जल, धन ॥१७०॥

दुरोदरो द्यूतकारे पणे द्यूते दुरोदरम् ।

दुरोदरः—जुआड़ी (पुं०) मूल्य, जुआ, दावँ, (नपुं०)।

महारण्ये दुर्गपथे कान्तारं पुंनपुंसकम् ।१७१।

कान्तारम्—बड़ा जंगल, दुर्गम मार्ग, बिल, (पुं०नपुं०) एक प्रकार की ऊँख ॥१७१॥

मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ।

मत्सरः—(त्रि०) दूसरे की सम्पदा न देख सकने से उत्पन्न डाह, कृपण ।

देवाद्वृते वरः श्रेष्ठे त्रिषु क्लीबं मनाक्प्रिये १७२

वरः—देवता का आशीर्वाद (पुं०), श्रेष्ठ (त्रि०) कुछ अच्छी लगनेवाली वस्तु (नपुं०)१७२

वंशाङ्कुरे करीरोऽस्त्री तरुभेदे घटे च ना ।

करीरः—बाँस का अँखुआ (पुं०-नपुं०) टेंटी वृक्ष, घट (पुं०)।

[1] दर्भमुष्टि का परिमाण—
पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मा तदर्द्धेन तु विष्टरः ।

ना चमूजघने हस्तसूत्रे प्रतिसरोऽस्त्रियाम्१७३

प्रतिसरः—सेना का पिछला हिस्सा (पुं०) मंगलकार्य के निमित्त बाँधा गया हाथ का सूत (पुं०-नपुं०) ॥१७३॥

यमानिलेन्द्रचन्द्रार्कविष्णुसिंहांशुवाजिषु ।
शुकाहिकपिभेकेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु॥१७४

हरिः—यमराज, वायु, इन्द्र, चन्द्रमा, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, साँप, वानर, मेढक (१-१३ पुं०) हरा, पीला रंग (त्रिलिङ्ग) १७४

शर्करा कर्परांशेऽपि

शर्करा—ठिकरा या सिटकी, कंकड़ी, शक्कर, रेता, पथरी रोग ।

यात्रा स्याद्यापने गतौ ।

यात्रा—बिताना, जाना, चलना, देवार्चन का उत्सव ।

इरा भूवाक्सुराप्सु स्यात्

इरा—पृथ्वी, वाणी, मदिरा, जल ।

तन्द्री निद्राप्रमीलयोः ॥१७५॥

तन्द्री—नींद, प्रमीला (परिश्रम से इन्द्रियों का शिथिल हो जाना) ॥१७५॥

धात्री स्यादुपमाताऽपि क्षितिरप्यामलक्यपि ।

धात्री—उपमाता (धाई), पृथ्वी, माता, आँवला ।

क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका१७६
त्रिषु क्रूरेऽधमेऽल्पेऽपि क्षुद्रम्

क्षुद्रा-(स्त्री०) किसी अङ्ग से हीन, नाचनेवाली स्त्री, वेश्या, शहद की मक्खी, भटकटैया क्षुद्रम् (त्रिलि०) क्रूर, अधम, अल्प ॥१७६॥

मात्रा परिच्छदे ।
अल्पे च परिमाणे सा मात्रं कार्त्स्न्येऽवधारणे

मात्रा—(स्त्री०) ओहार, अल्प, माप, पूर्णता, मात्रम् (नपुं०) निर्णय, कान का आभूषण, अक्षर का एक अंग ॥१७७॥

आलेख्याश्चर्ययोश्चित्रम्

चित्रम्—तसबीर, विस्मय, आकाश, तिलक, अद्भुत, चितकबरा ।

कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।

कलत्रम्–कमर, स्त्री, राजाओं के रहने का गुप्त स्थान।

योग्यभाजनयोः पात्रम्

पात्रम्—योग्य, बर्तन, राजा का मंत्र, पत्ता, स्रुवा आदि यज्ञपात्र।

पत्रं वाहनपक्षयोः ॥१७८॥

पत्रम्—सवारी, पंख, पत्ती ॥१७८॥

निदेशग्रन्थयोः शास्त्रम्

शास्त्रम्—आज्ञा, व्याकरण आदि के ग्रन्थ।

शस्त्रमायुधलोहयोः।

शस्त्रम्—हथियार, लोहा।

स्याज्जटांशुकयोर्नेत्रम्

नेत्रम्—जटा वृक्ष, वस्त्र, आँख।

क्षेत्रं पत्नीशरीरयोः ॥१७९॥

क्षेत्रम्—भार्या, शरीर, खेत ॥१७९॥

मुखाग्रे क्रोडहलयोः पोत्रम्

पोत्रम्—शूकर, हल का मुखभाग (फाल)।

गोत्रं तु नाम्नि च।

गोत्र—नाम, कुल, पर्वत, ज्ञान, वन, खेत का रास्ता।

सत्रमाच्छादने यज्ञ सदादाने वनेऽपि च॥१८०॥

सत्रम्—वस्त्र, यज्ञ, सदावर्त, वन, दगाबाजी ॥१८०॥

अजिरं विषये कायेऽपि

अजिरम्—रूप, रस आदि विषय, शरीर, आँगन।

अम्बरं व्योम्नि वाससि।

अम्बरम्—आकाश, वस्त्र, रुई, सुगन्धि।

चक्रं राष्ट्रेऽपि

चक्रम्—राष्ट्र, रथ का पहिया, सेना, पानी की भँवरी, पाखण्ड।

अक्षरं तु मोक्षेऽपि

अक्षरम्—मोक्ष, वर्ण (क ख आदि) ब्रह्म, आकाश, धर्म, तप।

क्षीरमप्सु च ॥१८१॥

क्षीरम्—दूध, जल ॥१८१॥

स्वर्णेऽपि भूरिचन्द्रौ द्वौ

भूरि—(नपुंसक) सुवर्ण, अधिक, (त्रिलि०) विष्णु भगवान्, शिव, ब्रह्मा (पु०)।

चन्द्रः—सुवर्ण, कपूर, कवीला, जल, चन्द्रमा, हीरा।

द्वारमात्रेऽपि गोपुरम्।

गोपुरम्—द्वार, नगर का सदर फाटक, मोथा।

गुहादम्भौ गह्वरे द्वे

गह्वरम्—गुफा, पाखण्ड, निकुंज, गहन।

रहोऽन्तिकमुपह्वरे ॥१८२॥

उपह्वरम्—एकान्त, पास ॥१८२॥

पुरोऽधिकमुपर्यग्राणि

अग्रम्—पहले, अधिक, ऊपर, एक पत्र की नाप, सहारा, समूह, प्रधान।

अगारे नगरे पुरम्।

मंदिरं च

पुरम्—घर, नगर, मन्दिर, शरीर।

अथ राष्ट्रोऽस्त्री विषये स्यादुपद्रवे ॥१८३॥

राष्ट्रः—(पुं०-नपुं०) देश, उपद्रव ॥१८३॥

दरोऽस्त्रियां भये श्वभ्रे

दरः—(पुं०-नपुं०) भय, गढ्ढा।

वज्रोऽस्त्री हीरके पवौ।

वज्रः—(पुं० नपुं०) हीरा, वज्र (शस्त्र)।

तन्त्रं प्रधाने सिद्धान्ते सूत्रवाये परिच्छदे।१८४

तन्त्रम्—प्रधान, सिद्धान्त, जुलाहा, वस्त्र, कुटुम्बसम्बन्धी कार्य, शास्त्रविशेष, सामान, वेद की शाखा ॥१८४॥

औशीरश्चामरे दण्डेप्यौशीरं शयनासने।

औशीरः—(पुं०) चँवर का डंडा, खस की टट्टी।

औशीरम्—(नपुं०) शयन, आसन।

पुष्करं करिहस्ताग्रे वाद्यभाण्डमुखे जले।

व्योम्नि खड्गफले पद्मे तीर्थौषधिविशेषयोः १८५

पुष्करम्—हाथी की सूँड़ का अग्रभाग, नगाड़ा

आदि बाजे का मुँह, जल, तलवार का बिचला हिस्सा, आकाश, कमल, तीर्थविशेष, पोहकर औषधिविशेष, टापू, सर्प, गरुड़ ॥१८५॥

अन्तरमवकाशावधिपरिधानान्तर्धिभेदतादर्थ्ये छिद्रात्मीयविनाबहिरवसरमध्येन्तरात्मनि च

अन्तरम्—अवकाश (दूरी), अवधि, पहिनने का कपड़ा, अदृश्य, भेद, तादर्थ्य, छिद्र, आत्मीयता, विना, बाहर, अवसर, मध्य, अन्तरात्मा, सादृश्य। किन अवसरों पर इसका किस तरह प्रयोग होता है, उसके उदाहरण — अवकाश अर्थ में—'अन्तरे हिमम्'। अवधि के अर्थ में—'मासान्तरे देयम्'। परिधान के अर्थ में–'अन्तरेण शाटकाः परिधानीयाः'। अन्तार्धि के अर्थ में—'पर्वतान्तरितो रविः'। भेदके अर्थ में—'यदन्तरं सर्षपशैलराजयोः'। तादर्थ्य के अर्थ में—'त्वदन्तरेण ऋणमेतत्'। छिद्र के अर्थ में—'परान्तरे प्रहर्तव्यम्'। आत्मीय अर्थ में—'अयमत्यन्तरो मम'। विना अर्थ में 'अन्तरेण पुरुषकारम्'। बाह्य अर्थ में—'अन्तरे चण्डाल-गृहाः'। अवसर के अर्थ में—'अन्तरङ्गः सेवकः'। मध्य के अर्थ में—'आवयोरन्तरे जातः पर्वतः'। अन्तरात्मा के अर्थ में—'दृष्टोऽन्तरे ज्योतीरूपः'। सादृश्य अर्थ में–'हकारस्य घकारोऽन्तरतमः'॥१८६॥

मुस्तेऽपि पिठरम्

पिठरम्—मोथा, मथानी, बटलोई।

राजकशेरुण्यपि नागरम्।

नागरम्—राजकशेरू, नागरमोथा, सोंठ, चतुर, नागरिक।

शार्वरं त्वन्धतमसे घातुके भेद्यलिङ्गकम् १८७

शार्वरम्—(त्रिलि०) घटाटोप अन्धकार, हिंसक ॥१८७॥

गौरोऽरुणे सिते पीते

गौरः—लाल, सफेद, पीला, विशुद्ध, सफेद सरसों, चन्द्रमा, कमल का केसर।

व्रणकार्यप्यरुष्करः।

अरुष्करः–घाव करनेवाला, भेलावा।

जठरः कठिनेऽपि स्यात्

जठरः—कठिन, पेट, बूढ़ा।

अधस्तादपि चाधरः ॥१८८॥

अधरः—नीचे, निचला होंठ, हीन ॥१८८॥

अनाकुलेऽपि चैकाग्रः

एकाग्रः—स्वस्थ, एकाग्रता, तत्पर।

व्यग्रो व्यासक्त आकुले।

व्यग्रः—काम से परेशान, अनेक कामों में लगा हुआ, घबड़ाना।

उपर्युदीच्यश्रेष्ठेष्वप्युत्तरः स्यात्

उत्तरः—जवाब, ऊपर, उत्तर का देश, श्रेष्ठ। उदाहरण—ऊपर के अर्थ में जैसे–'इत उत्तरम्'। उत्तर देश के अर्थ में जैसे—'नर्मदोत्तरे विक्रम-शकः।' कोष अर्थ में जैसे–'मुनिषूत्तरो वसिष्ठः।

अनुत्तरः ॥१८९॥

एषां विपर्यये श्रेष्ठे

अनुत्तरः—जहाँ ऊपर श्रेष्ठ आदि अर्थ नहीं होते, वहाँ—श्रेष्ठ, अश्रेष्ठ।

श्रेष्ठ के अर्थ में—'न विद्यमानः श्रेष्ठो यस्मात् असौ अनुत्तरः' ऐसा विग्रह करना होगा ॥१८९॥

दूरानात्मोत्तमाः पराः।

परः—दूर, दूसरा, उत्तम, श्रेष्ठ शत्रु, केवल।

स्वादुप्रियौ तु मधुरौ

मधुरः—स्वादिष्ट, प्रिय।

क्रूरौ कठिननिर्दयौ ॥१९०॥

क्रूरः–कठिन, निर्दयी, भयानक, नृशंस ॥१९०॥

उदारो दातृमहतोः

उदारः—दानी, महान्, सीधा-सादा।

इतरस्त्वन्यनीचयोः।

इतरः—गैर, नीचा।

मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरः

स्वैरः—स्वाधीन, धीरे-धीरे काम करनेवाला।

शुभ्रमुद्दीप्तशुक्लयोः ॥१९१॥

शुभ्रम्—(त्रिलिङ्ग) तेजस्वी, सफेद, अबरख (नपुं०) ॥१६१॥

(इति रान्ताः)

चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः ।

मौलिः—(पुं० स्त्री०) जूड़ा, किरीट, बँधा हुआ केश ।

द्रुमप्रभेदमातङ्गकाण्डपुष्पाणि पीलवः ॥१६२॥

पीलुः—(पुं०) एक प्रकार का वृक्ष, हाथी, बाण, फूल, परमाणु, हड्डी का टुकड़ा, ताड़का तना ॥१६२॥

कृतान्तानेहसोः कालः

कालः—यमराज, समय, मृत्यु, महाकाल, कृष्णचन्द्रजी ।

चतुर्थेऽपि युगे कलिः ।

कलिः—चौथा युग, झगड़ा, फूल की कली, बहादुरों का युद्ध ।

स्यात्कुरङ्गेऽपि कमलः

कमलः—(पुं०) हिरन, (नपुं०) जल, तामा, कमल का फूल, आकाश ।

प्रावारेऽपि च कम्बलः ॥१६३॥

कम्बलः—ओढ़ने की लोई, गौ के गले में लटकनेवाला चमड़ा, वायु, नागराज वासुकी, कीड़ा ॥१६३॥

करोपहारयोः पुंसि बलिः प्राण्यङ्गजे स्त्रियाम्

बलिः—(पुं०) महसूल, सौगात, बुढ़ापे की झुर्रियां (स्त्री०) प्रसिद्ध राजा बलि ।

स्थौल्यसामर्थ्यसैन्येषु बलं ना काकसीरिणोः

बलम्—मोटाई, पराक्रम, सेना, (अं०) कौआ, बलराम (कृष्ण के बड़े भाई) (पुं०) ॥१६४॥

वातूलः पुंसि वात्यायामपि वातासहे त्रिषु ।

वातूलः—(पुं०) आँधी, बकवादी, वात विकार को सहने में असमर्थ (त्रिलिङ्ग) ।

भेद्यलिङ्गः शठे व्यालः पुंसि श्वापदसर्पयोः ।

व्यालः—(पुं०) शठ, सर्प, दुष्ट हाथी, सिंह ॥१६५॥

मलोऽस्त्री पापविट्किट्टानि

मलः—(पुं० नपुं०) पाप, विष्ठा, कीट (मैल) ।

अस्त्री शूलं रुगायुधम् ।

शूलम्—(पुं० नपुं०) रोगविशेष, शस्त्रविशेष, मृत्यु, ध्वजा, योग ।

शङ्कावपि द्वयोः कीलः

कीलः—(पुँ० स्त्री०) लोह आदि की बनी शंकु, आग की लपट ।

पालिः स्त्र्यश्र्यपंक्तिषु ॥१६६॥

पालिः—(स्त्री०) तलवार की धार, गोद, चिह्न, पाँति ॥१६६॥

कला शिल्पे कालभेदेऽपि

कला—कारीगरी, तीस काष्ठा का समय, चन्द्रमा का सोलहवाँ भाग ।

आली सख्यावली अपि ।

आलिः—(स्त्री०) सहेली, श्रेणी, (त्रि०) पुल, विशद आशय ।

अब्ध्यम्बुविकृतौ वेला कालमर्यादयोरपि १६७

वेला—चन्द्रोदय आदि के कारण समुद्र का उमड़ना (ज्वार), समुद्र का तट, समय, मर्यादा, विना क्लेश के मरण ॥१६७॥

बहुलाः कृत्तिका गावो बहुलोऽग्नौ शितौ त्रिषु

बहुलाः—(स्त्री०) कृत्तिका नक्षत्र, गौ । (पुं०) आग, तीक्ष्ण, काला रंग, इलायची, स्त्री, (नपुं०) आकाश (पुं०) कृष्णपक्ष ।

लीला विलासक्रिययोः

लीला—विलास, कार्य, क्रीड़ा, शृङ्गारभाव ।

उपला शर्करापि च ॥१६८॥

उपलाः—(पुं०) पत्थर । (स्त्री०) सिकता । खाँड़ (चीनी) ॥१६८॥

शोणितेऽम्भसि कीलालम्

कीलालम्—पानी, रुधिर ।

मूलमाद्ये शिफाभयोः ।

मूलम्—पहला, जड़, शिफा, वृक्ष की जड़, नक्षत्रविशेष, प्रतिष्ठा ।

जालं समूह आनायगवाक्षक्षारकेष्वपि॥१९९॥

जालम्–समुदाय, सूत या सनकी बनी जाल, रोशनदान, झरोखा, खिली हुई कली, दंभ ॥१९९॥

शीलं स्वभावे सद्वृत्ते

[1]शीलम्—स्वभाव, सदाचार ।

सस्ये हेतुकृते फलम् ।

फलम्—वृक्ष आदि का फल, किये हुए कार्य का परिणाम, बाण का अगला भाग, जायफल, पटरा, अन्न, त्रिफला, कंकोल ।

छर्दिर्नेत्ररुजो क्लीबं समूहे पटलं न ना ॥२००॥

पटलम्—(नपुं०) समूह, छाजन, एक प्रकार का नेत्ररोग । (पुं-नपुं०) समूहअर्थ में यह स्त्री-नपुंसक दोनों होता है ॥२००॥

अधः स्वरूपयोरस्त्री तलम्

तलम्—किसी वस्तु का निचला भाग, (जैसे 'रसातल'), स्वरूप, (जैसे 'वृक्षस्तल') तलवार की मूठ, थप्पड़, वन, कार्य का मूल कारण, तालवृक्ष, वृक्षमात्र ।

स्याच्चामिषे पलम् ।

पलम्—(नपु०) मांस, एक प्रकार का वजन ।

और्वानलेऽपि पातालम्

पातालम्—वड़वानल, विवर, नागलोक ।

चैलं वस्त्रेऽधमे त्रिषु ॥२०१॥

चैलम्—(नपुं०) कपड़ा, (त्रिलिङ्ग) अधम ॥२०१॥

कुकूलं शंकुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ।

कुकूलम्—(नपुं०) कील से भरा हुआ गड्हा, (पुं०) भूसी की आग ।

निर्णीते केवलमिति त्रिलिङ्गं त्वेककृत्स्नयोः॥

केवलम्—(नपुं०) निश्चित, (त्रिलि०) एक, सम्पूर्ण । उदाहरण—निश्चित अर्थ में 'केवलं मूर्खः' । एक अर्थ में—'केवलोऽयं व्रजति' । सम्पूर्ण अर्थ में जैसे—'केवला भिक्षवः' ॥२०२॥

पर्याप्तिक्षेमपुण्येषु कुशलं शिक्षिते त्रिषु ।

कुशलम्—(नपुं०) पूर्णता, कल्याण, पुण्य, (त्रिलि०) शिक्षित ।

प्रवालमंकुरेऽप्यस्त्री

प्रवालम्—(पुं०-नपुंसक) मूँगा, नवीन कोंपल, वीणा का दण्ड ।

त्रिषु स्थूलं जडेऽपि च ॥२०३॥

स्थूलम्—(त्रि०) मोटा, शिखर, बुद्धि-विहीन ॥२०३॥

करालो दन्तुरे तुङ्गे

करालः—(त्रि०) बड़े दाँतवाला, ऊँचा, भयानक, सर्जरस ।

चारौ दक्षे च पेशलः ।

पेशलः—(त्रि०) सुन्दर, निपुण ।

मूर्खेऽर्भकेऽपि बालः स्यात्

बालः—(त्रिलि०) मूर्ख, बालक, केश, घोड़े या हाथी की पूँछ, हाऊबेर ।

लोलश्चलसतृष्णयोः ॥२०४॥

लोलः—चंचल, लालची ॥२०४॥

इति लान्ताः ।

दवदावौ वनारण्यवह्नी

दवः, दावश्च—(पुं०) जंगल, जंगल की आग ।

जन्महरौ भवौ ।

भवः—(पुं०) उत्पत्ति, शिवजी, संसार, प्राप्ति ।

मंत्री सहायसचिवौ

[1]सचिवः—(पुं०) राजा को सलाह देनेवाला,

---

१ शीललक्षणं शीलनिरूपणाध्याये—

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतत्प्रशस्यते ॥

१ शुक्रनीति के अनुसार 'सचिव का वही कार्य था जो आजकल War Minister का है । इसी सचिव को कल्हण 'कम्पन' कहते हैं और यादवों के सचिवों का नाम 'महाप्रचण्डदण्ड नायक' होता था ।

सहायक (मित्र)।

पतिशाखिनरा धवाः ॥२०५॥

धवः--(पुं०) पति, धवई वृक्ष, मनुष्य, धूर्त ॥२०५॥

अवयः शैलमेषार्काः

अविः--(पुं०) पर्वत, भेंड़, सूर्य, स्वामी, चूहा, कम्बल।

आज्ञाह्वानाध्वरा हवाः।

हवः--(पुं०) आज्ञा, बुलाहट, यज्ञ।

भावः सत्तास्वभावाभिप्रायचेष्टात्मजन्मसु २०६

भावः—सत्ता (वस्तुस्थिति), स्वभाव, अभिप्राय, चेष्टा, आत्मा, जन्म, क्रिया, लीला, विभूति, पंडित, प्राणी। उदाहरण--सत्ता अर्थ में 'घटभावः, पटभावः'। आत्मा के अर्थ में जैसे— 'स्वभावं भावयेद्योगी' आदि ॥२०६॥

स्यादुत्पादे फले पुष्पे प्रसवो गर्भमोचने।

प्रसवः--(पुं०) उत्पत्ति (पैदाइश), फल, पुष्प, गर्भत्याग।

अविश्वासेऽपह्नवेऽपि निकृतावपि निह्नवः२०७

निह्नवः--(पुं०) अविश्वास, झूठी बकवाद, पाजीपन ॥२०७॥

उत्सेकामर्षयोरिच्छा प्रसरे मह उत्सवः।

उत्सवः--(पुं०) ऊपर उठना या सींचना, उत्साह, कोप, इच्छा का वेग, आनन्द का अवसर।

अनुभावः प्रभावे च सतां च मतिनिश्चये २०८

अनुभावः--(पुं०) प्रभाव, सत्पुरुषों के ज्ञान का निश्चय, अभिप्रायसूचक ॥२०८॥

स्याज्जन्महेतुः प्रभवः स्थानं चाद्योपलब्धये।

प्रभवः--(पुं०) ज्ञानोत्पत्ति का आदि स्थान, जन्म का हेतुस्थान, जन्ममूल।

शूद्रायां विप्रतनये शस्त्रे पारशवो मतः ॥२०९॥

पारशवः--(पुं०) शूद्रा में ब्राह्मण के वीर्य से उत्पन्न पुत्र, फारसी (पारसी) ॥२०९॥

ध्रुवो भभेदे क्लीबं तु निश्चिते शाश्वते त्रिषु।

ध्रुवः--(पुं०) नक्षत्रविशेष, (नपुं०) निश्चित, (त्रि०) नित्य, (पुं०) शिव, विष्णु, वटवृक्ष, उत्तानपाद राजा का पुत्र।

स्वो ज्ञातावात्मनि स्वं त्रिष्वात्मीये स्वोऽस्त्रियां धने

स्वः--(पुं०) जाति, आत्मा, (त्रिलि०) आत्मीय जन, (पुं०-नपुं०) धन ॥२१०॥

स्त्रीकटीवस्त्रबन्धेऽपि नीवी परिपणेऽपि च।

नीवी—स्त्री की कमरबन्द (इजारबन्द), बनिये का मूलधन, राजपुत्र के धन का विनिमय।

शिवा गौरी-फेरवयोः

शिवा—पार्वती, आठ वर्ष की कन्या, दारुहल्दी, गोरोचन, भूमि, श्वेतदूर्वा फेरव (सियार या राक्षस)।

द्वन्द्वं कलहयुग्मयोः ॥२११॥

द्वन्द्वम्—(नपुंसक) लड़ाई, दो की संख्या, रहस्य, मिथुन ॥२११॥

द्रव्याऽसु व्यवसायेषु सत्त्वमस्त्री तु जन्तुषु।

सत्त्वम्—(नपुं०) द्रव्य, प्राण, बल की अधिकता, (पुं०-नपुंसक) प्राणी, गुण, चित्त, बल।

क्लीबं नपुंसकं षंढे वाच्यलिङ्गमविक्रमे ॥२१२

क्लीबम्—(त्रि०) नपुंसक लिङ्ग, हिजड़ा, पुरुषार्थहीन ॥२१२॥

इति वान्ताः।

द्वौ विशौ वैश्यमनुजौ

विश्—(पुं०) बनिया, मनुष्य, प्रवेश।

द्वौ चराभिमरौ स्पशौ।

स्पश—(पुं०) गुप्तदूत (खुफिया), युद्ध।

द्वौ राशी पुञ्जमेषाद्यौ

राशिः--(पुं०) समूह, मेष-वृष आदि राशियाँ।

द्वौ वंशौ कुलमस्करौ ॥२१३॥

वंश—(पुं०) कुल, बाँस, समुदाय, पीठ आदि अंग ॥२१३॥

रहः प्रकाशौ वीकाशौ

वीकाश—(पुं०) एकान्त, प्रकाश।

निर्वेशो भृतिभोगयोः।

निर्वेशः—तनख्वाह, उपभोग, मूर्च्छा ।

कृतान्ते पुंसि कीनाशः क्षुद्रकर्षकयोस्त्रिषु॥२१४॥

कीनाशः—(पुं०) यमराज, (त्रि०) क्षुद्र, किसान, विश्वासघाती ॥२१४॥

पदे लक्ष्ये निमित्तेऽपदेशः स्यात्

अपदेशः—(पुं०) पद, लक्ष्य, निमित्त, बहाना ।

कुशमप्सु च ।

कुशम्—(नपुं०) कुशा, जल, (पुं०) राम के पुत्र, द्वीपविशेष ।

दशावस्थानेकविधाऽपि

दशा—(स्त्री०) बाल्य-युवा-वृद्ध आदि अवस्थाएँ, बत्ती, कपड़े का खूँट ।

आशा तृष्णापि चायता ॥२१५॥

आशा—(स्त्री०) हवस, दिशा ॥२१५॥

वशा स्त्री करिणी च स्यात्

वशा—(स्त्री०) स्त्री, हथिनी, बन्ध्या गौ ।

दृग्ज्ञाने ज्ञातरि त्रिषु ।

दृश्—(स्त्री०) ज्ञान, (त्रि०) ज्ञाता, दर्शन, नेत्र ।

[1]स्यात्कर्कशः साहसिकः कठोरामसृणावपि २१६

कर्कशः (त्रि०)—कठोर, दुःस्पर्श, अविवेकी, क्रूर, कृपण, कासमर्द, कवीला ॥२१६॥

प्रकाशोऽतिप्रसिद्धेऽपि

प्रकाशः—(त्रि०) बहुत प्रसिद्ध, घाम, साफ-साफ ।

शिशावज्ञे च बालिशः ।

बालिशः—बालक, अज्ञानी (मूर्ख) (पुं०) ।

कोशोऽस्त्री कुड्मलेखङ्गपिधानेऽर्थौघदिव्ययोः

कोशः—(पुं-नपुं०) अधखिली कली, तलवार की म्यान, धनराशि, एक प्रकार की कसम, शब्दकोष Dictionary ॥२१७॥

इति शान्ताः ।

सुरमत्स्यावनिमिषौ

अनिमिषः—(पुं०) देवता, मछली ।

पुरुषावात्ममानवौ ।

पुरुषः—(पुं०) आत्मा, (क्षेत्रज्ञ) मनुष्य, नर सर्प ।

काकमत्स्यात्खगौ ध्वांक्षौ

ध्वांक्षः—(पुं०) कौआ, मछली खानेवाला, बगुला, पक्षीमात्र, भिक्षुक, घर ।

कक्षौ तु तृणवीरुधौ ॥२१८॥

कक्षः—(पुं०) तृण, लता, काँख, कछार, सूखी घास, वन ॥२१८॥

अभीषुः प्रग्रहे रश्मौ

अभीषुः—(पुं०) पशु बांधने का पगहा, किरण ।

प्रैषः प्रेषणमर्दने ।

प्रैषः—(पुं०) भेजना, मलना, उन्माद, क्लेश ।

पक्षः सहायेऽपि

पक्षः—(पुं०) सहायक, पक्षी का पंख, आधा महीना, बगल, साध्य, विरोध ।

उष्णीषः शिरोवेष्टकिरीटयोः ॥२१९॥

उष्णीषः—(पुं०-नपुं०) टोपी, साफा (पगड़ी), किरीट ॥२१९॥

शुक्ले मूषिके श्रेष्ठे सुकृते वृषभे वृषः ।

वृषः—अण्डकोष, चूहा, श्रेष्ठ, पुण्यकार्य, बैल, धर्म ।

द्यूतेऽक्षे शारिफलकेऽप्याकर्षः

---

[1] **नाशः क्षये तिरोधान**

नाशः—गायब होना, छिपना ।

जीवितेशः प्रिये यमे ।

जीवितेशः—प्रिय, यमराज ।

नृशंसखड्गौ निस्त्रिंशावंशुः सूर्यांशवः कराः ॥१॥

अंशुः—क्रूर, खड्ग, सूर्य की किरण, हाथ ॥१॥

आश्वाख्या शालिशीघ्रार्थे

आशुः—एक प्रकार का घोड़ा, शीघ्रता ।

पाशो बन्धनशस्त्रयोः ।'

पाशः—बन्धन (फाँसी), एक प्रकार का शस्त्र (वरुणपाश आदि) ।

आकर्षः--(पुं०) जुआ, पाँसा, चौसर आदि खेलने की बिसात, इन्द्रिय, खिंचाव ।

अथाक्षमिन्द्रिये ॥२२०॥

ना सुताङ्गे कर्षचक्रे व्यवहारे कलिद्रुमे ।

अक्षम्--(नपुंसक) इंद्रिय, (पुं०) गोटी, सोलह मासेकी तौल, रथ का पहिया, व्यवहार, बहेड़े का पेड़ ॥२२०॥

कर्षूर्वार्ता करीषाग्निः कर्षूः

कुल्याभिधायिनि ॥२२१॥

कर्षूः--(स्त्री०) जीविका, छोटी नदी, (पुं०) सूखे कंडे की आग ॥२२१॥

पुम्भावे तत्क्रियायां च पौरुषम्

पौरुषम् (पुं०)--पुरुषत्व, पुरुष का कार्य, तेज ।

विषमप्सु च ।

विषम्--(नपुं०) जल, जहर ।

उपादानेऽप्यामिषं स्यात्

आमिषम्--(पुं-नपुंसक) घूस, मांस, भोग्य-वस्तु, संभोग ।

अपराधेऽपि किल्बिषम् ॥२२२॥

किल्बिषम्--(नपुं०) अपराध, पाप ॥२२२॥

स्याद्वृष्टौ लोकधात्वंशे वत्सरे वर्षमस्त्रियाम् ।

वर्षम्--(पुं०-न०) वृष्टि, जम्बूद्वीप के भारतवर्षादि खण्ड, संवत्सर ।

प्रेक्षा नृत्येक्षणं प्रज्ञा

प्रेक्षा--नाच देखना, बुद्धि ।

भिक्षा सेवार्थना भृतिः ॥२२३॥

भिक्षा--सेवा, भीख माँगना, नौकरी करना, मजदूरी करना ॥२२३॥

त्विट् शोभाऽपि

त्विष्--(स्त्री०) शोभा, कान्ति, बोलना रुचि ।

त्रिषु परे

यहाँ से आगे के 'न्यक्ष' से लेकर 'रूक्ष' तक के शब्द तीनों लिङ्ग हैं ।

न्यक्षं कार्त्स्न्यनिकृष्टयोः ।

न्यक्षम्--(त्रि०) सम्पूर्ण, निकृष्ट, परशुराम ।

प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षः

अध्यक्षः--(त्रि०) प्रत्यक्ष, अधिकारी, सभापति ।

रूक्षस्त्वप्रेमण्यचिक्कणे ॥२२४॥

रूक्षः--(त्रि०) रूखा, प्रेमका अभाव॥२२४॥

(इति षान्ताः)

रविश्वेतच्छदौ हंसौ

हंसः--सूर्य, सफेद पंख का पक्षी, हंस, निस्पृह, विष्णु, शरीर ।

सूर्यवह्नी विभावसू ।

विभावसुः--(पुं०) सूर्य, अग्नि ।

वत्सौ तर्णकवर्षौ द्वौ

वत्सः--बछड़ा, वर्ष, बेटा ।

सारङ्गाश्च दिवौकसः ॥२२५॥

दिवौकस्--(पुं०) चातक, देवता ॥२२५॥

श्रृङ्गारादौ विषे वीर्ये गुणे रागे द्रवे रसः ।

रसः--(पुं०) श्रृङ्गार-करुणा-बीभत्स-आदि नौ रस, जहर, तेज, खट्टा-मीठा आदि गुण, द्रव पदार्थ ।

पुंस्युत्तंसावतंसौ द्वौ कर्णपूरे च शेखरे॥२२६॥

उत्तंस, अवतंसश्च--(पुं-नपुं०) कर्णफूल, चूडामणि ॥२२६॥

देवभेदेऽनले रश्मौ वसू रत्ने धने वसु ।

वसुः--(पुं०) पुराणोक्त अष्टवसु, अग्नि, किरण, (नपुंसक) रत्न, धन, वृद्धि, औषधि ।

विष्णौ च वेधाः

वेधस्--(पुं०) विष्णु, ब्रह्मा, पंडित ।

स्त्री त्वाशीर्हिताशंसाहिदंष्ट्रयोः ॥२२७॥

आशिस्--(स्त्री०) कल्याणकामना, मीठी बात, साँप का दाँत ॥२२७॥

लालसे प्रार्थनौत्सुक्ये

लालसा--(स्त्री०) प्रार्थना (माँगना), उत्सुकता, अधिक लालच ।

हिंसा चौर्यादिकर्मं च ।

हिंसा—(स्त्री०) चोरी आदि कुकर्म, वध, किसी की रोजी मारना ।

प्रसूरश्वापि

प्रसूः—(स्त्री०) घोड़ी, माता, कन्दली, लता ।

भूद्यावौ रोदस्या रोदसी न ते ॥२२८॥

रोदस्—[1]रोदसी (स्त्री) (नपुं०) पृथ्वी, आकाश ॥२२८॥

ज्वालाभासौ च पुंस्यर्चिः

अर्चिस्—(नपुं०) लपट, दीप्ति ।

ज्योतिर्भद्योतदृष्टिषु ।

ज्योतिस्—(नपुं०) नक्षत्र, प्रकाश, पुतली का मध्य भाग (पुं०) अग्नि, सूर्य ।

पापापराधयोरागः

आगस्—(नपुं०) पाप, अपराध ।

खगबाल्यादिनोर्वयः ॥२२६॥

वयस्—(नपुं०) पक्षी, बाल्य-वृद्ध आदि अवस्थायें ॥२२६॥

तेजः पुरीषयोर्वर्चः

वर्चस्—(नपुं०) तेज, पुरीष (विष्ठा) (पुं०) चन्द्रमा का पुत्र ।

महस्तूत्सवतेजसोः ।

महस्—(नपुं०) उत्सव, तेज ।

रजो गुणे च स्त्रीपुष्पे

रजस्—सत्त्व आदि गुण, स्त्री का आर्त्तव, पुष्प का रज, धूलि ।

राहौ ध्वान्ते गुणे तमः ॥२३०॥

तमस्—अन्धकार, तमोगुण, राहु, पाप, शोक ॥२३०॥

छन्दः पद्येऽभिलाषे च

छन्दस्—(नपुं०) अभिलाषा, गायत्री आदि वृत्त, स्वेच्छाचार ।

तपः कृच्छ्रादिकर्म च ।

तपस्—(नपुं०) सान्तपन आदि कठिन व्रत, लोक विशेष, धर्म ।

सहो बलं सहा मार्गः

सहस्—(नपुं०) बल, (पुं०) अगहन का महीना ।

नभः खं श्रावणो नभाः ॥२३१॥

नभस्—(नपुं०) आकाश ।

नभः (पुं०) श्रावणमास, नासिका, कमल-नालकी तन्तु, गिरता हुआ नक्षत्र ॥२३१॥

ओकः सद्माश्रयश्चौकाः

ओकस्—(नपुं०) घर ।

ओकः—(पुं०) आश्रय ।

पयः क्षीरं पयोऽम्बु च ।

पयस्—(नपुं०) दूध, जल ।

ओजो दीप्तौ बले

ओजस्—(नपुं०) तेज, बल, धातु ।

स्रोत इन्द्रिये निम्नगारये ॥२३२॥

स्रोतस्—(नपुं०) इन्द्रिय तथा नदी का वेग ॥२३२॥

तेजः प्रभावे दीप्तौ च बले शुक्रेऽपि

तेजस्—(नपुं०) प्रभाव, कान्ति, बल, वीर्य, मक्खन, आग ।

अतस्त्रिषु ।

यहाँ से यानी 'विद्वस्' से लेकर 'साधीयस्' शब्द तक सभी सान्त शब्द तीनों लिङ्ग हैं ।

विद्वान् विदंश्च

विद्वस-(त्रि०) विद्वान्, जानकार, आत्मज्ञानी ।

बीभत्सो हिंस्रोऽपि

बीभत्सः—(त्रि०) हिंसक, विकृत, क्रूर, रस-भेद ।

अतिशये त्वमी ॥२३३॥

वृद्धप्रशस्ययोर्ज्यायान्

ज्यायस्-(त्रि०) यहाँ 'वृद्ध, प्रशस्य, ज्यायान्' आदि शब्द आधिक्य अर्थ में हैं ॥२३३॥

---

१ कहा गया है—
रोदश्च रोदसी चापि दिविभूमौ पृथक् पृथक् ।
सहप्रयोगेप्यनयो रोदस्यावपि रोदसी ॥ इति ॥

कनीयांस्तु युवाल्पयोः ।

कनीयान्—(त्रि०) अतिशय, युवा, बहुत छोटा ।

वरीयांस्तूरुवरयोः

वरीयस्—बहुत बड़ा, बहुत अच्छा ।

साधीयान् साधुवाढयोः ॥२३४॥

साधीयान्-बहुत दृढ, बहुत अच्छा ॥२३४॥

इति सान्ताः ।

दलेऽपि बर्हम्

बर्हम्—(पु०-नपुं०) पत्ता, मोर के पंख ।

निर्बन्धोपरागार्कादयो ग्रहाः ।

ग्रहः—विशेष आग्रह, सूर्य-चन्द्रग्रहण, संग्राम का उद्योग ।

द्वार्यापीडे क्वाथरसे निर्व्यूहो नागदन्तके ॥२३५॥

निर्व्यूहः—(पुं०) द्वार, शिरोभूषण, पका हुआ काढ़ा, खूँटी ॥२३५॥

तुलासूत्रेऽश्वादिरश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहोऽपि च ।

प्रग्राहः, प्रग्रहः—(पुं०) तराजू की डोरी, घोड़ा आदि पशु बाँधने की रस्सी, कैदी ।

पत्नीपरिजनादानमूलशापाः परिग्रहाः॥२३६॥

परिग्रहः—(पुं०) स्त्री, परिवार के लोग, दान लेना, जड़, स्वीकृति, शाप, राहुग्रस्त सूर्य ॥२३६॥

दारेषु च गृहाः

गृहाः (पुं० बहुवचनान्त)—पत्नी, घर ।

श्रोण्यामप्यारोहो वरस्त्रियाः ।

आरोहः—(पुं०) सुन्दरी स्त्री की कमर, चढ़ना, लम्बाई ।

व्यूहो वृन्देऽपि

व्यूहः—(पुं०) समूह, सेना की मोर्चेबन्दी ।

अहिर्वृत्रेऽपि

अहिः—(पुं०) सर्प, वृत्रासुर ।

अग्नीन्द्वर्कास्तमोऽपहाः ॥२३७॥

तमोऽपहः—(पुं०) अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य।२३७॥

परिच्छदे नृपार्हेऽर्थे परिबर्हः

परिबर्हः—(पुं०) राजा की छत्र-चमर आदि सामग्री, राजा के योग्य द्रव्य, सामान ।

इति हान्ताः ।

अव्ययाः परे

[१]अगले सभी शब्द अव्यय होंगे । यानी ये तीनों लिङ्ग, सात विभक्ति और तीनों वचन में एक-से रहेंगे ।

आङीषदर्थेऽभिव्याप्तौ सीमार्थे धातुयोगजे।।

आङ्—थोड़ा, संपूर्ण, व्याप्त, सीमा, क्रिया-योगज । ईषदर्थ में जैसे—'आपिङ्गलः' । अभिव्याप्ति अर्थ में जैसे—'आसत्यलोकादापातालात्' । सीमा के अर्थ में—'आसमुद्रं राजदण्डः' । क्रिया-योगज अर्थ में—'आहरति, आक्रामति' ॥२३८॥

आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्येऽपि

आ—(यह प्रगृह्यसंज्ञक है) स्मरण, वाक्य-पूर्ति, अनुकम्पा, समुच्चय । स्मरण अर्थ में जैसे—'आ एवं किल तत् ।'

आस्तु स्यात् कोपपीडयोः ।

आः—कोप, पीड़ा, स्मरण, अपाकरण । कोप अर्थ में जैसे—'आः पाप किं विकत्थसे' । पीड़ा अर्थ में जैसे—'आः शीतम्' ।

पापकुत्सेषदर्थे कु

कुः—पाप, निन्दा, थोड़ा । पापअर्थ में जैसे—'कुकर्म' । निन्दा अर्थ में-'कापथः' । अल्प अर्थ में—'कवोष्णम्' ।

धिङ्निर्भर्त्सननिन्दयोः ॥२३९॥

धिक्—धमकाना, लानत देना, निन्दा ॥२३९॥

चान्वाचयसमाहारेतरेतरसमुच्चये ।

च—अन्वाचय (किसी वाक्य में वाक्यान्तर का समावेश । जैसे 'भिक्षा मट गांचानय') समूह, अलग अलग करना, परस्पर निरपेक्ष शब्दों का

---

१ अव्ययलक्षणन्तु—सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु । वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

एक में अन्वय करना, पादपूरण, पक्षान्तर, हेतु, विनिश्चय ॥

स्वस्त्याशीः क्षेमपुण्यादौ

स्वस्ति—आशीर्वाद, कुशल, पुण्य ।

प्रकर्षे लंघनेऽप्यति ॥२४०॥

अति—प्रकर्ष, लाँघना, निश्चित, स्तुति । प्रकर्ष अर्थ में अति का उदाहरण—'अत्युत्तमो विष्णुः' । लंघन अर्थ में—'अतिवेलं जलधितलम्' ॥२४०॥

स्वित्प्रश्ने च वितर्के च

स्वित्—प्रश्न, तर्क-वितर्क, पादपूरण । प्रश्न अर्थ में जैसे—'किंस्वित्कुशलमस्ति'। वितर्क अर्थ में—'सर्वेश्वरत्वं विष्णोराहोस्विच्छिवस्य' ।

तु स्याद्भेदेऽवधारणे ।

तु—भेद, (पृथक्करण) समुच्चय, अवधारण (निश्चय) ।

सकृत्सहैकवारे चापि

सकृत्-साथ, एक बार । जैसे—'सकृद्यान्ति' 'सकृदपि कुर्याच्छ्राद्धम्' ।

आराद्दूरसमीपयोः ।.२४१॥

आरात्—दूर, समीप। जैसे—'आराच्छत्रोः सदा वसेत्' 'सखायं स्थापयेदारात्' ॥२४१॥

प्रतीच्यां चरमे पश्चात्

पश्चात्—पीछे, पश्चिम दिशा, अन्तिम । जैसे—'पश्चादस्तंगतो रविः' 'पश्चिमे वयसि नैमिषं वशी' ।

उताप्यर्थविकल्पयोः ।

उत—समुच्चय, विकल्प । विकल्प अर्थ में जैसे-'उत भीम उतार्जुनः' 'विष्णुरुत शिवः सेव्यः' ।

पुनः सहार्थयोः शश्वत्

शश्वत्—बार-बार, सदा, साथ ।

साक्षात्प्रत्यक्षतुल्ययोः ॥२४२॥

साक्षात्—प्रत्यक्ष, समान ॥२४२॥

खेदानुकम्पासन्तोषविस्मयामंत्रणे बत ।

बत—खेद, कृपा, सन्तोष, आश्चर्य, बुलावा ।

हन्त हर्षेऽनुकम्पायां वाक्यारम्भविषादयोः२४३

हन्त—हर्ष, दया, वाक्यारम्भ, विषाद, निश्चय, प्रमोद ॥२४३॥

प्रति प्रतिनिधौ वीप्सालक्षणादौ प्रयोगतः ।

प्रति—प्रतिनिधि, व्याप्त होने की इच्छा, लक्षण, प्रतिदान ।

इति हेतुप्रकरणप्रकाशादिसमाप्तिषु ॥२४४॥

इति—हेतु, प्रकरण (प्रकार), प्रकाश, इस तरह, अन्त, सान्निध्य, प्रकर्ष ॥२४४॥

प्राच्यां पुरस्तात्प्रथमे पुरार्थेऽग्रत इत्यपि ।

पुरस्तात्—पहला, पूर्वदिशा, प्रथम, भूतकाल, आगे ।

यावत्तावच्च साकल्येऽवधौ मानेऽवधारणे २४५

यावत्-तावत्—सम्पूर्ण, सीमा (अवधि), तौल, निश्चय, ॥२४५॥

मंगलानन्तरारम्भप्रश्नकार्त्स्न्येष्वथो अथ ।

अथो, अथ—मंगल बाद, आरम्भ, प्रश्न, सम्पूर्ण, संशय का आरम्भ, प्रतिज्ञा ।

वृथा निरर्थकाविध्योः

वृथा—निरर्थक, विधिहीन ।

नानानेकोभयार्थयोः ॥२४६॥

नाना—अनेक, उभयार्थक । अनेकार्थ में—'नानाविधा जनाः' । उभयार्थ में—'नानाविधं सज्जेत' ॥२४६॥

नु पृच्छायां वितर्के च

नु–प्रश्न, विकल्प, अनुनय, प्रतीत । पृच्छाअर्थ में–'को नु धावति।' विकल्प में–'भीमो नु धर्मो नु ।'

पश्चात्सादृश्ययोरनु ।

अनु—पश्चात्, सादृश्य । पश्चादर्थ में जैसे–'रथमनुगच्छति' । सादृश्य अर्थ में जैसे—'ज्येष्ठमनुकरोति ।'

प्रश्नावधारणानुज्ञानुनयामंत्रणे ननु ॥२४७॥

ननु—प्रश्न, निश्चय, आज्ञा, सान्त्वना, सम्बोधन, परिप्रश्न, वाक्य का आरम्भ ॥२४७॥

प्रश्न अर्थ में—'ननु किमेतत्'। निश्चयार्थ में—'नन्वयं योगी'। अनुज्ञा के अर्थ में-'ननु गच्छ'। अनुनय के अर्थ में—'ननु कोपं मुञ्च दयां कुरु'। संबोधन अर्थ में—'ननु राजन्, ॥२४८॥

गर्हासमुच्चयप्रश्नशंकासंभावनास्वपि।

अपि—निन्दा, समुच्चय, प्रश्न, शंका, संभावना।

उपमायां विकल्पे वा

वा—उपमा, विकल्प, एव। उपमा अर्थ में—'आशीविषो वा संक्रुद्धः'। विकल्प अर्थ में—'शिवं वा यदि वा विष्णुम्'।

सामि त्वर्धे जुगुप्सिते ॥२४८॥

सामि—आधा, निन्दित ॥२४८॥

अमा सह समीपे च

अमा—साथ, समीप। सहार्थ में जैसे—'पुत्रेणाऽमा भुंक्ते'। समीपार्थ में 'अमात्यः'।

कं वारिणि च मूर्धनि।

कम्—जल, मस्तक, सुख।

इवेत्थमर्थयोरेवम्

एवम्—तुल्य, इस तरह। तुल्य अर्थ में जैसे—'अग्निरेवं द्विजः। प्रसरार्थ में 'एवं वादिनि देवर्षौ'।

नूनं तर्केऽथ निश्चये ॥२४६॥

नूनम्—तर्क, अर्थ का निश्चय। तर्क अर्थ में जैसे—'नूनमयमतियज्वनां प्रियः' अर्थ के निश्चय में—'क्षुद्रेऽपि नूनं शरणं प्रपन्ने' ॥२४६॥

तूष्णीमर्थे सुखे जोषम्

जोषम्—चुपचाप, सुख। मौन अर्थ में—'जोषं तिष्ठ'। सुख के अर्थ में-'जोषमासीत् वर्षासु।'

किं पृच्छायां जुगुप्सने।

किम्—प्रश्न, निन्दा करना।

नामप्रकाश्यसंभाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ॥२५०॥

नाम—प्रसिद्धि, किसी तरह, क्रोध, उपगम, निन्दा ॥२५०॥

अलं भूषणपर्याप्तिशक्तिवारणवाचकम्।

अलम्—भूषण, परिपूर्ण, पराक्रम, रोकना, निरर्थक।

हुं वितर्के परिप्रश्ने

हुम्—विकल्प, फिर से पूछना।

समयान्तिकमध्ययोः ॥२५१॥

समया—समीप, मध्य। जैसे—'समया पत्तनं नदी' 'समया शैलयोर्ग्रामः।' ॥२५१॥

पुनरप्रथमे भेदे

पुनर—प्रथम के बाद, भेद। जैसे—'पुनरुक्तम्' 'किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः।'

निर्निश्चयनिषेधयोः।

निर्—निश्चय, निषेध। जैसे—'निरुक्तम्' 'निर्धनो राजा।'

स्यात्प्रबन्धे चिरातीते निकटागामिके पुरा २५२

पुरा—प्रबन्ध, बहुत दिन की बात, निकट, आगामी। प्रबन्ध अर्थ में जैसे-'पुराधीते' अविरतमपाठीदित्यर्थः। पुराने अर्थ में-'पुरातनम्'॥२५२॥

ऊररीरी चोररी च विस्तारेऽङ्गीकृतौ त्रयम्।

ऊररी-ऊरी-उररी—विस्तार, अंगीकार।

स्वर्गे परे च लोके स्वः

स्वर्—स्वर्ग, परलोक।

वार्ता संभाव्ययोः किल ॥२५३॥

किल—वार्ता, संभावना। वार्ता अर्थ में—'जघान कंसं किल वासुदेवः'। बड़ाई के अर्थ में—'गुरून् किलातिशेते शिष्यः' ॥२५३॥

निषेधवाक्यालङ्कारजिज्ञासानुनये खलु।

खलु—निषेध, वाक्य का अलंकार, जानने की इच्छा, अनुनय।

समीपोभयतः शीघ्रसाकल्याभिमुखेऽभितः २५४

अभितः—समीप, दोनों तरफ, शीघ्र, सम्पूर्ण, सम्मुख। समीप अर्थ में जैसे—'वाराणसीमभितः भागीरथी'। उभयार्थ में—'अभितः कुरु चामरौ'। शीघ्र अर्थ में—'अभितोऽधीष्व।' सम्पूर्ण अर्थ में—'अभितो वनदाहः'। सम्मुख अर्थ में—'अभितो हिंस्रको हन्ति।' ॥२५४॥

नामप्राकाश्ययोः प्रादुः

प्रादुस्—नाम, प्रकट। नाम में जैसे—'प्रादुरासीच्चक्रपाणिः'। प्रकट अर्थ में–'प्रादुर्बुद्धिर्भविष्यति'।

मिथोऽन्योन्यं रहस्यपि।

मिथः—परस्पर, एकान्त।

तिरोऽन्तर्धौ तिर्यगर्थे

तिरस्–अन्तर्धान (गायब हो जाना), तिरछा।

हा विषादशुगर्तिषु ॥२५५॥

हा—विषाद, शोक, पीड़ा।

अहहेत्यद्भुते खेदे

अहह—अतिशय अद्भुत, खेद। अद्भुत, अर्थ में—'अहह बुद्धिप्रकर्षो राज्ञः।' खेद अर्थ में—'अहह नीतो द्यूतेन मया कालः।'

हि हेताववधारणे।

हि—कारण, निश्चय। कारण अर्थ में—'धूमो हि दृश्यते'। निश्चय अर्थ में–'चन्द्रो हि शीतः'।

इति नानार्थवर्गः।

अथाव्ययवर्गः ४

(षट् चिरार्थकाः)

चिराय चिररात्राय चिरस्याद्याश्चिरार्थकाः।

दीर्घकालवाचक ६ नाम—(१) चिराय (२) चिररात्राय (३) चिरस्य (४) चिरम् (५) चिरेण (६) चिरात्।

(पंच पुनःपुनर्वाचकाः)

मुहुः पुनः पुनः शश्वदभीक्ष्णमसकृत्समाः ॥१॥

बारम्बार अर्थसूचक ५ नाम—(१) मुहुः (२) पुनःपुनः (३) शश्वत् (४) अभीक्ष्णम् (५) असकृत् ॥१॥

(अष्टौ झटित्यर्थकाः)

स्राग्झटित्यञ्जसाह्नायद्राङ्मंक्षु सपदि द्रुते।

शीघ्रतावाचक ८ नाम—(१) स्राक् (२) झटिति (३) अञ्जसा (४) अह्नाय (५) द्राक् (६) मंक्षु (७) सपदि (८) द्रुतम्।

(षड् अतिशयार्थकाः)

बलवत्सुष्ठु किमुत स्वतीव च निर्भरे ॥२॥

अतिशयवाचक ६ नाम—(१) बलवत् (२) सुष्ठु, (३) किमुत (४) सु (५) अति (६) अतीव ॥२॥

(षट् पृथगर्थकाः)

पृथग्विनान्तरेणर्ते हिरुङ् नाना च वर्जने।

पृथक् वाचक ६ नाम—(१) पृथक् (२) विना (३) अन्तरेण (४) ऋते (५) हिरुक् (६) नाना।

(चत्वारि कारणार्थकाः)

यत्तद्यतस्ततो हेतौ

हेतुवाचक ४ नाम (१) यत् (२) तत् (३) यतः (४) ततः।

(द्वे न्यूनार्थस्य)

असाकल्ये तु चिच्चन ॥३॥

न्यूनार्थवाचक २ नाम—(१) चित् (२) चन ॥ ३ ॥

(द्वे कदाचिदर्थके)

कदाचिज्जातु

'किसी समय' वाचक २ नाम—(१) कदाचित् (२) जातु। (यथा 'ज्ञानं ते जातु सूत्तम')।

(पंच सहार्थे)

सार्धं तु साकं सत्रा समं सह।

'साथ' वाचक ५ नाम—(१) सार्धम् (२) साकम् (३) सत्रा (४) समम् (५) सह।

(एकमानुकूल्यार्थकस्य)

आनुकूल्यार्थकं प्राध्वम्

अनुकूलतावाचक १ नाम—(१) प्राध्वम्।

(द्वे व्यर्थकस्य)

व्यर्थके च वृथा मुधा ॥४॥

व्यर्थवाचक २ नाम—(१) वृथा (२) मुधा ॥ ४ ॥

(षट् विकल्पार्थकस्य)

आहो उताहो किमुत विकल्पे किं किमूत च।

विकल्पवाचक ६ नाम—(१) आहो (२) उताहो (३) किमुत (४) किम् (५) किमु (६) उत ।

(षट् पादपूरणार्थकाः)

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे

पादपूरणार्थक ६ नाम—(१) तु (२) हि (३) च (४) स्म (५) ह (६) वै ।

(द्वे पूजार्थके)

पूजने स्वति ॥५॥

पूज्य अर्थ के २ नाम—(१) सु (२) अति॥५॥

(एकं दिनवाचकस्य)

दिवाह्नीति

दिनवाचक अव्यय का नाम—(१) दिवा ।

(द्वे रात्रिवाचकस्य)

अथ दोषा च नक्तं च रजनाविति ।

रात्रिवाचक २ नाम—(१) दोषा (२) नक्तम् ।

(द्वे तिर्यगर्थकस्य)

तिर्यगर्थे साचि तिरोऽपि

टेढ़ा अर्थवाचक २ नाम-(१) साचि (२) तिरः।

(षट् सम्बोधनार्थकस्य)

अथ सम्बोधनार्थकाः ॥६॥

स्युः प्याट् पाडङ्ग हे है भोः

सम्बोधनवाचक ६ नाम—(१) प्याट् (२) पाट् (३) अङ्ग (४) हे (५) है (६) भोः॥६॥

(त्रीणि सामीप्यार्थकस्य)

समया निकषा हिरुक् ।

समीप वाचक ३ नाम—(१) समया (२) निकषा (३) हिरुक् ।

(एकमतर्कितस्य)

अतर्किते तु सहसा

अकस्मात् का नाम—(१) सहसा ।

(त्रीणि 'अग्रे' इत्यर्थकस्य)

स्यात्पुरः पुरतोऽग्रतः ॥७॥

आगे के ३ नाम—(१) पुरः (२) पुरतः (३) अग्रतः ॥७॥

(पञ्च देवपितृभ्यो हविर्दानस्य)

स्वाहा देवहविर्दाने श्रौषट् वौषट् वषट् स्वधा

देवताओं तथा पितरों को हवि देते समय कहे जानेवाले ५ नाम—(१) स्वाहा (२) श्रौषट् (३) वौषट् (४) वषट् (५) स्वधा । इनमें 'स्वधा' शब्द पितृसम्बन्धी दान में ही प्रयुक्त होता है ।

(त्रीण्यल्पस्य)

किंचिदीषन्मनागल्पे

थोड़े के ३ नाम—(१) किञ्चित् (२) ईषत् (३) मनाक् ।

(द्वे जन्मान्तरस्य)

प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥८॥

जन्मान्तर के २ नाम—(१) प्रेत्य (२) अमुत्र ॥८॥

(षट् साम्यस्य)

व वा यथा तथेवैवं साम्ये

समानता के ६ नाम—(१) व (२) वा (३) यथा (४) तथा (५) इव (६) एवम् ।

(द्वे विस्मये)

अहो ही च विस्मये ।

विस्मयवाचक २ नाम—(१) अहो (२) ही ।

(द्वे मौनार्थके)

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकम्

मौनवाचक २ नाम—(१) तूष्णीम् (२) तूष्णीकम् ।

(द्वे तत्कालस्य)

सद्यः सपदि तत्क्षणे ॥९॥

तत्कालवाचक २ नाम—(१) सद्यः (२) सपदि ॥९॥

(द्वे आनन्दवाचकस्य)

दिष्ट्या समुपजोषं चेत्यानन्दे

आनन्दवाचक २ नाम—(१) दिष्ट्या (२) समुपजोषम् ।

(त्रीणि मध्यार्थकानि)

अथान्तरेऽन्तरा ।

अन्तरेण च मध्ये स्युः

मध्यवाचक ३ नाम—(१) अन्तरे (२) अन्तरा (३) अन्तरेण । जैसे—'अनयोरन्तरे तिष्ठ' 'त्वां मां चान्तरा अन्तरेण वा कमण्डलुः' ।

(एकं हठार्थकम्)

प्रसह्य तु हठार्थकम् ॥१०॥

हठवाचक नाम—(१) प्रसह्य ॥१०॥

(द्वे युक्तार्थके)

युक्ते द्वे साम्प्रतं स्थाने

न्यायसंगतवाचक २ नाम—(१) सांप्रतम् (२) स्थाने। जैसे—'स्थाने हृषीकेश ! तव प्रकीर्त्या' ।

(द्वे नैरन्तर्ये)

अभीक्ष्णं शश्वदनारते ।

निरन्तरवाचक २ नाम—(१) अभीक्ष्णं (२) शश्वत् । जैसे—'अभीक्ष्णमुष्णैरपि तस्य सोष्मणः' 'शश्वत्कालः' ।

(चत्वारि अभावे)

अभावे नह्यनो नापि

अभाववाचक ४ नाम—(१) नहि (२) अ (३) नो (४) न ।

(त्रीणि वारणार्थे)

मास्म माऽलं च वारणे ॥११॥

निषेधवाचक ३ नाम—(१) मास्म (२) मा (३) अलम् । जैसे—'मास्म कार्षीरिदं पुत्र' 'मा कुरु' 'अलं महीपाल ! तव श्रमेण' ॥११॥

(द्वे पक्षान्तरे)

पक्षान्तरे चेद्यदि च

पक्षान्तरवाचक २ नाम—(१) चेत् (२) यदि ।

(द्वे तत्वार्थके)

तत्त्वे त्वद्धाऽञ्जसा द्वयम् ।

तत्त्वार्थवाचक २ नाम—(१) अद्धा (२) अञ्जसा ।

(द्वे प्राकाश्ये)

प्राकाश्ये प्रादुराविः स्यात्

प्रकटवाचक २ नाम—(१) प्रादुः (२) आविः । जैसे 'प्रादुरासीत्' 'आविर्बभूव' ।

(त्रीण्यङ्गीकारार्थे)

ओमेवं परमे मते ॥१२॥

अङ्गीकारवाचक ३ नाम—(१) ओम् (२) एवम् (३) परमम् ॥१२॥

(चत्वारि सर्वतोऽर्थे)

समन्ततस्तु परितः सर्वतो विष्वगित्यपि ।

चौतरफावाचक ४ नाम—(१) समन्ततः (२) परितः (३) सर्वतः (४) विष्वक् ।

(एकं अनिच्छयानुमतौ)

अकामानुमतौ कामम्

अनिच्छा से दी हुई सलाह का नाम—(१) कामम् । जैसे—'त्वं हनिष्यति चेत्कामम्' ।

(एकमसूयापूर्वकस्वीकारे)

असूयोपगमेऽस्तु च ॥१३॥

ईर्ष्यापूर्वक स्वीकृति का नाम—(१) अस्तु । जैसे—'तथाविधस्तावदशेषमस्तु सः' ॥१३॥

(एकं विरोधोक्तौ)

ननु च स्याद्विरोधोक्तौ

विरोधोक्तिवाचक १ नाम—(१) ननु ।

(एकमिष्टपरिप्रश्ने)

कच्चित्कामप्रवेदने ।

अभिलषित प्रश्नवाचक नाम—(१) कच्चित् । यथा—'कच्चिज्जीवति मे माता ?'

(द्वे गर्ह्यार्थे)

निःषमं दुःषमं गर्ह्ये

निन्दितवाचक २ नाम—(१) निःषमम् (२) दुःषमम् ।

(द्वे यथायोग्येऽर्थे)

यथास्वं तु यथायथम् ॥१४॥

यथायोग्यवाचक २ नाम—(१) यथास्वम् (२) यथायथम् ॥१४॥

(द्वे मिथ्यार्थे)

मृषा मिथ्या च वितथे

असत्यवाचक २ नाम--(१) मृषा (२) मिथ्या ।

(द्वे यथार्थेऽर्थे)

यथार्थं तु यथातथम् ।

यथार्थवाचक २ नाम--(१) यथार्थम् (२) यथातथम् ।

(पंच निश्चयार्थकाः)

स्युरेवं तु पुनर्वै वेत्यवधारणवाचकाः ॥१५॥

निश्चयार्थवाचक ५ नाम--(१) एवम् (२) तु (३) पुनः (४) वै (५) वा ॥१५॥

(एकमतीतार्थकम्)

प्रागतीतार्थकम्

भूतकालवाचक नाम--(१) प्राक् । यथा--'प्राकर्मः ।'

(द्वे निश्चितार्थे)

नूनमवश्यं निश्चये द्वयम् ।

निश्चितवाचक २ नाम--(१) नूनम् (२) अवश्यम् ।

(एकं सम्वत्सरार्थे)

संवद्वर्षे

वर्षवाचक नाम—(१) संवत् ।

(एकमवरेऽर्थे)

अवरे त्वर्वाक्

प्रथमवाचक नाम—(१) अर्वाक् ।

(द्वे अङ्गीकारे)

आमेवम्

अङ्गीकारवाचक २ नाम—(१) आम् (२) एवम् ।

(एकमात्मार्थे)

स्वयमात्मना ॥१६॥

आत्म (अपना) वाचक नाम—(१) स्वयम्॥१६॥

(एकमल्पे)

अल्पे नीचैः

अल्प (छोटा) वाचक नाम—(१) नीचैः ।

(एकं महद्वाचके)

महत्युच्चैः

ऊँचावाचक नाम—(१) उच्चैः ।

(एकं बाहुल्येऽर्थे)

प्रायो भूम्नि

बाहुल्य (अक्सर) वाचक नाम—(१) प्रायः ।

(एकं मन्देऽर्थे)

अद्रुते शनैः ।

मन्द (धीरे-धीरे) अर्थ में १ नाम—(१) शनैः ।

(एकं नित्येऽर्थे)

सना नित्ये

नित्यवाचक नाम--(१) सना ।

(एकं बाह्येऽर्थे)

बहिर्बाह्ये

बाह्य (बाहर) अर्थ में १ नाम-(१) बहिः ।

(एकमतीतार्थे)

स्मातीते

अतीत (भूतकाल) अर्थ में १ नाम—(१) स्म । यथा—'वक्तिस्म व्यासः' ।

(एकमदर्शनेऽर्थे)

अस्तमदर्शने ॥१७॥

अदर्शन (गायब होना, दिखाई न देना, अस्त होना) अर्थ में १ नाम—(१) अस्तम् ॥१७॥

(एकं भावार्थे)

अस्ति सत्त्वे

विद्यमान अर्थ में १ नाम—(१) अस्ति ।

(एकं कोपोक्तौ)

रुषोक्तावु

कोपयुक्त वाक्य का नाम—(१) उ ।

(एकं प्रश्नेऽर्थे)

ऊं प्रश्ने

प्रश्न अर्थ में—(१) ऊं । यथा—'ऊं गच्छसि बहिर्धव ?'

(एकमनुनयार्थे)

अनुनये त्वयि ।

अनुनय अर्थ में—(१) अयि । यथा-'अयि वद राघव! तथ्यम्' ।

(एकं तर्केऽर्थे)

हुं तर्के स्यात्

तर्क अर्थ में—(१) हुम् ।

(एकं रात्रेरवसाने)

उषा रात्रेरवसाने

रात्रि के अन्त का नाम—(१) उषा । यथा—'उषातनो वायुः' ।

(एकं नमस्कारे)

नमो नतौ ॥१८॥

नमस्कार अर्थ में —(१) नमः । यथा—'नमो ब्रह्मरायदेवाय' ॥१८॥

(एकं पुनरर्थे)

पुनरर्थेऽङ्ग

पुनः अर्थ में—(१) अङ्ग । जैसे-'मूर्खोऽपि नावमन्यते किमंग विद्वान्' ।

(एकं निन्दायाम्)

दुष्ठु निन्दायाम्

निन्दा अर्थ में—(१) दुष्ठु । यथा—'दुष्ठु खलत्वम्' ।

(एकं प्रशंसायाम्)

सुष्ठु प्रशंसने ।

प्रशंसा अर्थ में—(१) सुष्ठु । यथा—'सुष्ठु काव्यम्' ।

(एकं सायंकाले)

सायं साये

सायंकाल अर्थ में १ नाम—'सायम्' । जैसे—'सायं सन्ध्यामुपासिष्ये' ।

(द्वे प्रभातेऽर्थे)

प्रगे प्रातः प्रभाते

प्रातःकालवाचक २ नाम—(१) प्रगे (२) प्रातः । जैसे—'प्रगे नृपाणामथ तोरणाद्बहिः ।' 'यः पठेत्प्रातरुत्थाय' ।

(एकं सामीप्ये)

निकषाऽन्तिके ॥१९॥

समीप अर्थ में १ नाम—(१) निकषा ॥१९॥

(त्रीणि वर्षस्य)

परुत्परार्यैषमोऽब्दे पूर्वे पूर्वतरे यति ।

बीते परसाल का नाम—(१) परुत् ।

गत वर्ष से भी पहले वर्ष परियार साल का नाम—(१) परारि ।

वर्तमान वर्ष का १ नाम—(१) ऐषमस् ।

(एकं अस्मिन्नहनीत्यर्थे)

अद्यात्राह्नि

'आज के दिन' इस अर्थ में १ नाम—(१) अद्य ।

(सप्त पूर्वस्मिन् दिने इत्याद्यर्थे)

अथ पूर्वेह्नीत्यादौ पूर्वोत्तरापरात् ॥२०॥
तथाऽधरान्यान्यतरेतरात्पूर्वेद्युरादयः ।

'पूर्वेऽह्नि' आदि अर्थ में पूर्व आदि शब्द से द्युस् प्रत्यय करने पर पूर्वेद्युः आदि सात शब्द होते हैं। जैसे पूर्व दिन के अर्थ में—(१) पूर्वेद्युः । अगले दिन के अर्थ में—(१) उत्तरेद्युः । अपर दिन के अर्थ में—(१) अपरेद्युः । इसी तरह—'अधरेद्युः' 'अन्येद्युः' 'अन्यतरेद्युः' 'इतरेद्युः' २०

(द्वे उभयस्मिन्नहनीत्यर्थे)

उभयद्युश्चोभयेद्युः

दोनों दिनवाचक २ नाम—(१) उभयद्युः (२) उभयेद्युः ।

(एकं परदिने)

परे त्वह्नि परेद्यवि ॥२१॥

परदिनवाचक नाम—(१) परेद्यवि । जैसे—'मित्रं दृष्टं परेद्यवि' ॥२१॥

(एकं गतेऽहनि)

ह्यो गते

गत दिवस का नाम—(१) ह्यः । यथा—'ह्यः सर्वमभवत्कार्यम् ।'

(एकमागामिन्यहनि)

अनागतेऽह्नि श्वः

आनेवाले कल का नाम—(१) श्वः ।

(एकं श्वःपरेऽहनि)

परश्वस्तु परेऽहनि ।

आनेवाले परसों का नाम—(१) परश्वः । जैसे–'अद्य श्वो वा परश्वो वा सर्वं कार्यं भविष्यति ।'

(द्वे तस्मिन्काले इत्यर्थे)

तदा तदानीम्

उस समय के अर्थ में २ नाम—(१) तदा (२) तदानीम् ।

(द्वे एकस्मिन्काले इत्यर्थे)

युगपदेकदा

एक समय के अर्थ में २ नाम—(१) युगपत् (२) एकदा ।

(द्वे सर्वस्मिन्काले इत्यर्थे)

सर्वदा सदा ॥२२॥

सब समय के अर्थ में २ नाम—(१) सर्वदा (२) सदा ॥२२॥

(पंच अस्मिन्काले इत्यर्थे)

एतर्हि सम्प्रतीदानीमधुना साम्प्रतं तथा ।

इस समय के अर्थ में ५ नाम—(१) एतर्हि (२) सम्प्रति (३) इदानीम् (४) अधुना (५) साम्प्रतम् ।

दिग्देशकाले पूर्वादौ प्रागुदक्प्रत्यगादयः ॥२३॥

पूर्व आदि देश, पूर्व आदि दिशा, पूर्व आदि काल के अर्थ में प्रत्यक् आदि शब्द होते हैं। जैसे पूर्व देश, पूर्व दिशा और पूर्वकाल के अर्थ में—प्राक् ।

उत्तर देश, उत्तर दिशा और उत्तरकाल के अर्थ में—उदक् ।

पश्चिम दिशा और पश्चिम काल के अर्थ में—प्रत्यक् ॥२३॥

इत्यव्ययवर्गः ॥४॥

अथ लिङ्गादिसंग्रहवर्गः ॥५॥

सलिङ्गशास्त्रैः सन्नादिकृत्तद्धितसमासजैः ।
अनुक्तैः संग्रहे लिङ्गं संकीर्णवदिहोन्नयेत् ॥१॥

पाणिनि आदि व्याकरणशास्त्र के रचयिता मुनियों ने 'सन्' आदि प्रत्यय से बने हुए 'चिकीर्षा' आदि शब्दों से, कृदन्त प्रत्यय से बने 'श्वपाक' आदि शब्दों से, तद्धित प्रत्यय से बने 'अदन्तोत्तरपदो द्विगुः' आदि से समास करके बने शब्दों तथा इनके अतिरिक्त—जिनके लिङ्ग के विषय में अबतक स्पष्ट लिङ्ग निर्देश नहीं किया गया था, उन शब्दों का–इस 'लिङ्गसंग्रहादिवर्ग' में संग्रह किया जा रहा है । जिस तरह कि संकीर्णवर्ग में प्रकृति-प्रत्यय आदि से लिङ्ग की कल्पना की जा चुकी है, उसी तरह इस वर्ग में भी कल्पना करनी चाहिए । प्रकृति के अर्थ में जैसे—'अर्धर्चाः पुंसि' । प्रत्ययार्थसे जैसे—'स्त्रियां क्तिन्' । इसी प्रकार जो शब्द क्रियाविशेषण के हैं, उनका एकत्व तथा नपुंसकलिङ्गता होती है । जैसे—'शोभनं पचति' इत्यादि ॥१॥

लिङ्गशेषविधिर्व्यापी विशेषैर्यद्यबाधितः ।

पहले के वर्गों में कृदन्त, तद्धित तथा समास के प्रत्ययों से बने हुए जिन शब्दों का लिङ्गनिर्देश किया जा चुका है, उनके अतिरिक्त लिङ्ग लिङ्गशेष कहे जाते हैं । यदि यहाँ और पूर्वोक्त विशेष इसमें बाधक न हों तो उस लिङ्गशेष का विधान व्यापक होगा । यानी पूर्वोक्त तीनों काण्डों में उसकी पहुँच होगी । कहने का मतलब यह कि इस उत्सर्गभूत लिङ्गविशेषविधि में स्वर्गादिवर्ग अपवादस्वरूप हैं । पुनरुक्तिदोष से बचने के लिए और विस्तार भय से यहाँ पूर्व में कहे हुए विशेषों को नहीं दुहराया जा रहा है । जैसे कि स्वर्ग के पर्यायवाचक शब्द यहाँ पुँल्लिङ्ग कहे जायँगे । यह पूर्वोक्त 'द्यौर्दिवौ द्वे, स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्' का अपवाद है । यद्यपि पहले भी लिङ्गनिर्देश कर आये

हैं, किन्तु जिन शब्दों की लिङ्गविवेचना नहीं हो सकी थी, यहाँ उनकी विवेचना की जायगी । इस तरह इस वर्ग में लिङ्गसंग्रह ही प्रधान विषय है ।

स्त्रियामीदूद्विरामैकाच् सयोनिप्राणिनाम च । २

'स्त्रियाम्' यह अधिकार १० वें श्लोक के मसी शब्द पर्यन्त चलेगा । जिन शब्दों के अन्त में ईकार या ऊकार है और जो शब्द एक अच् के हैं, वे स्त्रीलिङ्ग हैं । जैसे—धीः श्रीः भूः भ्रूः आदि । नी आदि में 'कृतः कर्तरि' से वाधितत्व के कारण वाच्यलिङ्गत्व है । और जो प्राणी योनियुक्त हैं, वे भी स्त्रीलिङ्ग ही होंगे । जैसे—माता, दुहिता, धेनु आदि में 'दाराः पुंभूम्नि' कलत्र शब्द के विषय में 'कलत्रं श्रोणिभार्ययोः' यह नपुंसकलिङ्ग का पाठ वाधक है । इसी प्रकार अन्यत्र भी विचार कर लीजिएगा ॥२॥

नामविद्युन्निशावल्लीवीणादिग्भूनदीह्रियाम् ।

विद्युत् शब्द से ह्री शब्द पर्यन्त आठ नाम स्त्रीलिङ्ग हैं । जैसे—(१) विद्युत् (२) निशा (३) वल्ली (४) वीणा (५) दिशा (६) भू (७) नदी (८) ह्री ।

अदन्तैर्द्विगुरेकार्थः

अदन्त मूल आदि शब्दों का जहाँ एकार्थ में (समाहार) द्विगु समास हो, तो वह स्त्रीलिङ्ग हो जाता है । जैसे—'पञ्चानां मूलानां समाहारः पञ्चमूली' इसी तरह 'त्रयाणां लोकानां समाहारः त्रिलोकी' 'षण्णामध्यायानां समाहारः षडध्यायी' आदि ।

न स पात्रयुगादिभिः ॥३॥

किन्तु उत्तर पद में यदि पात्र, युग आदि अदन्त शब्द पड़े हों तो एकार्थ द्विगु होने पर भी वह स्त्रीलिङ्ग नहीं होता । जैसे —'पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम ' आदि ॥३॥

तल् वृन्दे येनिकस्यत्रा वैरमैथुनिकादिवुन् ।
स्त्रीभावादावनिक्तिण्णवुलण्चण्वुच्क्यब्युजि
ञङ्निशाः ॥४॥

भाव, कर्म, समूह तथा स्वार्थ अर्थ में तल्प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । भाव अर्थ में जैसे-शुक्लता । कर्म अर्थ में जैसे-ब्राह्मणता । समूह अर्थ में—ग्रामता । स्वार्थ अर्थ में—देवता । वृन्द अर्थ में य, इनि, कव्य और त्र प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । जैसे—'पाशानां समूहः' इसमें 'पाशादिभ्यो यः' इस पाणिनीय सूत्र से य प्रत्यय होने पर स्त्रीलिङ्ग में 'पाश्या' यह रूप होता है । इसी तरह वात्या । 'खलानां समूहः' इसमें 'खलादिभ्य इनिः' इस सूत्र से इनि प्रत्यय होने पर स्त्रीलिङ्ग में खलिनी रूप होता है । रथ शब्द से 'रथादिभ्यः कव्यच्' इस सूत्र से कव्यच् प्रत्यय होनेपर स्त्रीलिङ्ग में रथकव्या रूप होता है । इसी तरह गोत्रा भी जानना । बैर तथा मैथुन अर्थ में प्रयुक्त वुन् प्रत्ययान्त शब्द भी स्त्रीलिङ्ग होता है । जैसे—'मिथुनस्य कर्म मैथुनिका' । वैर अर्थ में जैसे—'अश्वमहिषस्येदं वैरं अश्वमहिषिका' । 'स्त्रियाम्' इस अधिकार में प्रयुक्त अनि, क्तिन्, ण्वुल्, णच्, ण्वुच्, क्यप्, युच्, इञ्, अङ् और शप्रत्ययान्त शब्द भी स्त्रीलिङ्ग होते हैं । अनिप्रत्ययान्त—अकरणिः, अजीवनिः । क्तिन्प्रत्ययान्त—कृतिः, गतिः । ण्वुल्प्रत्ययान्त—प्रच्छर्दिका, प्रवाहिका, आसिका । णच् प्रत्ययान्त—व्याक्रोशी । ण्वुच् प्रत्ययान्त—शायिका, इक्षुभक्षिका । क्यप्प्रत्ययान्त—व्रज्या, इज्या । युच् प्रत्ययान्त—कारणा, हारणा, आसना । इञ्प्रत्ययान्त-वापिः,वासिः । इञ्प्रत्ययान्त-पचा, त्रपा, भिदा । निप्रत्ययान्त-ग्लानिः, हानिः । शप्रत्ययान्त—क्रिया, इच्छा ॥४॥

उणादिषुनिरूरीश्च ङ्याबूङन्तं चलं स्थिरम् ।

उणादि में निः, ऊः, ईः प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं । निःप्रत्यान्त शब्द जैसे—श्रोणिः, द्रोणिः । ऊप्रत्ययान्त-चमूः कर्षूः । ईप्रत्ययान्त—तंत्रीः । ङ्यन्त, आबन्त तथा ऊङन्त शब्द चाहे स्थावर हों या जंगम, वे स्त्रीलिङ्ग ही होते हैं । जंगम

अर्थ में जैसे—नारी, शिवा, ब्रह्मवधूः। स्थावर अर्थ में जैसे—कदली, माला, कर्कन्धूः।

तत्क्रीडायां प्रहरणं चेन्मौष्टापाल्लवा णदिक् ॥५

यहाँ 'तत्' शब्द से मुष्ट्यादिका संकेत है। इससे इसका यह अर्थ है कि मुक्का मारना आदि खेलवाड़ के अर्थ में ण प्रत्यय प्रयुक्त हो तो वह स्त्रीलिङ्ग हो जाता है। यहाँ 'तदस्यां प्रहरणं क्रीडायां णः' इस सूत्र से ण प्रत्यय होता है। स्त्रीलिङ्ग में 'दाण्डा, मौसला' यह रूप होता है। इसी तरह 'पल्लवः प्रहरणमस्यां क्रियायां पाल्लवः' ॥५॥

घञो ञःसा क्रियास्यां चेद्दाण्डपाता हि फाल्गुनी श्यैनंपाता च मृगया तैलम्पाता स्वधेति दिक् ॥६

फाल्गुन्यादि अर्थ में घञन्त से विहित ञ-प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—दण्ड-पातोऽस्यां फाल्गुन्यां दाण्डपाता फाल्गुनी। इसी तरह—श्येनपातोऽस्यां क्रियायां श्यैनम्पाता मृगया, तिलपातोऽस्यां स्वधाक्रियायां तैल-म्पाता, मुसलपातोऽस्यां क्रियायां मौसलम्पाता भूमिः। बहुतेरे देशों में फाल्गुन की पूर्णिमा को लोग डंडे से खेलते हैं, इसलिए दिक् शब्द से 'दाण्ड-पाता' आदि उदाहरण भी होते हैं, यह सूचित किया है ॥६॥

स्त्री स्यात्काचिन्मृणाल्यादिर्विवक्षापचये यदि।

यदि किसी वस्तु की अल्पता विवक्षित हो तो मृणाली आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—अल्पं मृणालं मृणाली। आदिशब्द से—ह्रस्वो वंशो वंशी। इसी तरह-कुम्भी, प्रणाली, छत्री, पटी, तटी, मठी आदि भी जानना चाहिए। ह्रस्व अर्थ में 'कन्' प्रत्यय होने पर भी स्त्रीलिङ्ग होता है। जैसे—पेटिका। इस श्लोक में 'क्वचित्' शब्द इसलिए पड़ा है कि जिससे 'कल्पो वृक्षो वृक्षकः' आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग न मान लिये जायँ।

लंका शेफालिका टीका धातकी पञ्जिकाऽऽढकी ॥७॥

पहले 'ङ्याबूङन्तम्' आदि कह आये हैं, इसलिए कान्त आदि क्रम से स्त्रीलिङ्ग में कहे हुए कुछ शब्दों का संग्रह करते हैं। जैसे—लंका (रावण की नगरी), शेफालिका, टीका (विषम पद की व्याख्या), धातकी (आँवला), पंजिका (सब पदों की व्याख्या) आढकी (तरोई) ॥७॥

सिध्रका सारिका हिक्का प्राचिकोल्का पिपीलिका तिन्दुकी कणिका भंगिः सुरंगासूचिमाढयः ॥

सिध्रका (एक प्रकार का वृक्ष), सारिका (मैना), हिक्का (हिचकी), प्राचिका (वनमक्खी), उल्का (तेज का समूह), पिपीलिका (चींटी) तिन्दुकी (तेंदु), कणिका (परमाणु), भंगिः (कुटिलता), सुरंगा (बिल या सुरंग), सूचिः (सुई), माढि (पत्ते का सिरा, ढेपुनी) ॥८॥

पिच्छा वितण्डाकाकिण्यश्चूर्णिः शाणी द्रुणी दरत्।

सातिः कन्था तथाऽऽसन्दी नाभी राजसभाऽपि च ॥९॥

पिच्छा (सेमर की गोंद या भात का माड़), वितण्डा (बकवास), काकिणी (एक तोले की चौथाई), चूर्णिः (चूर्णिका), शाणी (सन का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा—टसर), द्रुणि (कछुही), दरत् (म्लेच्छ जाति), साति (अन्न-दान), कन्था (बिछौना), आसन्दी (बेंत की चटाई व कुर्सी), नाभि (ढोंढ़ी, अङ्गविशेष), राजसभा (कचहरी) ॥९॥

झल्लरी चर्चरी पारी होरा लट्वा च सिध्मला।

लाक्षा लिक्षा च गण्डूषा गृध्रसी चमसी मसी ॥१०॥

झल्लरी (झाँझ), चर्चरी (ताली बजाना), पारी (हाथी के पैर में बँधा हुआ रस्सा), होरा (लग्न का आधा), लट्वा (नर गौरैया), सिध्मला (सूखी मछली), लाक्षा (लाख-लाह) लिक्षा (लीख—जूँ का अण्डा), गण्डूषा (जल-दूध

आदि मुख में भरकर कुल्ला करना), गृध्रसी (एक प्रकार का वातरोग, जो जाँघ की जोड़ में होता है) चमसी (यज्ञपात्रविशेष = पीठी) मसी (स्याही) ॥१०॥

(इति स्त्रीलिङ्गसंग्रहः ।)

पुंस्त्वे सभेदानुचराः सपर्यायाः सुरासुराः ।
स्वर्गयागाद्रिमेघाब्धिद्रुकालासिशरारयः ॥११॥

आगे के २१ वें श्लोक तक 'पुंस्त्वे' इस वाक्य का अधिकार है। देवता या दैत्यों के पर्यायवाची जितने भी शब्द तथा भेद हैं और उनके जो अनुचर हैं, वे सब पुँल्लिङ्ग हैं। देवताओं के पर्यायवाची शब्द—अमर, निर्जर, देव, मरुत् आदि हैं। इनके भेद तुषित, साध्य, इन्द्र, मरुत्वान्, मघवा, सूर, सूर्य, अर्यमा, हाहा, हूहू, तुम्बुरु आदि हैं। अनुचर जैसे—विष्णु के अनुचर जय-विजय और शिव के अनुचर नन्दिकेश्वर आदि हैं। इसी तरह दैत्यों के भी पर्यायवाचक दैत्य दानव आदि और इनके भेद बलि, नमुचि आदि तथा इनके अनुचर कूष्माण्ड मुण्ड आदि, ये सभी पुँल्लिङ्ग है। इसी प्रकार औरों को भी समझ लीजिएगा। आगे चलकर इनके 'दैवतानि पुंसि वा देवताः स्त्रियाम्' इत्यादि बाधक भी बतलाये जायँगे।

स्वर्ग के समेत उन्नीस पर्यायवाचक शब्द पुँल्लिङ्ग हैं। स्वर्ग के पर्यायवाचक शब्द स्वर्ग, नाक, त्रिदिव आदि हैं। 'द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपम्' यह स्वर्गपर्यायवाची शब्दों की पुँल्लिङ्गता में विशेषरूप से बाधक है। यज्ञ, मख, क्रतु आदि, इनके भेद, उक्थ, अतिरात्र, अग्निष्टोम, अश्वमेध आदि हैं। अद्रि, गिरि, पर्वत और मेरु, हिमवान्, सह्य आदि इनके भेद हैं। 'गन्धमादनम्' यह बाधक है। मेघ, जलद, घन और इनके भेद पुष्कर, आवर्त आदि हैं। 'अभ्रम्' यह पुंस्त्व में बाधक है। अब्धि, समुद्र, सागर और इनके भेद क्षीरोद, लवणोद आदि हैं। द्रु, वृक्ष, शाखी और इनके भेद प्लक्ष, वट, आम्र आदि हैं। पाटला-शिंशपा आदि इनके पुंस्त्व में बाधक हैं। काल, दिष्ट, समय और इनके भेद, मास, पक्ष, ऋतु आदि हैं। दिन और तिथि आदि इनके बाधक हैं। असि, खड्ग, मण्डलाग्र और इनके भेद नन्दक, चन्द्रहास आदि हैं। 'करित्रम्' यह इसके पुँस्त्व में बाधक है। शर, बाण, विशिख और इनके भेद नाराच, काण्ड, भल्ल आदि हैं। 'इषुर्द्वयोः' यह वाक्य इसके पुंस्त्व में बाधक है। अरि, शत्रु, अराति आदि और इनके भेद आततायी आदि हैं। बाधक शब्दों के अतिरिक्त सब शब्द पुँल्लिङ्ग हैं ॥११॥

कर-गण्डौष्ठ-दोर्दन्त-कण्ठ-केश-नख-स्तनाः ।
अह्नाहान्ताः क्ष्वेडभेदा रात्रान्ताः प्रागसंख्यकाः ॥१२

कर, (राज-अंश Tax, किरण और बाघ) किन्तु किरण अर्थ में मरीचि आदि शब्द इसके पुँस्त्व में बाधक हैं। गण्ड (कपोल), ओष्ठ-दन्तच्छद, अधर। दोः (भुजदण्ड) इसमें 'द्वयोः' यह वाक्य पुँस्त्वबाधक है। दन्त, दशन, रद—इनका भेद जम्भ, कण्ठ, गल, केश, कच, नख, स्तन, कुच, पयोधर और अह्न तथा अहन् शब्द जिसके अन्त में हो, जैसे—पूर्वाह्णः, अपराह्णः, द्व्यहः, त्र्यहः आदि शब्द पुँल्लिङ्ग हैं। 'स नपुंसकम्' यह पाणिनीय सूत्र इसमें बाधक है। क्ष्वेड (विष) शब्द के पर्यायवाची शब्द तथा भेद भी पुँल्लिङ्ग हैं। जिन शब्दों के अन्त में 'रात्र' शब्द हो और पूर्वपद में कोई संख्या न हो तो वे भी पुँल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—सर्वरात्रः, पूर्वरात्रः। 'प्रागसंख्यकाः' इस वाक्य के कारण ही 'पंचरात्रम्' यहाँ पुँस्त्व नहीं होता ॥१२॥

श्रीवेष्टाद्याश्च निर्यासा असन्नन्ता अबाधिताः ।
कशेरुजतुवस्तूनि हित्वा तुरुविरामकाः ॥१३॥

श्रीवेष्ट आदि जितने वृक्ष के निर्यास (गोंद) हैं, वे सभी पुँल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—श्रीवेष्ट, सरल, द्रव। आदि शब्द से श्रीवास, वृकधूप, गुग्गुलु, सिह्लक आदि। असन्त और अन्नन्त शब्द भी पुँल्लिङ्ग होते हैं। असन्त जैसे—वेधा, चन्द्रमा, अङ्गिरा

और अन्नन्त जैसे—कृष्णवर्मा, प्रतिदिवा, मघवा, लोम, साम, वर्म आदि। अप्सरस् और जलौकस् ये दो स्त्रीलिङ्ग के शब्द तथा सुमनस्, लोम, साम, वर्म, ये नपुंसक लिङ्ग के शब्द पुँस्त्व के बाधक हैं। 'तु' और 'रु' जिन शब्दों के अन्त में हों, वे भी पुँल्लिङ्ग होते हैं। किन्तु कशेरु और जतु शब्द को छोड़कर ही पुँस्त्व होता है। जैसे–हेतुः, सेतुः, धातुः, कुरुः, मेरुः, तरुः। कसेरु (अस्थिविशेष) जतु (लाक्षा) यहां पुँस्त्व न होकर नपुंसकता ही रहती है ॥१३॥

कषणभमरोपान्ता यद्यदन्ता अमी अथ।
पथनयसटोपान्ता गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥१४॥

क ष ण भ म र ये अक्षर जिन अदन्त शब्दों के अन्त में हों तो वे पुँल्लिङ्ग होते हैं। कान्त जैसे—अङ्कः लोकः, अर्कः, स्फटिकः आदि। षान्त-माषः, तुषः, रोषः आदि। णान्त-पाषाणः, गुणः, घुणः, आदि। भान्त-दर्भः, सरभः, गर्दभः आदि। मान्त-होमः, ग्रामः, गुल्मः, धूमः आदि। रान्त-झर्झरः, समीरः, शीकरः, आदि।

इसी तरह प थ न य स ट ये छ अक्षर जिन शब्दों के अन्त में हों, वे भी पुँल्लिङ्ग होते हैं। पान्त शब्द जैसे—यूपः, कूपः, सूपः, कलापः आदि। थान्त-सार्थः, नाथः, शपथः आदि। नान्त—इनः, अपघनः, जनः आदि। यान्त–अपनय, विनय, प्रणय आदि। सान्त-रसः, हासः, पनसः आदि। टान्त–पटः, सटः, करटः आदि। जिनसे वंश की प्रसिद्धि हो, वे भी पुँल्लिङ्ग होते हैं। जैसे–भरद्वाजः, कश्यपः, वत्सः। वेद की शाखाओं के सभी नाम पुँल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—कठः, कलापः, बह्वृचः आदि ॥१४॥

नाम्न्यकर्तरि भावे घञ् जब्नङ्णघाथुचः।
ल्युः कर्तरीमनिज्भावे को घाः किः प्रादितोऽन्यतः

कर्ता से भिन्न कारक, संज्ञा या भाव में विहित घञ् आदि सात प्रत्ययान्त शब्द पुँल्लिङ्ग होते हैं। घञ्प्रत्ययान्त जैसे—'प्रसीदन्त्यस्मिन्मनांसि प्रासादः' 'प्रास्यत इति प्रासः' 'विदन्त्यनेन वेदः' 'प्रपतत्यस्मात्प्रपातः' आदि। भावप्रत्ययान्त जैसे—पाकः, त्यागः, रोगः आदि। अच्प्रत्ययान्त—जयः, चयः, नयः आदि। अप्प्रत्ययान्त—करः, गरः, जवः, लवः आदि। नङ् प्रत्ययान्त जैसे—यज्ञः, प्रश्नः आदि। नङ् यह उपलक्षण है, इस लिए 'स्वप्नः' भी पुँल्लिङ्ग ही माना गया है। णप्रत्ययान्त—'न्यादः' आदि। घप्रत्ययान्त–'उरश्छदः' आदि। अथुच् प्रत्ययान्त—'वेपथुः' आदि। कर्ता में प्रयुक्त ल्यु प्रत्यय भी पुँल्लिङ्ग होता है। जैसे—नन्दनः, रमणः, मधुसूदनः आदि। भाव अर्थ में प्रयुक्त इमनिच् प्रत्यय भी पुँल्लिङ्ग हैं। जैसे—प्रथिमा, महिमा, आदि। भाव में प्रयुक्त क प्रत्ययान्त जैसे—आखूत्थः, प्रस्थः आदि। प्र आदि उपसर्ग अथवा कोई भी शब्द आदि में हो तो घुसंज्ञक धातु से विहित कि प्रत्यय पुँल्लिङ्ग होता है। दारूप और धारूप धातु घुसंज्ञक माने जाते हैं। जैसे—प्रधिः, निधिः, आदि। 'अन्यतः' इस वाक्य से 'जलधिः' यहां भी कि प्रत्यय पुँल्लिङ्ग ही है ॥१५॥

द्वन्द्वेऽश्ववडवावश्ववडवा न समाहृते।
कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वोऽयःपूर्वकोऽपि च ॥

समाहार के अतिरिक्त द्वन्द्व समास में अश्ववडव शब्द पुँल्लिङ्ग होता है। समाहार में 'अश्ववडवम्' यही होता है। सूर्य या चन्द्रमा के पर्यायवाचक शब्दों के अन्त में कान्त शब्द पड़ा हो तो वह पुल्लिङ्ग होता है। जैसे—सूर्यकान्तः, चन्द्रकान्तः, अर्ककान्तः, इन्दुकान्तः, सोमकान्तः आदि। अयस् शब्द या इसके पर्यायवाची शब्दों के अन्त में कान्त शब्द पड़ा हो तो वह भी पुँल्लिङ्ग होता है। जैसे—अयस्कान्तः, लोहकान्तः आदि ॥१६॥

वटकश्चानुवाकश्च रल्लकश्च कुडङ्गकः।
पुङ्खो न्युङ्खः समुद्गश्च विटपट्टघटाः खटः॥१७॥

अब थोड़े से ककारान्त क्रम से पुँल्लिङ्ग शब्दों का संग्रह करते हैं। जैसे—वटकः (बड़ा)।

अनुवाकः (वेदका अंग)। रल्लकः (कम्बल)। कुडङ्गकः (वृक्ष और लताओं की झाड़ी)। पुंखः (बाणका मूलभाग)। न्युङ्खः (सामवेदका ओङ्कार)। समुद्गः (संपुटक, पेटारा)। विटः (धूर्त)। पट्टः (पीढ़ा)। धटः (तराजू)। खटः (अंधकारपूर्ण कूप) ॥१७॥

कोट्टारघट्टहट्टाश्च पिण्डगोण्डपिचण्डवत्।
गडुः करण्डो लगुडो वरण्डश्च किणो घुणः १८

कोट्टः (नागर, कूप, दुर्गपुर)। अरघट्टः (घाट, रहट)। हट्टः (बाज़ार)। पिण्डः (मिट्टी आदि एकत्रित करके बाँधना, शरीर)। गोण्डः (नाभि, नीच जाति का मनुष्य)। पिचण्डः (उदर)। ये और आगे कहे जाने वाले गडु आदि शब्द भी पुँल्लिङ्ग हैं। गडुः (गलगण्ड, कुबड़ा)। करण्डः (मधुकोष, बाँस की बनी झपोली)। लगुड़ (बाँस की लाठी)। वरण्डः (मुँह का रोग)। किणः (मांसग्रन्थि, घाव का निशान)। घुणः (घुन, काठ का कीड़ा) ॥१८॥

दृतिसीमन्तहरितो रोमन्थोद्गीथबुद्बुदाः।
कासमर्दोऽर्बुदः कुन्दः फेनस्तूपौ सयूपकौ १९

दृतिः (चमड़े की बैग, मछली)। सीमन्त (केशकी बनावट)। हरित् (पालाशवर्ण, घोड़े का एक विशेष वर्ण)। रोमन्थः (पागुर करना)। उद्गीथः (सामवेद का एक भेद)। बुद्बुदः (पानी का बुलबुला)। कासमर्दः (कसौंदी)। अर्बुदः (दस करोड़ की संख्या)। कुन्दः (कुन्द नामका फूल)। फेनः। स्तूपः (समूह, टीला)। यूपः (यज्ञस्तम्भ)। ['पूप' पाठ मानने पर पुआ] ॥१९॥

आतपः क्षत्रिये नाभिः कुणपक्षुरकेदराः।
पूरक्षुरप्रचुक्राश्च गोलहिङ्गुलपुद्गलाः ॥२०॥

आतपः (सूर्य का प्रकाश, धूप)। क्षत्रिय अर्थ में प्रयुक्त नाभिः। कुणपः (मुर्दा, अतिशय दुर्गन्धि)। क्षुरः (बाल बनाने का औज़ार, छुरा, गोखुरू)। केदरः (काम में आने लायक सामान)। पूरः (जल का बहाव)। क्षुरप्रः (खुरपा, एक प्रकार का बाण)। चुक्रः (एक प्रकार की भाजी, चूक, अमलबेत)। गोलः (गोलाकार पिण्ड)। हिङ्गुलः (मेहावर या रंगने का सामान)। पुद्गलः (आत्मा, सुन्दर आकृति)।

वेतालभल्लमल्लाश्च पुरोडाशोऽपि पट्टिशः।
कुल्माषो रभसश्चैव सकटाहः पतद्ग्रहः ॥२१॥

'वे वायौ तालः प्रतिष्ठा यस्यासौ वेतालः' यानी जिस शव में भूत का प्रवेश हो गया है। भल्लः भालू)। मल्लः (बाहु युद्ध में निपुण, पहलवान)। पुरोडाशः (एक प्रकार का हवि, जाउरि, सोमरस, हवनशेष सामग्री)। पट्टिशः (एक प्रकार का अस्त्र, पटा बनेठी)। कुल्माषः (आधा पका हुआ जौ, ख़राब उड़द, काँजी)। रभसः (हर्ष, वेग)। सकटाहः (कड़ाही समेत)। पतद्ग्रहः (पीकदान) ॥२१॥

(इति पुँल्लिङ्गसंग्रहः)

द्विहीनेऽन्यच्च खारण्यपर्णश्वभ्रहिमोदकम्।
शीतोष्णमांसरुधिरमुखाक्षिद्रविणं बलम्॥२२॥

इस श्लोक के 'द्विहीने' इस वाक्य का, आगामी ३२वें श्लोक के 'आबाह्निकम्' इस वाक्य तक अधिकार है अर्थात् इस बीच में आनेवाले खादि और इनके पर्यायवाची सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं। जैसे—खम् (इन्द्रिय, आकाश)। इसी तरह छिद्रम्, नभः, वियत् आदि भी नपुंसक लिङ्ग होंगे। अरण्यम् (जंगल), काननम्, विपिनम् आदि। पर्णम् (पत्ता), पत्रम्, दलम् आदि। हिमम् (बर्फ), प्रालेयम् आदि। उदकम्, जलम्, नीरम् आदि। शीतम्, शीतलम् आदि। उष्णम्, तिग्मम् आदि। 'शीतोष्ण' शब्द गुण अर्थ में नपुंसक लिङ्ग है, किन्तु दूसरे अर्थ में त्रिलिङ्ग है। मांसम्, पिशितम्, तरसम्, इत्यादि। रुधिरम्, शोणितम्, रक्तम् आदि। मुखम् (मुँह, निकलने का रास्ता, प्रारम्भ, उपाय) वदनम्, रक्तम् आदि। अक्षि, नयनम्, नेत्रम् आदि। द्रविणम् (सुवर्ण, धन, पराक्रम, बल यानी सेना) ॥२२॥

फलहेमशुल्बलोहसुखदुःखशुभाशुभम् ।
जलपुष्पाणि लवणं व्यञ्जनान्यनुलेपनम् ॥२३॥

फलम्, कपित्थम्, आदि फलवाचक सभी शब्द। हेम, सुवर्णम्, कनकम् आदि। शुल्बम् (तामा) ताम्रम् आदि। लोहम्, कालायसम् आदि। सुखम्, शर्म, शातम् आदि। दुःखम्, कृच्छ्रम्, कष्टम् आदि। शुभम्, कल्याणम्, कुशलम् आदि। अशुभम्, अकल्याणम् आदि। जल में उत्पन्न होनेवाले फूल-कुमुदम्, कह्लारम्, उत्पलम् आदि। लवणम्, सैन्धवम् आदि। व्यञ्जनम् (दाढ़ी-मूँछ, चिह्न, भोजनविशेष) तेमनम्, निष्ठानम् आदि। अनुलेपनम्, कुंकुमम् आदि सभी शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ॥२३॥

कोट्याः शतादिसंख्याऽन्या वा लक्षा नियुतंच तत्
द्व्यच्कमसिसुसन्नन्तं यदनान्तमकर्तरि॥२४॥

कोटि (करोड़) से भिन्न शतं सहस्रं आदि जितने भी संख्यावाचक शब्द हैं, वे सभी नपुंसकलिङ्ग हैं। लक्षाशब्द विकल्प से नपुंसक लिङ्ग होता है। लक्षशब्द का पर्यायवाची नियुत शब्द नित्य नपुंसक लिङ्ग है। इनके अतिरिक्त असन्त, इसन्त, उसन्त और अन्नन्त जितने भी दो अच वाले शब्द हैं, वे सब नपुंसक लिङ्ग हैं। असन्त में जैसे—पयः, यशः, तेजः, तमः आदि। इसन्त-सर्पिः, हविः, शोचिः आदि। उसन्त-वपुः, यजुः, आदि। अन्नन्त-चर्म, शर्म, साम, नाम आदि। कर्तृवर्जित अर्थ में अनान्त (अन+अन्त) शब्द हैं, वे भी नपुंसक लिङ्ग हैं। जैसे—गमनम्, मरणम्, दानम्, करणम्, वरणम् आदि। यदि इसमें 'अकर्तरि' यह वाक्य न कहते तो 'इध्मव्रश्चनः, नन्दनः रमणः' आदि भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते २४

त्रान्तं सलोपधं शिष्टं रात्रं प्राक्संख्ययान्वितम्
पात्राद्यदन्तैरेकार्थो द्विगुर्लक्ष्यानुसारतः ॥२५॥

जिन शब्दों के अन्त में 'त्र' अक्षर पड़े, वे सब शब्द नपुंसक लिङ्ग होते हैं। जैसे—पात्रम्, बहित्रम्, गात्रम्, वस्त्रम्, मित्रम् आदि। अन्तिम अक्षर के पूर्व वर्ण को उपधा कहते हैं। सो जिन शब्दों में 'स' उपधा में हो, वे नपुंसक लिङ्ग होते हैं। जैसे—विसम्, अन्धतमसम्, आदि जिन शब्दों के उपधा में 'ल' हो वे भी नपुंसक होते हैं। जैसे—कुलम्, मूलम् आदि। 'शिष्टम्' इस पद का तात्पर्य यह है कि जो पहले नहीं गिनाये हैं वे, और जो गिनाये जा चुके हैं, वे सभी अबाधित त्रान्त शब्द नपुंसक लिङ्ग होते हैं। संख्या युक्त रात्र शब्द भी नपुंसक होता है। जैसे—त्रिरात्रम्, पञ्चरात्रम्। 'संख्ययान्वितम्' न कहते तो 'अर्धरात्रः, मध्यरात्रः' आदि शब्द भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते। अदन्त पात्र आदि शब्दों के साथ शब्दार्थ में जो द्विगुसमास होता है, वह भी नपुंसकलिङ्ग ही होता है। जैसे—पञ्चपात्रम्, चतुर्युगम्, त्रिभुवनम् आदि। इस श्लोक में 'एकार्थः' न कहते तो 'पञ्चकपालः पुरोडाशः' भी यह नपुंसक लिङ्ग हो जाता। क्योंकि यहां एकार्थ में नहीं, बल्कि तद्धितार्थ में द्विगु समास हुआ है। 'लक्ष्यानुसारतः' न कहते तो 'त्रिपुरी, पञ्चमूली, त्रिवली' ये शब्द भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते ॥२५॥

द्वन्द्वैकत्वाव्ययीभावौ पथः संख्याव्ययात्परः।
षष्ठ्याच्छाया बहूनां चेद्विच्छायं संहतौ सभा२६

जहां द्वन्द्वसमास की एकता हो और अव्ययीभाव समास हो, वहां भी नपुंसकलिङ्ग होता है। द्वन्द्व की एकता जैसे—पाणिपादम्, शिरोग्रीवम्, मार्दङ्गिकपाणविकम्। अव्ययीभाव समास जैसे—अधिस्त्रि, उपगङ्गम्। संख्या और अव्यय से परे पथिन्शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है। जैसे—द्विपथम्, त्रिपथम्, चतुष्पथम्, विपथम्, कापथम्। यदि 'संख्याव्ययात्' ऐसा न कहते तो 'धर्मपथः, योगपथः' यह भी नपुंसक लिङ्ग हो जाते। समास में षष्ठीविभक्त्यन्त से परे छाया शब्द यदि बहुतों से सम्बन्ध रखनेवाला हो तो नपुंसक लिङ्ग होता है। जैसे-'वीनां पक्षिणां छाया विच्छायम्' इक्षुच्छायम् आदि। 'बहूनाम्' ऐसा न कहते तो

'कुड्यच्छाया, कुड्यच्छायं वा' यहां भी नित्यनपुंसक लिङ्ग हो जाता । समूह अर्थ में प्रयुक्त सभा शब्द भी नपुंसक लिङ्ग हो जाता है । जैसे—'दासीनां सभा दासीसभम्—स्त्रीसभम्' आदि । इस श्लोक में 'संहतौ' यह वाक्य इसलिए रखा गया है कि जिससे 'दासीनां सभा दासीसभा' (यानी दासी का घर) यह भी नपुंसक न हो जाय ॥२६॥

शालार्थाऽपि परा राजा मनुष्यार्थादराजकात् ।
दासीसभं नृपसभं रक्षःसभमिमा दिशः ॥२७॥

राजशब्द के अतिरिक्त राजके पर्यायवाची शब्दों के साथ यदि सभाशब्द घर के अर्थ में प्रयुक्त हो तो वह नपुंसक लिङ्ग हो जाता है । इसी प्रकार मनुष्य के अतिरिक्त राक्षस-पिशाच आदि से षष्ठी से परे सभाशब्द हो तो वह नपुंसक लिङ्ग हो जाता है । जैसे—इनसभम्, प्रभुसभम् आदि । मनुष्य से भिन्न अर्थ में जैसे—रक्षःसभम्, पिशाचसभम् आदि । इस श्लोक में यदि 'अराजकात्' यह वाक्य न कह देते तो 'राजसभा' भी नपुंसक लिङ्ग हो जाता । अपिशब्द से समुदाय के अर्थ में जहां सभाशब्द का प्रयोग हो, वहां पर भी नपुंसक लिङ्ग हो जाता है । इसी से दासीसभम्, नृपसभम्, यहां भी नपुंसक लिङ्ग होता है ॥२७॥

उपज्ञोपक्रमान्तश्च तदादित्वप्रकाशने ।
कोपज्ञकोपक्रमादिकन्थोशीनरनामसु ॥२८॥

जहां उपज्ञा और उपक्रम का प्राथम्य प्रकाशित करना हो तो उपज्ञान्त तथा उपक्रमान्त समास नपुंसकलिङ्ग हो जाता है । जैसे—'कः ब्रह्मा तस्योपज्ञा कोपज्ञं प्रजा ।' 'कस्योपक्रमः कोपक्रमं लोकः ।' यानी ब्रह्मा ने सर्वप्रथम प्रजा की सृष्टि की थी, इसलिए प्रजा को सबसे पहले वे (ब्रह्माजी) ही जान सके थे। षष्ठ्यन्त से परे जो कन्था शब्द उससे परे जो तत्पुरुष, वह भी नपुंसक लिङ्ग होता है, वह यदि उशीनर देशके नामों में से हो तो । जैसे—सौशमिकन्थम् । उशीनर देश के नाम से पृथक् 'दाक्षिकन्था' होता है । यहां नपुंसक लिङ्ग नहीं होता। इस श्लोक में 'नामसु' यह पद न रखते तो 'वीरणकन्था' भी नपुंसक लिङ्ग हो जाता ॥२८॥

भावे नणकचिद्भ्योऽन्ये समूहे भावकर्मणोः ।
अदन्तप्रत्ययाः पुण्यसुदिनाभ्यां त्वहः परः २९

न ण क च ये वर्ण जिस प्रत्यय में इत्संज्ञक हों, उनके अतिरिक्त भाव में विहित अदन्त, समूह अर्थ में भाव या कर्म में विहित अकारान्त एवं समूह अर्थ में यान्त सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग होते हैं । जैसे भूतम् । भवितव्यम् । भवनीयम् (भव्यम्) सहितम् । भुक्तम् । 'नणकचिद्भ्योऽन्ये' ऐसा न कहते तो 'प्रश्नः, न्यादः, आखूत्थः वेपथुः' आदि भी नपुंसकलिङ्ग हो जाते । 'भावे' ऐसा न कहते तो 'कर्तव्यो धर्मसंग्रहः' यहां भी नपुंसक लिङ्ग हो जाता । समूह अर्थ में जैसे—'भिक्षाणां समूहो भैक्षम् ।' गार्भिणम् । औपगवकम् । भाव में-गोत्वम् । शौचम् । शौक्ल्यम् । कर्म में जैसे—राज्ञः कर्म राज्यम् । चौर्यम् । पुण्य और सुदिन शब्द से परे अहन् शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है । जैसे—पुण्याहम् । सुदिनाहम् । यहां सुदिन शब्द प्रशस्तवाचक है ॥२९॥

क्रियाव्ययानां भेदकान्येकत्वेऽप्युक्थतोटके ।
चोचं पिच्छं गृहस्थूणं तिरीटं मर्मयोजनम् ३०

क्रिया और अव्यय को पृथक् करनेवाले सभी विशेषण नपुंसक लिङ्ग और एकवचन होते हैं । क्रियाविशेषण जैसे—मन्दं पचति । सुखं तिष्ठन्ति साधवः । सलीलं नृत्यति बाला । अव्ययविशेषण जैसे—रम्यं स्वः । सुखदं प्रातः । उक्थम् (सामवेद का भेद) । तोटकम् (छन्दविशेष) । चोचम् (खाये फल का बचा हुआ हिस्सा) । पिच्छम् (मोरपंख) । गृहस्थूणम् (घर का खंभा) तिरीटम् (बेठन, शिरोभूषण) । मर्म (सन्धिस्थान, शरीर में जोड़की जगह) । योजनम् (चार कोस)॥३०॥

राजसूयं वाजपेयं गद्यपद्ये कृतौ कवेः ।
माणिक्यभाष्यसिन्दूरचीरचीवरपिञ्जरम् ३१

[1]राजसूयम् (जिस यज्ञ में कि राजा सोमलता के रससे स्नान करता है)। वाजपेयम् (जिस यज्ञ में राजा अन्न से बनी मदिरा से स्नान करता है)। कवि की बनायी हुई पदसमूहात्मक 'गद्य' कविता और श्लोकात्मक 'पद्य' कविता। माणिक्यम् (मणि या मणिपुर नामक नगर में उत्पन्न होने वाली वस्तु)। भाष्यम् (जिसमें सूत्र के अर्थ का वर्णन किया जाता है)। सिन्दूरम्। चीरम् (साड़ी)। चीवरम् (मुनियों के पहनने का वस्त्र)। पिञ्जरम् (पिंजड़ा)। ये सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं ॥३१॥

लोकायतं हरितालं विदलस्थालबाह्लिकम्।

लोकायतम् (चार्वाक का शास्त्र)। हरितालम् (एक प्रकार की धातु)। विदलम् (बाँस की पत्ती का बना हुआ पात्रविशेष)। स्थालम् (बड़ा भदेला)। बाह्लिकम् (कुंकुम आदि) ये भी शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं।

(इति नपुंसकलिङ्गसंग्रहः)

पुंनपुंसकयोः शेषाऽर्धर्चपिण्याककण्टकाः ३२

यहाँ से अगले 'चमसचिक्कसौ' इस ३५वें श्लोक तक पुंनपुंसकयोः इस वाक्य का अधिकार रहेगा अर्थात् इसके अन्तर्गत सभी शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक दोनों होंगे। पहले जो शब्द गिनाये जा चुके हैं, उनसे बाकी बचे पुंनपुंसक लिङ्ग होंगे। जैसे—निधिवाची शङ्ख और पद्म शब्द एकमात्र पुँल्लिङ्ग होंगे, किन्तु कम्बु और कमल-वाची शंख और पद्म शब्द पुँल्लिङ्ग और नपुंसक दोनों होंगे। पहले गिनाये हुए शब्दों में भी जहाँ पर्याय में भेद पड़ेगा, वह शब्द पुंनपुंसक दोनों होगा। अर्धर्चः (ऋचा का आधा भाग)। पिण्याकम् (कुटे तिलका तिलकुट)। कण्टकम् (लोम-हर्ष, क्षुद्रशत्रु) ॥३२॥

मोदक स्तण्डकष्टङ्कः शाटकः कर्पटोऽर्बुदः।
पातकोद्योगचरकतमालामलका नडः ॥३३॥

मोदकः (लड्डू, प्रसन्न करनेवाला)। तण्डकः (दण्ड)। टङ्कः (पत्थर काटने की टांकी छीनी)। शाटकः (साड़ी)। कर्पटम् (स्थानविशेष)। किसी किसी पुस्तक में 'खर्वटम्' यह पाठ है जिसका मतलब है, किसी शहर के नज़दीक पर्वत और नदी के समीप का गांव। अर्बुदम् (दस करोड़ की संख्या, पर्वत विशेष)। पातकम् (ब्रह्म हत्या आदि अपराध)। उद्योगः (उत्साह)। चरकम् (वैद्यक का शास्त्रविशेष)। 'वरकम्' पाठ में 'सिला हुआ कपड़ा' यह मतलब होता है। तमालम् (वृक्ष विशेष, तमाखू)। आमलकम् (आंवला)। नडः (बिल का भीतरी भाग, एक प्रकार की नरई घास) ॥३३॥

कुष्ठं मुण्डं शीधु बुस्तं क्ष्वेडितं क्षेम कुट्टिमम्।
संगमं शतमानार्मशम्बलाव्ययताण्डवम् ॥

कुष्ठम् (रोगविशेष)। मुण्डम् (मस्तक) शीधु (मदिरा)। बुस्तम् (भुना हुआ मांस, कटहल आदि फल का सार भाग) क्ष्वेडितम् (वीर द्वारा किया हुआ सिंहनाद)। क्षेमम् (कुशल, प्राप्त वस्तु की रक्षा करना)। कुट्टिमम् (एक प्रकार की दीवार, फर्शबन्दी)। [2]शतमानम् (१०० गुञ्जा की

१ 'राजा स्वाराज्यकामो राजसूयेन यजेत (शतपथ ब्रा० ५, १, १, १२) 'यस्मिन् सर्वं सम्भवति यश्च सर्वत्र पूज्यते। यश्च सर्वेश्वरो राजा राजसूयं स विन्दति॥' (महा० सभा० १३, ४) भाष्यलक्षणम्—सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र वाक्यैः सूत्रानुकारिभिः। स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः॥

२ प्राचीन भारत का प्राचीन सिक्का 'शतमान' था जो सुवर्ण का होता था। इसका उल्लेख न केवल पाणिनि की अष्टाध्यायी (५, १, २७) और कात्यायन श्रौतसूत्र (१५, १८१-१८३) में पाया जाता है बल्कि स्थल-स्थल पर शतपथ ब्राह्मण (५, ४, ३, २४, २६; ५, ५, ५, १६) में। उपरोक्त ब्राह्मण के १२, ७, २, १३ में कहा गया है कि 'सुवर्णं हिरण्यं भवति रूपस्यैवावरुद्ध्यै शतमानं भवति शतायुर्वै पुरुषः' तथा (१३, २, ३, २) में 'हिरण्यं दक्षिणा सुवर्णं शतमानं तस्योक्तम्।' आदि। कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता (३, २, ६, ३, २, ३, ११, ५) ने शतमान का उल्लेख किया है। मनु और याज्ञवल्क्य के समय यह सिक्का सम्भवतः चाँदी का हो गया था।

तौल का सुवर्ण का गोल सिक्का)। अर्मम् (आँख का रोग)। शम्बल (रंग विशेष और पाथेय)। अव्ययम् (स्वरादिनिपातवाचक शब्द)। ताण्डवम् (एक प्रकार का नाच)॥ ३४॥

कवियं कन्दकर्पासं पारावारं युगन्धरम् ।
यूपं प्रग्रीवपात्रीवे यूषं चमसचिक्कसौ ॥३५॥

कवियम् (घोड़े की लगाम)। कन्दम् (सूरन, कमल की जड़ आदि)। कार्पासम् (सूती कपड़ा)। पारावारम् (समुद्र, नदी का इसपार और उसपार का तट)। युगंधरम् (कूबर) यूपम् (यज्ञ का अङ्गभेद। प्रग्रीवम् (पेड़ की फुनगी या झरोखा) पात्रीवम् (यज्ञ का पात्र विशेष)। यूषम् (माँड़)। चमसम् चिक्कसम् (पात्रविशेष ॥३५॥

अर्धर्चादौ घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं ध्रुवम् ।
तन्नोक्तमिह लोकेऽपितच्चेदस्त्यस्तु शेषवत् ३६

इस पुंनपुंसकाधिकार में घृतादि शब्दों का पुंस्त्व जो पाणिनि आदि आचार्यों ने कहा है, वह वैदिक है। इसी कारण उनको यहाँ नहीं गिनाया। यदि लोक में भी ये शब्द विद्यमान देखे जायँ तो शिष्टों के प्रयोगानुसार उन्हें पुंल्लिङ्ग या नपुंसक लिङ्ग समझना चाहिए ॥३६॥

(इति पुंनपुंसकलिङ्गसंग्रहः)

स्त्रीपुंसयोरपत्यान्ता द्विचतुःषट्पदोरगाः ।
जातिभेदाः पुमानाख्याःस्त्रीयोगैः सह मल्लकः॥

सभी अपत्यप्रत्ययान्त शब्द स्त्री और पुंल्लिङ्ग दोनों होते हैं। जैसे—उपगोः अपत्यं पुमान् औपगवः। उपगोरपत्यं स्त्री औपगवी। वैदेहः वैदेही। गार्ग्यः गार्गी। द्विपद, चतुष्पद और षट्पद जाति भेदवाची तथा सर्पवाची शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग दोनों होते हैं। द्विपद जातिभेद जैसे—मानुषः पुमान्। मानुषी स्त्री। ब्राह्मणः ब्राह्मणी। शूद्रः शूद्रा। चतुष्पद जातिभेद जैसे—मृगः मृगी। हयः हयी। षट्पद जातिभेद जैसे—भृङ्गः भृङ्गी। उरगभेद जैसे—उरगः उरगी। नागः नागी। पुंल्लिङ्ग शब्द भी स्त्री से युक्त होकर पुंस्त्री लिङ्ग हो जाते हैं। जैसे—इन्द्रः इन्द्राणी। मातुलः मातुली। मल्लकादि शब्द स्त्रीपुंल्लिङ्ग दोनों होते हैं। मल्लकः (बेला फूल)स्त्रीलिङ्ग में मल्लिका॥३७॥

ऊर्मिर्वराटकः स्वातिर्वर्णको झाटलिर्मनुः ।
मूषा सृपाटी कर्कन्धूर्यष्टिः शाटी कटी कुटी ३८

ऊर्मिः (लहर)। वराटकः (कौड़ी)। स्त्रीलिङ्ग में—वराटिका। स्वातिः (नक्षत्रविशेष)। वर्णकः (चन्दन)। झाटलिः (मोरवावृक्षविशेष)। मनुः (स्वायंभुव आदि चौदह मनु अथवा मन्त्र)। मूषा (सोना आदि गलाने की घरिया)। सृपाटी (परिमाणविशेष)। कर्कन्धूः (बेर)। यष्टिः (लाठी)। शाटी (साड़ी)। कटी (शरीर का अवयव अथवा कमर)। कुटी (पत्तों का बना घर)॥३८॥

(इति स्त्रीपुंसशेषसंग्रहः)

स्त्रीनपुंसकयोर्भावक्रिययोः ष्यञ्कचिच्च वुञ् ।
औचित्यमौचिती मैत्री मैत्र्यं वुञ् प्रागुदाहृतः३९

भाव और कर्म में विद्यमान ष्यञ् प्रत्यय और वुञ प्रत्यय कहीं स्त्री और कहीं नपुंसक लिङ्ग होता है। ष्यञ् प्रत्यय का उदाहरण जैसे—उचितस्य भावः औचित्यम्, औचिती च। मित्रस्य कर्म मैत्र्यं मैत्री वा। इसी तरह—सामग्र्यं सामग्री वा। आर्हन्त्यम्, आर्हन्ती वा। वुञ् प्रत्यय का उदाहरण जैसे—मिथुनस्य भावः कर्म वा मैथुनिका, मैथुनकं वा॥३९॥

षष्ठ्यन्तप्राक्पदाः सेना छायाशालासुरानिशाः
स्याद्वा नृसेनं श्वनिशं गोशालमितरे च दिक्

तत्पुरुष समास से षष्ठ्यन्त प्राक्पद में विद्यमान सेना आदि शब्द स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग दोनों होते हैं। जैसे—नृणां सेना नृसेना—नृसेनं वा। इसी तरह और शब्दों के भी विषय में समझ लेना चाहिए। जैसे-यवसुरम्, यवसुरा। कुड्यस्य छाया कुड्यच्छायं कुड्यच्छाया वा। षष्ठीबहुवचनान्त प्राक्पद में यदि छाया शब्द विद्यमान हो तो नपुंसक लिङ्ग ही होता है, ऐसा पहले ही कह आये हैं॥४०॥

आबन्नन्तोत्तरपदो द्विगुश्चापुंसि नश्च लुप्।
त्रिखट्वं च त्रिखट्वी च त्रितक्षं च त्रितक्ष्यपि ४१

जहाँ आबन्त और अन्नन्त शब्द उत्तरपद में हों, ऐसा द्विगु समास पुंल्लिङ्ग न होकर स्त्री अथवा नपुंसकलिङ्ग होता है। अन्नन्त उत्तर पद का अन्तिम नकार लुप्त भी हो जाता है। आबन्तोत्तर पद का उदाहरण जैसे—तिस्रः खट्वाः समाहृताः त्रिखट्वम्। त्रिखट्वी च। अन्नन्तोत्तर पद का उदाहरण जैसे—त्रयस्तक्षाणः समाहृतास्त्रितक्षम्। त्रितक्षी च। यहाँ तक्षन् शब्द का अन्तिम नकार लुप्त है ॥४१॥

(इति स्त्रीनपुंसकसंग्रहः)

त्रिषु पात्री पुटी वाटी पेटी कुवलदाडिमौ।

पात्र पत्ता, राजा का मंत्री, बर्तन शब्द से डाडिम शब्द पर्यन्त सभी शब्द पुं-स्त्री-नपुंसक तीनों लिङ्गहोंगे। जैसे-पात्री, पात्रः, पात्रम् आदि। इसी तरह, पुटी, पुटः पुटम्। वाटी, वाटः (रास्ता, वरण किया हुआ) वाटम्। पेटी, पेटः, पेटम् (बेत या बाँस का बना पिटारा)। कुवली (बेर) कुवलः, कुवलम्। दाडिमी, दाडिमः (अनार) दाडिमम्।

(इति त्रिलिङ्गशेषसंग्रहः)

परं लिङ्गं स्वप्रधाने द्वन्द्वे तत्पुरुषेऽपि तत् ४२

उभयपद प्रधान इतरेतर द्वन्द्व तथा तत्पुरुष समास में अन्तिम पद जिस लिङ्ग में हो उस शब्द का वही लिङ्ग मानना चाहिए। द्वन्द्व समास में जैसे—कुक्कुटमयूर्याविमे। मयूरी कुक्कुटाविमौ। तत्पुरुष समास में जैसे—धान्येनार्थो धान्यार्थः। सर्पाद्भीतिः सर्पभीतिः। सर्पभयम्। वाप्यश्वः आदि ॥४२॥

अर्थान्ताः प्राद्यलंप्राप्तापन्नपूर्वाः परोपगाः।
तद्धितार्थो द्विगुः संख्यासर्वनामतदन्तकाः ४३

जिनके अन्त में 'अर्थ' शब्द हो, वे सभी शब्द परगामी शब्द के लिङ्ग विशेष्यालिंगवाले हो जायँगे। जैसे—द्विजायायं सूपः। द्विजार्था यवागूः। द्विजार्थं पयः। प्रादि उपसर्ग, अलं, प्राप्त और आपन्न शब्द पूर्व में हों वे सभी शब्द पर शब्द के लिङ्ग की तरह हो जाते हैं। प्रादि पूर्ववाले शब्द जैसे—अतिक्रान्तो मालामतिमालो हरः। अतिक्रान्ता मालामतिमालेयम्। अतिमालमिदम्। अवकुष्टः कोकिलया अवकोकिलः। अलंपूर्व वाला शब्द जैसे अलं कुमार्यै इत्यलंकुमारिरयम्। अलंकुमारिरियम्। अलंकुमारि इदम्। प्राप्तजीविको द्विजः। प्राप्तजीविका स्त्री। प्राप्तजीविकमिदम्। इसी तरह आपन्नजीविक आदि। तद्धितार्थ द्विगु भी परवल्लिङ्ग होता है। जैसे—पंचकपालः पुरोडाशः। पंचकपालं हविः। सभी संख्यावाचक, सर्वनाम संज्ञक तथा जिनके अन्त में सर्वनाम संज्ञक शब्द हो, वे शब्द परवल्लिङ्ग होते हैं। संख्यावाची जैसे—एकः पुमान्। एकं कुलम्। एका स्त्री। द्वौ पुमांसौ। द्वे स्त्रियौ कुले च। त्रयः पुरुषाः। तिस्रः स्त्रियः। त्रीणि कुलानि। सर्वनाम जैसे—सर्वो देशः। सर्वा जातिः सर्वं जलम्। जिनके अन्त में संख्यावाचक शब्द है ऊनत्रयः, ऊनतिस्रः, ऊनत्रीणि। सर्वनामान्तक शब्द जैसे—परमसर्वः, परमसर्वा, परमसर्वम् ॥४३॥

बहुव्रीहिरदिङ्नाम्नामुन्नेयं तदुदाहृतम्।
गुणद्रव्यक्रियायोगोपाधिभिः परगामिनः ४४

दिग्वाचक नाम से भिन्न बहुव्रीहि अन्य लिङ्ग का हो जाता है। इसके उदाहरण की कल्पना स्वयं कर लीजिए। जैसे—वृद्धा भार्या यस्य स वृद्धभार्यः बहुधनः। बहुधनम्। बहुधना इत्यादि। यदि इस श्लोक में 'अदिङ्नाम्नाम्' यह वाक्य न रखते तो 'दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोरन्तरालं दिक् दक्षिणपूर्वा' यहाँ की बहुव्रीहि में अन्यलिङ्गता हो जाती। वास्तव में यहाँ परवल्लिङ्गता होती है। गुणयोग, द्रव्ययोग या क्रियायोग से जो विशेषण होता है, वह जब जिस धर्मी में प्रवृत्त होता है तो धर्मी का ही लिङ्ग उस विशेषण का भी हो जाता है। गुणयोग से जैसे—गन्धवती पृथिवी। गन्धवानश्मा। गन्धवत्कुसुमम्। द्रव्ययोग से जैसे—दण्डिनी स्त्री। क्रियायोग से जैसे—पाचिका स्त्री ॥४४॥

[illegible]तः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याः कर्तरि कर्मणि ।
[illegible]ाद्यन्तास्तेन रक्ताद्यर्थे नानार्थभेदकाः ॥४५॥

जहाँ असंज्ञा अर्थ में कृदन्त के प्रत्यय होते हैं तो वे पर[illegible] होते हैं । जैसे—करोतीति कर्त्री स्त्री । कर्ता पुमान् । कर्तृ कलत्रम् । इस श्लोक में 'असंज्ञायाम्' न कहते तो 'प्रजा' 'हरिः' यहां पर भी परवल्लिङ्गता हो जाती । 'कर्तरि' न कहते तो 'कृतिः' में भी परवल्लिङ्गता होने लगती ।

कर्म तथा कर्ता में विद्यमान कृत्यप्रत्यय परवल्लिङ्ग होते हैं । कर्म में जैसे—कर्तव्या भक्तिः । कर्तव्यो [illegible] वसतीति वास्तव्योऽयम् । वास्तव्या [illegible] । वास्तव्यं [illegible] 'कर्तरि कर्मणि' ऐसा न कहते [illegible] भाव में विहित कृत्य प्रत्यय 'भवितव्यम्' [illegible] भी परगामिता हो जाती ।

'तेन [illegible]' इत्यादि अर्थ में विहित अणादि प्रत्यय अथवा अणाद्यन्त नानार्थवाची विशेषण या [illegible]नार्थवाची विशेष्य शब्द वाच्यलिङ्ग होते हैं । जैसे—[illegible] वस्त्रम् । कौङ्कुमी शाटी । कौङ्कुमः [illegible] । आदि शब्द से—कृत्तिकाभिर्युक्ता कार्तिकी । वसिष्ठेन दृष्टं वासिष्ठं साम । वसिष्ठेन दृष्टो वासिष्ठो मंत्रः । वासिष्ठी ऋक् । प्रजापतिना प्रोक्तः प्राजापत्यः । यहां भी वाच्यलिङ्ग होता है ॥४५॥

षट्संज्ञकास्त्रिषु समा युष्मदस्मत्तिङव्ययम् ।
परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः ॥४६॥

'ष्णान्ताः षट्' (१।१।२४) 'डति च' इन सूत्रों से षट् संज्ञा किये हुए शब्द, युष्मद्-अस्मद्, तिङन्त और अव्यय, तीनों लिङ्गों एक से रहते हैं । क्योंकि इनमें लिङ्गसम्बन्धी कोई विशेषता रहती ही नहीं । ये षट् संज्ञक शब्द बहुवचनान्त ही होते हैं । जैसे—पञ्च [illegible] । पञ्च नार्यः । पंच फलानि । षट् कुलानि । कति घटाः । कति स्त्रियः । कति गृहाणि । त्वं स्त्री त्वं पुरुषः । त्वं फलम् । अहं स्त्री । अहं पुरुषः । अहं फलम् । पुरुषः पचति । स्त्री पचति । कुलं पचति । उच्चैः प्रासादः । उच्चैःशाला । उच्चैर्गृहम् ।

जहाँ कहीं लिङ्गविधायक वचन का विरोध उपस्थित हो तो वहाँ दूसरा लिङ्गानुशासन मान लिया जाता है । जैसे—मानुषीयम् । मानुषोऽयम् ।

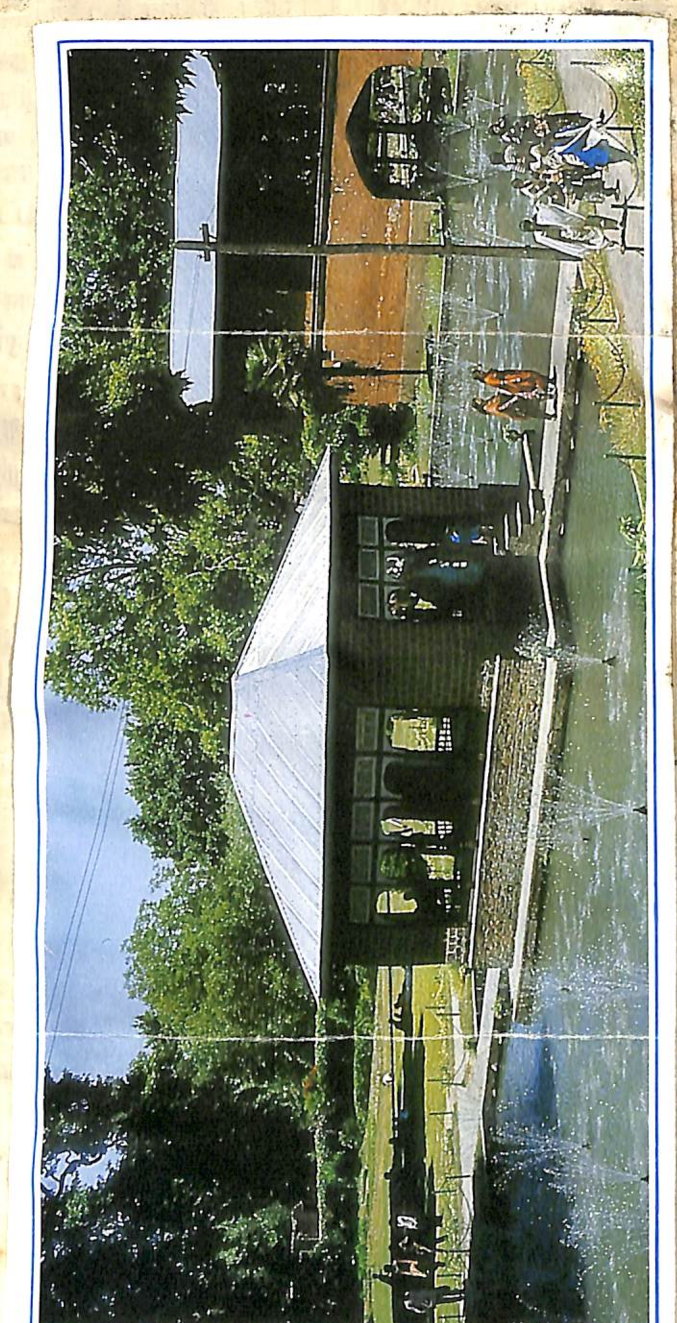
यहाँ जिन शब्दों का लिङ्गनिर्देश नहीं किया जा सका है, उनका शिष्टजनों (महाकवियों) के प्रयोगानुसार लिङ्गनिर्देश समझना चाहिए । जैसे 'चालनी तितउः पुमान् (द्वितीयकाण्ड वैश्य वर्ग)' इस वाक्य से 'तितउ' शब्द को पुँल्लिङ्ग कहा है । किन्तु 'तितउ परिवपनं भवति' इस (पस्पशा) भाष्य प्रयोग से इसे नपुंसकलिङ्ग भी माना जाता है और 'कलिका कोरकः पुमान्' (द्वितीयकाण्ड, वनौषधिवर्ग) कहा है किन्तु महाकवि माघने 'कोरकाणि' प्रयोग किया है इससे वह नपुंसक लिङ्ग भी माना जाता है ॥४६॥

(उपसंहारः)

इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
सामान्यकाण्डस्तृतीयः साङ्ग एव समर्थितः ॥४७

श्रीमदमरसिंह द्वारा रचित नाम और लिंगों को बतानेवाले इस नामलिङ्गानुशासन ग्रन्थ का सामान्य तृतीय काण्ड सङ्गोपाङ्ग समाप्त हुआ ॥४७॥

इति श्रीमन्नालाल 'अभिमन्यु' एम० ए० विरचितायां धराख्यामरकाषटीकायां
तृतीयः काण्डः समाप्तः ।



॥ श्रीः ॥

अथ मूलस्थशब्दानामकारादिक्रमेण शब्दानुक्रमणिका

